श्रीआत्मानन्द-जैनग्रन्थरत्नमाला एकनवतितमं रत्नम् ९१

सिरिदेवभद्दायरियविरइओ-श्रीदेवभद्राचार्यविरचितः

कहारयणकोसो-कथारत्नकोशः ।

विषमपदार्थद्योतिन्या टिप्पण्या विभूषितः ।

कथारत्नकोशकारप्रणीतप्रमाणप्रकाश-अनन्तनाथस्तोत्रादिभिः संयुतश्च ।

सम्पादकः संशोधकश्च—

बृहत्तपोगच्छान्तर्गतसंविग्नशाखीय-आद्याचार्य-श्री१००८श्रीविजयानन्दसूरिप्रवर-प्रवरविनेयप्रवर्तकश्री-
कान्तिविजयान्तिपन्मुनिवरश्रीचतुरविजयचरणाब्जसेवको मुनिः पुण्यविजयः ।

मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीतश्चायं ग्रन्थः—भावनगरस्थया श्रीजैन-आत्मानन्दसभया ।

वीरसंवत् २४७० • आत्मसंवत् ४८ • विक्रमसंवत् २००० • इस्वीसन् १९४४

प्रकाशकः—शेठ वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी, सेक्रेटरी श्री जैन आत्मानन्द सभा—भावनगर

उपहार

पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय शान्त्यादिगुणगणभंडार सच्चारित्रपात्र परमगुरुदेव महाराज श्री१००८श्रीबुद्धिविजयजी (बुटेरायजी) महाराजना सुशिष्य सच्चारित्रचूडामणि महात्मा श्री१००८श्रीमुक्तिविजयजीगणि (मूलचंद्रजी) महाराजना शिष्यप्रवर सुधीर शांतमूर्त्ति श्री१००८श्रीगुलाबविजयजी महाराजना सुविनीत शिष्यरत्न श्री१००८श्रीमंगळविजयजी महाराजना पुनीत धर्मोपदेशथी लुणावाडानिवासी धर्मात्मा सुश्रावकसमुदाय तरफना रू. ८०० तथा अणहिलपुरपाटणनिवासी धर्मात्मा शेठ जेसंगभाई भगवानदास तरफना रू. २५०) अने सीहोरनिवासी धर्मात्मा शेठ प्रभुदास भाइचंद तरफना रू. १००) मळी एकंदर रू. ११५०)मां श्रीकथारत्नकोशनी १५१ प्रति लई ज्ञानभंडारादि योग्य स्थानमां भेट आपवामां आवी छे—आवशे.

मुद्रकः—शाह लालचंद लल्लुभाई श्री महोदय प्रिन्टींग प्रेस दाणापीठ—भावनगर

आ भा र प्र द र्श न



प्रस्तुत ग्रन्थना मुद्रणकार्य माटे जे भाग्यवान् महानुभावोए सभाने द्रव्य अर्पण कर्युं छे तेमनां शुभ नामोनी नोंध लेवा साथे तेमनो अमे अंतःकरणथी धन्यवाद आपवा पूर्वक आभार मानीए छीए—

रू. २०००) पाटणनिवासी धर्मात्मा शेठ नटवरलाल तथा भाई रमणलाले पोतानां पिताश्री शेठ छोटालाल लहेरचन्दना कल्याणनिमित्ते अर्पण कर्या छे।

रू. ५००) राधनपुरवासी शेठ चन्दुलाल केशरीचन्दनी धर्मपत्नी अने पाटणनिवासी शेठ मोहनलाल मोतीचन्दनी सुपुत्री बहेन केशरबहेने पोताना जेठ शेठ जीवाभाई केशरीचन्दना कल्याणनिमित्ते कहेला द्रव्यमांथी आप्यां छे।

गांधी वल्लभदास त्रिभुवनदास
सेक्रेटरी श्रीजैन आत्मानन्द सभा.
भावनगर (काठीआवाड)

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

कथारत्नकोशनी प्रस्तावना ।

आजे आचार्य श्रीदेवभद्रसूरिविरचित रत्नकोशना यथार्थ नामने शोभावतो एवो कथारत्नकोश नामनो अतिदुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित करी जैनकथासाहित्यरसिक विद्वानोना करकमळमां उपहाररूपे अर्पण करवामां आवे छे; जेनी सांशत परिपूर्ण मात्र एक ज ताडपत्र उपर लखाएली प्राचीन प्रति, खंभातना 'श्रीशांतिनाथ जैन ज्ञानभंडार'ने नामे ओळखाता अतिप्राचीन गौरवशाळी ताडपत्रीय ज्ञानभंडारमां जळवाएली छे. तेने अंगे नीचेना मुद्दाओ उपर विचार करवामां आवे छे:—१ भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता. २ जैन प्रवचनमां धर्मकथानुयोगनुं स्थान. ३ कथाना प्रकारो अने कथावस्तु. ४ कथारत्नकोशग्रंथनो परिचय. ५ तेना प्रणेता. ६ अन्य जैनकथाग्रंथादिमां कथारत्नकोशनुं अनुकरण अने अवतरण. ७ संशोधन माटे एकत्र करेली प्राचीन प्रतिओनो परिचय तथा संशोधन विशेनी माहिती.

१ भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता

आजनी प्रत्यक्ष दुनिआमां जे मानवप्रजा वसे छे तेमां भणेलागणेला कुशाग्रमतिवाळा लोको बे त्रण टका जेटला ज छे, ज्यारे बाकीनो ९७ टका जेटलो भाग अक्षरज्ञान विनानो छतां स्वयंस्फुरित संवेदनवाळो छे. आमां केवळ अक्षरपरिचय धरावनारा अने

अक्षरपरिचय विनाना छतां पोतानी ईयाउकलतथी व्यवहार अने परमार्थनो तोड काढनारा लोकोनो समावेश छे. आ ९७ टका जेटली अत्यधिक संख्या धरावनारा लोको विज्ञान, तत्त्वज्ञान, गणितविद्या, भूगोळ के खगोळविद्यामां ऊंडा ऊतरवा जराय राजी नथी तेम तैयार पण नथी. तेमने तो घणी सरळ रीते समज पडे अने ए समजद्वारा जीवननो रस माणी शकाय अने व्यवहार तेमज परमार्थने समजी मानवजीवननी कृतकृत्यता अनुभवाय एवा साहित्यनी अपेक्षा छे. एटले ए वस्तुने आपणा पूर्व महर्षिओए विपुल प्रमाणमां कथा, उपकथा, आख्यानो, आख्यायिकाओ, ऐतिहासिक चरित्रोआदि सर्जीने पूरी रीते संतोषी पण छे. आ रीते जोतां कथासाहित्यनो संबंध मुख्यतया आमजनता साथे छे, अने आमजनता विपुल होवाथी तेनी साथे संबंध धरावतुं कथासाहित्य पण विपुल, विविध अने आमजनतानी रुचिवृत्तिने लक्षमां राखी सुगम अने सुबोध भाषामां सरजाएलुं छे. आ प्रकारनुं कथासाहित्य जेम जैनसंप्रदायमां विपुल छे एज रीते वैदिक अने बौद्धसंप्रदायमां पण अति विपुल प्रमाणमां छे; एटलुं ज नहि पण भारतवर्षनी जेम भारतवर्षनी बहार पण आ जातनुं कथासाहित्य एटला ज प्रमाणमां उपलब्ध थाय छे. ज्ञाननी दृष्टिए विज्ञान, तत्त्वज्ञान, भूगोळ, खगोळ, गणित, आयुर्वेद, अध्यात्मशास्त्र, योगविद्या, प्रमाणशास्त्र वगेरे विद्याओनुं महत्त्व जराय ओछुं नथी, परन्तु ते बधी गहन विद्याओने सर्वगम्य करवानुं साधन मात्र एक कथासाहित्य छे; माटे ज भारतवर्षना तेमज भारतनी बहारना प्राचीन अर्वाचीन कुशाग्रमति विद्वानो पण कथासर्जननी प्रवृत्तिमां पड्या छे अने ए द्वारा एमणे आमजनताने त्याग, तप, वैराग्य, धीरज, क्षमा, निस्पृहता, प्राणिसेवा, सत्य, निर्लोभता, सरळता आदि गुणोनी सिद्धि माटे विविध प्रेरणाओ आपी छे. आमजनताने केळववानुं काम सहज साध्य नथी, तेम छतां त्याग, सदाचार, सरळता, समयज्ञता आदि

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

कथारत्नकोशनी प्रस्तावना ।

आजे आचार्य श्रीदेवभद्रसूरिविरचित रत्नकोशना यथार्थ नामने शोभावतो एवो कथारत्नकोश नामनो अतिदुर्लभ ग्रन्थ प्रकाशित करी जैनकथासाहित्यरसिक विद्वानोना करकमळमां उपहाररूपे अर्पण करवामां आवे छे; जेनी साद्यंत परिपूर्ण मात्र एक ज ताडपत्र उपर लखाएली प्राचीन प्रति, खंभातना 'श्रीशांतिनाथ जैन ज्ञानभंडार'ने नामे ओळखाता अतिप्राचीन गौरवशाळी ताडपत्रीय ज्ञानभंडारमां जळवाएली छे. तेने अंगे नीचेना मुद्दाओ उपर विचार करवामां आवे छेः—१ भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता. २ जैन प्रवचनमां धर्मकथानुयोगनुं स्थान. ३ कथाना प्रकारो अने कथावस्तु. ४ कथारत्नकोशग्रंथनो परिचय. ५ तेना प्रणेता. ६ अन्य जैनकथाग्रंथादिमां कथारत्नकोशनुं अनुकरण अने अवतरण. ७ संशोधन माटे एकत्र करेली प्राचीन प्रतिओनो परिचय तथा संशोधन विशेनी माहिती.

१ भारतीय कथासाहित्यनी विपुलता

आजनी प्रत्यक्ष दुनिआमां जे मानवप्रजा वसे छे तेमां भणेलागणेला कुशाग्रमतिवाळा लोको बे त्रण टका जेटला ज छे, ज्यारे बाकीनो ९७ टका जेटलो भाग अक्षरज्ञान विनानो छतां स्वयंस्फुरित संवेदनवाळो छे. आमां केवळ अक्षरपरिचय धरावनारा अने

अक्षरपरिचय विनाना छतां पोतानी हैयाउकलतथी व्यवहार अने परमार्थनो तोड काढनारा लोकोनो समावेश छे. आ ९७ टका जेटली अक्षरिक संख्या धरावनारा लोको विज्ञान, तत्त्वज्ञान, गणितविद्या, भूगोळ के खगोळविद्यामां ऊंडा ऊतरवा जराय राजी नथी तेम तैयार पण नथी. तेमने तो घणी सरळ रीते समज पडे अने ए समजद्वारा जीवननो रस माणी शकाय अने व्यवहार तेमज परमार्थने समजी मानवजीवननी कृतकृत्यता अनुभवाय एवा साहित्यनी अपेक्षा छे. एटले ए वस्तुने आपणा पूर्व महर्षिओए विपुल प्रमाणमां कथा, उपकथा, आख्यानो, आख्यायिकाओ, ऐतिहासिक चरित्रोआदि सर्जीने पूरी रीते संतोषी पण छे. आ रीते जोतां कथासाहित्यनो संबंध मुख्यतया आमजनता साथे छे, अने आमजनता विपुल होवाथी तेनी साथे संबंध धरावतुं कथासाहित्य पण विपुल, विविध अने आमजनतानी खासियतोने लक्षमां राखी सुगम अने सुबोध भाषामां सरजाएलुं छे. आ प्रकारनुं कथासाहित्य जेम जैनसंप्रदायमां विपुल छे ए ज रीते वैदिक अने बौद्धसंप्रदायमां पण अति विपुल प्रमाणमां छे; एटलुं ज नहि पण भारतवर्षनी जेम भारतवर्षनी बहार पण आ जातनुं कथासाहित्य एटला ज प्रमाणमां उपलब्ध थाय छे. ज्ञाननी दृष्टिए विज्ञान, तत्त्वज्ञान, भूगोळ, खगोळ, गणित, आयुर्वेद, अध्यात्मशास्त्र, योगविद्या, प्रमाणशास्त्र वगेरे विद्याओनुं महत्त्व जराय ओछुं नथी, परन्तु ते बधी गहन विद्याओने-सर्वगम्य करवानुं साधन मात्र एक कथासाहित्य छे; माटे ज भारतवर्षना तेमज भारतनी बहारना प्राचीन अर्वाचीन कुशाग्रमति विद्वानो पण कथासर्जननी प्रवृत्तिमां पड्या छे अने ए द्वारा एमणे आमजनताने त्याग, तप, वैराग्य, धीरज, क्षमा, निस्पृहता, प्राणिसेवा, सत्य, निर्लोभता, सरळता आदि गुणोनी सिद्धि माटे विविध प्रेरणाओ आपी छे. आमजनताने केळववानुं काम सहज साध्य नथी, तेम छतां त्याग, सदाचार, सरळता, समयज्ञता आदि

सद्गुणोथी विभूषित महापुरुषो आमजनताने उपदेशद्वारा केळवी शके छे, साहित्यसर्जनद्वारा दोरी शके छे अने अनेक गूंचो उकेली तेनी साधनाना मार्गने सरळ बनावी आपे छे. आ दृष्टिए पण कथासाहित्यनुं मूल्य अनेकगणुं वधी जाय छे.

२ जैनप्रवचनमां कथानुयोगनुं स्थान

जेम महाभारत अने रामायणना प्रणेता वैदिक महर्षिओए आमजनताना प्रतिनिधि बनी ए ग्रंथोनी रचना करी हती, ए ज प्रमाणे जैनपरंपराए पण आमजनतानी विशेष खेवना करवामां ज पोतानुं गौरव मान्युं छे. एक काळे ज्यारे वैदिक परंपरा आमजनतानी मटी राजाओनी आश्रित थई आमजनतानुं प्रतिनिधिपणुं गुमावी बेठी, एटलुं ज नहि पण ए आमजनतानी स्वाभाविक भाषा तरफ पण सुगाळवी थई गई, बराबर ए ज वखते जैनपरंपरामां अनुक्रमे थएल महामान्य तीर्थंकर भगवान् श्रीपार्श्वनाथ अने श्रमण भगवान् श्रीवीरवर्धमानस्वामीए आमजनतानु प्रतिनिधिपणुं कर्युं अने तेनी स्वाभाविक भाषाने अपनावी ते द्वारा ज पोतानुं धर्मतीर्थ प्रवर्त्ताव्युं अने आमजनता सुधी पहोंचे एवा साहित्यनिर्माणने पूरेपूरो टेको आप्यो. एटलुं ज नहि पण जैनप्रवचनना जे मुख्य चार विभागो बताव्या छे तेमां आमजनताना अतिप्रिय ए कथासाहित्यने खास स्थान पण आप्युं छे. जैनप्रवचन चरणकरणानुयोग, धर्मकथानुयोग, गणितानुयोग अने द्रव्यानुयोग ए चार विभागमां वहेंचाएलुं छे. आमां आमजनतानुं प्रतिनिधित्व धरावनार धर्मकथानुयोग विशिष्ट स्थान भोगवे छे. सदाचरणोना मूळ नियमो अने तेमने आचरणमां मूकवानी विविध प्रक्रियाओना साहित्यनुं नाम चरणकरणानुयोग छे. ए सदाचरणो जेमणे जेमणे—स्त्री के पुरुषे—आचरी बताव्यां होय, एवां आचरणोथी जे लाभो मेळव्या होय अथवा ए आचरणो आचरतां आवी पडती मुशीबतोने वेठी तेमने जे रीते पार करी होय तेवा सदाचारपरायण

धीर वीर गंभीर स्त्रीपुरुषोनां ऐतिहासिक के कथारूप जीवनोना सर्जननुं नाम धर्मकथानुयोग छे. आ विषे शास्त्रकारो तो एम पण कहे छे के–आवा प्रकारना धर्मकथानुयोग विना चरणकरणानुयोगनी साधना कठण बनी जाय छे अने जनता ते तरफ वळती के आकर्षाती पण नथी. आम जैन दृष्टिए 'एक अपेक्षाए चारे अनुयोगोमां धर्मकथानुयोग प्राधान्य धरावे छे' एम कहेवुं लेशमात्र अनुचित नथी. जेमां खगोळभूगोळनां विविध गणितो आवे ते गणितानुयोग अने जेमां आत्मा, परमात्मा, जीवादि-तत्त्वो, कर्म, जगतनुं स्वरूप वगेरे केवळसूक्ष्मबुद्धिग्राह्य विषयो वर्णववामां आव्या होय ते द्रव्यानुयोग. आ चार अनुयोग पैकी मात्र एक धर्मकथानुयोग ज एवो छे जे आमजनता सुधी पहोंची शके छे अने तेथी ज बीजा अनुयोगो करतां कोई अपेक्षाए तेनुं महत्त्व समजवानुं छे. जैनपरंपरा अने वैदिकपरंपरानी पेठे बौद्धपरंपराए पण कथानुयोगने स्थान आपेलुं छे, एटलुं ज नहि पण रारस्तामणीमां वैदिकपरंपरा करतां बौद्धपरंपरा, जैनपरंपरानी पेठे आमजनतानी सविशेष प्रतिनिधि रहेली छे. जैनपरंपराना चरण-करणानुयोग माटे बौद्धपरंपरामां 'विनयपिटक' शब्द, धर्मकथानुयोगमाटे 'सुत्तपिटक' अने गणितानुयोग तथा द्रव्यानुयोग माटे 'अभि-धम्मपिटक' शब्द योजायो छे 'पिटक' शब्द जैनपरंपराना 'द्वादशांगीगणिपिटक' साथे जोडाएला 'पिटक' शब्दने मळतो 'पेटी' अर्थने बता-वतो ज शब्द छे. सुत्तपिटकमां अनेकानेक कथाओनो समावेश छे. दीघनिकाय मज्झिमनिकाय सुत्तनिपात वगेरे अनेकानेक ग्रंथोनो 'सुत्तपिटक'मां समावेश थाय छे. जैनपरंपरानो धर्मकथानुयोग, बौद्धपरंपरानो सुत्तपिटक अने वैदिकपरंपरानो इतिहास ए त्रणे शब्दो लगभग एकार्थक शब्दो छे. धर्मकथानुयोग पथ्यभोजनपान जेवो छे. जेम पथ्य अन्नपान मानवशरीरने दृढ, निरोगी, पुरुषार्थी, दीर्घजीवी अने मानवतापरायण बनावे छे तेम धर्मकथानुयोग पण मानवना मनने प्रेरणा आपी बलिष्ठ, स्वस्थ, निग्रही, सदाचारी अने सदा-

चारप्रचारी बनावे छे अने अजरामर परिस्थिति सुधी पहोंचाडे छे. बोलता चालता उपदेशक करतां, धर्मकथानुयोग मानवना मन उपर एवी सारी असर उपजावे छे जे धीरे धीरे पण पाकी थएली अने जीवनमां उतरेली होय छे. संक्षेपमां एम कही शकाय के धर्मकथानुयोग मानवने खरा अर्थमां मानवरूपे घडी शके छे अने आध्यात्मिकदृष्टिए पूर्ण स्वतंत्रता सुधी पण पहोंचाडे छे.

३ कथाना प्रकारो अने कथावस्तु

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिवरे समराइच्चकहामां कथाओना विभाग करतां अर्थकथा, कामकथा, धर्मकथा अने संकीर्णकथा एम चार विभाग बताव्या छे. जे कथामां उपादानरूपे अर्थ होय, वणजवेपार, लडाईओ, खेती, लेख–लखत वगेरेनी पद्धतिओ, कळाओ, शिल्पो, सुवर्णसिद्धि वगेरे धातुवादो, तथा अर्थोपार्जनना निमित्तरूप साम, दाम, दंड आदि नीतिओनुं वर्णन होय तेनुं नाम अर्थकथा. जेमां उपादानरूपे काम होय अने प्रसंगे प्रसंगे दूतीना अभिसारो, स्त्रीओना रमणो, अनंगलेखो, ललितकळाओ, अनुरागपुलकितो निरूपेलां होय ते कामकथा. जेमां उपादानरूपे धर्म होय अने क्षमा, मार्दव, आर्जव, अलोभ, तप, संयम, सत्य, शौच वगेरेने लगतां मानवसमाजने धारणपोषण आपनारां अने तेनुं सत्त्वसंरक्षण करनारां वर्णनो होय ते धर्मकथा. अने जेमां धर्म, अर्थ अने काम ए त्रणे वर्गोनुं यथास्थान निरूपण होय अने ए त्रणे वर्गोने समजाववा तेमज परस्पर अबाधक रीते व्यवहारमां लाववा युक्तिओ, तर्को, हेतुओ अने उदाहरणो वगेरे आपेलां होय ते धर्मकथा. कथाओना आ चार प्रकार पैकी केवळ एक धर्मकथा ज धर्मकथानुयोगमां आवे छे. मूळ जैन आगमोमां पण ज्ञाताधर्मकथांग, उपासकदशांग, अंतकृद्दशांग, अनुत्तरौपपातिकदशांग, विपाक वगेरे अनेक आगमो पण धर्मकथाने प्रधानपणे वर्णवे छे. ज्ञाताधर्मकथांगनुं जे प्राचीन कथासंख्याप्रमाण कहेवामां आव्युं छे तेमां ते

आगममां साडात्रण करोड कथाओ अने नेटली ज उपकथाओ वगेरे होवानुं कहेलुं छे. ए जोतां जैन परंपरामां धर्मकथानुं साहित्य केटलुं विपुल हतुं ए सहजमां ज कल्पी शकाय तेम छे. धर्मकथाओमां पण युद्ध, खेती, वणज, कळाओ, शिल्पो, ललितकळाओ, धातुवादो वगेरेनुं वर्णन आवे छे; परंतु धर्म प्रधान स्थाने होय अने बाकी बधुं आनुषंगिक रीते धर्मनुं पोषक होय. ए ज रीते अर्थकथा अने कामकथामां पण धर्मनुं वर्णन न ज आवे एम नहि, पण अर्थ अने काम एमां प्रधान होय; ए ज दृष्टिए ते ते कथाने तेवां तेवां नामो अपाएलां छे. प्रस्तुत कथारत्नकोश, धर्मकथाओनो महान् ग्रंथ छे. तेमां उपर कह्या प्रमाणे अर्थकथा अने कामकथानुं प्रासंगिक निरूपण होवा छतां, धर्म प्रधानस्थाने होई तेने धर्मकथानो ग्रंथ गणवामां कशोय बाध नथी. आवी कथाओमां कथाओनुं वस्तु दिव्य होय छे, मानव्य होय छे अने दिव्यमानव्य पण होय छे. कथारत्नकोशनी धर्मकथाओनुं वस्तु प्रधानपणे मानव्य छे अने क्वचित् दिव्यमानव्य पण छे.

४ कथारत्नकोशग्रंथनो परिचय

प्रस्तुत ग्रंथ प्राकृत भाषामां गद्य-पद्यरूपे अतिप्रासादिक सालंकार रचनाथी रचाएलो अने अनुमान साडाअगीआर हजार श्लोकप्रमाण छे. बहु नानी नहि, बहु मोटी पण नहि, छतां संक्षिप्त कही शकाय तेवी मौलिक पचास कथाओना संग्रहरूप आ कृति छे. प्रस्तुत ग्रंथ मुख्यत्वे प्राकृत भाषामां रचायलो होवा छतां तेमां प्रसंगोपात संस्कृत अने अपभ्रंश भाषानो उपयोग पण ग्रंथकारे करेलो छे; खास करी दरेक कथाना उपसंहारमां उपदेश तरीके जे चार श्लोको अने पुष्पिका आपवामां आव्यां छे ए तो संस्कृत भाषामां ज छे. आ ग्रंथमां सम्यक्त्व आदि तेत्रीस सामान्य गुणो अने पांच अणुव्रत आदि सत्तर विशेष गुणोने लगती

कथाओनो समावेश करवामां आव्यो छे. धर्मकथाओना ग्रन्थोमां शृंगार आदि रसोनी विपुलताने लीधे धर्मकथानुं धर्मकथापणुं गौण थवानो दोष जेम केटलीक धर्मकथाओनी रचनामां आवी जाय छे तेम आ ग्रंथमां ग्रंथकारे जरा पण थवा दीधुं नथी; एटलुं ज नहि पण प्रस्तुत धर्मकथाग्रंथमां शृंगार आदि जेवा रसोनो लगभग अभाव छतां आ धर्मकथाग्रंथ शृंगार रहित बनी न जाय अथवा एमांनी धर्मकथाना वाचन के श्रवणमां वक्ता के श्रोतानी रसवृत्ति लेश पण नीरस अथवा रूक्ष न बनी जाय ए विषेनी दरेक चोकसाई ग्रंथकारे राखी छे. प्रस्तुत ग्रंथमां ग्रंथकार जे जे गुण विषे कथा कहेवी शरू करे छे तेना प्रारंभमां, कथाना वर्णनमां अने एना उपसंहारमां ते ते गुणनुं स्वरूप, तेनुं विवेचन अने तेने लगता गुण-दोषो लाभ-हानिनुं निरूपण तेमणे अति सरस पद्धतिए कर्युं छे.

उपर जणाववामां आव्युं तेम आ ग्रंथमां तेत्रीस सामान्यगुण अने सत्तर विशेषगुण मळी जे पचास गुणोनुं वर्णन करवामां आव्युं छे ते उपरांत प्रसंगोपात्त बीजा अनेक महत्त्वना विषयो वर्णववामां तेमज चर्चवामां आव्या छे. जेवा के—उपवनवर्णन, ऋतुवर्णन, रात्रिवर्णन, युद्धवर्णन, श्मशानवर्णन आदि वर्णनो; राजकुलना परिचयथी थता लाभो, सत्पुरुषनो मार्ग, आपघातमां दोष, देशदर्शन, पुरुषना प्रकारो, नहिकरवालायक–करवालायक–छोडवालायक–धारणकरवालायक–विश्वासनहिकरवालायक आठ आठ बाबतो, अतिथिसत्कार आदि नैतिक विषयो; छींकनो विचार, राजलक्षणो, सामुद्रिक, मृत्युज्ञानना चिह्नो, अकालदंतोद्गमकल्प, रत्नपरीक्षा आदि लोकमानसने आकर्षनार स्थूल विषयो; देवगुरुधर्मतत्त्वनुं स्वरूप, गुरुतत्त्वव्यवस्थापनवादस्थल, अष्टप्रातिहार्यनुं स्वरूप, वेदापौरुषेयत्ववादस्थल, धर्मतत्त्वपरामर्श, रत्नत्रयी, जिनप्रतिमाकारधारी मत्स्य अने कमळो, जिनपूजानुं विस्तृत स्वरूप,

सामान्य धर्मोपदेश, मूर्तिपूजाविषयक चर्चास्थल, हस्तितापस तथा शौचवादमतनुं निरसन, अनंतकाय-कंदमूळना भक्षणनुं सदोषपणुं आदि गंभीर धार्मिक विचारो; उपधानविधि, ध्वजारोपणविधि, मूर्तिप्रतिष्ठाविधि आदि विधानो अने ते उपरांत अनेक कथाओ, तथा सुभाषितादि विविध विषयो आलेखवामां आवेला छे. आ बधी वस्तु प्रस्तुत ग्रंथनी विषयानुक्रमणिका जोवाथी ध्यानमां आवी शकशे. आ उपरथी प्रस्तुत ग्रंथकार केटला समर्थ अने बहुश्रुत आचार्य हता अने तेमनी कृति केटली पांडित्यपूर्ण अने अर्थगंभीर छे ए पण समजी शकाशे.

प्रस्तुत कथारत्नकोशनी खास विशेषता ए छे के-बीजा कथाकोशग्रंथोमां एकनी एक प्रचलित कथाओ संग्रहाएली होय छे त्यारे आ कथासंग्रहमां एम नथी, पण कोई कोई आपवादिक कथाने बाद करीए तो लगभग बधी ज कथाओ अपूर्व ज छे, जे बीजे स्थळे भाग्येज जोवामां आवे. आ बधी धर्मकथाओने नाना बाळकोनी बाळभाषामां उतारवामां आवे तो एक सारी जेवी बाळकथानी श्रेणि तैयार थई शके तेम छे. ग्रंथकारे वर्णनशैली एवी राखी छे के ए रीते कथाश्रेणी तैयार करवा इच्छनारने घणुं शोधवानुं नथी रहेतुं.

५ कथारत्नकोशना प्रणेता आचार्य श्रीदेवभद्रसूरि

प्रस्तुत ग्रंथना प्रणेता आचार्य श्रीदेवभद्रसूरि छे. तेओश्री विक्रमनी बारमी शताब्दिना मान्य आचार्य छे. खरतरगच्छीय पट्टावलिमां तेमना विषे मात्र एटलो ज उल्लेख मळे छे के-" तेमणे वि. सं. ११६७ मां श्रीमान् जिनवल्लभगणिने अने वि. सं. ११६९मां वाचनाचार्य श्रीजयदेवसूरि शिष्य श्रीजिनदत्तने आचार्यपदारूढ कर्या हता " आथी विशेष एमना विषे बीजो कशो ज

उल्लेख ए पट्टावलीओमां देखातो नथी. एटले आचार्य श्रीदेवभद्रसूरि विषेनी खास हकीकत आपणे एमनी पोतानी कृतिओ आदि उपरथी ज तारववानी रहे छे.

आचार्य श्रीदेवभद्रसूरिना विषयमां तेमनी जन्मभूमि, जन्मसंवत्, ज्ञाति, माता-पिता, दीक्षासंवत्, आचार्यपदसंवत् आदिने लगती कशीये नोंध हजु सुधी क्यांय जोवामां आवी नथी. तेम छतां तेमणे पोते रचेला महावीरचरित्र (जे वि. सं. ११३९ मां आचार्यपदारूढ थवा पहेलां गुणचंद्रनामावस्थामां रच्युं छे), कथारत्नकोश (जे वि. सं. ११५८ मां रचाएलो छे) अने पार्श्वनाथचरित्र (जे वि. सं. ११६८ मां रचेलुं छे)नी प्रशस्तिओमांथी तेमना विषेनी केटलीक महत्त्वनी माहिती आपणने मळी रहे छे; एटले सौ पहेलां आपणे उपरोक्त त्रणे य ग्रन्थोनी प्रशस्तिओना उपयोगी अंशने जोई लईए—

" अइसयगुणरयणनिही मिच्छत्ततमंधलोयदिणनाहो । दुरुच्छारियवइरो वइरसामी समुप्पन्नो ॥ ४७ ॥
साहाइ तस्स चंदे कुलम्मि निप्पडिमपसमकुलभवणं । आसि सिरिवद्धमाणो मुणिनाहो संजमनिहि व्व ॥ ४८ ॥
मुणिवइणो तस्स हरट्टऽट्टहाससियजसपसाहियासस्स । आसि दुवे वरसीसा जयपयडा सूर-ससिणो व्व ॥ ५० ॥
भवजलहिवीइसंभंतभवियसंताणतारणसमत्थो । बोहित्थो व्व महत्थो सिरिसूरिजिणेसरो पढमो ॥ ५१ ॥
अन्नो य पुन्निमायंदसुंदरो बुद्धिसागरो सूरी । निम्मवियपवरवागरण-छंदसत्थो पसत्थमई ॥ ५३ ॥
एगंतवायविलसिरपरवाइकुरंगभंगसीहाणं । तेसिं सीसो जिणचंदसूरिनामो समुप्पन्नो ॥ ५४ ॥
संवेगरंगसाला न केवलं कव्वविरयणा जेणं । भव्वजणविम्हयकरी विहिया संजमपवित्ती वि ॥ ५५ ॥

ससमय-परसमयन्नू विसुद्धसिद्धंतदेसणाकुसलो । सयलमहिवलयवित्तो अन्नोऽभयदेवसूरि त्ति ॥ ५६ ॥
जेणालंकारधरा सलक्खणा वरपया पसन्ना य । नव्वंगवित्तिरयणेण भारई कामिणि व्व कया ॥ ५७ ॥
तेसिं अत्थि विणेओ समत्थसत्थत्थबोहकुसलमई । सूरी पसन्नचंदो चंदो इव जणमणाणंदो ॥ ५८ ॥
तव्वयणेणं सिरिसुमइवायगाणं विणेयलेसेणं । गणिणा गुणचंदेणं रइयं सिरिवीरचरियमिमं ॥ ५९ ॥

जाओ तीसे सुंदरविचित्तलक्खणविराइयसरीरो । जेट्ठो सिद्धो पुत्तो बीओ पुण वीरनामो त्ति ॥ ७५ ॥
तेहिं तित्थाहिवपरमभत्तिसब्भरसमुब्वहंतेहिं । वीरजिणचरियमेयं कारवियं मुद्धबोहकरं ॥ ८० ॥
नंदसिहिरुद्द ११३९ संखे वोक्कते विक्कमाओ कालम्मि । जेट्ठस्स सुद्धतइयातिहिम्मि सोमे समत्तमिमं ॥ ८३ ॥

गुणचन्द्रीय-देवभद्रीयमहावीरचरितप्रशस्तिः ॥

" चंदकुले गुणगणवद्धमाणसिरिवद्धमाणसूरिस्स । सीसा जिणेसरो बुद्धिसागरो सूरिणो जाया ॥ १ ॥
ताण जिणचंदसूरी सीसो सिरिअभयदेवसूरी वि । रवि-ससहर व्व पयडा अहेसि सियगुणमऊहेहिं ॥ ३ ॥
तेसिं अत्थि विणेओ समत्थसत्थत्थपारपत्तमई । सूरी पसन्नचंदो न नामओ अत्थओ वि परं ॥ ४ ॥
तस्सेवगेहिं सिरिसुमइवायगाण विणेयलेसेहिं । सिरिदेवभद्दसूरीहिं एस रइओ कहाकोसो ॥ ५ ॥
संघधुरंधरसिरिसिद्ध-वीरसेट्ठीण वयणओ जेहिं । चरियं चरिमजिणिंदस्स विरइयं वीरनाहस्स ॥ ६ ॥
परिकम्मिऊण विहियं जेहिं सह भव्वलोगपाउग्गं । संवेगरंगसालाभिहाणमाराहणारयणं ॥ ७ ॥

वसुबाणरुद्द ११५८ संखे वच्चंते विक्कमाओ कालम्मि । लिहिओ पढमम्मि य पोत्थयम्मि गणिअमलचंदेण ॥ ९ ॥

देवभद्राचार्यीयकथाकोशप्रशस्तिः

" तित्थम्मि वट्टंते तस्स भयवओ तियसवंदणिज्जम्मि । चंदकुलम्मि पसिद्धो विउलाए वइरसाहाए ॥
सिरिवद्धमाणसूरी अहेसि तव-नाण-चरणरयणनिही । जस्सऽज्ज वि सुमरंतो लोगो रोमंचमुव्वहइ ॥
तस्साऽऽसि दोन्नि सीसा जयविक्खाया दिवायर-ससि व्व । आयरियजिणेसर-बुद्धिसागरायरियनामाणो ॥
तेसिं च पुणो जाया सीसा दो महियलम्मि सुपसिद्धा । जिणचंदसूरिनामो बीओऽभयदेवसूरि त्ति ॥
सिद्धंतवित्तिविरयण-पगरणउवयरियभव्वलोयाण। को ताण गुणलवं पि हु होज्ज समत्थो पवित्थरिउं ॥
तेसि विणेयस्स पसन्नचंदसूरिस्स सव्वगुणनिहिणो । पयपउमसेवगेहिं सुमइउवज्झायसिस्सेहिं ॥
संवेगरंगसालाऽऽराहणसत्थं जयम्मि वित्थरियं । रइयं च वीरचरियं जेहिं कहारयणकोसो य ॥
सोवन्निडयमंडियमुणिसुव्वय १ वीरभवण २ रमणीए । भरुयच्छे तेहि ठिएहिं मंदिरे आमदत्तस्स ॥
सिरिदेवभद्दसूरीहिं विरइयं पासनाहचरियमिमं । लिहियं पढमिल्लुयपोत्थयम्मि गणिअमलचंदेण ॥
काले वसुरसरुद्दे ११६८ वच्चंते विक्कमाओ सिद्धमिमं । अणुचियमिह सूरीहिं खमियव्वं सोहियव्वं च ॥
॥ इतिश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिपादसेवकश्रीदेवभद्राचार्यविरचितं पार्श्वनाथचरितं समाप्तम् ॥ "

देवभद्रीयपार्श्वनाथचरितप्रशस्तिः ॥

आ उपरांत आचार्य श्रीजिनचंद्रसूरिविरचित संवेगरंगशाला ग्रंथनी पुष्पिका, जे आचार्यश्रीदेवभद्रसूरिना संबंधमां उपयोगी छे ते पण जोई लइए—

" इति श्रीमज्जिनचन्द्रसूरिकृता तद्विनेयश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिसमभ्यर्थितेन गुणचन्द्रगणि[ना] प्रतिसंस्कृता जिनवल्लभगणिना च संशोधिता संवेगरङ्गशालाऽऽराधना समाप्ता ॥ "

उपर जे चार ग्रंथोनी प्रशस्ति अने पुष्पिकानो उल्लेख करवामां आव्यो छे ए उपरथी आचार्य श्रीदेवभद्रसूरिना संबंधमां नीचेनी हकीकत मळी आवे छे.

आचार्य श्रीदेवभद्र, श्रीसुमतिवाचकना शिष्य हता. आचार्यपदारूढ थया पहेलां तेमनुं नाम गुणचंद्रगणी हतुं; जे नामावस्थामां तेमणे वि. सं. ११२५ मां संवेगरंगशालानामना आराधनाशास्त्रने संस्कारयुक्त कर्युं अने वि. सं. ११३९ मां महावीरचरित्रनुं निर्माण कर्युं हतुं.

संवेगरंगशालानी पुष्पिकामां " तद्विनेयश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिसमभ्यर्थितेन गुणचन्द्रगणिना " तथा महावीरचरित्रनी प्रशस्तिमां " सूरी पसन्नचंदो चंदो इव जणमणाणंदो ॥ तव्वयणेणं सिरिसुमइवायगाणं विणेयलेसेणं । गणिणा गुणचंदेणं " ए मुजबना आचार्य श्रीप्रसन्नचंद्र अने श्रीदेवभद्रसूरिना पारस्परिक संबंधना दूरत्वने सूचवता ' समभ्यर्थितेन ' अने ' तव्वयणेणं ' जेवा शब्दो जोवामां आवे छे ज्यारे कथारत्नकोश अने पार्श्वनाथचरित्रनी प्रशस्तिमां ए बन्नेयना पारस्परिक औचित्यभावभर्या गुणानुरागने परसावता 'तस्सेवगेहिं' अने 'पयपउमसेवगेहिं' जेवा शब्दो नजरे पडे छे. आनुं कारण ए ज कल्पी शकाय छे के—आचार्य

श्रीप्रसन्नचंद्रे गुणचंद्रगणिना गुणोथी आकर्षाई तेमने आचार्यपदारूढ कर्या हशे अने ए रीते ए बन्नेय आचार्यो एकबीजामां ओतप्रोत थया हशे.

उपर जणाववामां आव्युं तेम गुणचंद्रगणी अने श्रीदेवभद्रसूरि ए बन्नेय एक ज व्यक्ति छे एमां लेश पण शंकाने स्थान नथी. कारण के जे श्रेष्ठिनी विज्ञप्तिने आधीन थई महावीरचरित्रनी रचना कर्यानो निर्देश कथारत्नकोश अने पार्श्वनाथचरित्रमां छे ए ज उल्लेख, गुरुनामनिर्देश, पट्टपरंपरा वगेरे बधुंय एक सरखुं महावीरचरित्रमां मळी आवे छे. तेमज कथारत्नकोशकार अने पार्श्वनाथचरित्रकार पोताने संवेगरंगशाला ग्रंथना संस्कर्ता तरीके ओळखावे छे छतां ए नाम—देवभद्रसूरि नाम ए ग्रंथनी पुष्पिकामां न मळतां गुणचंद्रगणी ए नामनो उल्लेख मळे छे, जे महावीरचरित्रना प्रणेतानुं नाम छे. एटले कोई पण जातनी शंका विना आनो अर्थ एटलो ज थयो के—आचार्य देवभद्र अने गुणचंद्रगणी ए बन्नेय एक ज व्यक्ति छे.

उपर 'गुणचंद्रगणी अने श्रीदेवभद्रसूरि ए भिन्ननामधारी एक ज महापुरुष छे' ए साबित करवा माटे तेमनी जे त्रण कृतिओनो उल्लेख करवामां आव्यो छे ते उपरांत तेमणे अनेक स्तोत्रोनी तथा प्रमाणप्रकाश (?) जेवा समर्थ दार्शनिक ग्रंथनी पण रचना करी छे. तेमना स्तोत्रो पैकी त्रण स्तोत्रो तेमज प्रमाणप्रकाश (?) ग्रंथनो जेटलो अंश लभ्य थई शक्यां छे ए बधायने अहीं कथारत्नकोशने अंते प्रसिद्ध करेल छे. ए प्रसिद्ध करेल स्तोत्रो जोतां तेमज कथारत्नकोश आदिमां स्थळे स्थळे आवती दार्शनिक चर्चाओ जोतां श्रीदेवभद्राचार्यनो समर्थ दार्शनिक आचार्यनी कोटिमां समावेश करवो जरा पण अनुचित के असंगतिभर्यो नहि ज लागे.

प्रस्तुत प्रकाशनने अंते जे दार्शनिक प्रकरण अने स्तोत्रो प्रसिद्ध करवामां आव्या छे ए पाटण खेत्रवसी पाडाना ताडपत्रीय

भंडारमांनी प्राचीनतम खंडित ताडपत्रीय प्रकरणपोथीमांथी मळी आव्यां छे, जेने आधारे तैयार करी प्रसिद्ध करवामां आवेल छे. ए स्तोत्रो जेवा मळ्या छे तेवा ज शक्य संशोधन साथे प्रसिद्ध कर्या छे, एटले एना संबंधमां खास कशुं ज कहेवानुं नथी; परंतु "प्रमाणप्रकाश" नामनुं जे प्रकरण प्रसिद्ध कर्युं छे ए प्रकरणना नामने अथवा एना प्रणेताने सूचवतो कशोय उल्लेख ए पोथीमांथी मळी शक्यो नथी. ते छतां ए अपूर्ण अने निर्नामक प्रकरणनुं नाम में 'प्रमाणप्रकाश' आप्युं छे ते ए प्रकरणना त्रीजा श्लोकमां आवता "प्रमाणमेव यत् सद्भिस्तद्देवातः प्रकाश्यते" ए आर्थिक अनुसंधानने लक्ष्यमां राखीने ज आपवामां आव्युं छे. ए ज रीते ग्रंथप्रणेता तरीके आचार्य देवभद्रना नामनो उल्लेख करवामां आव्यो छे एनुं कारण ए छे के–आ प्रकरण, उपरोक्त ताडपत्रीय पोथीमां देवभद्रसूरिकृत स्तोत्रसंग्रह साथे संलग्न होई तेमज आचार्य देवभद्रनी स्तोत्ररचनामां तेमज बीजी दरेक कृतिमां तेमनी दार्शनिकतानो प्रभाव देखातो होई आ कृति तेमनी होवी जोईए एम मानीने में पोते प्रस्तुत प्रकरणने एमनी कृति तरीके निर्देशी छे. एटले संभव छे अने कदाच शक्य पण छे के—प्रस्तुत प्रकरणनुं नाम "प्रमाणप्रकाश" न होय अने एना प्रणेता आचार्य देवभद्र पण न होय. आम छतां ए प्रकरणमांनो आठमो श्लोक जोया पछी 'प्रस्तुत प्रकरण श्वेतांबराचार्यविरचित छे' ए विषे तो जरा पण शंका रहेती नथी.

वादन्यायस्ततः सर्वविक्त्वे च भुक्तिसम्भवः । पुंस्त्रियोश्च समा मुक्तिरिति शास्त्रार्थसंग्रहः ॥ ८ ॥

आ श्लोकमां जणाव्या प्रमाणे "प्रस्तुत प्रकरणमां–केवळज्ञानीने आहारनो संभव छे अने पुरुष अने स्त्रीने एकसरखी रीते मोक्ष प्राप्त थई शके छे. आ बे विषयो चर्चवामां आवशे." आथी प्रस्तुत प्रकरण श्वेतांबराचार्यप्रणीत ज छे, ए निर्विवाद रीते पुरवार थाय छे.

आ प्रमाणे अहीं टूंकमां जणाववामां आव्युं छे ते उपरथी आपणने खात्री थाय छे के—पूज्य आचार्यश्री देवभद्रसूरि समर्थ कथाकार, स्तुतिकार तेमज दार्शनिक बहुश्रुत आचार्य हता.

आचार्य देवभद्रसूरिना संबंधमां आटलुं निवेदन कर्या पछी 'तेओश्री कया गच्छना हता' ए प्रश्न रही जाय छे. आ विषे अहीं एटलुं ज कहेवुं प्राप्त छे के—आजे एमना जेटला ग्रंथो विद्यमान छे ए पैकी कोईमां पण तेओश्रीए पोताना गच्छनो नामनिर्देश कर्यो नथी; परंतु ए ग्रंथोनी विस्तृत प्रशस्तिओमां तेओ पोताने मात्र वज्रशाखीय अने चंद्रकुलीन तरीके ज ओळखावे छे. एटले आ विषे अमे पण तेओश्री पोते पोताने ओळखावे छे तेम तेमने 'वज्रशाखीय अने चंद्रकुलीन आचार्य' तरीके ज ओळखावीए छीए.

जो के जेसलमेरनी ताडपत्रीय पार्श्वनाथचरित्रनी प्रतिनी प्रशस्तिमां 'विउलाए वइरसाहाए' पाठने भूंसी नाखीने बदलामां 'खरयरो वइरसाहाए' पाठ, अने 'आयरियजिणेसरबुद्धिसागरायरियनामाणो' पाठने भूंसी नाखीने तेना स्थानमां 'आयरियजिणेसरबुद्धिसागरा खरयरा जाया' पाठ लखी नाखेलो मळे छे; परंतु ए रीते भूंसी—बगाडीने नवा बनावेला पाठोनो ऐतिहासिक प्रमाण तरीके क्यारे पण उपयोग करी शकाय नहि. एटले अमे एवा पाठोने अमारी प्रस्तुत प्रस्तावनामां प्रमाण तरीके स्वीकार्या नथी. उपर जणाववामां आव्युं तेम जेसलमेरमां एवी घणी प्राचीन प्रतिओ छे जेमांनी प्रशस्ति अने पुष्पिकाओना पाठोने गच्छव्यामोहने अधीन थई बगाडीने ते ते ठेकाणे 'खरतर' शब्द लखी नाखवामां आव्यो छे, जे घणुं ज अनुचित कार्य छे.

६ कथारत्नकोशनां अनुकरण अने अवतरण

आचार्य श्रीदेवभद्रनो प्रस्तुत कथारत्नकोश रचायो त्यारथी तेनी विशिष्टताने लई एटली बधी ख्याति पामी चूक्यो हतो के बीजा

बीजा जैन आचार्योए पोतपोताना ग्रंथोमां तेनां अनुकरण अने अवतरणो करीने पोतानी अने पोतानी कृतिओनी प्रतिष्ठा वधारी हती. आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत देववंदनभाष्य उपर श्रीधर्मकीर्तिए रचेली 'संघाचारविधि' नामनी टीकामां कथारत्नकोशनी कथाने जेमनी तेम सहज फेरफार करीने उद्धरी छे. तेम ज सुविहित पूर्वाचार्यप्रणीत 'गुरुतत्त्वसिद्धि'मां कथारत्नकोशनुं एक आखुं प्रकरण ज अक्षरशः गोठवी दीधुं छे. अने आचार्य श्रीजिनप्रभसूरिए पोताना विधिप्रपा ग्रंथमां ध्वजारोपणविधि, प्रतिष्ठोपकरणसंग्रह तथा प्रतिष्ठाविधि नामनां प्रकरणोमां कथारत्नकोशनां ते ते सळंग प्रकरणो अने तेमां आवता श्लोकोनां अवतरणो करेलां छे.

उक्त हकीकतनो स्पष्ट ख्याल आवे ते माटे आ नीचे थोडोक उतारो आपीए छीए—

कथारत्नकोश विजयकथानक ११	संघाचारविधि विजयकुमारकथा पृ. ४२८
तस्स य रन्नो मित्तो अहेसि दढगाढरूढपडिबंधो ।	दृढगाढप्रतिबन्धः श्रीगुप्ताख्यः कुबेरसमविभवः ।
आबालकालसद्धंसुकीलिओ नाम सिरिगुत्तो ॥ १९ ॥	सद्धंसुकीलिओ तस्स आसि मित्तो महाकिविणो ॥२॥
सुहिसयणबंधवाणं थेवं पि हु नेव देइ ओगासं ।	न ददाति स्वजनेभ्यः किञ्चिन्न व्ययति किञ्चिदपि धर्मे ।
धणमुच्छाए परिहरइ दूरओ साहुगोट्ठिं पि ॥ २१ ॥	धणमुच्छाए वज्जइ गमागमं सव्वठाणेसु ॥ ३ ॥
नवरं चिरपुरिसागय-सावयधम्मक्खणं जहावसरं ।	नवरं चिरपुरुषागत-जिनवरधर्मक्षणं यथावसरम् ।
जिणपूयणाइपमुहं जहापयट्टं कुणइ किं पि ॥ २२ ॥	जिणपूयणाइपमुहं जहापयट्टं कुणइ किं पि ॥ ४ ॥
उक्खणणखणणपरियत्तणाहिं गोवेइ तं च नियधणं ।	उत्खननखननपरिवर्त्तनादिभिः तद्धनं निजं नित्यम् ।
अवहारसंकियमणो पइक्खणं लंछणे नियइ ॥ २३ ॥	अवहारसंकियमणो गोवंतो सो किलेसेइ ॥ ५ ॥

सिट्ठं जणणीए अन्नया य तुह पुत्त ! संतिओ ताओ।
साहिंतो मह कहमवि परितोसगओ गिहादूरे ॥ ५२ ॥
अट्ठावयस्स कोडीउ अट्ठ चिट्ठंति भूमिनिहियाओ।
ता वच्छ ! किं न ठाणाइं ताइं इण्हि खणेसि ? त्ति ॥५३॥
इत्यादि ॥

सदनान्तः किञ्चिदपि द्रव्यमपश्यन्नसौ बहुक्लेशैः।
भोयणमवि अज्जंतो कया वि जणणीइ इममुत्तो ॥८॥
वत्सेह स्थानेऽष्टौ कोट्यः कनकस्य सन्ति निक्षिप्ताः।
तुह पिउणा ता गिण्हसु कयं किलेसेहिं सेसेहिं ॥९॥
इत्यादि ॥

प्रस्तुत विजय नामना श्रेष्ठिपुत्रनी कथा कथारत्नकोशकारे चैत्याधिकारमां आपेली छे त्यारे ए ज कथा संघाचारविधिना प्रणेताए स्तोत्रना अधिकारमां वर्णवेली छे. कथारत्नकोशमां ए कथा आखी प्राकृतमां छे त्यारे संघाचारविधिकारे ए कथाने बे भाषामां एटले के एक ज गाथामां पूर्वार्ध संस्कृत अने उत्तरार्ध प्राकृत एम बे भाषामां योजेली छे. संघाचारविधिटीकामांनी कथामां जे उत्तरार्ध प्राकृत छे ते आखी कथामां मोटे भागे कथारत्नकोशनां अक्षरे अक्षर उद्धरेल छे अने पूर्वार्ध पण कथारत्नकोशमांनी कथानां लगभग अनुवाद जेवां छे, जे उपर आपेली सामसामी गाथाओने सरखाववाथी स्पष्ट थई जाय एम छे.

आचार्यमहाराज श्रीविजयनीतिसूरि तरफथी प्रसिद्ध थएल गुरुतत्त्वसिद्धिमां पृ० ४७ उपर संवेगरंगशालाना नामे उद्धरेल "इत्थंतरम्मि सड्ढो आसंधरो नाम भणइ दुवियड्ढो" ए गाथाथी शरू थतुं ५९ गाथानुं जे प्रकरण छे ते आखुंय कथारत्नकोशना पृ. १० थी १२ मां गाथा १८५ थी २४३ सुधीमां छे. गुरुतत्त्वसिद्धिमां आ प्रकरण संवेगरंगशालाना उतारा तरीके जणावेल छे पण खरी रीते आ प्रकरण कथारत्नकोशमांनुं ज छे. आ उपरथी गुरुतत्त्वसिद्धिना रचनासमय उपर पण प्रकाश पडे छे अने कथारत्नकोशनी आदेयता पण पुरवार थाय छे.

विधिप्रपा पृ० १०९ उपर प्रतिष्ठा प्रसंगने लगती केटलीक मुद्राओना वर्णन अंगेनी पांच गाथाओ आपेली छे ते अने त्यार पछी पृ० १११ उपर प्रतिष्ठा संबंधे जे ३९ गाथाओ छे ते बधी अक्षरशः प्रस्तुत कथारत्नकोशमां पृ० ८६ गाथा १७ थी ५५ सुधीमां उपलब्ध छे. तथा पृ० ११४ उपर 'ध्वजारोपणविधि'ना नाम नीचे जे ४० थी ५० गाथाओ नोंधेली छे ते पण कथारत्नकोशमां आवता विजयकथानकमां पृ० ७१ उपर आपेली ११४ थी १२४ गाथाओ छे. विधिप्रपाकारे त्यां कथारत्नकोशना नामनो उल्लेख पण कर्यो छे.

आ प्रमाणे अहीं कथारत्नकोशनुं अनुकरण अने अवतरण करनार सुविहित पुरुषोना ये त्रण ग्रंथोनी तुलना करी छे, परंतु बीजा आचार्योनी कृतिमां पण कथारत्नकोशनां अनुकरणो अने अवतरणो जरूर हशे; परंतु अहीं तो आटलेथी ज विरमुं छुं. आ अनुकरणो अने अवतरणोए पण प्रस्तुत कथारत्नकोश ग्रंथना संशोधनमां वधारानी सहाय करी छे एटले ए दृष्टिए पण ते ते अनुकरण करनारा अने अवतरण करनारा आचार्यो विशेष स्मरणार्ह छे.

७ कथारत्नकोशना संशोधन माटेनी प्रतिओ

आजे कथारत्नकोशनी एकंदर त्रण प्रतिओ विद्यमान छे एम जाणी शकायुं छे. जे पैकीनी एक प्रति खंभातना ताडपत्रीय भंडारमां छे, एक प्रवर्त्तकजी महाराज श्रीकांतिविजयजी महाराजना वडोदराना विशाळ ज्ञानभंडारमां छे अने एक चूरु (मारवाड)ना तेरापंथीय ज्ञानभंडारमां छे. आ रीते आजे जोवा–जाणवामां आवेली त्रण प्रतो पैकी मात्र खंभातना भंडारनी प्रति ज साद्यंत परिपूर्ण छे. ते सिवाय पूज्य प्रवर्तकजी महाराजश्रीना भंडारनी प्रति एककाळे साद्यंत परिपूर्ण होवा छतां अत्यारे एमांथी आदि–

मध्य-अंतमांनां घणां पानां गूम थएलां होई खंडित प्रति छे ज्यारे चूरुना भंडारनी प्रति कागळ उपर लखाएली ग्रंथना उत्तरखंड-रूप छे. आ त्रण प्रतो पैकी जे बे अति प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिओनो में मारा प्रस्तुत संशोधनमां उपयोग कर्यो छे तेनो परिचय आ ठेकाणे कराववामां आवे छे—

खं० प्रति—आ प्रति खंभातना "श्रीशान्तिनाथ जैन ज्ञानभंडार"ने नामे ओळखाता प्राचीनतम अने गौरवशाली ताड-पत्रीय जैन ज्ञानभंडारनी छे. प्रति अतिसुकोमळ सुंदरतम श्रीताडपत्र उपर सुंदर लिपिथी लखाएली छे. एनी पत्रसंख्या ३१७ छे. तेनी दरेक पुठीमां त्रण, चार के पांच लीटीओ लखेली छे. दरेक लीटीमां १२७ थी १४० लगभग अक्षरो छे. ए अक्षरो ठेक-ठेकाणे नाना-मोटा लखावा छतां लिपिनुं सौंदर्य आदिथी अंत सुधी एकसरखुं जळवाएलुं छे. प्रतिनी लंबाई पहोळाई ३१×२। इंचनी छे. प्रति लांबी होई तेनां पानां सुव्यवस्थित रीते रही शके ए कारणसर दोरो परोववा माटे तेना वचमां बे काणां पाडी त्रण विभागमां लखाएली छे. प्रति विक्रम संवत् १२८६ मां लखाएली होवा छतां तेनी स्थिति हजु जेवी ने तेवी निराबाध छे. प्रति घणी ज अशुद्ध छे, एटलुं ज नहि पण एमां घणे ठेकाणे पंक्तिओनी पंक्तिओ जेटला पाठो पडी गया छे, तेमज लेखकनी लिपिविषयक अज्ञानताने लीधे स्थान-स्थान पर अक्षरोनी फेरबदली तथा अस्तव्यस्तता पण बहुज थएलां छे. प्रतिना अंतमां तेना लखावनार पुण्यवान् आचार्य अने श्रावकनी एकवीस श्लोक जेटली लांबी प्रशस्ति लखेली होवा छतां कोई भाग्यवाने ए प्रशस्तिने सदंतर भूसी नाखवानुं पुण्यकार्य उपार्जन कर्युं छे !!! ते छतां ए घसी-भूसी नाखेली प्रशस्तिने अति प्रयत्नने अंते अमे जे रीते अने जेटली वांची शक्या छीए तेटलो उतारो आ नीचे आपीए छीए—

इति प्रव्रज्यार्थचिन्तायां श्रीप्रभप्रभाचन्द्रचरितमुक्तम् । तदुक्तौ च सम्यक्त्वादिपञ्चाशदर्थाधिकारसम्बद्धः कथारत्नकोशोऽपि समाप्तः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥ १ ॥ छ ॥ ६०२ ॥ छ ॥ संवत् १२८९ वर्षे श्रावण शुदि ३ बुधेऽद्येह प्रह्लादनपुरे कथारत्नकोशपुस्तकमलेखीति भद्रमिति ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ श्रीमद्वीरदशः पान्तु सुधावृष्टेः सहोदराः । स्वर्भूर्भुगर्भशस्यानां फलसम्पत्तिहेतुकम् ॥ १ ॥
श्रीमत्प्राग्वाटवंशो जगति विजयते.......................................जेगुरुगणनामोढमेधाभिरामः ।
उच्चैः शाखासहस्रैः परिफलितवपुः पात्रपूरान्वितोऽसौ, चित्रं छिद्रं न यस्मिन्नघजडकलितो नैव शुक्तो न हीनः ॥ २ ॥
तस्मिन् क्ष्माभृति...ययनोदया...नमलक्षणाभिदुरि ....ला.........स ॥ ३ ॥
..........................को, मोढेरके वीरजिनस्य भक्तः । अगण्यपुण्योपचितोऽत्र शस्यो, देदाख्यसाधुः स्वजनैकमान्यः ॥ ४ ॥
तस्यात्मजो देल्हणनामधेय, औदार्यधैर्यादिगुणैरमेयः । फलत्रमेतस्य बभूव धन्या, दानेक......रिरेव...... ॥ ५ ॥
.........प्रभूता....................................... । ....तदानशीलोछीते मिमीतेत्फलयेतनूजे ॥ ६ ॥
आद्याऽऽदिमस्याजनि देल्हुकाख्या, कान्ताऽभवद्धाइणिका द्वितीया । पुत्रोऽपरस्याः किल राजदेवो, ज्येष्ठः कनिष्ठोऽजनि कामदेवः ॥७
राजदेवस्य तो... । .... ॥ ८ ॥
ना...कामा विदिता प्रशान्ता, पतिव्रता थेहडसाधुकान्ता । विख्यातवंशा पतिभक्तिरक्ता, दोषैर्विमुक्ता कुलधर्मयुक्ता ॥ ९ ॥
...शुभं सुम......समा.. । तस्य प्रणाम......तकामरामदेव इति निर्मितन ॥ १० ॥
.... । ....युवतिका: ॥ ११ ॥

प्रथमा विजयिणिनामि, द्वितीया भोलिकाभिधा । शम्भूदेवो विनीतोऽस्ति, भोलीपुत्रः........................ ॥ १२ ॥
पत्नी कल्हू रामदेवस्यं दक्षा प्रत्यक्षेयं दृश्यते शुद्धपक्षा। भर्तुर्भक्ता शुद्धशीला विनीता, जाता चेयं रामचन्द्रस्य सीता ॥१३॥
मालवमंडलमध्ये.............................भूपाल... । ....णोपार्जितसंतत पाण्डित्यं रामदेवो चम्रू ॥ १४ ॥
जिनेन्द्रदेवाल[य]पौषधे च, वापीसरःकूपनिपानकानि। नवीन-जीर्णोद्धरणेषु नित्यं सदोद्यतः पण्डितरामदेवः ॥ १५ ॥
षड्दर्शने पूजनबद्धकक्षः, दाने च दीनोद्धरणे च दक्षः । सन्न्यायमार्गे कृतशुद्धपक्षः............................ ॥ १६ ॥
........................थी.........हेंकुलगोत्र...... । प्रसादमासाद्य चतुर्दुरीत्या आचन्द्रसूर्यं शतशास्त्रमेतु ॥ १७ ॥
त...।...सुरयो मान्याः, श्रीश्रीपरमेश्वराः । तत्पादाम्बुजरवयः, श्रीजगच्चन्द्रसूरयः (?) ॥ १८ ॥
वादि.................................. । श्रीरवितिलका................................ ॥ १९ ॥
श्रीसोमतिलकसूरिर्भूरिगुणश्चरितचारुचारित्रः । तच्छिष्यः सोमयशास्तस्मादुपदेशमासाद्य ॥ २० ॥
विद्यादानं दानतो मुख्यमेतज्ज्ञात्वा सम्यक् श्रीकथारत्नकोशः । पित्रोः.........पुण्यहेतोर्जैनं शास्त्रं..................... ॥ २१ ॥
.... ॥ २२ ॥
हिमकारगज.........दंतैश्च शैलेन्द्रस्य मद्दे ..... गिरिगणेशज्योत्स्ना.......या । यावद्गांग जलौकसो...... ॥ २३ ॥
॥ छ ॥.. ॥ छ ॥

प्रस्तुत प्रतिनां पानां वच्चमां कोई कोई ठेकाणे घसाई गएलां छे ए बाद करीए तो आ प्रति सांगंत परिपूर्ण छे. प्रति खंभातना ज्ञानभंडारनी होई तेनी संज्ञा अमे खं० राखी छे. परंतु ज्यां प्र० प्रति खंडित होई फक्त आ एक ज प्रतिना आधारे संशोधन कर्युं

छे त्यां आ प्रतिना अशुद्ध पाठोने टिप्पणमां आपतां आ प्रतिने अमे प्रतौ ए संकेतथी ओळखावी छे. एटले के आथी अमे एम जणाववा इच्छीए छीए के ज्यां अमे पाठभेद साथे प्रतौ एम नोंध्युं होय त्यां एम समजवुं के ए ठेकाणे प्र० प्रति खंडित होई ते ते विभागने मात्र खं० प्रतिना आधारे ज सम्पादित करवामां आव्यो छे.

प्र० प्रति—आ प्रति पूज्यपाद वयोवृद्ध शांतमूर्ति परमगुरुदेव प्रवर्तकजी महाराज श्री१००८श्री कांतिविजयजीमहाराजना वडोदराना जैन ज्ञानभंडारनी छे. ए प्रति पाटण श्रीसंघना ज्ञानभंडारनां अस्तव्यस्त ताडपत्रीय पानांमांथी मेळवेली होई खरी रीते ए पाटण श्रीसंघना ज्ञानभंडारनी ज प्रति कही शकाय. आ प्रति सुंदरतम श्रीताडपत्र उपर अतिमनोहर एकधारी लिपिथी लखाएली छे. प्रतिना अंतनो भाग अधूरो होई तेनां एकंदर केटलां पानां हशे ए कही शकाय तेम नथी. ते छतां अत्यारे जे पानां विद्यमान छे ते १३९ थी २५५ सुधी छे. तेमां पण वचमांथी १६७, १६८, २०१ थी २२७, २४६ अने २५९ आ प्रमाणे बधां मळी एकंदर एकत्रीस पानां गुम थयां छे. एटले आ प्रतिनां विद्यमान पानां मात्र १२६ होई सामान्य रीते एम कही शकाय के आ प्रतिनां बे भागनां पानां गुम थयां छे ज्यारे मात्र त्रीजा भाग जेटलां ज पानां विद्यमान छे. आम छतां आ खंडित प्रति शुद्धप्राय होई घणे प्रस्तुत ग्रंथना संशोधनमां खूब ज मदद करी छे. अनेक ठेकाणे पंक्तिओनी पंक्ति जेटला पाठो, जे खं० प्रतिमां पडी गएला हता ते पण आ खंडित प्रतिद्वारा पूरी शकाया छे. प्रस्तुत प्रतिने कोई विद्वाने वांचीने सांगोपांग सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे अने कोई कोई ठेकाणे कठिन शब्द उपर टिप्पण पण करेल छे. प्रस्तुत प्रति ताडपत्रीय लखाणना जमानामां ज गमे ते कारणसर खंडित थएल होई तेमां घणे ठेकाणे पानां नवां लखावीने उमेरवामां आव्यां छे, जे खं० प्रतिने मळती कोई प्रति

उपरथी लखाएलां होय तेम लागे छे. प्रतिना पानानी दरेक पुठीमां पांच के छ लीटीओ लखेली छे. दरेक लीटीमां ११५ थी १३० अक्षरो छे. प्रतिनी लंबाई-पहोळाई ३०×२। इंचनी छे. आ प्रति पण उपर जणाव्या मुजब दोरो परोववा माटे वचमां बे काणां पाडी त्रण विभागमां लखवामां आवी छे. प्रतिनी लिपि अने स्थिति जोतां ए खं० प्रति करतां वधारे प्राचीन छे अने एनी स्थिति जराजीर्ण थई गई छे. प्रस्तुत प्रति अत्यारे प्रवर्त्तकजी महाराजश्रीना ज्ञानभंडारमां होई एनी संज्ञा अमे प्र० राखी छे अने ज्यां प्रतिमांना सुधारेला पाठभेदोने अमे पाठांतरमां आप्या छे त्यां प्रसं० एम जणाव्युं छे.

प्रतिओनी विशेषता अने शुद्धाशुद्धयादि

उपर जे बे प्रतिओनो परिचय आपवामां आव्यो छे ते पैकी प्र० प्रति भ्रान्तिरहित शुद्ध लिपिमां लखाएली छे. एमां लेखकना लिपिविषयक अज्ञानजनित अशुद्धिओ बहु ज ओछी छे तेमज ए प्रतिने कोई विद्वाने सुधारेली पण छे; एटले तेना विषे फक्त एटलुं ज कहेवानुं रहे छे के प्रतिना शोधके कथासमाप्तिनी पुष्पिकामां केटलेक ठेकाणे "इति श्रीदेवभद्रसूरिविरचिते" ए प्रमाणे ग्रंथकारना नामनो निर्देश करती जे पंक्ति उमेरेली छे ए अमे स्वीकारी नथी. आ सिवाय आ प्रति विषे खास कशुं ज कहेवानुं नथी.

परंतु खं० प्रतिमां लेखकना प्रमाद अने लिपिविषयक अज्ञानपणाने लई ई ई, ए प, गु तु, न न, ह्न ह्व, ठ व, ड द, ड र, ण ल, त्थ च्छ, न्त त्त, न्ति त्ति, न्तु त्तु, नु तु, प य, प य, व च, म स, ल भ, श प स इत्यादि अक्षरोनो परस्पर विपर्यास थवाने

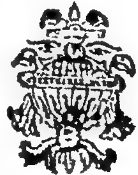
लीधे घणी ज अशुद्धिओ थधी जवा पामी छे. तेम ज प्रतिना लेखके घणे ठेकाणे पडिमात्रा अने ह्रस्व इकारनी वेलंटि–[–मां कशो भेद राख्यो नथी. घणे ठेकाणे एकवडाने बदले बेवडा अने बेवडाने बदले एकवडा अक्षरो लखी नाख्या छे. आ जातना अशुद्ध पाठोने अमे लिपिभ्रान्तिना नियमो, शास्त्रनो विषय, ग्रंथकारनी भाषा, छंदनुं औचित्य आदि वस्तुने लक्षमां राखी सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे. अने आ रीते सुधारेला पाठोने, वाचकगणने वांचवामां गरबड के भ्रान्ति न थाय ए माटे कोष्ठकमां न आपतां मूळमां ज अमे आप्या छे अने अशुद्ध पाठोने यथायोग्य नीचे टिप्पणमां आप्या छे. परंतु ज्यां ज्यां बीजी प्रति सहायक थती रही छे त्यां अमे एवा अशुद्ध पाठोने जता ज कर्या छे. प्रस्तुत संपादनमां घणे ठेकाणे कुन्त, होन्ति, कुण्डल इत्यादि जेवा परसवर्णयुक्त पाठो नजरे पडशे ए अमे नथी कर्या, पण प्रतिमां ज ए जातना परसवर्णवाळा पाठो छे. तेमज उच्चिय (सं उचित)ने बदले उच्चिय, सक्खं सक्खा (सं० साक्षात्) ने बदले संखं संखा जेवा विविध प्रयोगो देखाशे अने दीर्घ तथा अनुस्वारथी पर बेवडाएला अक्षरवाळा पंच्छा, कंक्खा, अहाक्खाय जेवा पाठो पण जोवामां आवशे ए बधा पाठो आखा ग्रंथमां ठेक–ठेकाणे उपलब्ध थता होई ए बधाने सुधारवा अनुचित समजी जेम ने तेम कायम राखवामां आव्या छे.

प्रस्तुत मुद्रणमां ज्यां ज्यां प्रतिमां पाठो के अक्षरो पडी गएला लाग्या छे त्यां त्यां अर्थानुसंधान माटे जे नवी पाठपूर्ति करवामां आवी छे ए दरेक पाठोने [ ] आवा चोरस कोष्ठकमां आप्या छे.

प्रस्तुत प्रकाशनमां पत्र १०१ना बीजा पृष्ठमां पहेला श्लोकना उत्तरार्धमां भ्रान्तिथी 'जनितसम्मर्दि' पाठ छपायो छे तेने सुधारीने 'जनितसम्मुदि' ए प्रमाणे वांचवो.

अंतमां प्रस्तुत ग्रंथना संशोधनमां अने तेनी विषमपदार्थद्योतक टिप्पणी करवामां अति सावधानता राखवा छतां मतिभ्रमथी थएली स्खलनाओ जणाय तेने सुधारीने वांचवा विद्वानोने अभ्यर्थना छे. इति शम् ।

पूज्यपाद प्रवर्त्तकजी महाराज श्री१००८श्रीकान्तिविजयजीप्रशिष्य—
पूज्य श्रीचतुरविजयजीमहाराज शिष्य मुनिपुण्यविजय.



कथारत्नकोशस्यानां कथानकादीनामनुक्रमणिका।



धर्माधिकारिसामान्यगुणवर्णनाधिकारः

अवशेषाश्चतुर्विंशतिः सामान्यगुणाः

कथारत्नकोशस्य शुद्धिपत्रम्



अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः
सत्ययासत्य	सत्यया-सत्य	२-१	१३	य इह	य गिहि	६७-१	६
वहुओ	वहूओ	३-१	१०	घणिणा	त्रणिणा	७०-१	३
संगं	संगो	१०-२	४	दघोघा	दघोघां	१०२-१	६
मीसिं	मेसिं	१०-२	११	एसो	एसो,	११२-१	८
तहाहभय	तहाभव	३९-१	१०	विश्वस्तः	विश्वस्तः ॥	११२-२	१४
कुंडुं	कुडुं	४१-१	१०	प्रतौ	प्रतौ ।	११५-१	१२
सुप्रत्न	सुप्रयत्न	४८-१	१३	वाव[रा]	वावा[रा]	१२२-१	२
युपं, सा	युपं सा,	५१-१	१	८ ॥	॥ ८	१२२-१	१४
शास्विनां	शाखिनां	६१-१	१३	निरनीकु	नीरनिकु	१३५-१	१०
मृगेन्द्र यून्दं	मृगेन्द्रयून्दं	६४-२	१२	चउरगुणो	चडइ गुणो	१३८-२	९

अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः	अशुद्धिः	शुद्धिः	पत्रम्	पङ्क्तिः
विह	विहं	१४१–२	८	मीयगं	मीयंग	२०२–२	२
सम्पादम	सम्पादन	१५०–२	१३	ख०	खं०	२०२–२	१४
लोचना	लोचनौ	१५४–१	१३	आँवयं	आवयं	२०७–१	३
°स्तत्त्र यत्नः प्र०	°स्तत्र प्रयत्नः खं०	१८३–१	१४	वेंतो	वेंतो	२०७–१	१०
°यं संप°	°पयं संपव°	१८३–१	१४	व्यति	[तद्]व्यति	२१७–१	१०
विववज्जयं	विवज्जियं	१८४–२	६	कुतंसवि	कुतसंवि	२२६–१	१३
अनिरं वारि	अनिवारि	१९२–१	१३	पृथ्वीवलयम्	०	२७९–१	१४
नयरम्मि	नयरम्मि,	१९३–१	५	कुवलयं–	कुवलयं– पृथ्वीवलयम्,	२७९–१	१४
त्करा:'–	त्करा:'	१९३–१	१४	पिवि	पिविं	२८८–२	१०



॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

सिरिदेवभद्दसूरिविरइओ



कहारयणकोसो ।



। पढमो धम्माहिगारिसामन्नगुणवण्णणाहिगारो ।

मङ्गलम्

॥ ॐ नमो जिनागमाय ॥

सम्मत्तपडलयं ।



पडिबिंबियपणयजणा निलीणभवभीरुभवलोय व । उम्मुहमऊहनिवहा सिवभवणारोहसेणि व ॥ १ ॥
भीमभवोयहिलंघणसज्जा सज्जाणवत्तपंति व । चरणनहमालिया सहइ जस्स सो जयइ पढमजिणो ॥ २ ॥
सुमणोऽभिरामरूवो चारुपओ सुरहिवयणसयवत्तो । जयइ सिवनयरिपत्थियमंगलकलसो व वीरजिणो ॥ ३ ॥
स जयइ पुणो वि दुज्जयकसायसरहोलिविहलिउच्छाहो । लंछणछलेण भीउ व केसरी जं समल्लीणो ॥ ४ ॥
भवचारयबंधं बंधुणो व अवणिंतु वोऽवसेसा वि । जिणवइणो मोहमहंधयारहरणम्मि रविणो व ॥ ५ ॥
पासस्स फणामणिणो उम्मुहपसरंतकंतिणो दूरं । विहियावट्ठियदीवूसव व तिमिरं हरंतु ममं ॥ ६ ॥
जयइ विलसंतनिम्मलमऊहमंडलपसाहियसरीरा । पग्गहियपारिवेस व ससिकला भयवई वाणी ॥ ७ ॥

---

१ प्रतिबिम्बितप्रणतजना निलीनभवभीरुभव्यलोकेव । उन्मुखमयूखनिवहा शिवभवनारोहश्रेणिरिव ॥ १ ॥ भीमभवोदधिलङ्घनसज्जा सद्यानपात्रपङ्क्तिरिव । चरणनखमालिका राजते यस्य स जयति प्रथमजिनः ॥ २ ॥ २ अस्यामार्यायां श्लिष्टविशेषणैः वीरो भगवान् मङ्गलकलशेनोपमीयते, तथाहि—सुमनसां—विदुषां सुराणां चाभिरामं रूपं यस्य एवंविधो भगवान्, कलशपक्षे सुष्ठु मनोऽभिरामं रूपं यस्य। 'चारुपदः' शोभनचरणो भगवान्, अन्यत्र चारु पयो—दुग्धं जलं वा यत्र स चारुपयाः। सुरभि—सुगन्धयुक्तं वदनमेव शतपत्रं यस्यैतादृशो भगवान्, अन्यत्र सुरभि वदने—कलशमुखे शतपत्रं यस्य ॥ ३ दुर्जयकषायशरभावलिविफलितोत्साहः। शरभावलिः—अष्टापदपंक्तिः ॥ ४ अपनयन्तु ॥ ५ °सेवा वि इति प्रतौ पाठः ॥ ६ विहितावस्थितदीपोत्सवा इव ॥ ७ विलसन्निर्मलमयूख-

ग्रन्थनाम अभिधेयं च

संसिरीया सचाहिड्डिया य सचकनंदया सुगया । गुरुणो हरिणो व कुणंतु वंछियं निच्छियं मज्झ ॥ ८ ॥

इत्थं थोयवत्थुंइसामत्थेणं जडो वि जंपेमि । सम्मत्ताइपयत्थप्पडिबद्धं कहारयणकोसं ॥ ९ ॥

एत्थ य जिणिंदसमयम्मि सम्मया मुत्तिपहपवित्तीए । सुमुणी सुसावगो वि य जेट्ठुत्तकिरियाकलावन्नू ॥ १० ॥

सुमुणित्तणं न पायं सुसावगत्तं विणा न संभवइ । फासियदेसचरित्तो हि सव्वविरइं पि काउमलं ॥ ११ ॥

सामन्न-विसेसगुणन्निओ य सुसावगत्तणं लहइ । सो पुण सामन्नगुणी नेओ सम्माइदारेहिं ॥ १२ ॥

सामान्य-गुणाः विशेष-गुणाश्च

सम्मत्तजुओ १ तहोससंक २ कंखा ३ विगिछिय ४ म्मुक्को । अविमूढदिट्ठि ५ उववूहगो ६ थिरीकरणनिरओ ७ य ॥

वच्छल्ल ८ पभावणगं ९ पंचनमोकारपरमभत्तो १० य । चेइय ११ बिंबपइट्ठा १२ पूया १३ कारावणुज्जुत्तो ॥१४॥

जिणदव्वरक्खगो १४ समयसुइपरो १५ नाण १६ अभयदाई १७ य । साहूवट्ठंभकरो १८ तह कुग्गहनिग्गहपहाणो १९ ॥

मज्झत्थो य २० समत्थो २१ अत्थी २२ आलोयगो २३ उवायण्णू २४ ।
उवसंतो २५ दक्खो २६ दक्खिणो य २७ धीरो य २८ गंभीरो २९ ॥ १६ ॥

मण्डलप्रसाधितशरीरा प्रगृहीतपरिवेषा इव । प्रसाधित-अलंकृत । परिवेषः—चन्द्रपरितोवर्ति वर्षागमनसूचकं जलकुण्डकम् ॥

१ अत्र श्लिष्टविशेषणैर्गुरवो हरिभिः–वासुदेवैः सहोपमीयन्ते । तथाहि—'सश्रीकाः' ज्ञानादिलक्ष्मीविभूषिताः गुरवः, अन्यत्र लक्ष्म्यभिधानपत्नीयुक्ताः । सत्येन अधिष्ठिता गुरवः, अन्यत्र सत्यभामापत्न्या युक्ताः । सच्चक्र–सतां समूहः तदाह्लादकाः गुरवः, अन्यत्र सत् च सत् चक्रं च–चक्राख्यमायुधं तदानन्दकाः, पूर्वोक्तो वा अर्थः । सु–शोभनं गतं–गमनं ज्ञानं देवादिका वा गतिर्येषां ते एवंविधा गुरवः, अन्यत्र गदाख्यमायुधं येषां ते इति ॥ २ °त्थुई° प्रतौ ॥ ३ ड्डसपिमत्त्यन्तं पदमिदम् ॥ ४ जिनागमे ॥ ५ यथोक्तक्रियाकलापज्ञः ॥ ६ स्पृष्टदेशचारित्रः ॥ ७ सुसाध° प्रतौ ॥

इंदियजई ३० अपिसुणो ३१ परोवयारी ३२ तहा विणयजुत्तो ३३। इय तेत्तीसमिमेसुं नरवम्माई य दिट्ठंता ॥ १७ ॥

सामन्नगुणाणुगओ विसेसगुणधरणधीरयमुवेइ । ते य इह विसेसगुणा जीववहविरमणाईया ॥ १८ ॥

जीववह १ अलिय २ परदव्व ३ जुवइवज्जण ४ परिग्गहपमाणं ५। दिसिमाण ६ भोगउवभोग ७ ऽणत्थदंडवयं ८ चेव ॥

सामाइय ९ देसावगासियं च १० पोसहवयं ११ अतिहिदाणं १२ ।

वंदण १३ पडिक्कमणं १४ काउस्सग्ग १५ संवरण १६ पव्वज्जा १७ ॥ २० ॥

एए हि विसेसगुणा दिट्ठंता एसु जन्नदेवाई । अन्नय-वइरेगेहिं जाहासंखेण नायव्वा ॥ २१ ॥

जह सोहइ भूसुद्धीए चित्तकम्मं थिरं च होइ चिरं । सामन्नगुणाणुगए तह पुरिसम्मि विसेसगुणा ॥ २२ ॥

उवलक्खणं च एए एयंरूवाऽवरे वि विन्नेया । सामन्न-विसेसगुणा संखेवेणेह वुत्ता वि ॥ २३ ॥

सम्मत्तगुणेण य पाउणन्ति जीवा न निरय-तिरिएसु । उप्पत्तिमणंतरमवि जइ णो बद्धाउया पुव्विं ॥ २४ ॥

नेव य अवड्ढपोग्गलपरियट्टाओ वि अहियभवभमणं । उक्कोसओ वि संभवइ एत्थ ईसिं पि पुट्ठम्मि ॥ २५ ॥

जो पुण सम्मत्तमिमं चिरकालं कलितविमलगुणपसरो। फासइ नरवम्मो इव सो पावइ परमसुहनिवहं ॥ २६ ॥

नरवम्मो य नरवई जह सम्मत्तं पुरा समणुपत्तो । जाओ य परमकल्लाणभायणं तह निसामेह ॥ २७ ॥

१-धीरताम् ॥ २ देसाव° प्रतौ ॥ ३ °उस्सग्ग° प्रतौ ॥ ४ °वाइं प्रतौ ॥ ५ अन्वयव्यतिरेकाभ्याम् ॥ ६ भूशुद्धौ ॥ ७ एवंरूपाः ॥ ८ सामन्नगुणाण य प्रतौ पाठः ॥ ९ बद्धायुष्कर्माणः ॥ १० अपार्धपुद्गलपरावर्तात् ॥ ११ समत्त° प्रतौ ॥ १२ °लिभवियलगण° प्रतौ ॥

सम्यक्त्वाधिकारे नरवर्मनृपकथानकम् १। सामान्यगुणानां माहात्म्यम् सम्यक्त्वम्

एत्थेव जंबुदीवे भारहवासम्मि वासवपुरि व्व। रम्मा मागहविसयस्स तिलयभूया अदिट्ठभया ॥ २८ ॥
अत्थि समत्थदिसामुहपत्तपसिद्धी समिद्धजणनिवहा। विजयवई नाम पुरी पउरागर-नगरपरिकिन्ना ॥ २९ ॥
नक्खत्तपंतिनिवडणभएण उत्थंभणत्थमिव विहिओ। तुंगो पागारो सहइ जीए कविसीसयसणाहो ॥ ३० ॥
हिमगिरिगुरुवहुसुरघरवहुईसरदंसणोवलोभेण। परिहा तुंगतरंगा गंग व्व जहिं वहिं भाइ ॥ ३१ ॥
जत्थाऽऽउहे च्चिय गया सुमणोबंधो य मालियघरेसु। आरूढगुणे य धणुम्मि परवहो न उण लोएसु ॥ ३२ ॥
तव-दाण-नाणवावारमग्गदीसंतसंत-सुइलोया। सयमहा [आ] सोहइ कयकयजुगनिच्चवास व्व ॥ ३३ ॥
पालेइ तं च पणमंतमंति-सामंतलीढपयपीढो। नरवम्मनिवो जयसिरिकरेणुगाऽऽलाणथंभो व्व ॥ ३४ ॥ नरवर्मनृपः
जो मयलकलाकोसल्ल-चाग-सत्थरथवोहपमुहेहिं। सुगुणेहि सेसभूमीवईण निदंसणं पत्तो ॥ ३५ ॥
विणयनया तत्तो च्चिय विणिग्गया निच्छियं अहं मन्ने। पयईण पालणा वि य तत्तुल्ला जं न अन्नत्थ ॥ ३६ ॥
वरवत्थमंडणाओ पयाओ जं तस्स तं किमिव चोज्जं ?। मुत्ताहारंसुयभूसियाओ जस्सऽरिवहूओ वि ॥ ३७ ॥

विजयवती राजधानी

१ प्रचुराकरनगरपरिकीर्णा ॥ २ 'यत्र' यस्यां पुर्यां आयुधे एव 'गदा' गदाख्यं शस्त्रं वर्त्तते, न तु लोकेषु 'गदाः' रोगा दृश्यन्ते। 'सुमनोबन्धः' पुष्पाणां बन्धो मालिकगृहेष्वेव, न [redacted] लोकेषु सुमनसां-विदुषां बन्धो दृश्यते। 'परवधः' शत्रुवधः 'आरूढगुणे' सप्रत्यञ्चे धनुष्येवावलोक्यते, न पुनः आरूढगुणेषु-प्राप्तगुणेषु लोकेषु 'परवधः' अन्यप्राणिवधो विलोक्यत इति ॥ ३-मग्नदृश्यमानसत्शुचिलोका ॥ ४ 'सततमहा' निरन्तरोत्सववती 'सततमखा वा' निरन्तरयागमयी ॥ ५ कृतकृतयुगनित्यवासा ॥ ६ त्यागः-दानम् ॥ ७ अहम्मन्ने प्रतौ ॥ ८ जन्न प्रतौ ॥ ९ आश्चर्यम् ॥ १० अत्र श्लिष्टविशेषणेन विरोधः प्रतिपाद्यते, तथाहि—कथं रिपुवध्वः मुक्ताहारैः अंशुकैश्च भूषिता भवन्ति ? इति विरोधः। तत्परिहारपक्षे तु—मुक्ता हारतुल्यैः-पङ्क्तिसमैः अश्रुभिः भूषिता इति ॥

देव-गुरुप्पडिबद्धो विवित्तनत्थित्तवायवामोहो । जो समरसोवओगो वि विजियनीसेसरिउचक्को ॥ ३८ ॥
तस्सऽत्थि महुमहस्स व लच्छी नवनलिणपत्तपिहुलच्छी । भज्जा सीलाइगुणोहधाम रइसुंदरी नाम ॥ ३९ ॥
रूवविणिम्मवणुक्कट्ठनिट्ठपरमेट्ठिणो व सा सिद्धी । दीसइ सुवइ य न जं जयम्मि अन्ना तहा रमणी ॥ ४० ॥
कयबुहतोसो नीईविसारओ सारओ व रयणियरो । कुवलयजणियाणंदो य से सुओ अत्थि हरिदत्तो ॥ ४१ ॥
कुंभस्स व तस्सुवलम्भपरमअवट्ठंभगाढपरिसुद्धो ।...सह............सेसो, व धरइ गरुयं पि भूभारं ॥ ४२ ॥
सुकुलुग्गया विणीया दक्खा सत्थत्थपारया धीरा । पहुभत्ता मइसागरपमुहा से मंतिणो जाया ॥ ४३ ॥
आरोवियरज्जभरो य तेसु बुहसलहियं उचियसमयं । विसयसुहं भुंजंतो कालं वोलेइ स महप्पा ॥ ४४ ॥
अह अन्नया कयाई तस्स सभाए सुहासणत्थस्स । धम्मकहा परिवट्टइ...........रं राया ॥ ४५ ॥
एगेण तत्थ भणियं लोगविरुद्धाण वज्जणेण सया । दक्खिन्नेणं दुहियाणुकंपणेण य परो धम्मो ॥ ४६ ॥
अन्नेण पुणो भणियं को धम्मो ? किं व तस्सरूवं ? ति । को वा तप्फलभोई ? सच्चमिणं ? कप्पणामेत्तं ? ॥ ४७ ॥

१ विविक्तनास्तित्ववादव्यामोहः । विविक्त-त्यक्त ॥ २ श्लिष्टविशेषणेन विरोधोऽत्र—यः समरसे शमरसे वा उपयोगवान् कथमसौ निर्जितनिःशेषरिपुचक्रो भवति ? इति । समरे-युद्धे सोपयोगः–सावधानः राजधर्मत्वाद् अत एवासौ विजितनिःशेषरिपुसमूहो वर्त्तत इति विरोधपरिहारः ॥ ३ °यवहुतो° प्रतौ पाठः । चन्द्रपक्षे कृतः बुधस्य–ग्रहविशेषस्य तोषो येन । पुत्रपक्षे तु बुधानां–पण्डितानामिति ॥ ४ °यनिय° प्रतौ ॥ ५ चन्द्रपक्षे कुवलयानां–रात्रिविकासिकमलानां जनित आनन्दो येनेत्यर्थः, कुमारपक्षे पुनः कुवलयस्य–महीवलयवर्त्तिलोकस्योत्पादितानन्द इत्यर्थः ॥ ६ कुंकुम° प्रतौ ॥ ७ शास्त्रार्थपारगाः शास्त्रार्थपारगाश्चेत्यर्थः ॥ ८ बुधश्लाघितम् ॥ ९ व्यतिक्रामति ॥

सम्यक्त्वाधिकारे नरवर्मनृपकथानकम् १। रतिसुंदरी राज्ञी हरिदत्तो युवराजः मन्त्रिणः

जंपियमवरेणमिमं मोत्तुं नियनियकुलक्कमाणुगयं। दिट्ठगुणं............................ ॥ ४८ ॥

अन्नेण पुणो भणियं विहि-पडिसेहप्पहाणसत्थुत्तं। सलहंति धम्मतत्तं न सबुद्धिविकप्पणामेत्तं ॥ ४९ ॥

अवरेण पुणो वुत्तं सत्थाणि बहूणि भूरिसंघारा। बहुरूवा मयमेया को सम्मं मुणइ धम्ममिह ? ॥ ५० ॥

इय पउरधम्मगोयरवियारखरतरसमीरखिप्पंतो। संसय.............................. ॥ ५१ ॥

..............................परमपुरिसत्थो। आरोविओ य सो कहमिमेहिं महसंसयतुलाए ? ॥ ५२ ॥

संभवइ निरभिधेयो न सव्वहाऽऽगासकुसुममिव एसो। आबालगोव-विलयाविबुहाइपवित्तिदंमणओ ॥ ५३ ॥

..................विकहाविनित्त.. ॥ ५४ ॥

................गयघडारूढपरिविह.........।................तुरयजोहं पप्प भुंजंति रज्जसिरिं ॥ ५५ ॥

अन्ने तप्पुरओ च्चिय परिस्समुल्लसियभूरिपस्सेया। किच्छकयपाणवित्ती जह..................... ॥ ५६ ॥

....भोयणं केइ ॥ ५७ ॥

अन्ने य घेरा घरभमणलद्धपज्जुसियतुच्छमाहारं। एगागिणो दिणंते भुंजंति महादुहुव्विग्गा ॥ ५८ ॥

१ °प्पडि° प्रतौ। विधिप्रतिषेधप्रधानशास्त्रोक्तम्। विधिप्रतिषेधौ—उत्सर्गापवादौ ॥ २ 'भूरिसंहाराणि' भिन्नभिन्नतत्त्वनिर्णायकानि ॥ ३ आलावगो° प्रतौ ॥ ४ परिश्रमोल्लसितभूरिप्रस्वेदाः 'कृच्छ्रकृतप्राणवृत्तयः' कष्टेन कृताजीविकाः ॥ ५ गृहाद् गृहभ्रमणलब्धपर्युषिततुच्छम् आहारम् ॥

निरुवमरूवोहामियमयरद्धयकित्तिणो जणा एगे । सइं दिंति लोयलोयणकुमुयवणाणंदमिंदु व ॥ ५९ ॥
अन्ने य सास-जर-कास-कोढे-खयखुन्नखीणसव्वंगा । निव्वेयमपुव्वं दिंति वत्तसवणे सपिउणो वि ॥ ६० ॥
पीणपओहरहरिणच्छिपरिगया गीयमाणगुणनियरा । जम्मग्गिरदिन्नधणा एगे विलसंति जाजीवं ॥ ६१ ॥
अवरे य रुट्ठ-दुचिट्ठपंसुलीदिन्नकडयडाडोवा । ओवाइयमग्गियमच्चुणो य चिट्ठंति झुसिरघरे ॥ ६२ ॥
इय तुल्लमणुयभावे वि भिन्नभिन्नोवलद्धसुह-दुक्खं । न घडइ जयवइचित्तं धम्मा-ऽधम्मं विणा सम्मं ॥ ६३ ॥
......मणुट्ठाणमिमाण साहगं सुद्धबुद्धिणा नेयं । नज्जइ य तं च सत्थत्थकुसलहियसुगुरुवयणाओ ॥ ६४ ॥
सुगुरू वि गरुयचिरभवसमुवज्जियसुकयपगरिसवसेण । गंवि सुगविट्ठो चिंतामणि व्व कट्ठेण दट्ठव्वो ॥ ६५ ॥
एवं परिभावितस्स तस्स पाओसियं नरिंदस्स । पलयघणगज्जियं पिव गंभीरं वज्जियं तूरं ॥ ६६ ॥
अह ईसिं[12]चलियसुललियपंकयदलं[13]दीहरच्छिणा रन्ना । सव्वजणे[14]ऽणुन्नातो कयप्पणामो गओ सगिहं ॥ ६७ ॥
एत्थंतरम्मि सिररइयपाणिकोसो नमंसिउं रायं । विन्नविउं पारद्धो पडिहारो देव ! निसुणेह ॥ ६८ ॥

१ निरुपमरूपाभिभूतमकरध्वजकीर्तयः ॥ २ सदा ॥ ३ °कोट्ठक्खयक्खुन्न° प्रतौ ॥ ४ वार्ताश्रवणे स्वपितुरपि ॥ ५ जन्मार्गणशीलदत्तधनाः ॥ ६ रुट्ठुदुचिट्ठ° प्रतौ । रुष्टदुश्चेष्टपांशुलीदत्तकडकडाटोपाः । उपयाचितेन मार्गितमृत्यवश्च तिष्ठन्ति शुषिरगृहे ॥ ७ जगतीचित्तम् ॥ ८ ज्ञायते च तच्च शास्त्रार्थकुशलहितसुगुरुवचनात् ॥ ९ गुरुकचिरभवसमुपार्जितसुकृतप्रकर्षवशेन ॥ १० 'गवि' पृथ्व्याम् ॥ ११ पिव इति इवार्थकमव्ययम् ॥ १२ ईषच्चलितसुललितपङ्कजदलदीर्घाक्षेण ॥ १३ °दलंदी° प्रतौ ॥ १४ °जणाणु° प्रतौ ॥

तुम्हाण पियवयस्सो दूरदिसागमणवड्ढिउकट्ठो । चिट्ठइ दट्ठुं देवं पडिरुद्धो बाहि किं किच्चं ? ॥ ६९ ॥
रन्ना पयंपियं पेससु त्ति तो सो विमज्जिओ मेण । संपत्तो रायसहं सहरिसमवलोइओ रन्ना ॥ ७० ॥
सो एस मयणदत्तो पियमित्तो कह चिरागतो एत्थ ? । सायरकयप्पणामोऽवगाहिओ तयणु ससिणेहं ॥ ७१ ॥
आसणमासीणो पुच्छिओ य पियमित्त ! कत्थ कत्थ तुमं । एत्तियकालं भमिओ ? किं दिट्ठमुवज्जियं किं वा ? ॥ ७२ ॥

तेणं पयंपियं देव ! लाड-मरहट्ठ-गोड-सोरट्ठा । पारित्त-मलय-मालव-वेरागर-सिंधुसोवीरा ॥
कासी-कोसल-नेवाल-कीर-जालंधराइणो देसा । भमिया विचित्तनेवत्थधारिनरनियरपरिकिन्ना ॥ ७४ ॥
दिट्ठा य तुंगसुरभवणसभो[......]सरिसराइणोऽणेगे । चोज्जाणि य ताणि न जाणि साहिउं पि हु तरिज्जंति ॥ ७५ ॥
अत्थो य अज्जितो बहु कुबेरकोसाइरित्तवित्थारो । तह तिहुयणिकसारो एगो एगावलीहारो ॥ ७६ ॥
तस्स य लाभो पुहईए नाह ! नीसेसअच्छरियपवरो । नो कस्स कस्स चित्तं पकुणइ विम्हयरसाउलियं ? ॥ ७७ ॥

अह मंजुगुंजिउद्दाममुरवरवरम्मपडहपडुपाढं । नच्चिरवारविलासिणि[रण]रणमणिकिंकिणीजालं ॥ ७८ ॥
पेच्छणयमतुच्छसमुच्छलंतसुइसुहयगरुयगेयसरं । वारइ रायाऽनिलचलियकमलसोभेण सकरेण ॥ ७९ ॥
भणइ य संपइ पियमेत्त ! होउ सेसेहिं साहियव्वेहिं । हारोवलंभमेगग्गचित्तओ मे निवेएसु ॥ ८० ॥

मदनदत्तस्य राजसंसदि प्रवेशः तदात्मवृत्तं च

१ दिट्ठइ प्रतौ ॥ २ वेषः ॥ ३ आश्चर्याणि ॥ ४ कथयितुमपि हि शक्यन्ते ॥ ५ अथ मञ्जुगुञ्जितोद्दाममुरजवररम्यपटहपटुपाठम् । नर्तनशीलवारविलासिनीरणरणन्मणिकिङ्किणीजालम् ॥ ६ °पाडं प्रतौ ॥ ७ प्रेक्षणकमतुच्छसमुच्छलच्छ्रुतिसुखदगुरुकगेयस्वरम् ॥ ८ अलमित्यर्थः ॥ ९ कथयितव्यैः ॥

सो भणइ देव! निसुणसु तुम्ह समीवाओ पुव्वकालम्मि। अत्थोवज्जणहेउं गओ म्हि [हं] पुव्वदेसम्मि ॥ ८१ ॥
वच्चंतो य कहं पि हु पडिओ हरि-हरिणविसयभीमाए। विडविवणसंकडाए अडवीए दुव्वइनामाए ॥ ८२ ॥
पुव्वाणियं च पाणियमसेसमवि निट्ठियं तहिं तत्तो। सव्वत्तो वि पयट्टो पलोइउं सलिलमुव्वउत्तो ॥ ८३ ॥
जाव कहिं पि न किं पि हु, सुयं व दिट्ठं व तं तया भीओ। वणसंडमेगमुद्दिसिय पट्ठिओ सिग्घवेगेण ॥ ८४ ॥
दिट्ठो य तत्थ [1]मायंडमंडलुद्दामतेयपब्भारो। सयमेव पसमरासि व्व अहव सुस्समणधम्मो व्व ॥ ८५ ॥
[2]बहुसीससंगओ रामणो व्व [3]बहुसावओ य विंझो व्व। [4]कयजीववग्गरक्खो इंदो व्व गुणंधरो सूरी ॥ ८६ ॥
तस्स य पुरो समुज्जलजलन्तमणिमउडभासुरसिरग्गो। [5]पढमुग्गमंतदिणनाहभूसिओ उदयसेलो व्व ॥ ८७ ॥
[6]आमल[य]थूलमुत्तियमणहरहारावरुद्धकंठयलो। तारायणपरियरिओ मेरु व्व सयं विरायंतो ॥ ८८ ॥
एगो देवो नवजोव्वणाए देवीए परिवुडो सम्मं। निसुणंतो जिणधम्मं दिट्ठो य मए सवेरग्गं ॥ ८९ ॥
मुणिवइणो वयणेहिं सुरहारस्स य फुरंतकिरणेहिं। अमओवमेहिं तण्हा दुँहा वि मह उवसमं पत्ता ॥ ९० ॥
तो जायगरुयभत्ती तिपयाहिणपुव्वयं पणमिऊण। सूरिं सुरं च वंदिय आसीणो हं तयासन्ने ॥ ९१ ॥

१ मार्तण्डमण्डलोद्दामतेजःप्राग्भारः ॥ २ रावणो बहुभिः शीर्षैः सङ्गतः, सूरिः पुनर्बहुभिः शिष्यैः सङ्गतः–परिवृत इत्यर्थः ॥ ३ विन्ध्याचलः बहवः श्वापदा यत्र, सूरिस्तु बहवः श्रावकाः–उपासका यस्य ॥ ४ इन्द्रः कृता जीववर्गेण–गुरुवर्गेण रक्षा यस्य, सूरिः पुनः कृता जीववर्गस्य–षड्जीवनिकायरूपस्य रक्षा येन ॥ ५ प्रथमोद्गच्छद्दिननाथभूपितः ॥ ६ आमलकस्थूलमौक्तिकमनोहरहारावरुद्धकण्ठतलः। तारागणपरिकरितः ॥ ७ बाह्या आभ्यन्तरा चेति ॥

अह तियसो मइ वियसियकुवलयदलमंच्छहं खिविय चक्खुं। सुसिणिद्धबंधवम्मि व परितुट्ठो पुच्छए सूरिं ॥
भयवं ! को एस नरो ? किं वा एयप्पलोयणे य ममं । जाओ मणपरितोसो ? [तो] सूरी भणिउमाढत्तो ॥ ९३ ॥
भो तियस ! ओहिलोयणपलोयणाऽणेलियमुणियकज्जस्स । किं सीसइ तुह ? तह वि हु सुमरणहेउं भणामि इमं ॥ ९४ ॥
एत्तो पुव्वभवम्मि कोसंबीए पुरीए जयरन्नो । तुममेसो च्चिय पुत्ता जेट्ठ-कणिट्ठा समुप्पन्ना ॥ ९५ ॥
बालत्तणे वि जणणी दिवंगया पालिया [य] धावीए । अहिगयकलाकलावा कमेण तरुणत्तमणुपत्ता ॥ ९६ ॥
जुवरायपयपयाणत्थमन्नया सायरं नरिंदेण । दिव्वंसुय-भूसणदाणओ य सम्माणिया सम्मं ॥ ९७ ॥
नायं च इमं सव्वं सवत्तिजणणीए तयणु कुद्धाए । नियपुत्तरज्जविग्घं संकंतीए अणज्जाए ॥ ९८ ॥
कीलिउमुज्जाणं उवगयाण तुम्हाण घोरविसमेसं । पच्छइयपुरिसहत्थेण दावियं भोयणं किं पि ॥ ९९ ॥
अह तदुवभोगउ च्चिय तुब्भे रुंभंतचेयणाऽऽसीणा । पंढमिल्लुयपल्लवमणहरस्स कंकेल्लिणो मूले ॥ १०० ॥
तत्थेव य विहिवसओ दिवायरो नाम तक्खणं माहू । गरुलोववाइयं सुत्तमुत्तमं गुणिउमाढत्तो ॥ १०१ ॥
तम्मि य गुणिज्जमाणे गरुलाहिवई फुरंतगरुलधओ । मणिमउडभासुरसिरो समागओ वंदिउं साहुं ॥ १०२ ॥
तस्स य माहप्पेणं विसं तमं पिव विरोयणाहिहयं । नट्ठं झड त्ति तुब्भे समुट्ठिया सुत्तबुद्ध व्व ॥ १०३ ॥

मदनदत्त-हरिदत्तयोः पूर्वभवः

१ मयि ममोपरीत्यर्थः ॥ २ समानम् ॥ ३ अनलीकं-सत्यम् ॥ ४ 'शिष्यते' कथ्यते ॥ ५ -मिथम् ॥ ६ रुध्यमान- ॥ ७ प्राथमिक- ॥
८ 'स्फुरद्गरुडध्वजः' स्फुरद्गरुडपक्षिचिह्नः ॥ ९ साहू प्रतौ ॥ १० विरोचनः सूर्यः ॥

परियणपरिकिंकित्तियविसविंयारविन्नायजणणिवुत्तंता । लक्खियमुणिमाहप्पा य निवडिया साहुचलणेसु ॥ १०४ ॥
भणिया य गरुलवइणा भो ! तुब्भे सुकयभायणं नूणं । जं एस अमयमुत्ती मुणिवसभो कह वि इह पत्तो ॥ १०५ ॥
इहरा सवत्तिजणणीदावियविसवेयणाअभिहयाणं । धम्म-ऽत्थविरहियाणं मरणं तुब्भं लहुं हुंतं ॥ १०६ ॥
अज्ज वि किं पि न नट्ठं जइ मह वुत्तं करेह ता एयं । चिंतामणिं व साहुं आराहेज्जह पयत्तेणं ॥ १०७ ॥
इय तेऽणुसासिऊणं साहुं अभिवंदिउं च गरुलवई । मेहम्मि व भूमीए तिरोहिओ विज्जुपुंजो व ॥ १०८ ॥
तुब्भेहिं चिंतियं तो एत्तो जुत्तं न नियघरे वसिउं । दुव्विलसियाइं दीसंति जत्थ नियगाण वि य एवं ॥ १०९ ॥
अहवा घरवासवसंगयाण वारिंगयाण[3] व गयाण । ते केऽणत्था जे नाऽऽवडंति वैडविडविवित्थारा[4] ? ॥ ११० ॥
धन्नो एस महप्पा साहू घरपंजराउ निक्खमिउं । जो धरियसुद्धपक्खो[5] विहरइ वसुहं विहंगो व ॥ १११ ॥
अम्हाण वि जुज्जइ इन्हिं एयप्पवहणं[6] दढं वेत्तुं । दुहवारि-मच्चुमयरं उत्तरिउं भवमहाजलहिं ॥ ११२ ॥
एवं विभाविऊणं नमिऊण मुणिं च परमभत्तीए । उज्झिय कालक्खेवं दिक्खद्धमुवट्ठिया दो वि ॥ ११३ ॥
जोग्गयमुवलब्भ तवस्सिणा वि पव्वाविया चरिय[7] चरणं । मरिऊण तओ जाया देवा सोहम्मकप्पम्मि ॥ ११४ ॥
विज्जुप्पभनामो एस भो ! तुमं विज्जुसुंदरो य इमो । नवरं एसो चविउं[8] विजयवईएँ[9] वरपुरीए ॥ ११५ ॥

---

१ सकय° प्रतौ ॥ २ सपत्नीजननीदापितविषवेदनाभिहतयोः ॥ ३ वारिगतानामिव गजानाम् ॥ ४ विडविडवि° प्रतौ ॥ ५ साधुः 'धृतशुद्धपक्षः' धृतशुद्धचारित्रधर्मपक्षः, विहङ्गः धृतशुद्धपतत्रः ॥ ६ °यपव° प्रतौ ॥ ७ चरित्वा ॥ ८ 'च्युत्वा' मृत्वा ॥ ९ °ई पव° प्रतौ ॥

जाओ वणियस्स सुओ गुणवंतो नाम मयणदत्तो त्ति । अत्थज्जणत्थमिहइं पत्तो ता जाव तं दिट्ठो ॥ ११६ ॥
पुव्वभवावज्जियगुरुसिणेहओ एयदंसणे य तुमं । हरिसं गओ सि एयं तं जं पुट्ठं निमित्तं त्ति ॥ ११७ ॥
इय सो सोच्चा देवो विन्नायजहट्ठियत्थवित्थारो । देइ महं नेहेणं तं नियमेगावलीहारं ॥ ११८ ॥
पुच्छइ य गुरुं भालयलठवियकरसंपुडो पयत्तेण । भयवं ! निद्दा अरई सुरतरुकंपो य एमाई ॥ ११९ ॥
असिवाइं जीवियव्वं मह तुच्छं निच्छियं निवेयंति । ता कहसु कत्थ जम्मो होही ? कइ बोहिलाभो य ? ॥ १२० ॥
भणिओ गुरुणा चविउं एत्तो तं भारहम्मि मगहाए । विजयवईए पुरीए नरवम्मनराहिवस्स सुओ ॥ १२१ ॥
हरिदत्तो त्ति भविस्ससि बोहिं पुण मयणदत्तदिन्नस्स । हारस्स दंसणेणं लहिहिसि इय सुणिय तव्वेलं ॥ १२२ ॥
देवो गओ सथामं मए वि विम्हइयमाणसेण गुरू । पुट्ठो पहु ! साहिप्पउ इमस्स हारस्स उप्पत्ती ॥ १२३ ॥
जंपइ गुरू सुणिज्जउ पुव्वं किर विंज्झगिरिवरतलम्मि । पुरमत्थि सयदुवारं तत्थाऽऽसी पूरणो सेट्ठी ॥
सो काऊण सुतिक्खं तावसदिक्खं पवज्जियाणसणो । मरिउं जाओ चमरो सुरेसरो चमरचंचाए ॥ १२५ ॥
सो य कहिं पि पलोयइ जा उड्ढं ता पवड्ढियामरिसो । पेच्छइ सक्कं सीहासणट्ठियं नियसिरस्सुवरिं ॥ १२६ ॥
पुरओ पयट्टनट्टं सोहम्मसभाए वट्टमाणं च । सामाणिय-तायत्तिस-रक्ख-परिसापरिक्खित्तं ॥ १२७ ॥

एकावली-हारस्य उत्पत्तिः

१ तच्चिय° प्रतौ ॥ २ अल्पम् ॥ ३ भणिउं प्रतौ ॥ ४ पत्तो प्रतौ ॥ ५ स्वस्थानम् ॥ ६ कथ्यताम् ॥ ७ सामानिक–त्रायस्त्रिंश–आत्मरक्षक–पर्षत्परिक्षिप्तम् । परिक्षिप्तं–परिवृतम् ॥

अहह ! कहं सीसोवरि चिट्ठइ धिट्ठो ममावि इह एसो ?। अहवा अदिट्ठफुरिए[1] को काउं किं न उज्जमइ ? ॥ १२८ ॥
ता अवणेमि सुदुव्विणयविडविणो फलमिमस्स [2]मिन्हि पि। कालविलंबो नीईय[3] वीरवित्तीण न हु जुत्तो ॥ १२९ ॥
इय [4]गरुयरोससंरंभनिब्भरायंबिरच्छिछोहेहिं। कुंकुमरसलित्तं पिव[5] कुणमाणो भवणभित्तिभरं ॥ १३० ॥
निक्खित्तकमलपयरं व महियलं सव्वओ य दंसिंतो। निव्वत्तिंतो[6] गयणं झड त्ति कयअकालसंज्झं व ॥ १३१ ॥
एगावलिहारविरायमाणवच्छत्थलोऽमलदुकूलं। परिहिय[7] परिहारयणं पहरणमवि गरुयमादाय ॥ १३२ ॥
सोहम्मतियसणाहं पडुच्च कयतिव्वसमरसंकप्पो। नीहरिओ सपुरीओ तणं व तिजयं च पेहंतो ॥ १३३ ॥
कुडिला कज्जाण गइ त्ति कह वि सक्केण निज्जियस्स ममं। को सरणं ? ति विभाविय ओहिन्नाणं पउंजेइ ॥
तो सुंसुमारपुरपरिसरम्मि सरणिक्कसुंदरं वीरं। [8]उस्सग्गगयं पेहइ गयसोगमसोगसाहितले[9] ॥ १३५ ॥
तो पवणविजइणीए गईए गंतूण पणमिउं वीरं। नाह ! तुह पायपउमप्पभावओ वंछियं होउ ॥ १३६ ॥
इय काऊणाऽऽसंसं [10]कयजोयणसयसहस्सकासिणंगो। महया संरंभेणं वच्चंतो सुरपुरं पत्तो ॥ १३७ ॥
पउमवरवेइयाए [11]एगं अन्नं पयं ठविऊण। हरिसभाए। ठविऊण मुक्कसंको सक्कं अक्कोसिउं लग्गो ॥ १३८ ॥

१ अदृष्टपराक्रमे अदृष्टे वा–भाग्ये स्फुरिते इत्यर्थः ॥ २ मकारोऽत्रालाक्षणिकः ॥ ३ नीत्या 'वीरवृत्तीनां' पराक्रमवताम् ॥ ४ गुरुकरोषसंरम्भ-निर्भरातान्नाक्षिक्षोभैः ॥ ५ पिव इवार्थे ॥ ६ 'निर्वर्तयन्' कुर्वाणः ॥ ७ परिधाय, परिघरत्नम् ॥ ८ कायोत्सर्गस्थितं प्रेक्षते गतशोकम् अशोक-शाखितले ॥ ९ °तलो प्रतौ ॥ १० कृतयोजनशतसाहस्रकृत्स्नाङ्गः ॥ ११ एकम् अन्यं पादम् ॥

रे रे चमराहम! कह कहेहि जाओ तुहाऽऽगमणविमओ। सलभस्स व दीनसिहाए मह राहाए? त्ति जंपित्ता ॥
सुरवइणा रोमभरेण तरुणरविचिंनलक्खदुप्पेक्खं। पक्खित्तं कुलिसं तस्स हणणहेउ महावेगं ॥ १४० ॥
अह तं इंत दट्ठुं सममभिमाणेण संकुडियकाओ। हेट्ठमुहो उड्ढकमो वीरं पइ पट्ठिओ चमरो ॥ १४१ ॥
ता एवंरूविणो चंचिरस्स कंठाओ से चुओ हारो। वीरियसारो व जसो व अहव खुरत्तवाउ व ॥ १४२ ॥
एसो य निवडमाणो हारो विज्जुप्पभेण सम्पत्तो। कीलत्थमुवगएणं एत्तो संखेज्जदीवम्मि ॥ १४३ ॥
एवं निमामिऊणं हारुप्पत्तिं अहं महाराय!। देसेसु चिर भमिओ काऊणऽत्थज्जणं वलिओ ॥ १४४ ॥
पणुवीसवच्छरेहिं तुमए मह देव! दंसणं जायं। जाओ य सुरो स सुओ अन्नो वा तुज्झ? नायवं ॥ १४५ ॥
रन्ना पयंपियं चक्खुगोयरे कोऽणुमाणवावारो?। कीरउ दंसणमन्नोन्नमिन्हि हरिदत्त-हाराणं ॥ १४६ ॥
अह तुरियवेगधावियपुरिसेहिं राय-वणिनिउत्तेहिं। रायसुओ हारो वि य सहाए तवेलमुवणीओ ॥ १४७ ॥
आसीणो रायसुओ पारद्धाऽणेगहा कहुल्लावा। दसदिसमुज्जोयंतो य दंसिओ अवसरे हारो ॥ १४८ ॥
अह हारदंसणाओ ईहा-ऽपोहाइपहपयट्टस्स। जायं जाईसरणं झड त्ति हरिदत्तकुमरस्स ॥ १४९ ॥
चिरपव्वज्जा तियसत्तणं च हारप्पयाणवुत्तंतो। विन्नाओ सव्वो वि य जहट्ठिओ सुमिणदिट्ठो व ॥ १५० ॥

---

१ °वसहा° प्रतौ ॥ २ °दुपेक्खं प्रतौ ॥ ३ पत्थ रू° प्रतौ पाठ ॥ ४ 'अजितु' गमनशीलस्य ॥ ५ शूरत्ववादः ॥ ६ सप्पत्तो प्रतौ ॥ ७ अहम्मद्दा° प्रतौ ॥ ८ 'प सह प्रतौ ॥ ९ राजवणिग्नियुक्ताभ्याम् ॥

सुरभवणवसिय-भासिय-विलसिय-हसिया-ऽऽसियाइं सुमरंतो। नवरं तवेलं मुच्छिओ व जाओ नरिंदसुओ ॥ १५१ ॥
भणिओ य राइणा एत्थ कीस जोगि व रुद्धवावारो[1]। अंतो चिय चिंतंतो चिट्ठसि ? मह कहसु य निमित्तं ॥ १५२ ॥
कुमरेण जंपियं ताय ! केत्तियं तुम्ह ए[य] साहेमि। अघडंतघडणपडुओ चित्तो कम्माण वावारो ॥ १५३ ॥
जं कहिउं पि न तीरइ सक्कइ सक्को वि जं न सच्चविउं[2]। संसारनडो पयडइ तमिंदयालप्फडाडोवं[3] ॥ १५४ ॥
रन्ना पयंपियं वच्छ ! तह वि साहेसु एत्थ परमत्थं। तो तेण मयणदत्तोवइट्ठसरिसं सयलमुत्तं[4] ॥ १५५ ॥
जाया य हारदंसणपच्चयपभवा नरिंदपुत्तस्स। देव-गुरु-तत्तविसया सुद्धा सम्मत्तपडिवत्ती ॥ १५६ ॥
एत्थंतरम्मि रन्ना विभावियं अम्ह सव्भपुरिसेहिं। धम्मविही नीसेसो संसयमारोविओ आसि ॥ १५७ ॥
संपइ पुण पुत्तवइट्ठपुव्वदिट्ठत्थविहुयमोहस्स। तत्तावलोयकुसला जाया पुन्नेहिं मह दिट्ठी ॥ १५८ ॥
एसो य सुओ पुन्नेहिं नूण संपाडिओ ममं विहिणा। कहमन्नह हुंतो धम्मनिच्छयच्छेयमइपसरो[5] ? ॥ १५९ ॥
एवंविहसंजोगो य जायए भाविभूरिभद्दाणं। कप्पतरुसंगमो इव महल्लकल्लाणकलियाणं ॥ १६० ॥
इय जाव निवो पसरंतहरिसरोमंचकंचुइयकाओ। अच्छइ ता आगंतुं विन्नत्तो दारपालेण ॥ १६१ ॥
देव ! कुसुमावयंसाभिहाणउज्जाणपालगो तुम्ह। दंसणकंखी चिट्ठइ रायाऽऽह लहुं पवेसेहिं ॥ १६२ ॥
अह भमिरभमररोलाउलाउ[6] दाऊण बउलमालाओ। उज्जाणपालगो भूमिवालमेवं पयंपेइ ॥ १६३ ॥

१ °वावारा प्रतौ ॥ २ गद न सत्यापयितुम् ॥ ३ °लफडा° प्रतौ ॥ ४ °लपुत्तं प्रतौ ॥ ५ धर्मनिश्चयच्छेकमतिप्रसरः ॥ ६ भ्रमणशीलभ्रमरशब्दाकुलाः ॥

गुणन्धर-सूरेः आगमनम्

पुरं-नगर-खेड-कब्बड-मडंबपमुहेसु सन्निवेसेसु । विहरंतोऽणुक्कमसो गुणंधरो सूरिरिह पत्तो ॥ १६४ ॥
गुरओ य देव ! कुसुमावयंसउज्जाणमज्झभागम्मि । तित्थेसस्स व तस्स य दंसणं च जुज्जइ तुहं काउं ॥ १६५ ॥
राया वि तक्खणक्खुडियनिविडनिगडो व लहुयहुयदेहो । सिंहासणाओ सिग्घं समुट्ठिओ हट्ठ-संतुट्ठो ॥ १६६ ॥
जंपइ य मयणदत्तो देव ! महप्पा स एस मुणिसीहो । जस्स पुरा तुह पुरओ सवित्थरा पयडिया वत्ता ॥
सो एस कामधेणू स एस चिंतामणी महाभागो । सो एस अभयबुद्धी दट्ठव्वो ता लहुं चेव ॥ १६८ ॥
इय तव्वयणाऽऽयन्नणपमोयभरनिब्भरा कुमरपमुहा । सहसा सहा गुरूणं नमंमणुक्कंठिया जाया ॥ १६९ ॥
अह तक्खणसज्जिपजयकरेणुमारुहिय विहियसिंगारो । धरियधवलायवत्तो ढलंतससितेयवरचमरो ॥ १७० ॥
अमरेसरो व राया करि-हरि-रह-जाणगयजणाणुगओ । महईए विभूईए विणिग्गओ वंदिउं सूरिं ॥ १७१ ॥
पत्तो उज्जाणमहिं उज्झियकरि-रायचिंधसिंगारो । भत्तीए जहविहिं वंदिऊण धरणीए उवविट्ठो ॥ १७२ ॥

सम्यक्त्व-स्वरूपम्

भणिओ गुरुणा नरवर ! संसारे सारमेत्थ मणुयत्तं । तत्थ वि नमंतसामंत-जणवयं भूमिनाहत्तं ॥ १७३ ॥
तं पुण धम्मस्स फलं धम्मस्स य मूलमेत्थ सम्मत्तं । देव-गुरु-तत्तसुनिरुत्तनाणओ तं च होइ फुडं ॥ १७४ ॥

१ सुर॰ प्रतौ ॥ २ ॰स्स य तस्स य- दं॰ प्रतौ ॥ ३ तत्क्षणखण्डितनिविडनिगडः ॥ ४ ॰णकय प्रतौ ॥ ५ ॰थचिंधसिं॰ प्रतौ ॥ ६ मणिउं प्रतौ ॥ ७ तत्त वि प्रतौ पाठ ॥ ८ नमत्सामन्तजनपदं नमत्सामन्तजनव्रज वा ॥ ९ देवगुरुतत्त्वसुनिश्चितज्ञानतः ॥ १० ॰त्तनिसुरु॰ प्रतौ पाठ ॥

देवो य कोह-मय-माय-लोह-रइ-अरइ-हास-भयमुक्को । सोग-दुगुंछा-चिंता-विसाय-अन्नाणपरिहीणो ॥ १७५ ॥
मिच्छत्त-पमाय-सिणेह-मयण-निंदाइदोसरहियंगो । तारेउमलं अप्पा परं च पोउं व भवसिंधुं ॥ १७६ ॥
करुणामयमयरहरं निरंजणं जिणवरं विमोत्तूण । नऽन्नत्थ देवबुद्धी जायइ सुमिणे वि सुमईण ॥ १७७ ॥
रागाइणो हि दोसा पसूण देवाणमवि य जइ संति । ता को पसु-देवाणं भेओ तुल्लम्मि दोसम्मि ? ॥ १७८ ॥
इ[य] सुपरिक्खियनिरुवमसुविसुद्धगुणोहगेहभूयम्मि । देवम्मि देवबुद्धी उप्पज्जइ पुन्नवंताण ॥ १७९ ॥

देवो वि नवरि नज्जइ गुरूवइट्ठो गुरू य सुस्समणा । वयछक्क-कायछक्काइविहिजुया समिइ-गुत्तिपरा ॥ १८० ॥
परउवयारपहाणा सत्तणुरूवं सयं पि जयमाणा । अणुयत्तियसह-असहाइसेहवग्गा निरुविग्गा ॥ १८१ ॥
निग्गहियकुग्गहा परउवग्गहा मुणियस-परसत्थतत्था । समयाणुरूवजुंजियउस्सग्ग-ऽववायवावारा ॥ १८२ ॥
पडिलेहणा-पमज्जणपमुहसमायारिबद्धपडिबंधा । आवस्सयाइकिरियारया य विरया पमायाओ ॥ १८३ ॥

१ देवविषयका अष्टादश दोषा अन्यत्र रूपान्तरेणापि दृश्यन्ते—अन्नाण १ कोह २ मय ३ माण ४ लोह ५ माया ६ रई ७ य अरई ८ अ । निद्दा ९ सोय १० अलियवयण ११ चोरिया १२ मच्छर १३ भया १४ य ॥ १ ॥ पाणिवह १५ पेम १६ कीलापसंग १७ हासा १८ य जस्स इय दोसा । अट्ठारस वि पणट्ठा नमामि देवाहिदेवं तं ॥ २ ॥ २ °विहाय° प्रतौ ॥ ३ पोत इव ॥ ४ 'करुणामृतमकरगृहं' करुणामृतसमुद्रम् ॥ ५ स्वप्नेऽपि ॥ ६ °गाहिणो प्रतौ ॥ ७ शक्त्यनुरूपं सदाऽपि यतमानाः । 'अनुवर्तितसहाऽसहादिशैक्षवर्गाः' पालितसमर्थाऽसमर्थादिशिष्यसमूहाः ॥ ८ पहउ° प्रतौ ॥ ९ ज्ञातस्वपरशास्त्रार्थाः ॥

जह चित्तं तह वाया जह वाया तह सभग्गकिरिया वि । जेसिं ते इह साहू माया-मयवज्जियसरीरा ॥ १८४ ॥

एत्थंतरम्मि सड्ढो आसधरो नाम भणइ दुंवियड्ढो । भयवं! जइ उ च साहू न संति गुरुणो कहं नेया ? ॥ १८५ ॥
पिंडविसुद्धिं न तहा कुणंति सक्कं पि नाऽऽयरंति विहिं । पासत्थाईहिं समं चेयंति नाऽऽलवण-नमणाई ॥ १८६ ॥
न परूविंति य सुद्धं न धरंति पमाणजुत्तमुवगरणं । थेवेसु वि रोगाइसु जह तह सेवंति अववायं ॥ १८७ ॥
इय अट्ठारससीलंगसहस्सधरणं विणा कहं समणा । हुंतु गुरू ? तदभावे कह वा ते वंदणिज्जा य ? ॥ १८८ ॥

भणियं गुरुणा भद्दय ! मा साहूणं अभावमुल्लवसु । तदभावे धम्मस्स वि नूणमभावो तए इट्ठो ॥ १८९ ॥
मिच्छत्तपउरयाए न नज्जई दाणि देवनामं पि । किं पुण कालोचियसुमुणिविरहओ मग्गविन्नाणं ? ॥ १९० ॥
'पिंडविसुद्धिं न कुणंति' जं च वुत्तं तयं पि न हु जुत्तं । नियसत्ति-काल-खेत्ताणुसारओ तप्पवित्तीए ॥ १९१ ॥
गिद्धि-सढभावविरहा सुद्धी तदभावओ वि जं भणियं । सुद्धं गवेसमाणो आहाकम्मे वि सो सुद्धो ॥ १९२ ॥
कह नज्जइ अगिद्धी ? घर-धण-सयणाइसव्वचागाओ । जं तेसिं नाऽऽसि पुव्वं ते कह ? नणु इच्छचागाओ ॥ १९३ ॥
सुकरो इच्छाचागो अभावओ च्चिय, तुमं न किं कुणसि ? । दीणुद्धरणाइखमा तुज्झ वि नो दीसए लच्छी ॥ १९४ ॥

---

१ दुर्विदग्धः ॥ २ नेय प्रतौ ॥ ३ शक्यमपि ॥ ४ त्यजन्ति ॥ ५ °णाई प्रतौ ॥ ६ सुद्धि प्रतौ ॥ ७ °हस्सध° प्रतौ । अष्टादशशीलाङ्गसहस्रधारणम् ॥ ८ नज्जइ प्रतौ । ज्ञायते इत्यर्थः ॥ ९ कालोच्चिय° प्रतौ ॥ १० विद्धि° प्रतौ । गृद्धिशठभावविरहात् ॥ ११ °णु परथ चा° प्रतौ । ननु इच्छात्यागात् ॥

'नेवाऽऽयरंति सक्कं पि' जं च भणियं तयं पि निस्सारं। आवस्सयाइ किं ते न कुणंति ? जमेवमुल्लवसि ॥ १९५ ॥
अह विगइचागमणुखणमुस्सग्गं कप्पविहरणाई य। सक्कं पि नाऽऽयरंती कह नज्जइ सक्कमेयमहो ! ? ॥ १९६ ॥
सामत्थ-कालदोसा सक्कं पि कयाइ जायइ असक्कं। आय-वयतुलणाए तदकरणे वि हु न ता दोसो ॥ १९७ ॥
'पासत्थाईसंगं नमणं च न संगयं' ति जं वयसि। तं पि हु मिच्छा सिद्धंतवयणओ तप्पवित्तीए ॥ १९८ ॥
नणु सिद्धंतनिसिद्धं आलवणाई वि किं पुणो नमणं ?। 'ओसन्नो पासत्थो' इच्चाईभूरिभणणाओ ॥ १९९ ॥
सच्चमिमं, ता सुत्ते वायणमोकारमाइ किं वुत्तं ?। परियाय-परिस-पुरिसादविक्खओ अह तयं मूढ ! ॥ २०० ॥
जइ ते फुडं अजोगा ता तन्नमणाइ कीसऽणुन्नायं ?। कारणओ वि हु इहरा पासंडीणं पि तं होउं ॥ २०१ ॥
अह ते नो जिणलिंगे का तदवेक्खा हु भावसारत्ते ?। अणुयत्तणा य भणिया तेसिं पि हु जेण वुत्तमिमं ॥ २०२ ॥
अंगीयादाइन्ने[3] खेत्ते अन्नत्थ ठिइअभावम्मि। भावाणुवघायऽणुवत्तणाए तेसिं तु वसियव्वं ॥ २०३ ॥
इहरा स-परुवघाओ उच्छोभाईहिं[4] अत्तणो लहुया। तेसिं च कम्मबंधो दुगं पि एयं अणिट्ठफलं ॥ २०४ ॥
ता दव्वओ उ तेसिं अरत्त-दुट्ठेण कज्जमासज्ज। अणुवत्तणत्थमीसिं कायव्वं किं पि न उ[5] भावा ॥ २०५ ॥
'न पसंवंति य सुद्धं' एयं पि अदूसणं जहाजोगं। पन्नवणं चिय जुत्तं इहरा दोसो त्ति जं भणियं ॥ २०६ ॥

१ विकृतित्यागं अनुक्षणं उत्सर्गं 'कल्पविहरणादि' नवकल्पविहारादि ॥ २ °विरहणा° प्रतौ ॥ ३ इत आरभ्य तिस्रो गाथा उपदेशपदग्रन्थे क्रमशः ८४०-४१-४२ तमयः। अगीतार्थाकीर्णे ॥ ४ उच्छोभः-आलप्रदानम् ॥ ५ उण भवे प्रतौ ॥

ओमे घडे निहित्तं जहा जलं तं घडं विणासेइ । इय सिद्धंतरहस्सं अप्पाहारं विणासेइ ॥ २०७ ॥
जोग्गा-जोग्गमवुज्झिय धम्मरहस्सं कहेइ जो मूढो । संघस्स पवयणस्स य धम्मस्स य पचणीओ सो ॥ २०८ ॥
'न पमाणजुत्तमुवहिं धरिंति' एयं पि तुच्छमाभाइ । असदोवदंसियत्तेण तविहंस्सुवहिनिवहस्स ॥ २०९ ॥
इहरा बाहुडुवियं पत्तं एगं तु पडलयच्छन्नं । पत्ताबंधकयं पुण वीयं मत्तं अगोअरओ ॥ २१० ॥
एगंमिय रयहरणं भवे न इन्हिं विसिट्ठमुणिणो वि । ता एत्थ पयत्थम्मि पुवे मुणिणो च्चिय पमाणं ॥ २११ ॥
'सेवंति य अववायं' दूसणमेयं पि घडइ नो सम्मं । तविहसंघयणाईविरहा सुत्तुत्तिओ य तहा ॥ २१२ ॥
सेवत्थ संजमं संजमाउ अप्पाणमेव रक्खेज्जा । मुचइ अइवायाओ पुणो विसोही न याविरई ॥ २१३ ॥ किंच–
कोइं अछिंत्ति अदुया अहीहं तवोवहाणम्मि य उज्जमिस्सं । गणं व नीईय व सारइस्सं सालंबसेवी समुवेइ मोक्खं ॥
सीलंगाण वि भावो नेओ सवन्नुवयणओ चेव । कह भणियमन्नहेमं ? बकुस-कुसीलेहिं जा तित्थं ॥ २१५ ॥
कालाणुसारकिरियारय त्ति चारित्तिणो पवुच्चंति । जह कप्परुक्खविरहे रुक्खा भन्नंति लिंबा वि ॥ २१६ ॥
अह सेम्ममसुणियम्मी मुणिम्मि नमणाइ कीरइ कहं ? त्ति । वभिचारदंसणाओ एयं पि न सुंदरं जम्हा ॥ २१७ ॥
छउमत्थसमयचज्जा ववहारनयाणुसारिणी सवा । तं ववहारं कुवं सुज्झइ मवो वि समईए ॥ २१८ ॥

१ 'आमे' अपके ॥ २ °व्विहंस्सुय° प्रतौ ॥ ३ अव्विवा° प्रतौ ॥ ४ गाथेयमोघनिर्युक्तौ ४६ तमी ॥ ५ गाथेयं व्यवहारपीठिकायां १८४ तमी ॥ ६ संगमसु° प्रतौ ॥ ७ छंघस्थसमयचर्या ॥ ८ पुर्वेन् ॥

जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहार-निच्छए मुयह । ववहारनउच्छेए तित्थुच्छेओ हवइ जम्हा ॥ २१९ ॥

तथा—धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहाऽऽयरियं सया । तमायरंतो ववहारं गरिहं नाभिगच्छई ॥ २२० ॥

तो दूसमाए दोसं विभाविउं जत्थ जं पलोएज्जा । नाणे व दंसणे वा चरणे वा तमुववूहेज्जा ॥ २२१ ॥

किंच—नै विणा तित्थं नियंठेहिं नातित्था य नियंठिया । छक्कायसंजमो जाव ताव अणुसज्जणा दोण्हं ॥ २२२ ॥

तहा—जा संजमया जीवेसु ताव मूला य उत्तरगुणा य । इत्तिरिय-छेय संजम निग्गंथ बउसा य पडिसेवी ॥ २२३ ॥

धीरपुरिसपरिहाणिं नाऊणं मंदधम्मिया केइ । संविग्गजणं हीलंति ताण पयडो इमो दोसो ॥ २२४ ॥

संतगुणछायणा खलु परपरिवाओ य होइ अलियं च । धम्मे य अबहुमाणो साहुपओसे य संसारो ॥ २२५ ॥

जइ संपुन्नं एयं हविज्ज सिद्धी वि ता न वुच्छेज्जा । एयं पि नो मुणिज्जइ अहो ! महामोहमाहप्पं ॥ २२६ ॥

देव-गुरु-धम्म-किरियं पुव्वं जत्तो वियाणियं ते वि । हीलिज्जंती जइणो ही ही ! अकयन्नुओ लोगो ॥ २२७ ॥

इय नरवर ! केचिरमबुहजीवदुविलसियं निसामिहसि ? । साहूहिंतो वि परो मोक्खोवाओ धुवं नत्थि ॥ २२८ ॥

आगमतत्तं च नरिंद ! सुणसु गयराग-दोस-मोहाण । एगंतपरहियाणं जिणाण वयणं हियं अमियं ॥ २२९ ॥

१ गाथेयं पञ्चवस्तुके १७२ तमी ॥ २ गाथेयमुत्तराध्ययने अ० १-४२ तमी ॥ ३ ततः दुष्षमाया दोषं विभाव्य ॥ ४ तमव° प्रतौ ॥ ५ गाथेयं व्यवहारदशमोद्देशकभाष्ये ३८९ तमी ॥ ६ आगमतत्त्वं च नरेन्द्र ! शृणु गतरागद्वेषमोहानाम् । एकान्तपरहितानां जिनानां वचनं हितं अमितम् ॥ दृष्टान्तयुक्तिहेतुगम्भीरमनेकभङ्गनयनिपुणम् । आदिमध्यानरानेषु दूरपरित्यक्तव्यभिचारम् ॥

दिट्ठंत-जुत्ति-हेऊगंभीरमणेगभंग-नयनिउणं । आई-मज्झ-ऽवसाणेसु दूरपरिच्चत्तवभिचारं ॥ २३० ॥
सिवपहरयणपईवं व कुमयपवणप्पणोल्लणाऽसज्झं । संझं व बहुविहाइसयतारतारानिवहजणणे ॥ २३१ ॥
इय देवम्मि गुरुम्मि य आगमविसए य जायबोहस्स । संकाइदोसरहिया पडिवत्ती होइ सम्मत्तं ॥ २३२ ॥
एयम्मि पावियम्मि नत्थि तयं जं न पावियं होइ । एयम्मूलाउ चिय महल्लकल्लाणवल्लीओ ॥ २३३ ॥
अह मयणदत्त-नरवइसुएहिं संजायपरमतोसेहिं । भणियं भयवं ! साहुप्पसायओ पत्तरिद्धीणं ॥ २३४ ॥
अम्हाणं पि हु पुरओ को एसो साहुदूसणं कुणइ ? । अहवा होयव्वं एत्थ पुव्वदुच्चरियदोसेण ॥ २३५ ॥
ता भयवं ! साहह को पुणेस पुव्वे भवम्मि हुंतो ? त्ति । मुणिवयणा जंपियमेगमाणसा भो ! निसामेह ॥ २३६ ॥
एसो सावत्थीए नयरीए गिहवइस्स धंभस्स । पुत्तो नाम कुबेरो त्ति आसि पिउणो य सो रोसा ॥ २३७ ॥
संभूयगणिसमीवे पव्वइओ केचिराणि वि दिणाणि । विणय-नएहिं वड्ढिय पच्छा परिवडियउच्छाहो ॥ २३८ ॥
आवस्सयाइएसुं आलस्सं पइदिणं पि कुणमाणो । गुरुणा सासिज्जंतो साहूहि य कोवमुव्वहइ ॥ २३९ ॥
ईसिं पि साहुखलियं पेक्खित्ता भणइ नियदुच्चरियं । रक्खंति न थेवं पि हु परस्स पुण दिंति उवएसं ॥ २४० ॥
'बाल-गिलाणाईणं वेयावच्चं सया वि किच्चं' ति । गुरुणो वि परेसिं पन्नविंति न सयं पुण करेंति ॥ २४१ ॥

आसधरस्य पूर्वभवः

---

१ °घाभि° प्रतौ पाठः ॥ २ शिवपथरत्नप्रदीपं इव कुमतपवनप्रनोदनाऽसाध्यम् । सन्ध्या इव बहुविधातिशयतारतारानिवहजनने ॥ ३ सज्झं° प्रतौ ॥ ४ महाकल्याणवल्ल्यः ॥ ५ °हुपासा° प्रतौ ॥ ६ मुनिपतिना ॥ ७ कियच्चिराणि ॥ ८ शिष्यमाणः ॥ ९ साहुंहि य प्रतौ ॥

एमाइदूसणाइं वागरमाणो किलिट्ठमण-वयणो । मरिउं असुरनिकाए किब्बिसियासुरसिरिं पत्तो ॥ २४२ ॥
तत्तो चविउं इण्हिं सावयभावं गओ वि एस इहं । पुव्वाणुवेहउ चिय पडुच्च मुणिणो इय भणेइ ॥ २४३ ॥

इय सोच्चा तं सड्ढं पन्नविउं ठाविउं च सुहमग्गे । नरवइपमुहा सव्वे गिहिधम्मे उज्जया जाया ॥ २४४ ॥
कारियजिणवरभवणा, सम्माणियपणइणो मुणियसमया । समणजणपज्जुवासणपराइणा लोगठिइकुसला ॥ २४५ ॥
सविसेसजाणणम्मि समुज्जया विहियकुमयवामोहा । दक्खिन्न-दयाइगुणन्निया य भववासनिव्विन्ना ॥ २४६ ॥
इय ते विन्नायजहत्थियत्थसिद्धन्तसारसव्वस्सा । जिणधम्मे रायाई निच्चलचित्ता दढं जाया ॥ २४७ ॥
सूरी वि सुचिरमणुसासिऊण रायाइणो जहाभिमयं । विहरिउमारद्धो गाम-नयर-पुरमंडियं वसुहं ॥ २४८ ॥

अह अन्नया कयाई सोहम्मसहट्ठिएण सुरवइणा । करकलियामलयं पिव ओहीए मही नियंतेणं ॥ २४९ ॥
सम्मत्तनिच्चलमणं मुणिउं तं भूवइं सभापुरओ । भणियं भो भो तियसा ! नरवम्मनराहिवो एस ॥ २५० ॥
ससुराऽसुरतिजएण वि न चालिउं तीरए जिणमयाओ । ता एत्तो वि न धन्नो कयपुन्नो वा जंए अन्नो ॥ २५१ ॥
सोऊण य वयणमिमं सुवेगनामो सुरो विचिंतेइ । बालाणं व पहूणं जहतह छज्जन्ति उल्लावा ॥ २५२ ॥
कहमन्नह नरमित्तो न चालिउं तीरइ त्ति हरिराह ? । अहवा सयमेव तहिं गंतुमहं तं परिक्खामि ॥ २५३ ॥

१ 'पूर्वानुवेधात्' पूर्वसम्बन्धाद् एव प्रतीत्य ॥ २–परायणाः–तत्पराः ॥ ३ °ठिइ° प्रतौ ॥ ४ विहियकुमय° प्रतौ । विहत कुमतव्यामोहाः ॥ ५ विज्ञातयथास्थितार्थसिद्धान्तसारसर्वस्वा ॥ ६ सौधर्मसभास्थितेन ॥ ७ पिव इवार्थे हस्तगतम् ॥ ८ पश्यता ॥ ९ शक्यते ॥ १० जगति ॥ ११ राजन्ते ॥

सुरेन्द्रेण नरवर्मनृपस्य सम्यक्त्व-सामर्थ्य-परीक्षणम्

अह कयमुणिरूवो कंदप्पगुम्ममणपरिगुडो होउं। रायंगणमणुपत्तो दिट्ठो नरवम्मनरवइणा ॥ २५४ ॥
अब्भुट्ठिओ य सहसा मंदरमिमह वंदिऊण पुट्ठो य। भयवं! साहेह महं किं पि हु आगमणकज्जं? ति ॥ २५५ ॥
मुणिमुणिणा भणियं भूमिनाह! किं संजयाणमिह कज्जं? । जेसिं मोक्खे-भवेसु वि तुल्ल च्चिय चित्तपडिवत्ती ॥२५६ ॥
जइ वि हु अणुग्गहट्ठए मम किं पि कहेह भूवई भणइ। एत्थंतरम्मि निमियगल्लगहत्थेण केणावि ॥ २५७ ॥
केण वि कुंतग्गेणं केण वि निम्मियकियाणिहत्थेणं। समणेणं पडिरुद्धो राया करिकेसरीवाऽऽसु ॥ २५८ ॥
नट्ठो सि भज्ज कंड्डो सि अज्ज अज्जं न होसि रे दुट्ठ!। इय जंपिरेहिं तेहिं राया सम्मं च पच्चादिओ ॥ २५९ ॥
अह दुम्मिंढमणाहिडियउट्ठउड्डफुरंतदंतकंतीहिं। धावलितेण य समणं नरवइणा जंपियं एवं ॥ २६० ॥
भयवं! किमिदुमंडलसिहिकणवरिसणसरिच्छमेयं? ति। ते आहु रे कुपत्थिव! न मुणसि दुविणय! निद्धम्म! ॥ २६१ ॥
सीयंति महामुणिणो दाणाओ तेऽत्र संति देसे वि। भुंजसि य सयं रज्जं मायनायं वहसि कुडं ॥ २६२ ॥
इय कवडमनिगरिसं तुज्झ पयं संपयं समप्पेमो। एवं वुत्ते तेहिं राया पडिभणिउमाढत्तो ॥ २६३ ॥
सघमिमं मह होसो एगो नारं मयंकायलस्स। जिणमागमस्स कीरह कीस कलंको मुहा एवं? ॥ २६४ ॥
एगो लोगो नाही मवे चिय एरिसा पुणं समणा। ता एगंते काउं किमहं पावो न निग्गहिओ? ॥ २६५ ॥

१ कीरागमुमणमारि११. भूपा। रागाकुलन् ॥ २ गहृत्य् अभ ॥ ३ मुद्धो सि भ्री ॥ ४ देवसुमनविपठितीव्रपुटस्फुरदन्ताकान्तिभिः । भावनत ॥ ५ इन्दुमण्डलशिखिकणवर्षणसदृशमेतद् ? इति ॥

१

ते धन्ना सप्पुरिसा ताण जए निम्मला परं कित्ती । जेहिं नियजीविएण वि जिणसासणमुन्नइं नीयं ॥ २६६ ॥
किं लच्छीए ? किं वा विहलेणं तेण भूवइत्तेण ?। किं वा महं विवेगेण ? किं व सत्थत्थबोहेण ? ॥ २६७ ॥
जो हं सिरिजिणसासणलहुत्तसहकारिकारणं जाओ । एत्तो वि जीविएणं कलंकपंककिएणं किं ? ॥ २६८ ॥
ता होउ जंपिएणं पारद्धं कुणह साहुणो तुरियं । एयं चिय पच्छित्तं इमस्स दुव्विलसियस्स ममं ॥ २६९ ॥

इय जाव निवो सब्भावगब्भवयणाइं उल्लविय सज्जो । जाओ जीवियचागस्स ताव सहस त्ति तियसेण ॥ २७० ॥
सम्मत्तनिचलत्तं ओहीए लक्खिऊण सविसेसं । हरिसंसियाउ संहरियसयलडमरप्पवंचेण ॥ २७१ ॥
पयडियनियरूवेणं भालयलाऽऽरोविओभयकरेण । भणियं भो भो नरवर ! कयमित्तो चित्ततावेणं ॥ २७२ ॥
सम्मत्तथिरत्तं तुह सोहम्मिंदेण सलहियं दूरं । तमसद्दहिऊण मए कयमेवंविहमहाडमरं ॥ २७३ ॥
न तुमाहिंतो वि परो सम्मद्दिट्ठी जयम्मि वि विसिट्ठो । कह न मही रयणवई जीसे नाहो तुमं जाओ ॥ २७४ ॥

रायाऽऽह भो महायस ! किं सलहसि मे वराडयसमस्स ?। सप्पुरिसरयणभरिए जिणिंदवरसासणसमुद्दे ॥ २७५ ॥
अह नियसिराउ मउडं फुरंतमणिकुंडलं पणामित्ता । कयसविणयप्पणामो तियसो जंपेउमाढत्तो ॥ २७६ ॥

१ °सहिकारि° प्रतौ ॥ २ 'हरिशंसितात्' इन्द्रकथितात्, संहृतसकलविप्लवप्रपञ्चेन ॥ ३ कृत एतावन्मात्रचित्तः ॥ ४ आपणे मम कपर्दकतुल्यस्य ॥ ५ अर्पयित्वा ॥

नृवर ! कुमुदकन्दच्छेदशुभ्रैर्यशोभिस्तव धवलितमेतत् सौधवद् विश्वविश्वम् ।
करतलकमलान्तर्भृङ्गिकेवाऽऽश्रिता श्रीरखिलमपि निलीनं प्राक्कृतं दुष्कृतं च ॥ १ ॥
तदिह भुवि न भद्रं भावि यन्न त्वयीतः, शिवसुखसखिभावं नीत आत्मा त्वयाऽसौ ।
तव गुणगणनायां सत्प्रवादप्रवृत्तिः, ध्रुवमपरनरेषु द्रागभून्मुद्रितेव ॥ २ ॥
त्वमिह सुकृतभाजामग्रणीः श्रीजिनेन्द्रप्रवचनरमभिज्ञास्तद्वयुद्धानवापि (?) ।
कथमिव न विशुद्ध्यै दूरनिर्धूतपङ्कं, भवति हि भवदङ्घ्योर्दर्शनं स्पर्शनं च ? ॥ ३ ॥
इति सुचिरमुदात्त-स्फीत-सत्यार्थसारं, स्तवनमनुविधाय प्रेक्ष्यमाणो नृपेण ।
गवलजलदनीलं लङ्घय[न्] व्योममार्गं, झगिति सुरनिकेतं स्वं जगामाऽमरः सः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वाधिकारे नरवर्मनृपकथानकं समाप्तम् ॥ १ ॥

सम्मत्ते पत्ते वि हु तदसुद्धीए न को वि होइ गुणो । ता तव्विसुद्धिमेण्हिं भणामि समयाणुसारेण ॥ १ ॥
संकाईया दोसा चउरो वि हु असुहभावसंजणगा । दूरेण वज्जणिज्जा सम्मत्तविलुंपगा पावा ॥ २ ॥
उववूहणाइया पुण निदंसिया सुंदरा गुणा चउरो । एए इह करणिज्जा दोसा एए वि विवरीया ॥ ३ ॥

नरवर्मनृपं प्रति स्तुतिपूर्वकं सुवेगदेवस्याऽऽशीर्वचः

१ धव° प्रतौ ॥ २ प्रेक्षमा° प्रतौ ॥ ३ गुणे प्रतौ ॥ ४ अनघाम् ॥ ५ आगमानुसारेण ॥ ६ 'उपबृंहणादिकाः' प्रभावनादिकाः ॥

कंखाईण सरूवं नियनियठाणेसु वन्नइस्सामि । ता संकापयमेव हि वन्निज्जंतं निसामेह ॥ ४ ॥

संसयकरणं संका सा दुविहा देस-सव्वभेएण । देसे जीवाईणं एक्कं संकेइ किं पि पयं ॥ ५ ॥

सव्वे पुण सव्वं पि हु दुवालसंगं पि संकइ विमूढो । किं होज्ज जिणुत्तमिमं ? अन्नेण व केणई विहियं ? ॥ ६ ॥

संकाकलंककलुसीभवंतभयवंतवुत्ततत्तस्स[1] । कज्जे निच्छयसारा कह चिट्ठा घडइ सुविसिट्ठा ? ॥ ७ ॥

संदेहदीहदोलाधिरूढचित्तो न साहिउं सक्को । इहलोइयं पि किसिकम्ममाइ परलोइयं दूरे ॥ ८ ॥ किंच—

संकाविसविलसिरबहुवियप्पखिप्पंतचित्तविन्नासो[2] । इहइं चिय दुहभागी जायइ धणदेववणिओ व ॥ ९ ॥

तथाहि—अत्थि इहेव जंबुद्दीवे दीवे[3] एरवयखेत्ते कलिंगदेसकुलंगणावयणं व मणोहरवाणियं[4][5], कम्मगंथपगरणं व बहुविहपयइट्ठिइपएसगहणं[6], धण-धन्नसमिद्धं जयत्थलं नाम खेडं[7] । तत्थ य वत्थव्वो विसाहदत्तो नाम सेट्ठी । सेणा नाम [से] भज्जा । दुवे य ताण पुत्ता—संवरो धणदेवो य । दुवे वि य भायरो परोप्परं पिइं वड्ढंता[8] दिणाइं गमिंति ।

अन्नया य पिउणा विचिंतियं—को इमस्स घरस्स अब्भुद्धारकारी एएसिं होहि ? त्ति परिक्खं करेमि, तओ तं परिक्खा-[9]

१–भगवदुक्ततत्त्वस्य ॥ २ शङ्काविषविलसनशीलबहुविकल्पक्षिप्यमाणचित्तविन्यासः । विन्यासः–स्थैर्यम् ॥ ३ °वे वरवय° प्रतौ ॥ ४ मणोरहवा° प्रतौ ॥ ५ मनोहरा वाणी यत्रैतादृग् मुखम्, अन्यत्र मनोहरं वाणिज्यं यत्रेति ॥ ६ बहुविधैः प्रकृतिस्थितिप्रदेशैः–एतद्विषयकविचारैरित्यर्थः गहनमेवंविधं कर्मग्रन्थप्रकरणम्, अन्यत्र बहुविधाः याः प्रकृतयः–प्रजास्तासां स्थितिः–निवासो यत्र एवंप्रकारैः प्रदेशैः–स्थानैर्गहनमिति ॥ ७ धूलिप्राकारपरिक्षिप्तं स्थानं खेटमित्युच्यते ॥ ८ वट्टंता प्रतौ ॥ ९ परीक्षानिष्पन्नम् ॥

निवच्छियं कुडुंबाहिवत्ते पइट्ठिऊण अप्पणा सुहेण निच्चिंतो निवसामि त्ति। पारद्धा परिक्खा, वाहरिया दो वि पुत्ता—अरे! सुवन्नसहस्सपंचयं घेत्तूण वयह तुब्भे दो वि विभिन्नदेसेसु, दंसेह अप्पणोऽप्पणो दव्वोवज्जण[विन्नाण]—न्ति। पडिवन्नं तेहिं। पग्गहियपभूयमंडा पट्ठिया देसंतरं। तत्थ जेट्ठो गओ दक्खिणावहं, इयरो य उत्तरावहं।

जेट्ठेण कंचीपुरं पत्तेण पारद्धा अणेगदव्वज्जणोवाया, कया नरिंदेण समं मेत्ती, उंवयरिउमारद्धो य पवरवत्था-ईहिं। भणिओ य सहाइलोगेण—अहो! किमेवं निरत्थओ अत्थवओ कीरइ? किं केण भुयंगम-महीनाह-हुया-सणा उंवयारेण गहिया दिट्ठा? जेणेवं वट्टसि। संचरेण भणियं—अरे मूढा! तुब्भे न जाणह परमत्थं। जेण—

गंतव्वं रायउले राया तव्वल्लभा य भइयव्वा। जइ वि न वि हुंति विहवा नूणंऽणत्थप्पडीयारो ॥ १ ॥

जइ पुण धणक्खयभया न भइज्जइ भूवई सेइत्तेण। ता ओहावणठाणं नीयाण वि होइ किं चोज्जं? ॥ २ ॥

इति विणिच्छिय सबुद्धिवियप्पेण अविगणिऊण मुद्धजणुल्लावं तह कह वि पारद्धो ववहारो जह सुखेत्तनिहित्तबीयनिवहो व भूरिफलपब्भारो जाओ। पाविया पसिद्धी। रायमडप्फरेण य उस्सिंखला वि गहिय निययलब्भं इब्भो य भूओ अचिरेणं।

इओ य धणदेवो गज्जणयं पत्तुं वच्चंतो आवासिओ एगत्थ सन्निवेसे। आगया य तन्निवासिणो। मग्गिओ य सो तेहिं भंडं। 'अत्थि केत्तिओ वि लाभो' त्ति दाउमारद्धो पडिसिद्धो परियणेणं—किमेवं अट्ठाणदाणेणं करिट्ठियं पि

राजकुल-परिचये लाभः

१ °व्वणइ° प्रतौ ॥ २ 'उपचरितुम्' सेवितुम् ॥ ३ उपचारेण ॥ ४ °यारा प्रतौ ॥ ५ सइत्तेण प्रतौ। 'सफर्गेन' निपुणेन ॥ ६ 'अपभ्राजनास्थानम्' निन्दायाः स्थानम् ॥ ७ आश्चर्यम् ॥ ८ गजगर्वेण च उच्छृङ्खलादपि गृहीत्वा निजकलभ्यम् ॥ ९ °ज्जणयं प्रतौ ॥

भूरिलाभं थेवेण हारेसि ? त्ति । तेण भणियं—को मुणइ तत्थ लाभो भविस्सइ न व ? त्ति, ता थोवलाभे वि दिट्ठे तप्परिहारो[1] अजुत्तो–त्ति विणिवट्टियं[2] सव्वं । तदुवलद्धदव्वेण य अन्नं घेत्तूण पट्ठिओ, कालंतरेण पत्तो गज्जणयं । पयट्टो य पच्चक्खपसिद्धं पि संसयारोवणीहिं परिहरिय दव्वज्जणोवायं तेसु तेसु असारवावारेसु । 'सच्छंदो' त्ति उवेहिओ परियणेणं । उवलद्धतदभिप्पाएण य उवयरिउमारद्धो सो एगेण नयरवुत्तेण[3] । तच्छंदणाणुवित्तित्तणेण य पवत्तो से अभिन्नहिययत्तणं, आयड्ढियं च तत्तव्ववएसेण[4] तत्तो धणं[5] । एवं च तुच्छवित्तो जाओ एसो ।

अन्नया य [6]मरुययरम्मदाणसुमणोहरतरुणीकुरुवल्लरीविलुलण-वलण-चलण-डिंखोलणखणसंपत्तसोरभा सिसिरियसरियनीरभरदुवहतुहिणुक्किरणदुस्सहा उत्तरदिसिसमुत्था[7] सव्वत्थ वि गंधवहा वियंभिया । पोढिमणुपत्तो हेमंतो । [8]वड्ढिया गेहिणीगाढालिंगणुक्कंठा । विमण-दुम्मणीहूया पहियवंठा । [9]ठाणट्ठाणपइट्ठियधम्मग्गिट्ठियापेरंतवीसमंतरोरनियरा जाया सन्निवेसपरिसरा । [10]विपंकातिल्लकल्लवियघणघुसिणंगरागरेहंतपुरजणाणुसरिज्जंतवलभीमज्झा संवुत्ता दिणावसाणसंज्झा । [11]परिफुट्टकुंदसोरभभरबंधुरा विप्फुरिया काणणसमीरा ।

१ 'तत्परिहारः' लाभपरिहारः ॥ २ समापितमित्यर्थः ॥ ३ नगरपुत्रेण ॥ ४ तत्तद्व्यपदेशेन ॥ ५ वणं प्रतौ ॥ ६ मरुवककृक्षरम्यदानसुमनोहरतरुणीकुटिलकेशवल्लरीविलुलन–वलन–चलन–डिंखोलनक्षणसम्प्राप्तसौरभाः शिशिरितसरिन्नीरभरदुर्वहतुहिनोत्किरणदुस्सहाः उत्तरदिक्समुत्थाः सर्वत्रापि 'गन्धवाहाः' वाताः विजृम्भिताः ॥ ७ °मुत्थस° प्रतौ ॥ ८ वर्धिता गेहिनीगाढालिङ्गनोत्कण्ठा । विमनोदुर्मनीभूताः पथिकवण्ठाः ॥ ९ स्थानस्थानप्रतिष्ठितधर्माग्निष्ठिकापर्यन्तविश्राम्यद्रोरनिकराः जाताः सन्निवेशपरिसराः ॥ १० विपक–आर्द्रितघनघुसृणाङ्गरागराजमानपुरजनानुस्त्रियमाणवलभीमध्या संवृत्ता दिनावसानसंध्या ॥ ११ विकसितकुन्दसौरभभरबन्धुराः विस्फुरिताः काननसमीराः ॥

एवंविहे य पवहंते हेमंते सो धणदेवो कुवि[य]प्पारोवियदोसं निद्दोसं पि परियणं संकंतो गिहदुवारं निविडकवाडसंपुडं तोलिऊण कुंचियाहत्थो रुच्छायुहपइट्ठियाए अग्गिट्ठियाए सिसिरसमीरविहुरसरीरतावणट्ठा उवविट्ठो विसिट्ठजणगोट्ठीए। एत्थंतरे उच्छलिओ बहलकोलाहलो। 'किमेयं ? किमेयं ?' त्ति भीया उट्ठिया जणा पलोइउं पयत्ता दिसिचलयं। दिट्ठो य उड्ढं पवड्ढंतो कवोयकंधराधूसरो समुच्छलियघणरिंछोलिसंकियवकंगुग्गीवसच्चविज्जंतो मंसलो धूमनिवहो। 'कस्स घरमेयं उज्झइ ?' त्ति जाव संकासंकुनिभिज्जमाणमाणसो उप्पित्थहियओ जणो चिट्ठइ ताव सिट्ठमेगेण नरेण—एयस्स धणदेवस्स इमं मंदिरं उज्झइ त्ति। तओ तुरियं पेसिओ चि जणेण मंदिराभिमुहं सो न वच्चइ संसयालिद्धबुद्धी, भणइ य—न संभाविज्जइ मम मंदिरम्मि, किंतु तुहिणकणाणुविद्धगंधवाह[वाहिय]पहियपज्जालिओ तणरासिजलणो भविस्सइ, कीस मुहा वाउला होह ? उवविसह संट्ठाणेसु। खणंतरेण य इओ तओ पलोयंतो संपत्तो परियणो, भणिउं पवत्तो य—भो भो धणदेव ! किमेवमणाउलो चिट्ठसि ? न पेच्छसि आमूलविफुरियफारफुलिंगुग्गारदारुणो दारुदहणदीहरसिहाकरालो अनलो घरं दहंतो ? त्ति। इमं सोच्चा उट्ठिओ सो गओ घरं सुमाणतुल्लं। निदड्ढसव्वमारं दिट्ठमगारं। 'खीणविभवो' त्ति परिच्चत्तो परियणेणं। 'वाउलो' त्ति धिक्कारिओ जणेणं।

१ 'तालयित्वा' तालकं दत्त्वेत्यर्थः ॥ २ °वणुट्ठा ओव° प्रतौ ॥ ३ सउच्छ° प्रतौ। समुच्छलितघनपङ्क्तिशङ्कितवकग्रोद्ग्रीवदृश्यमानः॥ ४ °भिच्चमा° प्रतौ। निर्भिद्यमान-॥ ५ त्रस्तहृदयः॥ ६ सिट्ठं मे° प्रतौ॥ ७ संशयाश्लिष्टबुद्धिः॥ ८ तुहिनकणानुविद्धगन्धवाह[बाधित]पथिकप्रज्वालिततृणराशिज्वलनः॥ ९ °तणुरा° प्रतौ॥ १० संठाणे° प्रतौ॥ ११ आमूलविस्फुरितस्फारस्फुलिङ्गोद्गारदारुणः दारुदहनदीर्घशिखाकरालः॥ १२ श्मशानतुल्यम्॥ १३ वातूलः॥

अनिव्वहंतो य पट्ठिओ पिउघराभिमुहं । छुहाकिलंतो य पविट्ठो एगत्थ सन्निवेसे भिक्खं परिभमिउं । 'सुंदरागारो' त्ति अणुकंपाए उववेसिऊण सायरं दिन्नं से एगाए घरसामिणीए भोयणं । उवसंतखुहावेयणो य नीहरिओ तत्तो । नवरं जाया से संका—अच्चायरदाणेण मुणेमि कम्मणाइदोसदुट्ठं भोयणमेयं ति । अच्चत्थसंकावसेण य उप्पन्ना उदरपीडा । महाकट्ठेण पत्तो एगम्मि नयरे । आपुच्छिऊण पविट्ठो वेज्जघरे । सिट्ठो वेज्जस्स दोससंभवो । दिन्नं उदरसोहणमोसहं से वेज्जेण । गंगासोउ व पयट्टो से अईसारो । अणुकंपाए तहावि ओसहदाणेण पडियग्गिओ किं पि वेज्जेण । ईसिववगयसंकावियारो य पट्ठिओ मग्गे । कालंतरेण पत्तो पिइमंदिरं । तप्पुव्वसमागयपरियणमुहनिसामियसमग्गवुत्तंतेण य पिउणा कया तदुचियपडिवत्ती ।

अवरवासरे य वद्धाविओ बीयसुयागमणेण सेट्ठी । पट्ठिओ य तयभिमुहं । कोसंतरमुवगएण निसामिओ वसहकंठघंटारवो । खणंतरेण य पत्तो पउरकरह-गोण-वेगसर-जाण-जंपाणपमुहपहाणसामग्गीए भडनियरपडियरिओ सुओ । पडिओ पिउणो चलणेसु । सामग्गिए चिय मुणिओ से भूरिदव्वोवज्जणोवक्कमो । पविट्ठो नयरं, जायं वद्धावणयं । सोहणतिहिमुहुत्ते य कओ सो घरसामी । इयरो कम्मयरकज्जेसु निउत्तो, निच्चं पि दुखाभागी य संवुत्तो संकादोसेणं ति ।

जइ दव्वओ वि संका संकेयपयं धुवं असिद्धीणं । ता कह जिणुत्ततत्ते सा कल्लाणाइं निंहणेज्जा ? ॥ १ ॥

अहवा संदेहमहातमोहवामोहिया इहं जीवा । चिंतामणिं पि पत्तं चयंति लेट्ठुं ति मन्नन्ता ॥ २ ॥

१ क्षुधाक्रान्तश्च ॥ २ गङ्गास्रोत इव ॥ ३ °इगारो प्रतौ ॥ ४ °ओ पत्तो सु° प्रतौ ॥ ५ निखन्यात् ॥

परमगुरुमुखाब्जान्निर्गते तत्त्वजाते, य इह कलुषबुद्धिर्मुह्यति स्वल्पसत्त्वः ।
विमलसलिलपूर्णां मङ्क्षु मुक्त्वा तडागीं, स सरति मृगतृष्णायाः सरस्तृट्पराद्धः ॥ १ ॥
मृषावदनकारणं भवति राग-मोहोदयः, स च त्रिभुवनप्रभावपगतः क्षयं सर्वथा ।
तदेवमपि शङ्कते य इह कोऽपि तुच्छाशयः, स वाञ्छति हुताशनादमृतवारिशैत्यक्रियाम् ॥ २ ॥
वैद्यमाप्तमवबुद्ध्य रोगवान्, तद्वचोऽपि यदि जातु शङ्कते । भेषजं विदधदप्यनारतं, किं तदा व्रजति कोऽप्यरोगताम् ? ॥
इति त्यक्ताशङ्कः सकलमपि सर्वज्ञवचनं, तथा चित्ते दध्यात् स्पृशति न यथा संशयरजः ।
यतः सूर्योऽपाच्यामुदयमुपयायादपि शिवं, विजह्युर्वा सिद्धा न च भवति मिथ्या जिनवचः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वातिचारचिन्तायां शङ्कादोषे धनदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २ ॥

काङ्क्षायाः स्वरूपम्

निस्संकिए वि सैम्मे कंखा तॅब्भावघाइणी नेया । अन्नन्नदंसणग्गहो सरूव एवं इमीए जओ ॥ १ ॥
देसे सव्वे य दुहा एसा देसम्मि दंसणं किं पि । एगं कंखइ कविलाइसंतियं भव्वमेयं ति ॥ २ ॥
सव्वे सव्वमयाइं कंखइ पुण संसिया इहं भावा । दाण-ऽज्झयणाईया एएसु वि ते समा चेव ॥ ३ ॥

१ त्रिभुवनप्रभौ अपगत इति सन्धिच्छेदः ॥ २ यदि यातु सङ्केते प्रतौ ॥ ३ सम्मं प्रतौ । सम्यक्त्वे ॥ ४ सम्यक्त्वभावघातिनी ॥
५ 'काङ्क्षते' समीहते ॥ ६ 'शंसिता' कथिताः ॥ ७ °णाइया प्रतौ ॥

दुविकप्पा वि न कप्पइ काउमिमा दंसणं पवन्नस्स । कुपहपरिच्चागेण हि सुपहपवित्ती जणे दिट्ठा ॥ ४ ॥
न हि भूरिमग्गलग्गो पंहिओ पाउणइ वंछियं ठाणं । न विसे वि अमयचिंता तक्कज्जपसाहणं कुणइ ॥ ५ ॥
न य जुत्ता-ऽजुत्तवियारसारवावारविरहिया पुरिसा । अंहि[य]च्चागेण हियत्थसाहणे उज्जया हुंति ॥ ६ ॥
ताऽसव्वन्नुपणीए किच्चे च्चिय समुचिया परं कंखा । अन्नन्नकुतित्थियवग्गमग्गचागेण अच्चंतं ॥ ७ ॥
ईहभवियकिच्चविसया विपेक्ख कंखा असंखदुक्खकरी । तव्विन्नसमाणसो इह दिट्ठंतो नागदत्तगिही ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि इहेव भारहे वासे वियड्ढजणवड्ढियाणंदा वासुपुज्जजिणजम्मणजणियाणेगकल्लाणा चंपा नाम नयरी । तत्थ य वत्थव्वो सयंभू नाम वणिओ । पउमाभिहाणा से भज्जा । ओवाइयसयसंपत्तजम्मणो नागदत्तो नाम ताण पुत्तो । पाढिओ संजोग्गयाणुरूवं कलाकलावं । जोव्वणोवगओ य काराविओ समजाइ-रूवाइंगुणाए कुलबालियाए सलक्खणनामधेयाए पाणिग्गहणं । कालक्कमेण य जाओ कुडुंबपब्भारुव्वहणसमत्थो ।

अन्नया य पिया पारद्धो जराए, असारीकओ रोगेहिं, परिचत्तो बुद्धि-बल-परक्कमेहिं । तव्विहो य सो अप्पाणमधरमव-धारिऊण पुत्तं भणिउं पवत्तो—वच्छ ! पेच्छसु वुच्छेयपत्तं व मह सरीरगं, अज्जं कल्लं वा निच्छियं विवज्जिही, ता एत्थ इमं वत्तव्वं—तुमं हि सप्पुरिसमग्गे अप्पाणं ठविऊण तहा वट्टिज्जासि न जहा कुडुंबमम्हारिसाणमणुसरइ, न वा दुज्जणाणं हीलापयं

१ पथिकः प्रगुणयति वाञ्छितं स्थानम् । न विषेऽपि अमृतचिन्ता ॥ २ अहितार्थत्यागेन हितार्थसाधने ॥ ३ इय भ° प्रतौ ॥ ४ °क्ख संखा प्रतौ ॥ ५ उपयाचित— ॥ ६ संजो° प्रतौ ॥ ७ °इगणा° प्रतौ ॥ ८ 'अधरं' असमर्थम् ॥

वच्चइ, किंच—वच्छ ! न जाणिज्जइ कम्मपरिणईए का वि दसा पच्छइ, अओ जइ कह वि न निंच्छारिउं पारेसि कुडुंबं ता अम्ह कुलदेवया कालिंजरगिरिपुव्वसिहरदेवउलपइट्ठिया चिट्ठइ तीसे आराहणं करेज्जासि, अम्ह पुव्वपुरिसेहिं पि दुत्थावत्थावडिएहिं आराहिया खु सा वंछियफलया जाय त्ति। सिरविरइयंजलिणा य 'तह' त्ति पडिस्सुयं नागदत्तेण । पवन्नभत्तपाणपरिच्चागो य विवन्नो एसो। कयाइं तप्पारलोइयकिच्चाइं नागदत्तेण ।

विगयसोगीहूए य एसो कालक्कमेणं पयट्टो पुव्वपुरिसट्ठिईए अत्थोवज्जणाइवावारेसु । जाया य दुहाभिहाणेण सेट्ठिसुएण सह मेत्ती । समसुह-दुक्खाण य वचंति वासरा । सरंते य काले तहाविहअसुहकम्मोदयवसेण विलोट्टा ववसाया, विहडिओ पुरिसयारो, तक्करेहिं विलुत्ता देसंतरगयवणिपुत्ता, दड्ढा धन्नसंचया, पलीणाइं वड्ढिपउत्ताइं वित्ताइं, थोवदिणेहिं सव्वो वि अण्णो व परिणओ परियणो। ताण दोण्हं पि जाओ य परोप्परं एगंते आलोचो—अहो ! नूणमवरभवे समगं चिय कयं किं पि कम्ममणुचियं, जप्पभावेण तुज्झ मम पि एक्ककालमावडियमिमं निवाहसंकडं । दुहेण भणियं—ता को एत्थो उवाओ ? कत्तो वा परित्ताणं ? किं वा कयं सुकयं हवइ ? बाढं मूढं मह मणं न किं पि दट्ठुं पारइ, किं बहुणा ? संपइ अप्पाणं पि दुहावहमह[म]वगच्छामि; अहवा—

ता किं चोज्जं भन्नइ जं भन्नइ निद्धणत्तणं च जणो ? । अप्पा वि हु अप्पाणं कप्पइ पहपंसुपडितुल्लं ॥ १ ॥

पूरणमेत्तपवन्नो बुहाण हासप्पयं पयचैन्तो । सद्दो व अत्थरहिओ अवगिज्जइ किं पुण मणूसो ? ॥ २ ॥

निर्धनत्वम्

१ निस्तारयितुम् ॥ २ °ज्झायगो प्रतौ ॥ ३ व्यस्ता व्यवसायाः ॥ ४ °यत्तो प्रतौ ॥ ५ शब्दपक्षे निरर्थकः, अन्यत्र धनरहितः ॥

सा बुद्धी सुविसुद्धा तमिंदियाणं बलं अविकलं च । वयणं पि तं चिय फुडं जणप्पसिद्धं तमभिहाणं ॥ ३ ॥
सो चिय पुरिसो दीसंतकंत-सुविभत्त-सुंदरावयवो । अन्नो खणेण जायइ धणहीणो ही ! महच्छरियं ॥ ४ ॥
इय गरुयविसायविसप्पमाणमाणाइरित्तवयणपहं । दुद्दं पलोइउं नागदत्तवणिओ इमं भणइ ॥ ५ ॥

भो मित्त ! परिच्चय चित्तसंतावं, अत्थि पुव्वकालदिन्नो पिउवएसो, जहा—जया न नित्थारिउं सक्कसि सकुडुंबं तया कालिंजरगिरिट्ठियं कुलदेवयमाराहेज्जासि, सा हि दिट्ठपच्चया पुव्वपुरिसाण विदिन्नवंछियत्था आसि, ता होउ वियप्पकल्लोल-जालेणं, तं चेव भगवइं ओहामियकप्पतरुलयं गंतूण आराहेमो त्ति । भणियं दुद्देणं—एवं कीरउ, ममावि अत्थि तत्थ कुबेरो नाम जक्खो[3] कुलदेवो, अहं पि तमाराहिस्सामि त्ति । कयनिच्छया पडिग्गहियपाहेज्जा य निग्गया दो वि वराओ । पइदिणगमणेण य पत्ता कालिंजरपव्वयं । दिट्ठं च अणेगतरुजाइजायसोहं हंस-सारस-सुयसउंतसंकुलं भमिरभमरनियरज्झं-कारकारमणहरं[4] एगमुववणं । दुद्देण भणियं—अहो ! रमणीययया, अहो ! परियागपिसंगफलभरोणमियसाहया[5], अहो ! सव्वोउयकुसुमसोरभनिब्भरया[6] काणणस्स; अवि य—

रंभाभिराममुब्भडचित्तसिहंडिं सिणिद्धसरसंकं । सग्गं व उववणमिमं पेच्छह सुमणोहरमणिज्जं[7] ॥ १ ॥

१ गुरुकविषादविसर्पन्मानातिरिक्तवचनपथम् ॥ २ अभिभूतकल्पतरुलताम् ॥ ३ जक्खकु° प्रतौ ॥ ४ झंकारक्रियामनोहरम् ॥ ५ परिपाकपिशङ्गफलभराव-नतशाखता ॥ ६ सर्वर्तुक- ॥ ७ अत्र गतानि श्लिष्टपदानि स्वर्गपक्षे उपवनपक्षे च क्रमेण योज्यानि—एकत्र रम्भया-रम्भाभिधयाऽप्सरसाऽभिरामम्, अन्यत्र रम्भाभिः-कदलीभिरभिरामम् । उद्भटाः चित्रशिखण्डिनः-सप्तर्षयो यत्र तम्, अन्यत्र उद्भटाः चित्राश्च शिखण्डिनः-मयूरा यत्र तत् । एकत्र

वहुंग्द्विमरिट्ठाउलमपलासं गुरुपलासपउहच्छं । दीसंतसत्तपन्नं पि भूरिपन्नं च सहइ वणं ॥ २ ॥

एयंविहं तमुज्जाणमवलोयमाणा गया एगं सरोवरं, कयं मज्जणायकिच्चं, गहियाइं कमलाइं । गओ कुबेरजक्खाययणं दुत्तो, इयरो य नियकुलदेवयाहरं । पूइया भगवई, अट्ठंगपणिवायपुरस्सरं च संथुया सायरं भणिया—देवि ! अम्ह पुव्वपुरिसेहिं पि तुममाराहिया तेसिं वरदा जाया, ता ममासि तुममेव सरणं दोगच्चचक्कंतस्स, न य तुह पसायमंतरेण भुंजामि-त्ति कयनिच्छओ कुसत्थरमारुहिऊण पंजलिउडो पज्जुवासिउमारद्धो । जायाणि पंच लंघणाणि, न किंचि दिन्नमुत्तरं देवयाए । पारद्धे य छट्ठे लंघणे आगओ एगो पुरिसो, पुच्छिओ य नागदत्तो तेण—भो ! किमेयमारद्धं ? ति । सिट्ठो अणेण संवुत्तंतो । तेण भणियं—हा मूढ ! कीस अप्पाणं किलामेसि ? मुंच एयं कट्ठदेवयं, लग्गाए मम पट्ठीए दंसेमि जणविदिन्नवंछियत्थं सिद्धत्थाभिहाणं देवं एत्तो अदूरट्ठियं ति । अथिरत्तणेण पडिवन्नमिमं नागदत्तेण, गओ तेण [सद्धिं] सिद्धत्थवाण-

स्निग्धेन शशाङ्केन—चन्द्रेण महितम्, अन्यत्र स्निग्धाः शशाः—शशकाः स्वाङ्के—मध्ये यत्र तत् । एकत्र सुमनसां—देवानाम् ओघेन—समूहेन रमणीयम्, अन्यत्र सुमनसां—पुष्पाणामोघेन रमणीयमिति ॥ ८ °ससंगं प्रतौ ॥

१ अत्र यद् बहुरिष्टं भवति तत् कथम् 'अरिष्टाकुलं' न रिष्टाकुलं भवति ? इति विरोधः, परिहारस्त्वत्र—बहवो रिष्टवृक्षा यत्र, अरिष्टैः—काकैराकुलम् । तथा यद् 'अपलाशं' पलाशरहितं तत् कथं गुरुपलाशैः पटहच्छं-प्रतिपूर्णं भवतीति विरोधः, तत्परिहारः पुनः—'अपरासं' कोलाहलवर्जितं नीरवं शान्तियुक्तमिति यावत्, गुरुभिश्च पलाशवृक्षैरुपेतम् । तथा यद् दृश्यमानसप्तपर्णं कथं तद् भूरिपर्णं भवति ? इति विरोधः, परिहारस्तु—दृश्यमानाः सप्तपर्णाख्या वृक्षा यत्र, पुनश्च भूरिपत्राख्यं पात्रं यत्र तत् । एतादृशं वनं राजते इति सण्टङ्कः ॥ २ मज्जनादिकृत्यम् ॥ ३ पूईया प्रतौ ॥ ४ दौर्गत्यचक्राकान्तस्य ॥ ५ सव्वुत्तं° प्रतौ । स्ववृत्तान्तः ॥

मंतरमंदिरं, कयं पडिच्चरणं[1], जायाइं दस लंघणाइं, न लद्धं पडिवयणं, 'इयाणिं किं करेमि ?' त्ति पडिवण्णो वाउलत्तणं।

एत्थंतरे निच्छयवससमासाइयसमीहियदेवयावरो उवट्ठियभद्दो संपत्तो दुद्दो। साहिओ णेण नागदत्तस्स नियवुत्तंतो। सविसायमियरेण वि अप्पणो त्ति। दुद्देण भणियं—अलमइक्कंतउक्कित्तणेण[2], एहि, संखा[3] उवलक्खियपच्चयं भयवंतं कुबेरजक्खमणुसरामो। 'तह' त्ति उवट्ठिओ नागदत्तो। गया कुबेराययणं। पारद्धो लंघिउं एसो। नवरं अविच्छिन्नभत्तपरिच्चायसोसियसरीरत्तणेण सासावसेसो जाउ–त्ति आउलो[4], किंकायव्वयावाउलो य भणिओ सो इयरजणेण—अहो ! किमेवं खयमुवेंतमुवेक्खसि ? न देसि किं पि भोयणं ? किं न सुयं तुमए 'जीवंतो नरो भद्राणि पश्यति' इति ? । पडिवन्नेणं दुद्देणं काराविओ मुग्गजूसो। अणिच्छंतो वि भुंजाविओ नागदत्तो। कइवय[दिण]भोयणजायसरीरावट्ठंभो य भुज्जो लंघिउमुच्छहंतो[5] वुत्तो लोएण—भो ! मुंच ताव इममभिप्पायं, अणुसरसु ताव नियमंदिरं, कइवयदिणावसाणे पुणो वि विसिट्ठसउणबलोवलंभे इममत्थमणुट्ठेज्जासि। तओ नियत्तो नागदत्तो दुद्देण समं सगिहाभिमुहं, पत्तो य कालक्कमेणं, परितुट्ठो कुडुंबजणो[6], कओ से मज्जणाइउवयारो, उवक्खडिया[7] महाभक्खभेयमणहरा रसवई। 'चिरकालोवलद्ध' त्ति परिभुत्ता कंक्खाइरेगेण, रयणीए पडिओ विसूइगादोसेणं, वमण-विरेयणाइमहाविमद्देण पउणीकओ बंधुवग्गेण।

एवमेसो कंक्खाविखिप्पमाणमाणसो देवयावरविरहेण दुक्खिओ जाओ। इयरो य न तह त्ति।

पुव्वभवावज्जियगरुयपावपब्भारविणिहयप्पाणे। [...] वे सिद्धे जोगस्स ठंति...............दूरेण ॥ १ ॥

१ 'प्रतिचरणं' सेवा ॥ २ अलमतिक्रान्तोत्कीर्तनेन ॥ ३ साक्षात् ॥ ४ चिन्तातुरः ॥ ५ उत्सहमानः ॥ ६ कुटुंब° प्रतौ ॥ ७ उपस्कृता ॥

काङ्क्षात्या-गोपदेशः

अपि च—चापल्यशल्यविहतो हितमप्यपास्य, पश्यत्यवस्त्वपि हि वस्तुधिया विमूढः ।
हृत्पूरचूर्णपरिभोगवशेन यद्वत्, क्लिष्टोऽविशिष्टमुपलाद्यपि हेममत्या ॥ १ ॥
कल्पद्रुकल्पमवधूय जिनेन्द्रधर्मं, धर्मान्तराण्यपि जिघृक्षति यः सुखाय ।
निर्मूलपारमुडुपेन स वारिराशिं, मन्ये तितीर्षति विमुच्य मनीष्टनावम् ॥ २ ॥
लोकेऽपि कार्यमसमाप्य किलैकमन्यदारिप्सुरन्यतमदप्युपलीयमानः ।
विज्ञोपहासपदविं च मुधा श्रमं च, कार्यक्षितिं च परमुप्यति (?) फल्गुचेष्टः ॥ ३ ॥
इत्याप्तदृष्टसुविशिष्टविचारभारनिर्वाहिमार्गदृढनिश्चयलीनचित्तः ।
चिन्ताव्यतीतशुभसम्पदमप्यवाप्य, संसारपारमचिरात् समुपैति सत्त्वः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां द्वितीयातिचारप्रक्रमे नागदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ ३ ॥

विचिकित्सायाः स्वरूपम्

संका-कंखाहि अखंडिएँ हि सम्मम्मि सव्वहा वज्जे । विसवच्छच्छायं पिव विचिकिच्छं किच्छसंजणणी ॥ १ ॥
देसे सव्वे य इमा देसेऽणुट्ठाणमेगमासंके । सफलमफलं व होज्ज त्ति सव्वओ सव्वमासंके ॥ २ ॥

---

१ तप्रेण, लब्ध्या नाना वा ॥ २ मभीष्ट प्रतौ । पृषोदरादित्वात् मनीपामनीपितादिशब्दप्रयोगवद् मनीष्टप्रयोगसिद्धिः । मनोऽभिमतनावमित्यर्थः ॥ ३ आरब्धुमिच्छु° ॥ ४ °दृष्टनि° प्रतौ ॥ ५ °एहिं स° प्रतौ ॥ ६ विषवृक्षच्छायामिव ॥

सव्वन्नुवयणसमणुब्भवंतनिम्मलविवेगजुत्ताण[1] । सत्ताणमणुचिया[2] सा दुविहा वि दुहावहा जेण ॥ ३ ॥
जिणवुत्तमणुट्ठाणं[3] विसिट्ठफलयं ति कीरइ अवस्सं । तत्थ वि संसयभावो न भाविभद्दाण संभवइ ॥ ४ ॥
इयरे वि अणुट्ठाणे किं पि फलं दिट्ठमेव पच्चक्खं । ता जिणभणिए वि तहिं संदेहो ही ! महामोहो ॥ ५ ॥ किंच—
जे किर किसीवलाई फलसंसइणो[4] किसिं विलंबंति । अविकलकारणभावे वि सस्सभागी[5] न ते हुंति ॥ ६ ॥
एवमणुट्ठाणमिणं फलसंसयगब्भिणं पकुव्वंता । दुक्करयं पि हु तप्फलविवज्जिया[6] ते विसीयंति ॥ ७ ॥
अहवा विउणो[7] मुणिणो तदंगमलिणाइसंभविदुगुंच्छा । विउगुंच्छं[8] त्ति इमा वि हु पडिवक्खो कुसलपक्खस्स ॥ ८ ॥
उभयसरूवं पि इमं जे नो वज्जंति वज्जपडिहच्छा[9] । गंगो व्व वसुमई विव[10] इहयं चिय ते दुही हुंति ॥ ९ ॥

तथाहि—अत्थि भारहवासविसेसयतुल्ला[11] महामुल्लविचित्तपणियसाला कुणाला नामं नयरी। तहिं च लोयववहाराणुसारिसारधम्मत्थाणुकूलवावाराणुरत्तचित्तो बंभदत्तो नाम सेट्ठी। सीमंतिणीजणसमुचियगुणमाणिक्कावड्ढियमंडणा चंदणा नाम भारिया। गंगाभिहाणो य ताण पुत्तो, वसुमई य धूया। गाहियाणि समुचियकलाकलावं, जोव्वणमणुपत्ताणि य वीवाहियाणि दोन्नि वि समुचियकुलेसु।

अन्नया य रइहरपसुत्तस्स गंगस्स घरिणी डक्का[12] समुक्कडविसेणं विसहरेणं। मीलिया मंतवाइणो, पारद्धा विसोवसामणो-

१–श्रवणोद्भवत्– ॥ २ सत्त्वानामनुचिता ॥ ३ जिनोक्तमनुष्ठानम् ॥ ४ कृषीवलादयः फलसंशयिनः कृषीं विलम्बन्ते ॥ ५ सस्यं–धान्यम् ॥ ६ °वज्जया प्रतौ ॥ ७ विद्वांसः ॥ ८ °गुंच्छंति इ° प्रतौ । विद्वज्जुगुप्सा इति ॥ ९ वज्जं–पापं तेन परिपूर्णाः ॥ १० विव इवार्थे ॥ ११–तिलक–॥ १२ दष्टा ॥

वाया। विर्याणियदुट्ठकालदट्ठविसविगारवइयरेहिं य पच्चक्खाया तेहिं। 'विवन्न' त्ति नीया मसाणं, विरइया [चिया]। तहिं च जावं सव्वमारोविज्जइ ताव फत्तो त्ति अवत्तलिंगी सरीरच्छायावसमुणिज्जंतमाहप्पविसेसो पत्तो तमुद्देसं एगो पुरिसो। तेण भणियं—अहो! महापावं जमेवं जीवंती वि चियाए आरोविज्जइ त्ति। तं च सोच्चा विम्हइयमाणसेण आबद्धकरसंपुडं भणियं जणेण—भो महायस! कुणसु पसायं, देसु पाणभिक्खं जइ अत्थि किं पि परित्ताणं। तेण जंपियं—अत्थि परित्ताणं, केवलं जमहं मग्गामि न तं तुम्भेहिं दाउं सक्किस्सइ। जणेण भणियं—अलं वियप्पेण, जं मे रोयइ तं दुलहं पि मग्गसु जेण देमो त्ति। तेण भणियं—जइ एवं ता इमं चेव इत्थियं देह जेण पगुणं करोमि त्ति। 'जहा तहा जीवउ वराइणि' त्ति अकामेण वि पडिवन्नं जणेण। ततो मलीलमुक्कहुंकारमेत्तेण पणट्ठनीसेसविसविगारा अंगभंगं कुणंती सुत्तपबुद्ध व्व उट्ठिया एसा। अहिट्ठिया य मंतवाइणा। सविम्हयमवलोयमाणस्स वि जणस्स तं घेत्तूण गओ जहाभिमयं। सविलक्खो य सदुक्खो य गओ जणो सगिहेसु। बाढं अमरिसिओ गंगो, तह वि 'उवगारि' त्ति मपणयं मंतवाइणं जंपिउमाढत्तो—भो महापुरिस! न कुप्पियव्वं, भणामि किं पि—

सत्पुरुषमार्गः

नियजीवियव्वएण वि परकज्जे उज्जयाण धीराण। थोव च्चिय वज्झपयत्थसत्थसंपाडणपविती ॥ १ ॥

---

१ विज्ञातदुष्टकृष्णसर्पदष्टविषविकारव्यतिकरैः ॥ २ °व अवमा° प्रतौ ॥ ३ शरीरकान्तिवशज्ञायमानमाहात्म्यविशेषः ॥ ४ °स्सइ प्रतौ । शक्ष्यते ॥ ५ पमुणं प्रतौ ॥ ६ °इणि ति प्रतौ ॥ ७ सुद्धपबु° प्रतौ ॥ ८ अमर्षितः ॥ ९ °यच्छस° प्रतौ । बाह्यपदार्थसार्थसम्पादनप्रवृत्तिः ॥

किंमसक्किरेण कीरइ जो तिणभंगे वि दूरमसमत्थो ?। संको वि परुवयारं अवहीरइ ही ! कहिं जामो ? ॥ २ ॥
अवगन्नियसविणासा फलप्पयाणं पराण कुवंता। ही ! कत्थ पेच्छियव्वा रंभाथंभ व्व सप्पुरिसा ? ॥ ३ ॥
अच्चंतमणुचियमिमं महप्पभावो वि जइ तुमं कुणसि। सच्छंदं कलिकालो ता वियरउ दूरमविरामं ॥ ४ ॥

इमं सोच्चा मंतवाइणा भणियं—भो भो ! बाढं लज्जिउ म्हि किलिट्ठचेट्ठिएणं, ता विरम सप्पुरिसमग्गाणुकित्तणाओ, कत्थ जलही ? कत्थ गोपयं ?, कत्थ सुराचलो ? कत्थ परमाणू ?, कहिं सप्पुरिससमायारो ? कहिं वा अम्हारिसो कीडकीडाविडंबणामेत्तो ?, अओ भद्द ! एसा तुह गिहिणी भइणि व्व निच्चं मह घरे ट्ठाही ताव जाव तुमं किं पि कत्तो वि मंतसिद्धिं मम उवाणिस्ससि, पच्छा इमं घेत्तूण सघरं वच्चेज्जासि, जया वि य किं पि मंतसिद्धिं लहसि तदा आपुच्छिऊण पाडलिपुत्तनयरे देवधरमंतवाइणो घरं एज्जासि, मा काहिसि संदेहं—त्ति संबोहिऊण तब्भज्जासमेओ सिग्घवेगेण गंतुमारद्धो मंतसिद्धो। सविलक्खो य पडिनियत्तो इयरो।

सिट्ठो अणेण एस वइयरो[5] अम्मा-पिईपमुहलोगस्स। तेहिं भणियं—पुत्त ! मा संतप्प, अन्नं कन्नगं गमिस्सामो त्ति। तेण भणियं—अत्थि एवं, तह वि अणुरत्तजणोवेहणं दूरमणुचियं। तुसिणिं पवन्नो य सयणवग्गो। गंगो वि किं पि पाहेज्जमादाय अजाणिज्जंतो केणइ रयणीमज्झसमए नीहरिओ घराओ, अखंडियपयाणगेहिं देसंतराइं भमिउमारद्धो। पज्जुवासिया

१ किम् अशक्तेन क्रियते ॥ २ शक्तः ॥ ३ अवधीरयति ॥ ४ कदलीवृक्षो हि फलजननानन्तरमवश्यं विनश्यतीत्येवमुक्तिः। ५ निच्च मह प्रतौ ॥ ६ यरं अ° प्रतौ ॥ ७ निःसृतः ॥

य के वि कहिं पि मंतवाइणो, समासाइया य तेहिंतो के वि उवएसा, परं न चित्तक्खेवकारिणो जाया।

तओ सो गओ उड्डियायणविसयं। ठिओ तत्थ एगम्मि सन्निवेसे एगाए कुडुंबिणीए घरेगदेसे। तीसे य कुडुंबिणीए चत्तारि डिंभाणि अच्चंतचवलाणि खेत्ते कम्मकरणत्थं गच्छंतीए विघायं कुणंति। ततो सा सिद्धमंतसामत्थेणं विसहरं वाहरिऊण ताणि डसावेइ, विसमुच्छानिचेट्ठाणि य घरब्भंतरे खिविऊण गिहदुवारं दढं संजमिऊण खेत्तं वच्चइ। कम्मं काऊण य पडिनियत्ता जलच्छडाखेवमेत्तेण डिंभाणि सभावत्थाणि करेइ। तं च पइदिणमेवंकुणंती दट्ठूण विम्हिओ गंगो चिंतेइ—अहो! न एसा सामन्नमहिला, ता एस चिय महायरेण ओलग्गिउं जुत्त–त्ति लग्गो एसो तीए सव्वप्पयारेण आराहणं काउं।

कइवयदिणेहिं य अच्चंतविणयकम्मसमाराहियहियया सा भणिउमाढत्ता—पुत्त! किमेवमणुणा[ए] वि तुमं मेएवं वट्टसि? मह्ना दूरमोगरिसियं मम चित्तं, ता साहेसु किं पि पओयणं ति। गंगेण भणियं—अम्मो! किं साहेमि? बाढं उच्चारिउं पि न पारियइ। तीए जंपियं—वच्छ! निरुविग्गो साहेसु जहट्ठियं। तओ तेण सव्वो वि सिट्ठो नियवइयरो। तीए य इमं सोच्चा जंपियं—वच्छ! मा ऊसुगो होसु, तहा काहं जहा पुन्नवंछियत्थो घरं वचसि त्ति। गंगेण भणियं—न दुल्लहमिमं तुह पायपउमपसाएण। अह सोहणतिहिमुहुत्ते अट्ठण्हं पि नागकुलाणं काऊण पूयं दिन्ना नागाह्वण-विसविणासणपरमविज्जा। कहिओ साहणविही, जहा—किण्हचउद्दसीए मसाणे एगागिणा अट्ठोत्तररत्तकुसुमजावसहस्सेण एसा साहियव्वा, सेरिजंतीए य इमीए

१ परस्स परचित्त° प्रतौ पाठः॥ २ स्वभावस्थानि॥ ३ महिप्पा, ता प्रतौ॥ ४ मया एवम्॥ ५ आकर्षितम्॥ ६ पिं प्रतौ॥ ७ पार्यते॥ ८ 'हणाति' प्रतौ॥ ९ नागाह्वाननिशविनाशनपरमविद्या॥ १०–जापसहस्रेण॥ ११ स्मियमाणायाम्॥

विज्जाए भुयंगवग्गा सरीरं बाढमभिद्दविस्संति, न य [1]थेवं पि भाइयव्वं ।

ततो सो सम्ममाराहणविहिं विज्जं च अवधारिऊण कयतप्पायवडणो नीहरिओ, गओ पाडलिपुत्तं। पउणीकया विज्जासाहणविही, गओ मसाणं, जहोवइट्ठविहीए विज्जं सुमरिउं पवत्तो। एत्थंतरे—

सिंदूरारुणलोयणफुरंतपहपडलपाडलियगयणा। मुहकुहरुग्गिरियफुलिंगफारजलणच्छडाडोवा ॥ १ ॥
उब्भडभिडंतफणफलगफडफडारावमुहरियदियंता। पइखणविमुक्कफुक्कारपवणकंपावियवणंता ॥ २ ॥
मेहमसिणगुरु[यर]देहदंडडामर-डसंतजियलोया। दिसिविदिसिमुहेहिंतो भुयगा नीहरिउमारद्धा ॥ ३ ॥
अह पलयखुभियकालोयजलहिकल्लोललोलगुरुदेहे। ते दवन्ते दट्ठुं भीओ गंगो विचिंतेइ ॥ ४ ॥

सव्वहा न जुत्तं मंतसाहणमिमं काउं, को जाणइ कयंतचक्खुविक्खेव व दारुणा इमे भीमभुयंगमा समीवमुवागया किं पि कुव्वंति ? फलं च संसइयं, एए पुण निच्छियं डसिउं विणासमुवणिंति, अणत्थं संसओ य निवित्तीए अंगमुवइसंति विउणो, ता अलं संदिद्धफलसिद्धिणा सुहपसुत्तकालकेसरिपबोहकप्पेण वेज्जासाहणेणं ति। संहरिओ तदाराहणोवक्कमो। वेगेण पलाणो सघराभिमुहं।

१ थेवं भि भा॰ प्रतौ ॥ २ अकधा॰ प्रतौ ॥ ३ सिन्दूरारुणलोचनस्फुरत्प्रभापटलपाटलितगगनाः। मुखकुहरोद्गीर्णस्फुलिङ्गस्फारज्वलनच्छटाटोपाः ॥ ४ उद्भटदट्टफणाफलकस्फटत्स्फटारावमुखरितदिगन्ताः। प्रतिक्षणविमुक्तफुत्कारपवनकम्पितवनान्ताः ॥ ५ °इक्खण° प्रतौ ॥ ६ मेघमसृणगुरुतरदेहदण्ड-भयङ्करदशज्जीवलोकाः। दिग्विदिग्मुखेभ्यो भुजगाः निस्सर्तुमारब्धाः ॥ ७ अथ प्रलयक्षुब्धकालोदजलधिकल्लोललोलगुरुदेहान्। तान् 'द्रवतः' उपद्रवं कुर्वाणान् दृष्ट्वा भीतः गङ्गः विचिन्तयति ॥ ८ °व्वत्तो द॰ प्रतौ ॥ ९ °च्छिउं ड॰ प्रतौ ॥ १० °दिद्धफ॰ प्रतौ ॥

अवरवासरे य लोयापुच्छणेण जाणिऊण पुव्वुत्तदेवधरमंतवाइणो मंदिरमुवगओ एसो। पच्चभिन्नाओ य मंतवाइणा। कया समुचियपडिवत्ती। जाओ परोप्परं समुल्लावो। भणिओ य गंगेण मंतवाई, जहा—गिण्हसु भो! भुयगायड्ढणि सुमरणमेत्तेणं चिय तव्विमविघाइणिं च परमविज्जं, समप्पेसु य मम भज्जे-न्ति। 'तह' त्ति पडिसुयं मंतवाइणा, सुदिणे गहिया विज्जा, जहुत्तविहिणा निब्भयचित्तेण निरभिकंखेण य साहिया एसा।

विन्नासिया य कोडुंबिणीडिंभनाएण चूडामणिसत्थपरमत्थजाणगे जयदेवनेमित्तिगम्मि। आइड्डुडुंडुभपन्नगविसाइरेगेण कट्ठीहूओ एसो, पच्चक्खाओ विसंचिगिच्छगेहिं। आदन्नो राया। उग्घोसावियं नयरे—जो एयं पउणीकरेइ तस्स अभिरुइयं राया देइ त्ति। निवारिओ पडहगो देवधरेण, भणिओ य राया—देव! जइ एस चूडामणिसत्थपरमत्थं निच्छियं देइ ता जीवावेमि एयं। रन्ना भणियं—अवस्सं दाही, अदिंतं च अहं दवावेमि। देवधरेण भणियं—देव! एत्थे यऽत्थे कस्स धम्महत्थो?। रन्ना जंपियं—ममं चेव। तओ सविसेसजायसामत्थेण पगुणीकओ एसो, परं न पडिवन्नो चूडामणिसत्थदाणं। तओ रन्ना जंपियं—तुह विसनिचेट्ठस्स मए समीहियप्पणविसए धम्महत्थो दिन्नो, ता ममाणुवित्तीए अन्नहा न कायव्वं, दायव्वं सव्वहा सत्थमेयमिमस्स त्ति। ततो रायगाढाणुवित्तीए तेण सिट्ठं चूडामणितन्तं तेरसममत्तापज्जवसाणं

१ भुजगाकर्षणीं स्मरणमात्रेणैव ॥ २ °ज त्ति प्रतौ ॥ ३ °ह्रियवि° प्रतौ ॥ ४ आविष्ट- ॥ ५-कृष्ण- ॥ ६ 'काष्ठीभूतः' काष्ठवद् निश्चेतनो जात' ॥ ७ 'विषचिकित्सकैः' विषवैद्यैः ॥ ८ चिन्तातुरः ॥ ९ °त्थ एत्थे प्रतौ ॥ १० परन्न पडि° प्रतौ ॥ ११ °यप्पाण° प्रतौ ॥ १२ अन्नसहा का° प्रतौ ॥ १३ राया गा° प्रतौ ॥ १४ °तत्तं प्रतौ। तन्त्रं-शास्त्रम् ॥

देवधरस्स । तस्सामत्थेण य जाओ एसो तिकालजाणगो । 'विसिट्ठसत्थलाभहेउ' त्ति वत्थाइदाणपुव्वगं च समप्पिया णेण गंगस्स भज्जा । विसज्जिओ एसो गओ सट्ठाणं, सलहिओ पुरजणेणं, परितुट्ठा अम्मा-पिउणो ।

एगम्मि य दिणे रुयमाणी समागया ससुरघराओ धूया वसुमई । पुट्ठा य अम्मा-पिऊहिं—पुत्ति ! केणइ तुह किं कयं ? । तीए जंपियं—अम्म-ताय ! ससुरजणो निसग्गवेरि व्व ममं बाहइ, निच्चमुचियकिच्चकारिणिं पि वेरिणिं व पेच्छइ, संपयं च न याणामि केणइ कारणेण निद्धाडिय म्हि सगिहाउ त्ति । अम्मा-पिऊहिं भणियं—पुत्ति ! वीसत्था होसु, पुव्वकयदुक्कयजणियदुग्गदोहग्गदुव्विलसियमिमं, ता सगिहे व्विय धम्मपरा परिवालेसु कइवयदिणाइं, जाव किं पि नेमित्तियमापुच्छिय तदुचिओवक्कममणुचिंतेमो त्ति ।

अन्नया य सो देवधरो चूडामणिनाणमुणियनट्ठ-मुट्ठ-चिंताइपयत्थो कोऊहलियाणेगनरिंद-सेट्ठि-सेणावइपमुहपहाणलोयाणुसरिज्जमाणो समागओ तं पुरं । सुंदरफल-फुल्लाइदाणपुरस्सरं पुच्छिओ । एगग्गचित्तेण सम्मं परिभाविऊण सिट्ठं, जहा—एसा तुह भइणी पुव्वभवे साहूणं निप्पडिकम्मसरीराणं मलाविलसरीरत्तणेण विसप्पंतासुहगंधाणं 'धी ! धी ! इमे' त्ति दुगुंछं काऊण निकाइयदोहग्गदोसा एवं वट्टइ, उवसमोवाओ य जम्मंतरे परं भावि त्ति, ता वच्च सगिहं, मा भूय-पिसायाइदोससंभावणं काहिसि त्ति । गओ गंगो । सिट्ठं तदुवइट्ठं । निंदिउमारद्धा अप्पाणं भइणी । गंगो वि तहाविहविज्जालाभफलचुक्को परं सोगमुवगओ त्ति ।

१ °पिऊणिं भणि° प्रतौ ॥ २ व्विय इति इवार्थकमव्ययम् ॥ ३ °मुट्ठिचिं° प्रतौ ॥ ४ भावि ति त्ति प्रतौ ॥

विचिकित्सातिचारे गङ्गवसुमत्योः कथानकम् ४ ।

इह कुंमलपक्खविक्खेवदक्खसम्मोहनिम्महियमइणो। निद्दाडिंति उविंतिं लंच्छिं हणिऊण डंडेण ॥ १ ॥
चिरकालं वसियव्वं भवकारागारसन्निरुद्धेहिं। मन्ने इं दुन्नयनिविडनिगडनडिएहिं जीवेहिं ॥ २ ॥ किञ्च—

सस्वर्ण-रत्नपरिपूर्णमपि प्रधानं, रिक्तं तदेतदिति वर्जयते निधानम् ।
निश्चेतनाक्षफलमित्यवबुध्यमानः, कल्पद्रुमं च स समीहत एव हातुम् ॥ १ ॥
तिर्यग् विवेकविकला तदियं कथं स्यात्, कामप्रदेति स निरस्यति कामधेनुम् ।
चिन्तामणिं च स तिरस्कुरुते किमेष, भाषानुरूपवपुषा वितरिष्यतीति ॥ २ ॥
यो भूत-भावि-भवदर्थविबोधबन्धुकैवल्यवज्जिनविनिश्चितमुक्तिमार्गम् ।
वैफल्यसङ्कथनवशेन विदां जुगुप्सासम्पादनेन यदि वा विगुणं मिमीते ॥ ३ ॥
इति गतविचिकित्सः स्वः-शिवश्रीगृहेषु, व्रत-नियम-तपस्या-दान-दीक्षादिकेषु ।
प्रतिदिवसविधेयेष्वन्वहं योजितात्मा, भवति भवसमुद्राद् द्राग् बहिर्नाऽत्र चित्रम् ॥ ४ ॥

विचिकित्सात्यागोपदेशः

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां तृतीयातिचारप्रक्रमे गङ्ग-वसुमत्योः कथानकं समाप्तम् ॥ ४ ॥

---

१ कुशलपक्षविक्षेपदक्षसम्मोहनिर्मथितमतयः ॥ २ लच्छि प्रतौ ॥ ३ °मीहित प्रतौ ॥ ४ °ल्यसकथनवसेन प्रतौ ॥
५ 'विधियेस्वन्व' प्रतौ ॥

पुव्वुत्तदोसरहिओ वि सम्मभावम्मि बद्धलक्खो वि । असदज्झवसायकरं उज्झिज्जा मूढदिट्ठित्तं ॥ १ ॥
दिट्ठी य दंसणं इह सा मूढा जस्स मूढदिट्ठी सो । तीए पुण मूढत्तं कुतित्थिरिद्धीण दंसणओ ॥ २ ॥
रिद्धी य अणेगविहा विउव्वणा-वोमगमणमाईया । मंताइसिद्धरूवा व लोय-निवपूयणाईया ॥ ३ ॥
ताओ दट्ठुं दिट्ठी मुज्झइ जस्सेह मूढदिट्ठी सो । गुण-गुणिअभेयभावा अइयारत्तेण विन्नेओ ॥ ४ ॥
पेच्छह कुतित्थियाणं असंजयाणं पि रिद्धि-सक्कारा । ईसिं पि न तह अम्हाण सुमुणिमग्गं गयाणं पि ॥ ५ ॥
किं मन्ने जिणसासणमहुणातणमणतिसाइसिट्ठं वा ? । इय कुवियप्पुप्पीलुप्पेल्लियहियया हि मुज्झंति ॥ ६ ॥
न मुणंति हुंडसप्पिणि-दूसम-भासग्गहाइदोसाओ । गयदूसणं पि सव्वन्नुसासणं न तह जणपुज्जं ॥ ७ ॥
जइ कह वि अबुहबहुलोयजोयओ पूइयं कुतित्थिमयं । जिणसासणं तु न तहा, किमेत्तिएण वि तमवगीयं ? ॥ ८ ॥
जइ गुणगयाण माणो, बहुओ जाओ नरो न रयणत्थी । ता किं तमेत्तिएण वि पत्तमवत्थुत्तणं किं पि ? ॥ ९ ॥
इहलोइयत्थलवमेत्तपेहणुप्पन्नदिट्ठिवामोहा । संखो इव सम्मत्तं चयंति तो हुंति दुहभागी ॥ १० ॥

१ समभा° प्रतौ ॥ २ विकुर्वणाव्योमगमनादिका ॥ ३ °वाम° प्रतौ ॥ ४ °णियमे° प्रतौ ॥ ५ 'अधुनातनम्' अर्वाचीनम् । 'अनतिशागिशिष्ट' सामान्यजनोपदिष्टम् ॥ ६ °मणिति° प्रतौ ॥ ७ कुविकल्पोत्पीडोत्प्रेरितहृदयाः ॥ ८ °लुपेल्लि° प्रतौ ॥ ९ हुण्डावसर्पिणीदुष्पमाभस्मग्रहादिदोषात् । साम्प्रतीनोऽवसर्पिणीकालः सार्वदिकावसर्पिणीकालापेक्षया निकृष्टतम इत्यसौ हुण्डावसर्पिणीत्वेनोपलक्ष्यते ॥ १० किमेतावताऽपि तद् 'अवगीतं' निन्दितम् ॥ ११ यदि गुणगजेषु 'रदनार्थी' हस्तिदन्तार्थी नरः 'बहुकः मानः' बहुमानयुक्तो न जातः तत् किं तदेतावताऽपि [गजानां] प्राप्तमवस्तुत्वं किमपि ? अपि तु न इत्याशयः ॥ १२ पत्तमवथुत्त° प्रतौ ॥ १३ इहलौकिकार्थलवमात्रप्रेक्षणोत्पन्नदृष्टिव्यामोहाः ॥ १४ °वामोहो प्रतौ ॥

मूढदृष्टि-
त्वातिचारे
शङ्खकथा-
नकम् ५।

मूढदृष्टित्व-
स्वरूपम्

प्रावृड्वर्णनम्

तथाहि—एरवयद्ववसुंधराभोगभूसणं सेणंतमणिकिंकिणीकरालधयवडाऽऽडोयसुंदरसुरागारं गारवाइदोसविरहियलोयनिवहोवसोहियं अत्थि जयपुरं नाम नयरं । नेयरक्खणविजियसहस्सक्खो सक्खं धम्मराओ व विरायमाणो माणविंदो चंदो नाम भूवई । नियरूवाइगुणोहामियकमला कमलावई नाम से भज्जा । नीसेमकलाजुत्तो पुरंदरो नाम पुत्तो । पत्ती य से सधकायव्ववियक्खणा सलक्खणा नाम । सव्वाणि वि इमाणि नियनियकम्मसंपउत्ताणि चिट्ठंति ।

अन्नया य गहिरगज्जिरवाऊरियबंभंडमंडोयरा फुरंतफारविज्जुच्छडाडोवभासुरा अखंडाखंडलचंडगंडीवमंडणा आरोहंपयट्टमहप्पमाणमाणंसिणीमाणखंडणा वियंभिया भेसियपहियजूहा पढमगेहसमूहा ।

तयणु गहिरकंठा नच्चिया नीलकंठा, विगलियपरितोसा रायहंसा य नट्ठा ।
नवकिसलयसोहा साहिसंघा हि जाया, अखिलमवि पलीणं पोइणीणं वणं च ॥ १ ॥
महिसउलमसेसं जिंभियं भूरितोसं, विरहिजुवइवग्गो सोगिओ गाढदुक्खो ।
इय विसंरिसकीडानाडियासुत्तहारो, वियरिउमुवउत्तो पाउसारंभकालो ॥ २ ॥

अवरवासरे य पायवडणपुव्वयं पडिहारेण अत्थाणमंडवे सुहासणासीणो विन्नत्तो राया—देव ! तिकालगयभावविय़ाणगो

१ रणंत° प्रतौ । स्वनत्–शब्दायमान– ॥ २ नयरक्षण–नीतिपालन– ॥ ३ °रखूण° प्रतौ ॥ ४ सक्ख धम्म° प्रतौ ॥ ५ साण° प्रतौ ॥ ६ परिपूर्णचण्डेन्द्रधनुर्भूषिता इत्यर्थः ॥ ७ °रोट्टप° प्रतौ । आरोहप्राप्तमहाप्रमाणमनस्विनीमानखण्डना· विजृम्भिता भेषितपथिकयूथाः प्रथममेघसमूहाः ॥ ८ मयूराः ॥ ९ 'शाखिसङ्घा.' वृक्षसमूहाः ॥ १० विसदृशक्रीडानाटिकासूत्रधारः ॥ ११ °उणुंपु° प्रतौ ॥

जोगाणंदनाभधेयो नेमित्तिओ दुवारे देवदंसणूसुओ चिट्ठइ, को आएसो ? । राइणा भणियं—सिग्घं पवेसेहि । 'जं देवो आणवेइ' त्ति पवेसिओ नेमित्तिओ, दिन्नासीसो य निविट्ठो समुचियट्ठाणे । कुसुम-तंबोलप्पयाणपुरस्सरं संभासिओ भूवइणा—कत्तो आगमणं ? कहिं वा गमणं ? ति । तेण भ[णि]यं—महाराय ! विज्जारयणरयणायराउ वसंतपुराओ आगओ म्हि, गमणं पुण कंचीपुरं पडुच्च समीहामि । रन्ना जंपियं—भवदु ताव, तिकालावलोयणविसए केत्तिओ विन्नाणपगरिसो ? । नेमित्तिएण कहियं—महाराय ! गुरुपायप्पसायाओ अत्थि लवमित्तो । रन्ना जंपियं—जइ एवं ता साहेसु थोवदिवसाण मज्झे चिय किमिह सुहमसुहं वा भविस्सइ ? । नेमित्तिएण भणियं—महाराय ! निसामेसु, आगमिस्सअट्ठमीए दिणे सूरस्स सवग्गासि गहणं भविस्सइ । इमं च सोच्चा विम्हिओ रायलोगो विकंपियसिरो परोप्परं मुहमवलोइउं पवत्तो । अयंडो-यन्नियसूरग्गहणसंखुद्धेण य भणियं भूवइणा—भो नेमित्तिग ! कहं अपव्वे चिय एयं संभवइ ? । नेमित्तिएण भणियं—महाराय ! अवि चलइ ससागरं धरणिवट्ठं, न उण ईसिं पि केवलिदिट्ठं, परं निउणमइणा सम्मं परिभावियव्व-न्ति । 'अजुत्तो कज्जतत्तुल्लावो जह तह' त्ति परिभाविऊण रन्ना विसज्जिओ सभालोगो, कयं विजणं, पुच्छिओ सायरं नेमित्तिओ—साहेसु भो ! पयडक्खरं, को एस सूरो ? किं वा अपव्वे चिय तग्गहणं ? ति । नेमित्तिएण कहियं—महाराय ! सम्मं पुच्छियं, जो सूरो सो तुमं, जं च सवग्गासि ग्गहणं तं च तुह मरणं ति । तओ भीओ राया सव्वंगीणाभरणदाणपुव्वयं भणिउं पवत्तो—भो नेमित्तिग ! अत्थि कोइ एयस्स उवक्कमणे उवाओ ? । नेमित्तिएण जंपियं—बाढमत्थि, न केवलं तुमं सक्किहसि काउं । रन्ना भणियं—

१ °तंप्पलेप्पया° प्रतौ ॥ २ °णाउरा° प्रतौ ॥ ३ भणिस्स° प्रतौ ॥ ४ °डानिय° प्रतौ ॥ ५ °पव्वं चि° प्रतौ ॥ ६ °क्कामेण उ° प्रतौ ॥ ७ °लं न तुमं प्रतौ ॥

जीवियकज्जे किमकायव्वं ? त्ति । नेमित्तिएण कहियं—जइ एवं ता महाराय ! तुममप्पणो समरूव-जोव्वण-लक्खणगुणं कं पि पुरिसविसेसं रायपए अभिसिंचिऊण सयं निद्देसवत्ती पंजलिउडो पुरओ से चिट्ठसु अट्ठमीदिणं जाव, जेण तव्विघाएण तुह कल्लाणं हवइ त्ति । पडिवन्नं रन्ना । कयसक्कारो विसज्जिओ नेमित्तिओ त्ति ।

वाहरिओ पहाणपरियणो, पुच्छिओ य—को ममं अच्चंतं सरिसरूवाइगुणो ? त्ति । सम्मं सुनिच्छिऊण य तेण भणियं—देव ! संखस्स पुरोहियस्स पुत्तो पभाकरो चेव तुल्लरूवो, नावरो त्ति अम्ह पडिहासो । ततो रन्ना एयस्स चेव परिक्खाकएण नियवत्था-ऽलंकारपरिग्गहं काराविऊण सो पभाकरो नियचेड-चाडुकर-किंकराणुगओ पेसिओ अंतेउरं । अच्चंतसरिससरीरागारनिच्छियनरिंदागमणाहिं अब्भुट्ठिओ अंतेउरीहिं, नरिंदस्स व सगउरवमुवणीयमासणाइ । सो य तमणिच्छंतो खणमच्छिय पडिनियत्तो । समप्पियपुव्ववेसो य गओ सो सगिहं । खणंतरेण य गओ राया सयमंतेउरं । पुव्वट्ठिई[ए] च्चिय कओवयारो पुच्छिओ अंतेउरीहिं—देव ! पढमसुवागएहिं तुब्भेहिं किं कारणं न किं पि जंपियं ? न किं पि आइट्ठं ? ति । कयागारसंवरेण नरवरेण वज्जरियं—मणोविक्खेवाउ त्ति ।

एवं च अप्पणो निव्विसेसरूवत्तणं निच्छिऊण पभाकरस्स, अंतेउरीहिं समं मिहोकहाहिं मुहुत्तमित्तं निगमिऊण पडिगओ स[भा]गिहं । वाहराविओ संखो पुरोहिओ, सुहासणत्थो सायरं संलत्तो य, जहा—अज्ज रयणीए सुमिणम्मि तुह सुयस्स पभाकरस्सऽतिसंवहसाविय रज्जं दिन्नं, अओ तमप्पणो सुमिणजंपियं तेह रज्जदाणेण सच्चं काउमिच्छामि । संखेण

१ किं पि प्रतौ ॥ २ सम्म प्रतौ ॥ ३ क्षणम् आसित्वा ॥ ४ कथितम् मनोविक्षेपात् ॥ ५°णत्थं सा° प्रतौ ॥ ६ अतिशपथशापयित्वा ॥ ७ तुह्र प्रतौ ॥

भणियं—देव ! कहासु वि एवंविहवइयरो न सुवइ, ता कहमेवं ? । रन्ना जंपियं—किमजुत्तं[1] ? गुरुसु सवस्ससमप्पणा उचिया चेव । तओ विम्हियमणसेण संखेण भणियं—जं देवो आणवेइ त्ति ।

अह अकयकालक्खेवं पहाण-मंति-सामंत-सेट्ठि-सेणावइपभिइपच्चक्खं पभाकरो रायाभिसेएण अहिसिंचिऊण पइट्ठिओ नियपए नरिंदेण, समप्पिया पियाविरहिया सवहा वि रायसिरी पणमिओ य । ठिओ य पागयनरनिव्विसेसो[2] समुचियभूमिगाए । 'हा ! किमेयं ?' ति अमुणियपरमत्थो वाउलीहूओ सवो जणो । इयरेण वि पडिवन्नं रज्जं, दवाविया सवत्थ वि अप्पणो आणा निस्संकं, रज्जकज्जाइं पि चिंतिउमारद्धाइं ति ।

अह संपत्ते अट्ठमवासरे, सट्ठाणम्मि निविट्ठेसु पहाणलोगेसु, पागयपाए एगदेसनिलुक्के पुवपत्थिवे, आसणासीणस्स पभाकरस्स रन्नो ढलंतेसु उभयपासचामरेसु, पयट्टे य पुरओ नट्टे अकंडे च्चिय [3]तडयडाडोयडमरियजियलोया तड त्ति सिरोवरि रुट्ठजमदिट्ठि व निट्ठुरा निवडिया विज्जू । तक्खणमेव भासरासिच्चणं पत्तो पभंकरराया । 'हा हा ! किमेयं ?' ति दिसोदिसिं पलाणो रायलोओ । जायं पुरे असमंजसं ।

एत्थंतरे तम्मरणोवक्कमियनियमच्चुभओ [4]गुडाडोयउब्भडं जयकुंजरमारुहिऊण निसिट्ठनर-तुरय-रह-जोह[5]वूहपरिगओ निग्गओ उ बहिया चंदनरिंदो, आसासिओ लोगो, पुवं व रज्जकज्जमणुचिंतिउं पवत्तो । मुणियरज्जदाणपरमत्थो य संखो अच्चंतदुस्सहसुयसोगवज्जावडणदारुणदुक्खो पलविउं पवत्तो—

१ °जुत्त प्रतौ ॥ २–तुल्यः ॥ ३ तडतडाटोपउपद्रुतजीवलोका ॥ ४ गुडा–हस्तिकवचनम् ॥ ५ °वूढप° प्रतौ । –व्यूह–॥

शङ्खस्य करुण-विलापः

हा पाव ! दइय ! निद्दय ! निक्कारणवहियवेर ! निम्मेर ! । एवंविहसुपुरिसरयणभंगमिय ववसिओ सि कहं ? ॥ १ ॥
तुमए वि पयावइ ! कीस एस नो रक्खिओ गुणाण निही । कह घडियसि सप्पुरिसे तव्विहपडिछंदएण विणा ? ॥ २ ॥
हा वच्छ ! तुज्झ विरहे त्ति जीवियं भुवि विडंवणामेत्तं । नरवइपडिवत्ती वि हु वज्झविभूस व्व अरइकरी ॥ ३ ॥
किं वा वि मेत्तदोहो तुह चंदनरिंद ! कुवलयाणंद ! । उचिओ ? अहवा चंदे मित्तविरोहो जयपसिद्धो ॥ ४ ॥
एमाइ बहुपयारं विलवंतो सिरमुरं च ताडंतो । मुच्छानिमीलियऽच्छो निवडंतो भूमिवट्ठे य ॥ ५ ॥
भणिओ नरवइलोएण भद्द ! तं कीस वहसि संतावं ? । धन्नो सो तुज्झ सुओ जो पहुकज्जे चिय विवन्नो ॥ ६ ॥
को ते वि हु सलहइ पहुपमायमुवभुंजिऊण जे सुचिरं । जरसा जज्जरदेहा सिक्कडवडिया विवज्जंति ? ॥ ७ ॥
केत्तियमेत्तं वित्तं पुत्त कलत्तं च सामिकज्जम्मि ? । अज्ज वि जीयं देहं च झत्ति उज्झंति तणयं व ॥ ८ ॥

ईच्चाइवयणेहिं पन्नविज्जंतो वि मणागं पि अपरिचत्तसोगावेगो संखो भेरवपडणं पडुच्च एगागि च्चिय नीहरिओ[10] सनयराओ । निरंतरगमणेण य पत्तो कुसुंभउरे नयरे । पुरओ बहिया एगत्थ उज्जाणे, दिट्ठो य तत्थ समत्थपरमत्थवियक्खणो

१ दैव ! निर्दय ! निष्कारणोढवैर ! निर्मर्याद ! ॥ २ °क्कछंद° प्रतौ ॥ ३ चन्द्रपक्षे कुवलयानां—रजनीविकासिकमलानामानन्दक, नरेन्द्रपक्षे कुवलयं—पृथ्वीवलयं तद्वर्तिजनानामानन्दक. तदामन्त्रणम् । चन्द्रपक्षे 'मित्रविरोध.' सूर्यविरोधः, अन्यत्र 'मित्रविरोध.' सुहृद्विरोध इत्यर्थ. । यथा चन्द्रः कुवलयानन्दकोऽपि मित्रविरोध्यपि तथा भवानपीति भाव. ॥ ४ जगत्प्रसिद्धः ॥ ५ भृग्वापतिता इत्यर्थः ॥ ६ °उज्झत्ति प्रतौ ॥ ७ तृणमिव ॥ ८ इच्चाइं प्रतौ ॥ ९ भृगुपातं प्रतीत्य ॥ १० °ओ य न° प्रतौ ॥

विमलोहिलोयणाऽवलोइयजियलोयविचित्तवावारो सुहम्मो नाम सूरी पउरलोयमज्झगओ धम्ममुवइसंतो त्ति । अरइविणोयनिमित्तं च गओ तस्स समीवं, कयनमोकारो य आसीणो भूमिवट्ठे ।

धम्मं कहंतस्स य सूरिणो एगो पुरिसो बहुविहरोगवस[ग]ओ, अकालपरिसुक्कालाबुसमसीसो, भग्गोट्ठ-नट्ठनासा-किलिट्ठदिट्ठिदेसो, ठाणट्ठाणभग्गभुयट्ठिसंठाणो, मडहवच्छकुप्परोप्पन्नदुट्ठगंडुट्ठाणो, निम्मंस-सोणिय-कीलाणुगारजंघोरुजुयलो, अच्चंतमबलो उवागओ तं पएसं । तक्कालसंगयकरुणापूरपूरिज्जमाणमाणसेण य जणेण पुच्छिओ सूरी—भयवं ! कस्स कम्मणो एसो विसमो दसावागो ? त्ति । सूरिणा भणियं—निसामेह—

एसो हि पुव्वजम्मे माहणो अइकोहणो आसि । सो य पव्वयजत्ताए पारद्धाए, कीरंतेसु लोएण चच्चरी-पमीयपमुहकीलाविसेसेसु, सच्छंदपाण-भोयणदाणे परोप्परं पयट्टे किं पि अपावमाणो, तक्कालुच्छलियकोवानलाउललोयणो, अविमंसिऊण जुत्ता-ऽजुत्तं गिरिसिहराउ निवडिऊण मओ । एवं च अप्पणो तद्देसवत्तिपिपीलियापमुहसत्ताणं च विणासेण संजणियासुहकम्मो बहुप्पयारदुहनिवहं तिरियाइजोणीसु अणुभविऊण संपइ तक्कम्मसेसयाए एवंविहासुहरूवं नरत्तणं पत्तो एवं वट्टइ । तहाहि—

परिकुवियगरुयमारुयसुसियसरीरऽट्ठिबंधसंधाणो । उड्ढविसुक्को रुक्खो व रुक्खदेहच्छवी य दढं ॥ १ ॥

१ °ज्झमओ प्रतौ ॥ २ स्थानस्थानभग्नभुजास्थिसंस्थानः कुब्जवक्षःकूर्परोत्पन्नदुष्टगण्डोत्थानः ॥ ३ °संगिय° प्रतौ ॥ ४ अविमृश्य ॥ ५ °जुत्त गि° प्रतौ ॥ ६ सओ प्रतौ ॥ ७ परिकुपितगुरुकमारुतशोषितशरीरास्थिबन्धसन्धानः । ऊर्ध्वविशुष्कः वृक्ष इव रूक्षदेहच्छविश्च दृढम् ॥ ८ °विमुक्को प्रतौ ॥

अविभाविय‍दिन्नकमपक्खुलण-दलंतजाणु-कडिभागो । धी ! मज्झ जीविएणं ति जंपिरो दुक्खमणुहवइ ॥ २ ॥
ता जइ अन्नजियाणं धम्मो रक्खाए अक्खिओ परमो । तह अप्पणो वि तो उभयरक्खणं जुज्जए काउं ॥ ३ ॥
जो पुण वियोगदुक्खेण कोह-लोहाइदूसियमणो वा । ववसइ मरणं सरणं सुचिरं से दीहसंसारो ॥ ४ ॥

एवं सूरिणा कहिए मणागमुवसंतसोगवियारो पुरोहिओ पञ्चक्खावलोइयअप्पघायणकडुयफलविवागो णिवडिओ सूरिचरणेसु । भिड्डो निययाभिप्पाओ । अणुसासिओ गुरूहिं—भद्द ! असक्कपडियारे एवंविहदुक्खे न धम्मकरणमंतरेण अन्नमोसहमत्थि, ता परिच्चय इमं दुरज्झवसायं, मा सुकयऽज्जणच्छलेण समज्जिणसु उभयलोगविरुद्धमधम्मपब्भारं ति । तओ पडिबुद्धो एसो, पडिवन्नो सूरिसमीवे सामन्नं । काउमारद्धो य दुक्करतव-चरणविसेसं वीसामणाइयं साहूसु विणयकम्मं च ।

अन्नया य 'सुपढियसुत्तत्थो' त्ति गुरुणा एगल्लविहाराणुन्नाओ स महप्पा गामा-ऽऽगराईसु विहरंतो कालिंगदेसं गओ । तत्थ य तंकालं कालसेणो नाम परिवायगो साहियलिंगलक्खाभिहाणजक्खो सिद्धतिलोयपिसाइयाविज्जो सुरविरइयगयणकणयमयवत्तामणनिलीणो कन्नपिसाइयानिवेइज्जंतभूय-भाविपयत्थो 'जं कमलासणो चउहिं मुहेहिं साहइ तमहं एक्केण वि आणणेण साहेमि' त्ति मग्गमुच्छवंतो निरंतरोवित-जंतनर-नरिंदसंदोहसेविज्जमाणचरणो सव्वं मुंद्धवियं पवत्तो । 'अहो ! इमस्स सत्ती, अहो ! पभावो, अहो ! रूवसंपत्ती, अहो ! तिकालविन्नाणपगरिसो' त्ति पमोयमुव्वहंतो दूराओ वि आगम्म जणो गुरु-

१ अविभावितदत्तकमप्रस्खलद्भवनमज्जानुकटिभागः ॥ २ कडिं° प्रतौ ॥ ३ मणोग° प्रतौ ॥ ४ एकाकिविहारानुज्ञातः ॥ ५ °मुव्वयि° प्रतौ । मुग्धयितुम् ॥

मित्र देवयमिव वा आराहइ त्ति । तं च तहाविहाइसय-पूय-सकार-समिद्धिपत्तं पइदिणमवलोयमाणो संखसाहू सुभावियमई वि तहाविहसम्मद्दंसणमोहणीयकम्मोदयओ परिहीयमाणसम्मत्तपोग्गलो चिंतिउमारद्धो—

चउतीसातिसयधरा कहासु सीसंति सव्वतित्थयरा । गिज्जइ गणहरचरियं अणप्पमाहप्पविप्फुरियं ॥ १ ॥
सुव्वइ विउव्वि-मणपज्जवाइया वन्नणा बहुपयारा । चउदसपुव्वीणं पि हु सत्ती अच्छरियसिरिसारा ॥ २ ॥
दीसइ य थेवमेत्तं पि संपयं नेव किं पि अइसइयं । तित्थंतरेसु अज्ज वि दीसइ ता किं व एयं ? ति ॥ ३ ॥

इय विमूँढदिट्ठित्तणविणिहम्ममाणमणो किं पि कालं जीविऊण मओ समाणो उववन्नो किब्बिसियवंतरसुरेसु । सुकयकम्माणुसारमुवभोत्तूण विसयसुहं चुओ संतो जाओ पंतकुले पुत्तत्तणेणं ति ।

अह दुग्गमहादुग्गइसमुत्थदुत्थत्तणं अणुभवंतो । सुचिरं मिच्छत्तातुच्छपंसुपच्छाइयविवेगो ॥ १ ॥
लद्धुं अलद्धपुव्वं पि तव्विहं सुमुणिचिन्नसामन्नं । चिंतारयणं व विमूढदिट्ठिदोसेण हारविउं ॥ २ ॥
संखो असंखदुक्खाण खाणिमप्पाणमुवणमेऊण । दीहद्धमद्धगो विव संसारं सरिउमारद्धो ॥ ३ ॥
इय दिट्ठिदोसमवधारिऊण सम्मग्गवारणं परमं । परतित्थिइड्ढिदंसणवसे वि वज्जिज्ज वामोहं ॥ ४ ॥
किं वा कीरइ इड्ढीहिं ताहिं संसारसायरेऽणंते । अज्ज वि विज्जंतम्मिं परमत्थियवत्थुबज्झाहिं ॥ ५ ॥ किञ्च—

मूढदृष्टित्वातिचारे शङ्खकथानकम् ५ । मूढदृष्टित्वम् तद्विपाकश्च

१ °हाइंस° प्रतौ । तथाविधातिशयपूजासत्कारसमृद्धिपात्रम् ॥ २ °इवा वन्न° प्रतौ ॥ ३ विमूढदृष्टित्वविनिहन्यमानमनाः ॥ ४ °चित्तसा° प्रतौ ॥ ५ हारयित्वा ॥ ६ °द्धमुद्ध° प्रतौ ॥ ७ विव इति इवार्थकमव्ययम् ॥ ८ °वावणं प्रतौ ॥ ९ °त्थुसज्झा° प्रतौ ॥

मूढदृष्टित्वत्यागोपदेशः

यथेन्द्रजालव्यवलोकनेन चित्रीयते मुग्धजनस्तथैव। मिथ्यादृशामृद्धिनिरीक्षणेन न मुह्यति क्वापि विशिष्टदृष्टिः॥१॥किञ्च—

न काञ्चनसमाश्रितः श्रियमियर्ति काचोऽधिकां, न चाऽपरुचितां व्रजत्यपमलो मणिः केवलः ।

कुदृष्टिरुदितर्द्धिरप्यधिपतिर्न मुक्तिश्रियामनृद्धिरपि सम्पदां पदमुपैति सद्दर्शनः ॥ २ ॥

सद्बोधवन्ध्यकृतभूरितपःप्रसूता, भूत्वा सुखाय बहुदुःखकरी समृद्धिः ।

चैत्रप्रतिष्ठिततृपापचितेः समाना, कौतीर्थिकी कथमिवास्तु विमोहहेतुः ? ॥ ३ ॥

इति पणयोपित्नेपथ्यतुल्यपरतीर्थिकर्द्धितश्चेतः । विनिवर्त्य निश्चलात्मा यतेत जिनदृष्टचेष्टासु ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां चतुर्थातिचारप्रक्रमे शङ्खकथानकं समाप्तम् ॥ ५ ॥

उपबृंहणायाः स्वरूपम्

संकाईण चउण्हं करणे अइयारमक्खिउं सम्मे । उववूहाइचउण्हं इण्हि तं किं पि कित्तेमि ॥ १ ॥

उववूहणमुववूहा पसंसणा सा गुणाण ते य इहं । नाणाई घेत्तव्वा नेवाणपसाहणा परमा ॥ २ ॥

नाणं जहट्ठियत्थावधारणं दंसणं च तत्तरुई । कम्मचय-रित्तकरणं चारित्तं तावगं च तवो ॥ ३ ॥

जियविफुरियं ति' विरियं चिणइज्जइ कम्म जेण सो विणओ । लोयाववायभीरुत्तणं तु लज्जा चि एमाई ॥ ४ ॥

एएसु वड्ढमाणस्स साहुणो जहुचियं च सड्ढस्स । उववूहणाअकरणे सम्मत्तऽइयारमाहंसु ॥ ५ ॥

१ °ह्रते फ्वा° प्रतौ ॥ २ °यऽव्वाव° प्रतौ ॥ ३ ति तिरि° प्रतौ ॥

जह जीवाइयतत्ते अरुई[1] सम्मत्तदूसिगा भणिया। तह संतगुणाणुववूहणा वि दिट्ठाऽइयारकरी ॥ ६ ॥

सुगुणं सम्मद्दिट्ठी सभावउ चिय पसंसिउं सरइ। दर[2]फुडियमालईमउलमलिकुलं रणझणंतं व ॥ ७ ॥

लहुपरगुणे वि सुगुणज्जणु[3]ज्जओ जायए पसंसाए। भीरू वि सरइ[4] सूरं सुसामिसम्माणिओ समरे ॥ ८ ॥

संता वि जया न गुणा सलाहणं पाउणंति उच्चियं पि। दु[5]क्खज्जणाण[6] हि तया करेज्ज को आयरं ताण[7]? ॥ ९ ॥

ता नाणाईविसए गुणलेसं जत्थ जत्तियं पासे। उववूहेज्जा तत्थ उ तयं[8] ति सम्मं[9]गमवगम्म ॥ १० ॥

जो पुण पमायओ दप्पओ व उववूहणे न वट्टेज्जा। नासेज्ज[10] अप्पयं मुणिजणं च सो रुद्दसूरि व ॥ ११ ॥

तथाहि—इह हि पुव्वकालं कलिकालकलिलपक्खालणेक्कपच्चला[11], विमलजलासय व्व पीणिय[12]सव्वपाणिगणा, गणणाइक्कंतगुणा गुणसेणा नाम सूरिणो बहुसिस्सगणपरिवारा अणिययविहारचारिणो ससमय-परसमयवेइणो अहेसि[13]। ते य गयंदवयपव्वए देववंदणं काऊण, एलगच्छनयरपरिसरे कुसुमावयंसए उज्जाणे तसपाण-बीयरहिए पएसे अहासन्निहियजणं अणुजाणाविऊण समोसढ[14] त्ति। तक्कित्ति[15]पडहपडिरव[16]सवणसमुब्भवंतकोऊहलसमाउलमाणसा समागया नरवइपुरस्सरा पुरजणा।

१ विद्यमानगुणाऽप्रशंसना इत्यर्थः ॥ २ दरस्फुटित–ईषद्विकसित– ॥ ३ °गुणुज्जणु° प्रतौ ॥ ४ 'सरति' प्राप्नोति 'शूरं' शौर्यम् ॥ ५ दुःखेन अर्जनं येषां तेषाम् दुःखानां वा अर्जनं येभ्यस्तेषाम् ॥ ६ °ज्जणणेहिं त° प्रतौ ॥ ७ 'तेषां' गुणानाम् ॥ ८ नयंति संसंग° प्रतौ । 'तकत्' तद् इति ॥ ९ सम्यक्त्वाङ्गम् अवगम्य ॥ १० नाशयेत् ॥ ११–प्रत्यलाः–समर्थाः ॥ १२ पीणय° प्रतौ ॥ १३ अभूवन् ते च गजेन्द्रपदपर्वते ॥ १४ समवसृताः ॥ १५ तत्कीर्तिपटहप्रतिरवश्रवणसमुद्भवत्कुतूहलसमाकुलमानसाः ॥ १६ °परिरव° प्रतौ ॥

मुणियतज्जोगयाणुसारेण पारद्धा पहुणा धम्मदेसणा । जहा—

संसारम्मि असारे सारं जम्मो कुले सुविमलम्मि । तत्थ वि य पुरिसभावो तम्मि य सद्धम्मपडिवत्ती ॥ १ ॥

सो पुण न पाणिपीडापरिहारपरम्मुहो वुहाहिमओ । तप्पीडापरिहारो य नज्जई नाणसब्भावे ॥ २ ॥

तस्संब्भावो य इहं सद्दहणे तं च सत्ततत्तगयं । तत्ताणि य जिणभणियाणि जीवमाईणि नेयाणि ॥ ३ ॥

जीवा य तत्थ उवओगलक्खणा अक्खिया जिणवरेहिं । तेसिं विलक्खणा पुण धम्माईया अजीवा उ ॥ ४ ॥

सुह-असुहकम्मपयईपोग्गलसंगिलणमासवो वुत्तो । तव्विवरीओ पुण संवरो त्ति दिट्ठो सुदिट्ठीहिं ॥ ५ ॥

तवकिरियाए कम्माण झोसणा निज्जरा समक्खाया । कम्माण संतई पुण बंधो मोक्खो य तीए खओ ॥ ६ ॥

एवं च तत्तविन्नाणसुंदरं सायरं पयट्टंतो । धम्मे तं कल्लाणं न विज्जई जं न पाउणई ॥ ७ ॥

न यं एत्तो वि हु अन्नं भन्नंती मोक्खसाहणोवायं । न य एयविउत्ताणं ताणं सत्ताण किं पि परं ॥ ८ ॥

जो इह परम्मुहमणो मणुओ नूणं मणागमेत्तं पि । संसारियदुक्खाणं खाणी अप्पा कओ तेणं ॥ ९ ॥

इय एवमाइ गुरुणा सिट्ठे सुसिलिट्ठधम्मपरमत्थे । रुद्दो नामेण दुंओ समच्छरं भणिउमाढत्तो ॥ १० ॥

जुत्तमिह जीवतत्तं सेसाणं पुण अजीवभावाओ । बीयं अजीवतत्तं तदन्नपरिकप्पणा विहला ॥ ११ ॥

जीयादीनि सप्त तत्त्वानि तद्व्यवस्थापनं च

तत्त्वसंख्याविषयकं चार्चिकम्

१ °परमुहो प्रतौ ॥ २ तसब्भा° ॥ ३ सप्ततत्त्वविषयम् ॥ ४ 'तेषां' जीवानाम् ॥ ५ °चित्ताण° प्रतौ ॥ ६ प्रगुणयति ॥ ७ य पत्तो प्रतौ ॥ ८ भाणम् ॥ ९ तत्त्वविज्ञाने ॥ १० द्विजः ॥

गुरुणा भणियं भद्दय! जुत्तमियं जंपियं तए किंतु। सविसेसवत्थुविसयं पडुच्च इय तत्तपरिसंखा ॥ १२ ॥ तथाहि—
मिच्छत्ताइदुवारानिरोहओ कम्मसंगमो जो उ। जीवस्स आसवो सो तस्सऽन्नो संवरो नेओ ॥ १३ ॥
निज्जरमाई वि हु कम्मणो परं जीवविरियसावेक्खा। इय आसवाइतत्ताणि जीव-कम्माण विसयाणि ॥ १४ ॥
कह धम्माईणमजीवभावमेत्तेण हुंतु तुल्लाणि?। तेणेसिऽणुप्पवेसो जुज्जइ नाजीवतत्तम्मि ॥१५॥ किञ्च—
केहिं पि अविज्जाई कम्मासवणम्मि हेउणो भणिया। बंधो वि य पयईए तीए विओगो य मोक्खो त्ति ॥ १६ ॥
विज्झायदीवकप्पत्तणं च मोक्खस्स केहिं वि य सिद्धं। तेसि मयवारणत्थं इत्थं तत्ताइं सत्तेव ॥ १७ ॥
इय साभिप्पायपरूवणाए निच्छिन्नमच्छरुच्छाहो। रुद्दो रंजियचित्तो भववासाओ विरत्तो य ॥ १८ ॥
गुरुणो पामूलम्मि सम्मं पडिवज्जिउं समणधम्मं। सुत्त-ऽत्थाहिगमपरो गुरुणा सह विहरए वसुहं ॥ १९ ॥

कालक्कमेण य सेससाहूहिंतो पढियाइं भूरिसत्थाइं। वुद्धो तदत्थो। परेसिं पि वक्खाणाइकरणाइणा बाढमुवओगी जाओ त्ति। अन्नया य सूरीहिं पभायप्पायाए रयणीए सुमिणो दिट्ठो। तओ विभावियतयत्था निच्छइयथोवजीवियव्वा य पभाए साहूणमेगत्थ मिलियाणं तब्बुद्धिविमरिसणत्थं साहिउं पवत्ता, जहा—भो साहुणो! अज्ज पभायप्पायाए रयणीए सुमिणम्मि

१ मिथ्यात्वादिद्वारानिरोधात् ॥ २ °गओ जो प्रतौ ॥ ३ 'तस्य' आश्रवस्य ॥ ४ °म्माणुवि° प्रतौ ॥ ५ कर्माश्रवे ॥ ६ नितरांछिन्नमत्सरोत्साहः ॥ ७ °लम्मि प्रतौ । पादमूले ॥ ८ °धम्म प्रतौ ॥ ९ °दथो प्रतौ ॥ १० °वक्खाणा° प्रतौ ॥ ११ °यपय° प्रतौ ॥ १२–विमर्शनार्थं–परीक्षार्थम् ॥

वयं किर गुरूहिं दिवंगएहिं वाहरिया—सिग्घमागच्छह अम्ह पासम्मि त्ति; अम्हेहिं भणियं—एए तुम्हाणुमग्गओ चेव आगय म्हि, ता साहेह किमिह तत्तं ? ति । तत्थ नियनियमइवियप्पणाणुसारेण केणावि किं [पि] जंपियं, परं न सूरीण मणोरंजणं जायं ।

एत्थंतरे रुद्दसाहुणा भणियं—भयवं ! न सुट्ठु विसिट्ठसुमिणमेयं अंतीतव्वाहरणाओ, ता जुत्तमेत्थ विसेसुज्जमणं ति । 'अहो ! सुय[बुद्धि]पगरिसागरो' त्ति पसंसिओ सूरिणा, 'सेससाहुविसेसगुणो' त्ति सुमुहुत्ते य निवेसिओ सूरिपए, दिन्नमणुसासणं । भावियसविसेससंमत्तभावणा य कयचउव्विहाहारपच्चक्खाणा खामियसंघा इंगिणिविहाणं पवज्जिऊण दिवं गया ।

रुद्दसूरी वि सूरो व्व बोहिंतो भवकमलाईरे, पणासिंतो दोसायरुल्लासं, पयडंतो मुत्तिमग्गं, विहणंतो मिच्छत्ततिमिरं, गामा-ऽऽगराइसु विहरंतो संपत्तो तुहिणकरनियरनिम्मलपासायपरंप[रा]राइए रायगिहनयरे, ठिओ एगत्थ उज्जाणे । तस्स य सूरिणो समुदाए चत्तारि महातवस्सिणो विज्जा-चरणगुणोववेया पसिद्धिपत्ता य संति—पढमो य ताण मज्झे बंधुदत्तो नाम वायलद्धिसंपन्नो, बीओ पभाकरो नाम विगिट्ठचाउम्मासियतवविसेससामत्थजुत्तो, तईओ य सोमिलो नाम निमि-

---

१ 'अतीतव्याहरणात्' अतीतकथनात् ॥ २–समत्वभावना: ॥ ३ यथा सूर्यः कमलाकरान् बोधयति–विकासयति तथा सूरिः भव्यजीवकमलाकरान् बोधयति ॥ ४ °लाईरे क्रमो ॥ ५ यथा सूर्यः दोषाकरस्य–चन्द्रस्य उल्लासं–प्रकाशं नाशयति तथा सूरिः जीवानां दोषाकरस्य–दुर्गुणसमूहस्य उल्लासं–वृद्धिं प्रणाशयति ॥ ६ यथा सूर्यो लोकानां तिमिरानुपलक्ष्यमाणं मार्गं प्रकटयति तथा सूरिः जीवानां अज्ञानतिमिरानुपलक्ष्यमाणं मुक्तिमार्गं प्रकटयति ॥ ७ यथा सूर्यस्तिमिरं विहन्ति तथा सूरिरपि जीवानां मिथ्यात्वतिमिरं विहन्ति विघातयतीति यावत् ॥

त्तसत्थपरमत्थवेई[1], चउत्थो पुण सामज्जो नाम जोगविहाणपमुहकिरियाकलावखेयन्नु त्ति । तेसिं च गुणपगरिसवसरंजियमणमाणवकीरमाणं पूया-सक्कारं मणागमसहमाणो सूरी मणमज्झे अद्धिइं करेइ ।

अन्नदिवसे य पाडलिपुत्तनयराउ समागओ एगो साहुसंघाडगो, अब्भुट्ठिओ साहूहिं, कयपायपमज्जणाइपडिवत्तिविसेसो य पडिओ सूरिचरणेसु, लेहसमप्पणपुरस्सरं च विन्नविउं पवत्तो—भयवं ! एस पाडलिपुत्तनगरसंघसमवाएण तुम्ह पेसिओ, अओ इमं परिभाविऊण सिग्घमणुट्ठिज्जउ तयत्थो त्ति । तओ सायरं पणामपुव्वं लेहमादाय सूरी सयं वाइउमारद्धो—

श्रीमदनवेगुणर्द्धिवर्धमानं वर्धमानजिनमानम्य धर्मिष्ठजनसन्निवासपवित्रात् श्रीपाडलिपुत्रात् प्रतिहताघसङ्घः श्रीचातुर्वर्णसङ्घः समस्तनगरराजराजगृहविहारिणं सदा सङ्घकार्यकारिणं कन्दर्पदर्पमथनभद्रं सादरं समादिशति । यथा—क्षेममिह, केवलमेतदेव मनाग् यत्—प्रज्ञावज्ञातवाचस्पतिर्विरचितविचित्रकाव्योपन्यासपद्धतिः सर्वग्रन्थार्थग्रन्थिभिदुरो नाम्ना विदुरो व्यक्तलिङ्गी षड्दर्शनोपप्लवं कुर्वाणो व्यहार्षीत् । तथाहि—

काणादानमदान् प्रनष्टधिषणाधिक्यानवाक्यान् बहून्, शौक्यांस्तर्कवचोविचारविमुखान् साङ्ख्यानसाङ्ख्यानपि ।
कौलान् भ्रष्टबलान् निरस्तयशसो मीमांसकान् व्यंसकान्, कुर्वन् वारणवद् विशङ्कमचरत् सर्वत्र गर्वोद्धुरः ॥ १ ॥

स च सम्प्रति जैनैः सार्धं स्पर्धां चिकीर्षते । ततश्च दर्शनकृत्यं कर्तुं स्वत एवोद्यतस्य भवतः ऋक्षवृक्षकक्षं

१ °वेइ प्रतौ ॥ २ खेदज्ञः—कुशलः ॥ ३ °पुत्तो नग° प्रतौ ॥ ४ °मानम्य धम्मिष्ठ° प्रतौ ॥ ५ वैशेषिकान् ॥ ६ बौद्धान् ॥ ७ °स्तकव° प्रतौ ॥ ८ शाक्तिकान् ॥

दिधक्षोरिवाऽऽशुशुक्षणेर्यद्यप्यनुचितः प्रेरणाप्रक्रमः, तथापि 'विषमो वादविधिः' इति शीघ्रं स्वयमागन्तव्यम्, व्यपाये च प्रस्तुतार्थाव्यभिचरितगुणः शिष्यो वा प्रेषणीय इति ॥ छ ॥

एवं च विभाविऊण लेहत्थं मत्थयारोवियसंघसासणो सूरी तक्खणं पट्ठिओ पाडलिपुत्तनयराभिमुहं । नवरं जाया निडालं ताडयंती अभिमुहा छिक्का । तओ—

वामा खेमा लाभम्मि दाहिणा पच्छिमा नियत्तेइ । निल्लाडुया य छिक्का कयं पि कज्जं विणासेइ ॥ १ ॥

इति विभावितो उवरओ सयं गमणाओ सूरी । पेसिओ पुव्वुत्तो बंभदत्तसाहू । दिन्ना य से सूरिणा सव्वकम्मकरी विज्जा । पढियसिद्धं तमवधारिऊण अक्खंडपयाणएहिं गतो एसो पाडलिपुत्तं ।

दिट्ठो राया, अहिट्ठिओ वाओ, 'जो जेण जिप्पइ सो[3] तस्सेव सिस्सो' त्ति जाया पइन्ना । दिन्नोऽणुकंपाए विदुरस्सेव पुव्वपक्खो साहुणा । वागरिओ य गरुयवयणोर्वन्नासेण निच्चवाओ अणेण । तयक्खरेऽणुभासिऊणऽणेगंतवायवायबलेण य पलालपूलउ व्व पक्खित्तो खणद्धेण एसो मुणिणा । सत्तभंगीभावणावज्जासणिनिद्दयनिद्दलियस्स व पलीणा सुई मई वाया य एयस्स । तओ निब्भत्थिओ सो रन्ना—किमेवं चिट्ठसि ? कुणसु किं पि उत्तरं ति । एवमुत्ते जिएण वि तेण पारद्धा साहुणो थोभणाइया खुद्दोवद्दवा । पडिहणिया य मुणिणा पुव्वपढियविज्जाबलेणं । तओ 'सव्वहा पडिहयसामत्थो' त्ति पडिवन्नो

१ °क्षणे यद्य° प्रतौ ॥ २ °विधेरि° प्रतौ ॥ ३ सो ■ त° प्रतौ ॥ ४ °णोविन्ना° प्रतौ ॥ ५ तयक्खुरे° प्रतौ । तदक्षराण्यनुभाष्य अनेकान्तवादवातबलेन ॥ ६ °यपले° प्रतौ ॥ ७ सप्तभङ्गीभावनावज्राशनिनिर्दयनिर्दलितस्य इव प्रलीना श्रुतिः ॥ ८ स्तम्भनादिकाः ॥

मुणिसमीवे सामन्नं । दिन्नं रन्ना विजयपत्तं । उब्भावियं[1] सवत्थ सवन्नुसासणं । पूइज्जंतो पुरजणेणं, सलहिज्जंतो संघेणं, अंगुलीहिं दंसिज्जंतो पागयलोगेणं, चिदुरसिस्ससमेओ गओ रुद्दसूरिणो समीवं बंधुदत्तो । हियसमुव्वहंतमच्छरेण य न मणागं पि उववूहिओ सूरिणा[2] । तओ—

संभावणाइरित्ते कज्जे[3] संपाडिए वि लज्जंतो । आणंदिएण धन्नो उववूहिज्जइ दढं गुरुणा ॥ १ ॥

इइ भाविज्जंतो परं सोगमुवगओ बंधुदत्तो सग्गुणज्जणाय[4] मंदायरो जाओ त्ति ।

चाउम्मासियसाहू वि तंकालं चाउम्मासियतवं पवन्नो । सो वि अणवरयमित-जंतमहीवइपमुहपहाण[जण]कीरंतसक्कारो पंतकुले अमुणिज्जंतो उंछवित्तीए भुंजिओ । सो वि सूरिणा न वयणमित्तेण संभासिओ ।

एवं वच्चंते काले गुणोववूहणविमुहे णायगे तदज्जणपडिभग्गे साहुवग्गे सुत्तऽत्थपढण-चिंतणाइवावारा पइदिणं तणुयत्तणं[5] पत्त त्ति । रुद्दसूरी वि तदज्झवसाओ चेव कालं काऊण किब्बिसियवंतरसुरेसु उववज्जिऊण दुग्गयकुलेसु केसुं पि जाओ माहणपुत्तत्तणेणं[6] ति । कालक्कमेणं अइक्कंतबालभावो पत्तो तरुणत्तणं । गुणाणुववूहणजणियदुक्कम्मऽवसेसयाए पडिहया से जीहा । मूओ व भासाए पयंपिउं पवत्तो, वेरग्गिओ य तद्दोसेणं, 'ही ! मए किं पुव्वभवे कयं ?' ति जाया जिन्नासा[7], पज्जुवासइ सव्वे वि[8] तित्थिए ।

१ 'उद्भावितं' प्रभावितम् ॥ २ सूरिणो प्रतौ ॥ ३ कज्जेणं सं° प्रतौ ॥ ४ सगुणुज्ज° प्रतौ ॥ ५ 'तनुकत्वं' हीनत्वम् ॥ ६ °णाणव° प्रतौ । गुणानुपबृंहणजनितदुष्कर्मविशेषतया ॥ ७ जिज्ञासा ॥ ८ वि तत्थि° प्रतौ । 'तीर्थिकान्' मतान्तरीयान् ॥

स्वगुणोत्कर्षपरगुणेर्ष्याया विपाकः

अन्नया य समोसढा चउनाणोवगया सुहम्माभिहाणा सूरिणो। गतो सो ताण समीवं, वंदिऊण निविट्ठो सन्निहियभूमिवट्ठे। सूरीहिं वि तक्खणं एगो साहू नियेगुणगविरो परमच्छरी अणुसासिउमारद्धो। जहा—भद्द !

थेवेण वि गवेणं गुणसमुदाओ वि कीरइ असारो। रसंसंभियं पि भोयणविहाणमुवहणइ गरललवो ॥ १ ॥

निम्मलगुणेसु रत्तो जणो वि अन्नत्थ ते अपिच्छंतो। मणिही एसो च्चिय एरिसो त्ति गवेण किं गुणिणो ? ॥ २ ॥

परगुणपसंसणाए अगुणो वि गुणत्तणं धुवं लहइ। साहुकिरियाए निरओ साहुत्तं गिहनिवासि व ॥ ३ ॥

सगुणेसु गवभावो मच्छरभावो य उत्तमगुणेसु। मंदरगरुयं पि नरं लहुयं कुवंति सयराहं ॥ ४ ॥

सगुणाण निण्हवे परगुणाण दूरं पयासेणेऽभिरुई। किं बहुणा भणिएणं ? नाऽणभिजायाण संभवइ ॥ ५ ॥

ता वच्छ ! केत्तियं तुह कहिज्जइ ? पचक्खं चिय पेच्छसु एयाण विवागं। सिस्सेण भणियं—भयवं ! कत्थ पेच्छामि ?। तओ दंसिओ सो रोरमाहणपुत्तो पणट्ठजीहावावारो त्ति। सिस्सेण जंपियं—भयवं ! किं पुवभवे इमिणा कयं ? ति। गुरुणा भणियं—जं तुमं काउमुवट्ठिओ सि त्ति। सिट्ठो सवो तप्पुवकालियवुत्तंतो। पडिबुद्धो रोरमाहणो पवन्नो सामन्नं। सिस्सो वि तं निसामिऊण चत्तमच्छराइदोसो गुणिजणोववूहणाइसु उज्जओ जाओ त्ति।

उववूहणाविरहओ तदवन्नाए गुणाण परिहाणी। सद्धाभंगो सुंगुणज्ञणे य उभयं पि हु अजुत्तं ॥ १ ॥ किञ्च—

१ निजगुणगर्ववान् ॥ २ 'रससम्भृतं' रसपूर्णम् ॥ ३ °च्छंते प्रतौ ॥ ४ शीघ्रम् ॥ ५ °सणाभि° प्रतौ ॥ ६ न 'अनभिजातानां' नीचकुलोत्पन्नानाम् ॥ ७ गुह प्रतौ ॥ ८ कच्छ पे° प्रतौ ॥ ९ तन्निसा° प्रतौ ॥ १० सुणेज्ज° प्रतौ ॥

यद् विद्यमानगुणसम्पदि बुध्यमाने, पुंसि प्रशंसनविधौ विरमन्ति वाचः ।
स व्यक्तमन्तरुदितोद्धतदर्पसर्पदंष्ट्राविषोपजनितः सकलो विकारः ॥ १ ॥
मिथ्यादृशोऽपि यदि नाम गुणाधिकानां, निर्मत्सरा[1] विदधते स्तवनं प्रहृष्टाः ।
सीदन्ति तत्र किमिति स्फुटजैनवाक्यसम्यग्विचारचतुरा अपि बुद्धिमन्तः ? ॥ २ ॥
शङ्कादिदोषगहनं समतीत्य दुर्गमेतावतैव किमु मुह्यति विज्ञवर्गः ? ।
सद्यो विलङ्घ्य मकराकरमस्तपारं, किं कोऽपि गोष्पदजलेऽपि निमज्जतीति ? ॥ ३ ॥
इति स्वबुद्ध्याऽऽगमतोऽनुमानाद्, विचार्य सम्यग् हृदि चावधार्य । गुणोपबृंहा बृहदादरेण, सद्दर्शनस्याङ्गमसौ विधेया ॥४॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां पञ्चमातिचारप्रक्रमे रुद्राचार्यकथानकं समाप्तम् ॥ ६ ॥

सम्मत्ते पत्ते वि हु विहुणिज्जइ कम्मदोसओ जीवो । सुहभावाओ जम्हा ता भन्नइ तत्थिरीकरणं ॥ १ ॥
राग-द्दोसपरद्धा कहिं पि वेरग्गमग्गमवहाय । भुज्जो मूलट्ठाणं[2] ही ही ! कह पवज्जंति ॥ २ ॥
गुणठाणे गरुयम्मि वि ठविया अन्नाणपवणखिप्पंता । दोलंति धयवडा इव कयनिप्फलबहुफडाडोवा ॥ ३ ॥
ता ताण नाण-दंसण-चरणेसु दढं विसीयमाणाणं[4] । कारुन्नपवन्नमणो तेसु च्चिय थिरत्तमुवणिंतो ॥ ४ ॥

---

१ निर्मच्छरा प्रतौ ॥ २ °णट्ठाणे प्रतौ ॥ ३ ट्ठवि° प्रतौ ॥ ४ विषीदताम् ॥

सम्मत्तं संपत्तं पि उत्तमं उत्तमुत्तमं कुणइ । सुद्धं मणिं व सोहणगुणेण अइसुंदरतरागं ॥ ५ ॥
धम्मस्स परममंगं ता कायवं दढं थिरीकरणं । परहियरएण सद्धम्मसीयमाणाण सत्ताण ॥ ६ ॥
अप्पंभरित्तभावा जो पुण सामत्थसंगओ वि परं । न थिरीकरेइ धम्मे राग-द्दोसेहिं वामूढो ॥ ७ ॥
तो तदुवेहासंजणियदोसवड्ढंतकलुसपरिणामो । पब्भट्ठबोहिलाभो भवदेवो इव भवे भमइ ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि पउरपुरपत्तपरमब्भुदयरेहं, रेहंतकंतपसरंतजणजणियभूरिसोहं, सोहम्मसुरपयं व दीसंतबहुविबुहवग्गं, वग्गंताणेगनड-नाडइज्ज-लंखंगपेच्छणयरम्मं रम्मपुरं नाम नयरं। विणिज्जियासेसवइरिमल्लो हत्थिमल्लो नाम राया। अंभिन्नहिययभूओ गंगाधरो से बालमित्तो । ताणं च सहसयण-पाण-भोयणा-ऽवत्थाणपमुहकिच्चेसु सिणेहसारं वट्टंताणं एगया एगंतगयाण जाओ परोप्परमेवंविहसमुल्लावो ।

किं नाम सो वि पुरिसो पोरिसमुव्वहइ सलहियं जंयइ । धरइ य कुलाभिमाणं दंसइ य कलासु कोसल्लं ॥ १ ॥
नीहरिउं सघराओ जो न पलोयइ वसुंधराभोगं । गामा-ऽऽगर-नगरा-ऽऽसम-पुरपरिकिन्नं अनिव्विन्नो ? ॥ २ ॥
ता रज्जभरं मंतीसु सव्वहा रोविऊण निच्चिंता । कइवयवरिसाइं वयं पेच्छामो मेइणीवट्टं ॥ ३ ॥

१ शोधनगुणेन ॥ २ तदुपेक्षासंजनितदोषवर्धमानकलुषपरिणामः ॥ ३ प्रचुरपुरप्राप्तपरमाभ्युदयरेखम् ॥ ४ राजमानकान्तप्रसरज्जनजनितभूरिशोभम् ॥ ५ 'सौधर्मसुरपदमिव' सौधर्मदेवलोकमिवेति भावः ॥ ६ °हुविहवुह° प्रतौ ॥ ७ देवलोकपक्षे विबुधाः—देवाः, अन्यत्र विबुधाः—विद्वांसः ॥ ८ वल्गत्—नृत्यत्—॥ ९ लङ्खाः—वरत्राप्रेक्षकाः ॥ १० अब्भिन्न° प्रतौ ॥ ११ °याणु जा° प्रतौ ॥ १२ जगति ॥

'अभिरुइयं दोण्हं एयं' ति अभिन्नरहस्समंतिसंकामियरज्जचिंता य केणइ अमुणिज्जंता कयतक्कालोचियवेसपरिग्गहा निग्गया दो वि नियभवणाओ, पट्ठिया उत्तरावहं, संतुरियपयक्खेवं गया कइवयजोयणाणि, आवासिया एगस्स थेरदियवरस्स मंदिरे। अकयपरिस्समत्तणेण य निंत्थामीहूयाणि अंगाणि, पंमिलाणा दूरं सरीरसिरी। संभासिया थेरविप्पेणं—पुत्ता ! कत्तो आगमणं ? कहिं वा गंतव्वं ? अकयपहपरिस्समा पढमघरनीहरिय व्व लक्खिज्जह त्ति। रन्ना जंपियं—विप्पवर ! रम्मपुराओ कूवदद्दुर व्व सव्वत्थ अंपरिहत्था देसदंसणकोऊहलेण उत्तरावहं पट्ठिय त्ति। माहणेण भणियं— वच्छ ! ईइसीए आगिईए न तुमं सामन्नरूवो होसि। तहाहि—

पडाय-कमलं-ऽकुसप्पमुहलंछणालंकियं, सहावसुइ-कोमलं पय-कराण रत्तत्तणं।
कवाडवियडं फुडं उवचियं च वच्छत्थलं, निडालमवि अट्ठमीसरयचंदबिंबोवमं ॥ १ ॥
घणनियरसुंदरो विजियपंचयन्नो सरो, सरोरुहदलुज्जलं सवणपत्तमच्छीजुयं।
जुंयाय[य]भुयादुगं जह तुहं पलोएज्जए, जए तह सुनिच्छियं तुममहो ! महीनायगो ॥ २ ॥

एवं सोच्चा ईसि हसिऊण भणियं रन्ना—भो माहण ! पच्चक्खीभूयभूवइसिरिणो किं तुज्झ साहेमि ?। माहणेण

१ °ण्हं ति एयं अभि° प्रतौ ॥ २ सत्वरितपदक्षेपम् ॥ ३ 'निःस्थामीभूतानि' निर्बलीभूतानि ॥ ४ प्रम्लाना ॥ ५ °व्व सलिज्ज° प्रतौ । ६ अनिपुणा इत्यर्थः ॥ ७ °ईईसी° प्रतौ । ईदृशा आकृत्या ॥ ८ रत्तन्नलं प्रतौ ॥ ९ °च्छच्छलं प्रतौ ॥ १० घणनिय° प्रतौ । घणनिकरसुन्दरः ॥ ११ युगायत–युगप्रमाण। युगं–रथधुरम् ॥ १२ जगति ॥

भणियं—महाभाग ! सामुद्दसत्थपरमत्थो एस तुह सिट्ठो, तदणुरूवा य फलनिप्फत्ती होइ न होइ त्ति-कम्माण अहिगारो, तह वि अवितहवयणा भयवंतो सत्थयारा, अवस्सं भवियव्वं तुह रिद्धिसमुदएणं, अओ न जह तह अप्पा किलेसियव्वो त्ति । रन्ना जंपियं—तुब्भे जाणह त्ति ।

एवं च दिणमेगं वीसमिऊण नीहरिया तओ ठाणाओ, पयट्टा पुव्वद्दिसिए गंतुं । जाव य कइवयजोयणाइं गया ताव कुरुदेसविसमभूभागट्ठियं तेहिं दिट्ठं चउद्दिसिविमुक्कहेरियं[1] इओ तओ भमंत-रुब्भंततुरयारूढजोहं विसन्ननायगजणं सिबिरसन्निवेसं ति । तं च तहाविहं पेच्छिऊण पुच्छिओ एगो पहाणपुरिसो—भो ! किमेवमेयं भउब्भंतं व दीसइ ? त्ति । तेण भणियं—भो महायस ! सुणेहि—एसो हि कुरुदेसाहिवई अज्जुणो नाम राया पच्चंतन-रिंदसंदोहेण[2] रयणीअवक्खंददाणाइणा[3] पराजिओ, निहयपहाणजोहनिवहो य संपइ तब्भएण एवं ससंको वट्टइ । हत्थिमल्लेण भणियं—कह एत्तियचाउरंगबलसामग्गीए वि एस महप्पा एवं विसीयइ ? त्ति । तेण भणियं—किं कीरइ सामग्गीए तहाविहसावट्ठंभधीरपुरिससानिज्झविरहियाए[4] ? । इयमायन्निऊण[5] उच्छलिया रन्नो करुणा, पयट्टो महा-पुरिसत्तणसहसंभूओ[6] परोवयारकरणाहिलासो, विस्सुमरियं[8] पारद्धं नियपओयणं । भणिओ णेण सो पहाणपुरिसो—अरे ! गंतूण नियनरवइणो साहेसु—जइ तहाविहपुरिससाणिज्झाभावाउ विसीयसि ता पउणो होहि, केत्तियमित्तमिमं परबलं ? को

१ हेरिकाः—चराः ॥ २ प्रत्यन्तनरेन्द्रः—समीपदेशस्थो राजा ॥ ३ °वखंद° प्रतौ ॥ ४ °ट्ठमध° प्रतौ । तथाविधसावष्टम्भधीरपुरुषसान्निध्यविरहितया ॥ ५ इदमाकर्ण्य ॥ ६ महापुरुषत्वसहसम्भूतः ॥ ७ °करुणा° प्रतौ ॥ ८ विस्मृतम् ॥

सूरमंडले पभवंतम्मि पउरस्स वि तिमिरपब्भारस्स अवगासो ? त्ति । गओ एसो । सिट्ठो अज्जुणनरिंदस्स तव्वुत्तंतो । तं सोच्चा विम्हिओ राया परिभाविउं पयत्तो—अहो ! अज्ज वि एवंविहअसमसाहसधणाणि पुरिसरयणाणि सुव्वंति[1] ता किं न संभवइ ? । तथाहि—

तेरुर्गो[2]ष्पदवत् पयोधिममरक्रीडाचलं लेष्टु[3]वत्, सद्यश्चिक्षिपुरम्बरं स्वगृहवर्चैर्क्रु[4]ः क्रमाक्रान्तिमत् ।
पातालं विविशुर्दरीवदभयाः किं वाऽस्तु तद् दुष्करं[5], यन्नास्मिन् विदधुर्नृणां[6] सकलतामालम्ब्य[7] सत्त्वाधिकाः ? ॥ १ ॥

ता होउ वियप्पकल्लोलमालाउलत्तेण, गंतुं सयमेव तमवलोएमि त्ति कइवयपहाणपुरिसपरियरिओ रायवाडीववएसेण इओ तओ परिभमिऊण गओ तं पएसं जत्थ हत्थिमल्लमहीनाहो वट्टइ त्ति । तओ दूरा पमुक्करायचिंधो कयतक्कालोचि[9]यपडिवत्तिविसेसो तस्स समीवे उवविट्ठो, सिणेहसारं च परोप्परकहाहिं ठाऊण भणिओ अज्जुणरन्ना हत्थिमल्लो—एह[10], आवासदंसणेण अम्हे अणुगिण्हेह त्ति । उवरोहसीलयाए गओ एसो तस्साऽऽवासं । कया णेण भोयणाइपडिवत्ती ।

खणंतरावसाणे य अणवरयकसाघायपवड्ढंतवेगजच्चतुरयसमारूढा समागया चारपुरिसा । विन्नत्तं च तेहिं—देव ! भवदेवनरिंदपुरस्सरा पच्चंतनराहिवसेणावइणो विहियसन्नाहवूहविरयणा अणुमग्गतो चेव अम्हाणमागया, ता कुणह जमित्थ पत्थावे समुचि[8]य-न्ति । तओ आउलीहूओ अज्जुणनरिंदो, भणिओ य वइरिहियसल्लेण हत्थिमल्लेण—भो महाराय !

१ श्रूयन्ते ॥ २ °र्गोपदवत् पयोधेम° प्रतौ ॥ ३ लेट्ठुव° प्रतौ ॥ ४ °चकः क° प्रतौ ॥ ५ तदुकरं प्रतौ ॥ ६ नृणु इत्यर्थः ॥ ७ °लनामालम्ब्य स° प्रतौ ॥ ८ °रा य मु° प्रतौ ॥ ९ °लोचिय° प्रतौ ॥ १० °एहइ त्ति प्रतौ ॥

अलमलमाउलत्तणेण, पउणीकारवेसु पउरपहरणपंडहच्छं जयकुंजरमेगं मह जोग्गं, अवरं च गंगाधरजोग्गं ति। 'तह' त्ति संपाडियं सव्वं अज्जुणेणं। तओ अणुरूवट्ठाणनिवेसियासेससामंतचक्को चक्कवूहविरयणं काऊण ट्ठिओ परबलाभिमुहो हत्थिमल्लो। लग्गमाओहणं—

वज्जंताउज्जसमुच्छलंतपडिसद्दभरियनहविवरं। नहविवरट्ठियसुर-खयर-किन्नरारद्धजयकारं ॥ १ ॥
जयकारसवणसंतुट्ठकंठखिप्पंतनिसियसरनियरं। सरनियरवरिसपडिरुद्धचंडमायंडकरपसरं ॥ २ ॥
पसरंतजोहसंघायघायघुम्मंतमत्तकरडिघडं। करडिघडविहडणाउलचउदिसिनासंतभीरुनरं ॥ ३ ॥
नरनाहनिहणनिवडंतछत्त-धयनिवहरुद्धसमरपहं। समरपहवूढरुहिरप्पवाहवुज्झंतनर-तुरयं ॥ ४ ॥
नर-तुरयमुंडदोहंडरुंडकवलणमिलंतवेयालं। वेयाल-पूयणाकुलकीडाकयतुमुलहयबोलं ॥ ५ ॥
हयबोलसवणपडिखलियसुहडकीरंतवीरवाहरणं। वाहरणुग्गयरणरसमुच्छियभडदिन्नहुंकारं ॥ ६ ॥

१–पडहच्छं-युक्तम् ॥ २ सव्वं प्रतौ ॥ ३ अच्छिम° प्रतौ ॥ ४ 'आयोधनं' युद्धम् ॥ ५ वाद्यमानातोद्यसमुच्छलत्प्रतिशब्दभृतनभोविवरम्। नभोविवरस्थितसुरखेचरकिन्नरारब्धजयकारम् ॥ ६ °मुज्जलं° प्रतौ ॥ ७ °रद्धंज° प्रतौ ॥ ८ जयकारश्रवणसन्तुष्टकण्ठक्षिप्यमाणनिशितशरनिकरम्। शरनिकरवर्षप्रतिरुद्धचण्डमार्तण्डकरप्रसरम् ॥ ९ प्रसरद्योधसङ्घातघातघूर्णमानमत्तकरटिघटम्। करटिघटाविघटनाकुलचतुर्दिग्नश्यद्भीरुनरम् ॥ १० नरनाथनिधननिपतच्छत्रध्वजानिवहरुद्धसमरपथम्। समरपथव्यूढरुधिरप्रवाहमुह्यद्नरतुरगम् ॥ ११ नरतुरगमुण्डद्विखण्डरुण्डकवलनमिलद्वेतालम्। वेतालपूतनाकुलक्रीडाकृततुमुलहयबोलम् ॥ १२ हयबोलश्रवणप्रतिस्खलितसुभटक्रियमाणवीरव्याहरणम्। व्याहरणोद्गतरणरसमूर्छितभटदत्तहुङ्कारम् ॥

॥ ३६ ॥

हुंकारसंकओसक्कगिद्धपम्मुक्कचंचुवावारं । वारंवारं सवत्थ वित्थरंतोरु-भीमरवं ॥ ७ ॥
ईय घोरसमरसम्मद्दनिद्दउद्दामवड्ढिउक्करिसो । नरनाहहत्थिमल्लो हयमहियं कुणइ रिउचक्कं ॥ ८ ॥

एवंविहे य महासमरसंरंभे अजयावहमाहवसरूवमवधारिऊण पहाणपुरिसेहिं अणिच्छंतो वि छिन्नच्छत्त-धणुवयावलोयण-मिलियमावन्नो (?) [भव]देवराया नीसारिओ समराजिराओ । 'हयं सेन्नमनायगं' ति जं जत्तो तं तत्तो लुंटियं अज्जुणराय-लोएण परबलं । सोहिया संगामभूमी, निरूविया पहारपरवससरीरा सामंताइणो । दिट्ठो य गंगाधरो कुंतघायगयजीवो निवडिओ भूमिवट्ठे, परं सोगावेगमइगतो हत्थिमल्लो, कारियं च सक्काराइयं से परलोईयं । हत्थिमल्लोवरोहेण पडिवन्न-मविसन्नमाणसेण अज्जुणेण पुव्वरज्जं । धूयादाणपुरस्सरं सक्कारिओ अणेण 'परमोवयारि' त्ति हत्थिमल्लो । ठिओ सो तत्थेव कइवयवासराइं ।

नवरं नंद्धसल्लं व से खुडुक्कंतं न खणमवि विरमइ मित्तमरणविओगदुक्खं, न नट्टविहिनियक्खणे वि सुरूवरामाजणे निवडइ चक्खू, परमपहरिसट्ठाणे वि न आणंदिज्जइ मणागमवि मणो, न गय-तुरयवाहियालीसु वि थेवमवि अहिरमई मई । एवं च स महप्पा तव्विओगं निग्गहिउमपारयंतो देसदंसणाओ दूरनियत्तियचित्तुच्छाहो कहिं पि रइं अपावमाणो जाव

१ हुङ्कारख्वक्कदवख्वक्कदुगृध्रप्रमुक्तचञ्चुव्यापारम् । वारंवारं सर्वत्र विस्तरदुरुभीमरवम् ॥ २ °सक्किओ° प्रतौ ॥ ३ इति घोरसमरसम्मर्दनिर्दयोद्दामवर्धितोत्कर्षः । नरनाथहस्तिमल्लः हतमथितं करोति रिपुचक्रम् ॥ ४ जं तत्तो तं प्रतौ ॥ ५ अजुण° प्रतौ ॥ ६ नट्ठस° प्रतौ ॥ ७ °ओगनिग्गहिओमपारयंतो दिसिदंसणाओ दूरं प्रतौ ॥

अच्छइ ताव पुव्वरज्जाओ समागओ एगो गूढचरो, पडिहारनिवेइओ पविट्ठो, पायवडणपुव्वयं च खेत्तो अणेण लेहो। वाइओ सयं रन्ना, 'सिग्घं नियत्तियव्वं' ति अवगओ तयत्थो। कहिओ य अज्जुणनरिंदस्स एस वुत्तंतो। तओ—

करि-तुरय-रयणसंभारनिब्भरं रायलच्छिविच्छड्डं। सायरकयप्पणामो समागओ अज्जुणनरिंदो ॥ १ ॥

भालयलारोवियपाणिसंपुडो जंपिउं समाढत्तो। देव! तुह पायपउमप्पसायलवविलसियं एयं ॥ २ ॥

ता गिण्हसु सव्वमिमं तुह उवयारस्स केत्तियं एयं?। तुह दंसणे वि नरवर! मन्ने कयकिच्चमप्पाणं ॥ ३ ॥

नियजीवियव्वएण वि परउवयरणेक्कलालसे तुमए। को सद्दहइ न बलि-सिबिपमुहे परकज्जकरणरए? ॥ ४ ॥

अह सगुणकित्तणायन्नणेण लज्जाए संकुडियकाओ। तं भणइ हत्थिमल्लो भो नरवर! किमिमयुच्छवसि? ॥ ५ ॥

का मे सत्ती? को नाणपगरिसो? किं कलासु कोसल्लं?। को वा परोवयारो? तह वि हु गुणकित्तणमउव्वं ॥ ६ ॥

थेवं पि गुणं गिरिगरुयवित्थरं सच्चविंति अवरस्स। गरुयं पि अप्पणो निण्हविंति पयई सुपुरिसाण ॥ ७ ॥

ता अलं भूरिभणणेण, भद्द! अणुभुंजसु इमं रायसिरिं, अहं पुण वच्चामि रज्जाभिमुहं।—ति संठविऊण कइवय-पुरिससमेओ नियत्तियासेसलोओ केणइ अमुणिज्जंतो गओ सनयरं।

पविट्ठो रायभवणं, आसीणो अत्थाणमंडवे, समागया मंति-सामंताइणो, चिंतियाइं रज्जकज्जाइं। विसज्जियासेसलोगो य मंतीहिं समं ठिओ एगंते। पुच्छिया मंतिणो—भो! किमहं वाहरिउ? त्ति। मंतीहिं भणियं—देव! निसामेसु—तुम्ह

१–विस्तारम् ॥ २ °सवुडो प्रतौ ॥ ३ समारब्धः ॥ ४ सज्जमि° प्रतौ ॥ ५ °पणं वि प्रतौ। –व्ययेन ॥ ६ पश्यन्ति ॥

पुत्तो महीचंदो केणइ दुन्निमित्तेण न याणामो पिसायपारद्धो असमंजसं जंपंतो महाकट्ठेण निरुद्धो, तुम्हे य गूढपुरिसपेसणेण य तदुवक्कमकएण वाहराविया तुरियतुरियं ति। तओ 'हा ! किमेयं ?' ति आदन्नो राया गतो तदंतियं। अब्भुट्ठिओ पहिट्ठेण रायसुएण। कयपायवडणाइपडिवत्तिविसेसो संभासिओ रन्ना—वच्छ ! किमेयं ? ति। रायसुएण भणियं—ताय ! कत्थ किं ? ति। तओ 'सुन्नवयणो' त्ति धरिओ रन्ना मुद्दाए। सभय-चमक्कारं च जंपियमणेण—देव ! किमेवं नियमित्तं पि पीडेसि ?। रन्ना भणियं—को तुमं ?। तेण जंपियं—गंगाधरो हं। रन्ना वुत्तं—कहमेवंविहमवत्थं पत्तो ?। तेण जंपियं—महाराय ! तइया महासमरसंरंभवावडे तुमए अहं निविडगुडाडोयभासुरं करेणुरायमारुहिऊण ठिओ अभिमुहो दुम्मुहाभिहाणस्स परबलसामिणो, पयट्टं महंतमाओहणं, निवडिया सर-नाराय-खुरुप्प-वावल्ल-भल्लि-सेल्लाइणो पहरणविसेसा, ततो मए चोयाविऊण सहत्थी पडिकरिदंत........निहसदेसं पडुच्च कओ खग्गेण रिउणो घाओ, तेणावि अच्चंतनिसियकुंतघायविणिंततंजालो पाडिओ हं सारिवट्ठाओ, गयजीओ य उववन्नो पिसायदेवेसु, तुह दंसणुक्कंठिओ य संकंतो कुमारम्मि।

इमं सोचा सविम्हयं सविसायं ससोगगग्गिरं च संलत्तं रन्ना—अहो ! सच्छंदं देवदुविलसियं, [अहो !] अविभावणिज्जरूवा कम्मपरिणई, अहो ! भागधेयविवज्जओ, जमेवंविहसहाइरयणाणि वि एवंविहदेवकिब्बिसजोणिमावज्जंति, किमिह कीरइ ? अविसओ पुरिसयारस्स, अगोयरं मंत-तंताईणं ति। मंतीहिं भणियं—देव ! अलमलं संतप्पिएण, कुणह जमेत्थ

१ व्याकुलितः ॥ २ मुद्दाए प्रतौ । मूर्ना ॥ ३–व्यापृते त्वयि ॥ ४ गुडा–हस्तिकन्नाग् ॥ ५ °सेसो प्रतौ ॥ ६ °जाले पा° प्रतौ ॥ ७ हस्तिकवचपृष्ठात् ॥ ८ सशोकगद्गदम् ॥ ९ °यरमं° प्रतौ ॥

करणिज्जं । रन्ना भणियं—भो परममित्त ! साहेसु केण पुण विहिणा तुह कएण सुगइलाभो भवेज्जा ? सव्वहा दुक्करं पि उवायं निवेदेसु । पिसाएण भणियं—महाराय ! अइक्कंतो कालो करणिज्जस्स, सकम्माणुरूवो सहणिज्जो इयाणि दसाविवागो त्ति—

देवाण नारयाण य नरिंद ! चिरनिहियकम्मपडिरूवो । उवभोगो च्चिय सुकयजणं च पुण कम्मभूमीए ॥ १ ॥

पिंडप्पयाण-न्हुणणाइणा य जे वि य वयंति किर सुगइं । विगइगयस्स वि दूरं अन्नाणवियंभियं तं पि ॥ २ ॥

एवं पि सुगइभावे कुगई कस्स वि न होज्ज संसारे । कीरइ य कीस जइ तह सुगईभावे वि तवकिरिया ? ॥ ३ ॥

ता जह विरेयणोसह-लंघणकिरियाए रोगिणो सम्मं । सयमेव कीरमाणीए होइ रोगक्खतो नियमा ॥ ४ ॥

तह नरवर ! तव-संजम-नाण-ज्झाणाइणा सुचरिएण । असुहस्स खओ तत्तो य निम्मलो सुगइलाभो त्ति ॥ ५ ॥

एवं वुत्ते 'तह' त्ति पडिवन्नं रन्ना । कयसिणेहसारसंलावो य जहागयं पडिगओ पिसाओ । साभावियरूवं पवन्नो कुमारो । एवंविहतव्वइयरनिसामणेण य धम्मकरणाभिलासी जाओ राया ।

इओ य सो भवदेवनरिंदो समरपराजय[जाय]वेरग्गो 'कहमहं मुंहमवजसपंसुमलिणं सयणाईण दंसिस्सामि ?' त्ति च्छिन्न-घरदंसणाभिलासो अद्धपहे च्चिय मइसागरसूरिसमीवे पव्वज्जं पडिवन्नो, सुत्तत्थाइं अहिज्जंतो तवोविसेसपरो विहरंतो य गुरुणा समं समागतो रम्मपुरनयरे । सूरिमागमसमुब्भवंतपमोयाइसया य समागया वंदणत्थं पत्थिवाइणो । निसामियसवन्नुवयण-

१ °सायाणो चि त्ति प्रतौ ॥ २ °भोगे च्चि° प्रतौ ॥ ३ पिण्डप्रदानस्नानादिना ॥ ४ °गइभा° प्रतौ ॥ ५ विरेचनौषधलङ्घनक्रियया ॥ ६ °गखतो प्रतौ । रोगक्षयः ॥ ७ सुह° प्रतौ ॥

परमत्था य मत्थयारोवियपाणिणो पाणिवहपमुहपावट्ठाणनिविर्त्ति जहसत्तीए पवन्ना पुरजणा । पुहइवई वि पुवं चिय भववासविरत्तचित्तो तक्कालविसेससमुल्लसंतविरइपरिणामो पणामिऊण महीचंदस्स रायसिरिं सिरीससुकुमारसरीरो वि निस्सामन्नं सामन्नपज्जायं घेत्तुं गुरुकुलं समल्लीणो । विजियमयणमल्लो हत्थिमल्लो वि विहरिउं पवत्तो । पच्चभिन्नाओ य भवदेवसाहुणा, जहा—सो एस पवज्जापडिवत्तिहेउत्तणेण मह उवयारी पराजयकरणेण य अवयारी य, अहह ! कहं समराजिरमुवगओ तहाविहमहं महंतं लहुत्तमुवणीउ ?—त्ति मणागं समुवहइ अणुसयं । इयरो न पच्चभिजाणइ इमं ति वच्चइ कालो ।

अन्नया य 'गीयत्थो' त्ति गुरुणा पुरओ काउं भवदेवसाहू हत्थिमल्लाइकइवयसुतवस्सिणो सहाइणो दाउं पेसिओ विहारजत्ताए । सो य सिरोवरिसमारोवियसासणो अणिययविहारचरियाए गामाणुगामं विहरिउं पवत्तो । एगया य अचिन्तसामत्थत्तणओ मोहमहारायस्स, पडिकूलकीलाकारित्तणतो य भवियव्वयाए स महप्पा हत्थिमल्लरायरिसी परिवडियसुहभावो परिभाविउं पवत्तो—

पडिलेहणा-पमज्जणपमुहविहाणं विणा वि देवगई । लब्भइ जीवेहिं निंयइभावओ निच्छियं एयं ॥ १ ॥
कहमन्नहा मंहाहवनिउत्तसुनिरुत्तचित्तविरिओ वि । सुंरजोणिम्मऽणुपत्तो मित्तो गंगाधरो मज्झ ? ॥ २ ॥
सुवंति य समए वि हु तंहभवत्तुब्भवंतसामत्था । अकयकिरिया वि मरुदेविमाइणो सिवपयं पत्ता ॥ ३ ॥

१ अर्पयित्वा ॥ २ °सिरिं सरीरसुकु° प्रतौ । शिरीषसुकुमारशरीरः ॥ ३ °वत्तो प्रतौ ॥ ४ नियतिभावात् ॥ ५ महाहवनियुक्तसुनिश्चितचित्तवीर्योऽपि ॥ ६ °विहरि° प्रतौ ॥ ७ सुरयोनौ अनुप्राप्तः ॥ ८ तथाभव्यत्वोद्भवसामर्थ्यात् ॥ ९ °वन्तुब्भ° प्रतौ ॥

ता तहभवत्तं चिय कल्लाणकलावकारणं परमं । तदभावे पुण विहलो सव्वो कायवञ्चावारो ॥ ४ ॥
संजम-तवाइएहिं उवेइ सो पागमेयमवि तुच्छं । मरुदेवीपमुहाणं तवविरहे किंकओ पागो ? ॥ ५ ॥
इय[2] सुहकिरियावारगवइरिविरुज्झंतसुद्धपरिणामो । स[3] महप्पा तव-किरियासु ईसि मंदायरो जाओ ॥ ६ ॥

पुरुषभेदाः

उवलद्धतप्पमायदुविलसिएण भणिओ भवदेवसाहुणा—भो रायरिसिप्पवर! अनिविन्नपत्तसामत्थगुणस्स[4] जइ वि नत्थि तुह किं पि अणुसासियव्वं तहावि किं पि भन्नइ —इह हि पुरिसा तिविहा हवंति—जहन्ना मज्झिमा उत्तमा य, तत्थ जहन्ना नारभन्ति पढमं चिय विग्घभयाओ धम्मत्थं, मज्झिमा पुण विग्घविहया पारद्धं पि परिहरंति, उत्तमा य पच्चूहवूहसंभवे वि बहुतरमब्भुज्जमन्ति, ता तुममवि उत्तमो भविऊण कीस धम्मकिच्चाओ पच्चोसक्कंतो व लक्खिज्जसि ? ता किं जुत्तमेयं ? । ततो हत्थिमल्लरायरिसिणा सिट्ठो सव्वो निययाभिप्पाओ । भवदेवेण भणियं—भद्द ! जइ वि मरुदेवी पुव्वमकयतव-नियमविसेसा वि तज्जम्मे चिय सुहभावाइरेगवससमासाइयनीसेसकम्मक्खया मोक्खमुवगया तहावि न तदुदाहरणमच्छेरियभूयं पमाणीकायव्वं सव्वत्थ, ववहारविगमभावाओ, जं च 'तहाहभवत्तभावाउ चेव सिद्धिलाभो, कल्लाणुट्ठाणकरणमणुचियं' ति वुत्तं तं पि न सुंदरं; जओ—

तित्थयरो[12] चउनाणी सुरमहिओ सिज्झियव्वयधुयम्मि । अणिगूहियबल-विरिओ सव्वत्थामेण उज्ज[म]इ ॥ १ ॥

१ °रद्दो किं प्रतौ ॥ २ इति शुभक्रियावारकवैरिविरुध्यमानशुद्धपरिणामः ॥ ३ सा म° प्रतौ ॥ ४ अनिर्विण्णप्राप्तसामर्थ्यगुणस्य ॥ ५ °हुचर° प्रतौ ॥ ६ 'प्रत्यवप्ष्वष्कमाण.' प्रतिनिवर्त्तमानः ॥ ७ °ज्जमे प्रतौ ॥ ८ शुभभावातिरेकवशसमासादितनि शेषकर्मक्षया ॥ ९ आश्चर्यभूतम् ॥ १० °हाविहम° प्रतौ ॥ ११ °यं पि वु° प्रतौ ॥ १२ गाथेयमावश्यकनिर्युक्तौ ॥

इय जइ ते वि हु निच्छिन्नपायसंसारसायरा वि जिणा। अब्भुज्जमंति ता सेसयाणं को एत्थ नामोहो? ॥ २ ॥

एवं वुत्तो वि पुणरवि पच्चुत्तरमणुसंधंतो ईसिपुव्वाणुसयवसओ उवेहिओ भवदेवसाहुणा। ततो वाढं धम्मकिच्चेसु अथिरीकयमाणसो लोयलज्जाए कुणमाणो वि वेज्जाणुट्ठाणं निराहियसामन्नत्तणेण मरिऊण असुरेसु उववन्नो। भवदेवो वि तदत्थिरीकरणोवेहणसंजणियसम्मद्दंसणकलंको वि कयदुक्करतवविसेससामत्थेण कालं काऊण लंतए कप्पे मज्झिमाऊ देवो जाओ त्ति। तहिं च नाणाविहकीलाहिं वच्चंति से वासरा। वडिया य दढं ईसाणनामधेज्जेण सुरेण सद्धिं मेत्ती। वच्चइ य तेण समं विदेहाइखित्तेसु तित्थयरवंदणत्थं। अह छम्मासससेसाउपत्ते पुच्छिओ अणेण तित्थयरो—भयवं! किमहं सुलहबोही भविस्सामि? न व? त्ति। भयवया भणियं—महाभाग! दुल्लहबोहिलाभो तुमं, न कइवयभवभमणमंतरेण समीहियत्थभागी भविस्ससि त्ति। इमं सोच्चा सोगभरनिब्भराऊरिज्जमाणमाणसो वंदिऊण [गओ] जहागयं।

तत्थ वि य सकम्मकुलिसताडिओ व्व दुन्नयहुयासणसंतप्पंतो दिट्ठो सो ईसाणेण। पुच्छिओ अणेण—भो वरमित्त! किंनिमित्तमित्थं तुज्झ अणुतावो?। तओ सिट्ठं एएण संतावकारणं। ईसाणेण भणियं—महाभाग! जइ एत्तिएण [संतप्पसि] ता मा संतप्पेज्जासि, अहं तुह भवंतरगयस्स तहा काहामि जहा बोहिलाभो हवइ त्ति। पडिवन्नमिममियरेण।

१ °णा को प्रतौ ॥ २ ज्ञानानुष्ठानं निराश्रितश्रामण्यत्वेन ॥ ३ नास्थिरीकरणोपेक्षणजनितसम्यग्दर्शनकलङ्कोऽपि कृतदुष्करतपोविशेषसामर्थ्येन ॥
४ °म्मंदंस° प्रतौ ॥ ५ सम्मं प्रतौ ॥ ६ °लब्बो° प्रतौ ॥ ७ नं प्रतौ ॥ ८ सिट्ठ प्रतौ ॥

कालक्कमेण मओ उववन्नो कोसंबीए वणियसुओ, जोवणमणुपत्तो य पडिबोहिउमारद्धो सामोवक्कमेणं देवेणं न कहिं पि पडिबुज्झइ।

तयणंतरं च हरि-हरिण-भिल्ल-भल्लुंकिनिवहभीमाए। अडवीए पक्खित्तो, सुरेण सो भेसिओ य बहुं ॥ १ ॥
लल्लक्कचक्क-निसियग्गखग्ग-दिप्पंतकुंतपमुहेहिं। भणिओ य तियसमायाए पहरणेहिं रउद्देहिं ॥ २ ॥
मीणउलाउल-परिभमिरमयर-भीमयरलोलकल्लोले। जलहिम्मि य पक्खित्तो निस्संडुं लोहपिंडो व ॥ ३ ॥
छूढो य कढिणदाढाकरालभुयगिंदरुंदमुहकुहरे। उववेसिओ य पजलिरजलणजालाकलावम्मि ॥ ४ ॥
न य तह वि कह वि ईसिं पि तस्स संभवइ धम्मपडिवत्ती। अचंततिक्खदुक्खोह[खोह]खिप्पंतमणसो वि ॥ ५ ॥
तो पडिभग्गो तियसो जहागयं पडिगओ अजोगो त्ति। इयरो वि चिरं भवभाविभीमभयभायणं भूओ ॥ ६ ॥
इय सत्तिसंभवे जाणिऊण धम्मम्मि अथिरं सत्तं। कुज्जा सवपयत्तेण तं थिरं दंमणंगमिमं ॥ ७ ॥ किञ्च—

न हि विचलति चेतः कस्य मोहंव्यपोहात् ?, व्युपरमति [मति]र्वा कस्य नो कष्टकृत्यात् ?।
तदपि वहुतिथोक्तिन्यायदृष्टान्तकल्पं, तमपि जिनमताध्वन्यादरात् सन्दधीत ॥ १ ॥
न्यायवर्त्मनि नियुक्तमानसं संस्करोति कतमो न देहिनम् ?। तद्विकम्पितमपि स्थिरं पुनर्यः करोति स परं विचक्षणः॥२॥

स्थिरीकरणोपदेशः।

१ भल्लुंकी–शिवा ॥ २ भयङ्करचक्रनिशिताग्रखड्गदीप्यत्कुन्तप्रमुखैः ॥ ३ मीनकुलाकुलपरिभ्रमणशीलमकरभीमतरलोलकल्लोले ॥ ४ निराधारम् ॥ ५ क्षिप्तश्च कठिनदंष्ट्राकरालभुजगेन्द्रविस्तृतमुखकुहरे। उपवेशितश्च प्रज्वलनशीलज्वलनज्वालाकलापे ॥ ६ "ह्लाव्य" प्रतौ ॥

आबालगोपालजनेऽपि सिद्धः स्वार्थप्रवृत्तावधिकः प्रयत्नः । कल्याणसिन्धोरिह कस्यचित्तु परार्थमित्थं भवति प्रयासः ॥
यद्यर्हन्नपि निर्मलकेवलल‍ब्ध्यादिनिष्ठितार्थोऽपि । धर्मे स्थिरयति सत्त्वान् तदेह सुधियां किमालस्यम् ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां पञ्चातिचारप्रक्रमे भवदेवराजर्षिकथानकं समाप्तम् ॥ ७ ॥

वात्सल्यगुणे धनसाधुकथानकम् ८ ।

वात्सल्यस्य स्वरूपम्

[1]विहिए वि थिरीकरणे न जं विणा निव्वहंति धम्मगुणा । पाएणं दंसणिणो तमिण्हिं कित्तेमि वच्छल्लं ॥ १ ॥
संघयण-काल-बल-विरियपयरिसाभावओ सुणीयाणं । [3]सेज्जो सज्जोगीण वि विलिज्जई संजमुज्जोगो ॥ २ ॥
किं पुण तक्कालपव्वन्नदिक्ख-[4]आएस-बाल-रोगीण । [5]हीएज्ज न सो सुविसुद्धबुद्धिसामत्थविरहाउ ॥ ३ ॥
ता ताण पाण-भोयण-भेसह-वत्थाइदाणओ कुज्जा । वच्छल्लं सविसेसं [6]विगिट्ठतव-बालयाईसु ॥ ४ ॥
वच्छल्लभावओ च्चिय अथिरा धम्मे थिरत्तणमुवेंति । पुव्वं चेव थिरा पुण थिरतरगा उज्जमंति दढं ॥ ५ ॥
लोए वि साहुवाओ नज्जंति विभिन्नदेस-जाई वि । जिणसासणप्पवन्ना एगकुडुंबोवमं व ॥ ६ ॥
जइ वइरसामिपमुहा साहम्मियवच्छलत्त[7]मकरिंसु । सुस्समणा वि य होउं ता सेसा किमिह सीयंति ? ॥ ७ ॥
तेणेव [8]ऊसवाइसु [9]सरणं दिट्ठाण पुव्वमालवणं । परिभूयाणं ताणं दुत्थावत्थाण पडियरणं ॥ ८ ॥

१ विहीए प्रतौ ॥ २ °णिंह केत्ते° प्रतौ ॥ ३ सद्यः ॥ ४ आदेशाः—अतिथयः ॥ ५ हीयेत ॥ ६ मनुःप्रमुखभक्तार्थकारी विकृष्टतपा उच्यते ॥ ७ °म ज्ञं प्रतौ ॥ ८ अक्षतुः ॥ ९ 'सरणं' समवसरणम्, जिनकल्याणकादिप्रसङ्गेषु गमनमेलापक इत्यर्थः ॥

सीयंताणं च सुविर्त्तिजुंजणं चोयणं पमाईणं । साहम्मियाण धन्ना कुणंति वच्छल्लबुद्धीए ॥ ९ ॥
सुहि-सयणमाइयाणं उवयरणं भवपबंधवुड्ढिकरं । जिणधम्मपवन्नाणं तं चिय भवभंगमुवणेइ ॥ १० ॥
आसंसाविरहाओ संसारियभावविगमओ चेव । वच्छल्लममोल्लं कित्तयंति साहम्मिलोयम्मि ॥ ११ ॥
इय जो सभूमिगाए समुचियमायरइ सुद्धबुद्धीए । सो पत्तबोहिलाभो धणो व निव्वुइसुहं लहइ ॥ १२ ॥ तथाहि—

अत्थि कुबेरपुराइरेगरिद्धिवित्थारचिरायंतमंदिरमालालंकिया, सच्च-सोय-दया-दक्खिन्नपमुहपहाणगुणाणुगयपवरपुरिससंमद्दासिया, सीयामुत्ति व्व अच्चुयसाहापरिगया, गयाणणगंडमंडलि व्व अणवरयपयट्टदाणवरिसा, वरिससयवएण वि अणिड्डियभूरिकोसा कोसंबी नाम नयरी । तत्थ य वत्थव्वो विसाहदत्तो नाम सेट्ठी विसिट्ठजणसम्मएण ववहारेणं वट्टंतो कालं वोलेइ । कालंतरेण य तहाविहचिरभवावज्जियसुकयविवज्जयवसेण सणियसणियं ज्झीणो रिद्धिसमुदओ । जाया से चिंता—किमियाणिं जुत्तं ? सव्वहा दव्वविवज्जियस्स हि गिहिणो न देव-गुरुपूयणं, न बंधुजणसम्माणणं, न गुणज्जणं, न अन्नो को वि पुरिसत्थो संभवइ, ता तदज्जणं काउं जुज्जइ ।—त्ति कत्तो वि किं पि समज्जिऊण कुडुंबसुत्थयं काऊण किं पि भंडं घेत्तूण

१ 'त्तिजंज' प्रतौ । 'गुणत्तियोजनं' सद्व्यापारे योजनम् ॥ २ सुहृत्स्वजनादीनाम् ॥ ३ °यंतिमं° प्रतौ ॥ ४ समध्यासिता—युक्ता ॥ ५ यथा सीतामूर्तिः अच्युतस्य–रामस्य शाखाभिः—स्तुतिभिः परिगता—युक्ता तत्परायणा इति भावः, एवं नगर्यपि अच्युताभिः—निरन्तराभिः शाखाभिः—आकृतिभिः व्याप्ता ॥ ६ गजाननगण्डमण्डली अनवरतं प्रवृत्ता दानवर्षा—मदजलवर्षा यत्रैवम्भूता, नगरी तु दानं—त्यागः तद्वर्षा ॥ ७ °लि ज्ज अ° प्रतौ ॥ ८ 'णिड्डिय' प्रतौ । अनिष्ठितभूरिकोशा ॥ ९ नाम प्रतौ ॥ १० क्षीणः ॥ ११ कुडुंबत्थु° प्रतौ ॥

धर्मात्मनां भोजनसमये चिन्तनम्

पट्ठिओ वइरागरं[1] । गओ कइवयजोयणाणि, आवासिओ पच्चंतगामे, जाओ भोयणसमओ, समारद्धो भोयणोवक्कमो, 'भोयणपत्थावो' त्ति सुमरिया देव-गुरुणो, वेरग्गोवगओ चिंतिउं पवत्तो—

न यत्र जिनमन्दिरं न च जिनेश्वरस्यार्चना, न दुष्कर[2]तपःक्रियाकृतधियोऽधिकं साधवः ।
न चापि गुणवत्तराः[3] शुचिधियश्च साधर्मिकाः, न चाऽऽगमवचः क्वचिच्छ्रुतिपथं समागच्छति ॥ १ ॥
विवेकविकलं मनो मम कथं विरुद्धस्पृहं, विहर्तुमभिवाञ्छति च्युतगुणं च तत्राप्यदः ? ।
य ईदृशविपर्ययव्यतिकरेण चित्तागमः, पदं स विपदामहं महदिति स्फुटं तर्कये ॥ २ ॥
अहो ! महामोहविजृम्भितानां विरुद्धसन्धानविधौ प्रयत्नः । विदन्नपीदं यदयुक्तमित्थं तथापि न त्यक्तुमहं समीहे ॥ ३ ॥
इति विसदृशसामग्री मन्येऽहं दर्शनेऽपि सन्देहम् । आधास्यतीव पापा हा धिग् ! विषमो दशापाकः ॥ ४ ॥

एवं च सकायवेण परं संतावमुवहंतो सहाइजणोवरोहेण भोत्तूण सुत्थो तत्थेव । मज्झरत्तसमए य निब्भरपसुत्तस्स सव[स्स]मादाय पलाणा सहाइणो । पच्चूस[4]सिसिरमारुयकयकाउक्कंपो य पबुद्धो जाव पासदेससालोएइ ताव न किं पि पासइ । 'कहं मुसिऊणं ममं पणट्ठा दुचेट्ठा सहाइणो ? अहो ! विवरम्मुहो[5] विही, अहो ! पडिकूला कम्मपरिणई, फलियं च कहमकालपरिहीणमेव ववसाय[6]पावपायवेण ? न सव्वहा दइवबलवियलेण वि पुरिसयारेण किं पि सिज्झइ, केवलं काय-

१ वज्राकरो देशविशेषः ॥ २ दुःकर° प्रतौ ॥ ३ °रा सुचिधि° प्रतौ ॥ ४ प्रत्यूषशिशिरमारुतकृतकायोत्कम्पश्च ॥ ५ विशेषेण पराङ्मुखः ॥ ६ व्यवसायपापपादपेन ॥

किलेसफलो चेव जायइ सव्वो उवक्कमो, ता किं नियत्तामि घराभिमुहं? एत्थेव वा चिट्ठामि कइवयदिणाणि? अहवा न जुत्तमेयं, अक्खंडियपुरिसयारा चेव पुरिसाण पवित्ती, होउ किं पि, पारद्धकरणमेवोचियं' ति निच्छिऊण अच्छिन्नपयाणएहिं गतो वइरागरं। समारद्धो इयरलोएण व तेणा वि वइरागरक्खणणेण विही। पाउणइ य तेत्तियं जेत्तिएण भोयणमेत्तं संपडइ। एवं पि वेद्धारई। वच्चंति वासरा।

जाया य एक्केविज्ञावियक्खणेण दिवायराभिहाणेण जोगिणा समं से गोट्ठी। दाण-सम्माण-वयणविन्नासाइणा य दूसमागरिसियं जोगिणा तस्स हिययं। अवरावसरे य सायरं भणियमणेण—भो विसाहदत्त! गरुओ एस कायकिलेसो, जमेयं पइदिणं किलिट्ठकट्ठकप्पणाए पाणवित्ती, सव्वहा चयसु एयं, अत्थि मह सुगुरुपाउयापूयणपसाएण धरणीकप्पपरिन्नाणं, तव्वसेण य सुणियं मए—एत्तो ठाणाओ पुव्वदिसिभाए तिकोसमेत्तं चंडियाययणपुरओ पंचकोडिदीणारपहाणं महानिहाणं, तं च तुम्हारिसे जइ उवजुज्जइ ता जुत्तं हवइ त्ति। विसाहदत्तेण भणियं—किं पुण एत्तियकालं एयस्स अग्गहणं। दिवायरेण जंपियं—सुट्ठु पुच्छियं, सुणसु एत्थ कारणं—

अहं हि गंगासरिपरिसरे सरवणसन्निवेसे जलणवंभणसुतो आसि। संपत्तजोव्वणो य तहाविहवसणवसेणाऽऽवासा नीयम्मि पिउणो घरसारे मनिकारं नीसारिओ हं कुद्धेण पिउणा। जहिच्छचारेण परियडंतो य पत्तो सिरिपव्वयं। दिट्ठो य तत्थ गुविलगुहाविवरमज्झमज्झासीणो ज्झाणकोट्ठोवगतो निप्फंदलोयणो निरुद्धसव्ववावारो एगो महामुणी। पणतो मए

१ पर्यटति ॥ २ °न्यविद्याविचक्षणेन ॥ ३ गङ्गासरित्परिसरे ॥ ४ °ल्पणे य प्रतौ ॥ ५ मध्यं अध्यासीनः ॥

सव्वायरेण । तम्मुहकमलावलोयणविणिउत्तलोयणो ठिओ तदंतिए । खणंतरे य ईसिविप्फारियचक्खुणा संभासिओ हं तेण— वच्छ ! कत्तो आगओ सि ? त्ति । सविणयं सिट्ठो य मए निययवुत्तंतो । तमायन्निय भणियमणेण—

उस्सिंखलखलणं पिव एक्कं पि हु इंदियं हवइ जस्स । सो गंजणं जणाओ पावइ पुणु पावयसमो वि ॥ १ ॥
किं पुण सव्वाणि वि सव्वहेव सैसविसयसंगसज्जाणि । न करेज्ज ताण सज्जो लैल्लक्कं आवयाचक्कं ? ॥ २ ॥
विक्कंता विउणो वि य पसिद्धिपत्ता वि गरुयसत्ता वि । दुद्दंतिंदियनिहया निहणमणंता गया सत्ता ॥ ३ ॥
कुप्पंति परम्मि परं पडिकूलकरम्मि न उण थेवं पि । पइसमयभूरिदुव्विलसियागमे इंदियग्गामे ॥ ४ ॥
ता परमत्थेण न को वि कस्सई वइरिओ सुंही वा वि । अप्पा असंवुडो संवुडो य सत्तू ग मित्तो य ॥ ५ ॥
इय पैसमसार-मिय-महुरजंपिरे तम्मि मुणिवरे मज्झ । भववासाओ विमुहा दूरं जाया मई ज्झत्ति ॥ ६ ॥

तओ पवन्नो हं तस्स समीवे सीसत्तणं, गयाणि कइवयवरिसाणि, दूरसावज्जियं विणयकम्मणा से हियंयं, जाओ य मे पसायाभिमुहबुद्धी । अन्नदिणे य दिन्नो अणेण खन्नविज्जाउवएसो, नवरं भणितो हं—सयं इमं न भोत्तवं, परस्स वि अहम्मस्स न उवजुंजणिज्जं, अन्नहा अँधन्नविज्जा [वि] विँणस्सिहि त्ति। 'तह' त्ति पडिस्सुयमेयं । कालक्कमेण मओ एसो । अहं पि तप्पायसुमरणं कुणंतो ठिओ एत्तियकालं । संपयं च तुह अंसरिसगुणपब्भारतरलिएण उवयाराणुरूवट्ठाणवद्धाणुसएण इमं निहाणस-

१ इवार्थकमव्ययम् ॥ २ स्वस्वविषयसङ्गसज्जानि ॥ ३ भीमम् ॥ ४ सुहृद् वाऽपि । आत्मा असंवृतः संवृतश्च ॥ ५ प्रशमसार-मित-मधुर-जल्पनशीले ॥ ६ अवन्न' प्रतौ ॥ ७ 'विपत्स्यते' विनंक्ष्यति ॥ ८ असदृशगुणप्राग्भारतरलितेन उपकारानुरूपस्थानबद्धानुशयेन ॥

रूवं निवेइयं ति। ता भद्द ! कारण[मु]त्तमिमं जं तुमए पुव्वं पुट्ठं ति।

तओ दूरविगयविगप्पजालेण भणियं विसाहदत्तेण—भयवं ! जुत्तमिमं, कुणसु इयाणि ममाणुग्गह-न्ति। ततो निहाणपूयापमुहकायव्ववित्थरो सिट्ठो जोगिणा। तेणावि अविमंसियतच्चित्तवित्तिणा पगुणीकओ, न विभावियं थेवं पि लोभदुव्विलसियमिमं, जहा—

लोभस्वरूपम्

ताव च्चिय किच्चा-ऽकिच्चचिंतणा माणसम्मि संभवइ। कज्जपरिच्छेयखमा ताव च्चिय विप्फुरइ बुद्धी ॥ १ ॥

जाव ऽज्ज वि वज्जनिवायदारुणो दूरदरिसियदुरंतो। उत्थरइ नेय लोहो विहुणियसोहो महाजोहो ॥ २ ॥

एवं च विसाहदत्तो सेस[व]ड्डियावयावडणो निहाणुक्खणणसमग्गपूयाविहाणसमेओ पट्ठिओ समुवइट्ठनिसिसमए समं जोगिणा। पत्तो चंडियाययणसमीवे। भणिओ य समीवपत्तमणोवंछियसिद्धिणा जोगिणा—भद्द ! कच्चायणीपसायणमुहा सेधसंपत्तीतो, ता वच्च तुमं, पूएसु भगवइं, जाव अहं एयदुवारदेसे च्चिय मंडलगपूयणाइणा अणंतरकिच्चकरणाय सज्जो भवामि त्ति। 'अणुचियमिमं सव्वन्नुधम्मपवन्नाणं' ति विभाविय भणियं विसाहदत्तेणं—भो जोगसत्थवियक्खण ! अट्ठारसदोसवज्जियं भयवंतं निरंजणं जिणं मोत्तूण सुमिणे वि न अन्नउत्थियाणं देवयाणं वंदण-पूयणाइ कप्पइ काउं ममं, ता जइ कच्चायणीपूयाकिच्चसज्झो एयलाभो ता पडउ वज्जासणी लाभस्स, अलं आयासेणं, वच्चामो सट्ठाणं, किमिह बहुभणिएण, जीवियचागे

१ अविमृष्टतच्चित्तवृत्तिना ॥ २ विधुनितशोभः विधुनितसौख्यो वेत्यर्थः ॥ ३ समुपस्थितापदापतनः ॥ ४ °खुस्स° प्रतौ ॥ ५ सर्वसम्पत्तयः ॥ ६ °णुच्चिय° प्रतौ ॥

वि न जिण-साहुणो मोत्तूण अन्नं पूएमि वंदामि वा । किञ्च—

खरतरसमीरताडियताडीदललग्गसलिलविंदुचलं । जीवियमथिरप्पहरेहविब्भमं देहसोहं पि ॥ १ ॥

सरयब्भविब्भमं जोव्वणं पि दुग्गयपईवपडितुल्लं । पियजणसंजोगं संपयं पि तरुणीकडक्खचलं ॥ २ ॥

सेसं पि थोयवासरथिरं ति मुणिऊण चिरपरिग्गहियं । हियमप्पणो पइन्नं कयमेयमहं विलोएमि ॥ ३ ॥

सकुलक्कमो वि मुंचइ धम्मविरुद्धं पि कीरइ अवस्सं । जइ होज्ज जीवियव्वाइयं थिरं सव्वकालं पि ॥ ४ ॥

एवं च सव्वं पयंपंतो निसामिओ तद्देसपसुत्तेण अइगरुयासायणावसोवलद्धलिंगपारंचियपायच्छित्तेण एत्तो च्चिय अवत्तवेस-लिंगधारिणा अतुच्छं पच्छायावमुवहंतेण पच्छाकडेणं धणाभिहाणेणं । चिंतियं च तेण—अहो ! कस्सइ महाणुभावस्स सम्मत्तनिच्चलत्तणं, अहो ! गाढावइनिवडियस्स वि दढधम्मया, अहो ! अभिन्नसरो वयणविन्नासो, किमिह भन्नए ? वयंमिह चिरचरियचरणा वि होऊण सगुणट्ठाणाउ एवं नाम निवडिया, एस पुण महाणुभावो गिहत्थो वि अच्चत्थं दुत्थावत्थावडिओ वि एवं पयंपइ त्ति ।

एत्थंतरे कोवारुणीकयनयणेण कयंतजीहादीहं खग्गधेणुमायड्ढिऊण भणियं जोगिणा—रे रे दुरायार ! असारजंपिर ! परमत्थमुत्त ! निव्विन्नो व जीवियव्वस्स समुल्लवसि, जइ रे ! तुममेवंविहधम्मनिच्चलो ता कीस बहलतमपडलसामले अणेग-

१ °मथिर° प्रतौ । अस्थिरपथरेखाविभ्रमं देहसौख्यम्, -विभ्रमां देहशोभां वा ॥ २ शारदाभ्रविभ्रमम् ॥ ३ सम्पदम् ॥ ४ °क्खं च° प्रतौ ॥ ५ प्रतिज्ञाम् ॥ ६ °यमहिचि° प्रतौ ॥ ७ जीययव्व° प्रतौ ॥ ८ रे ! तुममेवं° प्रतौ ॥

पच्चवायाउले विभावरीमज्झे मुहा परिस्समभायणं कया अम्हे ?, तमिमं सुहपसुत्तकेसरिकिसोरतलप्पहारप्पयाणमिव मरणपज्ज-वसाणं तुज्झाणुट्ठियं, अओ सुमरसु इट्ठदेवयं, सुदिट्ठं च कुणसु जीवलोयं, सो एस कीणासवयणप्पवेससमओ त्ति । इमं च अयंडपडियजमदंडड्डामरमायन्निऊण भणियं विसाहदत्तेण—

अइलालियं पि अइपालियं पि कयविविहभूरिरक्खं पि । तियसेहिं पि न तीरइ पुन्नावहि जीवियं जंतं ॥ १ ॥

अप्पडिपुन्नावहि नासिउं च नो तीरई तयं कह वि । एवं ठिए य किं भूरि भद्द ! विहलं समुव्वससि ? ॥ २ ॥ तथा—

अक्खंडियसपइन्नं अविगंजियनियकुलक्कमायारं । मरणं पि हु परमब्भुदयनिविसेसं अहं मन्ने ॥ ३ ॥

सरियव्वं पि हु चिरमेव सुमरिमो वीयरायपयपउमं । एत्तियमेत्ते य मणोविनिच्छए होउ जं किं पि ॥ ४ ॥

इय जाव सो पयंपइ ता चिरदिन्नोवजाइयनिमित्तं । कच्चायणीए पुरओ तं हंतुमुवट्ठिओ जोगी ॥ ५ ॥

एत्थंतरम्मि गरुयकरुणापूरपूरिज्जमाणमाणसेण परमविज्जाबलदुद्धरिसेण साहम्मियवच्छल्लसंतविरिएण सिग्घमुवसप्पिऊण भणिओ सो धणेण—रे जोगियाहम ! को एस अणज्ज[कज्ज]करणुक्करिसपरमो पोरिसारंभो ? किं एयं पि न मुणसि ?—माण-समल्लीणे परमेसरे सरणेक्कसुंदरे जिणवरे न कयाइ एवंविहखुद्दोवद्दवा ईसिं पि विहविउं पारिंति, ता रे असच्चसंध ! कवडेण इमं महाणुभावं निहणमुवणिंतो अप्पाणं सुरक्खियं करेज्जासि ।—त्ति उग्गीरियासिपुत्तिओ चेव थंभिओ से भुओ, विचलीकयं

१ अपाण्डपतितयमदण्डभयङ्करमाकर्ण्य ॥ २ पूर्णावधि जीवितं 'यात्' गच्छत् ॥ ३ 'तत्' जीवितम् ॥ ४ 'परमाभ्युदयनिर्विशेषं' महाभ्युदयसमानम् ॥ ५ एतावन्मात्रे मनोविनिश्चये ॥ ६ चिरदत्तोपयाचितनिमित्तम् ॥ ७ °हवग्गा प्रतौ ॥

सरीरं विज्जाबलेणं । संभासिओ विसाहदत्तो, पुच्छिओ य—भद्द ! किमेवंविहदुरायारसंसग्गेण मरणपज्जवसाणेण ? । विसाहदत्तेण भणियं—भो परमबंधव ! वित्तिवुच्छेयपभवो लोभो एत्थावरज्झइ ।–त्ति सिट्ठो अणेण निहाणवुत्तंतो ।

तदसच्चयापच्चयकरणत्थं भणिओ धणेण दिवायरो—भो ! किं तए इमं आरंभियमासि ? त्ति । जोगिणा वि तम्माहप्पमणप्पमवगच्छिऊण भणियं—सुणसु भयवं !, मए चिरदिन्ननरोवजाइयसंपाडणत्थं कच्चायणीए पुरओ णिहाणकवडेणेह आणिओ एस मुद्धवणिओ हणिउमारद्धो य, सेसं तुज्झं पि पच्चक्खं, खमहमिण्हि अवराहं, अहं पि तुम्हाण अणुकंपणिज्जो, पसीयह सव्वहा, विसज्जह सट्ठाणगमणत्थं ति । 'मा भुज्जो एवं जीववहं करेज्जासि' त्ति विसज्जितो गतो सं ट्ठाणं ।

पुट्ठो धणेण विसाहदत्तो—भो ! कत्तो आगमणं ? कहिं वा गंतव्वं ? कत्तो वा जिणधम्मसंपत्ती ? । विसाहदत्तेण भणियं—धम्मसंपत्ती सायरचंदसूरिसयासाओ, आगमणं च कोसंबीपुरीओ, गंतव्वं तु संपइ न कहिं पि, इहेव निव्वाहनिमित्तं कइवयवइररयणऽज्जणकए वाससंभवाओ । धणेण भणियं—भद्द ! जाणासि किं पि वइररयणगुण-दोसं जेण तग्गहणमभिलससि ? त्ति । विसाहदत्तेण भणियं—पसायं काऊण साहेह तस्सरूवं ति । धणेण जंपियं—निरुव्विग्गो निसामेसु—

सुस्वच्छं लघु वर्णतश्च गुणवत् पार्श्वेषु सम्यक् समं, रेखा-बिन्दु-कलङ्क-काकपदक-त्रासादिभिर्वर्जितम् ।
लोकेऽस्मिन् परमाणुमात्रमपि यद् वज्रं क्वचिज्जायते, तस्मिन् देवसमाश्रयो ह्यवितथस्तीक्ष्णाग्रधारं यदि ॥ १ ॥

१ मं भीसिओ प्रतौ ॥ २ अत्र अपराध्यति ॥ ३ °ट्ठाणं गमणच्छं ति प्रतौ ॥ ४ स्वं स्थानम् ॥ ५ °यरंचंद° प्रतौ ॥ ६–७ °इयररय° प्रतौ ॥ ८ वज्जंत° प्रतौ ॥ ९ °काकुप° प्रतौ ॥ १० °ताम् प्रतौ ॥ ११ °धार य° प्रतौ ॥

रत्नलक्ष-
णानि

एकमपि य[त्र] शृङ्गं विचटितमवलोक्यते विशीर्णं वा । गुणवदपि तन्न धार्यं वज्रं श्रेयोऽर्थिभिर्भवने ॥ २ ॥

यच्चैकदेशे[ऽ]क्षतजातभासं यद्वा भवेल्लोहितविन्दुचित्रम् । न तन्न कुर्याद् ध्रियमाणमाशु स्वच्छन्दमृत्योरपि जीवितान्तम् ॥३॥

पट्कोटिशुद्धममलं स्फुटतीक्ष्णधारं, वर्णान्वितं [च] लघुपार्श्वमपेतदोषम् ।
इन्द्रायुधांशुविसृतिच्छुरितान्तरिक्षं, एवंविधं भुवि भवेत् सुलभं न वज्रम् ॥ ४ ॥

व्याल-वह्नि-विष-व्याधि-तस्करा-ऽम्बुभयानि च । दूरात् तस्य निवर्तन्ते स्फुटकर्माण्यर्थदानि (?) च ॥ ५ ॥

यदि वज्रमपेतसर्वदोषं बिभृयाद् विंशतितन्दुला गुरुत्वम् । मणिशास्त्रविदो वदन्ति तस्य द्विगुणं रूपकलक्षमग्रमूल्यम् ॥६॥

एवं च वइररयणसरूवमवधारिऊण उइए सूरमंडले दिंट्ठतविसरिसायारेण पायवडिएण विसाहदत्तेण भणियं—अहो महाणुभाव ! सव्वहा न कुप्पियव्वं, 'परमोवयारि' त्ति पुच्छिउं किं पि अहिलसइ मम मणो । धणेण भणियं—वीसत्थो पुच्छसि त्ति । विसाहदत्तेण भणियं—पसायं काऊण ता साहेसु, कहं सुसमणाणुरूवं सरीरसंठाणं ? कहं वा रयहरण-पग्गहोवहिविरहिओ वेसो ? त्ति । धणेण जंपियं—सुट्ठु, अहं हि धणो नाम साहू अणुचियवयणवसावज्जियजिणसासणासायणादोसो गुरुविइन्नएवंविहपायच्छित्तो एवं वट्टामि त्ति । एवं सोच्चा विम्हिओ विसाहदत्तो चिंतेइ—अहो ! कहं रयणा[य]रस्स वि वेलालंघणं ? सरयरविणो वि तमोनियारपरामरिसो ? जमेवंविहसुसाहुरयणाणि वि होऊण एवंरूववयणिज्जक-

१ °टस्तीक्ष्ण° प्रतौ ॥ २ वर्णान्वि° प्रतौ ॥ ३ व्याधेत° प्रतौ ॥ ४ °र्मान्यर्थ° प्रतौ ॥ ५ °रूवंम° प्रतौ ॥ ६ दृष्टतद्विसदृशाकारेण ॥ ७ °ओ विसो प्रतौ ॥ ८ अहं कहं प्रतौ ॥

लंकमावज्जंति, को वा पडिमल्लो कम्मविलसियाणं ? । इइ चिंतावयमाणे य भणियमणेणं—भद्द जोग्गयाणुरूवं देह किं पि आएसं ति । धणेण जंपियं—भद्द ! उवयाराणुरूवे धम्मट्ठाणे सुट्ठु वट्टेज्जासि त्ति । 'तह' त्ति पडिवज्जिऊण गओ विसाहदत्तो जहागयं, पारद्धो पुव्वड्डिईए खणिउं वइरागरं ।

धणो वि चिन्नपायच्छित्ततवोविसेसो पुणो पवन्नो गुरुसमीवे सामन्नं । विसाहदत्तो वि तहाविहरायमुल्लमियलाभंतराय-कम्मखओवसमवसमासाइयपुव्वुत्तगुणजुत्तवइरयणदुगो गओ नयरं । तव्विक्कएण पावियं भूरि दव्वजायं । पयट्टो य अपुव्वजिणभवण-बिंबपइट्ठा-विसिट्ठतित्थ-तित्थयरपूयाइएसु तं निजुंजिउं ।

अन्नया य सो धणसाहू बहुमुणिजणपरिवुडो विहरंतो संपत्तो तं पुरं । वंदणत्थमागओ पुरजणो । कया साहुणा धम्मदेसणा । पडिबुद्धो बहू जणो । विसाहदत्तो वि मुणिं पच्चभिजाणिऊण जायपरमहरिसुल्लसिओ मायरकयपयपणामो विन्नविउं पवत्तो—

भयवं ! किं नु वियाणह ? सो एस जणो कयंतव[य]णातो । तुब्भेहि रक्खिओ जो कारुन्नपवन्नचित्तेहिं ॥ १ ॥
जिणधम्मवणि त्ति जणे तह वच्छल्लं तए कुणंतेणं । अप्पा न किंतु अहमवि भवकूवाओ समुद्धरिओ ॥ २ ॥
कह व न दिप्पइ पयडं पडिहयपरतित्थिहत्थिविक्कमणं । सामण्णमेयं जम्मिं तुह सरिसा हुंति मुणिसीहा ? ॥ ३ ॥
जइ कह वि तम्मि काले न तुमं हुंतो सि जीवरक्खकरो । ता अट्टज्झाणमओ कं कुगइं नेव वच्चंतो ? ॥ ४ ॥

१ °समंवसमसमसा° प्रतौ ॥ २ °रिसगुरु° प्रतौ ॥ ३ न प्रतौ ॥ ४ जिनधर्मवणिग् ॥ ५ प्रतिहतपरतीर्थिहस्तिविक्रमणम् ॥

मन्ने तमज्ज सुदिणं सो च्चिय समओ इमो सुहाण करो। जम्मि जियकप्परुक्खं तुह पयपंकयपयं दिट्ठं ॥ ५ ॥
काऊण मइ पसायं संपइ आदिससु जं करेमि अहं। मह पुन्नपगरिसेणं तुम्हाऽऽगमणं धुवं जायं ॥ ६ ॥
मुणिणा भणियं भद्दय! किमन्नमिह तुह कहेमि? भववासे। जिणधम्माओ ण परं मणवंछियकारणं परमं ॥ ७ ॥
ता तम्मि उत्तरोत्तरसुहकिचाराहणेण पइदियहं। निच्चं चेव पयत्तो जुत्तो सुविवित्तचित्ताणं ॥ ८ ॥
पडिवन्नछंदं पि हु एवमेव तुमए महं कयं होइ। जइ सव्वसंगचागेण निब्भरं भयसि जिणधम्मं ॥ ९ ॥
'इच्छामो अणुसट्ठिं' ति भालवट्टम्मि ठवियकरकमलो। पडिवन्नसाहुवयणो, विसाहदत्तो गओ सगिहं ॥ १० ॥

ततो वाहरिऊण सकुडुंबं सिट्ठो चिरकालिओ सयलवुत्तंतो, मुणिदिन्नाएसपाउब्भूओ संजमाभिलासो य। तओ भाविविओगदुक्खभरुब्भवंतवाहपक्खालियाणणं कुडुंबं भणिउं पवत्तं—भो देवाणुप्पिय! वाढं विप्पियमिमं सोउं पि, किमंग! अणुमंतुं? को वा तुमाहिंतो त्ति ताणं चक्खू वा अम्हाणं? ति।

विसाहदत्तेण भणियं—किमेवं निविवेयाणुरूवमुल्लवह? किं न मुणह मह संपइ पच्चासन्नं गम्मं मच्चुं? सव्वसरीरलद्धावगासा जरा, नियनियविसयगहणपडिभग्गो इंदियग्गामो; एवंठिए य भूरिवइरिपलायमाणस्स व निरुंभणं, जलण-

१ पयपयपंकयं पयं प्रतौ। पदपङ्कजपदम् ॥ २ कृत्वा मयि प्रमादम् कृत्वाऽतिप्रसादमिति वा ॥ ३ अह प्रतौ। मम पुण्यप्रकर्षेण महापुण्यप्रकर्षेणेति वा ॥ ४ ओ वि प° प्रतौ ॥ ५ °कुटुंबं प्रतौ ॥ ६ भाविवियोगदुःखभरोद्भवद्बाष्पप्रक्षालिताननम् ॥ ७ °णुमंतं प्रतौ ॥ ८ समं म° प्रतौ ॥ ९ °विसाय° प्रतौ ॥

जालावलीपरिगयभवणविणिक्खमंतस्स व अंतो' चिय निजंतणं, सव्वहा अजुत्तं पारद्धवेरग्गुपयडूस्स मह पडिक्खलणं; न य एवंकए वि तुम्ह किं पि निस्सेयसं ठाणमवगच्छामि, धम्मविग्घसंपाडणेण केवलं अहम्मकम्ममेव; ता पडिवज्जह मह वयणं, विणयह अप्पाणं, पच्छा वि भावी एस विओगदुक्खपब्भारो', जइ अवस्सं तब्भीरुणो भवंतो ता पवज्जह सममेव पैवज्जं । किमि[मि]णा मुहमेत्तरसिएण पज्जंतदिन्नदारुणदुहनिवहेण गिहवासेणं ? ति ।

इमं सोच्चा पहिट्ठं कुडुंबं 'एवं करेमो, सम्ममाइट्ठं' ति उववूहिऊण तव्वयणं समं विसाहदत्तेण साहुणो समीवे सव्वविरइं घेत्तूण सुगइभायणं जाय-न्ति ॥

वच्छल्लाओ एवं विसाहदत्तो परं गुणं पत्तो । तत्तो य तक्कुडुंबं वच्छल्लं केण पंडतुल्लं ? ॥ १ ॥

साहू वि धणो संजमधणस्स किच्चिरस सुगइलाभस्स । खाइयसम्मत्तस्स वि परमं पयविं समारूढो ॥२॥ अपि च—

क्लेशांशमात्रविहतोऽपि शरीरिवर्गो, मार्गं समुत्सृजति विघ्नमभ्युपैति ।
तस्माच्चिराचरितदान-तपोविधान-ध्याना-ऽऽगमस्मृतिफलेन विमुच्यतेऽसौ ॥ १ ॥

१ °तो जिय प्रतौ ॥ २ °वन्नुप° प्रतौ ॥ ३ °लनं प्रतौ ॥ ४ °रो । तइ अवस्सं नभीरु° प्रतौ ॥ ५ 'तद्भीरवः' वियोगदुःखभीरवः ॥ ६ पव्वज्ज° प्रतौ ॥ ७ पवज्जं प्रतौ ॥ ८ मुहुमे° प्रतौ ॥ ९. °च्छइयं केण इय तुल्लं प्रतौ ॥ १० 'प्रतितुल्यं' समानम् ॥ ११ °शरीरव° प्रतौ ॥ १२ °मुच्छृज° प्रतौ ॥

वात्सल्यविधानोपदेशः

मुक्तश्च तेन बहुशो जनना-ऽऽधि-मृत्यु-रङ्गत्तरङ्गभववारिधिमध्यवर्ती ।
विस्रस्तपोत इव तिष्ठति भूरिकालं, मिथ्याविकल्पजलजन्तुवितुद्यमानः ॥ २ ॥
यस्तं विपत्तिपतितं च कृपापरीतः, साधर्म्यवत्सलधियैव परं प्रशास्ति ।
तस्मात् समस्तु कतमः परमोपकारी ? त्राताऽथवा ? समभिवाञ्छितदायको वा ? ॥ ३ ॥
सद्धर्मवारि वात्सल्यमेवमुपलभ्य सत्फलनिदानम् । को नाऽऽद्रियेत कल्याणकोशकामो महासत्त्वः ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सम्यक्त्वचिन्तायां सप्तमातिचारे धनकथानकं समाप्तम् ॥ ८ ॥

पुव्वुत्तगुणं पि हु दंसणं इमं मोक्खसोक्खमुवणेइ । सम्मं पभावणाए ता तीए सरूवमेक्खेमि ॥ १ ॥
कौले किलिस्समाणे उस्सिखलखलखलीकए मग्गे । हीएज्ज धम्मवंछा तित्थस्स पभावणाए विणा ॥ २ ॥
करणक्खमा य तीसे देवा ते पुण पमोयणो पायं । अन्नेसि सत्तिविरहा इअ अइसइपभिइणो नेया ॥ ३ ॥

प्रभावनायाः स्वरूपम्

---

१ यस्त्वं वि° प्रतौ ॥ २ कृपावान् ॥ ३ °धर्म्येच° प्रतौ ॥ ४ 'आख्यामि' कथयामि ॥ ५ काले क्रियमाणे उच्छृङ्खलखलखलीकृते मार्गे ॥ ६ °माणा उ° प्रतौ ॥ ७ °णरामा° प्रतौ ॥ ८ 'तस्याः' प्रभावनायाः ॥ ९ प्रमादिनः ॥ १० सत्तिविरहाइअसइसइप° प्रतौ । शक्तिविरहादिति । प्रभावकाश्च अतिशयिप्रभृतयोऽनन्तरमेव वक्ष्यमाणाः ज्ञेयाः ॥

अईसेसि इड्ढि धम्मकहि वाइ आयरिय खमग नेमित्ती । विज्जा राया-गणसम्मया य तित्थं पभावेंति ॥ ४ ॥
अन्ने वि विगिंट्ठतवोविसेससुइसील-निम्मलायारा । बिंति सुभद्दापमुहा तित्थस्स पभावगा पहुणो ॥ ५ ॥
सावज्ज-ऽणवज्जविभागभावणं पि हु इहं न जंपंति । सचरित्त-ऽचरित्तीणं जमिमं सव्वेसिं किच्चं ति ॥ ६ ॥
तेणेव सिंगणाइयकज्जे चुन्नेज्ज चक्कवट्टिं पि । साहू लद्धिवलेणं तदकरणेऽणंतसंसारी ॥ ७ ॥ किं बहुणा ?—
साहूण चेइयाण य पंडिणीयं तह अवन्नवाइं च । जिणपवयणस्स अहियं सव्वत्थामेण वारेज्जा ॥ ८ ॥
निसुणिज्जइ विण्हुकुमारसाहुणा साहुसंघपंडिणीओ । नमुई खित्तो चलचलणकोडिणा लवणजलहितडे ॥ ९ ॥
भूरिगुणसिद्धिहेउं लहुदोससमुब्भवो विऽणुन्नाओ । अहिदट्ठंगुलिछेओ जह कीरइ जीवियव्वकए ॥ १० ॥
ता राग-दोसरहिओ जो जिणसासणपभावणं कुणइ । तित्थयरनामगोयं सो बंधइ नूण अयलो व्व ॥ ११ ॥
तथाहि—अत्थि आगरो व्व पुरिसरयणाणं, भूमि व्व सयलविज्जाठाणाणं, निलउ व्व लच्छीए, उप्पत्तिभूमि व्व अच्छेरयाणं,

१ गाथेयं निशीथभाष्ये ३३तमी । अतिशेषी ऋद्धिमान् धर्मकथी वादी आचार्यः क्षपकः नैमित्तिकः । विद्यासिद्धः राजगणसम्मताश्च तीर्थं प्रभावयन्ति ॥ २ अन्येऽपि विकृष्टतपोविशेषशुचिशीलनिर्मलाचाराः । उच्यन्ते सुभद्राप्रमुखाः प्रभोस्तीर्थस्य प्रभावकाः ॥ ३ °वणा प° प्रतौ ॥ ४ °पाव° प्रतौ ॥ ५ °व्वेसु कि° प्रतौ ॥ ६ सिंगणणायकज्जि चु° प्रतौ । 'श्रृङ्गनादिते कार्ये' श्रृङ्गनादनपूर्वकं कर्तव्ये साध्वादिकानां महति कार्ये उत्पन्ने इति भावः ॥ ७ पयडीणं तह प्रतौ ॥ ८ अहितं 'सर्वस्थाम्ना' सर्वशक्त्या ॥ ९ °पडणी° प्रतौ । प्रत्यनीकः–विरोधी ॥ १० °गुणिच्छेओ प्रतौ ॥ ११ °ज्जासंट्ठाणं प्रतौ ॥ १२ °ए, पत्ति° प्रतौ ॥

रामचंदनरिंदभुयपरिहपडिहयपडिभयं निव्वयपुरं नाम नयरं। तहिं च रायप्पसायठ्ठाणं अयलो नाम सहस्सजोही सपरक्कमावगन्नियसेसलोगो दुल्ललियवित्तीए वट्टइ। एगम्मि य दिणे अत्थाणनिसन्नस्स रामचंदराइणो विन्नत्तं महायणेणं—देव!

न वि दीसइ चोरपयं न मुणिज्जइ तग्गमाऽऽगमो कह वि। खत्तं पि पडइ न कहिं पि नेव नज्जइ य संचल्लो ॥ १ ॥
हेल्लोहलयं सयलं पि नगरि मुट्ठं ति वागरइ नयरं। सुपयत्तखेत्तधणमवि हीरइ ही! गयमिव निहित्तं ॥ २ ॥
अज्ज वि दंसिज्जइ मयनिहित्तवत्थुम्मि नूण घरसामी। दंसिज्जइ सुज्झइ थेवमवि य नो तक्करो राया (?) ॥ ३ ॥
आगिड्डिपगिड्डो होज्ज किं नु सो? अहव सिद्धपुरिसो वा?। अंजणसिद्धो वा होज्ज? विम्हओ वट्टए गरुओ ॥ ४ ॥
इय तव्विसेसनामं पि दुल्लहं निच्छियं वयं मुणिमो। अद्दिस्समाणरूवस्स किं ति पुण तस्स करगहणं? ॥ ५ ॥

इमं च सोच्चा कोवभरायंबिरच्छिविच्छोहेहिं पक्खित्तकणवीरकुसुमुक्करं पिव भवणभागं कुणमाणो रामचंदनरिंदो जंपिउं पवत्तो—अहो! एवंविहमसमंजसमवि कीस एच्चिरदिणेहिं मह साहियं? किं मए पडिकूलियं कयाइ तुम्ह वयणं? न सुट्ठु वा वट्टियं पयापओयणेसु? अवगन्निओ वा दुन्नयकारी जणो? जमेवं उवेहा कय त्ति। महायणेण भणियं—देव! कीस एवमासंकह? न सुविणे वि देवो एवंविहवत्तव्वयाभायणं, केवलं अमुणिज्जमाणे तक्करसरूवे कहं पहूणं चित्तसंतावो उप्पाइज्जइ? संपयं 'वाढं सोढुमसक्कं' ति सिट्ठं देवस्स। 'को पुण एयनिग्गहसमत्थो?' त्ति भाविऊण राइणा पलोइया सभानिसन्ना सुहडाइणो।

१ —परियप्रतिहतप्रतिभयम् ॥ २ अकस्मात् ॥ ३ सुप्रत्नक्षिप्तधनमपि ॥ ४ जानीमः ॥ ५ किं पि पु° प्रतौ ॥ ६ कोपभरताम्राक्षिविक्षेपैः ॥
७ °सुमक्क° प्रतौ ॥ ८ °मसम्मंज° प्रतौ ॥

सामंत-दंडनायग-सेणावइ-अंगरक्ख-सुहडेसु । जा को वि किं पि न भणइ विन्नत्तो ताव अयलेण ॥ १ ॥
देव ! पसीयह वियरह आएसं मज्झ किंत्तियं एयं ? । पुन्नेण कह वि लब्भइ पत्थावो एरिसो नूण ॥ २ ॥
तो नरवइणा तंबोलदाणपुव्वं पयंपिओ एवं । तह कुणसु भद्द ! सिग्घं जह लब्भ[इ] एस चोरो त्ति ॥ ३ ॥
जइ पक्खंते चोरं न लभामि अहं विसामि तो जलणं । इइ निच्छिऊण अयलो नीहरिओ रायभवणाओ ॥ ४ ॥

पयट्टो य तिय-चउक्क-चच्चर-सभा-ऽऽसम-देवभवणाइसु चोरनिरूवणं[2] काउं । ठविया य सव्वत्थ पयडा पच्छन्ना य तदुवलक्खणत्थं पच्चइयपुरिसा । गयं दुवालसरत्तं, न लद्धा थेवमेत्ता[3] वि चोरसुद्धी । विसन्नो एसो चिंतिउमारद्धो य—अहो ! अपरिभावियवयणाणं एवंविहो दुरंतो विवागो, जमप्पणा[4] अप्पणो च्चिय मच्चू पच्चासन्नीकओ, निच्छियमेयवइयरच्छलेण मरणमुवट्ठियमियाणिं, ता किं समीववत्तिमरणलिंगाणि घडंति न व ?—त्ति अवलोइयमणेण नासग्गं, निरूविओ कन्नघोसो, पच्चक्खीकओ भमुहाभागो, दिट्ठा गयणगंगा । तओ 'अज्ज वि न किं पि पच्चासन्नमच्चुलिंगं' ति पहिट्ठो हियएणं । 'न य संसयतुलमणारोवियजीवियवेहिं कज्जं सैाहियं[5] तीरइ' त्ति णिविडनिबद्धनियंसणो सणियसणिँयं[6] तमालदलसामलं खग्गधेणुमादाय एगागी पढमजाममेत्ताए रयणीए नीहरिओ घरातो एसो । गओ य नयरपच्छिमविभागँवत्तिणि[7] कुडुंगाभिहाणे महामसाणे ।

तं च केरिसं ?—

१ 'वितरत' दत्त ॥ २ चौरशोधनम् ॥ ३ °मेत्तो वि प्रतौ । स्तोकमात्राऽपि ॥ ४ °प्पणो अ° प्रतौ ॥ ५ साधयितुं शक्यते ॥ ६ °णियन्तमा° प्रतौ ॥ ७ °गवित्ति° प्रतौ ॥

मृत्यु-चिह्नानि

अणवरयकडुयकक्खडरडंतभेरवकुडुंवदुप्पेच्छं । घुग्घुर[व]घोरघूयडकयभीममहातुमुलरावं ॥ १ ॥
भॅल्लुंकमोक्कफेक्कारडामरं भमिरभूरिवेयालं । चीयद्धदद्धमयमंसभक्खणंऽक्खणियसिवचक्कं ॥ २ ॥
एंगत्थ कत्तिउक्कित्तपेसिमयजुसियजोइणीचंद्रं । अन्नत्थ मुक्कफुट्टऽट्टहासपरिभमिरभूयकुलं ॥ ३ ॥
एंगत्थ कलुणसरविहियरोयणारावडाइणीविंदं । अन्नत्थं तालतरुदीहजंघघुम्मंतरक्खउलं ॥ ४ ॥

तम्मि एवंविहे मसाणे अयलो अॅयलो व ईसिं पि अखुब्भन्तो जाव केत्तियं पि भूभागं गओ ताव एगो महापिसाओ उद्धबद्धकविलकेसपासो, फुरंततारपिंगललोयणो, कंधॅराकुहुकुहरपसुत्तमहाविसविस[ह]रफारफुक्कारुग्गीरियगरुयसिहिसिहाजालो, दाहिणकरेण कवालं इयरेण जॅमभमुहाकोणकुडिलं कत्तियमुव्वहंतो, 'महामंसं कत्थइ लब्भइ ?' त्ति पुंणरुत्तं वाहरंतो पडिओ से चक्खुगोयरं । तओ परमसाहसावूॅरियहियएण भणिओ से अयलेण—भद्द ! किं मग्गसि ? । पिसाएण जंपियं—अच्चंतं छुहाकिलंतो महॅामंसं मग्गेमि, न से[से]सु मंसेसु अभिरुइ त्ति । अयलेण भणियं—मा विसीयसु, पूरेमि

१ अनवरतकटुककर्कशरटद्भैरवकुटुम्बदुष्प्रेक्ष्यम् । 'घुग्घुरव'घोरघूककृतभीममहातुमुलरावम् ॥ २ °तभेरवकक्खडकुडुं° प्रतौ ॥ ३ भल्लूकमुक्तफेत्कारभयङ्करं भ्रमणशीलभूरिवेतालम् । चिताऽर्धदग्धमृतकमांसभक्षणाक्षणिकशिवाचक्रम् ॥ ४ °कमोक्क° प्रतौ ॥ ५ °णरावणि° प्रतौ ॥ ६ एकत्र कर्तिकोत्कृत्तपेशिमृतकजुषितयोगिनीवृन्दम् । अन्यत्र मुक्तस्फुटाट्टहासपरिभ्रमणशीलभूतकुलम् ॥ ७ °सियमयज्जुसि° प्रतौ ॥ ८ एकत्र करुणस्वरविहितरोदनारावडाकिनीविम्बम् । अन्यत्र तालतरुदीर्घजङ्घघूर्णद्रक्षःकुलम् ॥ ९ °रथ डाल° प्रतौ ॥ १० °ररउ° प्रतौ ॥ ११ °हे समाणे प्रतौ ॥ १२ 'अचल इव' गिरिवत् ॥ १३ °भन्तो जा° प्रतौ ॥ १४ कन्धराकोष्ठकुहरप्रसुप्तमहाविषविषधरस्फारफुत्कारोद्गीरितगुरुकशिखिशिखाजालः ॥ १५ यमभ्रुकुटिकोणकुटिलां कर्तिकामुद्वहन् ॥ १६ °डिलकत्तियं मु° प्रतौ ॥ १७ वारंवारम् ॥ १८ °वूरिय° प्रतौ । –आपूरित– ॥ १९ 'महामांसं' मनुष्यमांसम् ॥

अहं ते अभिरुई, नवरं तुमं पि मम अभिरुइयं पूरेज्जासि–त्ति [1]आयड्ढिऊणं असिधेणुं छिन्नं नियसरीर[2]मंससखंडं, दिन्नं च एयस्स। 'अहो ! अभुत्तपुव्वमेरिसं' ति पारद्धो पिसाओ तं भक्खिउं ।

[3]उक्कत्तिऊण जह जह अयलो से[4] देइ मंसखंडाइं । तह तह दि[5]व्वोसहविंहिय व वुड्ढिं छुहा जाई ॥ १ ॥
नीसेसमंसवि[6]यलं जा जायं से सरीरगं दूरं । ता जीवियनिरवेक्खो सीसं सो छेत्तुमारद्धो ॥ २ ॥
धरिओ य पिसाएणं दाहिणहत्थेण सत्ततुट्ठेण । भो भो ! कं[7]यं महायस ! एवंविहसाहसे[8]णिंत्तो ॥ ३ ॥
वरसु वरं ति पवुत्तो अयलो पडिभणइ देव ! पसीय ममं । पडिवज्जसु सीसमिमं कत्तो पुण तुह समो अतिही ? ॥ ४ ॥
एयस्स सयं पि वि[9]णस्सिरस्स सारं सरीरगस्से[10]यं । जं जुज्जइ परकज्जे ता [11]विग्घं कुणसु मा एत्थ ॥ ५ ॥
एवं पि हु पं[12]न्नविओ भणइ पिसाओ वरं [11]वरसु भद्द ! । मा पुरिसरयणवियलं होउ [12]अयंडे वि धरणियलं ॥ ६ ॥
[13]इय पुणरुत्तुल्लाविरपिसायवयणावगासमवगम्म । सो भणइ देव ! तुज्झ वि किं सीसइ [14]मुणियकज्जस्स ? ॥ ७ ॥

पिसाएण जंपियं—एवमेयं, पभाए तहा करेमि जहा तुमं [15]अहिगयतक्करसरूवो रायाणं पणमसि, ता वच्च नि[16]रुव्विग्गो नियय[17]भवणं, पमुक्कनीसेसचिंतापब्भारो कुणसु निद्दं, अहं पि [18]सं ठाणं गंतूण चिंतेमि किं पि किच्चसेसं ति । 'एवं होउ' त्ति

१ आकृष्य ॥ २ °मंसं खंडं प्रतौ ॥ ३ उत्कृत्य ॥ ४ 'तस्य' तस्मै । चतुर्थ्यर्थे षष्ठीविभक्तिः ॥ ५ °हर्वीहि° प्रतौ । दिव्यौषधवृंहितेव ॥ ६–विकलम् ॥ ७ पर्याप्तम् ॥ ८ °सेणिंतो प्रतौ ॥ ९ विनशनशीलस्य ॥ १० प्रज्ञापितः ॥ ११ वृणीष्व ॥ १२ अकाण्डे ॥ १३ इति पुनरुक्तोल्लपनशील-पिशाचवचनावकाशमवगम्य ॥ १४ ज्ञातकार्यस्य ॥ १५ अधिगततस्करस्वरूपः ॥ १६ निरुद्विग्नः ॥ १७ प्रमुक्तनिःशेषचिन्ताप्राग्भारः ॥ १८ स्वं स्थानम् ॥

पडिवन्नं अयलेणं। उद्दंसणीहूओ पिसाओ।
अयलो वि पडिओ मसरणाभिमुहं। पेच्छिउं य सो नियसरीरं संनिवेस[म]मलायन्न-वन्नपगरिसपत्तं विमन्नचित्तो
चिंतिउं पयत्तो—हा हा! कयं अवन्नयमिमं दीसइ सरीरं, न किं पि उवओगं गयं तस्स महाणुभावस्स, अहो! मे अपुन्नया,
अहो! परोवयारित्तनिरद्धिययाणं-ति संतप्पंतो गओ घरं, पसुत्तो सुहसेज्जाए, 'ममारिद्धकज्जो' त्ति निब्भरं निद्दा[ओ]। पभा-
यसमए य मंदीभूयनिद्दावेगो संभासिओ पिसाएण—भो अयल! पयंलायसि? जग्गसि वा?। अयलेण भणियं—जग्गामि,
आइससु करणिज्जं। पिसाएण जंपियं—जं मए तुह पडिवन्नं तमायन्नसु संपयं—
एयस्स हि नयरस्स पुव्वओ पव्वयओ नाम भगवो आसमे परिवसइ। तस्स य कविलक्खो नाम चेडओ सिद्धो। तं
च पेसिऊण जं किं पि नगरे सारं वत्थं वा रयणं वा आभरणं वा तमाणेइ त्ति। निसिसमए य सो जहिच्छा[ए] चोरे-
ऊणं निसंको निग्गलेइ, दिवा य भगवरूवेण संजमियसरीरो वणविचीए वट्टइ। अवहरियदव्वसारं च उडवगब्भंतरगुविलबिल-
पवेसमित्तभूमीहरनिहित्तं धरइ। एत्थ मा निगप्पं काहिसि-त्ति सपच्चयं संसिऊण जहागयं पडिगओ पिसाओ।
महरगजोही वि जहत्ति पबुद्धो, विप्फारियच्छो समीवे किं पि अपेच्छंतो, जाणियपिसायनिवेइयवुत्तंतो, काऊण
पाभाइयकिच्चं, कइवयमित्तपरियरिओ गओ पिसायसिट्ठे आसमपए। दिट्ठो जहासिट्ठो भगवो नियधम्मसत्थपरूवणं कुण-

१ अदर्शनीभूतः ॥ २ मसिवेशम् असामान्यवर्णप्रकर्षप्राप्तम् ॥ ३ अपुण्यता ॥ ४ 'प्रचलायसे' निद्रासि जागर्षि वा ॥ ५ जं किमपरे अतो ॥
६ आकर्षति ॥ ७ रात्रिसमये ॥ ८ निस्सरति ॥ ९ उटजाभ्यन्तरगुपिलबिलप्रवेशमात्रभूमिगृहनिहिताम् ॥

माणो, अचंतोवसंतागारो, अगारं धम्मसारस्स, सरस्सइपवाहो व अच्छिन्नवयणपरंपरापरूवियनायगो त्ति । तं च दट्ठूण चिंतियमयलेण—अहो ! कहमेवंविहा आगिई ? कहं वा तारिसो अकज्जकरणप्पवंचो ?, कहिं एवंविहा किच्चा-ऽकिच्चपयत्थपच्चायणपवणा वाणी ? कहं वा तविहं सयं दुम्मेहदुविलसियं ?, सव्वहा अविभावणिज्जा कम्मपरिणई न वियारभारगोयरमरिहइ-त्ति चिंततो संभासिओ भगवेण—भो महाणुभाव ! इममासणमलंकरेसु त्ति । तओ ईसिकयप्पणामो आसीणो अयलो । भणिओ य भगवेण—भद्द ! किमुविग्गो व लक्खीयसि ? । सहस्सजोहिणा जंपियं—भयवं ! असुहलक्खणनिम्मायमुत्तिणो अम्हारिसा पए पए उविग्गा चेव, केत्तियं साहिज्जइ ? । तओ आपायसीसं तदंगमाभोगिऊण भणियं भगवेण—भो महाभाग ! मा मा एणं मुंछवसु, जओ सामुद्दसवलक्खणमुद्दासंवादिणी तुज्झ मुत्ती, तस्सत्थं गिज्जइ—

नाभिः स्वरः सत्त्वमिति प्रशस्तं, गम्भीरमेतत् त्रितयं शुभाय । उरो ललाटं वदनं च पुंसां, विस्तीर्णमेतत् त्रितयं विशिष्टम् ॥१॥

वक्षोऽथ कक्षा नख-नाशिका-ऽऽस्य-कृकाटिकाश्चेति षडुन्नतानि । ह्रस्वानि चत्वारि तु लिङ्ग-पृष्ठी,ग्रीवा च जङ्घे च सुखप्रदानि॥२

नेत्रान्त-पाद-कर-तालव-ऽधरोष्ठ-जिह्वा, रक्ता नखाश्च खलु सप्त सुखावहानि ।
इत्यादिलक्षणवचांसि भवच्छरीरे, निर्दूषणानि सकलान्यपि संवदन्ति ॥ ३ ॥

अचलेनोक्तम्—भवतु शेषम्, भगवन् ! आयुर्दीर्घं मम ? न वा ? इति । ततस्तत्करतलमालोक्य भणितं भागवतेन—भो महात्मन् ! सुचिरायुरसि, यतः—

१ स्वकं दुर्मेधादुर्विलासितम् ?॥ २ तदङ्गम् 'आभोग्य' निरीक्ष्य ॥ ३ मकारोऽत्रालाक्षणिकः ॥ ४ तच्छास्त्रम् ॥ ५ °का चेति प्रतौ ॥

कनिष्ठिकामूलभवा गता या, प्रदेशिनी-मध्यमिकान्तरालम्। करोति रेखा परमायुषं, सा प्रमाणहीना तु तदूनमायुः ॥१॥

एवं च खणमेक्कं विगमिऊण पिमायनिवेइयत्थजायपच्चओ अइलो गओ सट्ठाणं। वाहराविओ रन्ना। कयपणामो य पुच्छिओ सायरं—कहसु चोरवुत्तंतं ति। ततो एगंते मिट्ठो जहट्ठिओ तव्वुत्तंतो अयलेणं। रन्ना जंपियं—को एत्थ पच्चओ?। अयलेण भणियं—देव! तस्सयणहेट्ठओ भूमीहरे मोसजायमसेसमत्थि त्ति। तओ सीसवेयणाकइयवं काऊण विसज्जि-यसभालोगो पसुत्तो राया सेज्जाए। पारंभिया तदु[च]ममोवयारा। 'न जाओ विसेसो' त्ति वाहराविया मंतवाइणो। अक-यपडियारा ते वि गया जहागयं। ताहे रन्ना सो वि भगवो वाहराविओ। सायरदिन्नासणो संभासिउमारद्धो। पुरिसे य पेसिऊण खणाविओ तदासमो। नीहरियं मोसं, आणीयं रायभवणे। आहूओ तवेलं महायणो, दंसियं तं मोसजायं। पच्चभि-न्नायमसेसं महायणेणं। विलक्खीभूओ भागवओ, पुच्छिओ य रन्ना—भो पासंडियाहम! को एस वुत्तंतो? त्ति। अच्चंतदु-व्विलसियमप्पणो पायडीभूयमवगच्छिऊण लज्जायमाणो मोणमवलंबिऊण ट्ठिओ हेट्ठामुहो। विहडिया से पुन्नपरिवाडी, तुट्टो ज्झाणपयरिसो। सिद्धकज्जो दुज्जणो व्व दूरीहूओ चेडओ मुक्को जीवियवासाए। तओ उग्गसासणत्तणेण राइणा जायपबलको-वावेगेण नयरतिय-चउक्क-चच्चरेसु रासभसमारोवणपुरस्सरं भमाडिऊण, आघोसणापुव्वं निवेइऊण वुत्तंतं, महया दुक्खभारेण माराविओ एसो। निसामिओ तव्विणासवइयरो सहस्संजोहिणा। जाओ से महंतो पच्छायावो—अहो! अहमेवंविहमहापावस्स

१ तब्भयण° प्रतौ। तच्छयनाधस्तात्॥ २ °मत्थइ प्रतौ॥ ३ °कइवयं का° प्रतौ। शीर्षवेदनाकैतवम्॥ ४ °हुय त° प्रतौ॥ ५ अधोमुखः॥ ६ त्रुटितो ध्यानप्रकर्षः॥

परमत्थेण कारणभूओ, कहमन्नहा एयवइयरं कोइ मुणंतो ? सव्वहा महाणत्थकारी अहं, तथाहि—

एगं लिंगी ऐसो अन्नं तह लक्खणोवएसी मे । वीसासमुवगओ वि य तह दंसियपणयभावो य ॥ १ ॥
केहमवगणिय समग्गं एयमहं दूरचत्तनयमग्गो । एवंविहं अकिच्चं ही ही ! नणु वैवसिओ काउं ? ॥ २ ॥
बहुसाहियम्मि कज्जे तुण्हिक्को होज्ज पयडमवि लोएं । अइपावपरिगएणं इमं पि वयणं न संभरियं ॥ ३ ॥
इहलोइयतुच्छपओयणत्थमित्थं अकिचलक्खं पि । काउं कंक्खइ जीवो नावेक्खइ तेंक्कयं दुक्खं ॥ ४ ॥
इय अंविभावियकिच्चस्स होउ एयस्स मज्झ पच्छित्तं । जीवियचागो सिहिभक्खणेण जलपविसणेणं वा ॥ ५ ॥

एवं कयनिच्छओ सहस्सजोही अंणाइक्खिऊण कस्सइ वत्तं मज्झरत्ते नीहरिओ घराओ, गओ एगंतपच्चंतसन्निवेसं, पारद्धो कट्ठाणि मीलिउं । दिट्ठो य अणेण एगो एगंतवासी ऐंगपायनिहियसव्वसरीरभारो मायंडमंडलुम्मुहानिमेसनिवेसियनयणो काउस्सग्गगओ तवस्सि त्ति । 'होउ ताव, सांयत्तं मरणं, पुच्छामि ताव इमं—किमेवं एस किलिस्सइ ?' त्ति । गओ अयलो तस्स समीवं, निवडिओ चलणेसु, उट्ठिओ वि पज्जुवासिउमाढत्तो । खणंतरे य पारियकाउस्सग्गो पुच्छिओ णेण साहू—भयवं ! किंनिमित्तमेवं अप्पा संताविज्जइ ? । मुणिणा भणियं—

नहि गरुयरोगविरहे विरोयणोसह-विसोसणप्पमुहं । अभिनंदइ किरियं कोइ कीरमाणिं सुमुद्धो वि ॥ १ ॥

---

१ एगो प्रतौ ॥ २ कथमवगणय्य समग्रम् ॥ ३ 'व्यवसितः' लग्नः ॥ ४ नत्कृतम् ॥ ५ अविचारितकार्यस्येत्यर्थः ॥ ६ °समाणेणं प्रतौ ॥ ७ अनाख्याय कस्यापि वार्त्ताम् ॥ ८ एकपादनिहितसर्वशरीरभारः मार्तण्डमण्डलोन्मुखानिमेषनिवेशितनयनः ॥ ९ स्वायत्तम् ॥ १० विरेचनौषधविशोषणप्रमुखाम् ॥

न य भूरिपावपब्भारभारियं अप्पयं अपेहित्ता । कट्ठाणुट्ठाणमहो ! एवंविहमारभइ को वि ॥ २ ॥

ता मुद्धमुह ! एयनिमित्तं । अयलेण भणियं—भयवं ! जहावित्तं तुम्ह वित्तंतं फुडक्खरं सोउमिच्छामि । मुणिणा भणियं—जइ एवं ता सुणसु—

अहं हि कायंदीए पुरीए वणसीहो नाम पारद्धिओ आसि । निययठक्कुरेण समं आहेडयं काउं अडविं गओ । तहिं च मयकुलमुद्दिसिय ठक्कुरवयणेण पारद्धो पंचमुग्गारसरो गेयरवो । तंदाय[ण्ण]णुप्पन्नसवणसुहसंदोहसम्मीलियलोयणं निद्दायमाणं व समीवमुवसप्पिउमारद्धं मयकुलं । खिन्नो य आयन्नमायड्ढिऊण ठक्कुरेण तरुमूलनिलीणेण तयभिमुहो सिलीमुहो । निद्धा य तेण वेलामासवत्तिगुरुगब्भभरमंदगामिणी हरिणी । पीडापब्भारविदिन्नोदरा दूरपडियफुरफुरायमाणगब्भा य विरसमारसंती धम त्ति धरणीयले पडिया । तं च तहाविहविसमदसावडियमवलोयमाणस्स मह जाया महती दया । 'अहो ! अहमिमस्स अकज्जस्स निमित्तं' ति कुविओ अप्पणो उवरिं । ससरं सरासणं मोडिऊण वेगेण धाविओ गिरिसिरावडणं काउं । खलिउमपारयंतो य वलिओ विलक्खो ठक्कुरो । अहं च गिरिसिराओ पडंतो पडिसिद्धो तद्देसकयकाउस्सग्गेण चारणसमणेण, पव्वाविओ य । जहा—

तपस्विमुनेरात्मकथा

१ अप्रेक्ष्य ॥ २ 'आखेटकम्' मृगया ॥ ३ मृगकुलम् ॥ ४ तदाकर्णनोत्पन्नश्रवणसुखसन्दोहसम्मीलितलोचनम् ॥ ५ खिन्नो य प्रतौ ॥ ६ आकर्णमाकृष्य ॥ ७ बाणः ॥ ८ वेलामासवर्तिगुरुगर्भभरमन्दगामिनी ॥ ९ पीडाप्राग्भारविदीर्णोदरा दूरपतितस्फुरत्स्फुरायमाणगर्भा ॥ १० °णस्स म° प्रतौ ॥ ११ 'शरासनं' धनुः ॥

जइ निव्वियप्पमप्पा एवं परिकप्पिओ तए[1] हंतुं । ता हणसु तह कहं पि हु जहा हओ होइ सुहओ[2] सो ॥ १ ॥
सुहतो य होइ सो पुण पयंडतवकम्मनिम्महिज्जंतो[3] । गिम्हुम्हायावणतरणितेयताविज्जमाणो[4] य ॥ २ ॥
सिसिरसतुसारमारुयसीयफरिसा……हम्ममाणो य । जावज्जीवं सज्झाणकोट्ठयट्ठावणेणेव ॥ ३ ॥
इय भद्द ! जइ सच्चं चिय किं पि वेरग्गं ता उग्गमायरसु धम्मं–ति अणुसासिओ पवन्नो हं सामन्नं । एवं च दुरणुचरेण कट्ठकलावेण अप्पाणं झोसंतो विहरामि त्ति ॥ छ ॥

इमं च सम्मं[5]मवधारिऊण 'समाणरोगत्तणेण एयमेव ओसहं' ति मन्नमाणेण अयलेणावि गहिया तद्दिक्खा[6] । दुक्करतव-चरण-करणपरो य गाम-नगरा-ऽऽगराभिरामं वसुंधराभोगं विहरिउ[7]मारद्धो । अवि य—
सो नत्थि तवविसेसो सुदुक्करो वि हु न तेण जो तविओ । सुत्तं पि नत्थि तं जन्न तेण फु[8]डमहिगयं सम्मं ॥ १ ॥
फुट्टट्टहासवेयालविहियडक्कारडाइणीभीमं[9] । तं नत्थि सुसाणं भूयभवणमवि सो न जत्थ ठिओ ॥ २ ॥
एवं च अणुत्तरतव-सच-सोय-विरिउल्लासवसेण तस्स जाया बहवो लद्धिविसेसा । तम्माहप्पेण भुयगो व फणारयणेण, कुरंगराउ व केसरसडाकडप्पेण[10], करिवरो व कलहोयधवलदसणमुसलजुयलेण[11] लोयाणं पमोयं भयं च उप्पायंतो महाणुभावो परं पसिद्धिं गओ ।

---

१ तए हुंतं प्रतौ ॥ २ 'सुहतः' सन्मरणं प्रापितः ॥ ३ प्रचण्डतपःकर्मनिर्मथ्यमानः । ग्रीष्मोष्मातापनातरणितेजस्ताप्यमानश्च ॥ ४ °रणते° प्रतौ ॥ ५ सम्मंमव° प्रतौ ॥ ६ तदिक्खा प्रतौ । तद्दीक्षा ॥ ७ विरहिउ° प्रतौ ॥ ८ ते य फु° प्रतौ ॥ ९ स्फुटाट्टहासवेतालविहितडक्कार-डाकिनीभीमम् ॥ १० °डाकडकडप्पे° प्रतौ । केसरसटासमूहेन ॥ ११ कलधौतधवलदशनमुशलयुगलेन ॥

अन्नया य निब्भरपुरीओ समागया तं पएसं तवस्सिणो । वंदिओ सो तेहिं । पुच्छिया य अणेण विहारसुत्थयं । सिट्ठं च तेहिं, जहा—तत्थ य राया रामचंदो सासणपच्चणीयपरतित्थियजणजणियवेसमणस्सो न सुट्ठु समणसंघम्मि वट्टइ त्ति । ततो अयलसाहू सासणावमाणं सोढुमचयंतो त्ति गओ निब्भयपुरीए । वुत्थो वुप्फावयंसाभिहाणे उज्जाणे ।

तम्मि पुण समए तस्स राइणो गयवराणं जाओ महावाही । कीरमाणेसु वि अणेगेसु मेसहपओगेसु, अच्चिज्जमाणेसु देवयाविसेसेसु, कीरंतेसु लक्खहोमेसु, तप्पिज्जंतेसु वि नवग्गहेसु, संतिकम्मवावडेसु वि पुरोहिएसु नोवसंतो मणागं पि । दो चत्तारि पंच य पइदिणं मरिउमारद्धा हत्थिणो । अच्चंतमाउन्नो राया। सिट्ठं च से एगेण नरेण अयलसाहुणो आगमणं । तं च सोच्चा तुट्ठो राया । 'जहा पुव्वं तक्करो परिन्नाओ तहा करिमरणनिदाणं पि मुणिही इमो' त्ति विभावितो गओ अयल-समीवं । वंदिऊण सिणेहसारं आसीणो मेइणीवट्ठे महीवई । मुणिणा वि सुपसन्नवयणविन्नासेण सुनिउणजुत्तिगरुई पारद्धा धम्मकहा । जहा—

जं साहिउं न तीरइ पोरिसविचीए मइबलेणं वा । भुवणे वि जं दुलंभं सिज्झइ धम्मेण तं पि फुडं ॥ १ ॥

सो पुण नरवर ! तुम्हारिसाण उचियप्पवित्तिकरणेण । चउरासमेसु वि सया समदिट्ठित्तेण होइ जओ ॥ २ ॥

नांएणं पालिंतो सव्वेसु वि आसमे-सरिसदिट्ठी । पाउणइ पुहइपालो तंकयसुकयस्स छब्भागं ॥ ३ ॥

राजधर्म-निष्ठस्य राज्ञः प्रजा-कृतधर्मपष्ठ-भागस्य प्राप्तिः

१ शासनप्रत्यनीकपरतीर्थिकजनजनितद्वेषमनस्कः ॥ २ सुम° प्रतौ ॥ ३ पुष्पावतंसाभिधाने ॥ ४ अत्यन्तमाकुलित इत्यर्थः ॥ ५ 'शिष्टं' कथितं च तस्य ॥ ६ पुव्वत° प्रतौ ॥ ७ सुमिणा प्रतौ ॥ ८ समदृष्टित्वेन ॥ ९ न्यायेन ॥ १० 'तत्कृतसुकृतस्य' चतुराश्रमकृतसुकृतस्य पष्ठं भागम् ॥

सामन्नेण वि एयं [1]गुणपयरिसपेहणेण उवउत्तो । तं किं [2]वे जं न पुन्नं पुहइवई नूण[3]मेज्झिणइ ? ॥ ४ ॥ किं च—

सगुण-[4]विगुणाणुरूवं लिंगिसु भिच्चेसु वा पउंजंतो । पडिवत्तिं राया जणइ तग्गुणावज्जणे जुत्तं ॥ ५ ॥

सुगुणा य कह णु नरवर ! तत्थ दढं संभवंतु जत्थ दया । नेवऽत्थि [5]वत्थिनिग्गहसारं च तवो वि दुरणुचरं ? ॥ ६ ॥

दस-अट्ठदोसरहिओ महिओ ससुरा-ऽसुरेण वि [6]जएण । देवो वि नेव निम्मलकेवलवलकलियतइलोको ? ॥ ७ ॥

एवं गंभीरपयत्थनिब्भरं भारइं निसा[7]मित्ता । दरलज्जामउलियनयणपंकओ पत्थिवो भणइ ॥ ८ ॥

भयवं ! तुमं जमाइससि [8]तमियाणिमवस्सं काउं अभिलसइ मम मणो, केवलं केणइ निमित्तेणा[9]कालकुवियकयंतकवलिज्जंतरज्जसारसिंधुरावलोयणवाउलत्तणेण न भवणे न वणे न सयणे न आसणे न छुहत्तस्स न भुत्तस्स न सुत्ते न रत्ते न दिणे न रयणीए मणागं पि संपइ संपज्जइ मे रइ त्ति काऊणाणुग्गहं भयवं ! साहेसु तं दुनिमित्तं तदुवसमं च, जेण [10]लंघियविसमावयावडणो निरुविग्गो तुम्ह पायपंकयमाराहेमि त्ति । साहुणा भणियं—महाराय ! चिरकालियं पि दुक्कयं अज्ज वि [11]नंद्धसल्लं व खुडुक्कंतं न विरमइ, अओ कहमवरं काउं जुज्जइ ? कए वि को वा गुणो होही ? । राइणा भणियं—मा मेवं जंपह, तुम्ह पायपायवमल्लीणो खु एसो जणो [12]नोवेक्खिउं जुत्तो । किंच—

१ गुणप्रकर्षप्रेक्षणेन ॥ २ न प्रतौ ॥ ३ अर्जयति ॥ ४ °विगणा° प्रतौ ॥ ५ 'वस्तिनिग्रहसारं' ब्रह्मचर्यप्रधानम् ॥ ६ जगता ॥ ७ निशम्य । ईषल्लज्जासुकुलितनयनपङ्कजः ॥ ८ तविया° प्रतौ ॥ ९ अकालकुपितकृतान्तकवलीयमानराज्यसारसिन्धुरावलोकनव्याकुलत्वेन ॥ १० लङ्घितविषमापदापतनः निरुद्विग्नः ॥ ११ नट्ठस° प्रतौ ॥ १२ नोवलक्खि° प्रतौ ॥

हरि-हर-दियायर-बुद्ध-चंडि-गंयमुहपमोक्खदेवेहिं । आराहिएहिं वि चिरं थुणिएहिं पूइएहिं वि ॥ १ ॥
जं नो सिद्धं कज्जं तं पि हु सिज्झइ य जइ तुमाहिंतो । ता तुम्ह सासणमहं जावज्जीवं पवज्जामि ॥ २ ॥
इहलोइयं हि कज्जं तुच्छं तं पि हु न सिज्झई जत्तो । दुस्सद्धेयं तत्तो गुरुपरलोयत्थनिव्वहणं ॥ ३ ॥
एवं ठिए वियप्पं मोत्तुं भयवं ! करेसु मह जुत्तं । इय सिट्ठे तब्भिच्छयमुवलब्भ तवस्सिणा भणियं ॥ ४ ॥
जइ एवं ता नरवर ! सुसाहुपयपउमखालणजलेण । अब्भोक्खिऊण रक्खसु गयजूहं रोगरक्खसओ ॥ ५ ॥
न तुमाहिंतो वि परो एत्थ सुसाहु त्ति जंपिरो राया । तप्पायसोहणजलं घेत्तुं सयं तयं कुणइ ॥ ६ ॥
तिमिरमिव पीऊसमहयं तमं व दिवसयरकिरणपडिरुद्धं । वेगेण रोगजायं नियत्तं कुंजरकुलाओ ॥ ७ ॥
तो परितुट्ठो राया जोडियकरसंपुडो भणइ साहुं । भयवं ! वारणवाही केण निमित्तेण जाओ ? त्ति ॥ ८ ॥
मुणिणा भणियं नरवर ! भागवयमुणी हणाविओ तुमए । जो पुव्विं सो मरिउं रक्खसदेवत्तणं पत्तो ॥ ९ ॥
सरिऊण पुव्ववेरं तुज्झ सरीरम्मि अपभवमाणो सो । एवं पि होउ दुक्खं ति हत्थिणो हणिउमाढत्तो ॥ १० ॥
जाणियजहट्ठियत्थो राया नयरीए सव्वठाणेसु । पडहपडिहणणपुव्वं आघोसणमिय करावेइ ॥ ११ ॥
जिणसासणं चिय परं परमं मंगलमुदारमाहप्पं । परमोसहं च इह-अन्नभवियवाहीण विविहाण ॥ १२ ॥
इह थेवं पि अवन्नं अपक्खवायं च अवहुमाणं च । जो काही सो दंडं नियमा लहिही उभयभवियं ॥ १३ ॥

१ गजमुनः—गणपतिः ॥ २ चिरं मुणि' प्रतौ ॥ ३ सुसाधुपदपद्मक्षालनजलेन । 'अभ्युक्ष्य' सिक्त्वा ॥ ४–राक्षसात् ॥ ५ तत्पादनशोधनजलं गृहीत्वा ॥

इय पन्नविउं लोयं स महप्पा भूवई जिणमयम्मि । तह कह वि वट्टिओ सेणिउ व जह कित्तिमणुपत्तो ॥ १४ ॥
अयलो वि मुणी काउं पभावणं एरिसं हि तित्थस्स । तित्थयरनामगोयं कम्मं सम्मं समज्जिणिउं ॥ १५ ॥
सोहम्मे उववन्नो ततो वि भूओ महाविदेहम्मि । उप्पज्जंतनिरंतरजिण-हलि-हरि-चक्कवट्टिम्मि ॥ १६ ॥
वच्छाविजए सिरिजयपुरीए रन्नो पुरंदरजसस्स । देवीसुदंसणाए चउदससुस्सुमिणकयसूओ ॥ १७ ॥
गब्भे पाउब्भूओ समुचियसमए य जम्ममणुपत्तो । अहिसित्तो य सुरा-ऽसुरवग्गेणं मेरुसिहरम्मि ॥ १८ ॥
सुमुहुत्ते जयमित्तो त्ति नामधेयं पयट्टियमिमस्स । एवं च सो महप्पा कमेण पत्तो वि तारुन्नं ॥ १९ ॥
पाणिग्गहणमकाउं रायसिरिं मणहरं अपरिभोत्तुं । संवच्छरियं दाणं दवाविउं दुत्थियजणाण ॥ २० ॥
लोगंतियतियसहिओवएससविसेसवड्ढिउच्छाहो । बत्तीससुरेसरकीरमाणनिक्खमणवरमहिमो ॥ २१ ॥
तिजयं एगजयं पिव एगत्थुम्मिलियमणुय-सुर-असुरं । कुणमाणो पडिवन्नो निस्सामन्नं च सामन्नं ॥ २२ ॥
तो सुक्कज्झाणानलनिमूलनिदड्ढघाइकम्मदुमो । उप्पन्नकेवलालोयलोइयासेसतइलोक्को ॥ २३ ॥
सिंहासणोवविट्ठो उवरिधरिज्जंतसेयछत्ततिगो । देहदुवालसगुणियामरतरुणा सोहमाणो य ॥ २४ ॥

१ सेनिउ प्रतौ ॥ २ समर्ज्य ॥ ३ तत्तो प्रतौ ॥ ४-कृतसूचः ॥ ५ 'प्रतिष्ठितं' कृतम् ॥ ६ तारन्नं प्रतौ ॥ ७ लोकान्तिकत्रिदशहितोपदेशसविशेषवर्धितोत्साहः । द्वात्रिंशत्सुरेश्वरक्रियमाणनिष्क्रमणवरमहिमः ॥ ८ तिगयं प्रतौ । त्रिजगद् एकजगद् इव एकत्रोन्मीलितमनुजसुरासुरम् । कुर्वाणः प्रतिपन्नः निःसामान्यं च श्रामण्यम् ॥ २२ ॥ ततः शुक्लध्यानानलनिर्मूलनिर्दग्धघातिकर्मद्रुमः । उत्पन्नकेवलालोकलोकिताशेषत्रैलोक्यः ॥ २३ ॥ सिंहासनोपविष्टः उपरिध्रियमाणश्वेतच्छत्रत्रिकः । देहद्वादशगुणितामरतरुणा शोभमानश्च ॥ २४ ॥

चॅलियसियचारुचमरो पुरओ पक्खित्तकुसुमपयरो य । दिसिपसरियरविनिम्मलभामंडलखंडियतमोहो ॥ २५ ॥
सुरपहयदुंदुहीरवपयडियदुज्जेयपरमरिउविजओ । सव्वसभासाणुगदिव्ववाणिनिम्महियसम्मोहो ॥ २६ ॥
पायडियसुगइमग्गो पडिबोहियभूरिभव्ववग्गो य । चिरकालं विहरित्ता सिवसोक्खं मोक्खमणुपत्तो ॥ २७ ॥
इय कप्पपायवब्भहियमहियगुरुफलपयाणदुल्ललियं । काउं पभावणं सासणस्स तिन्नो पॅरं तरइ ॥ २८ ॥ अपि च—

स्वार्थाय सर्वं कुरुते प्रयत्नमुत्कृष्यतेऽमुत्र गुणः क एव? । उत्कर्षणीयो हि परोपकारः स चान्यदानादतितुच्छ एव॥१॥
प्रोक्तो गरीयान् पुन[र]र्हदुक्तसद्धर्म[मर्म]प्रतिपादनेन । स चाङ्गभाजां हृदि सन्निधातुं प्रभावनां नैव विना हि शक्यः॥२॥
प्रभावनाकर्तुरतो न कश्चित् परोपकारीत्यपरः पृथिव्याम् । चारित्रभाजोऽपि मुनीश्वरस्य तेनेह सम्यक् कथितः प्रयत्नः॥३॥

प्रभावनोपदेशः

सर्वोपधाविरहितं सुहितं जगत्यां, सम्यक्त्वरत्नमिदमुक्त[म]नर्घमित्थम् ।
यस्याचलं हृदि सदैतदकल्मषं च, दारिद्र्यविद्रुतिभयं कुत एव तस्य ? ॥ ४ ॥

सम्यक्त्वमाहात्म्यम्

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे अष्टमाचारे अचलकथोक्त्या सम्यक्त्वपटलं समाप्तम् ॥ ९ ॥

१ चलितसितचारुचमरः पुरतः प्रक्षिप्तकुसुमप्रकरश्च । दिक्प्रसृतरविनिर्मलभामण्डलखण्डिततमओघः ॥ २५ ॥ सुरप्रहतदुन्दुभिरवप्रकटितदुर्जेयपरमरिपुविजयः । सर्वस्वभाषानुगदिव्यवाणीनिर्मथितसम्मोहः ॥ २६ ॥ प्रकटितसुगतिमार्गः प्रतिबोधितभूरिभव्यवर्गश्च । चिरकालं विहृत्य शिवसौख्यं मोक्षमनुप्राप्तः ॥ २७ ॥ २ सोक्ख° प्रतौ ॥ ३ इति कल्पपादपाभ्यधिकमहितगुरुफलप्रदानदुर्ललिताम् । कृत्वा प्रभावनां शासनस्य तीर्णः परं तारयति ॥ २८ ॥ ४ परं न तरइ प्रतौ ॥ ५ प्रोक्तौ प्रतौ ॥ ६ °म्यक्त्वथितप्रयत्नः प्रतौ ॥ ७ °क्तनिर्घ° प्रतौ ॥ ८ सदेत° प्रतौ ॥ ९ °विद्गति° प्रतौ ॥

॥ अर्हम् ॥

कयसम्मत्तथिरत्तो जइ वि नरो तह वि वंछियं वत्थुं । पंचनमोकारे[1] च्चिय भत्तिपरो पावए परमं ॥ १ ॥
अरहंता सिद्धा सूरिणो य उज्झाय[2]-साहुणो चेव । परमिट्ठिणो हु एते एयन्नमणं नमोकारो ॥ २ ॥
एत्तो च्चिय एयाणं कीरंतो सायरं नमोकारो । एसो समग्गकल्लाणकारणं जायइ जियाण ॥ ३ ॥
एक्केक्कमक्खरं पि हु पंचनमोकारसन्तियं जीवो । बहु-बहुतर-बहुतमपाव[3]खयवसा लहइ भावेण ॥ ४ ॥
सूरो इव तिमिरभरं पहणइ चिंतामणि व दोगच्चं । चिंतियमित्तो य इमो भयवग्गं नासइ समग्गं ॥ ५ ॥ तहाहि—
नाभिद्दवइ[4] दवो तं दूमइ न मयाहिवो सुकुद्धो वि । सप्पो वि नाभिसप्पइ न वि चंपइ मत्तपीलू[5] वि ॥ ६ ॥
सत्तू वि तं न बाहइ न विराहइ भूय-साइणिगणो वि । चोरेइ तक्करो न वि न कमइ तं वारिपूरो वि ॥ ७ ॥
अहवा किमित्तिएणं ? इह-परलोए सवंछियं[6] लहइ । जस्स[7] मणे नवकारो सिरिदेवो एत्थुदाहरणं ॥ ८ ॥ तहाहि—
नीसेसदेससविसेसपायडे[8] जणवयम्मि पंचाले । कंपिल्लमत्थि नयरं [नियरं]मयरंजियजणोहं[9] ॥ ९ ॥
गेहाइं बहुधणाइं धणं पि सुवियड्ढवड्ढियाणंदं[11] । सुवियड्ढा वि हु जिणहरकयजत्ता-ण्हवण-पूयमहा ॥ १० ॥

१ 'नवकार' इति नाम्ना प्रसिद्धे पञ्चनमस्कारसूत्रे ॥ २ उपाध्याय- ॥ ३ °वक्खय° प्रतौ ॥ ४ °इ चवो प्रतौ । दावानलः ॥ ५ मत्तहस्ती ॥ ६ स्ववाञ्छितम् ॥ ७ तस्स प्रतौ ॥ ८ प्रकटे-प्रसिद्धे ॥ ९ निजरम्यतारजितजनौघम् ॥ १० °यजिणो° प्रतौ ॥ ११ सुविदग्धवर्धितानन्दम् ॥

जिणगेहाणि वि मुणिजणकीरंतमहत्थसत्थकहणाइं। सत्थाणि वि पसमरसुंभडाइं जम्मि विरायंति ॥ ११ ॥

हारेसु नायगाणं तरलत्तं कुडिलया य केसाण। करिणमुहत्तं सिहिणीण न उण लोयाण जत्थ पुरे ॥ १२ ॥

तत्थ रिउचक्कविक्कमणविहणिउक्कडतिविक्कमुक्करिसो। सिरिहरिसो आसि निवो धणवरिसो तकुंयजणाण॥१३॥

सयलंतेउरतिलओवमाए देवीए कमलसेणाए। जाओ पुत्तो सुसुमिणपिसुणिओ तस्स नरवइणो ॥ १४ ॥

दिज्जमाणधणतुट्ठसग्गणं, नच्चमाणपुरजामिणीगणं। मुक्कचारगनिवद्धमाणवं, पूइ[या]मर-मुगुंद-दाणवं॥ १५ ॥

संतिकम्मवाउलपुरोहियं, कीरमाणचुरुक्खसोहियं। गिहदुवारथुनि दिन्नसत्थियं, रायलोयपडिपुन्नपत्थियं ॥ १६ ॥

चारुवेसभड-चंठवड्डियं, नाइ निव्वुइनिहाणमुड्डियं। सव्वलच्छिकलियं व सुंदरं, गेय-तूररवपूरियंवरं ॥ १७ ॥

इय तज्जम्मणपडिबंधबंधुरं पउरहरिसवद्धणयं। [वद्धावणयं] सव्वायरेण काराविय रन्ना ॥ १८ ॥

ठवियमुचियम्मि समए सिरिदेवो नाम तस्स तत्तो सो। सयलं कलाकलावं गहाविओऽकालपरिहीणं ॥ १९ ॥

ठविउं जुवरायपयम्मि तं च राया महाविमद्देण। चउरंगवलसणाहो निक्खंतो विजयजत्ताए ॥ २० ॥

सोवीर-कोसल-कुसट्ट-कासि-वंगालपमुहनरनाहे। आणानिद्देसम्मि ठावितो भग्गदुग्गपहो ॥ २१ ॥

पत्तो स कमेणं कामरूयदेसस्स सीमसंधीए। तम्महिनाहो य तए भणाविओ दूयवयणेण ॥ २२ ॥

---

१ °सुभडाइं जम्मि प्रतौ ॥ २ हारमध्यस्थितमणीनाम् ॥ ३ °मुहुत्तं प्रतौ ॥ ४ स्तनानाम् ॥ ५ रिपुचक्रविक्रमणविहतोत्कटत्रिविक्रमोत्कर्षः ॥ ६ आस प्रतौ ॥ ७ स्वजनजनानाम् ॥ ८ °सुणओ प्रतौ। पिशुनितः—सूचितः ॥ ९ °सुगुं° प्रतौ ॥ १० °धुरप° प्रतौ ॥ ११ वर्धापनकम् ॥

पंडिवज्जसु सेवं मे वज्जसु देसं व जुज्झसज्जो वा । संपज्जसु इय सोउं सो राया जायगुरुकोवो ॥ २३ ॥
हरसिरमंडणदाणेण दूयसम्माणणं लहुं काउं । सयलबलेण समेओ जुज्झट्ठमुवट्ठिओ ज्झत्ति ॥ २४ ॥

अह बद्धपरोप्परमच्छराइं,उच्छलियकोवभरनिब्भराइं। जुज्झेण लग्ग दोण्णि वि बलाइं,वित्थरिय नाय सायरजलाइं॥
मुहवडिय गुडिय गयघड घडन्त, नज्जंति नाइ डुंगर भिडंत। पक्खरियतरलतरतुरयथट्ट, कीणासकक्खडिय नं पयट्ट ॥
रेहंति वेरिकयघोरघाय, बंदियणुग्घुट्ठजसप्पवाय । णाणाउह सुहड महापयंड, नचंत नाइ जमबाहुदंड ॥
गुलुगुलियमहागयपायरक्ख,नर करउक्कंपियखग्ग दक्ख। रविकरि कराल छज्जंति केम ?,गज्जियनवजलहरि विज्ज जेम॥
आरुट्ठ-दुट्ठरिउकंठमुक्क, सर भल्लि सेल्ल नं पडहिं उक्क । कयसामिकज्ज फुडु सच्चसंध, हरिसेण नाइ नच्चिय कबंध ॥
असिछिन्नसेन्नकरिरुहिरपूरि, समरोयहि वेलजलि व पूरि । पवहंति उद्धट्ठियदंड छत्त, नं कूवखंभजुय जाणवत्त ॥

१ प्रतिपद्यस्व ॥ २ वर्जय ॥ ३ झगिति ॥ ४ लग्ने ॥ ५ इवार्थकमव्ययम् ॥ ६ 'मुखपतिते' अग्रस्थिते कवचिते गजघटे घटन्त्यौ ज्ञायेते इव पर्वतौ युध्यमानौ । कवचिततरलतरतुरगसमूहौ कीनाशकर्कशौ इव प्रवृत्तौ ॥ ७ राजन्ते वैरिकृतघोरघाता बन्दिजनोद्घुष्टयशःप्रवादाः । नानायुधाः सुभटा महाप्रचण्डाः नृत्यन्त इव यमबाहुदण्डाः ॥ ८ गुलुगुलायितमहागजपातरक्षकाः नराः करोत्कम्पितखड्गाः दक्षाः । रविकरैः करालाः राजन्ते, कीदृशः ? गर्जितनवजलधरेषु विद्युतो यथा ॥ ९ आरुष्टदुष्टरिपुकण्ठमुक्ताः शराः भल्लयः 'शैलाः' प्रस्तराः इव पतन्ति उल्काः । कृतस्वामिकार्याः स्फुटं सत्यसन्धाः हर्षेण इव नर्तिताः कवन्धाः ॥ १० °सिच्छिन्न° प्रतौ । असिच्छिन्नसैन्यकरिरुधिरपूरेण समरोदधौ वेलाजलेनेव पूरिते । प्रवहन्ति ऊर्ध्वस्थितदण्डानि च्छत्राणि खलु कूपस्तम्भयुक्तानि यानपात्राणि ॥ ११ °द्धट्ठिय° प्रतौ ॥

अंसिलुणियदंड्ड धवलायवत्तु, लुयसुहडमुंडमुहकुहरपत्तु । नज्जइ विडप्पकवलिज्जमाणु, गयतेउ नाइ सयमेव भाणु ॥
हरि-करि-नरमुंडइं, रयनिब्बुड्डइं, लोहियसित्तइं सहहिं किह १।
वंछियजयसिट्ठिण, पुणु परमेट्ठिण, महियलि वाविय वीय जिह ॥ २५ ॥
इय एवंविहबहुविहजणनिवहवहं वियाणिउं राया । सिरिहरिसो गयहरिसो [य] कामरूवं भणावेइ ॥ २६ ॥
तुममहयं च परोप्परजयसिरिसंबंधबद्धपरिबंधा । ता एहि सयं जुज्झामु हो[उ] सेन्नक्खएणऽमुणा ॥ २७ ॥
पडिवन्नमिमं कामरुयराइणा तयणु विहियतेणुताणा । नाणाउहहत्था दो वि पत्थिवा जुज्झिउं लग्गा ॥ २८ ॥
सुजुज्झमवलोइउं गयणमंडलं रोहिउं, ठिया असुर-किन्नरा भवणवासि-विज्जाहरा ।
तहा विहियमंडणो सुरविलासिणीणं गणो, सविम्हय-भयाउलो पकयकेलिकोलाहलो ॥ २९ ॥
स अज्ज फुडु वंचिओ सुकयकम्मुणा लुंचिओ, पलोयइ इमं न जो इय पयंपिरो नच्चिरो ।
लुलंतजडजूडओ समरकेलिणो कूडओ, पुराहवविसारओ तह वियंभिओ तारओ ॥ ३० ॥
एत्थंतरम्मि पसरंतहरिसतुट्टंततंतुसन्नाहा । ते भूनाहा नीसेसपहरणक्खेवकयकरणा ॥ ३१ ॥

१ असिछूनदण्डं धवलातपत्रं लूनसुभटमुण्डमुखकुहरप्रासम् । ज्ञायते राहुकवलीयमानः गततेजा इव स्वयमेव भानुः ॥ २ हरिकरिनरमुण्डानि रजोनिर्बुडितानि लोहितसिक्तानि राजन्ते कथम् ?। वाञ्छितजगत्सृष्टिना पुनः 'परमेष्ठिना' ब्रह्मणा महितले उप्तानि बीजानि यथा ॥ ३ गतहर्षः ॥ ४ तनुत्राणं–कवचम् ॥ ५ भुव° प्रतौ ॥ ६ °चिउं सुकाय° प्रतौ ॥ ७ °चियं, प° प्रतौ ॥ ८ पूर्वयुद्धविस्तारकः ॥ ९ नार° प्रतौ । 'तारः' प्रधानः ॥

द्वन्द्वयुद्ध-
वर्णनम्

संनि[1]-केउणो व्व तम-ससहर व्व हरि-रामण व्व जुज्झंता। भयतरलच्छं ससुरा-ऽसुराए परिसाए सच्चविया ॥ ३२ ॥
असि-चक्क-कुंत-सबलं[2]-खुरुप्पपमुहाउहेहिं जुज्झंता। तंडविय[3]बाहुदंडा मल्लो व्व परोप्परं लग्गा ॥ ३३ ॥
उट्ठंत-पडंतेहिं विलुलियकेसापडंतकुसुमेहिं। सा समरमही महिलं[4] व्व सहइ दोहिं पि दरमलिया[5] ॥ ३४ ॥
अंच्छरियभूयभूवइरणपेहणनिन्निमेसचक्खूण[6]। आसि विसेसो सुर-माणवाण नह-भूमि[ठाण]कओ ॥ ३५ ॥
अह जमदंडुड्डामरभुयदंडन्नोन्नघायघुम्मंता[7]। वणवारण व्व पंचाणण व्व वा वड्ढिउकरिसा ॥ ३६ ॥
मुट्ठिप्पहारपडिरवविहडियबंभंडभंगकयसंका[9]। निस्संकमुक्कमभरथरहरियसकाणणधरंता[10] ॥ ३७ ॥
तवेलावडणुंप्पडण-घडण-विहडणपवत्तणाकुसला[11]। समसमरजया जाया ते दोन्नि वि हरि-विरंचि व्व ॥ ३८ ॥ किंच—
किं सिरिहरिसो कामरुयनरवरो अहव समरपरिहत्थो[13]। दुल्लक्खमिणं तक्खणमहेसि[14] सुमहेसिणो वि परं ॥ ३९ ॥
तुल्लगुणत्ते एक्कस्स वज्जणं लज्जणं इयरगहणं। इय ते दोन्नि वि वरिय व्व तक्खणं विजयलच्छीए ॥ ४० ॥
एत्थंतरम्मि तप्परमपोरिसुक्करिसहरिसिया[15] तियसा। मुंचंति कुसुमवरिसं ताणुवरिं चारु जुज्झं ति ॥ ४१ ॥

१ शनिकेतू इव तमःशशधरौ इव ॥ २ °ल-क्खुरु° प्रतौ। शर्वलं—कुन्तभेदः ॥ ३ तडवियडवा° प्रतौ। ताण्डवित—नर्तित ॥ ४ °ल व स° प्रतौ ॥ ५ ईषन्मृदिता ॥ ६ आश्चर्यभूतभूपतिरणप्रेक्षणनिर्निमेषचक्षुषाम्। आसीद् विशेषः सुरमानवानां नभोभूमिस्थानकृतः। सुराः नभसि स्थिताः मानवाश्च भूमौ स्थिता इति भावः ॥ ७ यमदण्डभयङ्करभुजादण्डान्योन्यघातघूर्णमानौ ॥ ८ °दंडुन्नो° प्रतौ ॥ ९ मुष्टिप्रहारप्रतिरवविघटितब्रह्माण्डभङ्गकृतशङ्कौ। निःशङ्कमुक्तक्रमभारकम्पितसकाननधरान्तौ ॥ १० °भंडक° प्रतौ ॥ ११ तद्वेलापतनोत्पतनघटनविघटनप्रवर्त्तनाकुशलौ। समसमरजयौ जातौ ॥ १२ °णुप्पिड° प्रतौ ॥ १३ परिहस्तः—निपुणः ॥ १४ तक्खण° प्रतौ ॥ १५ तत्परमपौरुषोत्कर्षहृष्टाः त्रिदशाः ॥

दूरं उस्सारित्ता य विंति भो राइणो ! मुयंह रोसं । वचह जहागयं नत्थि नूण तुम्हाण पडिमल्लो ॥ ४२ ॥
विजयसिरी तुम्हाणं मज्झेत्थ चिय समुवहउ रागं । अत्थंतुदयंताणं ससि-दिवसयराण संज्झ व ॥ ४३ ॥
इय ते भूमीवइणो सुरययणुवरोहसंहरियसमरा । असंमत्तवंछियत्था सं ठाणं पडिगया नवरं ॥ ४४ ॥
सिरिहरिसो रिउणो अकयनिग्गहं चिग्गहं किलेसफलं । अप्पाणं अप्पाणं व चिंतमाणो दढं त्रिमणो ॥ ४५ ॥
रणरणयमुव्वहंतो लज्जाए जणं पि दट्ठुमचयंतो । सिरिदेवं नियरज्जे ठविउं सारेउमाढत्तो ॥ ४६ ॥

वच्छ ! सिरी हरिणो वि हु न थिरा रज्जं च बहुविहावायं । अजसो य नरयहेऊ ता तुह संहिप्पए किं पि ॥४७॥
अट्ठ न कीरंति सया अट्ठ य कीरंति अट्ठ मुंचिति । अट्ठ धरिज्जंति मणे न बीमसेयव्वमट्ठन्हं ॥ ४८ ॥
खलसंगो कुकलत्तं कोहो वसणं मओ य कुधणं च । कुग्गाहो मुक्खत्तं अट्ठ न कीरंति एयाइं ॥ ४९ ॥
कित्ती सुगुणब्भासो कलासु कुसलत्तणं सुमित्तो य । दक्खिन्नं करुणा उज्जमो दमो अट्ठ कीरंन्ति ॥ ५० ॥
निल्लज्जिमा अविणतो कुसीलया निट्ठुरत्तणं माया । अनओ अजममसच्चं अट्ठ वि मुचंति मच्चं ति ॥ ५१ ॥
उवयारो पडिवन्नं, सुभासियं मम्म सुद्धविज्जा य । देवो य गुरू धम्मो अट्ठ धरिज्जंति हिययम्मि ॥ ५२ ॥

अष्टाष्टौ अ-कर्त्तव्यकर्त्त-व्यमोक्तव्य-धर्त्तव्यावि-श्वस्यानि

१ मुहय रोसं प्रतौ ॥ २ °ज्झत्थो चिय प्रतौ ॥ ३ °यसयसमरा प्रतौ ॥ ४ असमाप्त-॥ ५ स्वम् ॥ ६ आत्मानं 'अप्राणं' निर्बलम् ॥ ७ 'रणरणकं' उद्वेगम् ॥ ८ अशक्नुवन् ॥ ९ °देवम्निय° प्रतौ ॥ १० कथ्यते ॥ ११ °ट्ठ य मु° प्रतौ ॥ १२ °रत्ति प्रतौ ॥ १३ निलज्जि° प्रतौ ॥ १४ मम सुद्धवि° प्रतौ ॥

कामुय-भुयंग-जल-जलण-जुवइ-रिउ-रोग-भूमिनाहाणं । अट्ठण्हं मा पुत्तय ! सुमिणम्मि वि वीससेज्जासि ॥ ५३ ॥
इय वच्छ ! तुज्झ साहेमि केत्तियं ? तह कहं पि रज्जभरं । धारेज्जसु जह न खलाण हासपयं[1]वि पवज्जेसि ॥ ५४ ॥

एवं सुयसिक्खवणं काउं गहिउं च तावसाण वयं । देवीय[2] समं राया गओ महासेलवणवासं ॥ ५५ ॥
सिरिदेवो पुण रज्जं अणुरत्तासेससमंति-सामंतं । पालियपयईवग्गं सासइ[3] नीतीए पंथो व ॥ ५६ ॥

अह सुंमरियपियवइरो[4] कामरुयनिवो समग्गबलकलिओ । दूयनिवेइयवत्तो समागओ देससंधीए ॥ ५७ ॥
नाऊण तदागमणं निब्भयचित्तो निवो वि सिरिदेवो । एगंते ठाऊणं मंतीणमिमं निवेदेइ ॥ ५८ ॥
कुडिला कज्जाण गई मई वि तुच्छा रिऊ [य] सामरिसो । एवं ठियम्मि कज्जे किं कीरउ ? कहह परमत्थं ॥ ५९ ॥

मंतीहिं जंपियं देव ! जुत्तमेयं सुनिच्छिउं[5] कज्जे । कीरंते देव्वसा नावजसो विहडिए वि भवे ॥ ६० ॥
सत्तू इमो समत्थो तुब्भे य अदिट्ठसमरवावारा । दइवबलं दुन्नेयं सहाइसत्ती वि संदिद्धा[6] ॥ ६१ ॥
ता साम-भेय-दाणाइं मोत्तुं[7] अन्नं न देव ! रिउविजए । नीईं पेच्छामो कुणहमेत्थ[8] जत्तं लहुं तम्हा ॥ ६२ ॥
सामेण हवइ मित्तो परो वि भेएण भिज्जइ सुही[9] वि । दाणेण सेलघडिया देवा वि वसं पवज्जंति ॥ ६३ ॥

हीनबलस्य राज्ञः नीतिः

१ °यडिं प° प्रतौ ॥ २ देव्या ॥ ३ °सय नी° प्रतौ । शास्ति नीत्याः पन्था इव ॥ ४ स्मृतपितृवैरः ॥ ५ सुनिश्चित्य कार्ये क्रियमाणे दैववशाद् नापयशः विघटितेऽपि भवेत् ॥ ६ °दिट्ठा प्रतौ ॥ ७ मोत्तुं अन्नोन्न देव प्रतौ ॥ ८ °मेत्त जत्तं प्रतौ ॥ ९ मुही प्रतौ ॥

एए जहजोग्गं जुंजिऊण दंडे वि जइ सगुज्जमसि । मसिकुच्चयं रिऊणं मुहेसु ता देसि निब्भंतं ॥ ६४ ॥
एवंविहे[1] पयत्ता पत्ता लच्छि निवा सुतुच्छा वि । इय विवरीयरया पुण गरुया वि गया लहुं निहणं ॥ ६५ ॥
ता देव ! सत्तु-सामंत-मंति-मित्ताण जाणिउं चित्तं । पव्वइयनरेहिं तओ तदुचियसामाइ जुंजित्ता ॥ ६६ ॥
आयरसु विजयजत्तं लहसु जयं ज्झत्ति पाउणसु कित्तिं । मंजसु मडप्फरं वेरियाण कयनीतिसन्नाहो ॥ ६७ ॥
अह परिभाविय तव्वयणमीसि हसिऊण जंपियं रन्ना । वणियाणं विप्पाण य होइ मई एरिसी चेव ॥ ६८ ॥
कहमन्नहमप्पडिमल्लरायसिरिहरिसदेवपुत्तस्स । मज्झ वि पुरओ एरिसमहम्मरणकम्ममुवइसह ? ॥ ६९ ॥
अविमंसिऊण सम्मं तेणेव तिणं व मंतिणो लहुया । जहतह पयंपमाणा वच्चंति पराभवट्ठाणं ॥ ७० ॥
ता होउ मंतिएणं रे रे पडिहार ! पलयघणघोसं । उकंपियरिउचक्कं लहुं दवावेसु जयढक्कं ॥ ७१ ॥
तत्तो काउं मज्जणमुज्जलपरिहियविसुद्धवरवत्थो । कयमंगलोवयारो जयकुंजरमारुहिय राया ॥ ७२ ॥
मंडलिय-दंडनायग-सेणावइ-सुहडलोयपरियरिओ । भूरिसियछत्तच्छायासंछाइयरविकराभोगो ॥ ७३ ॥
चउरंगसेन्नसम्मद्दऽमंदनिद्दलियमेइणीवट्ठो । नीहरिओ नयराओ जवेण गंतुं पयट्टो य ॥ ७४ ॥
अक्खलियपयाणएहिं पत्तो नियदेससीमसंधीए । दूयवयणेण तत्तो भणाविओ कामरुयराया ॥ ७५ ॥

१ °ग्गं संजुं° प्रतौ ॥ २ °विहि प° प्रतौ ॥ ३ °डफरं प्रतौ । गर्वम् ॥ ४ तन्नय° प्रतौ ॥ ५ ईदृशम् अधर्मरणकर्म उपदिशथ ॥ ६ अविमृश्य ॥ ७ °यच्छत्तच्छाया° प्रतौ ॥ ८ °द्दमसंद्दनि° प्रतौ ॥

पुव्वपवाहेणं चिय जुज्झामो एहि किं जणवहेणं ? । तेणं पयंपियं जइ जुज्झेयव्वं सयं चेव ॥ ७६ ॥

ता किं सेन्नस्स परिग्गहेण ? इय होउ पुव्वरूढीए । सेन्न[1]क्खए य जाए जं उचियं तं करिस्सामि ॥ ७७ ॥

पडिवन्नमिमं तेणं लग्गं जुज्झं बलाण दोण्हं पि । वज्जिररणतूराणं उच्छलिओ बहलतुमुलरवो ॥ ७८ ॥

अह पत्तम्मि खणद्धे लद्धोगासेहिं परबलभडेहिं । सिरिदेवबलं पहयं तमं व दिणनाहकिरणेहिं ॥ ७९ ॥

सिरिदेवनरिंदपुरो जाया वत्ता जहा महीवइणो । तुब्भं जय-विक्कम-भीममाइणो निवडिया समरे ॥ ८० ॥

खुभिओ मंतीवग्गो उ[2]व्विग्गो जंपिउं समाढत्तो । होही पुणो वि समओ पज्जत्तं इण्हि समरेण ॥ ८१ ॥

विक्कमबलेण पुणरवि अज्जिज्जइ चिरगया वि रायसिरी । जीयं पुण देव ! गयं न लब्भए तेण जम्मेण ॥ ८२ ॥

अं[3]बयराहुमुहाओ नीहरिउमखंडमंडलो सूरो । अवहरिउं रायसिरिं पुणो वि खंडेइ परतेयं ॥ ८३ ॥

विन्नत्तमिमं पुव्विं पि देवपायाण जुंजिउं नीइं । साम-प्पयाणपमुहं अज्झ[4]वसिज्जउ ततो जुज्झं ॥ ८४ ॥

सच्छंदसीलयाए विवरीयमिमं कयं च देवेण । दुन्नयतरू स एसो य संपयं फुल्लिओ फलिओ ॥ ८५ ॥

---

१ °न्नखएण जाए प्रतौ ॥ २ उद्विग्नः जल्पितुं समारब्धः ॥ ३ यथा अखण्डमण्डलः 'सूर:' सूर्यः राहुमुखाद् निःसृत्य 'राजश्रियं' चन्द्रतेजः अपहृत्य पुनरपि 'परतेजः' तमःप्रभावं खण्डयति, एवं अखण्डदेशः शूरः आपद्राहुमुखाद् निःसृत्य राजश्रियं अपहृत्य पुनरपि 'परतेजः' शत्रुप्रभावं खण्डयतिं इत्याशयः ॥ ४ अध्यवसीयताम् ॥

॥ ५९ ॥

सुविणिच्छियमंत-सरीररक्खरहियं दढं विचित्तं च । छलइ नरिंदं लच्छी हच्छं नरवर ! भुयंगि व ॥ ८६ ॥
किमेइंकंताणं सोयणेण ? जइ अम्ह जंपियं कुणसु । ता वाउवेगतुरगं आरुहिऊणं अवक्कमसु ॥ ८७ ॥
पुव्वं पि सुव्वइ इमं मुणिऊणं अत्तणो असामत्थं । बंभो चक्की नट्ठो महुराओ जायवपहू वि ॥ ८८ ॥
इय दढमणिच्छमाणो वि सो निवो मंतिपमुहलोएण । निस्सारिओ महाहवभूमीओ जच्चतुरगेण ॥ ८९ ॥
वच्चंतो य कहं पि हु तमाल-तल-कयलिकलियवणसंडं । दिसिवामूढो रा[या] पत्तो अडविं महाभीमं ॥ ९० ॥
परियणजणो वि कत्थ वि य को वि सज्झसवसेण पब्भट्ठो । तुरगो वि गुरुपरिस्समकिलामिओ मच्चुमणुपत्तो ॥ ९१ ॥
सिरिदेवो वि नरिंदो इओ तओ केच्चिरं पि भूभागं । भंमिउं पिवासिओ सिसिरसाहिछायाए आसीणो ॥ ९२ ॥
एत्थंतरम्मि एगो पुलिंदगो गहियकंदमूल-फलो । तं देसमणुप्पत्तो वुत्तो रन्ना य सप्पणयं ॥ ९३ ॥
भो भो महायस ! लहुं लहसु जलं जेलइ मह पिवासग्गी । तह कह वि जह समप्पइ संपइ पुण जीवियवासा ॥ ९४ ॥
इय जंपिरं सरूवं संलोणलोयण-मुहं महासत्तं । तं पेहिउं स तुरियं कत्तो वि जलं पणामेइ ॥ ९५ ॥
तं कंदमूल-फलभोयणं च उवभुंजिउं महीनाहो । आसत्थसरीरो किसलंसत्थरम्मि खणं सुत्तो ॥ ९६ ॥

---

१ यथा भुजङ्गी सुविनिश्चितमन्त्रशरीररक्षारहितं 'नरेन्द्रं' मान्त्रिकं शीघ्रं छलति, तथा सुनिश्चितमन्त्रणाविरहितं 'नरेन्द्रं' राजानमपि राजलक्ष्मीः छलति इति भावः ॥ २ किमइ° प्रतौ ॥ ३ दिग्व्यामूढः ॥ ४ भमिउं प्रतौ ॥ ५ जणइ प्रतौ ॥ ६ समाप्यते ॥ ७ सलवणलोचनमुखम् ॥ ८ अर्पयति ॥ ९ आश्वस्त–॥ १० °लयसरम्मि प्रतौ ॥

खणमित्तम्मि पवुद्धं पुलिंदओ भणइ भो महाभाग[1]!। सुकुमार-सस्सिरीओ वि अडसि अडवीए किं एवं ?॥ ९७ ॥
राया वि नियकहाकहणलज्जिरो[2] कहइ किं पि से वित्तं। सेविगच्छणं हि गरुयाण सेसदुक्खाण दुक्खयरं ॥ ९८ ॥
भणितो य भूमिवइणा पुलिंदओ भद्द! किं पि दंसेसु। चित्तक्खेवुप्पायगमडगपदेसं[3] ममं ताव ॥ ९९ ॥
तेणं पयंपियं एहि जेण दंसेमि तो महीनाहो। तेणं समं पयट्टो गंतुं कोऊहलाउलिओ ॥ १०० ॥
जा केच्चिरं पि वच्चइ अच्चंतुच्चं[4] सिलुच्चओद्देसं। ता एगाए गुहाए देहपहापहयतिमिरभरं ॥ १०१ ॥
सूरं व राहुखंडणभएण दिवोसहीसमूहं व। वाइयभीयं लीणं उस्सग्गगयं मुणिं नियइ ॥ १०२ ॥
सायरपणमंत-थुणंत-इंत-वच्चंतखयर-सुरनियरं[5]। तं च निएऊण[6] निवो हरिसियवयणो विचिंतेइ ॥ १०३ ॥
चोज्जं[7] महंतमज्ज वि वंजियवज्जाइं[8] जोगसज्जाइं। दीसंति संतरूवाइं साहुरयणाइं इहइं पि ॥ १०४ ॥
कयजुगजणनिम्माणुचियचारुगुणगणगिहं[9] इमं मन्ने। गिरिगुविलगुहानिहियं निहिं व रक्खइ विही संखं[10] ॥ १०५ ॥
अहवा इमस्स सेलस्स एयमिह होज्ज सारसवस्सं। अच्चंतनिच्चलाइं कहमन्नह एयअंगाइं ? ॥ १०६ ॥
इय तद्दंसणविम्हयवियसियलोयणमुहं महीवालं। वावारंतरविरयं पुलोइउं जंपइ पुलिंदो ॥ १०७ ॥

१ °भागो प्रतौ ॥ २ स्वविकत्थनम् ॥ ३ °पवेसं समं प्रतौ। अटकप्रदेशम् माम् ॥ ४ अत्यन्तोचम् ॥ ५ सादरप्रणमत्स्तुवत्आयद्व्रजत्खचरसुरनिकरम् ॥ ६ दृष्ट्वा ॥ ७ आश्चर्यम् ॥ ८ वर्जितवर्ज्यानि ॥ ९ कृतयुगजननिर्माणोचितचारुगुणगणगृहम् ॥ १० साक्षात् ॥

नरवर! इमस्स मुणिणो किं रूवं मुणउ मारिसो मंदो?। नवरं दिव्वोसेहिसाहिसाहियं पिव इमं मन्ने ॥ १०८ ॥
कहमन्नहा विरायइ सवणपुडं नागदमणिसारिच्छं। हिरिवेरमूलसुहुमा सुगंधिणो वा सिरोकेसा ॥ १०९ ॥
तंचोट्ठपुडट्ठ........कसिणसिणिद्धा य सहइ रोमाली। एयस्स कालिया तालिय व सोवन्नवन्नकए ॥ ११० ॥
छायातरुं य पेच्छसु अच्छिन्नच्छायमंगमेयस्स। नवपल्लव व कंकेल्लिणो करा तह विरायंति ॥ १११ ॥
थलकमलनिव्विसेसं उम्मुहपसरंतनहमणिमऊहं। चलणजुयं समहियवीयरविकर (?) व गिरिमिव सहइ ॥ ११२ ॥
इय भूमिपाल! साहेमि केत्तियं एयसन्तियं तुज्झ?। पयइपसुनिव्विसेसो साहीण सया वि सहवासी ॥ ११३ ॥
उल्लवइ तं नरिंदो को एवं भासिउं परं सक्को?। अत्तबहुमाणविमुहाइं अहव हियपाइं गरुयाण ॥ ११४ ॥
ता होउ दाणि भणिएण एहि एयस्स पायपडणेण। इय अप्पाणं कुणिमो पूयमप्पडिमधम्मस्स ॥ ११५ ॥
इय ते भूमंडलसम्मिलंतभालयलल्लुलियसिरकेसा। नमिउं मुणिं निविट्ठा उचियट्ठाणे पहिट्ठमणा ॥ ११६ ॥
साहू वि जहोच्चियकिच्चंसेसमवसेसिऊण आसीणो। जंपइ कत्तो? के वा तुब्भे? किं चेह कज्जं? ति ॥ ११७ ॥
रन्ना पयंपियं कज्जमेत्थ तुम्हाण ताव पयनमणं। सेसं तु चित्तसंतावयं ति नो साहिउं जुत्तं ॥ ११८ ॥
तो दिव्वनाणबलकलियसयलतव्वइयरेण मुणिवइणा। भणियं नरिंद! सविसायमेरिसं किं समुल्लवसि? ॥ ११९ ॥

१. दिव्यौषधिसाखिसाधितमिव ॥ २ "सन्तियं" प्रतौ। एतत्स्थाने [illegible]। प्रकृतिपशुनिर्विशेषः शाखिनो सदाऽपि सहवासी ॥ ३ 'पूतम्' पावनम् ॥ ४ "उणस" प्रतौ ॥ ५ यथोचितकृत्यशेषम् 'अवशेष्य' समाप्य ॥ ६ "किच्चिसे" प्रतौ ॥ ७-तद्व्यतिकरेण ॥

[1]मणिकुट्टिमसयताडियकं[2]दुयउप्फिडण-पडणपडितुल्लं। [3]भवभमिरजंतुविलसियमवगच्छसि किं न नीसेसं ? ॥ १२० ॥
किं [4]वा कोटरपज्जलिरजलणडज्झंतपायवप्पडिमं। करिचरणचंपिउप्पलमालं पिव बाहसी देहं ? ॥ १२१ ॥
[5]जाहे थिर-थूरगिरि-भवण-वण-नइ-सिंधुणो न ते वि थिरा। किं पुण रायसिरी स[6]रयसेलसरिय व पयइचला ? ॥ १२२ ॥
अहवा चडुलतुरं[गम]खरखुर-पुच्छच्छडाविहुरिय व। [7]सुप्पाणुरूवकरिकन्नतालतालिज्जमाण व ॥ १२३ ॥
[8]दप्पुब्भडसुहडकरावरुद्धपहरणसमूहभीय व। र[9]यचलिरचामरानिलगुरुलहरीहीरमाण व ॥ १२४ ॥
[10]कलिकालकलियकलुसिज्जमाणभूनाहदढविरत्त व। गुरुसिक्खासवणुप्पन्न[कन्न]सूलाइरेग व ॥ १२५ ॥
कह कुणउ अवत्थाणं पत्थिव ! लोयम्मि निच्चकालं पि। रायसिरी पुरिसविसेसविसयविन्नाणविमु[11]हंवई ? ॥ १२६ ॥
इय नरवरिंद ! बाढं [12]निरुंभिउं रायलच्छिवामोहं। तं निच्चलत्तकारणमवरं वावारमणुसरसु ॥ १२७ ॥
जइ ताव चित्तसंतावमेत्तओ चिंतियाइं सिज्झंति। ता ज्झाण-दाण-तवमाइएहिं किं खि[13]ज्जए लोए ॥ १२८ ॥
रन्ना भणियं भयवं ! अवितहमेयं ति किंतु कलुसमई। अम्हारिसो [14]जणोऽयं जहतह सुहसिद्धिमभिलसइ ॥ १२९ ॥

---

१ मणिकुट्टिमशगताडितकन्दुकोत्स्फटनपतनप्रतितुल्यम्॥ २ °कंडिय° प्रतौ ॥ ३ भमभमि° प्रतौ ॥ ४ किं वा कोटरप्रज्वलनशीलज्वलनदह्यमानपादपप्रतिमम्। करिचरणाक्रान्तोत्पलमालामिव ॥ ५ यदा स्थिरस्थूलगिरिभवनवननदीसिन्धवः ॥ ६ शरच्छैलसरिदिव ॥ ७ सूर्पानुरूपकरिकर्णताडताड्यमानेव ॥ ८ वेगचलनशील— ॥ ९—ह्रियमाणा ॥ १० कलिकालकलिकाकलुष्यमाणभूनाथदृढविरक्तेव। गुरुशिक्षाश्रवणोत्पन्नकर्णशूलातिरेकेव ॥ ११ विमुखवती—विमुखेत्यर्थः ॥ १२ निरुध्य राजलक्ष्मीव्यामोहम् ॥ १३ खिद्यते लोकः ॥ १४ जणोहं जह° प्रतौ ॥

न मुणइ कारणरहियं कज्जं कह जायइ ? त्ति तारूवं । संखेवसारभूयं किं पि वएसं महं देहि ॥ १३० ॥
तो तज्जुग्गयमुवलब्भ साहुणा चंदणं व मलयाओ । नंदणवणाउ कप्पदुमं व जलहीउ अमयं व ॥ १३१ ॥
पारगयपणीयाओ पवयणाओ पहाणओ परमो । पंचपरमेट्ठिमंतो उवइट्ठो इट्ठसिद्धिकरो ॥ १३२ ॥
सम्मत्तनिच्चलत्तं परमं नरनाह ! नवरि कायव्वं । उच्छुलय व्व न किरिया एयंविउत्ता फलं देइ ॥ १३३ ॥
अन्नं च पंचमंगलसुयखंधो एस गिज्जए समए । पढमुच्चारो सत्थाण दिव्वमंताण पणवो व्व ॥ १३४ ॥
एसो य उद्दिसिज्जइ जिणभवणे नंदिविरयणापुव्वं । तो कीरंतुवकासा पढमं चिय पंच एगसरा ॥ १३५ ॥
तो अट्ठ अंबिलाइं दिज्जइ नवकारवायणा तत्तो । तिहिं उववासेहिं ततोऽणुन्नवणा कीरइ इमस्स ॥ १३६ ॥ तहा—
इह साहुपए नव अक्खराइं पंचेव हुंति सिद्धपए । अरिहंताइपएसुं पत्तेयं सत्त सेसेसुं ॥ १३७ ॥
अरिहंताई पंच वि पयाइं वीयाइं परममंताणं । एयाणुवरिं चूला "एसो पंच" त्ति एमाई ॥ १३८ ॥
तेत्तीसऽक्खरमाणा इमा य तेत्तीसपयडणपहाणा । एवं [एस] समप्पइ फुडमक्खरअट्ठसट्ठीए ॥ १३९ ॥
एवं पढिओ एसो विहीए लक्खेण सेय-सुरहीणं । कुसुमाणं पुण जविओ भवेण तदेगचित्तेणं ॥ १४० ॥
वियरइ भुवणऽब्भहियं तित्थंकर-चक्कि-गणहरपयं पि । जहतह सुलभाणं पुण का वत्ता सेसवत्थूण ? ॥ १४१ ॥

पञ्चनमस्कारारा-धनविधिः

१ किमप्युपदेशम् ॥ २ पारगताः–तीर्थकराः ॥ ३ सम्यक्त्वविरहिता क्रिया इक्षुलतावत् फलवन्ध्या ॥ ४ °यवेउ° प्रतौ ॥ ५ 'प्रणवः' ॐकारः ॥ ६ क्रियन्ते उपवासाः ॥ ७ °मस्सं प्रतौ ॥

अंतोऽरिहंतविन्नास दाहिणावत्त सिद्धमाईणं[1] । ज्झाणं च एत्थ किच्चं निच्चं परमेट्ठिमुदाए ॥ १४२ ॥ किंच—
करआवत्ते जो पंचमंगलं साहुपडिमसंखाए[2] । नववारा आवत्तइ छलंति नो तं पिसायाई ॥ १४३ ॥
एयप्पभावमहवा सव्वं सव्वन्नुणो च्चिय मुणंति । तल्लेसुद्देसं पुण पत्थिव ! तुह किं पि उवइट्ठं ॥ १४४ ॥
तो तक्खणदक्खिणविप्फुरंतलोयणविभावियऽब्भुदओ । नमिऊण मुणिं राया जंपेउमिमं समाढत्तो ॥ १४५ ॥
भयवं ! कुणसु पसायं जहाविहीए ममं इमं देह । मा जियचिंतारयणं विफलं तुह दंसणं होउ ॥ १४६ ॥
तो जोगो त्ति विभाविय मुणिणा सो संतिनाहजिणभवणे । तीए गुहाए अदूरे नीओ वंदाविओ देवे ॥ १४७ ॥
गुरु-देव-तत्तपयडणपुव्वं सम्मत्तमुत्तमं दाउं । पंचपरमेट्ठिमंतो उवहाणपुरस्सरं दिन्नो ॥ १४८ ॥
उववूहिओ य गुरुणा[3] देवाणुप्पिय ! तुमाउ नो अन्नो । धन्नो जए वि विज्जइ कहमन्नह एयसंपत्ती ? ॥ १४९ ॥
अवि लब्भइ चक्कित्तं सुराहिवत्तं सुरूव-सोहग्गं । न पुण परमेट्ठिमंतो एसो नीसेसकुसलकरो ॥ १५० ॥
जं कहिउं पि न तीरइ[4] न य जं विसए वि पडइ बुद्धीए । जं गोयरे य न मणोरहाण न मणे वि जं ठाइ ॥ १५१ ॥
तं पि हु अचिंतमाहप्पपंचपरमेट्ठिमंतसामत्था । सज्जो कज्जं पुरिसो साहइ लीलाए निब्भंतं[5] ॥ १५२ ॥
पेच्छसि इमं च जं भूमिनाह ! जिणसंतिमंदिरमुदारं । तं पि हु थेवाराहियपंचनमोकारविप्फुरियं[6] ॥ १५३ ॥ तहाहि—

१ अर्हद्विन्यासः दक्षिणावर्त्तम् । लुप्तविभक्तिके पदे ॥ २ साधूनां प्रतिमाः द्वादश इति द्वादशसंख्ययेत्यर्थः ॥ ३ °णा भो दे° प्रतौ ॥ ४ शक्यते ॥ ५ 'निर्भ्रान्तं' निःशङ्कम् ६ ॥ °विफुरि° प्रतौ ॥

सोहम्मदेवलोए हेमपभो नाम आसि वरतियसो । छम्माससेसमाउयमवगच्छिंय अप्पणो सो य ॥ १५४ ॥
पुच्छेइ केवलिं वंदिऊण एत्तो चुयस्स मे भंते ! । कत्थुप्पत्ती होही ? कहं व बोहीए लाभो य ? ॥ १५५ ॥
तो केवलिणा भणियं पज्जंते भद्द ! अट्टज्झाणेणं । मरिऊण वानरो तं होहिसि एयाए अडवीए ॥ १५६ ॥
तत्थ य किलेससज्झो होहीय कहं पि बोहिलाभो य । इय सोउं सो तियसो इममडविं आगतो तुरियं ॥ १५७ ॥
उक्किन्नो सेलसिलाए बोहिहेउं च एस नवकारो । समए कालं काउं उववन्नो वानरत्तेण ॥ १५८ ॥
कह कह वि तुंडिवसेणं तेण भमंतेण सेलसिहरेसु । दिट्ठा सा उक्किन्ना पंचनमोक्कारपयपंती ॥ १५९ ॥
तं च विभावितो से जाईसरणेण मुणियपुव्वभवो । वेरग्गावडियमई घेत्तूणं अणसणं सम्मं ॥ १६० ॥
तं चेव नमोक्कारं सरमाणो पाविऊण पंचत्तं । देवो पुणो वि जा[ओ] सोहम्मे हेमपभनामो ॥ १६१ ॥
किं दिन्नं ? किं तवियं ? किं जट्ठं वा मए चिरभवम्मि ? । इय जाव सो विभावइ ता जायं जाइसरणं ति ॥ १६२ ॥
तो विन्नायजहट्ठियभावो मोत्तूण देवकिच्चाइं । आगच्छइ इह ठाणे पेच्छइ विज्जाहरे य तहिं ॥ १६३ ॥
विज्जाहराण हेउं संतिजिणिंदालयं पकाउमणे । तो ताण अप्पणो वि य अणुग्गहट्ठा ससत्तीए ॥ १६४ ॥
फलिहमणिमसिणभूमियममियत्थंभावलीविरायंतं । नियगरिमविजियगिरिवरमाययणं संतिणो कुणइ ॥ १६५ ॥

नमस्कारमाहात्म्ये हेमप्रभदेवसम्बन्धः

---

१ °ट्टज्झाणे° प्रतौ ॥ २ °योहिहे° प्रतौ ॥ ३ भाग्यवशेन ॥ ४ 'विभावयन्' चिन्तयन् सः ॥ ५ °क्कारो, स° प्रतौ ॥ ६ 'इष्टम्' पूजितम् ॥
७ स्फटिकमणिमसृणभूमिकम् अमितस्तम्भावलीविराजमानम् ॥

एयस्स अदूरम्मि पंचनमोक्कारअक्खरसिलं पि । उत्तरदिसाए अज्ज वि पेच्छसु जइ कोउगं अत्थि ॥ १६६ ॥
उवसंतदिट्ठियं अणसणट्ठियं ईसिविहंडिउड्डउडं । सिरि विरइयकरकोसं तह घडियं वानरं तं पि ॥ १६७ ॥ छ ॥
एवं निसामिऊणं राया अच्चंतविम्हयाउलिओ । तम्मि ठाणम्मि गतो दिट्ठं च जहट्ठियं सव्वं ॥ १६८ ॥
अह जायपच्चओ सो पच्चागंतूण पणमइ तवस्सिं । आवद्धकरयलंजलि पयंपए वयणमेयं च ॥ १६९ ॥
जह सिट्ठं पहु ! तुमए तहे[व] तं सव्वमेवमविगप्पं । अवि चलइ तियससेलो न तुम्ह वयणं पुण कहिं पि ॥ १७० ॥
पुव्वं पि निच्चलमणं विसेसतो तक्खणं महीवालं । अणुसासिय आपुच्छिय जहागयं पडिगओ साहू ॥ १७१ ॥
राया वि संतिजिणपायपउमपुरओ पयत्तकयझाणो । पंचनमोक्कारुच्चारपुव्वयं नाणसुदाए ॥ १७२ ॥
सिय-सुरहि-चारु कुसुमं ता मुंचइ जा समप्पए लक्खो । थेवेण नेव कत्तो वि तत्र कयबहलहलबोलो ॥ १७३ ॥
सद्देवत्तं व जए पइट्ठियं गरुयदेहदंडेण । आयासं व मिणंतो भीमाण वि जणियभूरिभओ ॥ १७४ ॥
निट्ठुरपयभरफुट्टंतमेइणीवट्टहलहलियसेलो । तद्देसखेत्तवालो समागओ करकयकवालो ॥ १७५ ॥
भणियं च तेण रे रे नराहमा ! विरम मंतसरणाओ । को एस मूढ ! मंतो ? को वा एयस्स दाया वि ? ॥ १७६ ॥
सव्वं आलप्पालं किं खिज्जसि ? किं न जासि नियभवणं ?। जलकप्पणा न मायण्हियासु तण्हं पसामेइ ॥ १७७ ॥

---

१ अच्छि प्रतौ ॥ २ ईषद्विघटितौष्ठपुटं शिरसि ॥ ३ °उभिओ प्रतौ ॥ ४ °यज्झा° प्रतौ ॥ ५ °वत्तम्व जए प्रतौ ॥ ६ आकाशम् ॥
७ निष्ठुरपदभरस्फुटन्मेदिनीपट्टकम्पितशैलः ॥ ८ मृगतृष्णिकासु तृष्णां प्रशमयति ॥

सिरिसंतिनाहपयदंसणे वि न य अत्थि जोग्गया तुज्झ। ता अप्पाणं अमुणिय कीस मुहा कुणसि ववसायं ॥ १७८ ॥
किं बहुणा भणिएणं ? जिणभवणावग्गहं लहुं चयसु। अह को वि भडमओ ते ता सज्जो होसु जुज्झत्थं ॥ १७९ ॥
इय जाव सो पयंपइ संरोसविप्फारियऽच्छिविच्छोहो। कीणासभिमु[ह]कुडिलं च केत्तियं किं पि कंपइ या ॥ १८० ॥
ता गुं[रु]-मन्तावन्नानिसामणुप्पन्नगाढपरिकोवो। राया ज्झाणं मोत्तुं जंपिउमेवं समाढत्तो ॥ १८१ ॥
रे" कडपूयण ! किं पित्तविहुरदेहो व पलवसि जहिच्छं ?। जं पंचनमोक्कारं निंदसि तद्देसगं च गुरुं ॥ १८२ ॥
एयं पि मूढ ! न मुणसि ! एयाणऽग्घो न तिहुयणेणावि। पाविज्जइ काउं सुंदरं च एत्तो वि नत्थि परं ॥ १८३ ॥
ही ! मोहविलसियाइं जंवसगा पाणिणो न याणंति। धत्तूरयरसिया इव सुहमसुहं गज्झमियरं वा ॥ १८४ ॥
अहवा छुहा-पिवासाकिलामणा-ऽयाणचायलद्धेण। देवत्तेणं इय हवइ निच्छियं वयणविन्नाणं ॥ १८५ ॥
तुच्छाणं तुच्छाइं वयणाइं मणोरहा य सीलं च। खंती विणतो य नतो य किमिह ता तुज्झ वयणिज्जं ? ॥ १८६ ॥
तो जायगरुयकोवो खेत्ताहिवई निवं समुल्लवइ। पावियदप्पफलो वि हु न मूढ ! दप्पं परिच्चयसि ? ॥ १८७ ॥
रायाऽऽह रे दुरासय ! को सि तुमं जेण तुज्झ भीओ हं। उज्झामि खत्तकुलजम्मसहयरं दप्पमप्पधणं ? ॥ १८८ ॥

१ अज्ञात्वा ॥ २ सरोपविस्फारिताक्षिविक्षेपः ॥ ३–भ्रुकुटि– ॥ ४ गुरुमन्त्रावज्ञानिशमनोत्पन्नगाढपरिकोपः ॥ ५ रे व्यन्तर ! ॥ ६ निन्दयसि ॥ ७ 'एतयोः' पञ्चनमस्कारस्य सदुपदेशकगुरोश्च ॥ ८ यद्वशगाः ॥ ९ धत्तूरकरसिता इव शुभमशुभं ग्राह्यमितरद्वा ॥ १०–अज्ञानत्याग– ॥ ११ विनयश्च नयश्च ॥ १२ –सहचरं दर्पमात्मधनम् ॥

एसा वि कत्तिया तुह न कन्नकंडूयणे वि मे सत्ता । विहलो इमो वि बालाण खयकरो नणु फडाडोवो ॥ १८९ ॥
खेत्ताहिवो पयंपइ जइ एवं एहि जिणहराओ बहिं । रणमणुचियं हि पुरओ कयजयसंतिस्स संतिस्स ॥ १९० ॥
अह वयणाणंतरमवि दढबद्धनियंसणो[3] निवो झत्ति । नीहरिउं जुज्झेणं लग्गो सह खेत्तवालेणं ॥ १९१ ॥
एत्थंतरम्मि नरवइवामोहुप्पायणट्ठमट्ठदिसं । खित्ताहिवेण ठविया बिभीसियाओ ततो राया ॥ १९२ ॥
एगत्थ कडकडारवरउद्ददंतग्गदारुणायारं । डमडमियडमरुडामरमवलोयइ डाइणीवंद्रं ॥ १९३ ॥
अन्नत्थ वयणपज्जलियजलणजालाकलावदुप्पेच्छं । पेच्छइ वेयालकुलं करतालुत्तालतुमुलरवं ॥ १९४ ॥
एगत्थ संजियकमविडंबिउग्गाढदाढमुहकुहरं । पेच्छइ जलंतनयणं मइंदविंदं जणरउद्दं ॥ १९५ ॥
अन्नत्थ फारफणफलगभीसणं दीहजीहजुयलिल्लं । पम्मुक्कपुक्कनिक्कासियसिहिकणं नियइ फणिचक्कं ॥ १९६ ॥
एगत्थ चंडतंडवियसुंड[11][12]मुड्डमरदंतदढदंडं । अंजणगिरिं व गरुयं अवलोयइ मत्तकरडिघडं ॥ १९७ ॥
अन्नत्थ खयसमीरुच्छालियचुडलीविलुत्तनक्खत्तं[13] । पेक्खइ खयसमयम्मि व पसरंतं वणदवं रुद्दं ॥ १९८ ॥

---

१ कत्तिका ॥ २ कृतजगच्छान्तेः ॥ ३–निवसनः ॥ ४ नरपतिव्यामोहोत्पादनार्थम् अष्टदिक्षु ॥ ५ कटकटारवरौद्रदन्ताग्रदारुणाकारम् । डमडमायितडमरुभयङ्करम् अवलोकते डाकिनीवृन्दम् ॥ ६ सज्जय° प्रतौ । सज्जितक्रमविडम्बितोद्गाढदंष्ट्रामुखकुहरम् ॥ ७ मृगेन्द्र वृन्दं जनभयङ्करम् ॥ ८ जलर° प्रतौ ॥ ९ स्फारफणाफलकभीषणं दीर्घजिह्वायुगलवन्तम् । प्रमुक्तपूत्कृतनिष्काशितशिखिकणं पश्यति फणिचक्रम् ॥ १० पंचमु° प्रतौ ॥ ११ चण्डताण्डवितशुण्डं महाभयङ्करदन्तदृढदण्डम् ॥ १२ °सुंडमुंडडमुडमर° प्रतौ ॥ १३ क्षयसमीरोच्छालितोल्मुकविलुप्तनक्षत्रम् ॥

एगत्थ चाव-कुंता-ऽसि-रोव-नाराय-चक्कलेल्लक्कं । आलोकदडुक्कंतं दुवारं वेरिवारवलं ॥ १९९ ॥
अन्नत्थ मच्छ-कच्छभपुच्छुच्छालियमहल्लकल्लोलं । खयसिंधुणो व्व वेलं देहेइ पवलं जलुप्पीलं ॥ २०० ॥
इय पेच्छिरो[3] वि राया न पंचपरमेट्ठिमंतमाहप्पा। खुब्भइ भमई विरमइ गुप्पइ तम्मइ किलम्मइ य ॥ २०१ ॥ किञ्च–
क्षणं कृतकचग्रहाकुलितकन्धराकन्दलं, निमेषविमुखस्फुरन्नयनतारतारं क्षणम् ।
क्षणं गुरुपरिश्रमश्वदजस्रघर्मोदकप्लुतावनितलं क्षणं दशनदष्टदन्तच्छदम् ॥ २०२ ॥
क्षणं करसरोरुहप्रहतमेदुरोरःस्थलं, क्षणं च परिवर्तनश्लथगलत्कटीशाटकम् ।
क्षणं करणकल्पनाप्रकटपाटवाडम्बरं, तयो रतमिवाभवत् स[म]रकर्म चित्रक्रियम् ॥ २०३ ॥
एत्थंतरम्मि चेइयचिंताविणिउत्ततियसवयणाओ । मुणिउं तव्वुत्तंतं हेमप्पभो तत्थ ओइन्नो ॥ २०४ ॥
निद्धाडिऊण खित्ताहिवं लहुं सायरं निवं भणइ। उवविस विमुंच रणमिण्हि भो महाभाग ! सुणसु गिरं ॥ २०५ ॥
एसो खु पुंडरीय त्ति खेत्तवालो मए इह निउत्तो । चेईय-साहम्मियकिच्चकरणहेउं दुरायारो ॥ २०६ ॥
साहम्मियकिच्चं पुण कयमेवंविहमणेण मूढेण । केलीकिलाणमहवा गुण-दोसवियारणं कत्तो ? ॥ २०७ ॥
ता दुव्विलसियमेयस्स खमह मह सव्वेहोवरोहेण । मिच्छावराहदूसणमवणेयं सामिणा चेव ॥ २०८ ॥

१ चापकुन्तादयोऽस्त्रशस्त्रभेदविशेषाः ॥ २–भयङ्करम् । आलोकदडोत्क्रान्तम् ॥ ३ पश्यति ॥ ४ दर्शनशीलः ॥ ५ °रच्छलं प्रतौ ॥ ६ °भमत् प्रतौ ॥ ७ सादरम् ॥ ८ चैत्यसाधर्मिककृत्य– ॥ ९ °व्वहाव° प्रतौ ॥

रायाऽऽह भो महायस ! किं संतप्पसि तुमं इह पयत्थे ?। एयस्स को णु दोसो ? मह पुन्नविवज्जओ एस ॥ २०९ ॥
कहमन्नहा [तहा]विहनिरुद्धमण-वयण-कायपसरस्स । थेवेणापुन्नमणोरहस्स चित्तं चलिज्ज ममं ? ॥ २१० ॥
किमहं न एत्तियं पि हु मुणेमि ? जं वंछियत्थसिद्धीओ । पच्चूहवूहविहुणियपसराओ[1] हवंति पाएण ॥ २११ ॥
देवेण जंपियं भो नरिंद ! सच्चं इमं जओ भावी । विज्जाहरचक्कि च्चिय एवं जविउं लहइ लक्खं ॥ २१२ ॥
तुह पुण थेवेणापुन्नपंचनवकारलक्खजावस्स । कित्तेमि भूवइत्तं सुनिरुत्तं[2] करतलनिलीणं ॥ २१३ ॥
ता एहि सयलतयलोयपणयचरणं[3] जिणं थुणामो त्ति । ता दो वि ते पयट्टा भत्तीए वंदिउं संतिं ॥ २१४ ॥

यस्य स्तुतौ त्रिजगती युगपत् प्रवृत्ताऽप्यन्तं न गन्तुमलमुज्ज्वलसद्गुणानाम् ।
वृन्दारकाधिपतिवन्द्य[4]पदारविन्दो[5], जीयात् स शान्तिरुपकल्पितविश्वशान्तिः ॥ २१५ ॥
ब्रह्मा वरीयान् धृतिवृद्धिसिद्धः, ध्रुवः शुभः शोभनहर्षणश्च ।
सत्प्रीतिसौभाग्यसुकर्मसिद्धि [............................ ॥ २१६ ॥
.... ।
....] रित्थं सुयोगमय एव मुदेऽस्तु शान्तिः ॥ २१७ ॥

१ प्रत्यूहव्यूहविधुनितप्रसराः ॥ २ सुनिश्चितं करतलनिलीनम् ॥ ३ सकलत्रैलोक्यप्रणतचरणम् ॥ ४ °न्दारिका° प्रतौ ॥ ५ °पादा° प्रतौ ॥

एवं थुणिउं संति हेमगढो जिणहराउ नीहरिओ । वसुहाहिवेण य समं आरूढो वरविमाणम्मि ॥ २१८ ॥
गणविजयिणा जवेणं मरोलनण-काणणं धरामोगं। पेहंता सुमहढं कंपिल्लपुरं लहुं पत्ता ॥ २१९ ॥
हेमदपमेण तत्तो निवेसिउं पुव्वपुहइपालपए। सो सिरिदेवनरिंदो दुदंतजणं हणेऊण ॥ २२० ॥
सो वि य कामरूयनिवो हेच्छं आणावडिच्छओ विहिओ। अन्ने वि वंग-कालिंगराइणो गाहिया सेवं ॥ २२१ ॥
इय पुव्वरायसमहियरायसिरिं लंभिऊण तं देवो । जंपइ परं पि साहेहि भो ! पियं किं पणामेमि ? ॥ २२२ ॥
अह हरिसविसप्पंतुद्धरोमंचराईसमहियरुइरंगो पत्थिवो हत्थकोसं ।
कमलमउलसोहं भालवट्टे ठवित्ता, दरविणमियमीसो सायरं वागरेइ ॥ २२३ ॥
दिट्ठो दुल्लहदंसणो मुणिवरो पत्ता य बोही तओ, संपत्तो परमेट्ठिपंचयमहामन्तो य संती थुओ।
जायं तुज्झऽणुभावओ य सयलं कज्जं च मे वंछियं, किं एत्तो वि पियं परं इह जए जं देव ! जाइज्जए ? ॥ २२४ ॥
तह वि हु विहुणियदारिद्दविद्दवं वंछियत्थदाणखमं। चिंतारयणं व पुणो वि दंसणं तुह महं होज्जा ॥ २२५ ॥
इयजंपिरे नरिंदे देवो सहसा अदंसणीहूओ। राया वि रज्जकज्जाइं चिंतिउं संपयट्टो त्ति ॥ २२६ ॥
अह सुचिरं रायसिरिं उवमोत्तुं मुणियमरणपत्थावो। पुत्तं ठविऊण पए स महप्पा जायवेरग्गो ॥ २२७ ॥

---

१ °ता सम° प्रती । प्रेक्षमाणाः सुमहान्तम् ॥ २ शीघ्रम् आज्ञाप्रतीच्छकः ॥ ३ हर्षविसर्पदूर्ध्वरोमाञ्चराजिसमधिकरुचिराङ्गः ॥ ४ °तुच्छरो° प्रती ॥ ५ °णो य वं° प्रती ॥

पंचपरमेट्ठिमंतं अचंतं माणसम्मि सरमाणो। पंचत्तमणुप्पत्तो चित्तसमाहीए परमाए ॥ २२८ ॥

तो कंपिल्लनिवासी लोगो रायस्स तव्विहं मरणं। दट्ठुं कत्थुववन्नो इमो ? त्ति संजायजिन्नासो ॥ २२९ ॥

जा चिट्ठइ वामूढो ता दढघोसो त्ति केवली पत्तो। सविणयकयप्पणामेण पुच्छिओ सो तओ तेण ॥ २३० ॥

अह केवलिणा सिट्ठो सिरिदेवनराहिवस्स माहिंदे। सुरसिरिलाभो सुंजवियपंचनमोक्कारमाहप्पा ॥ २३१ ॥

तत्तो सुकुलुप्पत्ती कइवयभवभमणओ य सिवलाभो। इय पंचनमोक्कारो सारो नीसेसधम्मस्स ॥ २३२ ॥ किञ्च—

एकैकोऽप्यभिवाञ्छितानि वितरेद् ध्यातोऽर्हदादिर्मुदा, सञ्जेष्ठ्या परमेष्ठिनः किमु परं पञ्चापि चानुस्मृताः ? ।
तत् कः स्वस्य रिपुः ? स्वरिच्छति न कः ? काङ्क्षेत मोक्षं न कः ?, योऽस्मिन् श्रीपरमेष्ठिपञ्चकनमस्कारे न बद्धादरः ॥ १ ॥

किं दानैः ? किमु भूरिशास्त्रपठनैः ? किं देवपादार्चनैः ?, किं ध्यानैस्तपसा च किं ? किमथवा कूटैर्विवेकैरपि ? ।
चेत् संसारसरित्पतौ तरिसमा नैवास्ति कल्याणभूर्भक्तिः श्रीपरमेष्ठिपञ्चकनमस्कारे नृणां निश्चला ॥ २ ॥

वह्न्युद्दीप्तगृहादनर्घमणिवर्ज्जन्येष्वमोघास्त्रवत्, सिन्धौ मज्जदनल्पनौफलकवत् पातेऽथवाऽऽलम्बवत् ।
गृह्णन् पञ्चनमस्कृतिं सकलमप्यन्यद् विहायाऽऽदराद्, जीवो जीवितविप्लवेऽपि न भवत्येवाऽऽपदामास्पदम् ॥ ३ ॥

१ °सुविजय° प्रतौ ॥ २ °कारेमा° प्रतौ ॥ ३ सजेष्ठ्या परमेष्ठिनः किमपरं पञ्चापि नानुस्मृताः ? प्रतौ ॥ ४ °क्षे न मोक्षं च कः, यस्मिन् प्रतौ ॥ ५ कूटैर्वि° प्रतौ ॥ ६ युद्धेषु ॥

पञ्चनमस्कारे श्रीदेवनृपकथानकम्।

पञ्चनमस्कारस्मरणस्य फलम्

स्थिति-गति-सुख-दुःख-स्वप्न-निद्रान्त-हर्म्या-ऽटवि-निशि-दिनपातोत्पातवेलासु येषाम् ।
व्रजति न परमेष्ठिश्रेष्ठमन्त्रो मनस्तस्त इह भवसमुद्राद् द्राग् बहिष्टाद् भवन्ति ॥ ४ ॥

॥ इति कथारत्नकोशे पञ्चनमस्कारे श्रीदेवनृपकथानकं समाप्तम् ॥ १० ॥

पंचनमोक्कारे वि हु अरहंतपयं पयंपियं पढमं । भत्ती य तम्मि त्रिहिया संसारुच्छेयणं कुणइ ॥ १ ॥
सा पुण नज्जइ कज्जेण तं च जिणभवणकारणेण फुडं । अहिगारिणा तयं पुण कारेयव्वं विहीए परं ॥ २ ॥
अहिगारी ये इह गिय निम्मलकुलसंभवो विभवभागी । गुरुभत्तो सुहचित्तो अच्चंतं धम्मपडिबद्धो ॥ ३ ॥
बहुसुहि-सयणो सुस्सूमपमुहगुणसंगओ विसुद्धमई । आणापहाणचित्तो दट्ठव्वो जिणहरविहाणे ॥ ४ ॥
एत्थ विही पुण सुद्धा दवे सल्लाइवज्जिया भूमी । भावे य परापत्तियरहिया पढमं निरूवेज्जा ॥ ५ ॥
वेसा-धीवर-जूयारमाइदुगुंच्छणिज्जजणरहिए । गिहि-साहूणं सद्धम्मवुड्ढिजणगे पएसम्मि ॥ ६ ॥
दलमवि य सयंसिद्धं विसिट्ठकट्ठिट्टगोवलप्पमुहं । उस्सग्गेणं सम्मं सुसउणवुड्ढीए घेत्तव्वं ॥ ७ ॥
तयभावे बहुगुणसंभवे य अतहग्गहो विऽणुन्नाओ । ईहरा मग्गुच्छेओ सद्धाभंगो य सुगिहीण ॥ ८ ॥

चैत्यविधा-
पनाधिकारी
तद्विधिश्च

---

१ 'तरुइ' जिनभवनम् ॥ २ य विहिय विय प्रतौ ॥ ३ °सुहस° प्रतौ । बहुसुहृत्स्वजनः ॥ ४ पराप्रीतिरहिता ॥ ५–द्यूतकारादिजुगुप्सनीय–॥ ६ दलमपि च स्वयंसिद्धं विशिष्टकाष्ठेष्टकोपलप्रमुखम् । 'दलं' चैत्यविधापनसाधनानि ॥ ७ मुख्यवृत्त्या ॥ ८ इतरथा ॥

जलगलण-भूमिपेहणपमुहा जयणा य सवजोगेसु । कायवा इत्थ जओ जयणा धम्मस्स सारो त्ति ॥ ९ ॥
कम्मयराण वि इत्थं थेवं पि न वंचणं विहेयवं । अवि सविसेसं देयं तेसिं सुहभाववुड्ढिकए ॥ १० ॥
इय पढमकीरमाणे जिणभवणे वन्निओ विही एस । जिन्नुद्धारम्मि पुणो एसो च्चिय पायसो नवरं ॥ ११ ॥
जिन्नं विहडियसंधिं निन्नट्ठवयं[1] च चेइयं दट्ठुं । तमुवेक्खिऊण अन्नं कुसलेण न जुज्जए काउं ॥ १२ ॥
इहरा मग्गुच्छेओ न माणविजओ[2] जिणे य न य भत्ती । तम्हा संय[3] सामत्थे तमुद्धरंतो[4] वरं कुज्जा ॥ १३ ॥
इय भणियविहाणेणं जिणभवणं मणहरं करावितो । विजउ[5] व गिही निग्गहइ दुग्गदुग्गइदुहाइं लहुं ॥ १४ ॥ तहाहि—
गिरि-सर-सरिया-ऽऽराम-प्पवा-सभा-वावि-कूवरमणिज्जा । मालवविसयपहाणा चक्कपुरी अत्थि वरनयरी ॥१५॥
रयणेसु वइरसद्दं देहि च्चिय विग्गहं[6] वयंति जहिं । चक्कचलणं[7] च दीसइ कुंभारघरे च्चिय न लोए ॥ १६ ॥
तीयं[8] पुरीएं राया भुयपरिहनिरुद्धवइरिवीरबलो । बलभद्दो त्ति पसिद्धो रज्जसिरिं भुंजइ महप्पा ॥ १७ ॥
लच्छी तंक्कुयमंदिरेसु[9][10] निहिया खित्तो दिसासुं जसो, सत्तूणं भयमुब्भडं[11] वियरियं बुद्धि च नीया गुणा ।
छिन्ना दुन्नयसंकहा वि विउणो[12] माहप्पमारोविया, जस्सेवं भुवणब्भुयं हि चरियं किं तस्स वन्निज्जए ? ॥ १८ ॥
तस्स य रन्नो मित्तो अहेसि दढगाढरूढपडिबंधो । आबालकालसहपंसुकीलिओ नाम सिरिगुत्तो ॥ १९ ॥

१ °ट्ठवयं च चेइ° प्रतौ ॥ २ मानविजयः ॥ ३ सति ॥ ४ °तो परं प्रतौ ॥ ५ वज्रं वैरं च ॥ ६ शरीरं युद्धं च ॥ ७ नक्रचलनं परचक्रागमनं च ॥ ८ तस्याम् ॥ ९ °प जाया प्रतौ ॥ १० स्वजनमन्दिरेषु ॥ ११ भयमुद्भटं 'वितीर्णं' दत्तम् ॥ १२ विद्वांसः ॥

तेणं समुद्दसेवा-किसि-वाणिज्जायबहुविहविहीहिं । निज्जियवेसमणधणोहवित्थरो अज्जिओ अत्थो ॥ २० ॥
सुहि-सयण-बंधवाणं थेवं पि हु नेव देइ ओगासं । घणमुच्छाए परिहरइ दूरओ साहुगोट्ठिं पि ॥ २१ ॥
नवरं चिरपुरिसागयसावयधम्मक्खणं जहावसरं । जिणपूयणा[इ]पमुहं जहाघयट्टं कुणइ किं पि ॥ २२ ॥
उक्खणण-खणण-परियत्तणाहिं गोवेइ तं च नियघणं । अवहारसंकियमणो पइक्खणं लंछणे नियइ ॥ २३ ॥
कालक्कमेण जाओ पुत्तो विजओ त्ति ठावियं नामं । सिक्खियकलाकलावो य जोवणं सो समणुपत्तो ॥ २४ ॥
कइवयवयस्ससहियं जहिच्छचरियं च तं सुनेवच्छं । तंबोलपाडलोट्ठं कुसुमोत्थयमत्थयं दट्ठुं ॥ २५ ॥
चिंतेइ पिया सुचिरज्जियस्स अत्थस्स संपयं नूणं । इमिणा सुएण कीरइ अकालहीणं हि निग्गमणं ॥ २६ ॥
कहमन्नह [एयारिस]विलासवित्तीए वट्टए पुत्तो ? । सुप[य]त्तविहियरक्खस्स किं व काही इमो अहवा ? ॥ २७ ॥
सासेमि किं पि तत्तो भणइ सुयं रे ! किमेत्थमत्थवयं । कुणसि ? न मुणेसि किमिमं ? कट्ठेण विढप्पए लच्छी ॥ २८ ॥
किं वा न वच्छ ! पेच्छसि ? लच्छी जह रक्खिया पयत्तेण । जलनिहिणा जल-तिमि-मगरदुग्गदेसम्मि खिविऊण ॥ २९ ॥
केह वा हरिणा वि कवाडवियडवच्छत्थलम्मि ठविऊण । पुरपरिहदीहभुयगहणगोविया सोविय व इमा ? ॥ ३० ॥

१–वाणिज्यादि– ॥ २–परिवर्तनाभिः ॥ ३ °चरणे लं° प्रतौ ॥ ४ मुद्राः पश्यति ॥ ५ त्ति घाचियं प्रतौ ॥ ६ कतिपयवयस्यसहितम् ॥ ७ कुसुमावस्तृतमस्तकम् ॥ ८ शिक्षयामीत्यर्थः ॥ ९ किमर्थमर्थव्ययम् ॥ १० किममं प्रतौ ॥ ११ अर्ज्यते ॥ १२ पुरपरिघदीर्घभुजागहनगोपिता स्थापिता ॥

समणेण व वेसमणेण जह व भोगं अणीहमाणेण । एसा रसायलोरगफारफणावेढमुवणीया ? ॥ ३१ ॥
इय कित्तिया कहिज्जंतु तुज्झ ? जे उज्झियं सजीयं पि । रक्खिसु चिरं सुहि-सयण-देहदोहं पि काऊण ॥ ३२ ॥
विजएण जंपियं ताय ! जइ इमं ता सिरीए किं व फलं ? । न हि चाग-भोगओ वि हु कज्जमिमीए परं चिंति ॥ ३३ ॥
दिट्ठंता निदिट्ठा जे वि तए ताय ! जलनिहिप्पमुहा । ते वि मुहा बलि-हरिचंदमाइपडिवक्खजुत्तिहया ॥ ३४ ॥
वड्ढइ वहंतकूवयजलं व वित्तं सया वि भुज्जंतं । खिज्जइ तदियरकूवयनीरं व अभोगओ ताय ! ॥ ३५ ॥
तेऽणंता जे लच्छि सव्वपयारेण वड्ढिऊण मया । उवभुंजिऊण [दाऊण] जे पुणो ते जए विरला ॥ ३६ ॥
न य रक्खिया वि चिट्ठइ सुदुट्ठमहिल व्व पुन्नरहियस्स । लच्छी नंदस्स व भूवइस्स ता मुंच तं मोहं ॥ ३७ ॥
आ पाव ! ममावि हु सिक्खणाए बद्धक्खणो सिंहो होउं । बहुजंपिएण बालाणमहव सुलहो महुरभावो ॥ ३८ ॥
किं बहुणा जइ रे ! जीयमिच्छसे ठाहि ता निहुयचेट्ठो । जइ पुण विलासकामी ता मह भवणाउ नीहरसु ॥ ३९ ॥
इय परुसवयणभल्लीहिं सल्लिओ तह कहिं पि तेण सुओ । ऊसासो वि हु नीसरइ तस्स जह कट्ठचेट्ठाए ॥ ४० ॥
जइ वि हु पिउणा सो तह तिरिक्खिओ तह वि नो गओ विगइं । सुकुलुग्गयाण पुरिसाणमहव एसेव होइ गई ॥ ४१ ॥
पिउणा वि अत्थसारो तव्वयणुप्पन्नतिव्वकोवेण । तह कह वि गोविओ ठाविओ य जह नज्जइ दिव्वनाणीहिं ॥ ४२ ॥

१ रसातलोरगस्फारफणानेष्टम् ॥ २ उज्झितवा ॥ ३ अरक्षन् ॥ ४ हु सज्ज° प्रतौ ॥ ५ त्वं मोहम् ॥ ६ 'शैक्षः' शिशुरित्यर्थः ॥ ७ जीवितम् ॥ ८ निभृतचेष्टः ॥ ९ °स्स कह प्रतौ । उच्छ्वासोऽपि हि निस्सरति तस्य यथा कष्टचेष्टया ॥ १० तिरस्कृतः ॥ ११ विकृतिम् ॥ १२ उत्तरार्द्धेऽत्र मात्राधिक्यम् ॥

अह अन्नया कयाई हॅरिचावचलत्तणेण जीयस्स । सिरिगुत्तो घणरत्तो जॅरेण पंचत्तमणुपत्तो ॥ ४३ ॥
विजएण वि सोगॅसमुच्छरंतनयणंसुधोयवयणेण । मयकिच्चाइं पिउणो कयाइं 'हा'रावगरुयाइं ॥ ४४ ॥
जिणवॅयणायन्नणओ गुरुयणअणुसासणाउ अणुदियहं । जाओ य विगयसोगो कइवयदियएहिं स महप्पा ॥ ४५ ॥
पुव्वपवाहेणं चिय गिहकिच्चाइं विचिन्तिउं लग्गो । नवरं न किंचि पेच्छइ गेहम्मि चउविहे वि धणे ॥ ४६ ॥
न य संपुडाइलिहियं लब्भं भूगोवियं पि पेहेइ । न य धन्नसंचयं समुचियं पि नो कुप्प-रुप्पाइं ॥ ४७ ॥
जाओ वाउॅलचित्तो कहं वहेयव्वओ गिहिभरो ? त्ति । न हु दव्वविरहिएहिं काउं तीरंति कज्जाइं ॥ ४८ ॥
सुतवस्सि च्चिय सोहॅइ निस्संगो दव्ववज्जिओ य सया । सीयइ जणे विगिज्जॅइ अॅत्थविहीणो पुण गिहत्थो ॥ ४९ ॥
अहवा किमेरिसेणं विगप्पिएणं ? न भाविणो नासो । नाभाविणो य भावो ता चिंताए कॅयमियाणिं ॥ ५० ॥
इय सॅत्तभावणारोवणाइ थिरघरियचित्तवावारो । पयदिण पयइसमुॅच्चियकिच्चाइं स काउमारद्धो ॥ ५१ ॥
सिट्ठं जणणीए अन्नया य तुह पुत्त ! संतिॅओ ताओ । सॅाहितो मह कहमवि परितोसगओ गिहाऽदूरे ॥ ५२ ॥

---

१ 'हरिचापं' इन्द्रधनुः ॥ २ 'जरसा' वार्धक्येन ॥ ३ शोकसमुत्सरन्नयनाश्रुधौतवदनेन मृतकृत्यानि पितुः कृतानि 'हा'रावगुरुकाणि ॥ ४ °घन्नणा° प्रतौ ॥ ५ व्याकुलचित्तः कथं वोढव्यः गृहिभारः ॥ ६ शक्यन्ते ॥ ७ शोभते ॥ ८ निगीयते ॥ ९ अज्जवि° प्रतौ ॥ १० 'कृतं' पर्याप्तम् ॥ ११ सत्त्वभावनारोपणया स्थिरधृतचित्तव्यापारः । प्रतिदिनं प्रकृतिसमुचितकृत्यानि । प्रकृतयः–प्राकृतलोकाः ॥ १२ °मुच्चिय° प्रतौ ॥ १३ 'शिष्टं' कथितम् ॥ १४ सत्कः ॥ १५ अकथयत् ॥

अंट्ठावयस्स कोडीउ अट्ठ चिट्ठंति भूमिनिहियाओ । ता वच्छ ! किं न ठाणाइं ताइं इन्हि खणेसि त्ति ? ॥ ५३ ॥
किं वा विज्ञंतम्मि धणम्मि एवं किलिस्ससे वच्छ ! ? । अणुचियकम्मायरणेण केवलं खिज्जए देहं ॥ ५४ ॥
तो जणणीवयणेणं बलिखेवपुरस्सरं सुहमुहुत्ते । करगहियखणित्तो सो खणणट्ठमुवट्ठिओ जाव ॥ ५५ ॥
ताव अंयंडविहंडियबंभंडुड्डमरमवणिफुडणरवं । जायंतउवलवरिसं सं पेच्छए तं पएसं ति ॥ ५६ ॥
अहह ! किमेयं ? ति विभाविऊण सज्झसवसूससियरोमो । संहरियखन्नवाओ वेगेणं पडिगओ सगिहं ॥ ५७ ॥
मह भागधेयदुविलसिएण कह विज्ञमाणमवि दव्वं । समहिट्ठियं व देवेहिं ? अन्नहा कह भवे विग्घो ? ॥ ५८ ॥
ता गंतूणं हरिसेणकेवलिं वंदिऊण पुच्छामि । को एसो वुत्तंतो ? त्ति तो गओ केवलिसमीवं ॥ ५९ ॥
तम्मि य समए बलभद्दराइणो चेइयस्स कारवणे । साहेइ केवली फलमुदारसिवसोक्खपज्जंतं ॥ ६० ॥
तो विजओ परिचिंतइ जइ कह वि धणं लभामऽहं पिउणो । ता जिणभवणं तुंगं मणोहरं कारवेमि त्ति ॥ ६१ ॥
अह पत्थावे जाए नमिऊणं केवलिं पयत्तेण । जंपइ भयवं ! को पुण निहाणलाभस्स विग्घकरो ? ॥ ६२ ॥
वज्जरियं केवलिणा तुह पिउणा भद्द ! तिव्वमुच्छेण । पावियवंतरभावेण एस समहिट्ठिओ अत्थो ॥ ६३ ॥

१ सुवर्णस्य ॥ २ किं व ठा° प्रतौ ॥ ३ अकाण्डविखण्डितब्रह्माण्डमहाभयङ्करम् अवनिस्फुटनरवम् । जायमानोपलवर्षम् ॥ ४ वंभड्डुडम° प्रतौ ॥ ५ °रिसं म पे° प्रतौ ॥ ६ साध्वसवशोच्छ्वसितरोमा । संहृतखन्यवादः । साध्वसं–भयः ॥ ७ °य घ दे° प्रतौ ॥ ८ पच्छावे प्रतौ ॥ ९ कथितम् ॥

तो विजओ केवलिणं नमिउं गेहं च संठवेऊणं । उत्तरदेसम्मि गओ ठिओ जयंतीपुरीए बहिं ॥ ६४ ॥
भूयलनामो य तहिं खेयन्नू खन्नवायविज्ञाए । विप्पो अत्थि पसिद्धो जाया से तेण सह मेत्ती ॥ ६५ ॥
कइवयदिणावसाणे तत्थेव निवासिणा महिंदेण । धणिणा वाहरिऊणं सिट्ठमिमं भूइलस्स जहा ॥ ६६ ॥
पुव्वपुरिसऽज्जियं मे घेत्तुं दव्वं न विन्तरा देन्ति । अद्धं तुह अद्धं मह ता तल्लाभे कुणसु जत्तं ॥ ६७ ॥
तो भूइलेण काऊण मंडलं देवयाउ पूइत्ता । पारद्धं सम्मं मंतसुमरणं गुरुपयत्तेण ॥ ६८ ॥
अह जाव खणं चिट्ठइ झाणत्थो ताव मंडलगमज्झे । संकंता ते भूया जेहिं तमहिट्ठियं दव्वं ॥ ६९ ॥
तो ते थंभेऊणं सुनिच्चलं तेण सा निहाणमही । विजयस्स समक्खं चिय खणाविउं ज्झत्ति पारद्धा ॥ ७० ॥
खणमित्तकालविगमे विग्घविरहेण पाविया निहिणो । अद्धं घेत्तूण गओ य भूवलो नियगेहम्मि ॥ ७१ ॥
विम्हइयमणो विजओ चिन्तइ एवं ममावि निहिलाभो । भावी एत्तो ता खन्नवायमंते अहिज्जामि ॥ ७२ ॥
तो गरुयभत्तिराएण भूइलो तह पसाइओ तेण । सयमिव जहा विहंन्नू स खन्नविज्जाए तेण कओ ॥ ७३ ॥
तो विजओ भूइलपायपंकयं पणमिउं कहिय वत्तं । नियनयरस्साभिमुहं तुरियं गंतुं समारद्धो ॥ ७४ ॥
अक्खेवेण य पत्तो सगिहे गंतूण तो निहाणमही । तेणाभिमंतिया संहरंतु मा वन्तरा निहिणो ॥ ७५ ॥

---

१ तूय° प्रतौ ॥ २ 'खेदज्ञः' कुशलः खन्यवादविद्यायाम् ॥ ३ तुह° प्रतौ ॥ ४ विन्तरा देन्ति प्रतौ ॥ ५ सूइ° प्रतौ ॥ ६ ज्झाण° प्रतौ ॥ ७ जेहित्तम° प्रतौ ॥ ८ विसय° प्रतौ ॥ ९ खन्यवादमन्त्राणि ॥ १० 'विधज्ञः' निपुणः ॥ ११ कथयित्वा वार्ताम् ॥ १२ संहरन्तु ॥

अह तन्निहाणना[से]सवंतरो तस्स मंतमाहप्पा । निहिधरणीसम्मुहमवलोइउं वाढमेचइन्तो ॥ ७६ ॥
उव्विग्गो अच्चत्थं विभंगवलमुणियकज्जपरमत्थो । ताणकए एगन्ते चलभद्दनिवं समल्लियइ ॥ ७७ ॥
साहेइ य राय ! तुहं मित्तो सिरिगुत्तनामओ सो हं । जाओ म्हि वंतरो नियनिहाणधरणीए चिट्ठामि ॥ ७८ ॥
सा पुण संपइ मज्झं सुएण अभिमंतिऊण तह विहिया । निहिगहणत्थं मन्ने जह तीरइ नेव दट्ठुं पि ॥ ७९ ॥
ता राय ! पुव्वपणयं जइ वहसि सरेसि किं पि उवयरियं । ता निहिगहणपयट्टं विजयं जत्तेण वारेसु ॥ ८० ॥
इय भणिऊणं भूओ तिरोहिओ राइणा वि विजयस्स । सिट्ठो इय वुत्तंतो तेणावि पयंपियं देव ! ॥ ८१ ॥
धणमुच्छाए मरिउं जणगो वंतरसुरत्तणं पत्तो । धणगहणं पि हु न मए समीहियं अप्पभरणट्ठा ॥ ८२ ॥
किंतु नरेसर ! सिरिवीयरायभवणस्स निम्मवणहेउं । मा अकयत्थो अत्थो [11]भूमीसोत्थो मुहा होउ ॥ ८३ ॥
न य ताएण अदिन्नस्स देव ! दव्वस्स जुज्जए भोगो । [12]संकमागया व [13]सभुयज्जिया व भोत्तुं सिरी जुत्ता ॥ ८४ ॥
न य दुक्खलक्खसमुवज्जियस्स[14] एयस्स तायवित्तस्स । जिणभवणाओ अन्नं पुन्नं विणिओगठाण-न्ति ॥ ८५ ॥
इय निच्छिऊण नरनाह ! नूणमारंभियं मए एयं । जइ य न जुत्तं आइसउ [मं] पहू ! जेण विरमेमि ॥ ८६ ॥

---

१ तन्निधानन्यासेशव्यन्तरः ॥ २ °मवइत्तो प्रतौ । अत्यन्तमुच्चन् ॥ ३ त्राणार्थम् ॥ ४ एगत्ते, चलवद्दमिवं प्रतौ ॥ ५ °यगिहा° प्रतौ ॥ ६ चेट्ठा° प्रतौ ॥ ७ शक्यते ॥ ८ पूर्वप्रणयम् ॥ ९ स्मरसि किमपि उपकृतम् ॥ १० धणुमु° प्रतौ ॥ ११ भूमिगुप्तः ॥ १२ स्वक्रमागता वा स्वभुजार्जिता वा ॥ १३ °भुवज्जि° प्रतौ ॥ १४–समुपार्जितस्य ॥

धम्मत्थविग्घकरणं पावं ति विभाविउं भणइ राया। धन्नो सि विजय! जो चेइयत्थमिय उज्जमं कुणसि ॥ ८७ ॥
अम्हारिमा उ पावा दुग्गइजणगम्मि रज्जकज्जम्मि। अच्चंतवावडा मोयणं पि काउं न पारिंति ॥ ८८ ॥
ता विजय! वंछियत्थो सिज्झउ तुह होउ नूण निव्विग्घं। इय रन्नाऽणुन्नाओ सुपहिट्ठो पट्ठिओ स गिहं ॥ ८९ ॥
राया वि संज्झकिच्चं काऊणं जा ठिओ सुहं सयणे। ता सो वंतरतियसो सविसायं भणिउमाढत्तो ॥ ९० ॥
एयं खु महापावं जं पत्थिज्जइ परो महाराय!। एत्तो वि य तं अहियं जं कीरइ तं पुणो विहलं ॥ ९१ ॥
अह सविलक्खो राया तं जंपइ भद्द! मा भणसु एवं। कह जाणियजिणवयणो करेमि से धम्मविग्घमहं? ॥ ९२ ॥
किं वा विहलाए तुह धणमुच्छाए? विमुंच वामोहं। मूसगववहाराओ न परं सज्झं धणेणं ते ॥ ९३ ॥
अह तं विणा विसीयसि ता गेण्हसु मज्झ संतिए निहिणो। सत्तामेत्तफलएणं धणेण जइ तं वहसि पणयं ॥ ९४ ॥
हसिऊण भणइ भूओ तुह निहिणो पिच्छिउं पि न लभामि। तुह वंतरपासाओ किं वा तुमए सुयं न इमं ॥ ९५ ॥
यादृशि तादृशि भूमिभुजि पञ्च पिशाचशतानि। महति तु यानि भवन्ति वत! [न च] तानि परिकलितानि ॥ ९६ ॥
रन्ना भणियं एत्तो वि किं परं तीरए मए काउं?। न हु नज्जइ स उवाओ जो लोगदुगे वि अविरुद्धो ॥ ९७ ॥
इय सोउं सविसाओ वंतरदेवो लहुं अवक्कंतो। विजएण वि मंतबलेण उक्खया ज्झत्ति निययनिहिणो ॥ ९८ ॥

१ पावं ति प्रतौ ॥ २ अत्यन्तव्यापृताः ॥ ३ सुप्रहृष्टः ॥ ४ सान्ध्यकृत्यम् ॥ ५ सविलक्षः ॥ ६ तस्य ॥ ७ त्वम् ॥ ८ °थगिहिं° प्रतौ ॥

अह तत्थेव पुरीए पुव्वाए दिसाए चंपगुज्जाणे। सिरिसंतिनाहभवणं विहडियसंधिं पडियसिहरं ॥ ९९ ॥
पल्हत्थपट्टसालं पहीणचिंतायगं च पेहेत्ता। विजएण चिंतियमिमं जुज्जइ मह उद्धरावेउं ॥ १०० ॥
एयं खीणप्पायं उवेक्खिउं नूणमन्नकारवणे। परमत्थेणं न जिणेसरम्मि भत्ती कया होइ ॥ १०१ ॥
कमपत्तवत्थुविज्जावियक्खणो हत्थलाहवपहाणो। विजएण सुत्तहारो देवगुरू नाम वाहरिओ ॥ १०२ ॥
तंबोल-वत्थ-भूसणपयाणपरितोसियं च तं काउं। आबद्धकरयलंजलि विजएण पयंपियं एयं ॥ १०३ ॥
तुममम्ह भीमभवकूवनिवडिराणं सहत्थदाणेण। हे सुत्तधार ! सद्धम्मसचिव ! कुण दूरमुद्धरणं ॥ १०४ ॥
उद्धरिऊणं एयं जिणालयं दलियसेलसिहरसमं। पाउणसु य ससहर-सूरकालियं निम्मलं कित्तिं ॥ १०५ ॥
तेणं पयंपियं विजय ! कीस बहु वाहरेसि ? तह काहं। जहऽकालविप्पहीणं जिणभवणं सिज्झए एयं ॥ १०६ ॥
तुह अम्हाणं च इमं संसारसमुद्दतारणतरण्डं। ता इह बहुपन्नवणा न सव्वहा जुज्जए काउं ॥ १०७ ॥
तो सुपसत्थे दियहे पारद्धं तेण जिणहरे कम्मं। सब्भावसारहियया पइट्ठिया तत्थ कम्मयरा ॥ १०८ ॥
अह पइदिणसविसेसुच्छलंतउच्छाहवड्ढियारंभं। कयभूमिसुद्धिसुनिबद्धपीढदढरइयथरनियरं ॥ १०९ ॥

१ पर्यस्तपट्टशालं प्रहीणचिन्तकम्। पट्टशाला—जिनचैत्यसमीपवर्त्ति जैनश्रमणनिवासस्थानम् ॥ २ क्रमप्राप्तवास्तुविद्याविचक्षणः हस्तलाघवप्रधानः ॥ ३ °एणं प° प्रतौ ॥ ४—निपतनशीलानाम् ॥ ५ करिष्यामि ॥ ६ सद्भावसारहृदयाः ॥ ७ प्रतिदिनसविशेषोच्छलदुत्साहवर्धितारम्भम्। कृतभूमीशुद्धिसुनिबद्धपीठदृढरचितस्तरनिकरम् ॥

॥ ११० ॥

सुनिविट्ठदेवयापीढमुवरिरायंतभूरितेरसिहरं । सुविसालाऽऽमलसारयसिरि चिरइयहेममयकलसं ॥ १११ ॥

वित्थिन्नथोरथिरथंभदारमंडवनिरुद्धदिसिपसरं । मणिमालभंजियाभासमाणमाणोववन्नतियं ॥ ११२ ॥

चिररयणाओ सविसेससुंदरं मंदरं व उत्तुंगं । निप्फाइयमक्खेवेण मणहरं संतिजिणभवणं ॥ ११३ ॥

अह सुपमरथे लग्गे सुगुरुवएसेण बुज्झिउं सम्मं । विजएण समारद्धं महद्धयारोयणविहाणं ॥ ११४ ॥

आघोसिया अमारी दीणा-ऽणाहाण दावियं दाणं । पगुणीकओ य वंसो धयजोग्गो सरल-सुसिणिद्धो ॥ ११५ ॥

वद्धंन्तचारुपव्वो अपुच्चडो कीडएहिं अक्खद्धो । अदड्ढो वन्नड्ढो अणुड्ढसुक्को पमाणजुओ ॥ ११६ ॥

काऊण मूलपडिमान्हाणं चाउद्दिसिं च भूसुद्धिं । दिसिदेवयआह्वणं वंसस्स विलेवणं तह य ॥ ११७ ॥

अहिवासियकुसुमारोवणं च अहिवासणं च वंसस्स । मयणफल-रिद्धि-विद्धी-गिद्धत्थारोवणं चेव ॥ ११८ ॥

धूवुक्खेवं मुद्दानासं चउसुंदरीहिं उम्मिणणं । अहिवासणं च सम्मं महद्धयसिंसदुधवलस्स ॥ ११९ ॥

चाउद्दिसिं जवारय-फलोहलीढोयणं च वंसपुरो । आरत्तियावयारणमह विहिणा देववंदणयं

ध्वजारोपण-विधिः

१ सुनिविष्टदेवतापीठम् उपरिराजद्भूरितरशिखरम् । सुविशालामलसारकशिरसि विरचितहेममयकलशम् ॥ २ °रिउर° प्रतौ ॥ ३ विस्तीर्णस्थूलस्थिरस्तम्भद्वारमण्डपनिरुद्धदिक्प्रसरम् । मणिशालभञ्जिकाभासमानमानोपपन्नत्रिकम् ॥ ४ °थिरिथभदारिम° प्रतौ ॥ ५ निष्पादितम् ॥ ६ महाध्वजारोपणविधानम् ॥ ७ वर्धमानचारुपर्वा 'अपुच्चडः' दृढः घन इत्यर्थः कीटैरभक्षितः । अदग्ध- वर्णाढ्यः अनूर्ध्वशुष्कः ॥

बलि-सत्तधन्न-फल-वास-कुसुम-सकसायवत्थुनिवहेणं । अहिवासणं च तत्तो सिहरे तिपयक्खिणीकरणं ॥ १२० ॥
कुसुमंजलिपाडणपुरस्सरं च न्हवणं च मूलकलसस्स । खित्तदसद्धामलरयणधयहरे इट्ठसमयम्मि ॥ १२१ ॥
सुपइट्ठपइट्ठामंतखेत्तवासस्स तयणु वंसस्स । ठवणं खिवणं च तओ फलोहली-भूरिभक्खाणं ॥ १२२ ॥
तत्तो उज्जुगईए धयस्स परिमोयणं सजयसद्दं । पडिमाए दाहिणकरे महद्धयस्सावि बंधणयं ॥ १२३ ॥
विसमदिणे ओमुयणं जहसत्तीए य संघदाणं च । इय सत्थुत्तविहीए तेण धयारोवणं विहियं ॥ १२४ ॥
तिहुयणसिरिलाभाओ वि भवणदुस्सज्झसिद्धिओ वि परं। जाओ तोसो विजयस्स विहियजिणभवणकिच्चस्स ॥१२५॥

एवं च जा पहिट्ठो चिट्ठइ सो चेइयं पलोइन्तो । जिणवरभवणस्स पुरो ता पेक्खइ मुक्कजीयासं ॥ १२६ ॥
निच्छिन्नकन्न खरपट्ठिसंट्ठियं मसिविलित्तसव्वंगं । रत्तकणवीरसेहर गलखित्तसरावमालं च ॥ १२७ ॥
पुरओ ताडियउद्दंडडिंडिमुम्मिलियपिच्छगजणोहं । रायपुरिसेहिं चोरं निज्जंतं वज्झभूमीए ॥ १२८ ॥
तं पेच्छिऊण विजओ चिंतइ जिणसंतिदिट्ठिवडिओ वि। जइ एस इ[ह] विवज्जइ धिरत्थु ता जीविएणं मे ॥ १२९ ॥

१ धान्यसप्तकं सणबीज-लाज-कुलत्थ-यव-कङ्गु-माप-सर्षपरूपं सण-कुलत्थ-मसूर-वल्ल-चणक-व्रीहि-चपलकरूपं धान्य-मुद्ग-माप-चणक-यव-गोधूम-तिलरूपं वा ज्ञेयम् ॥ २ °यक्खणी° प्रतौ ॥ ३ क्षिप्तदशार्धामलरत्नध्वजगृहे । दशार्ध-पञ्च ॥ ४ सुप्रकृष्टप्रतिष्ठामन्त्रक्षिप्तवासस्य ॥ ५ सच्छुत्त° प्रतौ ॥ ६ °दुसज्झ° प्रतौ ॥ ७ चेट्ठ° प्रतौ ॥ ८ मुक्तजीविताशम् ॥ ९ निच्छिन्नकर्णं खरपृष्ठिसंस्थितं मषीविलिप्तसर्वाङ्गम् । रक्तकणवीरशेखरं गलक्षिप्तशरावमालं च ॥ पुरतः ताडितोद्दण्डडिण्डिमोन्मीलितप्रेक्षकजनौघम् ॥ १० नीयमानम् ॥ ११ 'विपद्यते' मरणं प्राप्नोति धिगस्तु ॥

तो तं रक्खावेउं खणमेक्कं राइणो समीवम्मि । विजओ गंतुं आवद्धकरयलो जंपए एवं ॥ १३० ॥
देव ! कयभुवण[संति]स्स संतिणो वि हु पुरो वहट्ठाए । निज्जइ चोरो अच्चंतमणुचियं वट्टए एयं ॥ १३१ ॥
ता कुणह मे पसायं मोयावह तं वरागमइकरुणं । घेत्तूण दव्वजायं अहवा मह जीवियव्वं पि ॥ १३२ ॥
इय तेण जंपिए नरवरेण वियसंतकुवलयनिलासा । दिट्ठी फुरंततारा ज्झड त्ति खेत्ता अमच्चम्मि ॥ १३३ ॥
भालयलारोनियपाणिणा य भणियं तओ अमच्चेण । सो एस देव ! पावो जो तुह अंतेउरस्संतो ॥ १३४ ॥
अद्दिस्सअंजणेणं सेइरं वियरन्तओ तुहाऽऽणाए । जोगंधरसिद्धेणं पडिजोगवलेण नित्राओ ॥ १३५ ॥
उवणीओ तुम्हाणं सिट्ठं तुम्हेहिं अंजणपओगं । जइ साहइ जा निव्विसयकरणओ णं निसज्जेहिं ॥ १३६ ॥
इहरा खरम्मि आरोविऊण सयले भमाडिउं नयरे । बहुहा विडंविऊण य मारेज्जह दुक्खमारेणं ॥ १३७ ॥
ता देव ! तुम्ह वयणेण सो तहा दंडवासियनरेहिं । पारद्धो संपइ पुण तुम्हाऽऽएसो पमाणं ति ॥ १३८ ॥
रन्ना पयंपियं विजय ! सो नरो सव्वहा वहस्सुचिओ । बाढं विरुद्धकारि त्ति केवलं गरुयकरुणाए ॥ १३९ ॥
अंजणविहिकहणपणेण मुंचिओ तं पि जा न मन्नेइ । ता हंतुं चिय उचिओ अह अज्ज नि तं कहावेसि ॥ १४० ॥
ता मुच्चइ त्ति नऽन्नो मोक्खोवाओऽत्थि निच्छओ एत्थ । अम्हारिसाण वि गिरो चलंति जइ ता गयं सच्चं ॥ १४१ ॥
विजएण जंपियं देव ! जइ इमं देसु ता तिरत्तं मे । जेणुवलद्धतदिच्छो जहोचियं चित्रवेमि तुमं ॥ १४२ ॥

---

१ °णियन्तओ प्रतौ ॥ २ सइरं चिय रत्तओ प्रतौ । स्वैरं विचरन् ॥ ३ दाण्डपाशिकनरैः ॥ ४ मुञ्चिओ प्रतौ । मुक्त ॥

पडिवन्नमिमं रन्ना नीओ विजएण सो घरे नियए। न्हाण-विलेवण-वरवत्थ-भोयणाईहिं उवयरिओ ॥ १४३ ॥
पेत्थावम्मि य पुट्ठो भद्द ! कहं तुज्झ एरिसा मुत्ती। नीसेसलक्खणजुया ? विरुद्धकिरिया य कहमेसा ? ॥ १४४ ॥
ता जइ दूरं नो गोवणोचियं सव्वहा कहसु एयं। आमूलाओ वि तुमं अच्चंतं कोउगं मज्झ ॥ १४५ ॥
तेणं पयंपियं किं तवावि नियजीवनिव्विसेसस्स। विज्जइह गोवणिज्जं ? ता उज्जुत्तो निसामेहि ॥ १४६ ॥
कोसंबीए पुरीए पुरोहिओ अत्थि चंडदत्तो त्ति। तस्साहं चिय पुत्तो सयंभुदत्तो त्ति नामेणं ॥ १४७ ॥
बहुविहअणत्थसत्थाहि[3]त्तोत्तमं जुव्वणं च संपत्तो। अच्चंतभोगलोलत्तणेण नीयं धणं निहणं ॥ १४८ ॥
नीसारिओ गिहाओ पिउणा देसंतरेसु य भमंतो। पत्तो कामरुयम्मि दिट्ठो य तहिं वलो नाम ॥ १४९ ॥
[4]आगिट्ठि-दिट्ठिमोहण-वसियरणुच्चाडणाइसु पगिट्ठो। जो जोगसत्थकुसलो सीसत्तं से पवन्नो हं ॥ १५० ॥
[6]भमिओ य भीमरक्खस-पिसाय-साइणिसहस्सदुग्गेसु। गिरि-गहण-सुसाणा-ऽऽसम-विवराईसुं समं तेण ॥ १५१ ॥
सो अन्नया महप्पा पुव्वज्जियकम्मदोसओ बाढं। जाओ रोगाउलिओ सुचिरं च मए वि उवयरिओ ॥ १५२ ॥
जाओ पगुणसरीरो परितुट्ठो मज्झ विणयकम्मेण। भणिओ य सायरमहं वच्छ ! पयच्छामि भण किं ते ? ॥ १५३ ॥
तो भोगलोलुएणं सपमोयं जंपियं मए एयं। अदिस्संजणसिद्धिं, जइ एवं ता पयच्छाहि ॥ १५४ ॥

१ °वच्छभो° प्रतौ ॥ २ पच्छाव° प्रतौ ॥ ३–सार्थाधिपोपगम् ॥ ४ आकृष्टि-दृष्टिमोहन-वशीकरणोच्चाटनादिषु प्रकृष्टः ॥ ५ °सत्तकु° प्रतौ ॥ ६ भ्रान्तश्च भीमराक्षसपिशाचशाकिनीसहस्रदुर्गेषु। गिरिगहनश्मशानाऽऽश्रमविवरादिषु समं तेन ॥

तो तेणंजणसिद्धी सिट्ठा सुजहट्ठिया मए य लद्धुं। संजोइऊण विन्नासिया य जाया तह चेव ॥ १५५ ॥
नवरं तेण इमं मे सिट्ठं मा वच्छ! कस्स वि कहिस्सं। इहरा सिद्धी तुज्झं विवज्जिही पिसुणमेत्ति व ॥ १५६ ॥
अह कइवयदिवसाइं तप्पयपउमप्पसायणं काउं। एगागी वणहत्थि व्व सव्वहिं भमिउमारद्धो ॥ १५७ ॥
तं नत्थि विसिट्ठकुलं पणतरुणीमंदिरं पि तं नत्थि। अंतेउरं पि तं नत्थि जत्थ वुत्थो न भमिओ हं ॥ १५८ ॥
तो जा एत्तियकालं संपइ पुण पावपरियणजणेण। विन्नाओ उवणीओ य एरिसिं दारुणमवत्थं ॥ १५९ ॥
नवरं केणइ सच्चरियकम्मुणा विजियअमयवुट्ठीए। तुह दिट्ठीए पडिओ म्हि गोयरं जीविओ तेण ॥ १६० ॥ छ ॥
विजएण जंपियं भद्द! के वयं? मुणसि नेह परमत्थं। अन्नो स तिलोकपहू जद्दिट्ठिगओ धरसि जीयं ॥१६१॥
तेणं भणियं जइ एयमेत्थ ता तं अणेप्पमाहप्पं। दंसेसु ममं तद्दंसणेण जा होमि कयकिच्चो ॥ १६२ ॥
अह हसियहिमगिरीसरसिंगारे चेइयम्मि नेऊण। विजएण दंसियं तस्स संतिजयसामिणो रूवं ॥ १६३ ॥
तो अणिमिसादिट्ठीए जिणं च भवणं च पेच्छमाणस्स। जायं जाईसरणं ईहा-ऽपोहं करेंतस्स ॥ १६४ ॥
मुच्छानिमीलियच्छो छिन्नो वच्छो व्व महियले पडिओ। हा हा! किमेयमेयं? [ति] झत्ति विजएण उक्खित्तो ॥ १६५ ॥
सिसिरोवयार-संवाहणाहिं उवलद्धचेयणो संतो। आपुट्ठो य किमेवं? ति तेण वुत्तं निसामेहि ॥ १६६ ॥
एत्तो तइयभवम्मि एत्थेव पुरीए रामदत्तस्स। इब्भसुओ रामो त्ति [य] नामेणहं आसि जिणभत्तो ॥१६७ ॥

१ पयडि° प्रतौ ॥ २ °णरथमा° प्रतौ। अनल्पमाहात्म्यम् ॥ ३ सत्तो प्रतौ ॥ ४ °मह आ° प्रतौ। नाम अहं आसं जिनभक्तः ॥

स्वयम्भू-दत्तस्य पूर्वभवः

सिरिचारुदत्तमुणिवरपासम्मि संजमं पवज्जंतो । पडिसिद्धो पिउणा वच्छ ! तरुणगो तं सि ता इण्हिं ॥ १६८ ॥
काराविउं जिणहरं साहुजणे पूइउं सुए जणिउं । सम्माणिऊण साहम्मिए य समणो हविज्जासि ॥ १६९ ॥
पडिवन्नमिमं च मए जिन्नुद्धारो य एत्थ संतिहरे । पारद्धो महया सुत्तधार-कम्मयरजोगेण ॥ १७० ॥
जाए य अद्धसिद्धे जिणालए निट्ठियं ममं दव्वं । कह सिज्झिहि ? त्ति चिंतामहन्नवे हं निमग्गो य ॥ १७१ ॥
न छुहा नेव पिवासा न सुहं न दुहं निसा न नेव दिणं । उन्हं न नेव सीयं तच्चिंताए मए नायं ॥ १७२ ॥
एगम्मि य पत्थावम्मि वंदिउं चारुदत्तमुणिवसहं । भूवट्टम्मि निविट्ठो पुट्ठो गुरुणा य एवमहं ॥ १७३ ॥
अवि वहइ धम्मकिच्चं निच्चं निप्पच्चवायमचंतं ? । अवि वट्टइ य सरीरं सज्झाय-ज्झाणचेट्ठासु ? ॥ १७४ ॥
अह रमइ उवसमम्मि इंदियवग्गो दढं समग्गो वि ? । अवि तरलायइ न सुभे अत्थम्मि मणो मणागं पि ? ॥ १७५ ॥
वुत्तं च मए भयवं ! किं भणासि जिणालए वहइ कम्मं ? । नणु नो कुणंति कम्मं कम्मयरा दव्वविरहेण ॥ १७६ ॥
एत्थंतरम्मि हसियं तदसंबद्धं निसामिउं वक्कं । चक्कधरधाउसिद्धेण साहुपासोवविट्ठेण ॥ १७७ ॥
उवउत्तो मुणिसीहो विन्नायं कारणं तओ भणियं । चक्कधर ! हससु मा तुममिमं ति एसो अहसणिज्जो ॥ १७८ ॥
संतिजिणभवणनिम्मवणमीहमाणो धणस्स विरहेण । तदसिद्धीए निव्विन्नमाणसो एवमुल्लवइ ॥ १७९ ॥

१ सुतान् ॥ २ श्रमणः ॥ ३ °वेहिं नि° प्रतौ ॥ ४ निष्प्रत्यपायम् ॥ ५ °ए विह° प्रतौ ॥ ६ निन्निट्ठ° प्रतौ । निर्नष्टमानसः ॥

तो चक्कधरो मं खामिऊण जिणभवणनिम्मवणहेउं । कोडीवेहं खेयं सविहाणं सिद्धमञेइ ॥ १८० ॥
रसवेहविहियबहुजायरूवदाणेण रंजियमणेहिं । विन्नाणिएहिं तो संतिचेइयं झत्ति निम्मवियं ॥ १८१ ॥
वाहरिओ नरनाहो रिद्धीऍ धयाधिरोहणं च कयं । दिन्ना दसग्गहारा ससासणा चेइए रन्ना ॥ १८२ ॥
चिट्ठंति सासणाणि य अज्ज वि जिणभवणनिम्मवणहेउं । सासणसुराए हेट्ठा खित्ताणि तिहत्थमित्तेण ॥ १८३ ॥
इय दंसणकिच्चाइं काऊणमहं महापबंधेण । पडिवन्नो सामन्नं सुचिरं च कयं तवचरणं ॥ १८४ ॥
नवरं पज्जंतम्मि कुडुंतरवड्ढमाणमिहुणगिरं । सोउं सरागचित्तो मरिउं भूएसु उववन्नो ॥ १८५ ॥
तत्तो चुओ य जाओ एसो पुत्तो पुरोहियस्साहं । अवसाणरागभावणपरूढदढगाढविसममई ॥ १८६ ॥
हा हा ! अहं अधन्नो नूणमकल्लाणभायणं पावो । जो तहसामग्गीय वि वहीकओ चरणलाभाओ ॥ १८७ ॥
कह तेत्तियं पि पढियं तवो वि तवियं तहा मए घोरं । एक्कपए च्चिय विहलं गयमखिलं कासकुसुमं व ? ॥ १८८ ॥
इय सुहभावाओ सो चिरपढियसुयं सरित्तु किरियं च । देवइविइन्नलिंगो जाओ समणो समियमोहो ॥ १८९ ॥ छ ॥
सिट्ठं च इमं रन्नो विम्हियहियओ इमं तओ राया । जंपइ विचित्तचरिया पुरिसा को पच्चओ एत्थ ? ॥ १९० ॥
तो सासणवुत्तंतो वुत्तो रन्ना खणाविउं च लहुं । तं ठाणं पत्ताइं च सासणाइं जहुत्ताइं ॥ १९१ ॥

---

१ 'सूत' पारदम् ॥ २ रसवेधविहितबहुजातरूपदानेन ॥ ३ °ध यया° प्रतौ ॥ ४ °इच्छमि° प्रतौ ॥ ५ °तम्मि कु° प्रतौ ॥ ६ °वड्ढमा° प्रतौ ॥ ७ अवन्नो प्रतौ ॥ ८ देवतावितीर्णलिङ्गः ॥

अह [1]भूरिभत्तिपब्भारनिस्सरंतुच्चबहलरोमंचा । रायप्पमुहा गंतुं मुणिसीहं तं नमंसंति ॥ १९२ ॥
खामिंति य दुविहियं मुणी वि पीऊ[2]सवुट्ठिपडितुल्लं । तेसु खिवंतो चक्खुं धम्मकहं कहिउमारद्धो ॥ १९३ ॥ जहा—
[3]अप्पा अणप्पकुवियप्पकप्पणुप्पन्नपावपरिणामो । हरि-करि-भुयंग-विस-सत्तुणो वि दूरं विसेसेइ ॥ १९४ ॥
हरि-करिपमुहा विमुहा वि कह वि कीरंति मंतमाईहिं । अप्पा पुण पावपरो तीरइ न पुरंदरेणावि ॥ १९५ ॥
अहवा सीहप्पमुहा दिंति विणासं भवे इह सुकुद्धा । अप्पा पुण पडिणीओ पाडेइ अणंतदुहगहणे ॥ १९६ ॥
परमत्थचिंतणाए अप्प च्चिय [4]कूडसामली घोरा । अप्प च्चिय वे[5]यरणी अप्प च्चिय भेरवं जंतं ॥ १९७ ॥
अप्प च्चिय तत्त[6]कलंबुवालुया असिवणं पि अप्पेव । अप्प च्चिय [7]पलयवियंभमाणवज्जग्गिजालोली ॥ १९८ ॥
इय कुप्पहप्पवन्नस्स अप्पणो सव्वदुक्खमूलस्स । पडि[8]पंथी परमत्थेण नत्थि मोत्तुं नरविवेगं ॥ १९९ ॥
सो य विवेगो जलणो व्व अरणिणा वीयरायवयणेण । कीरइ सद्धानिलसंजुओ य निद्दहइ कम्मवणं ॥ २०० ॥
तत्तो स एव अप्पा दाहु[9]त्तिन्नं महासुवन्नं व । कस्स न कस्स व जायइ सुहस्स संपा[10]यणपगिट्ठो ? ॥ २०१ ॥
नज्जइ जह तह न फुडं नरिंद ! सिरिवीयरायवयणं पि । ता तन्नाणनिमित्तं जुत्ता निच्चं सुगुरुसेवा ॥ २०२ ॥

---

१ भूरिभक्तिप्राग्भारनिस्सरदुच्चबहलरोमाञ्चाः ॥ २ पीयूषवृष्टिप्रतितुल्यम् ॥ ३ आत्मा अनल्पकुविकल्पकल्पनोत्पन्नपापपरिणामः । हरि-करि-भुजङ्ग-विष-शत्रूनपि दूरं विशेषयति ॥ ४ कूटशाल्मलिः ॥ ५ 'वैतरणी' नरकनदी ॥ ६ कलम्बवालुका-नरकनदी ॥ ७ प्रलयविजृम्भमाणवज्राग्निज्वालावलिः ॥ ८ °डियंथी प्रतौ ॥ ९ °हुतिन्नं प्रतौ ॥ १० संपयाण° प्रतौ । सम्पादनप्रकृष्टः ॥

परिहारो य पमायस्स इंदियत्थे परं च वेरग्गं । दुन्निग्गहकुग्गहवज्जणं च सत्थत्थसवणं च ॥ २०३ ॥

एमाइधम्मकहमवणजायसद्धम्मकम्मपडिबंधा । नियनियसत्तणुरूवं पवन्नकिरिया जणा जाया ॥ २०४ ॥

राया वि देसविरईं पडिवज्जइ तं दसग्गहारा य । सासणलिहिए जिणसंतिपूयणत्थं पणामेइ ॥ २०५ ॥

काऊण जिणाययणं सुत्थं नियए तहा कुडुंबम्मि । विजओ वि विभूईए पडिवन्नो संजमुज्जोयं ॥ २०६ ॥

इय कयजणोवयारो सयंभुदत्तो महामुणी तत्तो । आपुच्छिउं नरिंदं बहिं विहारेण निक्खंतो ॥ २०७ ॥

पडिवोहिऊण भवे चिरकालं कालमायरित्ताणं । सम्मेयसेलसिहरे सिवमयलमणुत्तरं पत्तो ॥ २०८ ॥

विजओ वि पढियबहुसत्थवित्थरो मुणियवत्थुपरमत्थो । कयभूरिसिस्सवग्गो पडिवोहियभवलोगो य ॥२०९॥

अनिययविहारवित्तीए विहरमाणो पुरा-ऽऽगराईसु । चक्कपुरीए पत्तो ठिओ य एगम्मि उज्जाणे ॥ २१० ॥

काऊण सुत्तपोरिसिमह चेइयवंदणट्ठया तत्तो । सिस्सगणेण समेओ सिरिसंतिजिणालयम्मि गओ ॥ २११ ॥

[7]तिनिसीहियप्पहाणं तिक्खुत्तपयाहिणं च तिपणामं । तिपमज्जियपयभूमिं अवत्थतियचिंतणासारं ॥ २१२ ॥ मुनियोग्यानि नव त्रिकाणि.

तिदिसिनिरिक्खणविरयं तिमुद्दजुत्तं च तिविहपणिहाणं । वन्नाइतियविभावणपरमं चिइवंदणं च कयं ॥ २१३ ॥

---

१ सत्तयगुरूवं सत्त्वानुरूपं धा ॥ २ अर्पयति ॥ ३ °यणे, सु° प्रती ॥ ४ 'सुत्थं' सुरक्षितं निजे ॥ ५ सत्तो प्रतौ ॥ ६ °कसुरी° प्रतौ ॥ ७ त्रिनैषेधिकीप्रधानं त्रिप्रदक्षिणं च त्रिप्रणामम् । त्रि.प्रमार्जितपदभूमिं अवस्थात्रिकचिन्तनासारम् ॥ त्रिदिग्निरीक्षणविरतं त्रिमुद्रायुक्तं च त्रिविधप्रणिधानम् । वर्णादित्रिकविभावनपरमं चैत्यवन्दनं च कृतम् ॥

तो समुचियम्मि देसे आसीणो पत्थुया य धम्मकहा। मालइगंधक्खित्त[1] व्व महुयरा आगया परिसा ॥२१४॥
अह दिट्ठिवायसारे विचित्तजुत्तीवियारगरुयम्मि। साहिज्जंते भट्टो पभाकरो भणिउमाढत्तो ॥ २१५ ॥

भंते ! किमिमं जंपसि ? पुरिसपणीयत्तणेण[2] अपमाणं। सव्वन्नुणा पणीयं ति सो वि कह तीरए नाउं ? ॥२१६॥
न हु पच्चक्खाईणं गेज्झो[3] सो न य सरागवयणं पि। होइ पमाणं[4] वभिचारसंभवा[5] धुत्तवयणं व ॥ २१७ ॥
ता[6] वेयवयणमेव हि अपोरिसेयं ति जुज्जए घेत्तुं। तक्कहियाणि य जायाइयाणि धम्मो त्ति किच्चाणि ॥ २१८ ॥

विजएण जंपियं सव्वमणुचियं भाससे तुमं भद्द ! । जम्हा विरुद्धमेयं वयणं च[7] अपोरिसेयं च ॥ २१९ ॥
जइ सच्चं चिय एयं अपोरिसेयं ति कीस निच्चं पि। न[8] सुणिज्जइ ? जं संखा समवेक्खइ पुरिसवावारं ? ॥ २२० ॥
जं जदवेक्खं तं पुण तब्भवमवसेयमेय धूमो व। [9]सिहिसावेक्खो न य नहगुणो य गयणोवलंभाओ ॥ २२१ ॥
जं जं खे उवलब्भइ[10] तं तं जइ तग्गुणो त्ति वत्तव्वं। कुंभाइणो वि एवं च तग्गुणा[11] हुंतु निच्चा य ॥ २२२ ॥
ता किं पि जमिह वयणं तं पुरिसपणीयमेव घेत्तव्वं। सव्वन्नुणा[12] पणीयं नवरं दिट्ठेट्ठफलयं[13] तं ॥ २२३ ॥

---

१ °धक्खित्त° प्रतौ। मालतीगन्धाक्षिप्ताः ॥ २ पुरुषप्रणीतत्वेन ॥ ३ शक्यते ॥ ४ ग्राह्यः ॥ ५ व्यभिचारसम्भवात् ॥ ६ तद् वेदवचनमेव हि अपौरुषेयमिति युज्यते ग्रहीतुम्। तत्कथितानि च यागादीनि धर्मः ॥ ७ °सेणं च प्रतौ ॥ ८ न मुणि° प्रतौ। न श्रूयते ? यत् साक्षात् समपेक्षते पुरुषव्यापारम् ? ॥ ९ 'शिखिसापेक्षः' अग्निसापेक्षः, न च नभोगुणश्च गगने उपलम्भात् ॥ १० °वलंभ° प्रतौ ॥ ११ °ग्गुणो हुं° प्रतौ। तद्गुणाः ॥ १२ °न्नुणो प° प्रतौ ॥ १३ दृष्टेष्टफलदम् ॥

चंदुवरागाइअइंदियत्थसत्थोवएसणाओ य । अणुमाणेण स नज्जइ तदग्गहणं ता महामोहो ॥ २२४ ॥
वेयोपमाणउ च्चिय न जागमाईणि धम्मकिच्चाणि । हुंति सिवकारणाइं बहुजीवविणासगत्तेण ॥ २२५ ॥ किंच—
हिंसेज्जा न य भूए छ च्छागसए हणेज्ज मज्झंन्हे । एवं विरुद्धवक्को ही ! वेओ तह वि हु पमाणं ॥ २२६ ॥
एमाइसमयजुत्तीनिवेयणुप्पन्नसम्मपरिणामो । उज्झियमिच्छाभावो पभाकरो गिण्हए दिक्खं ॥ २२७ ॥
अह पढियसयलसत्थो उस्सग्ग-ऽववायविहिविहन्नू य । स महप्पा चिरकालं विहरइ वसुहं समं गुरुणा ॥ २२८ ॥
संलेहणं च काउं विजयमुणी मुणियमरणपत्थावो । काऊण भत्तचायं तिकूडगिरिथंडिले सुद्धे ॥ २२९ ॥
मरिऊणं उववन्नो सोहम्मे हेमनिम्मलसरीरो । तियसो दुसागराऊ, चंदाभम्मि विमाणम्मि ॥ २३० ॥
सो पुण पभाकरमुणी अप्पडिबद्धं धराए विहरंतो । चक्कपुरीए कालक्कमेण नयरीए संपत्तो ॥ २३१ ॥
उचियपएसे वुत्थो पत्थावम्मि य तवस्सिजणसहिओ । पुव्वोवइट्ठजिणसंतिचेइयम्मि गओ तत्तो ॥ २३२ ॥
देवमभिवंदिऊणं आसीणो समुचियम्मि देसम्मि । पारद्धा धम्मकहा समागओ नयरिलोगो वि ॥ २३३ ॥
अह जाव सजलजलहरमणहरसद्देण कहइ सो धम्मं । सोहम्माओ विजओ उज्जोइंतो दिसाचक्कं ॥ २३४ ॥

---

१ चन्द्रोपरागाद्यतीन्द्रियार्थसार्थोपदेशनात् च । अनुमानेन स ज्ञायते ॥ २ वेदाप्रमाणत एव न यागादीनि धर्मकृत्यानि । भवन्ति शिवकारणानि बहुजीवविनाशकत्वेन ॥ ३ भूतानि षट् छागशतानि ॥ ४ °ज्झन्हे प्रतौ ॥ ५-वाक्यः ॥ ६ एवमादिसमययुक्तिनिवेदनोत्पन्नसम्यक्त्वपरिणामः । उज्झितमिथ्याभावः ॥ ७ उत्सर्गाऽपवादविधिविधज्ञः ॥ ८ स्थण्डिलं-निर्जीवभूमिः ॥ ९ °द्धं वसुंधरा° प्रतौ ॥ १० °ऊण आ° प्रतौ ॥ ११ सजलजलधरमनोहरशब्देन ॥

सक्को व्व सोभमाणो चिरपडिबंधेण तात्र संपत्तो । देवं मुणिं च वंदिय उवविट्ठो भूमिवट्ठम्मि ॥ २३५ ॥
अणिमिसनयणनिवेसा चित्तालिहिय व्व लेवघडिय व्व । दट्ठूण तं च परिसा तदेगचित्ता लहुं जाया ॥ २३६ ॥
साहू वि सुत्तविणिउत्तचित्तविन्नायतियसथिरचित्तो । पुव्वभवगरुयगुरुपक्खवायओ भणिउमाढत्तो ॥ २३७ ॥
सो एस महप्पा जेण मंदिरं संतिणो जिणिंदस्स । उद्धरिउमिमं अप्पा भवा वि भवाउ उद्धरिया ॥ २३८ ॥
कहमन्नह चेइयविरहओ इहं साहुणो फुडं एज्जा ? । अम्हारिसाण य कहं तदभावे होज्ज पडिबोहो ? ॥ २३९ ॥
तदभावाओ जिणसासणस्स कह वा मयंकधवलस्स । जियमोहतिमिरपसरो हविज्ज सव्वत्थ वित्थारो ? ॥२४०॥ किं बहुना ?—

धन्यस्त्वं विजय ! त्वमेव विजयी संसारवारांनिधेस्तीर्णो गोष्पदवत् त्वयैव विशदा कीर्तिश्च संवर्द्धिता ।
जातस्त्वं च निदर्शनं सुकृतिनां निष्कृत्रिमोन्मीयते, भक्तिस्तीर्थकरे तवैव यदिदं चैत्यं त्वया कारितम् ॥ १ ॥
कृत्वा पापमनेकधाऽधिकरणान्युत्पाद्य चानन्तशो, जीवा मृत्युपथं गता न च गुणस्तैः कश्चिदात्रार्जितः ।
धन्यस्त्वं विजयैक एव हि परं स्वार्थं परार्थं च योऽकार्षीः श्रीजिनवेश्म विस्मयकरं निर्माप्य शैलोपमम् ॥ २ ॥
मिथ्यात्वप्रचुरो जनः सुयतयो विच्छेदिनोऽतीन्द्रियं, ज्ञानं विप्लुतमेतदेव हि जडा ब्रूयुर्न जैनं मतम् ।

१ अनिमेषनयननिवेशा चित्रालिखिता इव लेपघटिता इव । दृष्ट्वा ॥ २ °गचित्ता प्रतौ ॥ ३ सूत्रविनियुक्तचित्तविज्ञातत्रिदशस्थिरचित्तः । पूर्वभवगुरुकगुरुपक्षपातात् ॥ ४ 'भवात्' संसारात् ॥ ५ इयं सा° प्रतौ ॥ ६ गोःपदवस्त्वयै° प्रतौ ॥ ७ °तिवान्निःकृ° प्रतौ ॥ ८ निर्माप्य सैलो° प्रतौ ॥

न स्युं श्रेष्ठिजिनमन्दिराणि सुचिरस्थायीनि तुङ्गानि वा, तद्वन्यो जिनशासनोन्नतिकृतेऽमुष्मिन् भवेदुद्यतः ॥ ३ ॥
इति कथयति साधौ विस्मयोत्फुल्लनेत्रैरहमहमिकयैवाऽऽलोक्यमानः स लोकैः ।
प्रणतयतिपदाब्जः शिश्रिये स्वर्गमार्गं, पुरमभिहतमोहः पूर्जनोऽपि प्रतस्थे ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे चैत्याधिकारे विजयकथानकं समाप्तम् ॥ ११ ॥

जिनबिम्बविधापनं तद्विधिश्च

जिणहरकार[व]णे वि हु नो जिणबिंबं विणा हवइ सम्मं । धम्ममई भवाणं वोच्छं ता तविहाणमहं ॥ १ ॥
सुपसत्थवासरम्मि पूइत्ता सुत्तहारमप्पेज्जा । नियविभवोचिय मुल्लं निद्दोसो जइ स होज्ज परं ॥ २ ॥
अतहाविहे य तम्मि तक्कालुचियं विणिच्छिउं सम्मं । नियमेज्ज विंबमोल्लं जहतह दव्वप्पणे दोसो ॥ ३ ॥
बिंबअसिद्धी जिणदव्वभक्खणाओ अणंतसंसारो । कारस्सियरस्स य तन्निमित्तभावेण दोसो त्ति ॥ ४ ॥
अप्पत्तियं पि एवं परिचत्तं होइ उभयपक्खाणं । जाजीवं संबंधो जायइ एत्तो य अइपरमो ॥ ५ ॥
न य एत्तो उवयारी अन्नो भुवणे वि विज्जए परमो । इय कुसलबुद्धिजोगा बहुमाणो तम्मि जुत्तो य ॥ ६ ॥
जायंति जेत्तिया खलु तदुब्भवा केइ चित्तपरितोसा । तब्बिंबकारणाइं पि तेत्तिओ नेत्तियाइं से (?) ॥ ७ ॥

---

१ °श्रेष्ठिनम° प्रतौ ॥ २ °नि तावद्व° प्रतौ ॥ ३ हवेइ प्रतौ ॥ ४ वक्ष्ये ॥ ५ °क्कालोचि° प्रतौ ॥ ६ °प्पणो दो° प्रतौ ॥ ७ कारकस्य 'इतरस्य' कारयितुः ॥ ८ अप्रीतिकम् ॥ ९ °जोगो, ब° प्रतौ ॥ १० णाइं इं पि प्रतौ ॥

निप्फन्नस्स य बिंबस्स दिवसदसगस्स मज्झयारम्मि । कायव्वा उ पइट्ठा सा पुण तिविहा विणिद्दिट्ठा ॥ ८ ॥

वत्तंक्खा[1] खलु एक्का खेत्तंक्खा[2] अक्खिया पुणो अन्ना । अवरा य महक्खा[3] इह ताण सरूवं इमं नेयं ॥ ९ ॥

जो तित्थवई जइया तइया तब्बिंबठावणा[4] पढमा । उसभाईणं सव्वेसि जाण बीया पइट्ठ त्ति ॥ १० ॥

तइया सत्तरिसमहियजिणिंदसयगस्स[5] पुण पइट्ठ त्ति । जा जस्स जहा भावं जणेइ सा तस्स तह जुत्ता ॥ ११ ॥

आसायणदोसो वि हु बिंबबहुत्ते न मज्जणाइकओ । संकेयव्वो जं तीए संभवो भावदोसाओ ॥ १२ ॥

आवस्सयाइचुन्निसु वुत्तो पि हु बिंबठावणाइ[6] विही । चरियाउकित्तणाओ नँ[7] सेसपडिसेहगो सो वि ॥ १३ ॥

इय जहसत्तीए गुरुं लहुं व सेलुब्भवं मणिमयं वा । जिणबिंबं कारिंतो पउमो व्व गिही सिवं लहइ ॥ १४ ॥ तथाहि—

अत्थि पसत्थातित्थमाहप्पपडिहयडिंब-डमरा[8], मराल-कविंजल-सुय-सारियाऽभिरामाऽऽराममणहरा, हरऽट्टहाससेयकित्तिपुरिससोहिया, लच्छिवच्छत्थलि[9] व्व अणंतोवभोगसुंदरा[10], सरासणलट्ठि व्व भूरिभव[11]पव्वाणुगया[12], सयलमहिवलयसुपसिद्धा, जहत्थाभिहाणा सुहंकरा नाम नयरी । तत्थ य नियमहिमविजियपागसासणो[13], सासणाय[14]न्नणमेत्तसंभंतनमंतवइरिविसरो, सरोय-

१ व्यक्ताख्या ॥ २ क्षेत्राख्या ॥ ३ महाख्या ॥ ४ °बट्ठाव° प्रतौ ॥ ५ सप्ततिसमधिकजिनेन्द्रशतकस्य ॥ ६ बिम्बस्थापनायाः विधिः । चरितायुत्कीर्त्तनात् ॥ ७ न सोस° प्रतौ ॥ ८ प्रशस्तातिथ्यमाहात्म्यप्रतिहतभयविप्लवा ॥ ९ °च्छच्छलि प्रतौ ॥ १० लक्ष्मीवक्षस्थली अनन्तस्य—कृष्णस्योपभोगेन सुन्दरा, नगरी पुनः अनन्तैः—अपरिमितैः उपभोगैः सुन्दरा ॥ ११ शरासनयष्टिः भूरिभिः भव्यैश्च पर्वभिः—ग्रन्थिभिरनुगता, नगरी तु पर्वभिः—उत्सवैः ॥ १२ °पञ्चाणु° प्रतौ ॥ १३ इन्द्रः ॥ १४ °सणय° प्रतौ । शासनाकर्णनमात्रसम्भ्रान्तनमद्वैरिविसरः ॥

रदेसो व्व बहुपत्तकमलालंकिओ, महातरु व्व सउणनिवहसेवणिज्जो, सयलदिसामुहवित्थरियकित्तिकुमुइणीमालियभुयणसरपरिसरो सूरप्पभो नाम राया। सयलंतेउरपहाणा रायलच्छि व्व पच्चक्खा लीलावई नाम से भारिया। तीए य समं समयणाणुरूवं विसयसुहमणुसेवमाणस्स तस्स वच्चंति वासरा।

अन्नया लीलावई देवी निसि सुहसेज्जाए पसुत्ता अमंदमयरंदबिंदुसंदोहमत्तमहुयरारावमणहरं पउमं सुमिणे वयणम्मि पविसमाणमवलोइऊणं पडिबुद्धा। रायवयणेण सबुद्धिविभवेण य पहाणपुत्तजम्मं विणिच्छिऊण सुहेंण अच्छिउं पवत्ता। कइवयमासावसाणे य सुगब्भाणुभावतो धम्ममीमंसाविसओ डोहलो समुप्पन्नो। विन्नातो नरवइणा, वाहराविया पासंडिणो, पारद्धा तेहिं धम्मवियारा। तहाहि—

यागच्छागवधेन वैदिकजनैः कारुण्यतः सौगतैः, दीक्षातः शिववर्त्मवर्तियतिभिः स्नानादिभिः स्नातकैः।
तत्त्वज्ञानत एव कापिलमतैरावेदितोऽनेकधा, स्वस्वग्रन्थयथायथानुसरणाद् धर्मस्तदेवंविधः ॥ १ ॥ धर्मतत्त्वपरामर्शः

तह वि अरंजियत्तणेण न तीसे थेवं पि पडिपुन्नो दोहलो। तदसंपत्तीए य बाढं किसीभूया देवी। उव्विग्गो राया। निरूविया य पहाणपुरिसेहिं तदपरे पासंडिणो। सुनिउणं पलोयंतेहिं य दिट्ठा नंदणवणविजणपएसमल्लीणा सज्झाय-ज्झाण-

१ सरोमध्यभागः बहुपत्रैः कमलैः अलङ्कृतः, राजा तु बहुभिः पात्रैः–सत्पुरुषैः कमलया च–लक्ष्म्याऽलङ्कृतः ॥ २ महातरुः शकुनानां–पक्षिणां निवहेन–वृन्देन सेवनीयः, राजा पुनः सगुणपुरुषगणेन सेवनीयः ॥ ३ सकलदिङ्मुखविस्तृतकीर्तिकुमुदिनीमालितभुवनसरःपरिसरः ॥ ४ °तः सोग° प्रतौ ॥ ५ स्तोकम् ॥ ६ °निउणं प्रतौ ॥

निग्गहियमणपसरा भयवंतो धम्मसिंहाभिहाणा सूरिणो, निवेइया नरिंदस्स, वाहराविया य गउरवेण। कइवयसिस्सपरिवुडा य आगया सूरिणो राउलं[1], निसन्ना समुचियासणे। परमभत्तीए वंदिया रायमहिला[ए]। सिट्ठो य तीए पासंडियपरूवितो धम्मवियारो। परिभाविओ सूरीहिं, भणिया य देवी—

महाणुभावे! मुद्धजणजणियचित्तक्खेवो एस धम्मवियारो न जुत्तिभारं सोढुं पारइ। तहाहि—जइ छागवहेण धम्मो ता सुकयकम्माणो छड्डिया। अह मंतपाहन्नेण नत्थि दोसो ता कीस निग्गहिज्जंति साइणीओ?। जो य कारुन्नेण धम्मपरूवणापवंचो[2] सो वि वयणमेत्तं पत्तनिवडियमंसभक्खणाओ बुद्धसिस्साणं ति। 'दिक्खामित्ताओ वि धम्मसिद्धि' त्ति एयं पि अजुत्तं, जहुत्तकिरिया-नाणविरहेण केवलस्स तस्स फलासाहणाउ त्ति। ता सव्वे वि एएॅ[3] धम्मवियारा मुद्धबुद्धीण जोग्गा। कुसलाणं पुण रयणत्तयगहणमेव जुत्तं।

रायमहिलाए भणियं—किंतु किमेयं रयणत्तयं?। सूरिणा जपियं—निसामेहिं—

धम्मो करुणारम्भो असेससत्ताण रक्खणासारो। इंदिय-कसायनिग्गहपडिबद्धो[4] बाढमविरुद्धो ॥ १ ॥
देवो अट्ठारसदोसवज्जिओ विमलकेवलालोओ। बुद्धो तिजयपसिद्धो अच्चंतनिरंजणो य जिणो ॥ २ ॥
कारावगो य कत्ता धम्मस्स विरागवं च संविग्गो। निग्गहियऽक्खो कयसव्वसत्तरक्खो य धम्मगुरू ॥ ३ ॥
रयणत्तयमेयं कित्तेंयंति[5] निद्दुणियरुंददारिद्दं। पुन्नरहियाण एयं च नेव सुॅमिणे[6] वि संपडइ ॥ ४ ॥

जिनबिंबविधाने पद्मनृपकथानकम् १२। रत्नत्रयी

१ राजकुलम् ॥ २-प्रपञ्चः ॥ ३ °ए व ध° प्रतौ ॥ ४ °डिबुद्धो प्रतौ ॥ ५ कीर्तयन्ति निर्धूनितप्रचुरदारिद्र्यम् ॥ ६ स्वप्नेऽपि सम्पद्यते ॥

नियसुद्धबुद्धिकसवट्टयम्मि हेमं व ता परिक्खित्ता । एयं गिण्हसु भद्दे ! महल्लकल्लाणकोसकरं ॥ ५ ॥

एवं सूरीहिं वुत्ते देवी निउणबुद्धिपरिभावियजहावट्ठियवत्थुसरूवा, विणिच्छियदेव-धम्म-गुरुतत्ता, पीऊसवरिससित्तं पिव अप्पाणं मन्नंती जिणधम्मपरिग्गहेण, पडिपुन्नदोहला, मिच्छत्तपरिहारेण जहोचियं वट्टिउं पवत्ता । सूरिणो गया जहागयं ।

अन्नया य पडिपुन्नदोह[ला] सुपसत्थकरण-नक्खत्त-जोगे पसूया देवी दारयं । पंचधाईपरिलालिज्जमाणो, पउमो त्ति विहियनामधेज्जो, कमेण पवड्ढंतो, कलाकलावं च गुरुजणातो अहिज्जंतो, जोव्वणमणुपत्तो । अवरवासरे य सो पउमकुमारो 'जोग्गो' त्ति कलिऊण पइट्ठिओ जुवरायपए पिउणा । पारद्धो य तेणं जहावसरं वेरिनरिंदेहिं समं समरवावारो । विणाससंकिएण य वेवरोविओ रन्ना एसो जुवरायपयातो । जाओ य से अवमाणो, परिभावियं पवत्तो य—

ठाणब्भट्ठा सिहिणो व निव्वुइं दिंतु कह णु सप्पुरिसा ? । वीसामहत्थामवहत्था (?) मुत्ताण वि कह पवज्जंतु ? ॥ १ ॥ तथा—

पुरिसोत्तिमो त्ति गिज्जइ कह सो जो पंचयन्नभावे वि । नो भद्दसद्दसम्मद्दगब्भिणं भुवणमवि कुणइ ? ॥ २ ॥ किंच—

परमाहप्पुप्पन्नो [पण्णो] वि न वन्नणं जणो लहइ । अन्नत्थ अविन्नाओ ता हं तोलेमि अप्पाणं ॥ ३ ॥

इति निच्छिऊण कयवेसपरियत्तो निग्गओ गिहाओ रायपुत्तो, विविहदेसंतरेसु भमंतो य पत्तो एगत्थ आसमपए । दिट्ठो य तत्थ भीमो नाम तावसो । वुच्छो कइवयवासराइं तेण समं । गाढसिणेहेण य पडिवन्नो 'पुत्तो' त्ति कुमारो अणेण ।

१ इत्यर्थे ॥ २ क्षीरधात्री मज्जनधात्री मण्डनधात्री क्रीडाधात्री अङ्कधात्री चेति पञ्चधात्र्यः ॥ ३ 'व्यपरोपितः' दूरीकृतः ॥ ४ परिभावयितुम् ॥ ५ कदली इव ॥ ६ प्राप्तः ॥ ७ तोलमि प्रतौ ॥ ८ वुत्तो कं॰ प्रतौ । उषितः ॥

अवरवासरे य पायवडणपुरस्सरं कुमारो गमणत्थं तावसमणुन्नविउं[1] पवत्तो। विरहक्कायरत्तणेण य बाहप्पवाहपवालिया-णणेण[2] भणिओ सो पेण—वच्छ! बाढमणुचियमेय[3] मुणीण पेमकरणं, केवलं अप्पहू वट्टामि अप्पाणं पि पडिखलिउं, न य सिणेहे किं पि उवयरियं[4] तुम्हारिसे तीरइ मारिसेणं, तहावि इमं विस्ससुमुहाभिहाणजक्खमंतं पुवपुरिसागयं वच्छ! गिण्हसु त्ति, एसो हि जेण तुह देसंतरेसु वच्चमाणस्स सहाई हवइ आवयापडिखलणं च करेइ त्ति। पडिवन्नं कुमारेण। सुहमुहुत्ते[5] पुवसेवाइविहिसाहणपुवयं दिन्नो तावसेणं। पारद्धो य कुमारो तमाराहिउं सुसाणे कसिणचउद्दसीए।

अह जाव जावमुद्दापुरस्सरं[6] मंतसाहणं कुमरो। निग्गहियमणप्पसरो पारद्धो काउमच्चंतं ॥ १ ॥

ताव कयघोररूवो दंसणमेत्ते वि दिन्नभूरिभओ। मच्चु व भासमाणो माणाइक्कंतगुरुदेहो ॥ २ ॥

एगो झत्ति पिसाओ पत्तो कुमरंतियं दढं कुविओ। पारद्धमसंबद्धं किमेवमेयं? ति जंपंतो ॥ ३ ॥

कुमरेण जंपियं किं निरत्थयं भो! परिस्समं कुणसि?। एसो न स होइ जणो जो तीरइ भेसिउं तुमए ॥ ४ ॥

नियँजणगरज्जपमुहं[7] परिच्चयंतो[8] वि जो न भीओ हं। सो दुक्खविइन्नउरो तुमं तणायावि न गणेमि ॥ ५ ॥

अह दिसिपसरियदीहरकविलाविलभूरिकेसपब्भारं[9]। तणुभारभरियगयणं भयविक्खेवाउलियलोयं ॥ ६ ॥

१ अनुज्ञापयितुम् ॥ २ बाष्पप्रवाहप्रप्लावितानेनेन ॥ ३ बाढमनुचितमेव ॥ ४ उपकर्तुं युष्मादृशे शक्यते मादृशेन ॥ ५ सुहुमु° प्रतौ ॥ ६ जापमुद्रा-॥ ७ निजजनकराज्यप्रमुखम् ॥ ८ °रिचयं° प्रतौ ॥ ९ दिक्प्रसृतदीर्घकपिलाविलभूरिकेशप्राग्भारम्। तनुभारभृतगगनं भयविक्षेपाकुलितलोकम् ॥ क्षय-कालाशुभानिलविलुलद्गुरुगिरिसदृशम् ॥

मरकालकलंकलियानिलविलुलिअंगकगगिरिसिरिं। अणंतं नवंतं दट्ठूणं ईसि कयहासो ॥ ७ ॥
कुमरो पर्यपइ कहं अज्ज ति निसमइ न रागलविलत्तो ?। पेच्छणयच्छणमेयं कहमज्ज संभवेज्जा इहं ? ॥ ८ ॥
इय गयरिद्धागमंतनमेनसुद्धमणो भणेइ जा कुमरो। ता पयडियनियरूवो मलिकरो नागरइ जक्खो ॥ ९ ॥
होउं पडुतीन्विपणं आपन्नं देसु तुज्झ भिणो हं। आजम्मं निक्कमसमनिसमसुराजितो दूरं ॥ १० ॥

'एवं' ति पडिवज्जिऊण तयवणं रायपुत्तो उ[त्त]संहरियमंगोवयारो तावसाणुन्नातो पयट्टो उत्तराभिमुहं। सयासक्खिविप-उक्कमरिलंतमणगंडियमोयणाइसारो अणवरयपयाणगेहिं वच्चंतो संपत्तो तिजयलच्छीनिवासमंदिरं सीहपुरनयरं। तत्थ य पयइगंभीरमाणुसो पयइसुसीलो पयइकरुणायरो पयइपरोवयाररओ वइरसिंघो नाम राया। सो य वहिनसं गयधम्माणुरा-गिणवेण हर-पिंगामल-महुमंथ-जिण-बुद्धपडिमाउ तुंगसिंगमंदिरेसु पइट्ठाविऊण सयलतित्थेहिं समं भिन्नभिन्नं देवपासरूवं परिभाविउं पयत्तो। तत्थ य भिवसिस्सेहिं जंपियं—महारायं !

देहद्धधरियदइओ निदड्ढमयणो निमुक्कसंगो य। सूल-धणुनायडकरो सो एस तिलोयेणो देवो ॥ १ ॥

राजा—'देहार्धन्यस्तभार्यः अथ च दग्धस्मरः, त्यक्तसङ्गः अथ च शूलादिशस्त्रधारी' इति परस्परविरुद्धमाराध्यलक्षणमा-माति। एत्थंतरे जंपियं पिंगामलसिस्सेहिं—

१ त्रैधनधगनीयम् ॥ २ °त्र भइं प्रती ॥ ३ °मत्तुत्र° प्रती ॥ ४ उ पत्तु° प्रतौ। भगतु पतुर्मण्डितेन ॥ ५ निकरमसत्वनिसमगुणार्जितः ॥ ६ °पयत्तो प्रती ॥ ७ त्रिनामदः-ब्रह्मा ॥ ८ °महं जि° प्रती। मधुमथ-कृष्णः ॥ ९ °धणया° प्रती ॥ १० महादेवः शिव इत्यर्थः ॥

देवतत्त्व-विचारः

रुद्दक्खमाल-कुंडिय-सावित्तिगवत्ति-हंसपरियरिओ। चउवयणचवियवेओ, स एस बंभो त्ति जयकत्ता ॥ १ ॥

राजा—रुद्राक्षमालापरावर्तनादज्ञानी, कुण्डिका-वेदगुणनाभ्यां यतिमात्रः, स्त्र्यादिपरिग्रहाद् रागी, जगत्कर्तेति च प्रत्यक्षविरोधः स्त्री-पुंसयोगेनोत्पत्तिदर्शनादिति मृषा पूज्यस्वरूपमाभाति। एत्थंतरे नागरियं केसवभत्तेहिं—महाराय!

उव्वूढमहीवीढो मुर-कंसप्पमुहदणुयदलदलणो। जलहिजलविहियनिद्दो लच्छिपिओ एस सो कण्हो ॥ १ ॥

राजा—धृतभूपीठ इति वर्णनामात्रं स्वस्वभावावस्थितत्वात् क्षितेः, कंसादिवधाच्च विजिगीषुराजन्यरूपः, समुद्रनिद्राकरणाच्च तरणविद्याविशिष्टः, लक्ष्मीप्रिय इति च कामुकः, तदेतदपि न पारमार्थिकदेवतारूपमवभासते। एत्थंतरे भणियं कारुणियविणेयगणेण—महाराय!

कारुन्नपुन्नहियओ नियतित्थनिकारमसहमाणो जो। परमपयाओ वि भवं उवेइ सो एस बुद्धो त्ति ॥ १ ॥

राजा—'कथं कारुणिकः? अथ च पात्रगतमांसभोजनमप्यनुजानीते? तीर्थपराभवे भूयो भवमुपैति अथ च परमपदस्थः' इति बाढं परस्परव्याहतमेतदपि देवतत्त्वम्। एत्थंतरे भणियं अरहंतभत्तलोएण—महाराय!

जियकोहाइचउक्को हयमयणो सत्तु-मित्तसमचित्तो। अकलत्तो अममत्तो देवो सो एस अरहंतो ॥ १ ॥

१ °गविन्ति° प्रतौ। सावित्रीपत्नी—॥ २ °णठचि° प्रतौ। चतुर्वदनकथितवेदः॥ ३ °गुणिना° प्रतौ॥ ४ °रोधे स्त्री° प्रतौ॥ ५ °ढो सुर° प्रतौ॥ ६ वर्धना° प्रतौ॥ ७ संकादिवध्वाश्च प्रतौ॥ ८ °मुद्रानि° प्रतौ॥ ९ कारुणिकाः—बौद्धाः॥ १० निकारः—तीर्थपराभवः॥ ११ °वदत्त्व° प्रतौ॥

राजा—सत्यमेतत्, कथमन्यथा प्रशान्ता दृष्टिः ? सौम्यं वपुः ? प्रहरणपरिहारः ? न [स]स्त्रीकता ? छत्रत्रयादिपूजाप्रतिपत्तिश्च परदेवविलक्षणाऽस्य, युज्यते तदेष एव परमात्मा सतां सेव्यः संसारोत्तारहेतुरिति निश्चिनोमि, केवलं यद्यन्यतोऽपि मध्यस्थादेतन्निश्चयः स्यात् तदाऽन्यदेवतात्यागेनात्रैव तावत् स्थैर्यं करोमीति ।

अह नरवइतव्विहवयणसवणसंजायमच्छरुच्छेया । कयसमवाया सव्वे वि तित्थिया भणिउमाढत्ता ॥ १ ॥

राय ! किमेवमजुत्तं जंपह ? सलहेह किं व अरहंतं ? । एसो खु तेईवज्झो न पूजितो पुव्वजेहिं पि ॥ २ ॥

न य कुलमग्गपवन्नो देवो य गुरू य उज्झिउं जुत्तो । उद्दिट्ठे अणुरागो न य सप्पुरिसाण उचिओ य ॥ ३ ॥

उंप्पहपयन्नचित्तं न तुमं च उवेहिमो वयं कह वि । पुव्वठियं उज्झंते नियजीयं पि हु परिचइमो ॥ ४ ॥

रन्ना पयंपियं दूरचत्तमज्जायमेरिसं वोत्तुं । तुम्भाण भो ! न जुज्जइ जाणियबहुसमय-सत्थाण ॥ ५ ॥

जइ [तह] देवो धम्मो गुरू य कणगं च रयणमाई वि । अपरिक्खिऊ[ण कु]सला गिण्हंता हुंति हसणिज्जा ॥ ६ ॥

पुव्वपुरिसक्कमो वि हु कज्जे जुत्तिक्खमेऽणुसरणिज्जो । अन्नहरूवे वि य तम्मि अभिरई नणु महामोहो ॥ ७ ॥

१ °मेव त° प्रतौ ॥ २ °नात्रैव तात्पर्यं क° प्रतौ ॥ ३ अथ नरपतितद्विधवचनश्रवणसञ्जातमत्सरोत्सेकाः । कृतसमवायाः ॥ ४ श्लाघध्वे ॥ ५ 'त्रयीवाह्य' वेदत्रयीबहिष्कृतः यद्वा ब्रह्मा विष्णुः महेशश्चेति देवत्रयीबाह्यः ॥ ६ पूर्वजैः ॥ ७ उत्पथप्रपन्नचित्तं न त्वां च उपेक्षामहे ॥ ८ °घट्ठियं प्रतौ । पूर्वस्थितिं उज्झति [त्वयि] निजजीवितमपि परित्यजामः ॥ ९ राज्ञा पजल्पितं दूरत्यक्तमर्यादं ईदृशं वक्तुम् । युष्माकं भो ! न युज्यते ज्ञातबहुसमयशास्त्राणाम् ॥ १० °यमेमेरि° प्रतौ ॥ ११ °यपद्दु° प्रतौ ॥ १२ गुरु य प्रतौ ॥ १३ °णिज्जे प्रतौ ॥

जइ संभवंतबहुदव्वलाभमुवलहइ कोइ वरभंडं। ता किं तं गिण्हंतो गुरूहिं सो वारिउं जुत्तो ? ॥ ८ ॥
पासंडिएहिं वुत्तं नाणी देवो व इय खमो[2] वोत्तुं। सविगप्पकप्पियाइं विस्सं[3]मुहाइं ति न पमाणं ॥ ९ ॥

रन्ना भणियं—सच्चमेयं। तओ वाहरिया नियपुरिसा भणिया—अरे ! सव्वत्थ नयरे [4]पडहयपडिहणणपुरस्सरमिमं घोसेह, जहा—जइ को वि कत्थइ नाणवंतं सिद्धदेवयाविसेसं वा पुरिसं जाणइ ता सो तं राइणो सिग्घं निवे[5]येउ, महंतं पओयणं ति। 'तह' त्ति उग्घोसियं रायपुरिसेहिं। सुया य एसा आघोसणा पउमरायपुत्तेण। परमकोऊहलाउलिएण य पुच्छिया कुमारेण—किं भो ! पओयणं ? ति। तेहिं भणियं—भो महाभाग ! अम्ह नरिंदो देव-धम्माइविणि[6]च्छयं काउकामो पुरिसविसेसं मग्गइ [7]जंव्वयणाओ तव्विणिच्छओ हवइ, तदुवलंभनिमित्तं च एस उ[8]वक्कमो त्ति[9]। तओ कोऊहलेण रायपुत्तो गओ तं पएसं। पच्चभिन्नाओ य एगेण मागहपुत्तेणं। पढिउमारद्धो सो तग्गुणगणं। जाणिओ रन्ना, उववेसिओ समीवासणे, पुच्छिओ कुसलोदंतं।

[10]पत्थावे य भणियं कुमारेण—महाराय ! किमेस सव्वतित्थियमीलगो ? त्ति। तओ रन्ना सिट्ठो सव्वो पुव्वुद्दिट्ठधम्मवियारवुत्तंतो, दंसियाओ य पसुवइपमुहदेवयापडिमाओ। भिन्न[भिन्न]मवलोइयाओ निउणदिट्ठीए रायपुत्तेणं। पुच्छिओ य रन्ना—कुमार ! कहसु को देवो अभिरुइओ ?। कुमारेण वुत्तं—किमिह वुच्चइ ?। राइणा वुत्तं—तहावि संखेवेण जहाभिरुइयं

१ ज्ञानी देवो वा इति क्षमो वक्तुम् ॥ २ °मो वेत्तं प्रतौ ॥ ३ °स्सहमु° प्रतौ। विश्वग्मुखानि ॥ ४ पडिह° प्रतौ। पटहक-प्रतिहनन-पटहकवादन-॥ ५ °यओ महं° प्रतौ ॥ ६ °णिच्छियं प्रतौ ॥ ७ यद्वचनात् तद्विनिश्चयः ॥ ८ आरम्भ इत्यर्थः ॥ ९ °त्ति गओ को° प्रतौ ॥ १० पच्छावे प्रतौ ॥

साहेसु। कुमारेण कहियं—निंसामेसु—

नानाशस्त्रजुषः कथं गतरुषः ? स्त्रीसन्निधानात् कथं नीरागाः ? पशुनाशियागकथनात् कारुण्यवन्तः कथम् ?।
छद्माद्यष्टमहाविभूतिविरहाद् देवाधिदेवाः कथं ?, तस्मात् सर्वगुणर्द्धिमान् विजयतामर्हन्निहैकः प्रभुः ॥ १ ॥

राइणा भणियं—एवमेयं, अम्हं पि एस पडिहासो, परं जइ देवयाइमुहाओ एयनिच्छओ होइ ता तित्थियलोगो वि बुज्झेज्जा। तओ कुमारेण राइणो कन्नमूलि ड्डाऊण सिट्ठो चिरसाहिओ जक्खवुत्तंतो। राइणा वुत्तं—कुमार ! सव्वहा ममाणुग्गहं कुणमाणो तं जक्खं तहा पन्नवेसु जहा एस संसओ पणस्सइ त्ति। 'एवं करेमि' त्ति संसिऊण सुमरिओ जक्खो कुमारेण। आगओ य एसो 'भो जक्ख ! पच्चक्खो होऊण देवयाविसयं लोयस्स निंच्छयं कुणसु' त्ति आइट्ठो कुमारेण।

फुरंतमणिकुंडलो तयणु नाइ आखंडलो, समारुहिय पायडो सुरपहम्मि जक्खो ट्ठिओ।
विमाणमवचूलयाउललुलंतमुत्ताहलं, रणंतमणिकिंकिणीपडलबद्धकोलाहलं ॥ १ ॥
विसिट्ठहरिसुंद्धुरा निवपुरस्सरा तित्थिणो, स एस परमेसरो सरियमेत्तओ पत्तओ।
कहेउ जमिहोचियं इय पयंपिरा सायरं, खिवंति तमवेक्खिउं तयणु सिग्घमग्घंजलिं ॥ २ ॥

एत्थंतरम्मि जक्खेण जंपियं कीस संसयं कुणह ?। भो भो महाणुभावा ! निम्मलमइणो वि होऊण ॥ ३ ॥

१ नेसा° प्रतौ ॥ २ °यानिस° प्रतौ ॥ ३ °निच्छियं प्रतौ ॥ ४ इवार्थकमव्ययम् ॥ ५ प्रकटः ॥ ६ °पद्दं पि ज° प्रतौ ॥ ७ °सुद्धुरा प्रतौ। विशिष्टहर्षोद्धुराः ॥ ८ परंपि° प्रतौ। प्रजल्पनशीलाः ॥

सुदेव-लक्षणम्

बालो वि मुणइ एयं न राग-दोसेहिं परिगया देवा । अह ते वि पूयणिज्जा अपूयणिज्जो न ता कोइ ॥ ४ ॥
अत्थाहजलपवाहे अप्पाणं जो न तारिउं तरइ । सो वि हु तारेइ परं ति जुत्ति-दिट्ठेहिं य विरुद्धं ॥ ५ ॥
ता राग-दोसरहियं अरहंतं सरेह मुयह कुग्गाहं । संवेगिवग्गसुहयं मुंचह संसारिए देवे ॥ ६ ॥
संसारुत्तरणमणा जइ ता एयं विणिंच्छयं कुणह । इय संसिऊण जक्खो सहसा अदंसणं पत्तो ॥ ७ ॥

पहिट्ठो पुहइपालो सह कुमारेण अकुग्गाहिलोगेण य । विलक्खीभूया गया सट्ठाणं कुतित्थियाइणो । राया वि सकुमारो सुचिरं जिणं पूइऊण थुणिऊण य गओ नियघरं । कुमारेण समं कयं भोयणं । 'देवयाविसेसविणिंच्छयकरणेण परमोवयारि' त्ति परं हरिसपगरिसमुव्वहंतेण य रन्ना दिन्ना कुमारस्स सुरसुंदरी नाम नियधूया । विसिट्ठलग्गे य परिणीया अणेणं । वत्तो वीवाहो महया वित्थरेणं । ठविओ य रन्ना एसो महामंडलेसरपयम्मि, सभवणे व सुहेण अच्छिउं पवत्तो य ।

अन्नया य एगंते पउमकुमारेण सह चिट्ठमाणस्स राइणो सहस त्रिय गयणंगणे तं पएसमुवसप्पमाणो दिव्वनाणनयणो खेमंकरो नाम चारणसमणो कइवयविज्जाहरकुमाराणुगम्ममाणो चक्खुगोयरमुवगओ । तं च अच्छरियभूयरूवं मुणिवरमवलोइऊण विम्हियमाणसो ज्झड त्ति आसणा उट्ठिऊण राया निडालतडारोवियपाणिपउमकोसो विन्नविउं पवत्तो—भयवं ! पसीयह, नियपायदरिसणेणाणुगिण्हह, करेह सफलं अम्ह जीवियं—ति जंपिरे नराहिवे कारुन्नपुन्नहियओ पणयपत्थणाभंगभी-

१ अस्ताघ-॥ २ शक्नोति ॥ ३ स्मरत ॥ ४ सर्वास्तिर्गलुतदम् ॥ ५ °णिच्छियं प्रतौ ॥ ६ °णिच्छिय° प्रतौ ॥ ७ °वत्रो प्रतौ ॥

रुत्तणओ ओयरिओ रायभवणे माहू, दिन्नसमुचियामणो निसन्नो य। एत्थंतरे रायकुमारेण समं राया निडालतडताडियधरणिमंडलो पंचंगपणिवायपुरस्सरं सबायरेण पणमिऊण चरणजुयलं चारणसमणं भणिउमाढत्तो—

अज्ज कयत्था सुत्था य अज्ज अज्जेन पत्तपज्जंता । संसारमहोयहिणो जं जायं दंसणं तुम्ह ॥ १ ॥
रज्जं रिद्धीसुंदरमुत्तमं मंतसिद्धिविन्नाणं । मन्ने लब्भइ दुलहं पि न उण तुम्हाण पयसेवा ॥ २ ॥
वामोहतमंतरिए भयंत ! अम्हे कुतित्थियग्घत्थे । सम्मग्गम्मि निजुंजसु काउं कारुन्नमचंतं ॥ ३ ॥
अह सांहू तज्जोग्गयमुवलब्भ जिणं जिणिंदधम्मं च । साहइ सवित्थरत्थं महत्थदिट्ठंत-जुत्तिजुयं ॥ ४ ॥
ओहिन्नाणबलेण य मुणिउं पुव्वुत्तधम्मवुत्तंतं । भणइ य मुणी नरेसर ! किं वन्निज्जइ तुह मईए ? ॥ ५ ॥
जो य तहाविहसमयत्थसवण-मुणिसेवणाइविरहे वि । निच्छियदेवसरूवो विक्खिवसि तुमं कुतित्थिजणं ॥ ६ ॥
तुमए वि देवयाबलविदलियनीसेसलोयमोहेण । रायसुय ! पउम ! विहियं-तं जं जयविम्हयं जणइ ॥ ७ ॥
एत्तो च्चिय [गब्भ]गए तुमए दंरिसणवियारपडिबद्धं । तत्तविणिंच्छयसारं दोहलयमकासि तुह जणणी ॥ ८ ॥
ता सिवलच्छीए पेच्छियाण पुरिमाण निच्छियं घडइ । मिच्छत्तच्छन्ने वि हु लोए एवंविहा बुद्धी ॥ ९ ॥

---

१ ललाटतटताडित-॥ २ जानुद्विकं करद्विकं उत्तमाङ्गं चेत्यङ्गपञ्चकम् ॥ ३ आरब्धः ॥ ४ स्वस्थाः ॥ ५ व्यामोहतमोऽन्तरितान् ॥ ६ °यघेत्थे प्रतौ । कुतीर्थिकग्रस्तान् ॥ ७ °विहिय° प्रतौ ॥ ८ जगद्विस्मयम् ॥ ९ दर्शनविचारप्रतिबद्धम् । तत्त्वविनिश्चयसारम् दोहदमकार्षीत् ॥ १० °णिच्छिय° प्रतौ ॥

एत्तो अरिहंतं चिय देवं सुतवस्सिणो य गुरुणो त्ति । जिणपन्नत्तं तत्तं च भावसारं पवज्जेह ॥ १० ॥
वज्जह धम्मविरुद्धेहिं [1]संगं मुयह विसयवामोहं । [2]अप्पुव्वापुव्वगुणज्जणम्मि अज्जुज्जमं कुणह ॥ ११ ॥
इय एवमाइपन्नवणवयणनिवहेण निच्चला धम्मे । ते काउमणुन्नाओ मुणी[3] गओ वंछियं ट्ठाणं ॥ १२ ॥

नरवइ-कुमारा य पुव्वविणिच्छियधम्मा वि सविसेसं साहुवयणेण मुणियपरमत्था धम्मकज्जाइं चिंतिउं पवत्ता ।

अन्नया य पिउणो संतिया कुमाराणयणत्थं समागया पहाणपुरिसा । पडिहारनिवेइया गया कुमारसमीवं । 'पिउपहाण' त्ति दूराओ अब्भुट्ठिया कुमारेण, अवगूहणाइपडिवत्तिपुव्वयं च उववेसिया समीवासणेसु, पुट्ठा पिउणो कुसलवत्तं देससुत्थयं च । सिट्ठं च तेहिं जहोचियं । एत्थंतरे पत्ता भोयणवेला, उट्ठिओ कुमारो तेहिं समं, कया देवयाइपूया, निव्वत्तियं भोयणं । अह पत्थावमुवल[4]ब्भ तेहिं पिउपुरिसेहिं विन्नत्तो कुमारो—महाभाग ! महाराएण [5]अणिवत्तगरोगजज्जरियसरीरेण परलोगहियमियाणिं काउकामेण रज्जमहाभरं च तुमए आरोविउमिच्छुणा अम्हे तुम्हाणयणत्थं विसज्जिया, 'न य मए अदिट्ठम्मि वीयभोयणं कायव्वं' ति देवस्स आणा, ता अलं सेसकिच्चेहिं, सज्जीहोह गमणत्थं ति ।

एयं च सोच्चा कुमारो [6]आउरपिउसोगपूरपूरिज्जमाणमाणसो खणं किंकायव्ववाउलत्तणमणुभविऊण सयमेवाणुसरियधीरभावो कह कह वि नरिंदं मोयाविऊण पणइणीसमेओ अणवरयपयाणगेहिं गच्छंतो पत्तो सुहंकराभिहाणाए नियनयरीए ।

१ सगं प्रतौ ॥ २ अपुव्वा° प्रतौ ॥ ३ मुणिं प्रतौ ॥ ४ °लब्भं ते° प्रतौ ॥ ५ अनिवर्त्तकरोगजर्जरितशरीरेण ॥ ६ आतुरपितृशोकपूरपूर्यमाणमानसः क्षणं किंकर्तव्यव्याकुलत्वमनुभूय ॥

कया नयरिसोहा, पविट्ठो सगेहभवणं कुमारो, पंचंगपणिवायपुव्वगं पडिओ पीईचलणेसु। उवगूहिओ पिउणा, आरोविओ उच्छंगे, पुच्छिओ पुव्वाणुभूयदेसभमणवुत्तंतं। जणयदुत्थावत्थावलोयणपाउब्भवंतबाहप्पवाहाउललोयणेणं मन्नुभरखलंतक्खराए वाणीए जहावित्तं सिट्ठं कुमारेण। तहाभग्गोगं च तं दट्ठूण भणियं रन्ना—वच्छ! किमेवं कायरो होसि? सिद्धे मोत्तूण सेसाणं सुप्पसिद्धमेयं, एत्तो च्चिय पुव्वपुरिसा समग्गसंगचाएण पवज्जा संजमुज्जोगं, किं वा वच्छ! अम्हाणं सोयणिज्जं? नेहि निवत्तमार्ते किं नो उवभुत्तं संसारसुहं? कस्स वा सिरसेहरच्चणं नो गणीया आणा? अहवा किमणेण अप्पविकत्थणेण? अणंतसंसारसंसरणओ किं नो दिट्ठं? किं नाणुभूयं? किं वा नो कयं? ता पुत्त! परिचय सोगं, कुणसु धम्मगाहेउं ति। तओ रायलोएण थेवं पि अपडिवज्जंतो रज्जं महाकट्ठेण काराविओ तदब्भुवगमं। पसत्थमुहुत्ते य अहिसित्तो रायपए। जहोचियं सिक्खं दाऊण य रन्ना पडिवन्नमणसणं। समाहीए मरिऊण सोहम्मदेवलोए देवो जाओ त्ति। पउमराया वि तप्पारलोइयकिच्चाइं काऊण भावियभवसरूवो कालक्कमेण विगयसोगो जाओ, रज्जकज्जाणि य चिंतिउं पवत्तो।

अन्नया य रायवाडियानियत्तमाणेण दिट्ठं वीरभद्दसेट्ठिणा काराविज्जमाणं तुंगसिंगरुद्धदिसावगासं हरहास-हिमधवलं जिणभवणं। कोऊहलेण गओ तत्थ। अब्भुट्ठिओ वीरभद्दाईहिं। दंसिओ पासायकम्मविसेसो। पसंसिओ नरिंदेण सेट्ठी, जहा—

धन्नो तुमं महायस! नियभुयदंडज्जिएण वित्तेण। जेण तए जिणभवणं गिरिगरुयमिमं विनिम्मवियं ॥ १ ॥

१ °सयुप° प्रतौ ॥ २ 'दुच्छाय' प्रतौ । जनकदुस्थावस्थावलोकनप्रादुर्भवद्बाष्पप्रवाहाकुललोचनेन मन्युभरस्खलदक्षरया ॥ ३ समस्तसङ्गत्यागेन ॥ ४ तपुब्भग° प्रतौ । तदभ्युपगमम् ॥ ५ तुङ्गशृङ्गरुद्धदिगवकाशम् ॥

१५

गिरि-रन्न-सरिय-सायरलंघणपभिईहिं अज्जिओ अत्थो । धन्नाण धम्मकज्जे वच्चइ इयराण इयरम्मि ॥ २ ॥
निप्पुन्नमप्पयमहं मन्ने विनिवायभायणं पि धणं । जस्स मम नोवओगं वच्चइ एवंविहट्ठाणे ॥ ३ ॥
रज्जं रज्जुं पिव बंधणत्थमुवकप्पियं अहं मन्ने । उवजुज्जइ थेवं पि हु जं नो सद्धम्मकज्जम्मि ॥ ४ ॥
भावत्थयासमत्थो काहं दव्वत्थए न जइ जत्तं ? । ता अप्पण च्चिय परं अप्पा भवकूवए खित्तो ॥ ५ ॥
होउ बहुजंपिएणं इहेव चेईहरम्मि जिणबिंबं । काराविऊण संपइ अप्पाणं निच्चेमि त्ति ॥ ६ ॥
सिट्ठो य एस भावो पुरतो सेट्ठिस्स वीरभद्दस्स । तेणावि अणुन्नाओ सो पहरिसमुव्वहंतेण ॥ ७ ॥
अह सुमुहुत्ते रन्ना जच्चज्जुणकंचणेण जिणपडिमा । काराविउमारद्धा विहिणा पुव्वोवइट्ठेणं ॥ ८ ॥
सिद्धा य कमेणेसा ससहरलंछणविराइया पवरा । लद्धं च पइट्ठाए जोग्गं लग्गं महन्नलोग्गं ॥ ९ ॥
पत्तो य तम्मि समए स महप्पा चारणो मुणिवरिट्ठो । गुरुदिन्नगणाणुन्नो सूरी खेमंकरो भयवं ॥ १० ॥
विन्नायतदागमणो हरिसभरुब्भिज्जमाणरोमंचो । पउमो राया गंतुं तं वंदइ परमभत्तीए ॥ ११ ॥
गुरुणा दिन्नासीसो उवविट्ठो केवले महीवट्ठे । पुट्ठो य धम्मविसयं निव्वाहं सो मुणिंदेण ॥ १२ ॥

१ गिरिअरण्यसरित्सागरलङ्घनप्रभृतिभिः ॥ २ भावस्तवासमर्थः करिष्यामि द्रव्यस्तवे न यदि यत्नम् ॥ ३ 'नित्ययामि' शाश्वतीकरोमि ॥ ४ जच्चुज्जण° प्रतौ ॥ ५ शशधरलाञ्छनः-चन्द्रप्रभजिनः ॥ ६ य सम्मि प्रतौ ॥ ७ चारिणो प्रतौ ॥ ८ °न्नगुणा° प्रतौ । गुरुदत्तगणानुज्ञः ॥ ९ °वली म° प्रतौ ॥ १० निर्वाहम् ॥

सिद्धो य तओ तेणं पडिमाकारवणवइयरो सवो । पत्थावम्मि य वुत्तो एयपइट्ठं कुणह भंते ! ॥ १३ ॥
गुरुणा भणियं नरवर ! मंता-ऽऽहवणाइ इह असावज्जो । अम्हाण विही उचिओ ण्हवणाई पुण गिहत्थाण ॥ १४ ॥
तो वीरभद्दपमुहा गीयत्था भत्तिसंगया दक्खा । कयकरणा य गिहत्था अंत्थिक्कगुणन्निया निउणा ॥ १५ ॥
भत्ति-बहुमाणसारं देवपइट्ठाविहिं निरुविग्गा । पुच्छंति गुरू वि तओ जहासुयं कहिउमाढत्तो ॥ १६ ॥
घोसाविज्ज अमारिं रन्नो संघस्स तह य वाहरणं । विन्नाणियसम्माणं कुज्जा खेत्तस्स सुद्धिं च ॥ १७ ॥
तह य दिसिपालठवणं तक्किरियंगाण सन्निहाणं च । दुविहसुई पोसहिओ वेईएं ठवेज्ज जिणबिंबं ॥ १८ ॥
नवरं सुमुहुत्तम्मि पुव्वुत्तरदिसिमुहं सउणपुव्वं । वज्जंतेसु चउविहमंगलतूरेसु पउरेसु ॥ १९ ॥
तो सवसंघसहिओ ठवणायरियं ठवित्तु पडिमपुरो । देवे वंदइ सूरी परिहियनिरुवहय-सुइवत्थो ॥ २० ॥
संति-सुयदेवयाणं करेइ उस्सग्ग थुइपयाणं च । सहिरन्नदाहिणकरो सयलीकरणं ततो कुज्जा ॥ २१ ॥
तो सुद्धोभयपक्खा दक्खा खेयन्नुया विहियरक्खा । ण्हवणंगरा तो खिवंती दिसासु सवासु सिद्धबलिं ॥ २२ ॥
तयणंतरं च सुद्दियकलसचउक्केण ते ण्हवंति जिणे । पंचरयणोदगेणं कसायसलिलेण तत्तो य ॥ २३ ॥

---

१ 'फाराव' प्रतौ । प्रतिमाकारणव्यतिकरः ॥ २ 'पहुणा, गी' प्रतौ ॥ ३ आस्तिक्यगुणान्विताः ॥ ४ 'द्विविधशुचिः' बाह्याभ्यन्तरपवित्रः 'पौषधिकः' कृतोपवासः ॥ ५ चेइए प्रतौ । वेद्याम् ॥ ६ शकुनपूर्वकम् वाद्यमानेषु ॥ ७ 'णगिरा' प्रतौ ॥ ८ सिद्धिव' प्रतौ ॥ ९ जिणो प्रतौ ॥ १० माणिक्य मौक्तिक प्रवाल सुवर्ण ताम्र इत्येतानि प्रवाल मौक्तिक सुवर्ण रजत ताम्र इत्येतानि ॥॥ पञ्च रत्नानि, तद्भावितेनोदकेन ॥ ११ प्लक्ष-अश्वत्थ-

मंट्टियजलेण तो अंट्ठवग्ग-सव्वोसहीजलेहिं च । गंधजलेणं तह पवरवाससलिलेण य ण्हवंति ॥ २४ ॥
चंदणजलेण कुंकुमजलकुंभेहिं च तित्थसलिलेण । सुद्धकलसेहिं पच्छा गुरुणा अभिमंतिएहिं तहा ॥ २५ ॥
ण्हाणाणं सव्वाण वि जलधारा-पुप्फ-गंध-धूवाई । दायव्वमंतराले जावंतिमकलसपत्थावो ॥ २६ ॥
एवं ण्हविए बिंबे नाणकलानासमाचरेज्ज गुरू । तो सरससुयंधेणं लिंपेज्जा चंदणदवेणं ॥ २७ ॥
कुसुमाइं सुयंधाइं आरोवेत्ता ठवेज्ज बिंबपुरो । नंदावत्तयपट्टं पूइज्जइ चारुदव्वेहिं ॥ २८ ॥
चंदणछडुब्भडेणं वत्थेणं छायए य तं पट्टं । अह पडिसरमारोवे जिणबिंबे रिद्धि-विद्धिजुयं ॥ २९ ॥
तो सरस-सुगंधाइं फलाइं पुरओ ठवेज्ज बिंबस्स । जंबीर-बीजपूराइयाइं तो देज्ज गंधाई ॥ ३० ॥
मुद्दामंतन्नासं बिंबे हत्थम्मि कंकणनिवेसं । मंतेण धारणविहिं करेज्ज बिंबस्स तो पुरओ ॥ ३१ ॥
बहुविहपक्कन्नाणं ठवणा वरवेहगंघपुडियाणं । वरवंजणाण य तहा जाइफलाणं च सविसेसं ॥ ३२ ॥

शिरीष-उदुम्बर-वटादीनां मध्यच्छल्या भावितमुदकं कषायसलिलमुच्यते ॥

१ पर्वत-पद्मद्रह-नदीसङ्गम-नदीतटद्वय-गोश्रृङ्गोत्खात-वल्मीकप्रभृतिस्थानानां मृत्तिकाभिः भावितेन जलेन ॥ २ कुष्ठ प्रियंगु वचा रोध्र उशीर देवदारु दूर्वा मधुयष्टिकेति प्रथमाष्टवर्गद्रव्याणि । मेद महामेद कंकोल क्षीरकंकोल जीवक ऋषभक नखी महानखी इति द्वितीयाष्टवर्गद्रव्याणि । हरिद्रा वचा शोफ वालक मोथ ग्रन्थिपर्णक प्रियंगु मुरवास कर्च्चूरक कुष्ठ एला तज तमालपत्र नागकेसर लवंग इत्यादीनि सर्वौषधिद्रव्याणि । एतैर्द्रव्यैर्वासितं जलं क्रमशः अष्टवर्गजलं सर्वौषधिजलं चोच्यते ॥ ३ सरिस° प्रतौ । सरससुगन्धेन ॥ ४ सुगन्धानि ॥ ५ °णत्थदुब्भवेणं प्रतौ । चन्दनच्छटोद्भटेन ॥ ६ हस्तसूत्रं कङ्कणं वा ॥

माणिक्क-वरसोलय-खंडाईणं वरोसहीणं च । संपुन्नबलीय तहा ठवणं पुरओ जिणिंदस्स ॥ ३३ ॥
पंचगुडदीवो सुकुमारियाजुओ चउजुवारया दिसिसु । बिंबपुरओ ठवेज्जा भूयाण बलिं तओ देज्जा ॥ ३४ ॥
आरत्तिय मंगलईवयं च उत्तारिऊण जिणनाहं । वंदिज्जऽहिवासण देवयाए उस्सग्ग थुइदाणं ॥ ३५ ॥
अह जिणपंचंगेसुं न्नावेइ गुरू थिरीकरणमंतं । वाराओ तिन्नि पंच व सत्त व अचंतमपमत्तो ॥ ३६ ॥
मयणहलं आरोवइ अहिवासणमंतनासमवि कुणइ । झायइ य तयं बिंबं सजियं व जहा फुडं होइ ॥ ३७ ॥
एवमभिवासियं तं बिंबं छाएज्ज सदसवत्थेण । चंदणछड्डुमडेणं तदुवरि पुप्फाइं वि खिवेज्जा ॥ ३८ ॥
न्हावेज्ज सत्तधन्नेण तयणु जीवंतउभयपक्खाहिं । नारीहिं चउहिं समलंकियाहिं विज्ञंतनाहाहिं ॥ ३९ ॥
पडिपुन्नचत्तुसुत्तेण वेढणं चउगुणं च काऊण । ओमिणणं कारेज्जा तुट्ठाहिं हिरन्नदाणजुयं ॥ ४० ॥
तो वंदेज्जा देवे पइट्ठदेवीए काउ उस्सग्गं । देज्ज थुई तीए चिय ठवेज्ज पुरओ य पयपत्तं ॥ ४१ ॥
सोवेन्नवट्टियाए कुज्जा महु-सक्कराहिं भरियाए । कणगसलागाए बिंबनयणउम्मीलणं लग्गे ॥ ४२ ॥
सम्मं पइट्ठमंतेण अंगसंधीसु अक्खरन्नासं । कुणमाणो एगमणो सूरी वासे खिवेज्ज तहा ॥ ४३ ॥

१ 'आईणम्बरो' प्रतौ ॥ २ घयकुडदीवसु' प्रतौ ॥ ३ यलित्तओ प्रतौ ॥ ४ आरात्रिकं मङ्गलदीपकम् ॥ ५ गुरु प्रतौ ॥ ६° छडुम्भ° प्रतौ ॥ ७ 'विद्यमाननाथाभिः' सधवाभिः ॥ ८ प्रतिपूर्णतर्कुसूत्रेण ॥ ९ 'सुवर्णवाटिकायां' सुवर्णकचोलिकायाम् ॥ १० शुभलग्ने ॥

पुप्फ-ऽक्खयंजलीहिं तो गुरुणा घोसणा ससंघेण । थेज्जत्थं कायवा मंगलसद्देहिं बिंबस्स ॥ ४४ ॥

जह सिद्धि-मेरु-कुलपवयाण पंचत्थिकाय-कालाण। इह सासया पइट्ठा सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥ ४५ ॥

जह दीव-सिंधु-ससहर-दिणयर-सुरवास-वासखेत्ताणं । इह सासया पइट्ठा सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥ ४६ ॥

एत्थं सुहभावकए अक्खयखेवे कयम्मि बिंबस्स । सविसेसं पुण पूया किच्चा चिइवंदणा य तहा ॥ ४७ ॥

मुहउग्घाडणसमणंतरं च पूया य समणसंघस्स । फासुयघय-गुड-गोरस-णंतगमाईहिं कायवा ॥ ४८ ॥

सोहणदिणे य सोहग्गमंतविन्नासपुवयमवस्सं । मयणहलकंकणं करयलाओ बिंबस्स अवणिज्जा ॥ ४९ ॥

जिणबिंबस्स य विसए नियनियठाणेसु सवमुद्दाओ । गुरुणा उवउत्तेणं पउंजियवाउ ता य इमा ॥ ५० ॥

जिणमुद्द १ कलस २ परमेट्ठि ३ अंग ४ अंजलि ५ तहाऽऽसणा ६ चक्का ७।

सुरभी ८ पवयण ९ गरुडा १० सोहग्ग ११ कयंजली १२ चेव ॥ ५१ ॥

जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह करेह थिरकरणं । अहिवासमंतनसणं आसणमुद्दाए अन्ने उ ॥ ५२ ॥

कलसाए कलसण्हवणं परमेट्ठीओ उ आहवणमन्तं । अंगाए संमालभणं अंजलिणा पुप्फरुहणाई ॥ ५३ ॥

आसणयाए पट्टस्स पूयणं अंगफुसण चक्काए । सुरभीए अमयमुत्ती पवयणमुद्दाए पडिबोहो ॥ ५४ ॥

गरुडाए दुट्ठरक्खा सोहग्गाए य मंतसोहग्गं । तह अंजलीए देसण मुद्दाए कुणह कज्जाइं ॥ ५५ ॥

१ °प्फ्खयं° प्रतौ ॥ २ देज्ज° प्रतौ । स्थैर्यार्थम् ॥ ३ °कालका° प्रतौ ॥ ४ –वस्त्रादिभिः ॥ ५ °ओ य थिं° प्रतौ ॥

चोएइ एत्थ कोई जह किर सामाइयम्मि किं गुरुणो । जुत्तो ठियस्स एसो सावज्जो विहिसमारंभो ? ॥ ५६ ॥
कायवहकरणभंगा तम्मि जओ तस्स नियमओ हुंति । जायइ य अविस्सासो गुरूवएसेसु सिस्साणं ॥ ५७ ॥
गुरुणा भणियं हे मूढ ! कह वि जइ होइ कोइ कायवहो । तह वि हु गुरुवयणाओ आयरणाओ य न हु दुट्ठो ॥ ५८ ॥
विहिवयणं च पमाणं सुत्तुत्तं जेणं ठावणा गुरुणा । कज्जा जिणबिंबाणं तं च सविसयं हवइ करणे ॥ ५९ ॥
अन्नह निव्विसयत्तं पावइ तस्स त्ति तेण सो जुत्तो । तइया तह गुरुठवणा बिंबस्स य गउरवाइगुणा ॥ ६० ॥
अन्नं च सुत्तविहिणा संभविजयणाए बिंबठवणाए । नो कायवहाईया दोसा जिणभवणकरणे व ॥ ६१ ॥
जिणभवण-बिंब-पूयाइयं च न विणा गुरू गिही मुणइ । न य तत्थ न कायवहो गुरुणो दोसो य न य वुत्तो ॥ ६२ ॥
अलमेत्थ पसंगेणं ठविए एवं जिणस्स बिंबम्मि । अट्ठोत्तरकलसमएण मज्जिए पुण जहाविहवं ॥ ६३ ॥
पूयाइएसु जत्तो परमो पइदियहमेव कायव्वो । भो धीरभद्दपमुहा ! एस पइट्ठाए विहिलेसो ॥ ६४ ॥
[तओ] अवेक्खित्तचित्ता भालयलारोवियपाणिणो य वीरभद्दाइणो 'भयवं ! अणुग्गहिया अम्हे' इति पुणो पुणो उववूहंता गुरुं वंदिऊण पउमराइणो सव्वं परिकहिंति । सो वि तव्वयणा[यण्णणा]णंतरमेव तूरमाणमाणवपयट्टियपुरसोहं

साधूनां प्रतिष्ठा-विधिविधापनस्यादुष्टत्वम्

१ °रसामो गुरुव° प्रतौ ॥ २ °ण ठ्ठाव° प्रतौ । येन स्थापना गुरुणा कार्या जिनविम्बानाम् ॥ ३ °रुठ्ठव° प्रतौ ॥ ४ °वियजणाए विंबट्ठव° प्रतौ ॥ ५ °कहुणे प्रतौ ॥ ६ गुरु प्रतौ ॥ ७ दोसे प्रतौ ॥ ८ यत्न. ॥ ९ °घरित्त° प्रतौ । अव्याक्षिप्तचित्ता' ॥ १० अयवू° प्रतौ ॥ ११ तद्वचना[कर्णना]नन्तरमेव त्वरमाणमानवप्रवर्तितपुरशोभं प्रमुक्तचारकावरुद्धजनौघं उपाहृतसमस्ततीर्थजलकुसुमसर्वौषधिसुकुमारमृत्तिकाप्रमुखप्रतिष्ठोप-

पमुक्कचारगावरुद्धजणोहं उवाहरियसमत्थतित्थजल-कुसुम-सव्वोसही-सुकुमारमट्टियापमुहपइट्ठोवगरणं सन्निहिनिहित्तनिइगोव-ओगिवत्थुवग्गं दूरदेसवाहरियकुसलसाहम्मियगणं अच्चंतपयत्तपडिसिद्धविहारोवट्ठियसुट्ठियसाहुजणं पइट्ठामहूसवमारंभिऊण खेमंकरसूरिं भणिउं पवत्तो—भयवं ! अम्हाणुग्गहं काऊण जिणबिंबपइट्ठं करेह त्ति।

ततो सूरी कयचउत्थतवोविसेसो समाहियप्पा तक्कालोचियविहियनेवच्छो पुव्वग्गाहियसिक्ख-दक्ख-दव्वभावसुद्धिसंपन्न-समालभियालंकिय-निम्मलोभयपक्खकइवयण्हवणगरसहिओ पढमनिदंसियविहिणा सूरिमंतेणाधिवासणाइविहाणेण इट्ठंसवेला-[ए] अविलंबियखित्तबिंबसुरहिवासो समयाविरुद्धक्कमेण पइट्ठं करेइ। राया वि पुंन्नपगरिसागरभूयमप्पाणं मन्नंतो ताणि ताणि तक्कालोचियचिइवंदणा-ऽऽरत्तियाइकिच्चाणि संघ-साहम्मियदाणाणि सयणवग्ग-पयइलोयसम्माणणाणि य सयं करेइ। अह अवसेसिए पइट्ठाकिच्चे गुरू रायाइसभाए धम्मं कहिउमाढत्तो। जहा—

जिणभवण-बिंबठावण-पूया-जत्ताइकयपयत्तेहिं। धन्नेहिं गोप्पंयं पिव लंघिज्जइ भवसमुद्दोऽयं ॥ १ ॥

करणं सन्निधिनिहितनियतोपयोगिवस्तुवर्गं दूरदेशव्याहारितकुशलसाधर्मिकगणं अत्यन्तप्रयत्नप्रतिषिद्धविहारोपस्थितसुस्थितसाधुजनं प्रतिष्ठामहोत्सवमारभ्य ॥

२ °चारुगा° प्रतौ ॥ ३ कृतचतुर्थतपोविशेषः समाहितात्मा तत्कालोचितविहितनेपथ्यः पूर्वग्राहितशिक्ष-दक्ष-द्रव्यभावशुद्धिसम्पन्न-समालब्धालङ्कृत-निर्मलोभयपक्षकतिपयस्नपनकरसहितः प्रथमनिर्दर्शितविधिना ॥ ४ °याणंकयनि° प्रतौ ॥ ५ °णाविवा° प्रतौ ॥ ६ इष्टांशवेलायाम् ॥ ७ पुण्यप्रकर्षा-करभूतम् ॥ ८ तत्कालोचितचैत्यवन्दनाऽऽरात्रिकादिकृत्यानि सङ्घसाधर्मिकदानानि स्वजनवर्गप्रकृतिलोकसम्माननानि च ॥ ९ समापिते इत्यर्थः ॥ १० गोष्पदमिव ॥

एएसिं एक्कं पि [हु] नूणं सद्धम्मकारणं गरुयं । किं पुण जिणप्पइट्ठालट्ठा सव्वे वि दट्ठव्वा ? ॥ २ ॥
किं भन्नइ इह बहुयं ? जिणप्पइट्ठाविहिम्मि कीरंते । तं किं व न कल्लाणं जं नो सुहझाइ ? तहाहि ॥ ३ ॥
जमिह पइट्ठाए जिणं ण्हवंति विविहेहिं सलिलकलसेहिं । तं अच्चणो कुणंती तिलोयरज्जाभिसेयं व ॥ ४ ॥
जं च पहुमेयफल-पाग-सागयलिप्पुवणमंति जिणपुरओ । तं मोक्खसोक्खसेवहिमक्खेवेणुक्खणंति व ॥ ५ ॥
घणसुसिणिद्ध-सुदीहो सोहेइ नवजवंकुरप्पूरो । तक्कालुग्गयसुहकप्पसाहिपारोहनिवहं व ॥ ६ ॥
किं वेइविरयणाए जिणस्स ? नवरं कुणंति मन्ने हं । तद्दारेणं निव्वुइवहूए हत्थग्गहं भव्वा ॥ ७ ॥
सुहपुन्नचत्तुतंतूहिं सामिणो जं कुणंति ओमिणणं । तंतुच्छलेण लच्छि व अप्पणो संजमिंति दढं ॥ ८ ॥
उम्मीलिज्जइ भुवणेक्कचक्खुणो जं च लोयणजुयं पि । तं तइलोयपलोयणपउणं पकुणंति नियचक्खुं ॥ ९ ॥
छेलिया छत्तीपत्तं व पावियव्वं बुहेहिं काउमिमं । इय संसिउं व सव्वत्थ निब्भरं भमइ तूररवो ॥ १० ॥
इइ जं [जं] जयगुरुणो कीरइ भवेहिं मंगलकएण । परिणमइ तयणुरूवत्तणेण तं तं सुहाए सिं ॥ ११ ॥
ता सुकयकम्मणो च्चिय तुब्भे जेसिं जिणिंदविसयम्मि । एवंविहा पवित्ती सव्वपयत्तेण संभवइ ॥ १२ ॥

१ नूण प्रतौ ॥ २ °णपइ° प्रतौ । जिनप्रतिष्ठाश्रेष्ठानि सर्वाण्यपि द्रष्टव्यानि ॥ ३ मोक्षसौख्यसेवधिम् अक्षेपेण उत्खनन्ति इव ॥ ४ °णुवणं° प्रतौ ॥ ५ वेदीविरचनया ॥ ६ निर्वृतिवध्वाः 'हस्तग्रहं' पाणिग्रहणम् ॥ ७ शुभपुण्यतर्कुतन्तुभिः ॥ ८ तंतच्छ° प्रतौ ॥ ९ संयच्छन्ति ॥ १० °पजोय° प्रतौ । त्रैलोक्यप्रलोकनप्रगुणम् ॥ ११ छागी सप्तपर्णमिव ॥ १२ सुखाय तेषाम् ॥ १३ सुकृतकर्माणः ॥

अंगुट्ठलघिट्ठा वि हु जेहिं पइट्ठाविया न जिणपडिमा। ते निव्वुईए पुरिसा कहमप्पाणं पइट्ठंतु ? ॥ १३ ॥

एवं सुचिरं ते उववूहिऊण अन्नत्थ विहरिया सूरिणो। राया वि रज्जकज्जाइं धम्मकज्जाणि य चिंतिउं पवत्तो। अन्नया य रज्जसिरिसुहमणुहवंतस्स तस्स पुव्वनिकाइयकम्मदोसाओ राइणो महंतो दाहजरो संवुत्तो। कारविया य मंत-तन्तोवयारा, वाउलीहूओ सव्वो जणो, अणवरयविमुक्कंसुयजालं परुन्नमंतेउरं। अच्चंतमणिवत्तगदाहज्जराभिभूयस्स य रन्नो परिगलिओ सम्मत्तभावो। तहानिबद्धाउयत्तणेण स महप्पा अट्टज्झाणदोसेण मरिउं सयंभुरमणमहासमुद्दे गब्भवक्कम्मियमच्छत्तणेणं उववन्नो त्ति।

तव्विहजिणप्पइट्ठाकारवणऽज्जियविसिट्ठपुन्नो वि। अणवरय समयसंसिय[स]किरियाकरणरसिओ वि ॥ १ ॥

आबालकालउ च्चिय निप्पडिमविवेयपगरिसगुरू वि। तेत्तियजणाण पुरओ कयतित्थपभावणो वि दढं ॥ २ ॥

उवसम-विवेय-अत्थिक्कपमुहगुणभूसितो वि स महप्पा। तह दुग्गइं पवन्नो ही ही ! कम्माण माहप्पं ॥ ३ ॥

अहवा जइ मल्लिजिणो इत्थित्तं बीयगब्भवासं च। वीरो वि कारविज्जइ ता को कम्माण पडिमल्लो ? ॥ ४ ॥

इय सो मच्छो होउं इतो ततो जलनिहिम्मि हिंडंतो। जिणबिंबतुल्लरूवं पेच्छइ एगं महापउमं ॥ ५ ॥

वलयागारं मोत्तुं मच्छा पउमा य किर तहिं हुंति। आगारेहिं सव्वेहिं सव्वविऊणि—त्ति निद्दिट्ठं ॥ ६ ॥

जिनबिंबविधाने पद्मनृपकथानकम् १२। कर्मणां बलिकत्वम्। मत्स्यानामाकाराः

१ अनवरतविमुक्ताश्रुजालं प्ररुदितमन्तःपुरम् ॥ २ तद्विधजिनप्रतिष्ठाकारणार्जितविशिष्टपुण्योऽपि । अनवरतं समयशंसितसत्क्रियाकरणरसिकोऽपि ॥ ३ निष्प्रतिमविवेकप्रकर्षगुरुरपि । तावज्जनानां पुरतः कृततीर्थप्रभावनः ॥ ४ °णाणुपु° प्रतौ ॥ ५ द्वितीयगर्भवासम् ॥ ६ 'सर्वविदा' सर्वज्ञेन इति ॥

अह तहाविहरूवपलोयणपाउब्भवंतमहंतपरितोसस्स ईहा-ऽपोह-मग्गणं कुणमाणस्स तस्स जायं जाईसरणं। दिट्ठिवहपइट्ठियं व दिट्ठं पुव्वकारावियं जयगुरुबिंबं, अणुसुमरितो य करुणामयमयरहरो सूरी खेमंकरो, टंकुक्कीरिय व पयडीहूया हिययसिलावट्टम्मि तदुवएसा। संवेगमग्गाणुलग्गमाणसो य चिंतिउं पवत्तो—अहो ! मम मंदभग्गया, अहो ! संकिलिट्ठकम्मया, अहो ! निंयइनिरुवक्कमत्तणं, जं तहाविहसद्धम्मसामग्गिसंभवे वि सिंधुतडपत्तं जाणवत्तं व विहडियं तड त्ति मह अंतसमए सम्मत्तं, ता किमित्तो करेमि ? कं पवज्जामि ? कत्थ वच्चामि ? किं वा कयं सुकयं हवइ ?–त्ति सुचिरं संतप्पिऊण अच्चंतसुविसुद्धमणपसरो 'सो चेव सरय[चंदो] चंदप्पहो जयगुरू सरणं' ति कयविणिच्छओ निरागारमणसणं पवज्जिऊण परमसमाहीए पंचपरमेट्ठिमहामंतमेक्कमेवाणवरयमणुसरंतो कालं काऊण सहस्सारे कप्पे उक्कोसाऊ देवो उववन्नो त्ति। परिसमत्तपज्जत्तिभावो य कयतहाविहतक्कालोचियकिच्चो 'कस्स कम्मणो फलमेयं ?' ति जाव ओहिं पउंजइ ताव पेच्छइ मच्छभवुत्तरं नरिंदभवं पुव्वाणुभूयं ति। तं च दट्ठूण ज्झड त्ति गाढुक्कंठापरिगओ गओ अलंकेरियसमुचियअलंकरणो य विमाणमारुहिऊण कइवयपहाणसुरपरियरिओ पुव्वकारियम्मि तम्मि चंदप्पहजिणमंदिरम्मि। वंदिओ परमभत्तिपयरिसमुव्वहंतेण जयगुरू।

१ तथाविधरूपप्रलोकनप्रादुर्भवन्महापरितोषस्य ईहाऽपोहमार्गणां कुर्वाणस्य ॥ २ दृष्टिपथप्रतिष्ठितमिव ॥ ३ जाय° प्रतौ ॥ ४ करुणामृतमकरगृहः। मकरगृहः–समुद्रः ॥ ५ मन्दभाग्यता ॥ ६ नियतिनिरुपक्रमत्वम् ॥ ७ °वक्कम° प्रतौ ॥ ८ कथ प्रतौ ॥ ९ °मणापणपस° प्रतौ ॥ १० एकमेव अनवरतं अनुस्मरन् ॥ ११ मत्स्यभवोत्तरम् ॥ १२ °लंकारि° प्रतौ। अलङ्कृतसमुचितालङ्करणः ॥ १३–प्रकर्षमुद्वहता ॥

नीहरंतेण य जिणाययणाओ तक्कालमेव विहारेणाऽऽगया दिट्ठा धम्मकहं कुणमाणा खेमंकराभिहाणा सूरिणो। परमपेमुक्करिसमुव्वहंतेण य पणिवइया अणेणं। दिन्नासीसो य आसीणो समीववसुमइतलम्मि। दिव्वनाणोवलद्धभावेण भगवया सायरं संभासिओ य, जहा—भो सुरवर! पुन्नवंतो सि तुमं, तथाहि—

शशधरकमनीयं जैनबिम्बं महीयस्तदिदमुदितभासोद्भासयद्विश्वविश्वम्।
जिनभवनभुवीह स्थापयन् पुण्यभाजां, भवसि न कथमीशो? मादृशां वा न शस्यः? ॥ १ ॥
सुचरितचरणेऽपि प्राकृतैर्दुष्कृतैस्ते, किमपि सुमतिरोधी कण्टकोद्वेधकल्पः।
समजनि य[द]कस्मादन्तकालुष्यविघ्नस्तदिह हृदि विषादं सर्वथा मा कृथास्त्वम् ॥ २ ॥
कृतसुकृतशतोऽपि प्राणिवर्गः कुकर्मव्यतिकरनिहतात्मा प्राप्नुयात् किं न दौस्थ्यम्?।
तदपि शिवमुपेष्यस्यन्यमानुष्यजन्मन्यनुपमजिनबिम्बस्थापनायाः प्रभावात् ॥ ३ ॥
इति गुरुगिरं श्रुत्वा हृष्टः कृतप्रणतिः सुरः, सुरपदमगाद् यानाक्षेपस्फुरन्मणिकुण्डलः।
मुनिपतिरपि प्रीत्या भव्यैः सदा समुपासितः, सह यतिजनेनोर्वीं गुर्वीं विहर्तुमशिश्रियत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे जिनबिम्बप्रतिष्ठाप्रक्रमे महाराजपद्मकथानकं समाप्तम् ॥ १२ ॥

सम्मं पइट्ठिए वि हु जिणिंदबिंबे न पूयणेण विणा । होज्जा निज्जरलाभो ता तप्पूयाविहिं वोच्छं ॥ १ ॥
काले सुइनेवच्छो वरेहिं पूफाइएहिं विहिसारं । सारत्थवण्णपहाणं जिणिंदपूयं रएज्ज गिही ॥ २ ॥
कालो य तत्थ संज्झातियं ति अहवा सेवित्तिअणुरूवो । सुइणा य दव्वतो मज्जिएण सुहवित्तिणा भावो ॥ ३ ॥
नेवच्छमवि य एत्थं सुपसत्थमणुब्भडं अहसणिज्जं । सेयं-ऽवाहय-निद्दोसदूसरूवं मुणेयव्वं ॥ ४ ॥
पुप्फ-ऽक्खय-धूव-पईव-वास-बलि-वारि-पत्त-सुफलेहिं । घुसिण-घणसार-चंदण-मगणाहिविलेवणेहिं च ॥ ५ ॥
कंचण-मणिनिम्मियमउड-कडय-कडिसुत्त-तिलयपमुहेहिं । पवरेहिं भूसणेहिं वत्थेहिं तहा महत्थेहिं ॥ ६ ॥
सेसेहिं वि सिद्धत्थाइएहिं वत्थूहिं सुप्पसत्थेहिं । जुत्ता पूया एत्तो नऽन्नो धन्नो हि उवओगो ॥ ७ ॥
पूयाकरणे य विही वयणं नासं च संजमित्तु दढं । वत्थेण जिणं पूएज्ज इहरहाऽऽसायणा गरुई ॥ ८ ॥
सिट्ठं च इमं जे भूवइस्स वट्टंति जत्तओ किंचे । पावंति फलं ते तव्वरे य नवरं किलिस्संति ॥ ९ ॥
गंभीरपयत्थमहत्थसंथवुद्दंडदंडउद्दामं । कित्तेज्ज गुणग्गामं परमा एसा हु जिणपूया ॥ १० ॥

१ निज्जरला॰ प्रतौ । निर्जरालाभ. ॥ २ ॰णप्पहा॰ प्रतौ । सारस्तवनप्रधानाम् ॥ ३ स्ववृत्तेः—स्वाजीविकाया अनुरूपः ॥ ४ भावतः ॥ ५ श्वेताव्याहतनिर्दोषदूष्यरूपम् ॥ ६ ॰प्फक्खयधूवपइव॰ प्रतौ ॥ ७ घुसृणं—केशरम् ॥ ८ घनसारः—कर्पूरम् ॥ ९ मृगनाभिः—कस्तूरिका ॥ १० 'महार्घै.' महामूल्यैः ॥ ११ सिद्धार्थादिभि· ॥ १२ वदनं नासिका च संयम्य दृढम् ॥ १३ गम्भीरपदार्थमहार्थसंस्तवोद्दण्डदण्डकोद्दामम् । कीर्तयेद् गुणग्रामम् ॥

[1]कामियसिद्धीणमिमं दारं सारं गिहत्थधम्मस्स । जिणपूयणं [2]जणाणं निप्पुन्नाणं न संभवइ ॥ ११ ॥
सोक्खं सव्वो वंछइ तं मोक्खे सो य होइ धम्माओ । सो पुण सम्मत्ताओ तं पुण जिणपायपूयणओ ॥ १२ ॥
इय बुज्झिऊण इत्थेव सव्वजत्तेण [3]उज्जओ मणुओ । हवइ भवपारगामी पभंकरो एत्थ दिट्ठंतो ॥ १३ ॥ तहाहि—

अत्थि [4]कयजुगकयणिच्चावयारं व अणवरयपयट्टमहंतमहूसवं, सवणगोयरोवगमे वि दिन्नपहियपरितोसं वसंतउरं नाम नयरं । जहिं च कुलसेल व्व सुरभवणविसेसा, देवलोयविमाणमाल व्व मणहरा पासायपरंपरा, [6]देवगुरुमिहुणंग व्व नर-नारीगणा, [8]कमल-कल्हार-कुमुयपरागवासियसच्छसलिलपडहच्छा उवहसियमाणसा सरोयरपंती । तत्थ य [10]उद्दंडभुयदंडमंडवावासियरायलच्छिसाणुरायऽच्छिविच्छोहविच्छुरियव[य]णो, सहस्सनयणो व्व [11]निहयपरभूधरसत्तुपक्खो, जहत्थक्खो सुदंसणो नाम राया । सयलसीमंतिणीसीमभूयरूवा पभावई नाम से भज्जा । [12]परिभूयदेवगुरुमइविभवो भवदत्तो अमच्चो, पसायट्ठाणं नरवइस्स, दढमणुरत्तो य सव्वन्नुधम्मम्मि । जहानिउत्तरज्जकज्जाणि य सो चिंततो कालं वोलेइ ।

---

१ इच्छितसिद्धीनाम् ॥ २ जिणाणं निप्पुन्नाणं म सं° प्रतौ ॥ ३ उद्यतः ॥ ४ कृतयुगकृतनित्यावतारमिव अनवरतप्रवृत्तमहामहोत्सवम्, श्रवणगोचरोपगमेऽपि दत्तपथिकपरितोषम् ॥ ५ °यकिच्चा° प्रतौ ॥ ६ देवगुरुः–बृहस्पतिः ॥ ७ °णमञ्चनर° प्रतौ ॥ ८ कमलकह्लारकुमुदपरागवासितस्वच्छसलिलप्रतिपूर्णा उपहसितमानससरोवरा सरोवरपंक्तिः ॥ ९ °च्छाओ उव° प्रतौ ॥ १० उद्दण्डभुजदण्डमण्डपावासितराजलक्ष्मीसानुरागाक्षिविक्षेपाच्छुतवदनः ॥ ११ इन्द्रपक्षे निहताः–छिन्नाः पराः–महान्तः भूधराः–गिरय एव शत्रवः तेषां पक्षाः–पतत्रा येन सः, राजपक्षे पुनः निहतः–विनाशितः परभूधराः–प्रकृष्टबलगर्विता राजान एव शत्रुपक्षो येन ॥ १२ परिभूतबृहस्पतिमतिविभवः ॥

अन्नया य राया अमच्चो [य] पड्डिया रायवाडीए। उवणीया तक्कालदेसंतरागयवणियजच्चतुरगा वंदुरापालेणं। कोऊहलेण य एगम्मि राया आरूढो, बीयम्मि अमच्चो। वाहिया जहासत्तीए। विवरीयसिक्खत्तणेण पवणाइरेगवेगत्तणेण य 'एस नरिंदो, एस नरिंदो' त्ति विप्फारियलोयणं वाहरंतस्स वि रायलोयस्स ते तुरगा दीहमद्धाणं लंघिऊण निमेसमेत्तेण वि चक्खुगोयरमइगय त्ति। नरिंदं अमच्चं च तहाहरियं अवधारिऊण रायपरियणो सकरि-तुरग-वाहणो लग्गो तदणुमग्गेण। अमच्च-रायाणो य तुरगेहिं दुक्कम्मेहिं व पाडिया भीमाडवीए। अचंतपरिस्समविहुरा य जैमातिहित्तमावन्ना तुरया। गाढ-सुढियतणुप्पन्नतण्हाइरेया य राया-ऽमच्चा निवेन्ना बहलपत्तलतरुवरच्छायाए, सिसिरमारुयवसेण य मणागमुवलद्धपडियारा परोप्परं भाविउं पवत्ता—

कल्लाण गई कुडिला अचिंतणिअं च आवयावडणं। संपत्तीओ वि कहं ज्झड त्ति ही! दिट्ठनट्ठाओ? ॥ १ ॥

दुट्ठमहिल व्व पावा रायसिरी पेच्छ कट्ठसंतप्पा। दइवम्मि विसंवइए अमयं पि विसत्तणमुवेइ ॥ २ ॥

किल रज्जंगाइं तुरंगमाइणो विसमनित्थरणहेउं। जुज्जंति नवरि ते वि हु विहुरभरं इय पणामिंति ॥ ३ ॥

इय जा[व] सोगसंगिलणसामलीभूयसंकुइयवयणा। चिट्ठंति सगोट्ठीए सुणंति ता दुंदुहिनिनायं ॥ ४ ॥ तथा—

१ तत्कालदेशान्तरागतवणिग्जात्यतुरगौ मन्दुरापालेन ॥ २ नरिंद अमच्चं त तद्दा" प्रतौ ॥ ३ 'यमातिथित्वमापन्नौ' मृतौ तुरगौ। गाढश्रान्ततनूत्पन्नतृष्णातिरेकौ ॥ ४ उपविष्टौ ॥ ५ आपदामापतनम् सम्पत्तयोऽपि कथं झटिति ॥ ६ कष्टसन्तर्पणीया दैवे 'विसंवदिते' प्रतिकूले जाते अमृतमपि विपत्वमुपैति ॥ ७ कष्टनिस्तरणहेतोः ॥ ८ जुज्जंत प्रतौ ॥ ९ 'विधुरभरं' व्याकुलत्वम् एवं अर्पयन्ति ॥ १० शोकमिलनश्यामलीभूतसङ्कुचितवदनौ तिष्ठतः सगोष्ठिकौ ॥

संवायरहरिसुक्करिसजायरोमंचकंचुइयकाया[1] । गयणयले सुरनिवहा विज्जुज्जोयं पिव कुणंता ॥ ५ ॥
उप्पयण-निवयणुम्मिलण-खलण-लुलणाइभूरिसंरंभा[2] । गंधुदय-कुसुमवरिसं चेलुक्खेवं च कुणमाणा ॥ ६ ॥
एगे नच्चंति थुणंति चावरे तदवरे य गायंति । अच्चंतभत्तिपब्भारतरलिया किं व न कुणंति ? ॥ ७ ॥
हरि-हरिण-ससग-सूयर-तरच्छ[3]-भल्लुंक[4]पमुहपसुनिवहा । अन्नोन्नमुक्कवइरा तदभिमुहा पट्ठिया दिट्ठा ॥ ८ ॥
सम्ममुवसंतचित्ता वल्लीबद्धोद्धकेसजूडा य । अडइयणा[5] य पयट्टा तदभिमुहं [6]पेहिया रन्ना ॥ ९ ॥
एगो य थेरसबरो पुट्ठोऽमच्चेण तेण वि य सिट्ठं । एत्थ पएसम्मि मुणी संपत्तो केवलालोयं ॥ १० ॥
[7]तस्सेस पायपूयणकएण सनरा-ऽमरो तिरि[य]वग्गो । परिहरियसेसकज्जो सज्जो निज्जाउमारद्धो ॥ ११ ॥

एवं सोऊण कोऊहलेण सामच्चो राया गतो तम्मग्गेण । दिट्ठो देवकयकणयकमलनिसन्नो रवि व्व पभासंतो मुणिवरो । कयतप्पायपउमपणामा य उवविट्ठा धरणिवट्ठे । मुणियतिहु[य]णवइयरेण संभासिया केवलिणा । पारद्धा य सव्वसाहारणा देसणा ।

जहा—भो भो भव्वा ! विभावेह सम्मं [8]भवस्सभावं अच्चंतविरसं दुज्जणसरूवं व मुहमेत्तरमणीयं च, माइंदजालविलसियं व [9]पयडियविविहसरूवं दूरवुक्कंतपरमत्थं च, काउरिसचेट्ठियं व मुद्धसम्मोहकारयं[10] बाढमुव्वियणिज्जं च । एएण वामोहिया पुरिसा

[1] सर्वादरहर्षोत्कर्षजातरोमाञ्चकञ्चुकितकायाः ॥ [2] उत्पतन-निपतन-उन्मीलन-स्खलन-लुलनादिभूरिसंरम्भाः । गन्धोदककुसुमवर्षा चेलोत्क्षेपं च ॥ [3] तरक्षः—व्याघ्रविशेषः ॥ [4] शृगालः ॥ [5] अटवीजनाः ॥ [6] प्रेक्षिताः ॥ [7] तस्य एष पादपूजनकृते सनरामरः तिर्यग्वर्गः । परिहृतशेषकार्यः सद्यः निर्यातुमारब्धः ॥ [8] भवस्वभावम् ॥ [9] प्रकटितविविधस्वरूपं दूरव्युत्क्रान्तपरमार्थं च, कापुरुषचेष्टितमिव मुग्धसम्मोहकारकं बाढमुद्वेजनीयं च ॥ [10] °यं पाढ° प्रतौ ॥

अपोरिसे एव पयट्टंति वावारे, न निरूवंति आगामिकालं, नावेक्खंति अप्पणो हियाहियं, नायरंति गुरूवएसं, [न] सुस्सूसंति समसत्थं, नाभिलसंति विसिट्ठगोट्ठिं । केवलं मत्त व्व मुच्छिय व्व दुद्दंन्तिंदियग्गामपरायत्तचित्ता सद्द-रूय-रस-गंध-फरिसलुद्धा अच्चंतमुद्धा सारंग-पयंग-मीण-भुयंग-मायंग व्व तक्खणऽक्खेवेणेवासंखतिक्खदुक्खभायणं भवन्ति, अणंतकालं च तासु [तासु] निंदियजोणीसु भुज्जो भुज्जो उववज्जंति विवज्जंति य । सेलसिरसरंतसरियडोलोवलवट्टत्तनाएण य एगूणस[त्त]रिं मोहणीयस्स, एगूणतीसं च नाणावरण-दंसणावरण-वेयणीयंतरायाणं, एगूणवीसं च नाम-गोत्ताणं पत्तेयं पत्तेयं सागरोवमकोडाकोडीओ अहापवित्तकरणेण खविऊण, एगेगभिन्नसागरोवमकोडाकोडिसेसाए य आउयवज्जकम्मट्ठिईए, राग-दोसरूवं वज्जसारं निट्ठुरं गंठिदेसं पाउणंति । तं च पाउणिऊण केइ गरुयगिरिसिलाभग्गदंतदोघट्ट व्व पच्छामुत्तं ओहट्टंति, उक्कोसट्ठिइं च सव्वपयडीणं पुणो उवचिणंति । अन्ने पुणापुव्वकरणबलेण तं गंठिं भेत्तुमारभंते, अनियट्टिकरणसामत्थेण य तब्भेयणावसाणे कप्पतरुकप्पं उवसामियं सम्मत्तं लभंते । तदुत्तरं च केइ खाओवसमिगसम्मत्तलाभे उत्तरोत्तरपवड्ढमाणपरिणामा मरुदेवि व्व तक्कालमेव कयकिच्चा भवंति । अन्ने य अणंताणुबंधिकसायउदयदिप्पमाणासुहभावा भमिऊण चउग्गइं देसूणऽद्धपोग्गलपरियट्टप्पमाणमुक्कोसतो संसारकंतारमणुपरियट्टंति । तओ य—

सम्यक्त्वप्राप्तेः स्वरूपम्

१ समयस॰ प्रतौ । शमशास्त्रम् ॥ २ ॰द्दन्तिइंदि॰ प्रतौ । दुर्दान्तेन्द्रियग्रामपरायत्तचित्ताः ॥ ३ तत्क्षणाक्षेपेणैवासङ्ख्यतीक्ष्णदुःखभाजनम् ॥ ४ भूयोभूय उपपद्यन्ते विपद्यन्ते च । शैलशिर:सरत्सरिद्घोलोपलवृत्तत्वज्ञातेन ॥ ५ गुरुकगिरिशिलाभग्नदन्तहस्ती इव पश्चान्मुखमवघट्टन्ते ॥ ६ य तमणं प्रतौ ॥

कह कह वि अणंतं दारुणं दीहकालं, दुहनिवहमपुवापुवजोणीसएसु ।
दुसहमवि सहित्ता सवहा भूरिपावक्खउवसमवसेणं माणुसत्तं लहंते ॥ १ ॥
तमवि य लहिऊणं हीणजाइत्तणेणं, मलिणकुलवसेणं नज्ज[1]देसत्तओ य ।
अकयसुकयकम्मा रुंद[2]दारिद्द-रोगप्पमुहविहुरदुत्था ही ! मुहा हारविंति ॥ २ ॥
कह वि कुसलजोगा-ऽऽरोग्ग-जाई-कुलाणं, फुडमविकलभावे गाढरूढप्पमाया ।
निहयसुहविवेगा धम्म-देवाइ तत्तं, कहियमवि गुरूहिं णेगसो नो मुणंति ॥ ३ ॥
मुणियमवि कहं[3]ची संजमावाहिगाढाऽऽवरणखलियचेट्ठा नऽज्झवस्संति सम्मं ।
इय गरुयसुभेहिं धम्मसामग्गिजोगो, फलइ सिवसिरीए पेच्छियाणं जणाणं ॥ ४ ॥
न य सँलहियमन्नं[4] वन्नयंतेहिं एत्तो, न य इह उवलद्धे किंचि अत्थी अलद्धं ।
परिणयमइणो वा पत्थयंते न अन्नं, न य सिवसुहलाभो होइ एयं विणा वि ॥ ५ ॥
तदलमिह बहूहिं जंपिएहिं पियं वो, जइ य सुगइसोक्खं दुत्तितिक्खं च दुक्खं ।
परिहरियपमाया ता जिणुत्तम्मि तत्ते, कुणह सँइ[5] पइत्तं मिच्छमुच्छिंदिऊणं ॥ ६ ॥

---

१ अनार्यदेशत्वतः ॥ २ विस्तीर्णदारिद्र्यरोगप्रमुखक्लेशदुस्थाः ॥ ३ कथञ्चित् संयमाऽऽबाधिगाढावरणस्खलितचेष्टा नाध्यवस्यन्ति ॥ ४ श्लाघितमन्यद् वर्णयद्भिः इतः ॥ ५ सदा प्रयत्नम् ॥

भयह गुंणिसु तुट्ठिं दुव्विणीए उवेहं, दयमवि दुहिएसुं सेससत्तेसु मेत्तिं।
परिहरह विवायं मायसुम्मायजुत्तं, कुणह पसमसारं धम्मवावारभारं ॥ ७ ॥
परिकलह समग्गं तारतारुन्न-लच्छी-विसेसयण-घणा-ऽऽऊ-भोग-संजोगमाई।
खरपवणपणुंन्नुत्तालकल्लोललोलं, सुमिणमिव खणद्धेणावि ही ! दिट्ठनट्ठं ॥ ८ ॥
पुणरवि दुलहा भो ! धम्मसामग्गि एसा, कुणह जमिह जुत्तं मोत्तुमालस्समाई।
नहि रयणनिहाणं पाविऊणं पहाणं, कुणइ फुडमुवेहं सव्वहा बालिसो वि ॥ ९ ॥

इमं च केवलिणो धम्मदेसणं निसामिऊण पडिबुद्धा अणेगे जंतुणो। अपत्तपुव्वपावियबोहिलाभा य कयसायरपाय-पणामा गया जहागयं। नंवरं तिकालगयवत्थुवित्थरणपवण[जिण]वयणविभावणजायविसेसजिन्नासा अमच्च-रायाणो काऊण [पणामं केवलिणं पुच्छंति—भयवं ! अणुग्गहं काऊण] साहह इमं—किं मे पव्वज्जागहणकारणं ? ति। भगवया भणियं—महती कहा, अवहिया होऊण निसामेह—

पंचालदेसालंकारकप्पे कमलसंडाभिहाणे नगरे सोमप्पभो सेट्ठी, सुभद्दा से भज्जा। ताणं च परोप्परं परमप-णएण वट्टंताणं अहमेक्को पालगो त्ति नाम पुत्तो जाओ, कमेण पत्तो तारुन्नं, पयट्टो दव्वोवज्जणाइवावारे। असंपज्जंततहा-

१ गुणसु प्रतौ ॥ २ °च्छीविलसय° प्रतौ ॥ ३–मृणालशयन–॥ ४ °णुंमुत्ताल° प्रतौ ॥ ५ °द्दा पालि° प्रतौ ॥ ६ न तरं ति° प्रतौ। नवरं त्रिकालगतवस्तुविस्तरणप्रवणजिनवचनविभावनजातविशेषजिज्ञासौ ॥

विहविह[व]लाभो य चिंतिउं पवत्तो—अहो ! किमणेण तुच्छलाभेण बहुकिलेसारंभेण ? सव्वहा मंदभग्गो हं, कहमन्नहा एत्तियवावारलेसेण वि अन्ने सुकयकम्माणो वंछियाइरित्तमत्थलाभमज्जिणंति ? अहं पुण भोयणं पि कट्ठेण पाउणेमि[2], ता सव्वहा कम्मदुव्विलसियमेयं, एयं च अनिग्घाइऊण न वंछियत्थभागी सुचिरपोरिसावलंबणेणावि भविस्सामि, ता तक्कम्मनि[3]-ग्घायणट्ठमुवक्कमो मे जुत्तो-त्ति विभाविऊण गतो पुरिसपरंपरागयस्स वाममग्गनिउणस्स गुरुणो जोगंधर[स्स] समीवे । पाएसु पडिऊण निविट्ठो भूमिवट्ठे । पुट्ठो य अणेण—वच्छ ! कीस विच्छायमुहो दीससि ? किंनिमित्तं वा एत्तियं भूमिमुवागओ सि ? । मए भणियं—भयवं ! विच्छायत्ते दारिद्दं विमोत्तुं को अवरो हेऊ साहिज्जउ ? अन्ने वि बाहुल्लेण एत्तो चेव दोसा पाउब्भवंति । तहाहि—

दारिद्र्ये दोषाः

परिगलइ मई मइलिज्जई जसो नाऽऽदरंति सयणा वि । आलस्सं च पयट्टइ विप्फुरइ मणम्मि रणरणओ ॥ १ ॥
उच्छरइ अणुच्छाहो पसरइ सव्वंगिओ महादाहो । किं किं व न होइ दुहं अत्थविहीणस्स पुरिसस्स ? ॥ २ ॥

जोगंधरेण भणियं—वच्छ ! सच्चमेयं । मए भणियं—भयवं ! एयप्पडियारनिमित्तं च तुम्हपयपायवच्छायं अल्लीणो म्हि । जोगंधरेण जंपियं—वच्छ ! गुरुप्पसाएण जाणिज्जइ एत्थ अत्थे उवाओ, केवलं महासत्तपुरिससज्झो । मए भणियं—कुणह तह पसायं जह तुम्ह पायपूयणे समत्थो भवामि । जोगंधरेण वागरियं—पुत्त ! अम्ह गुरूहिं मडयसाहणमंतो

१ °लेससा° प्रतौ ॥ २ °उणोमि प्रतौ ॥ ३ तत्कर्मनिर्घातनार्थमुपक्रमः ॥ ४ पाडि° प्रतौ ॥ ५ अन्नो वि प्रतौ ॥ ६ मणं पि र° प्रतौ ॥ ७ उद्वेगः ॥ ८ °दाढो प्रतौ ॥ ९ °च्छावं अ° प्रतौ । युष्मत्पदपादपच्छायाम् ॥

दिन्नो अत्थि, जइ दढं तुह चित्तावट्ठंभो ता आगमिस्सकसिणचउद्दसीए पउणो हवेज्जासि। मए वुत्तं—भयवं! एवं काहामि। पइक्खणदिणगणणेण य कह कह वि मणोरहसएहिं समं समागया कसिणचउद्दसी। पुट्ठो गुरू—किमिह किच्चं? ति। सिट्ठं गुरुणा। तदुवइट्ठोवक्कमसणाहो य गुरुणा समं पत्तो मसाणं। आलिहियं गुरुणा मंडलं। उवणीयं च मए पुव्वदिट्ठमविणट्ठसरीरं तरुवरसाहावलंबियं मडयं। ण्हवियं चंदणविलित्तं च तं करयलारोवियनिसियकरवालं सोवियं मंडले। आइट्ठो अहं गुरुणा—वच्छ! इमस्स पायतलहड्डिं पयट्टेसु त्ति। 'तह' त्ति काउमारद्धो य अहं। गुरू वि बद्धपउमासणो नासग्गासंगिनिचलनयणो कयसरीररक्खो रइऊण समीरं मंतं सुमरिउं पवत्तो। अह जाव महापयत्तसमुच्चारियमंतक्खरो किं पि कालं ज्झाणेण चिट्ठइ ताव गाढजरापरिगयसरीरगमिव पकंपिऊण तं मडयं उट्ठिऊण अट्टट्टहासं पहसिउमारद्धं। अब्भंतं विम्हिओ जोगंधरो अहं च। पम्मुक्कज्झाणाभिनिवेसेण य जोगंधरेण पुच्छियं मडयं—हंहो! को एस प्पहासविडंबणाडंबरविसेसो? असंपाडियसमीहियकज्जस्स हासो हि परं परिभवट्ठाणं, ता अच्छउ ताव अन्नं, हासस्सेव निवेदेउ देवो कारणं-ति भणिए वागरियं मडएण—

जइ मंत-तंतविहिणा हवेज्ज निप्पुन्नयाण वि य अत्थो। मिउँपिंडमंतरेण वि घडो वि सेज्झेज्ज ता नूणं ॥ १ ॥
नोवॅादाणेण विणा निमित्त-सहकारिकारणुक्करिसो। सामरिसो वि हु कज्जं पसाहिउं थेवमवि सक्को ॥ २ ॥

निष्पुण्यानां मन्त्राद॰ सिद्धिः

१ पादसेचनम्। तलहड्डिः-सेचनम् ॥ २ प्रमुक्तध्यानाभिनिवेशेन ॥ ३ मृत्पिण्डमन्तरेणापि ॥ ४ न उपादानकारणेन विना ॥ ५ 'सो व हु प्रतौ। 'सामर्षोऽपि' सविचारोऽपि ॥

पुन्नमुवादाणमिहं निमित्त-सहकारिकारणत्तेण। मंताईणि य जुज्जंति सव्वकज्जाण सिद्धीसु ॥ ३ ॥
किं वा मूढा तुब्भे सोमोदाहरणमवि न जाणेह ?। पुन्नवियलत्तणेणं लाभो वि अलाभसारिच्छो ॥ ४ ॥
जोगंधरेण भणियं देव ! पसीयसु कहेसु को सोमो ?। लाभो वि अलाभसमो कह वा तस्स ? त्ति चोज्जमिणं ॥ ५ ॥

मडएण भणियं—निसामेसु,

अत्थि णियंतुंगिमाभरियगयणंतरालो महल्लसल्लइपल्लवकवलणुद्दाममयगलाउलपरिसरो विंज्झो नाम गिरिवरो। तस्स य पायंतलभूमीए अणेगकोडीसरियलोयविहियविलासविस्सुमरावियसुरपुरिविब्भमा अरिट्ठपुरी नाम नयरी। तत्थ य सोमो नाम बंभणो आजम्मदालिद्दुवद्दुओ पइदिणपुरीपरिब्भमणज्जियकणवित्तिमेत्तजीवणो पइवरिसेक्केक्कधूयासंभवंतगरुयकुडुंबभारो कह कह वि कालं वोलेइ।

अन्नया य सो जहिच्छं विलसंतं नयरिलोगमवलोइऊण परमविसायमुवगओ चिंतिउं पवत्तो—आजम्माओ वि दोगच्च-चक्कचमढणसुढिओ हं हुयासणं पवज्जामि ? किं वा गिरिसिरातो अप्पाणं मुयामि ? तरुसाहुल्लंबणेण वा पवणपहवत्ती भवामि ?—त्ति जाव सुन्न-निप्फंदचक्खुक्खेवो चिट्ठइ ताव संभासितो सो संकराभिहाणेण मित्तेणं—भो भो ! किमेवं चिंताउरो व्व दीससि ? साहेसु परमत्थं। सोमेण भणियं—भद्द ! किं साहिए[ण] ? अप्पडिविहाणो खु एस ववहारो, साहिज्जंतो चित्तसंताव-

१ °न्नमिवा° प्रतौ। पुण्यमुपादानकारणमिह ॥ २ पुण्यविकलत्वेन ॥ ३ निजतुङ्गिमभृतगगनान्तरालः महासल्लकीपल्लवकवलनोद्दाममदकलाकुलपरिसरः ॥ ४ °यवत° प्रतौ ॥ ५ अनेककोटीश्वरिकलोकविहितविलासविस्मारितसुरपुरीविभ्रमा ॥ ६ दौर्गत्यचक्राक्रमणश्रान्तः ॥

मेव तुम्हारिसाण जणइ, ता अलं इमीए संकहाए। संकरेण भणियं—मा मित्त! एवं संकसु,

हिययब्भंतरपसरंतविवर्चिताहुयासपरितत्ता। सुहिसंकामियदुक्खा सीईभूय व्व हुंति खणं ॥ १ ॥

फुरइ य मईविसेसो वालस्स वि कहिय[वत्थु]सवणेण। ता हियए चिय धरिउं न जुञए सव्वहा दुक्खं ॥ २ ॥

सोमेण भणियं—जइ एवं ता निसामेहि, अहं हि संपयं पयंगो व्व हुयासणाइसु निवडिऊण दोगच्चघणंतस्स अत्तणो विस्सामं काउमिच्छामि, एसो चिंतापरमत्थो त्ति। संकरेण जंपियं—दूरमजुत्तो एस चिंतासंरंभो, अत्थि एत्थ अत्थे उवक्कमो सुपच्चइयपुरिससिट्ठो, तमणुचिट्ठसु तुमं, जेण निविग्घं वंछियं सिज्झइ त्ति। सोमेण भणियं—कहं चिय?। संकरेण जंपियं—विंज्झगिरिवरातो पुव्वदिसीए वडविडविकोडरनिबद्धनिवासरई वडवासिणी नामं भगवई तव्वोकम्मपमुहविणओवयारपरितोसिया कामधेणु व्व कामियफलं संपाडेइ–त्ति सव्वत्थ गिज्जइ, सा य तुज्झ उवसप्पिउं जुत्त त्ति। पडिवन्नं सोमेण—कयं संबलं। गहियतक्कालोचियउवगरणो य लग्गो तम्मग्गेण। अविलंबियगमणेण य पत्तो भगवईभवणं, पूइया पज्जुवासिया य। दिणावसाणे य सविसेसं पूइऊण विन्नत्ता—देवि! एत्तो उड्ढं तुमए पसन्नाए परं भोत्तव्वं ति। कयाइं वीसलंघणाइं। अवजसमीयाए संभासिओ भगवईए—भद्द! पयट्टसु सकज्जकरणाय, वाढं निप्पुन्नओ तुमं, न पत्थुयलाभाओ अब्भहियं तुह पुरंदरेण वि दाउं पारियइ। जोडियकरसंपुडं च भणियं सोमेण—देवि! एत्तो चिय तुम्ह पायपउमाराहणा कीरई, इहरहा सुकयकम्माओ चेव कामियफलसिद्धी होज्जा, नहि सुकयकम्माणो नरिंदाइणो तुहाराहणाओ समिद्धिसुहमणुहवंति।

---

१ सुस्रलयिकपुरुषशिष्टः ॥ २ अवलं° प्रतौ ॥ ३ निप्पन्न° प्रतौ ॥

देवयाए भणियं—बंभणजाइ त्ति बहुं पलविउं जाणसि–त्ति तिरोहूया देवी।

सोमो वि निरसणो तहेव जाविउं[1] पयट्टो। जायं बत्तीसइमं लंघणं, पणट्ठा वाणी, विसंठुलीहूया दिट्ठी, पलीणा परिफंदाइणो कायवावारा, पसरिया दीहदीहा समीरुग्गारा। 'उवट्ठिया बंभणहच्च' त्ति भीया भगवई अणग्घरयणपंचगमादाय आगया माहणसमीवं, भणिउं पवत्ता य—भो बंभण! सो एस तुह बलाभिओगो, जइ एत्तो वि किं पि होइ ता होउ, गिण्हसु ता इमाणि कोडिसुवन्नमोल्लाणि पंच रयणाणि, मुंचसु मे पट्ठिं ति। रयणाइं से समप्पिऊण गया भगवई जहागयं। **सोमो** वि [3]तदुवलंभदिव्वोसहीमाहप्पसविसेसं[4]पुणन्नवी[भू]यदेहो सणियसणियं समुट्ठिऊण पुवाणीयं पच्छयणं[5] उवभुंजइ। उवलद्धसरीरावट्ठंभो य **वडवासिणिं** चिरं नमंसिऊण पट्ठिओ [6]नयरहुत्तं। अंतरा य वच्चंतो पत्तो तक्करेहिं। [7]निसढं ताडिऊण जट्ठि-मुट्ठीहिं कंठचलणदाणपुव्वयमुद्दालियाणि अमंदमक्कंदंतस्स रयणाणि। गया य तक्करा अभिमयं पयं। इयरो वि [8]चोरविस्सुमरियमेक्कमसिपुत्तियं गहाय गाढकोवो तेहिं चेव पए[हिं] नियत्तिऊण गतो **वडवासिणीए** पुरओ। [9]रत्तच्छिविच्छोयभीमाणणो य भयवइं भणिउमाढत्तो—

आ कडपूयणि! पावे! [10]मंडयड्डि! [11]पइड्डियच्छिदुप्पेच्छे!। वीसत्थभत्तघाइणि! डाइणि! इण्हिं कहिं जासि? ॥ १ ॥

१ यापयितुम् ॥ २ °चममा° प्रतौ ॥ ३ तदुपलम्भदिव्यौषधिमाहात्म्यसविशेषपुनर्नवीभूतदेहः ॥ ४ °सपणुन्न° प्रतौ ॥ ५ पथ्यदनम् ॥ ६ स्वनगराभिमुखम् ॥ ७ अत्यन्तम् ॥ ८ चौरविस्मृतामेकामसिपुत्रिकाम् ॥ ९ रक्ताक्षिविक्षेपभीमाननः ॥ १० मृतकार्थिनि! प्रकृष्टाक्षिदुष्प्रेक्षे! विश्वस्तभक्तघातिनि! ॥ ११ °इड्डिय° प्रतौ ॥

एगो हं तुह कंठे खिवामि निगंअंतमालमविलंबं । रत्तकणेईरदामं वज्झस्स य मा कुण विगप्पं ॥ २ ॥

रयणप्पयाणकाले वि भिउडिभीमाणणाए तुह नायं । लाभो इमाण न चिरं हढेण जाओ थिरो होही ॥ ३ ॥

इय जा जगजीहं पिव भीमं छुरियं करेणं घेत्तूण । अनंतमेगचित्तो न विदारइ नियगमुदरं सो ॥ ४ ॥

ता मुणियतन्निच्छयाए जायघिणाए देवयाए खग्गधेणुजुत्तं करं खलिऊण दिन्नाणि अमुल्लाणि दस रयणाणि भद्दस्स । अदंसणीहूया देवया । पहिट्ठो भद्दो पट्ठिओ नयरं । नवरं गिरिनईमज्झमवयरियस्स तस्स भूरिवारिपूरहीरमाणस्स खलियग-यणो भवियव्वयावसेण गुणोविया वि रयणगंठी परुभट्ठा । 'देवयादुविलसियं एयं' ति पुणो वि समुप्पन्नगाढतरकोवो चउचा-सिणीए 'महस चिय निवाजलियजलणमज्झे पविसामि' त्ति कयनिच्छओ धाविओ पच्छओमुहं । वियाणियतंदच्छुयगमा य तं वडं उज्झिऊण वडंतरमल्लीणा भगवई । इयरो वि गओ तं वडं । अदिट्ठभयवईरूवो मुणियपरमत्थो विलक्खो 'सच्चं निप्पुन्नतो' त्ति जायबोहो गओ जहागय-न्ति ।

ता जोगंधर ! सोमो व कीस निप्पुन्नओ वि होऊण । मंताइसाहणेणं मुहा कयत्थेसि अप्पाणं ? ॥ १ ॥ छ ॥

पडिबुद्धो जोगंधरो, उवसंहरियं मंतसाहणं, खामियं मडयं । एत्थंतरे विहलियपरिस्समो पालगो पाएसु मडयस्स पडिऊण विन्नविउं पवत्तो—सामि ! पसीयसु पसीयसु, को एत्तो उवाउ ? त्ति । तओ 'देवयापूयणं परं सव्वसंपयाणं मूलं'

१ °मि नियमं निय' प्रतौ ॥ २ निजान्त्रमालाम् ॥ ३ °णइरनामं दामं प्रतौ ॥ ४ °रेणु घे° प्रतौ ॥ ५ ज्ञाततन्निश्चयया 'जातघृणया' जातदयया ॥ ६ स्खलितगतेः ॥ ७ °तमुम्मय° प्रतौ ॥

ति साहिऊण गयावेसं निवडियं भूमीए मडयं। निराणंदा य ते गया सं ट्ठाणं। नवरं मडयवयणमणुसरंतो पालगो लग्गो नयरदुवारदेसवत्तिणं सुंदराभिहाणं भूयं पइदिणपूयाकरणेण आराहिउं। कइवयदिणावसाणे य भत्तिसारपूयापुरक्काररंजिओ [भूओ] सुमिणे पालगस्स कहेइ—भो महाणुभाव !

सित्तो वि चिरं निंबो किं दाउं तरइ अंबयफलाइं ?। आराहिओ य भिच्चो किं वियरइ सामिसम्माणं ? ॥ १ ॥
किं वा रोहणरयणाण गामगड्डासु संभवो होज्जा ?। अप्पड्ढिओ हु देज्जा किं वा अम्हारिसो खुद्दो ? ॥ २ ॥
ता भद्द ! वच्चसु तुमं एयादूरट्ठियम्मि जिणभवणे। अच्चेसु य जत्तेणं तिहुयणनाहं जिणं संतिं ॥ ३ ॥
एयस्स दंसणेण वि विलयं गच्छंति पुव्वपावाइं। पूयाकरणेणं पुण वंछियलाभो त्ति किं चोज्जं ? ॥ ४ ॥
देवाण एस देवो पुज्जो ससुरा-ऽसुरस्स वि जंयस्स। एत्तो य वंदणिज्जो न पूयणिज्जो य अन्नो वि ॥ ५ ॥

एवं च सुमिणं दट्ठूण पबुद्धो पालगो 'किमिदजालं ? उय विप्पयारणप्पयारो ? बुद्धिविब्भमो वा ?' इच्चाइ संसयंतो वारिओ गयणगिराए। जायसुमिणनिच्छओ य गतो संतिजिणिंदमंदिरं। दूराओ च्चिय सायरकयप्पणामो 'एसो सो देवाहिदेवो' त्ति हरिसभरनिब्भरुब्भिज्जमाणरोमंचो अमा[णा]णंदसंदोहसंदिरनयणो सविसेसं जयगुरुपायपूयणं पइदिणं काउमारद्धो।

अह एक्कम्मि वासरे देवाणंदो नाम साहू गुरुवयणेण एगागी विहरंतो आगओ चेइयवंदणत्थं। जंयनाहं वंदिऊण

१ आम्रफलानि ॥ २ 'वितरति' ददाति ॥ ३ °गड्डासु प्रतौ। ग्रामगर्तेषु ॥ ४ °प्पड्डिओ प्रतौ ॥ ५ क्षुद्रः ॥ ६ आश्चर्यम् ॥ ७ जगतः ॥ ८ विप्रतारणप्रकारः ॥ ९ संशयानः ॥ १० हर्षभरनिर्भरोद्भिद्यमानरोमाञ्चः अमानानन्दसन्दोहस्यन्दनशीलनयनः ॥ ११ जगन्नाथम् ॥

उवविट्ठो समुचियट्ठाणे। दिट्ठो य अणेण पालगो अहाभद्दयत्तणेण देवपूयाई कुणमाणो। 'भद्दगो एसो' त्ति मुणिओ मुणिणा। पूयाविहाणावसाणे य संभासिओ सो, जहा—

भद्द! सहलं तुह जम्म-जीवियं, अविकला कल्लाणसंपत्ती, पच्चीभूओ अप्पा परमपयसुहस्स, सहस्सहा फलियं सुकयकप्पसाहिणा, साहिणीहूया सुरेसरसिरी जमेवंविहा परमगुरुचरणे रई। केवलं वच्छ! सव्वा वि किरिया विहिणा कीरंती फलसाहिगा, विवज्जए दोससंभवाओ, तेण तुममिममणुसासिज्जसि—कयहत्थ-पायपक्खालणेण, दव्वओ सुइणा, भावओ य उवसंतकसाएण, धोय-सेया-ऽगंजियबीयवत्थेण उत्तरियसंजमियवयणेण राय व्व कासवएण अचंतोवउत्तेण आसायणाजणियसंसारदंडभीरुणा देवाहिदेवस्स पूया कायव्वा। सा य पुप्फ-धूव-गंध-ऽक्खय-पईव-बलि-फल-जलपत्तप्पयाणभेएण अट्ठहा। अतहाविहसामत्थसंभवे य एत्तो एक्केकपूयंगसंपाडणमवि परमब्भुदयहेउं वन्नंति गुरुणो। तहाहि—

कंदोट्ट-कुमुय-केयइ-जाई-वेइल्ल-बउलसरियाहिं। पूयंता जयनाहं हुंति सुपुज्जा किमिह चोज्जं? ॥ १ ॥
घणसारा-ऽगरुधूवो डज्झंतो पसरिउद्धधूमधओ। कप्पदुमंकुरो इव जिणपुरओ सहइ वड्ढंतो ॥ २ ॥
पसरंतपरिमलेहिं वासेहिं अच्चिओ तिलोकगुरू। वासमवस्सं भव्वाण जणइ सग्गा-ऽपवग्गेसु ॥ ३ ॥

पूजाविधिः

अष्टप्रकारी पूजा

---

१ यथाभद्रकत्वेन ॥ २ सुकृतकल्पशाखिना, स्वाधिनीभूता सुरेश्वरश्रीः ॥ ३ धौतश्वेताऽखण्डितद्वितीयवस्त्रेण उत्तरीयसंयतवदनेन राजा इव 'काश्यपेन' नापितेन ॥ ४ पुप्फ-गंध-धूव-ऽक्खय-धूव-बलि° प्रतौ ॥ ५ जलपात्रं—जलकुम्भः ॥ ६ नीलकमलकुमुदकेतकीजातिविचकिलबकुलमालाभिः ॥ ७ प्रसृतोर्द्धधूमध्वजः ॥ ८ राजते ॥ ९ 'वासं' निवासम् ॥

तिजयपहुपाय[1]पुरतो अक्खंड-ऽप्फुडियअक्खयक्खेवो। अक्खेवेणं अक्खयसिवसोक्खसिरिं जणे कुणइ ॥ ४ ॥
जिणरूवपयडणपरं पईवमब्भुच्छलंतसिहिजालं। [2]बोहंतो अपईवं पइत्तमजिणइ भुवणम्मि ॥ ५ ॥
अक्खंडखंडखज्जयपमुहबली दिज्जए जिणिंदस्स। ते[3]त्ती भवाणं पुण अहो! [4]महं नाहमाहप्पं ॥ ६ ॥
[5]परिपागपिंग-पसरंतपरिमल[6]लुंप्पीलफलकयच्चस्स। जिणतरुणो उयह अपुप्फविविहफलदाणसामत्थं ॥ ७ ॥
[7]जलपुन्नपुन्नकुंभो पुरओ वि हु भुवणभाणुणो ठविओ। [8]विज्झवइ भवभयग्गिं उग्गं पि महच्छरियमेयं ॥ ८ ॥
[9]संसत्तदुट्ठनिट्ठुरकम्मट्ठयगंठिनिट्ठवणनिट्ठो। अट्ठप्पयार[पू]अं जं [अ]रिहइ ? तेण अरहंतो ॥ ९ ॥
अहवा किमित्तिएणं ? अन्नं पि जमत्थि वत्थु सुपसत्थं। दीसंतसुंदरं तं पि देज्ज पूयाकए पहुणो ॥ १० ॥ किंच—
पुप्फाई [10]दव्वत्थयमकुणंतो कह गिही हवइ जोगो। [11]भावत्थयस्स ? ता पढमभूमिगाए जइज्ज इहं ॥ ११ ॥
अन्नो वि [12]सावयविही सुविहियमुणिणा निवेइओ तस्स। तेणावि अब्भुवगतो सम्मं धम्मेकचित्तेण ॥ १२ ॥
इय भवकयाणंदो देवाणंदो मुणीसरो तत्तो। पारद्धकिच्चकरणाय विहरिओ वि[13]रहिओ तमसा ॥ १३ ॥

---

१ °यपर° प्रतौ ॥ २ 'बोधयन्' दीपयन् 'अप्रतीपं' प्रतिपक्षवर्जितं पतित्वमर्जयति ॥ ३ तृप्तिः ॥ ४ महद् नाथमाहात्म्यम् ॥ ५ परिपाकपिङ्ग-प्रसरत्परिमलसमूहफलकृतार्चस्य। जिनतरोः पश्यत अपुष्पविविधफलदानसामर्थ्यम् ॥ ६ °लुपील° प्रतौ ॥ ७ जलपूर्णपुण्यकुम्भः ॥ ८ विध्यापयति भवभयाग्निम् ॥ ९ संपत्त° प्रतौ। संसक्तदुष्टनिष्ठुरकर्माष्टकग्रन्थिनिष्ठापननिष्ठः। अष्टप्रकारपूजां यद् अर्हति तेन अर्हन् ॥ १० द्रव्यस्तवम् ॥ ११ भावस्तवस्य ॥ १२ श्रावकविधिः ॥ १३ विहरिओ प्रतौ। विरहितः 'तमसा' अज्ञानेन पापेन वा ॥

तत्तो अहं 'तह' त्ति गुरुगिरमवधारिऊण भावसारं सवन्नुपूयापमुहकिच्चेसु सविसेसं बद्धुज्जमो जाओ। पइदिणजिणच्चण-जणियसुकयपगरिसेण खओवसमगयतहाविहलाभंतरायकम्मो कालक्कमेण विउलधणलाभभागी सवजणपूयणिज्जो परमं सवत्थ पसि[द्धि]मुवागओ। कालक्कमेण मरिऊण सोहम्मे देवत्तणं पत्तो। तत्तो य चुओ वेयड्ढगिरिपरिसरमंडणे देवाण वि दुल्लहे गयणवल्लहे नयरे अवंतिविजयस्स रन्नो पुत्तत्तणेणं उववन्नो, पइट्ठियं च पभंकरो त्ति नामं। सो य एस अहं आबालकालओ च्चिय साहुपज्जुवासणपरो, पुवब्भासेण जिणपूयणे बाढं बद्धलक्खो, संसारियकज्जनिरवेक्खो कालं वोलेमि।

अन्नया य केवलिणो समीवे सुया धम्मकहा, जायं जाईसरणं, पाउब्भूया सविसेसं धम्मवासणा। परूविओ य भगवया भवत्थओ। अभिरुइओ य मज्झं। तओ इहेव अडवीए एगसिंगगिरिम्मि काराविऊण आइदेवाययणं, पयट्टाविऊण जत्तामहूसवं, कयसवसंगपरिच्चागो पवन्नो समणधम्मं मि। ता महाराय! जं तुमए पुच्छियं पवज्जाकारणं तमिमं भावत्थयजणणसमावं दवत्थयरूवं ति, नावरं इट्ठवियोगाइ संकणिज्जं ति॥ छ॥

तुट्ठो राया सम[म]मच्चेण, कयप्पणामो पुच्छियं पवत्तो य—भयवं! पसायं काऊण साहेह, को इमस्स सगिहनिवाससुहपच्चूहस्स हेऊ कम्मविसेसो जेणेवं रोर व वट्टामो?। केवलिणा भणियं—निसामेह—

अत्थि कोसंबी नाम नयरी। तत्थ तुमं महाराय! धम्मो नाम सत्थवाहो वत्थवो अहेसि। पूएसि य नियविहवाणु-

---

१ °गिरिम° प्रतौ॥ २ प्रतिदिनजिनार्चनजनितसुकृतप्रकर्षेण क्षयोपशमगततथाविधलाभान्तरायकर्मा॥ ३ °ग्घनज्ज° प्रतौ॥ ४ °कारओ प्रतौ॥ ५ अस्मि॥ ६ अष्टम्॥

सारेण पइदिणं जिणिंदचलणे । एवं वचंति वासरा ।

अन्नया य एस तुह अमच्चजीवो अज्जुणतो नाम सावओ, अणेगकुग्गहग्घत्थमाणसो, [1]एगपक्खनिक्खेवखीणमइबलो, अणेगकुब्भावणाहिं अप्पाणं च परं च वुग्गाहिंतो, सग्गामाओ विसिट्ठलोगेण निवासिओ, गाम-नगराइसु परिब्भमंतो आगतो कोसंबीए । भवियव्वयावसेण य जाओ तुमए सह तस्स मीलगो । सव्वायरेण भणिओ तुमं तेण—भो सत्थवाह ! जहा [2]रूवगो बहुसो सुपरिक्खिऊण पणियं च सम्मं पेहिऊण घिप्पइ एवं धम्मकिच्चं पि सुविणिच्छियं काउं जुत्तं, तुमं च धम्मत्थी वि मुद्धो व लक्खिज्जसि, न विचारेसि वत्थुतत्तं, सव्वत्थ वि गड्डरियापवाहेण वट्टसि । तुमए भणियं—वंदामि सावय !, साहेसु केरिसो वत्थुवियारो ? त्ति । अज्जुणेण भणियं—निसामेहि,

एसो हि जिणधम्मो छज्जीवनिकायरक्खणपहाणो, अओ सच्चित्तपुप्फाइपरिहारेण वासाइणा देवपूया उचिया । अक्ख-य-वत्थ-बलिपूया वि बाढमजुत्ता, तदुवभोगिणो [3]निद्धम्मसत्तस्स[4]णंतसंसारवडणहेउभावाओ । चेइयवंदणपयट्टस्स य पूयंगहत्थस्स साहुदंसणे वि नमोकारकरणमजुत्तं, पूयंगस्स [5]निम्मल्लदोसभवणप्पसंगाओ त्ति । दुद्ध-दहिमाइएहिं जिर्ण[6]ण्हवणकरणं पि तिरिक्खिं[7]सरीरसंभवत्तेण दूरमासायणाकरमेव, ता गंधोदयमेव ण्हवणकज्जे निद्दोसं जुज्जइ त्ति । एत्तियपयत्थे सम्ममव-

१ एकपक्षस्थापनक्षीणमतिबलः अनेककुभावनाभिः ॥ २ रूप्यकः बहुशः सुपरीक्ष्य पण्यं च सम्यक् प्रेक्ष्य गृह्यते एवं धर्मकृत्यमपि सुविनिश्चितं कर्तुं युक्तम् ॥ ३ निर्धर्मसत्त्वस्यानन्तसंसारपतनहेतुभावात् ॥ ४ °स्सामंत° प्रतौ ॥ ५ निर्माल्यदोषभवनप्रसङ्गात् ॥ ६ °णभवण° प्रतौ ॥ ७ °रिक्खस° प्रतौ । तिरश्चीशरीरसम्भवत्वेन ॥

गच्छसु, पच्छा अन्नं पि कहिस्सामि तुमए।

सत्थवाहेण जंपियं—नाहं एवंविहविचारविवेयमवगच्छामि, ता एहि साहूण समीवे, ततो जं तुमं ते य विणिच्छिऊण साहिस्सह तं करिस्सामि। गाढंधिट्ठिमाभिणिविट्ठचित्तेण पडिवन्नमज्जुणएण। गया दो वि साहूण समीवे। निवेइया नियपरूवणा। भणिओ य साहूहिं अज्जुणतो—

धम्मप्परूवणाए केण निउत्तो सि मूढ ! किं न सुयं ?। धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो ? ॥ १ ॥
हेउनहं नयनयणं चउरणुजोगक्कमं समयसीहं। अदिट्ठमरूवं कोल्हुगो व कह कहसि जणपुरओ ? ॥ २ ॥
उस्सग्ग-ऽववायाणं सरूवलेसं पि नेव जाणासि। धम्मस्स को व कस्स व अहिगारी ? एयमवि मूढ ! ॥ ३ ॥
सव्वारंभरयाणं छज्जीववहाउ अविरयमणाणं। दव्वत्थउ च्चिय परं भवागडावडणआलंबो ॥ ४ ॥
जिणभवण-बिंबठावण-जत्ता-पुप्फाइपूयणारूवो। दव्वत्थओ त्ति सिद्धो गिहीण इयरासमत्थाण ॥ ५ ॥
पुप्फाई वि निसिद्धं जइ थेवोवक्कमं पि मूढ ! तए। ता चेइयाइकरणं बहुआरंभं सुपडिसिद्धं ॥ ६ ॥
जिणभवणाणमकरणे बिंबाणमठावणे य तुज्झ मए। तित्थुच्छेयाईया हुंती दोसा बहुपयारा ॥ ७ ॥ किंच—
देह-गिहाइयकज्जे आरंभं नो निरुंभसि अणज्ज !। कायवहो त्ति निसेहसि जिणपूयं अहह ! तुह मोहो ॥ ८ ॥

अधिकार्यपेक्षया विविधैर्द्रव्यैर्जिनपूजनस्यादूषितत्वम्

१ °वाह जं° प्रतौ ॥ २ गाढधृष्टिमाभिनिविष्टचित्तेन ॥ ३ हेतुनखं नयनयनं 'चतुरनुयोगक्रमं' चत्वारोऽनुयोगाः—शास्त्रव्याख्यानभेदा एव क्रमाः—चरणानि यस्यैतादृशं समयसिंहम् ॥ ४ शृगालः ॥ ५ सर्वारम्भरतानां षड्जीववधाद् अविरतमनसाम् द्रव्यस्तव एव परं भवावटापतनालम्बः। अवटः—कूपः ॥

चेइयपूयाईणं करणे तित्थप्पभावणाईया । दीसंति बोहिजणगा वावारा णेगसुहजणगा ॥ ९ ॥
जइ पुण पोसहनिरया सच्चित्तविवज्जया जेइसरिच्छा । उत्तरपडिमासु ठिया पुप्फाई ता विवज्जंतु ॥ १० ॥
पूयंगवग्गहत्थो न नमइ साहुं पि जं पि वुत्तमिणं । तं पि हु पलावमेत्तं सबुद्धिपरिकप्पणाजणियं ॥ ११ ॥
विणओ हि धम्ममूलं जहोचियं सो हु साहुमाईसु । वायनमोकाराई अप्पडिसिद्धो य सिद्धंते ॥ १२ ॥
न य एत्तियमेत्तेण वि दूसणमावडइ करयलगयस्स । पूयंगस्स अभत्ती य जिणवरे जणविरुद्धं वा ॥ १३ ॥
जं पि य दुद्धाईहिं न्हवणनिसेहं करेसि जयगुरुणो । आसायण त्ति तं पि हु न जुत्तिजुत्तं ति पडिहाइ ॥ १४ ॥
सिद्धंते न निसेहो सुंम्मइ एयस्स न य विरुद्धमिणं । गोरोयण-मयमय-कुंकुमाण देवे वि जुंजणतो ॥ १५ ॥
अतहाविहुब्भवं पि हु पवित्तभावेण जं पसिद्धमिणं । तं नेव विरुद्धं लोग-सत्थपडिसेहविरहाओ ॥ १६ ॥
न य दुट्ठा वि हु देवा दुद्धाईहिं न्हविज्जमाणंगा । रूसंती थेवं पि हु अवि वेरदाणुम्मुहा हुंति ॥ १७ ॥
वत्तणुवत्तपवत्ता दीसइ चिरकालिया य एस विही । गीयत्थाणुन्नाया निरंकइवद्धाऽणुवत्ता य ॥ १८ ॥
आसायणदोसो वि हु विसिट्ठ-अविणट्ठदुद्धमाईहिं । ण्हवणम्मि कीरमाणे होइ जढो भाववुड्ढी य ॥ १९ ॥
जइ पुण न तहा भावो कस्स[इ] दुद्धाइणा उ संभवइ । गंधोदयं पि जुज्जइ जह भावो होइ तह किच्चं ॥ २० ॥

१ यतिसदृशाः ॥ २ पूजोपकरणव्यग्रहस्तः ॥ ३ प्रलापमात्रं स्वबुद्धिपरिकल्पनाजनितम् ॥ ४ श्रूयते ॥ ५ मृगमदः—कस्तूरिका, कुङ्कुमं—केशरम् ॥ ६ अतथाविधोद्भवम् ॥ ७ वरदानसम्मुखाः ॥ ८ व्यस्तयनुव्यक्तिप्रवृत्ता ॥ ९ चिरकविवृद्धाऽनुवर्त्तिता च ॥

जिणविंबपूयणाईसु जस्स भावो जहिं जहिं रमइ । सो तस्स मोक्खहेऊ ता न खमो एगपक्खगहो ॥ २१ ॥
अक्खय-वत्थाईणि य परउवओगि त्ति नेव जुत्ताइं । णन्तभवहेउभावा एयं पि विगप्पणामेत्तं ॥ २२ ॥
जइ भावदोसविरहा पूयाकारिस्स एस दढदंडो । ता साहुभूरिदाणे अजिन्न मरणे य रिसिघाओ ॥ २३ ॥
जिणभवणाईणं पि हु कारवणे जं भणाण (?)-हेउत्ते । भूरिभवदोसभावा तदकारवणं परं इट्ठं ॥ २४ ॥
मा सव्वहा वि कुग्गहसिप्पिविकप्पणविमोहिया भद्दा ! । अच्चंतबहुस्सुयसंसिए वि भावे विसंकेह ॥ २५ ॥
न हि पुव्वमुणीसरदिट्ठमग्गमवहाय सैमइघडिओ वि । अन्नो विज्जइ पंथो सिद्धिपयट्टाण सत्ताण ॥ २६ ॥
एवं सिक्खविओ वि हु अज्जुणतो अैज्जुणो व्व जडपयई । अवमन्नियमुणिवयणो न पवन्नो तह वि नियदोसं ॥ २७ ॥
तुमए वि तस्स पंथो सत्थाह ! समत्थिओ हि सुकरो त्ति । सैच्छंदपयाराओ सुहे ण विलसंति बुद्धीओ ॥ २८ ॥
एवं च दुवे वि तुब्भे जिणपूयाविसयकुग्गहनिग्गहियविसुद्धपरिणामा, परेसिं पि समुप्पाइयमइविब्भमा, जईगुरुपूयाविच्छेयावज्जियसुकयंतरायदोसेण घत्था य मरिऊण, असुभट्ठाणेसु उप्पत्ति-मरणदुक्खाइं अणुभविऊण चिरकालं, तहाविहपुव्वजम्मसुकयवसेण संपइ अमच्च-रायत्तणेण उववन्ना । तस्स पुव्वदुकयसेसस्स अजिन्नस्स एसो अडइनिवडणाइरूवो दुव्विलसियविसेसो । ता भो महाणुभाव ! पुव्वदुच्चरियं सरमाणा तह कहं पि सुचरिएसु पयट्टह न जहा एवंविहविडंबणाभायणं हवह त्ति ॥ छ ॥

---

१ नमभ॰ प्रतौ ॥ २ स्वमतिघटित. ॥ ३ अर्जुन इव ॥ ४ स्वच्छन्दप्रचाराः शुभे न विलसन्ति बुद्धयः ॥ ५ जिनपूजाविषयकुग्रहविनिगृहीतविशुद्धपरिणामौ ॥ ६ जगद्गुरुपूजाविच्छेदावर्जितसुकृतान्तरायदोषेण ग्रस्तौ ॥ ७ अटवीनिपतनादिरूपः ॥

एवं निसामिऊण सुमरियपुव्वभववुत्तंता भयभीया निवडिया केवलिचरणेसु अमच्च-रायाणो, विन्नविउं पवत्ता य—भयवं ! अवितहमेयं, ता देह अणुग्गहं काऊण अम्ह एयस्स दोसस्स पायच्छित्तं ति। केवलिणा भणियं—जिणपूयापयत्तो चेव इह पायच्छित्तं, न तुम्ह वयाइसु जोग्गया अज्ज वि अत्थि त्ति। अब्भुवगयमेयं अमच्च-नरिंदेहिं।

केवलिकयपणामा य गया पुव्वुत्ते एगसिंगगिरिवरम्मि। पारद्धा य [1]तद्देसवत्तिसयंपरूढकमल-केयइ-केसर-सरसवेइल्ल-मालईमालाहिं नाभिनरिंदनंदणं आइदेवं तिसंज्झमवि पूइउं। चिरकालेण य खवियं तं दुरज्जियं कम्मसेसं।

समागयं च इओ तओ परिभमंतं तेसि चातुरंगं बलं। दिट्ठो य गाढपरितुट्ठेहिं बलाहिव[पमि]ईहिं राया, महियलविलुलंतमउलिमंडलेहिं पणमिऊण विन्नत्तो य—देव ! कुणह नियदंसणजलेण समामा-ऽऽगरस्स नियजणवयस्स विरहहुयवहमहादाहोवसमं, आरुहह करेणुगं ति। ततो राया [2]चिरविप्पओगसंभरियसुहि-सयणुक्कंठाहिट्ठियहियओ वि पहाणचीणंसुयाइपूयंगेहिं भावसारं आइतित्थयरं पूइऊण थुणिऊण य सुचिरं, विन्नविउमाढत्तो—

देवाधिदेव ! यदि तावकपादपद्मसङ्कीर्तनस्य फलमस्ति तदाऽस्तु शश्वत्।
[3]त्वत्पूजने जनितस[4]म्मदि मे प्रवृत्तिरासंसृति क्षतपुराकृतदुष्कृतौघा ॥ १ ॥

१ तद्देशवर्तिस्वयंप्ररूढकमलकेतकीकेसरसरसविचकिलमालतीमालाभिः ॥ २ चिरविप्रयोगसंस्मृतसुहृत्स्वजनोत्कण्ठाधिष्ठितहृदयः ॥ ३ तत्पू° प्रतौ ॥ ४ °सम्मुदि प्रतौ ॥

जिनार्चनफलम्

दौर्गत्य-रोग-रिपु-दौस्थ्य-विपन्निपात-बन्धूपघातजनिताभिरपि व्यथाभिः ।
वात्याभिरद्रिपतिवन्न स पीड्यतेऽस्मिन्, यो नित्यमादृतमतिर्जिनपूजनायाम् ॥ २ ॥
मूढाः स्तुवन्तु परिचिन्तितदानशक्तियुक्तानि कल्पविटपिप्रमृतीन्यहं तु ।
चिन्ताव्यतीतफलदानसहं भवाब्धेरुत्तारकं च जिनपूजनमेकमीहे ॥ ३ ॥
इति नरपतिरर्हत्पूजना-ऽऽशंसनायां, क्षणमुपहितचित्तः पर्युपास्याऽऽदिदेवम् ।
निजनगरमयासीत् केवली च व्यतीताखिलभवकृदघौघा मोक्षलक्ष्मीमवाप ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे पूजाधिकारे प्रभङ्करकथानकं समाप्तम् ॥ १३ ॥

देवद्रव्यम् तद्वृद्धिश्च

चेइयबिंबाईणं न कालदुत्थाइए विणा दवं । काउं तीरइ चिंता ता वद्धण-रक्खणं भणिमो ॥ १ ॥
निप्पाइयम्मि य गिही जिणभवणाइम्मि सत्तिअणुरूवं । चेइयदवं सवायरेण चिंतेज्ज वट्टेज्ज ॥ २ ॥
गाम-पुर-खेत्त-सुंकाइएसु कारेज्ज रायवयणेण । देवद्दायं तक्कारणेण जिणदववुड्ढि त्ति ॥ ३ ॥
वुड्ढि णीयस्स दढं चेइयदवस्स रक्खणुज्जुत्तं । किं पि हु जणं निरूवेज्जऽवज्जभीरुं अलुद्धं च ॥ ४ ॥
जह तह परिव्वओ वि हु कुसलेण इमस्स नेव कायवो । देसाइदुत्थिमाए अवि अन्नत्तो अभावम्मि ॥ ५ ॥

---

१ °ट्ठयतस्मि° प्रतौ ॥ २ निष्पादिते ॥ ३ घट्टेज्ज प्रतौ । वर्धयेत् ॥ ४ शुल्कादिकेषु ॥ ५ 'देवदायं' देवभागम् ॥ ६ °रिच्चओ प्रतौ । परिव्ययः ॥

देवद्रव्याधिकारे भ्रातृद्वय-कथानकम् १४।

एयस्स रक्खणम्मि सक्कं चिय रक्खिओ भवे धम्मो । न य एत्तो वि हु परमं अन्नं वन्नेंति गुणठाणं ॥ ६ ॥
जिणपवयणवुड्ढिकरं पभावगं नाण-दंसण-गुणाणं । जिणदव्वं रक्खंतो परित्तसंसारिओ होइ ॥ ७ ॥
जिणपवयणवुड्ढिकरं पभावगं नाण-दंसण-गुणाणं । जिणदव्वं वड्ढंतो तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ ८ ॥
चोएइ चेइयाणं इच्चाइगिराए जइ जईणं पि । वुत्तं रक्खणमेयस्स ना गिहत्थाण किं वेच्चं ? ॥ ९ ॥ तथाहि—
चोएइ चेइयाणं गाम-सुवन्नाइं गाव-रुप्पाइं । लग्गंतस्स हु मुणिणो तिकरणसुद्धी कहं नु भवे ? ॥ १० ॥
भन्नइ एत्थ विभासा जो एयाइं सयं विमग्गेज्जा । न हु तस्स होज्ज सुद्धी अह कोइ हरेज्ज एयाइं ॥ ११ ॥
सव्वत्थामेण तहिं संघेणं होइ लग्गियव्वं तु । सचरित्त-ऽचरित्तीणं एयं सव्वेसि कज्जं तु ॥ १२ ॥
एयं चिय साहारणदव्वं पि करेज्ज तदवरं नवरं । चेइय-चिक्कण-संघपोग्गयाईणि (?) से विसओ ॥ १३ ॥
किर चेइयस्स दव्वं कज्जे उवजुज्जई जिणस्सेव । साहारणदव्वं पुण उवजुज्जइ सव्वठाणेसु ॥ १४ ॥
ता इममवि कायव्वं वड्ढेयव्वं च रक्खियव्वं च । अन्नत्तो मइ लाभे वेयणीयं एयमवि नेन ॥ १५ ॥
भंगे देसाईणं कुतित्थिएहिं समं च कलहम्मि । दंसणकज्जे य परंऽणुभाओ एयदव्वओ ॥ १६ ॥ किं बहुणा ?—
चेइयदव्वं साहारणं च जो दुहइ मोहियमईओ । सो जिणमयं पि न मुणइ अहवा बद्धाउओ पुव्विं ॥ १७ ॥
इय सव्वपयारेहिं अरक्खणे रक्खणे य एयस्स । जे दोस-गुणा तेसु दिट्ठंतो भायरो दोन्नि ॥ १८ ॥ तहाहि—

साधारण-द्रव्यम्

१ वड्ढंतो प्रतौ ॥ २ वाच्यम् ॥ ३ °ज्ज सिद्धी प्रतौ ॥ ४ शर्करादयः ॥ ५ °वि क° प्रतौ ॥ ६ °वड्ढेय° प्रतौ ॥ ७ त्याज्यमिदम् ॥ ८ दुणति ॥

अत्थि भुवणललामभूया, परपक्खभय-डमरदूरपरिहरिया, हरितणु व संस्सिरीया, विरिंचिमुत्ति व सैव्वतोमुही, विसाला वि अलंघ-गुरुपायारपरिगया, विक्खाया [वि] वलयालंकिया, वंगविसयतिलयतुल्ला चिस्सपुरी नाम नयरी। तं च अखंडभुय-दंडारोवियभूभारो रक्खइ खेमंकरो नाम नरवई। जेण य समरंगणवेइमंदिरे अच्चुक्कमुक्कसरघोरणीविरइयमंडवे चाउद्दि[सि]-पयट्टमत्तदोघट्टवियडकुंभयडकलसपरंपरापरिगए सुहडकरयावडंतखग्गनिहसुट्ठियपज्जलंतजलणविजयलच्छी वहु व पढंतेसु भट्टथट्टेसु परिणीया। स महप्पा जयसुंदरीपमुहावरोहपरिगतो सिवदत्ताइंमंतिजणारोवियरज्जचिंतो सुहेण कालं वोलेई।

अन्नया य जातो से सुंस्सिमिणसूइओ पुत्तो, कयं वद्धावणयं, पयंट्टियं च से जुगंधरो त्ति नामं। एवं च सो कुमारो समं नरवइमणोरहेहिं वड्ढिओ देहोवचएणं कलाकोसल्लेण य, परिणाविओ य कइवयरायधूयातो। दिन्ना य से भुत्ती, तहिं च परमसुहेण रायसिरिं अणुभुंजइ त्ति।

१ परपक्षभयविप्लवदूरपरिहृता ॥ २ यथा हरितनु 'सश्रीका' लक्ष्म्याख्यपत्नीयुता एव पुर्यपि 'सश्रीका' शोभायुक्ता ॥ ३ यथा विरञ्चिमूर्ति चतुर्मुखत्वात् सर्वतोमुखी एव पुर्यपि द्वारमहाद्वारोपेतत्वात् सर्वतोमुखी ॥ ४ या 'विशाला' विगतप्राकारा असौ कथं अलङ्घ्यगुरुप्राकारपरिगता भवति इति विरोध, तत्परिहारस्तु 'विशाला' विस्तीर्णा इति ॥ ५ या विखाता' विगतखातिका असौ वलयालङ्कृता भवति इति विरोध, तत्परिहारस्तु 'विख्याता' प्रसिद्धा इत्यर्थविधानात् ॥ ६ समराङ्गणवेदीमन्दिरे अभग्नमुक्तशर(मुक्तासरिक)धोरणीविरचितमण्डपे चतुर्दिक्प्रवृत्तमत्तहस्तिविकटकुम्भतटकलशपरम्परापरिगते सुभटकरापतत्खड्गनिघर्षोत्थितप्रज्वलज्ज्वलने विजयलक्ष्मी वधूरिव पठत्सु भट्टसमूहेषु परिणीता ॥ ७ °हमंतज° प्रतौ ॥ ८ °घोट्टेह° प्रतौ ॥ ९ सुस्वप्नसूचितः ॥ १० °यट्टियं प्रतौ । प्रतिष्ठित' च ॥

एगया य सो मज्झरत्तसमए कहं पि भवियव्वयावसेण ववगयनिद्दावेगो सेज्जं विमोत्तूण समुट्ठिओ संतो जाव पुव्वदिसिहुत्तं पलोएइ ताव पेच्छइ उप्पयंतं-निवयंतभासुरसुरविसरसरीरपहापडलपल्लवियं व गयणंगणं। तं च पेच्छिऊण चिंतिउं पवत्तो—

मज्झं ताव इमं निसाए समओ नो कोइ भाविज्जए, नूणं सारहिणो रविस्स न घणो विज्जुच्छडाडंबरो।
अच्छिन्नप्पसरत्तणेण न फुडं उक्काफुलिंगुग्गमो, ता किं होज्ज विभीसिय ? त्ति अहवा गंतूण दंसामि णं ॥ १ ॥

तओ निबिडदुकूलनिबद्धपरियरो, परियराओ खग्गं अप्पाणं च भिन्नं काऊणं, केणइ अमुणिज्जंतो, सणियसणियं नीहरिओ रायभवणातो। लग्गो तम्मग्गेण। पुरओ वच्चमाणस्स रायसुयस्स विजियबउल-मालइपरिमलुग्गारो वियंभिओ दिसि दिसि ज्झंकारमुहरमहुयरविलुप्पमाणो सरसपारियायतरुमंजरीजालपरागपब्भारो। सवणगोयरमुवगतो य निच्चलकुरंगवग्गनिसामिओ मणहरवेणु-वीणाविणिग्गयसरसरसीकयकलयंठकंठगायणपयट्टिओ गीयनिनातो। पयडीहूओ य सानंदविंदारयविंदविहिज्जमाणो चेलुक्खेव-कुसुमंजलीपयाणप्पमुहो पूयासक्कारो। विणिच्छियं च कुमारेण—नूणं एसो सो देवागमो त्ति, किं पुण कारणं एत्थाऽऽगमणस्स ?–त्ति विभाविउं पट्टिओ पुरओ।

१ °तमिवयं° प्रतौ॥ २–प्रसरत्वेन॥ ३ उल्कास्फुलिङ्गोद्गमः॥ ४ °मिमं प्रतौ। पश्यामि तम्॥ ५ खड्गपक्षे परिकरः–कोशः, आत्मपक्षे परिकरः–परिवारः॥ ६ पुरतो व्रजतः राजसुतस्य विजितबकुलमालतीपरिमलोद्गारः विजृम्भितः दिशि दिशि झङ्कारमुखरमधुकरविलुप्यमानः सरसपारिजाततरुमञ्जरीजालपरागप्राग्भारः॥ ७ °मालाईप° प्रतौ॥ ८ श्रवणगोचरमुपगतश्च निश्चलकुरङ्गवर्गनिशमितः मनोहरवेणुवीणाविनिर्गतस्वरसरसीकृतकलकण्ठकण्ठगायनप्रवर्त्तितः गीतनिनादः॥ ९ °ग्गत्तिसा° प्रतौ॥ १० °निन्नातो प्रतौ॥ ११ सानन्दवृन्दारकवृन्दविधीयमानः चेलोत्क्षेपकुसुमाञ्जलिप्रदानप्रमुखः पूजासत्कारः॥

दिट्ठो य तहिं एगो साहू अंतगयजीवियव्वो सायरं सुरा-ऽसुरेहिं थुव्वंतो सक्कारिज्जंतो य। 'किं पुण एयं?' ति पुच्छितो णेण एक्को सुरो—भो भो! किंनिमित्तं महाणुभावो अभूमिसंचरणो वि भविय भयवं सुरगणो एवं वट्टइ? त्ति। सुरेण भणियं—भो रायसुया! एत्थ एसो तवस्सी निसिपडिमं पडिवन्नो सुक्कज्झाण[ऽग्गि]निदड्ढघाइकम्मो समं चिय आउपमुहकम्मेहिं सरीरच्चायं काऊण निव्वाणमुवगओ, तम्महिमाकरणाय एसो सुरा-ऽसुरवग्गो एवं [व]वत्थितो त्ति।

'कहिमेयंविहयइयरो मए दिट्ठो सुओ?' त्ति ईहा-ऽपोह-मग्गण-गवेसणं कुणंतस्स य रायसुयस्स जायं जाईसरणं ति। अणुसुमरिया पुव्वाणुजम्मसेविया पव्वज्जाइकिरिया। पुव्वाहीयं पि संपइपढियं व कंठे पइट्ठियं पुव्वाइसुत्तं, पच्चक्खीहूओ चक्कवालसमायारो, उज्झियसव्वसंगो य जाओ एस सयंबुद्धसाहू, विसुज्झमाणलेसत्तणेण य उप्पन्नं से ओहिनाणं। एवं च सो जुगंधरसमणो दिव्वनाणनयणो एगत्थ निज्जीवप्पएसे कयसिलासणपरिग्गहो सुत्तं परावत्तिउं पवत्तो।

अह पच्चूसवियंभियसिसिरसमीरुब्भवंतसीयत्ता। गयनिद्दा सेज्जाए न सेज्जवाला पलोयंति ॥ १ ॥
रायसुयं सविसाया सभया ता सव्वओ निरूविंता। साहंति मंति-अंतेउरीण राईसराणं च ॥ २ ॥
अह तद्देसजणेणं साहुपउत्ती निवेइया तेसिं। तो ते विम्हियहियया विच्छायमुहा निराणंदा ॥ ३ ॥
अंतेउरं पि गुरुविरहवेयणावाउलीकयसरीरं। उज्झियसिंगारं दूरमुक्कनीसेसवावारं ॥ ४ ॥

१ स्तूयमानः संस्क्रियमाणश्च ॥ २ शुक्लध्यानाग्निनिर्दग्धघातिकर्मा ॥ ३ °कार° प्रतौ ॥ ४ कहमे° प्रतौ ॥ ५ प्रत्यूषविजृम्भितशिशिरसमीरोद्भवच्छीतार्ताः ॥ ६–व्याकुलीकृत–॥

अणवरयसोगभरनीहरंतबाहप्पवायधोयमुहं । हा हा हयास ! हयविहि ! किमेवमेयं ? ति जंपंतं ॥ ५ ॥
तं देसमणुप्पत्तं जत्थ महप्पा स चिट्ठइ निविट्ठो । दिट्ठो य तदणुरूवो पत्थिवमाईहिँ सो कुमरो ॥ ६ ॥
तो गाढचित्तसंतावन्नससमुट्ठितसोगआवेगा । सव्वे वि रोविऊणं पलावमिय काउमारद्धा ॥ ७ ॥
हा वच्छ ! केसगुच्छो तोविच्छसमच्छवी घणसमिद्धो । कह लुंचिऊण खित्तो तणं व तुमए महीवट्ठे ? ॥ ८ ॥
एवंविहदेहसिरी सिरीसकुसुमाइरेगसुकुमारा । किं वच्छ ! काउमुचिया कट्ठाणुट्ठाणठाणमहो ? ॥ ९ ॥
एयं च वच्छ ! वच्छत्थलहारिहारावलीविरायंतं । कह सोहिही वहूयणमित्थं तुमए पउत्थम्मि ? ॥ १० ॥
तुहविप्पओगपज्जलिरजलणजालावलीकवलियाण । पुत्त ! न निवाइ तणू सागर-सरियाजलेहिँ पि ॥ ११ ॥
तं लायन्नं [तं] तुज्झ विलसियं तं च निरुवमं रूवं । मइपगरिसो य सो वच्छ ! इण्हि कम्मि पलोएमो ? ॥ १२ ॥
इय अवरोह-वहूजण-मंति-पहाणेहि परिवुडो राया । तं दट्ठुं अचइंतो सुदुहत्तो पडिगतो सगिहं ॥ १३ ॥

जुगंधररायरिसी वि 'असमउ' त्ति तेसिमकयपन्नवणो सयण-परयणेसु तुल्लचित्तो गामा-ऽऽगराईसु विहरिउं पवत्तो । पडिबोहिया य बहवे महाराय-मंति-सामंत-सेट्ठि-सेणावइसुया गाहिया सव्वविरइं । तेहि य अहिगयसुत्तत्थेहिँ परियरितो भद्द-

१ अनवरतशोकभरनिःसरद्बाष्पप्रपातधौतमुखम् ॥ २ तमालवृक्षसमच्छविः घनसमृद्धः ॥ ३ °देवसि° प्रतौ ॥ ४ °च्छयल° प्रतौ । वक्षस्थलहारिहारावलीविराजत् ॥ ५ त्वद्विप्रयोगप्रज्वलनशीलज्वालावलीकवलितानाम् । पुत्र ! न निर्वाति तनुः सागरसरिज्जलैरपि ॥ ६ °दुहुत्तो प्रतौ । सुदुःखार्त्तः ॥ ७ तेषाम् 'अकृतप्रज्ञापनः' अकृतप्रतिबोधः स्वजनपरजनेषु ॥ ८ °परिय° प्रतौ ॥

जाइगयनिवहाणुगओ एरावणो व विरायमाणो सव्वत्थ विहरिऊण जणणि-जणगाइसयणवग्गपडिबोहणत्थमुवागओ विस्सपुरीए नयरीए, ठ्ठिओ एग[म्मि] विजणे उज्जाणे। जाणियतदागमणो य पहरिस-सोगसंभाराऊरिज्जमाणहियओ सममंतेउरी-पमुहपहाणपरियणेण खेमंकरनरिंदो उज्जाणे गओ। वंदिओ सव्वायरं जुगंधरमुणिवरो। दिन्नो य भगवया वियसियसयवत्तविब्भमं चक्खुं खिवंतेण धम्मलाभो। आसीणो य समुचियट्ठाणे मपरियणो राया पउरलोगो य।

भगवया वि कुमुय-मयंकाणुगारिदसणमऊहनिवहजलपक्खालियाए व धवलाए भारईए पयंपिउमाढत्तं—भो महाराय! तइया अम्हअतक्कियसव्वविरइदंसणसमुप्पन्नतिव्वसोगसंभारा अमुणियकारणविसेसा चेव जहागयं पडिगया तुब्भे, अहं पि 'असमतो' त्ति समुवेक्खिय तुब्भे अन्नत्थ विहरिओ, संपयं च महाराय! 'एस सो पत्थावो'- त्ति निसामेह तक्कालतहागहियदिक्खानिमित्तं ति। हरिसविसप्पंतवयणवियारेण य भणियं राइणा—भयवं! एयमेयं, साहेह परमत्थं ति। तओ जुगंधरमुणिणा सिट्ठो सव्वो रयणिमज्झसमुप्पन्नदेवागम-मुणिसक्कारदंसणजायजाईसरणाई वुत्तंतो। तं च निसामिऊण सपउर-परियणो परमं पमोयपब्भारमुवगओ नराहिवो।

---

१ प्रहर्षशोकसम्भारापूर्यमाणहृदयः ॥ २ विकसितशतपत्रविभ्रमम् ॥ ३ °या पउरपउरलोगो प्रतौ ॥ ४ कुमुदमृगाङ्कानुकारिदशनमयूखनिवह-जलप्रक्षालितया ॥ ५ °हमऊहजल° प्रतौ ॥ ६ अस्मदतर्कितसर्वविरतिदर्शनसमुत्पन्नतीव्रशोकसम्भाराः अज्ञातकारणविशेषाः ॥ ७ 'असमयः' अनवसरः ॥ ८ रजनिमध्यसमुत्पन्नदेवागममुनिसंस्कारदर्शनजातजातिस्मरणादिवृत्तान्तः ॥

तप्पुव्वभवजाइपुच्छणत्थं च जाव जोडिय पाणिसंपुडं पवत्तो, ताव [1]वणमुहविणिस्सरंतपूयगंधा[2]णुगमच्छियाजालाउलो, अच्चंतकुट्ठवाहिविणट्ठसव्वंगो, निहाणं व सयलरो[3]गाणं, आगरो व्व गरुयपावरासी[4]णं, आधारो व्व तिक्खदुक्खाणं, खाणि व्व दोग-च्चस्स, निवासो व्व स[5]यलजणावमाणणाणं, 'अइसयनाणि' त्ति जणाओ निसामिऊण तं पएसमागओ एगो रोरथेरपुरिसो त्ति। तओ ति[6]पयाहिणिऊणं तं समणं कयसंथवणो उद्धट्ठिओ चेव पज्जुवासिउं पवत्तो। निवडिया य तम्मि सयलस्स सभावत्तिणो जणस्स निब्भरकरुणाभरमंथरा दिट्ठी। 'अहह! किं पुण पुरा कयमणेणं?' ति जि[7]न्नासा जाया। अह जावऽज्ज वि न सो रोगिपुरिसो किं पि जंपइ ताव भणियं राइणा—भयवं! बहुं किं पि पुच्छियव्वमत्थि परं अच्छउ ताव अन्नं, किमणेण महाणुभावेण [8]दुत्थियसत्थसीमापत्तेण रोगिणा पुव्वं कयं? ति साहेह, महंतं कोऊहलं ति। साहुणा कहियं—महाराय! जं पुव्वं तुमए पुच्छिउमिच्छियं तस्स वि एयमेव निव्वयणं ति एगचित्तो निसामेसु—

कुसुमे व्व [10]पंहियमणमहुयरमणोहरे कुसुमपुरे नयरे सव्वन्नुपायपूयण[परो] परोवयाराइगुणसंगतो सागरो नाम सेट्ठी अहेसि, सुदंसणा से भज्जा। ताणं दुवे पुत्ता—जेट्ठो अहं नंदो नाम, कणिट्ठो य एसो रोगिपुरिसजीवो नागदेवनामो त्ति। दोण्ह वि अम्हाणं परोप्परगाढसिणेहसारं सव्वत्थ वट्टमाणाण गयाइं कइय वि वच्छराइं। [11]सुरिंदचावचावलत्तणेण य संसारि-

१ वनमुखविनिस्सरत्पूतिगन्धानुगमक्षिकाजालाकुलः अत्यन्तकुष्ठव्याधिविनष्टसर्वाङ्गः ॥ २ °णुगंधम° प्रतौ ॥ ३ °गाणमाग° प्रतौ ॥ ४ °सीण-माधा° प्रतौ ॥ ५ °यणज° प्रतौ ॥ ६ त्रिः प्रदक्षिणां कृत्वेत्यर्थः ॥ ७ जिज्ञासा ॥ ८ दुःस्थितसार्थसीमाप्राप्तेन ॥ ९ उत्तरमित्यर्थः ॥ १० कुसुम-पक्षे प्रहृतमनोभिः—आकृष्टचित्तैः मधुकरैः मनोहरे, नगरपक्षे पथिकमनोमधुकरमनोहरे ॥ ११ सुरेन्द्रचापचपलत्वेन ॥

युगन्धरमुने रोरस्य च पूर्वभवाः

यभावाणमतक्कियमेव तहाविहसरीरकारणं पाविऊण पंचत्तमुवगया अम्मा-पियरो। कयाइं तप्पारलोइयकायव्वाइं। कालक्कमेण जाया अप्पसोगा, चिंतिउं पवत्ता य घरकज्जाइं। अन्नया य अतहाविहं ववहारसुद्धिं पलोइऊण नागदेवस्स भणियमेगंते मए—

हे भाइ! किं य सीमउ तुह जुत्ता-ऽजुत्तजाणनिउणस्स?। तह वि हु सिणेहचावलऽवलेवओ किं पि साहेमि ॥ १ ॥

कट्ठेण संठविज्जइ अप्पा सुगुणे गिरिम्मि उवलो व। पाडिज्जइ पुण तत्तो उवेक्कमेणं सुलहुणा वि ॥ २ ॥

न य ऐक्कसिं पि अवजमपंकियसीलस्स पुण मणूसस्स। सुकयसहस्सजलेहि वि तीरइ पक्खालणं काउं ॥ ३ ॥

ता ववहारविसुद्धिं वैयणपइट्ठं च लोभनिग्गहणं। दक्खिन्न-दयासारत्तणं च सीलं च धरसु दढं ॥ ४ ॥ किं वहुणा?—

लहुओ वि वुड्ढचेट्ठियमणुचिट्ठसु तह कहं पि हे भाइ!। जह होसि तुमं जेट्ठो विसिट्ठमज्झम्मि पुज्जो य ॥ ५ ॥

गउरवमुवितिं हि गुणा न दूरमावज्जिया वि लच्छीओ। सिंबलिकुसुमं पाडलदलं पि कमलं व नो सहइ ॥ ६ ॥

पुव्वपुरिसज्जियं पि हु माहप्पं जहतहाववहरंतो। हारिहिसि लोयमज्झे ता एत्तो कुणसु जं जुत्तं ॥ ७ ॥

नागदेवेण वुत्तं—सव्वहा खमह मह एगमवराहं, नाहमेत्तो पुव्वपुरिसकमविरुद्धं किं पि करिस्सं, सम्मं कयं तुब्भेहिं जेमहमेयातो दुट्ठचेट्ठियाउ नियत्तिओ। एवं च पुव्वपवाहेण ववहरिउमारद्धा अम्हे। थोयकालेण वि पत्ता लोयमज्झे पसिद्धी,

---

१ युक्तायुक्तज्ञाननिपुणस्य ॥ २ स्नेहचापल्यावलेपतः ॥ ३ संस्थाप्यते ॥ ४ प्रयत्नेनेत्यर्थः ॥ ५ एकशोऽपि अपयशःपङ्किलशीलस्य ॥ ६ वचनप्रतिष्ठाम् ॥ ७ वृद्धचेष्टितमनुष्ठीयताम् ॥ ८ शाल्मलिकुसुमं पाटलदलमपि कमलमिव न राजते ॥ ९ यद् अहम् एतस्मात् ॥

पूयाय पयं गया य रायाईणं। नवरं 'दुपरिच्चया पयइ' त्ति नागदेवो न मुयइ दुट्ठसहावं। ततो विभजिऊण घरसारं दिन्नं मए एयस्स। अणिच्छंतो वि ट्ठाविओ विभिन्नमंदिरे। भिन्नं ववहरिउमारद्धो य एसो।

अन्नया य तन्नयरसामिणा बलभद्दाभिहाणराइणा संभूयमुणिसमीवे पवन्नसावगधम्मेण परमं जिणपक्खवायमुव्वहंतेण काराविय चेईहरं, दिन्नाइं सासणनिबद्धाइं गामाइं, उवकप्पिया अन्ने विं अ दायविसेसा। 'सुइसमायार' त्ति परिभाविऊण देवदविणरक्खण-वड्ढणनिमित्तं अम्हे दो वि भायरो ट्ठाविया गोट्ठियपए। समप्पितो दवभंडारो समं कुंचिगाहिं। गाढरायवयणोवरोहेण य पडिवन्नो अम्हेहिं। समयसत्थनिदंसियनाएण तवड्ढण-रक्खण-उचियट्ठाणविणिओगाईहिं पयट्टा चिंतिउं।

सरंते य काले किं पि किलिट्ठकम्मवसओ तुच्छधणीहूओ नागदेवो। 'सीयंता य पाणिणो पाएण निद्धम्मा हवंति' त्ति पारद्धो य एसो किं पि किं पि देवदवं पि उवभोत्तुं। वियाणिओ मए पन्नविओ य, जहा—भद्द !

एगत्थ सवपावं अन्नत्थ य देवदवपरिभोगो। तेणेस परिहरिज्जइ दूरं कल्लाणकामेहिं ॥ १ ॥
वरमुग्गविसं भुत्तं न देवदवं सुथेवमेत्तं पि। एगभवे हणइ विसं चेइयदवं पि भूरिभवे ॥ २ ॥
सेसाणं पावाणं विज्जइ कत्तो वि किं पि परित्ताणं। देवऽत्थभोगपावं अपरित्ताणं परिवयंति ॥ ३ ॥
पइजम्मरुद्ददारिद्दवद्दुया दीहरे भवारन्ने। देवत्थभोगनिरया [निरया]इगईसु वच्चंति ॥ ४ ॥

१ वि आदाय° प्रतौ ॥ २ गाढराजवचनोपरोधेन ॥ ३ समयशास्त्रनिदर्शितन्यायेन तद्वर्धनरक्षणउचितस्थानविनियोगादिभिः ॥ ४ °धणूह्° प्रतौ ॥ ५ °रिच्चयं प्रतौ। परिवदन्ति ॥ ६ प्रतिजन्मरौद्रदारिद्र्योपद्रुता दीर्घे भवारण्ये। देवद्रव्यभोगनिरता निरयादिगतिषु व्रजन्ति ॥

किं बहुणा भणिएणं ? जं जमणिट्ठं जणाण इह पडई। तं तं देवस्सुवभोगपावदुविलसियं जाण ॥ ५ ॥

एयं च निसामिऊण अप्पणो साहुत्तणं दंसितेण असाहुणा वि किंचिसमुप्पन्नकोवेण भणियं नागदेवेण—हे भाइ ! सच्चो कओ तए लोयप्पवाओ 'जो तिणस्स चोरो सो तणसयस्स वि' त्ति, जइ कह वि पुव्वकाले बालभावओ मए अवरद्धं ता किमियाणिं पि मं तहाविहत्थकारिणं समत्थेसि ? किमहं देवदव्वभक्खणलक्खणं पावमायरिस्सामि ? एत्तियमेत्तं पि न जाणामि जं एवं ममाभिमुहमुल्लवसि ? । 'अजोगो' त्ति कलिऊण ठिओ हं तुण्हिक्को। चिंतियं च मए—किमियाणिं कीरइ ? जइ राइणो एयवइयरो साहिज्जइ ता महादंडोवणिवाओ, अह न साहिज्जइ ता देवअत्थविणासोवेक्खणजणियमहापावागमो, तमेयं एगत्त दोत्तडी अन्नत्तो सद्दूलो, अहवा किमेस एगजम्मसयणो काही ? अणंतजम्मवासणविवागं देवदव्वभक्खणोवेक्खणं, ता होउ किं पि, पभाए गंतूण राइणो देवदव्वभंडारसमप्पणं करेमि—त्ति संपहारिऊण पसुत्तो रयणीए। भवियव्वयावसेण य समुप्पन्नं सूलं, कया केइ मंत-तंताइणो उवाया, न जाओ को वि पडियारो, अवि य वुड्ढिं सविसेसं गयं। तदहिगत्तणेण य निच्छिओ मए अप्पणोऽवसाणसमओ। तओ सुमरितो भावसारं संसारसारंगकेसरिकिसोरो वीयरागो गुरुणो य, कया सव्वसत्तखामणा, विहियं सागारमणसणं, पंचनमोक्कारं परावत्तयंतो मरिऊण उववन्नो

---

१ °णियं जं प्रतौ ॥ २ देवस्वोपभोगपापदुर्विलसितं जानीहि ॥ ३ तृणस्य ॥ ४ तथाविधार्थकारिणं समर्थयसि ॥ ५ मौनमित्यर्थः ॥ ६ एतद्व्यतिकरः कथ्यते ॥ ७ देवार्थविनाशोपेक्षणजनितमहापापागमः। तदेतदेकत्र दुस्तटी अन्यतः शार्दूलः ॥ ८ °वेक्खण° प्रतौ ॥ ९ अनन्तजन्मवासनविपाकं देवद्रव्यभक्षणोपेक्षणम् ॥

देवत्तणेण पंचमकप्पम्मि। [1]अहाउयखएण य [2]चुओ समाणो कुंडिणपुरे इब्भस्स संखसेट्ठिणो पुत्तत्तणेण समुप्पन्नो। कयं धवलो त्ति नामं। पत्तो कालक्कमेण [जोव्वणं]। जाया सुसाहूहिं समं संगई, अभिरुइओ जिणधम्मो, तदेगचित्तत्तणेण कालं वोलेमि। पच्छिमकाले य पवन्ना पव्वज्जा। सव्वसावज्ज[वज्ज]णुज्जमेण य सम्मं पालिऊण पज्जन्तकयाणसणो विहिपरिचत्तपाणो पाणयकप्पे कप्पाहिवत्तसुहं सुचिरमणुभविऊण चुओ समाणो सुमाणुसत्तं समणत्तणं च लद्धूण पुणो अच्चुए देवत्तं [पत्तो]। एवमणेण कमेण सत्तसु भवेसु चारित्तमाराहिऊण जहुत्तं, जयंतविमाणे देवसुहं च भोत्तूण, भो महाराय! तुह सुओ जाओ म्हि। [3]रयणिमज्झसमयदिट्ठदेवागमाणुसारगमण-मुणिवइयरसवणजायजाईसरणपच्चक्खीभूयसुय-संजमो य समणो संवुत्तो म्हि। ता महाराय! एयमम्ह पव्वज्जानिमित्तं ॥ छ ॥

सो पुण नागदेवो तब्भव एव गहिओ महावाहिणा विसन्नो चित्तेणं। देवदव्वोवओगदुच्चरिएण य बाढं दुगुंछमावन्नो, चिंतिउं पवत्तो य—अहो! महाणुभावेण तइया जेट्ठभाउणा निसिद्धेण वि मए पावकारिणा खणमेत्तसुहलालसेण य अपरिभावियाणंतदुक्खावडणेण अच्चंतमणुचियं देवदव्वभक्खणमणुट्ठियं, तस्सेव मन्ने एस [5]महावाहिविहुरनिवायरूवो कुसुमुग्गमो, फलमज्ज वि अन्नं भविस्सइ, ता एत्तो न जुज्जइ अत्तणो [6]उवेहणं—ति सम्मं परिभाविऊण [7]उवभुत्तदेवत्थपूरणत्थं दिन्नो धण-कणगाइओ अत्थो। थोवरिद्धित्तणेण य न सव्वविसुद्धी जाया। मरणसमए य भणिया पुत्ताइणो—अरे! एत्तियमेत्तं दव्वं

१ यथायुष्कक्षयेण ॥ २ °च्चुओ दे° प्रतौ ॥ ३ रजनिमध्यसमयदृष्टदेवागमानुसारगमनमुनिव्यतिकरश्रवणजातजातिस्मरणप्रत्यक्षीभूतश्रुतसंयमः ॥ ४ °यानंत° प्रतौ ॥ ५ महाव्याधिदुःखनिपातरूपः ॥ ६ उपेक्षणम् ॥ ७ उपभुक्तदेवार्थपूरणार्थम् ॥

घराउ दाऊण देवस्सविसुद्धिं करेज्जह–त्ति निरूविऊण गओ एसो उववन्नो नेगासु हीणजाईसु चिरकालं ।

जहिं जहिं एस महाणुभावो, कुलम्मि उप्पज्जइ पावकम्मो । तहिं तहिं पुव्वधणं बहुं पि, एयप्पभावेण खयं उवेइ ॥ १ ॥
अणत्थसत्था बहवो पडंति, रोगा य जायंति बहुप्पयारा । अयंडचंडो कलहप्पवंधो, बंधूहिं सद्धिं च पवट्टई य ॥ २ ॥
अवन्नवाओ भमई दिसासुं, उप्पज्जई नेव रई खणं पि । दव्वज्जणत्थं च कया उवाया, न कासपुप्फं व फलंति किं पि ॥ ३ ॥
तद्दोवयारम्मि कए वि कोवो, परेसि संपज्जइ चंडचंडो । मित्ते वि सत्तुत्तणमेव जाइ, न किं पि कत्तो वि सुहं हवेइ ॥ ४ ॥
एवं च सव्वत्थ छुहाभिभूओ, रोगाउरो भूरिभयप्परुद्धो । उज्झिज्जमाणो जणगाइएहिं, अणिट्ठदोगच्चकरो त्ति दूरं ॥ ५ ॥
महाकिलेसेणऽइवाहइत्ता, एसो पभूयं किल कालमेयं । देवत्थभोगेण विणट्ठबोही, कहं पि जाओ पुण माणुसत्ते ॥ ६ ॥
तहिं पि एवंविहमीमरूवो, असेसरोगाण दुहाण खाणी । पए पए सोगभरं धरंतो, सदुक्खसद्दं करुणं रसंतो ॥ ७ ॥
किमागओ अच्छसि कीस एत्थ, हे कुट्ठनट्ठोट्ठ ! विणट्ठदेह ! । अचंतमुद्वेगकरो सि जाहि, हीलिज्जमाणो स जणेण एवं ॥ ८ ॥
उब्बंधणेणं अहवाऽनलेणं, जलेण वा सेलनिवायओ वा । मरामि किं ? एव विचिंतयंतो, अम्हं समीवे इय वट्टइ त्ति ॥ ९ ॥ छ ॥

एवं च पुव्वभववित्थरे जुगंधरमुणिवरेण साहिए सो नागदेवो सा य परिसा [अ]वधारियनीसेसदेवदव्वोवभोगभीसणा-सुहसरूवा परमं भयपगरिसं उवगया। रोगी वि सुमरियसव्वजैहट्ठियपुव्वभवपरंपरावुत्तंतो भयवओ पाएसु पडिऊण पुव्वभवभाइ-

१ देयस्स वि° प्रतौ । देवस्वविशुद्धिं करिष्यथ ॥ २ 'निरूप्य' कथयित्वा ॥ ३ महाक्लेशेनातिवाह्य ॥ ४ उद्वेगकरः ॥ ५ अवधारितनि:शेषदेवद्रव्योपभोगभीषणाशुभस्वरूपा ॥ ६ 'जहट्ठि' प्रतौ ॥

सुमरणेण अच्चंतदुक्खियत्तणेण य अब्भाहओ समाणो अच्छिन्नवहंतबाहप्पवाहपक्खालियवयणो भणिउं पवत्तो—भयवं! अनितहमेयं, सव्वं सरीरेण अणुभूयं मए महापावेण, किमियाणिं करेमि? साहेह दुक्करं पि, निव्विन्नो हं संपइ पुव्वपावदुविलसियाओ, देह आएसं, पडामि जल-जलणाईसु, नत्थि एत्थेवं पि पओयणं जीविएणं, केत्तियं वा अज्ज वि तं असुहकम्ममज्जिणं? ति। भयवया भणियं—महाणुभाव! जुत्तमेयं पुव्वदुच्चरियनिंदण-गरहणाईयं, केवलमणलाइपओगेण पाणच्चातो अजुत्तो, तव-नियमा-ऽणसणेहिं चेव अप्पणो परिच्चातो पसत्थो सत्थेसु गिज्जइ[3], निज्जरियप्पायं च तं असुहं कम्मं ति।

एवं च निसामिऊण परं संसारभयमुव्वहंतो, पवड्ढमाणसंवेग-निव्वेयाइगुणगणो, पवन्नसम्मद्दंसणो, गुरुणो समीवे निरागारं पच्चक्खिऊण चउव्विहाहारं, एक्कम्मि सिलायले सुसाहु व्व निच्चलचित्तो, पुणो पुणो गरिहंतो पुव्वदुक्कियाइं, संलीणंगो ट्ठिउ त्ति। मासियसंलेहणं च काऊण मओ उ[व]वन्नो अच्चुए देवलोए देवो महिड्ढिओ त्ति। तओ चुओ कइय वि भवेसु जहुत्तचारित्तफरिसणेणमपुणागमं पयं पाविहि त्ति।

अवरवासरे पुणो वि पुहइपाल[6]पुरस्सरा सा सभा जुगंधरसाहुं सायरं पणमिऊण पुच्छिउं पवत्ता—भयवं! अच्चंतपमत्ताणमम्हारिसाणं संसारसायरतरंडकप्पं किं पि उवइसह तत्तं ति। भयवया भणियं—णणु पुव्वं वित्थरेण कहियमेव, विसेसओ पुण इममवधारह—

१ अब्भहिओ प्रतौ ॥ २ अच्छिन्नवहद्बाष्पप्रवाहप्रक्षालितवदनः ॥ ३ गीयते ॥ ४ °रुणा स° प्रतौ ॥ ५ 'अपुनरागमं पदं' मोक्षम् ॥ ६ °लस्स पु° प्रतौ ॥ ७ °भा ग जु° प्रतौ ॥ ८ णणु पुव्वुत्तवित्थ° प्रतौ ॥

यदि पथि सतां गन्तुं बुद्धिर्यदि प्रवरं पदं, नृप-दिविपदां प्राप्तुं काङ्क्षा श्रियोऽप्यविनश्वरीः ।
यदि करगता लीलाः कर्तुं सदैव हि वासना, यदि च विपदुच्छेदच्छेका मनोरथसन्ततिः ॥ १ ॥
यदि भवमहासिन्धोरन्तं प्रयातुमहो ! मतिर्यदि च सुकुलप्रत्यायातिप्रमुख्यशुभस्पृहा ।
यदि च कुमुदश्वेतोदात्तत्विषा यशसा दिशः, सितयितुमलं वाञ्छा काचित् समस्ति तदा सदा ॥ २ ॥
जनयेत जनाः ! जैनद्रव्याभिवृद्धिममूं विना, क्षययुजि जिनागारादौ यत् तथाविधदौस्थ्यतः ।
क्व यतिविहृतिः सम्पद्येत ? क्व वा जनबोधनं ?, कथमिव तथा वृद्धिं गच्छेत् क्षितौ जिनशासनम् ? ॥ ३ ॥
इति क्षमाधीशपुरःसरायाः, युगन्धरः साधुवरः सभायाः। निगद्य तत्त्वं नृपनन्द्यमानो, विहर्तुमन्यत्र चकार चेतः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे देवद्रव्यचिन्ताधिकारे भ्रातृद्वयकथानकं समाप्तम् ॥ १४ ॥

जिनागमश्रवण

जिणभवणाइविहाणमणहं न विणा उ समयसवणेण । ता सिद्धंतस्सवणे करेज्ज जत्तं ति वोच्छामि ॥ १ ॥
सुस्सूसा पढमं चिय लिंगं जंपंति धम्मवंछाए । तदभावे चिय सत्थत्थसावणं कंठसोसकरं ॥ २ ॥
सत्थत्थसवणरहिया पसु व्व पुरिसा न किं पि जाणंति । हियमहियमजाणंता अहियं पि कहं पि कुव्वंति ॥ ३ ॥
तक्करणाओ भवसायरम्मि रंगंतदुहमहावत्ते । उम्मज्जण-निम्मज्जणसयाइं कुम्मो व्व कुव्वंति ॥ ४ ॥

१ °रतला ली° प्रतौ ॥ २ °यति ज° प्रतौ ॥ ३ अनघम् ॥ ४ जिनागमश्रवणेनेत्यर्थः ॥ ५ चिह्नम् ॥ ६ शास्त्रार्थश्रावणम् ॥ ७ उम्मोज्ज° प्रतौ ॥

सत्थत्थभावगा[1] पुण कहं पि चुक्का[2] विसिट्ठमग्गातो। नाणंकुसवसपत्ता[3] गय व मग्गम्मि लग्गंति ॥ ५ ॥
न वि तं करेइ देहो न य सयणो नेय वित्तसंघाओ। जिणवयणसवणजणिया जं संवेगाइया लोए ॥ ६ ॥ किंच—
कंखइ लोगो सोक्खं तं पुण धम्माओ सो विवेयाओ। सो सत्थस्सवणाओ ता तस्सवणुज्जमो[6] जुत्तो ॥ ७ ॥
अचंतजीववहनिरयमाणसा विगयसवकरुणा वि। निच्चं पि य [...] अवुल्लाविणो वि विणया[उ] हीणा[7] वि ॥ ८ ॥
सत्थसवणाणुरागेण ओयपत्ता[8] इहं महब्भुदयं। पावियसमीहियत्थो सिरिगुत्तो [इह] उदाहरणं ॥ ९ ॥

तहाहि—अत्थि मगहाविसयालंकारकप्पा, कप्पवासिसमाणरूवसुंदेराइगुणमणुयलोयाहिट्ठिया[9], जुहिट्ठिलसेण व संयाणउलविलसियाभिरामा[10], मरुभूमि व विद्दुम-रिट्ठनीलुप्पीलुपसोहिया[11] विजयपुरी नामं नयरी। रक्खइ य[12] तं च विक्कमेक्कधणो अप्पडिमपयाव-रूव-चाग-सो[ह]ग्गाइगुणावगणियासेसमहीवालो[13] वइरिवरूहिणीमहाखयकालो नलो नाम राया। सव्वंतेउरवरिट्ठा य पउमावई से भज्जा। असेसदेसंतरचरणोवज्जियभूरिदवपब्भारो महीधरो नाम सत्थवाहो। सिरी य से भज्जा।

---

१ शास्त्रार्थचिन्तका इत्यर्थः ॥ २ भ्रष्टाः ॥ ३ ज्ञानाङ्कुशवशप्राप्ता गजा इव ॥ ४ °पत्ता ग° प्रतौ ॥ ५ सोगं, तं प्रतौ ॥ ६ °स्सघणु° प्रतौ ॥ ७ हीणो वि प्रतौ ॥ ८ 'ओजःप्राप्ताः' नीरागद्वेषाः ॥ ९–रूपसौन्दर्यादि–॥ १० युधिष्ठिरसेना सदा नकुलविलसितैरभिरामा, नगरी पुनः सदानकुलानां–दानधर्मपरायणानां कुलानां विलसितैः–विलासैः अभिरामा–मनोहरा ॥ ११ मरुभूमिः विद्रुमाः–अकैरण्डकरीरादिक्षुद्रवृक्षाः रिष्टाश्च–काकाः नीलाश्चैतेषां समूहैरुपशोभिता, नगरी पुनः विद्रुमरिष्टनीलाख्यरत्नसमूहैरुपशोभिता ॥ १२ य तम्ब वि° प्रतौ ॥ १३ अप्रतिमप्रतापरूपत्यागसौभाग्यादिगुणावगणिताशेषमहीपालः वैरिवरूथिनीमहाक्षयकालः ॥

पुत्तो य असेसवसणकारित्तणेणं बहुसो विगुत्तो सिरिगुत्तो नाम ।

सो य सत्थवाहो पयईए[ए] च्चिय दाण-दक्खिन्न-दया-सच्च-सोहिच्चसीलो लोगाविरुद्धेणं कम्मेण वट्टंतो वि पुत्तेणत्थसत्थउप्पित्थमाणसो आगामिदे[ज]निरुंभणत्थं नरिंदमंदिरं गओ । पडिहारनिवेइओ पविट्ठो रायसभं । कयपंचंगपणिवाओ दवावियासणो निसन्नो समुचियट्ठाणे । संभासिओ सिणेहभरमंथरचक्खुक्खेवपुरस्सरं राइणा—सत्थवाह ! किमेवं ववगयपक्खवाओ व लक्खिज्जसि जमेवं चिरकालाओ आगच्छसि ? ममाणुच्चियपवित्तियसओ वा संभावियाबहुमाणत्तउ त्ति न सम्ममवगच्छामो अणागमणनिमित्तं ति । सिरविरइयकरकमलकोसं च भणियं सत्थवाहेण—देव ! मा एवमसब्भूयं विकप्पह, सुमिणे वि अदंसियएवंविहवइयराणं देवपायाणं को हि अणुचियं संभावेज्जा ? केवलमवरावरगिहवावारविरयणाउलमाणसाणमम्हारिसाण पइदिणं देवपायारविंददरिसणे सायराणं पि पुव्वकयदुकयनिचओ चेवावरज्झइ, न उण कारणंतरं ति । राइणा भणियं—होउ ताव, साहेसु आगम[ण]कारणं । सत्थवाहेण भणियं—देव ! बाढमिमं न कहिउं न सोढुं नावि गोविउं पारियइ,

अन्नत्तो उप्पन्नं दुक्खं अक्खिज्जई सुहेणेव । अप्पसमुट्ठाणं पुण सीसइ कट्ठेण गरुएण ॥ १ ॥
तह वि हु सामिम्मि निवेइऊण दुक्खं सुतिक्खमवि होमि । सयमवगयदुक्खो हं, को व समत्थो तुमाहिंतो ? ॥ २ ॥

---

१ 'विगुप्तः' निन्दितः ॥ २ सौहित्यं–हितैषित्वम् ॥ ३ पुत्रानर्थसार्थव्याकुलमानसः आगामिदेयनिरोधार्थम् ॥ ४ °णधउ प्रतौ ॥ ५ अदर्शितैवंविधव्यतिकराणाम् ॥ ६ अपरापरगृहव्यापारविरचनाकुलमानसानामस्मादृशाम् ॥ ७ °रज्झइ प्रतौ ॥ ८ °ज्जइ सु° प्रतौ । आख्यायते ॥ ९ आत्मसमुत्थानं पुनः शिष्यते ॥ १० सति° प्रतौ ॥

तओ मुणियाभिप्पाएण राइणा काराविंयं विजणं। भणिओ सत्थवाहो—भद्द ! वीसत्थो साहेसु दुक्खं। सत्थवाहेण जंपियं—निसामेउ देवो—

अत्थि कोमुइमयंकधवलस्स अम्ह कुलस्स कलंको अणत्थेक्कचित्तो सिरिगुत्तो नाम पुत्तो। सो य 'एगो' त्ति अणिवारिज्जंतो दुल्ललियगोट्ठिचेट्ठिएसु[1] निरंतरमक्खित्तचित्तो[2] रमइ जूयं, निवसइ पणंगणागिहेसु, पोसइ नड-चेड-चाडुयरपमुहमनिवद्धं बहुं जणं। एवं च सत्तपुरिसपरंपरागओ वि अत्थो निहणमुवागओ। वाहरिऊण य एगंते अणुसासिओ सो मए—अरे ! मा अकाले च्चिय निहणमुवणेसु धणं, परिहर कुसंगं, वट्टसु विसिट्ठसमायारेण—इच्चाइ बहुविहं भणिज्जंतो वायामेत्तेण पडिवज्जिऊण सविसेसं जहिच्छं वियंभिउं[3] पवत्तो। मए वि तव्ववहरणं तहाविहं नाऊण संगोवियं सम्मं सव्वं घरसारं, सव्वत्थ ठविया रक्खगा, भोयणमेत्तं मोत्तुं सेसं तणं पि घेत्तुं न पारइ एसो, तह वि वसणाभिभूयत्तणेण न विरमइ जूयाइप्पसंगाओ। हारियं च बहुयं धणं। बाढं[4] निरुद्धो दव्वत्थं सहिएण[5]। तत्तो कहिं पि अप्पाणं विमोइऊण रयणीए अम्ह गिहसमीववत्तिसोमसेट्ठिणो भवणे पाडियं खत्तं, आयड्ढियं गेहसारं, निजुंजियं च अभिरुइयट्ठाणेसु। वियाणितो य मए एस वइयरो तदभिमयविलासिणिदासचेडियवयणाओ[6]। रायविरुद्धसमायरणाओ य भीओ दूरमहं। सहस्सचक्खुणो य खोणीवइणो भवंति। 'जावऽज्ज वि देवो वइयरमिमं न निसामेइ ताव सयं नियदुच्चरियं साहेमि'[7] त्ति तुम्ह समीवे

१ दुर्ललितगोष्ठीचेष्टितेषु ॥ २ °मक्खित्त° प्रतौ ॥ ३ 'विजृम्भितुम्' विलसितुम् ॥ ४ °याउप्प° प्रतौ ॥ ५ 'सभिकेन', द्यूतकारमुख्येन ॥ ६ °भिमय° प्रतौ। तदभिमतविलासिनीदासचेटिकावदनात्–वचनाद्वा ॥ ७ कथयामि ॥

समागओ म्हि। ता देव! पुव्वमणागमणस्स संपइ समागमणस्स य एयं निमित्तं।

इण्हिं च देवो पसायं काऊण घरसारसव्वस्सं एवंविहावराहकारिणो मे गेण्हउ त्ति। राइणा भणियं—सत्थवाह! कहं

तुमं अवराहकारी। सत्थवाहेण भणियं—अवराहकारिणं जणं पोसंतो कहमिव नावराहकारी?, यतः—

चौरश्चौरापको मन्त्री मर्मज्ञः काणकक्रयी। अन्नदः स्थानदश्चैव चौरः सप्तविधः स्मृतः ॥ १ ॥

अओ किमवरं देवपायाणं सीसइ?। राइणा जंपियं—वीसत्थो भव, सायत्तं चेव तुह धणमम्हाणं, निरुव्विग्गो वच्चसु

सगिहं। तओ दावियतंबोलो पडिगओ सत्थवाहो सगिहं।

एत्थंतरे भुयदंडारोवियसाहुलो 'अनाओ अनाउ' त्ति पोक्करंतो पविट्ठो पउरवणियलोगो। 'किमेयं?' ति ससंभमं पुच्छियं

रन्ना। निवेइयं च पडिहारेण दूरावणयमउलिणा, जहा—देव! चोरमुसियसव्वसारं सोमसिट्ठिमणुवत्तयंतो पहाणजणो

देवदंसणूसुओ चिट्ठइ त्ति। राइणा भणियं—तुरियं पवेसेहि। 'जं देवो आणवेइ' त्ति पवेसिओ लोगो, उवणीयमहरिहपा-

हुडो पायपडणपुरस्सरं विन्नविउं पवत्तो य—देव! बाढमसमंजसमेयं, जमेवं विजयंते वि देवे परिभमणसीले वि दंडवा-

सियजणे घरसारो मुसिज्जइ। राइणा भणियं—अरे दंडवासिय! को एस वुत्तंतो?। तेण वागरियं—देव! जइ अन्नत्तो

कत्तो वि तक्करागमो हवइ त्ति ता अम्हे मोसेरित्थं नित्थरामो। रन्ना भणियं—जइ एवं ता पुरीवत्थव्वा चेव चोरा? साहु

१ 'वद्धारका' प्रती ॥ २ स्वायत्तम् ॥ ३ भुजदण्डारोपितशाटः 'अन्यायः अन्यायः' इति पूत्कुर्वन् ॥ ४ उपनीतमहार्हप्राभृतः ॥ ५ 'मोषरित्थं' चौर्यद्रव्यं निस्तरामः ॥

साहु तुह वयणविन्नासो जो तुमं वणियजणं चेव चोरं काउमिच्छसि, किं वाऽमुणा कवोलवाएण ? महायणो साहेउ 'केत्तियमित्तो अत्थो गओ ?' त्ति । सम्ममालोचिऊण जंपियं महायणेण—देव ! पणवीसं सुवन्नसहस्स त्ति । तओ भंडागाराओ दवाविऊण तेत्तियमेत्तं सुवन्नं, तंबोलाइदाणेण सम्माणिऊण विसज्जितो महायणो ।

राइणा वि वाहरिओ सिरिगुत्तो, वुत्तो य—अरे ! जइ कह वि सत्थवाहलज्जाए तुह अजुत्तं न भासेमि करेमि वा ता किं तुह एवं वट्टिउं खमं ? अतो अज्ज वि जमिमं महाणुभावस्स सोमसेट्ठिणो दव्वमवहडं तं समप्पेसु, मा अप्पाणं विरुद्धकारित्तणेण अपत्तकालं चिय कालातिहिंत्तणं उवणेसु । सिरिगुत्तेणं भणियं—देव ! को एवंविहमघडंतं खरसिंगं व वाहरइ ? किमम्ह कुले केण वि एवंविहमकज्जमणुट्ठियं ? सच्चं 'नत्थि दुज्जणाणं किं पि अवत्तव्वं' ति, अहवा किमणेण वायावित्थरेण ? एत्तो पाणियं पि पाहामि सुद्धो हं । ततो रन्ना वाहराविओ जूयवालो पुच्छिओ—अणेण सत्थवाहपुत्तेण केत्तियं दविणजायं हारियमासि ? । तेणं संलत्तं—देव ! दस सहस्सा कणयस्स, परं संपयं दिन्ना । रन्ना भणियं—अरे सिरिगुत्त ! ते सुवन्नसहस्सा दस घरे किं पि अपावमाणेण कत्तो तुमए दिन्ना ? । ते[ण] जंपियं—तुम्ह पसायातो अज्ज वि पिउणो वि अत्थि तेत्तियं जेत्तियमहमुवभुंजामि । रन्ना भणियं—निरुद्धघरजहिच्छाचारस्स तुह दूरमसद्दहणिज्जमेयं । तेण भणियं—जइ दूरमपच्चओ मज्झ वयणे ता अणुगिण्हउ देवो ममं दिव्वदाणेण । तओ पंचक्खावला[वा]ओ जायतिव्वकोवेण

१ °व गुह° प्रतौ ॥ २ वट्टिउं प्रतौ ॥ ३ अपहृतम् ॥ ४ °अप्पणो वि° प्रतौ ॥ ५ अघटमानं खरशृङ्गमिव 'व्याहरति' वृत्ति ॥ ६ अप्राप्नुवता ॥ ७ निरुद्धगृहयथेच्छचारस्य तव दूरमश्रद्धानीयमेतत् ॥ ८ प्रलक्षापलापात् ॥

नरवइणा निरूविया धम्माहिगरणिया—इमं दुट्ठं देवयापुरओ फालगाहणेण विसोहिऊण मम समप्पह त्ति। 'जं देवो आणवेइ' त्ति चालिओ एसो धम्माहिगरणिएहिं। तओ विन्नत्तं सिरिगुत्तेण—देव ! को पुण एत्थ सिरए डाहि ? त्ति। आवद्धत्ति कोवुब्भडभिउडिणा य भणियं नराहिवेण—अहं सिरए होहामि त्ति। 'जत्थ राया सयमेव सिरोवड्डावणं कुणइ तत्थ दूरं पेउत्था नयवत्थ' त्ति हैत्थं वाहरंतो नीओ कारणिएहिं देवयामंदिरं। कारांविओ सचेलं ण्हाणं। जैलणविद्दुडामरं वाढं धमावियं फालं। तं च सिरिगुत्तेण उम्मुक्ककेसेण सव्वजणसमक्खं सँचसावणं काऊण पुव्वकालपढियसिद्धदिव्वथंभणमन्तसुमरणपुरस्सरं सायरं करयले तहापेच्छंतस्स धम्माहिगरणियलोयस्स हिमसिलासगलं व ढुवियमक्खेवेण। अचिंतमाहप्पत्तणओ मणिमंताणं न लोममेत्तं पि ज्झामियमेयस्स। तहट्ठियं चेव दिट्ठं करयलं कारणिएहिं। पडिया ताला। 'सुद्धो सुद्धो' त्ति घोसियं बंभणेहिं। पक्खित्ता से सेयसुरहिकुसुममाला कंठदेसे कारणिएहिं। निवेइओ एस वुत्तंतो नरिंदस्स। चमक्किओ य एसो अविभावियसिरयगहपइन्नापगरणेण परिभाविउं पवत्तो य—

दिव्वगहणेण सुद्धम्मि तक्करे सिरिपरिग्गहपवन्नो। डंडिज्जइ पयडं तक्करो व्व मिवकरं रन्ना(?) ॥ १ ॥

सयमेव सिरयपक्खं लोयसमक्खं पवज्जिऊणाहं। जइ अप्पाणं चोरं व अर्प्पणा नो निगिण्हामि ॥ २ ॥

ता सच्चवाइणो राइणो त्ति नूणं इमीए वाणीए। दिज्जउ जलंजली जाव जंयमिणं भमउ य अकित्ती ॥ ३ ॥

१ °कोवभड° प्रतौ ॥ २ प्रोषिता ॥ ३ शीघ्रं व्याहरन् ॥ ४ ज्वलनशृन्दभयङ्करम् ॥ ५ सत्यशापनं कृत्वा पूर्वकालपठितसिद्धदिव्यस्तम्भनमन्त्रस्मरणपुरस्सरम् ॥ ६ °रणलो° प्रतौ ॥ ७ अविभावितशिरोग्रहप्रतिज्ञाप्रकरणेन ॥ ८ °प्पणो नो न गि° प्रतौ ॥ ९ °लंघली प्रतौ ॥ १० जगद् इदम् ॥

परियत्तउ[1] नयवत्ता कलुसउ कलिकालकलिलमखिलजणं। उत्तम-जहन्न-मज्झिममग्गो वि[2] समत्तणं लहउ ॥ ४ ॥
इय किं व जीविएणं देहीणं नयविहीविहीणेण ?। वरमिण्हि नवरि मरणं पच्छा वि अवस्समरियव्वे ॥ ५ ॥

एवं च विणिच्छइयमरणज्झवसाएण सविसेसं सुमरिया देव-गुरुणो, वाहराविया मंतिणो, साहिओ तेसिं नियपाभिप्पातो। विसन्ना मंतिणो, भणिउं पवत्ता य—देव ! न जुत्तमेयं तुम्हाणं सयलमहीमहाभारसमुद्धरणधीराणं, पयागरुयपुन्नपब्भारवसउ[3] च्चिय तुम्हारिसाणमुप्पत्ती, न जहत[ह] संभविणी, ता देव ! अप्पदोसमंगीकाऊण बहुगुणं कज्जं काउं जुज्जइ। एवं च जाव पयंपंता ते चिट्ठंति ताव सणियसणियं पसरिया गरुयमंदिरेसु वत्ता, जहा—देवो अपरिभावियसिरयंगीकारपडिण्णावसओ[4] अप्पणो चोरदंडं काउमुवट्ठिओ त्ति। सुया य एसा वत्ता सत्थवाहेण। ततो अच्चंतमाउलचित्तो तुरियतुरियमागतो एसो रायमंदिरं, पडिहारनिवेइओ[5] पविट्ठो सभामंडवं, कयरायप्पणामो निसन्नो समुचियट्ठाणे। लद्धावसरेण य विन्नत्तमणेण—देव ! अद्धभुत्तेण मए निसामिया असोयव्वा का वि वत्ता, आचंदकालियं विज[य]उ देवो, सयं काउं समीहिए अत्थे य देउ ममाएसं, अहमेव एयस्स अत्थस्स परमत्थओ हेउ त्ति। राइणा भणियं—साहु साहु सत्थाह ! किं भन्नइ तुह पहुभत्तीए ?। महामंतिणा भणियं—सत्थाह ! जं तुमए देवस्स पुत्तसंतियं दुव्विलसियं साहियं तं किं उद्देसमेत्तओ ? पच्चक्खदंसणाओ ? पच्चइयमाणुसकहणाउ[6] व ? त्ति साहेसु अवितहं। सत्थवाहेण भणियं—किं देवपायाणं सव्वभिचारं[7] कयाइ कहिज्जइ ?

१ परित्यज्यताम् ॥ २ अपि समत्वं, विषमत्वं वा ॥ ३ प्रजागुरुकपुण्यप्राग्भारवशतः ॥ ४ अपरिभावितशिरोऽङ्गीकारप्रतिज्ञावशतः ॥ ५ °पडिप्पवेसओ प्रतौ. ॥ ६ प्रत्ययिकमानुषकथनात्। प्रत्ययिकः—विश्वस्तः ७ सव्यभिचारम् ॥

अवि चलइ चलंतुतुंगसिङ्गग्गलग्गामरमिहुणयकीलारामरम्मो सुमेरू ।
अवि मुयइ मयंको हव्ववाहप्पवाहं, किरइ तिमिरपूरं नूण सूरो वि दूरं ॥ १ ॥
अवि सुसइ समुद्दो लोलकल्लोलरोलाउलियमयर-मीणऽक्कंतपेरंतभागो ।
न उण वयणमम्हं ता वियप्पं विमोत्तुं, कुणह जमिह जुत्तं किं खमं वोत्तुमन्नं ? ॥ २ ॥

इमं च तन्निच्छयं सुणिऊण, सुहुमबुद्धीए वीमंसिऊण परोप्परं, जंपियं मंतीहिं—देव ! अवितहवयणो सत्थवाहो ता होयव्वमेत्थ मंताइसामत्थेणं, न अन्नहा एस वइयरो एवं संभवइ, सुव्वंति य मंताइविहिणा दिव्वत्थंभणविहीओ असाहूणं पि, तद्देवयाउ वि कयाइ निरहिट्ठाणा भवंति त्ति, अत एवोच्यते—“दिव्यस्य दिव्या गति”रिति, ता एत्थ विसिट्ठमंतवाइणो समक्खं दिव्वगहणं जुज्जइ त्ति ।

एत्थंतरे पायपणामपुव्वं विन्नत्तं पडिहारेण—देव ! दुवारे कुसलसिद्धी नाम सिद्धमंतो असेसदेसपसिद्धो सिद्धसम्म-पुरोहिएण तुम्ह दंसणत्थं उवणीओ वट्टइ त्ति । रन्ना जंपियं—सिग्घं पवेसेसु । 'तह' त्ति पवेसिओ पडिहारेण एसो, दिन्ना-सीवाओ य चेडंदिन्ननियडासणे आसीणो य, सायरं संभासितो रन्ना । लद्धावसरेहि य पुच्छिओ मंतीहिं—भो सिद्धमंत !

१ °ङ्गगल° प्रतौ । चलद्तुत्तुङ्गशृङ्गाग्रलग्नामरमिथुनककीडारामरम्यः ॥ २ °मिह्नुण° प्रतौ ॥ ३ हव्यवाहः—अग्निः ॥ ४ लोलकल्लोलरोलाकुलितमकरमी-नाक्रान्तपर्यन्तभागः ॥ ५ °यणमीणंकंतपे° प्रतौ ॥ ६ तं निच्छय सु° प्रतौ ॥ ७ श्रूयन्ते ॥ ८ °लघुन्दी प्रतौ ॥ ९ °हियण तुम्ह तुम्ह प्रतौ ॥ १० चेटदत्तनिकटासने ॥ ११ रन्ना° प्रतौ ॥

कत्थ कत्थ तुह परिस्समो ? । तेण भणियं—किं तुम्ह एएण ? [जं] कज्जं तं साहह त्ति । ततो सिट्ठो तेहिं तहाविहसत्थाहसुयगहियफालवुत्तंतो । सम्मं परिभाविय भणियमणेणं—मह समक्खं गेण्हावेह तं सत्थाहसुयं फालं जेण मुणइ जहट्ठियं ति । 'तह' त्ति पडिवन्नं सव्वेहिं । गया य बीयदिणे पुव्वोवइट्ठदिव्वदेवयाभवणं । उवेविट्ठा समुचियट्ठाणेसु नरिंदाइणो । आसीणो एगत्थ कुसलसिद्धी । पगुणीकओ उग्गीरियफारफुलिंगजालो फालो । वाहरिओ सत्थाहपुत्तो, वुत्तो य—अरे ! जइ सच्चं सुद्धसमायारो ता गिण्हसु इमं । पुव्वट्ठिईए पयट्टो एसो तग्गहणत्थं । एत्थंतरे कुसलसिद्धिणा परविज्जाछेयकारिणा मंतेणाभिमंतिऊण अक्खया पक्खित्ता चाउद्दिसिं । तप्पभावेण न जायं दिव्वथंभणं । दड्ढा फालग्गिणा सिरिगुत्तस्स पाणिणो । उच्छलिओ नरवइस्स जयजयारवो । 'जहत्थनामो' त्ति पूइओ कुसलसिद्धी पंचंगप्पसायप्पयाणेण । इयरो निरुद्धो रायपुरिसेहिं । जायं पुरीए परमपमोयभरनिब्भरनच्चंतरामायणं महया रिद्धिसमुदएण वद्धावणं । कयभोयणाइकिच्चो य पमुइयमाणसो आसीणो अत्थाणीमंडवे राया । कयं च मंगलीयमुत्तममुत्ताकलावाइसमप्पणेण सत्थवाहपमुहपहाणजणेण रायसन्निहियलोएण य ।

एत्थंतरे विन्नत्तं रायपुरिसेहिं—देव ! तुम्ह संसयतुलारोवियजीवियस्स को दंडो कीरउ ? त्ति । राइणा भणियं—अक्खयसरीरं चेव तं वरागमेत्थाऽऽणेह त्ति । ततो सो तेहिं उवणीओ रायसभाए विगयजीविउ व्व निरुच्छाहो । संभासिओ राइणा—अरे सत्थवाहसुय ! को एस वइयरो ? त्ति । तेण वुत्तं—देवो जाणइ । राइणा भणियं—तहावि असंखुद्धमणो साहेहि

१ °विट्ठो स° प्रतौ ॥ २ °त्थमेत्थं° प्रतौ ॥ ३ 'पाणी' इत्तौ ॥ ४ परमप्रमोदभरनिर्भरनृत्यद्रामाजनम् ॥ ५ माङ्गलिकम् उत्तममुक्ता- ॥

परमत्थं। 'जं देवो आणवेइ' त्ति पयट्टो सो कहिउं, जहा—पुव्वकाले कालसीहो नामं कउलायरिओ समागओ आसि, समाणसीलत्तणेण य तेण समं मम जाया परममेत्ती, बाढं परिओसिओ य सो मए अणवरयमईरापाणपणामणाइणा, अन्नया तेण देसंतरं वच्चंतेण 'परमोवगारि' त्ति मे दिन्ना दिव्वथंभणाइणो मंता, तम्माहप्पेण य एत्थं मए अप्पा विनडिउ त्ति। मंतिणा भणियं—अरे महापाव! न केवलमप्पा विनडिओ तुमए, देवो वि संसयतुलमारोविओ। सत्थवाहसुएण भणियं—एवमेयं, ता देह आएसं जेण अत्ताणं मत्थघाय-तरुछंवणाइणा वावाएमि त्ति। राइणा जंपियं—सदुकम्मणा वि हणिज्जसि लग्गो। किंच—

एवंविहदूरमकज्जमप्पणा काउमुज्जमंतस्स। जुज्जइ तुज्झ विणासो केवलमाजम्ममेत्तस्स ॥ १ ॥

लज्जिज्जइ सत्थाहस्स होउ ता दाणि दंसणेणं ते। जइ सुचिरजीवियत्थी ता उज्झसु झत्ति मज्झ महिं ॥ २ ॥

एवं च रन्ना तुत्ते किंकरनरेहिं निद्धाडिओ सो रायमंडवाओ, धिक्कारिज्जंतो य नीहरिओ नयरीओ, पयट्टो गंतुमुत्तरावहं। अइक्कंतपुव्वपुहइपालदेसो य वीसंतो कइवयदिणाइं एगत्थ सन्निवेसे, चिंतिउमाढत्तो य—अहो! तेण पावकारिणा कुसल-सिद्धिणा मंतवाइणा कहमहमकारणवेरिणा एवंविहं दुत्थावत्थं उवणीओ? चुक्को नियसुहि-सयण-धणाणं दूरदेसातिहित्तणम-णुपत्तो, ता होही तं किं पि दिणं जत्थ सो सहत्थेण मए हंतव्वो त्ति। एवं च सो सामरिसो गामा-ऽऽगरेसु परिभमंतो गओ

१ °म फुला° प्रतौ। नाम कौलाचार्यः ॥ २ °ओयसि° प्रतौ ॥ ३ मदिरापानार्पणादिना ॥ ४ °त्थम्मए प्रतौ ॥ ५ अत्तणं प्रतौ। आत्मानम् ॥ ६ स्वदुष्कर्मणाऽपि ॥ ७ निर्भाग्यः ॥ ८ अतिक्रान्तपूर्वपृथ्वीपालदेशश्च ॥ ९ भ्रष्टः ॥

गयपुरे। दिट्ठो य तत्थ भवियव्वयावसेण वीहीए उवविट्ठो समीवागयाकुसलो कुसलसिद्धी। ततो अविमरिसियजुत्ताऽजुत्तेण अंतोवियंभंतकोवानलेण अन्नस्स तिक्खग्गखग्गधेणुणा निद्दयं निहओ एसो, गओ य पंचत्तं। सिरिगुत्तो य पलायमाणो पाविओ आरक्खियपुरिसेहिं, बद्धो समप्पिओ कारणियाणं। पुच्छिओ सो विणासकारणं। जहावट्ठियं सिट्ठमणेणं। कारणिएहिं भणियं—जइ एवं तहावि

विज्जंतम्मि नरिंदे नयमग्गवियारणाए हुंतीए। सहसाकरणमजुत्तं सेसं पि हु किं पुण विणासो ? ॥ १ ॥
दोसाण संभवे वि हु अन्नोन्नविणासणं जणेऽणुचियं। सच्छंदं चिय इहरा अमाणुसं जायइ जयं पि ॥ २ ॥
जइ रे ! वेरी तुह एस होइ ता कीस अम्ह न कहेसि ?। सयमेव कुणसि दंडं एवं सइ दोसवंतो सि ॥ ३ ॥
आरोवियम्मि दोसे कारणियनरेहिं सो तओ वज्झो। अहिगारिणा निउत्तो तरुम्मि उल्लंबणविहीए ॥ ४ ॥

अह भयभरपकंपंतकाओ चालिओ आरक्खिगेहिं, नीओ वज्झट्ठाणं, निबद्धा कंठदेसे निट्ठुरा रज्जू। भणिओ य तेहिं—असु रे ! सुदिट्ठं कुणसु जीवलोयं, सुमरसु इट्ठदेवयं, निद्दोसा इह अम्हे, तुह दुव्विलसियाइं चेव एत्थमवरज्झंति त्ति। तओ तं भयथरहरंतदेहं किंकायव्वयवाउलं उल्लंबिऊण साहिसाहाए गया सं ठाणं निउत्तपुरिसा। सो य कढिणकंठपासयसंरुद्धसमीरप्पयारो गलनाडीनिबिडावेढविहडियचक्खुवावारो

१ °पुरि। दि° प्रतौ ॥ २ वीथ्याम् ॥ ३ ततोऽविमृष्टयुक्तायुक्तेन अन्तर्विजृम्भमाणकोपानलेन ॥ ४ नयमार्गविचारणायां भवन्त्याम् ॥ ५ जगद् ॥ ६ असु प्रतौ ॥ ७ एवम° प्रतौ ॥ ८ भयकम्पमानदेहं किंकर्त्तव्यताव्याकुलम् ॥

गयणमिव महीए भूमिवट्ठं व वोमे, दिसिगणमिव चक्के हाविय कप्पयंतो।
अगणियससिजुण्हा-वण्हि-मायंडतेयपसरतिमिरफुरंतं (?) मन्नमाणो व लोयं ॥ १ ॥
कहकह वि महं मुक्कं....पसंपायपीडाविहुरमभिरदेहक्खेवसंतुट्ठयासो (?)।
खरपवणपणुन्नो तालरुक्खो व सक्खा, तयणु निवडिओ सो भूमिवट्ठे [3]विचिट्ठो ॥ २ ॥

अह सिसिरसमीरणवमओ मणागमुवसंतदेहदाहो खणंतरेणोवलद्धचेयणो पच्चुज्जीवियं व अप्पाणं मुणंतो सणियसणियं ममाणपएसाओ पलाणो। 'जइ पुण कोइ अणुमग्गेण लग्गिज्जइ' त्ति पयट्टो पविट्ठो एगत्थ वणनिगुंजे। तहिं च वेणु-वीणाविजइनिनायं कत्तो वि समुच्चरंतं निसामिऊण भयतरलच्छं तरुखंधंतरिओ सव्वतो दिसं पेच्छिउं पवत्तो। दिट्ठो य अणेण एगो सज्झायं कुणंतो महातवस्सी। तं च दट्ठूण चिंतियं भयसंभंतेण अणेण—मन्ने एस कोइ अमुणा केयवेणं इय गहणे वट्टन्तो अम्हारिसाण पलोयणं कुणइ, ता रुक्खंतरिओ चेव सुणामि। 'किं एस पढइ?'—त्ति तस्सवणत्थं निउत्तो सवणो। एत्थंतरे पढियं साहुणा, जहा—

इंदिउद्दामदोघट्टसंघसंघट्टणट्ठिया। पयट्टंति अकिच्चेसु अणुप्पिरत्थमणा जणा ॥ १ ॥
कुणंति जीवसंघायघायमायसुहेसिणो। असंखतिक्खदुक्खोहक्खोहं तत्तोऽणवेक्खिउं ॥ २ ॥

१ भूमिपृष्ठम् ॥ २ °सिमण° प्रतौ ॥ ३ 'विचेष्टः' मूर्च्छितः ॥ ४ कैतवेन ॥ ५ °व मुणा° प्रतौ ॥ ६ इन्द्रियोद्दामहस्तिसङ्घसङ्घट्टनस्थिताः ॥ ७ अन्यस्तमनसः ॥ ८ आत्मसुखैषिणः ॥ ९ °त्तोनवे° प्रतौ ॥

वंछंति भासिउं मिच्छा तुच्छा मेच्छ[1] व बालिसा । दीहं दुट्ठमपेच्छंता जणाओ[2] गंजणं तहा ॥ ३ ॥
रिक्का[3] चोरिक्ककज्जेण सज्जो सज्जंति विक्कमं । न मुणंति णं[4] से भावि बंधणुल्लंबणाइयं ॥ ४ ॥
गिज्झंती य पुरंधीसु रूव-लायन्नमोहिया । विवज्जंति पयंग व पईवग्ग[6]सिहासु य ॥ ५ ॥
खेत्त-धन्न-हिरन्नाइममत्तदढतंतुणा । बंधं[ति] बाढमप्पाणं कोसियार व्व कीडया ॥ ६ ॥
दुव्वार[7]वेरिसंकास[8]चित्तवावारवाउला । किमिकिन्न[9]ंगसाण व निच्चंति न कहिं पि हु ॥ ७ ॥
एवं विरुद्धचेट्ठाहिं अप्पाणं अप्पणा जणा । हणंति ही ! महामोहजोहमाहप्पमेरिसं ॥ ८ ॥

एयं च पढिज्जमाणं निसामिऊण वीमंसिऊण य चिंतियमणेण—अहो ! सुपढियं जहावत्थियत्थपडिबद्धं, ता किं एयस्स समीवे गंतूण पडिवालेमि मुहुत्तमेत्तं ? पुच्छामि य करणिज्जजायं ? धम्मिओ को वि एस संभाविज्जइ एवंविहसुपढणाओ, अहवा सव्वत्थ वि अविस्सासो जुत्तो, विसेसओ अम्हारिसाण पडिकूलविहीणं, ता सिग्घमवक्कमामि एत्तो—त्ति पट्ठिओ मंदमंदमुक्कचरणो एगदिसिविभागेणं । जाव य वणनिउंजमज्झेणं कित्तियं पि भूभागं गओ ताव अत्थमिओ मायंडो । पंसं[10]डिदंडखंडेहिं व संज्झब्भ[11]रायरेहानिवहेहिं मंडिओ गयणमंडवो, उद्दंड[12]तमकंडसंपिंडियं व मउलियं कमलसंडं, सनीडं पडुच्च

१ म्लेच्छाः ॥ २ जनेभ्यः तिरस्कारम् ॥ ३ 'रिक्ताः' स्वच्छन्दाः चौर्यकार्येण ॥ ४ ण न सो भा° प्रतौ न जानन्ति खलु तस्य भावि । अत्र 'ण' इति खल्वर्थे ॥ ५ गृध्यन्ति ॥ ६ °ग्गसुहा° प्रतौ ॥ ७ दुव्वार° प्रतौ ॥ ८ सङ्काशः—समानः ॥ ९ कृमिकीर्णाङ्गश्वाना इव स्थिरीभवन्ति न कुत्रापि हि ॥ १० पसं° प्रतौ ॥ ११ सन्ध्याभ्ररागरेखानिवहैः ॥ १२ उद्दण्डतमःकाण्डसम्पिण्डितमिव मुकुलितम् ॥

उड्डियं कारंडव-भारुंडपमुहपक्खिकुडुंबं, परिपिक्कदाडिमीफलविमरो व किं पि अरुणो पेमरि[ओ र]यणियरो, सुमरियनियनियनिवासाइं नियचाइं दिसिमुहेहिंतो मय-महिम-गय-गवयजूहाइं। ततो चिंतियमणेण—न जुत्तमित्तो गमणं, सपच्चवाओ खु एस प्पएसो। ततो गंभीरसाह-प्पसाहाउलस्स वडविडविणो आरुहिऊण पसुत्तो साहाए। जाव य साहुपढियं परिभावितो अच्छइ ताव जाममेत्ताए गयाए रयणीए समागओ तत्थ वडकोडरे मणुयभासुल्लावकुसलो एगो सुगो। अब्भुट्ठिओ सुगीए, पुट्ठो य—किं एत्तियवेलाविक्खेवकारणं?। तेण भणियं—अच्छरियभूयं भवदुविलसियं साहिउं पि न तीरइ। तीए जंपियं—सव्वहा साहेहि ताव। सुगेण भणियं—सुणसु,

अहं हि अज्ज सरस्सइतरंगिणीतीरे केयॆारफारपरिमलुग्गारकलमकणकवलणमाकंठमणुट्ठिऊण पडिनियत्तंतो एत्तो अदूरतरतरुसण्डमंडणभूयमसोगतरुवरं पत्तो, वीसंतो य तस्स साहाए। दिट्ठो तीए हेट्ठट्ठिओ विजियकलयंठाए भारईए धम्ममाइक्खमाणो एगो समणो एगस्स विज्जाहरजुवाणस्स। संबुद्धो य सो, तस्स धम्मकहाए। पाएसु य भत्तिसारं निवडिऊण पुच्छिओ णेण सो नियपुव्वजम्मो त्ति। जहावट्ठिओ य सिट्ठो सो तेण भगवया। पहिट्ठो विज्जाहरजुवाणो। ततो मज्झ वि जायं परमकोऊहलं। ओयरिऊण तरुसाहाओ पडिओ हं साहुचरणेसु। रत्तासोयपल्लवपडिच्छाएणं य पाणिणा परामुट्ठो हं पट्ठीए साहुणा, पुच्छिओ य—वच्छ! किं कीरउ? त्ति। मए भणियं—भयवं! पसीयसु, साहेसु किं मए पुव्वभवे कयं

१ परिपक्व–॥ २–'प्रसृतः' उदित. 'रजनिकर.' चन्द्रः ॥ ३ °साइज्झिय° प्रतौ ॥ ४–केदारस्फारपरिमलोद्गारकलमकणकवलनं आकण्ठं अनुष्ठाय प्रतिनिवर्तमानः इतोऽदूरतरतरुषण्डमण्डनभूतम् ॥ ५ °पन य-प्रतौ। प्रतिच्छायेन–तुल्येन ॥

जेणेवं तिरियत्तणमणुपत्तो म्हि ?। साहुणा वुत्तं—आयन्नसु,

सावत्थीवत्थव्वो भव्वो तं भवभएण निक्खंतो। घरवासाओ घेत्तुं पवज्जं सुगुरुमूलम्मि ॥ १ ॥
छट्ठ-ऽट्ठमाइनिट्ठुरतवोविसेसं समायमायरिउं। पज्जंते वि हु तदकयपडियारो वंतरो जाओ ॥ २ ॥
तत्तो य चुओ भद्दय! मायादोसेण तेण तिरियत्तं। अणुभवसि संपइ तुमं ता एत्तो कुणसु जं जुत्तं ॥ ३ ॥
तो पुव्वजाइसुमरणरणरणयसमुच्छलंतमुच्छो हं। ठाऊण विवन्नो इव खणमेक्कं जायपडिबोहो ॥ ४ ॥
परिभाविंतो सुत्तं पुव्वं पढियं पि इण्हि पढियं व। संजायभवविरागो तओ मुणिं भणिउमाढत्तो ॥ ५ ॥
भयवं! किमिण्हि कीरइ ? कीरो हं तुम्ह पायसेवाए। दूरमजोग्गो जोग्गो य नेव तह सव्वविरईए ॥ ६ ॥
न य तिरियजीवियव्वे मायमई मज्झ थोयमेत्तं पि। न य तीरइ अकलंको जिणधम्मो काउमिमिणा मि ॥ ७ ॥
ता भयवं! कहसु ममं किं तित्थं सुप्पसत्थमचत्थं ?। उज्झामि जत्थ जीयं सत्थुद्दिट्ठेण विहिणा हं ॥ ८ ॥
मुणिणा सिट्ठं तित्थं न विसिट्ठं पुंडरीयसेलाओ। सिद्धाओ जहिं पुंडरियपमुहसाहूण कोडीओ ॥ ९ ॥
जइ एवं ता भयवं! तित्थे तत्थेव अणसणं काहं। मुणिणा भणियं सिज्झउ निव्विग्घं वंछियं तुज्झ ॥ १० ॥
ता तुज्झ पिए! इह-पारभवियमिच्छुक्कडं अहं देमि। खमियव्वं सव्वं सुयणु! मज्झ थोवं पि अवरद्धं ॥ ११ ॥
एवं च वइयरं से तदेगचित्तो सु[णित्तु सि]रिगुत्तो। तं चिय मुणिउं साहुं सुगमेवं भणिउमाढत्तो ॥ १२ ॥

१ समायं आचर्य ॥ २ तदकृतप्रतीकारः ॥ ३ पूर्वजन्मस्मरणोद्वेगसमुच्छलन्मूर्च्छः अहम्। स्थित्वा विपन्न इव ॥ ४ मय° प्रतौ। मायामतिः ॥ ५ मया ॥

'तिरितो वि तुमं धन्नो कयपुन्नो जेण सो महासाहू । सक्खाऽभिवंदिओ पुच्छिओ य संदेहसंदोहं ॥ १३ ॥
परमेगोऽहमधन्नो दिट्ठो वि स दुट्ठबुद्धिणा जेण । नो वंदिओ न पुट्ठो तहसज्झायं कुणंतो वि ॥ १४ ॥
हा पावजीव ! अज्ज वि जवियव्वो अइचिरं तए अप्पा । चिंतामणि व स मुणी जेमवन्नानिब्भरं दिट्ठो ॥ १५ ॥
वोक्कंतवत्थुपरिसोयणेण किं वाऽमुणा ? मुणिज्ज तुमं । सयमुणियकज्जतत्तो ता कह जं मज्झ करणिज्जं ? ॥ १६ ॥
देव-गुरु-धम्मतत्ताइं तयणु सवं सुगेण से कहियं । सत्थसवणे य जैत्तो उवइट्ठो इट्ठसिद्धिकरो ॥ १७ ॥
कयखामणो य तेसिं सुगो गओ वंछियत्थकरणाय । सिरिगुत्तो वि दुहट्टो तओ पयट्टो पहे गंतुं ॥ १८ ॥

सो य महीधरसत्थवाहो सनिकारनगरनिवासियसुयसंतावेण सगिहे ठाउमपारयंतो अत्थोवज्जणकईयवेण नीहरिओ उत्तरदिसाभिमुहं । अन्नया गाम-नगराइसु सिरिगुत्तसुद्धिं कुणंतो कम्म-धम्मसंजोएण गयउरमइक्कम्म केत्तियभूभागे दिन्नावासो जाव चिट्ठइ ताव सिरिगुत्तो ततो तरुगहणाओ अइंतो संपत्तो तं पएसं । पच्चभिन्नाओ सत्थाहेण, उवगूहिओ सिणेहसारं, सायरमापुच्छिओ परिभमणवुत्तंतं । सिट्ठो य जहट्ठिओ नयरीनिग्गमाओ कीरदंसणावसाणोऽणेण निययइयरो । तं च सोच्चा अंसुयपूरपूरिज्जंतलोयणेण सदुक्खावेगगग्गरसरं भणियं सत्थाहेण—पुत्त ! को इमो कालो अम्ह अत्थोवज्जणस्स ? केवलं तुह पवासाणंतरमेव समुप्पन्नदेहदाहो तुमं चेव पलोइउं गिहाओ निग्गओ म्हि, ता पुत्त ! सुंदरं जायं जं तुमं दिट्ठो

१ तिर्यगपि ॥ २ यद् अवज्ञानिर्भरं दृष्टः ॥ ३ °रिमोय° प्रतौ । व्युत्क्रान्तवस्तुपरिशोचनेन ॥ ४ स्वयंज्ञातकार्यतत्त्वः ॥ ५ यत्नः ॥ ६ सनिकारनगरनिर्वासितसुतसन्तापेन । निकार.—तिरस्कारः ॥ ७ °इययवे° प्रतौ । —कैतवेन ॥ ८ अश्रुपूरपूर्यमाणलोचनेन सदुःखावेगगद्गदस्वरम् ॥

सि, इण्हिं पि तह कहंचि वट्टसु जह परमगुनइगुवेइ पुव्वपुरिसकमो, पसरइ सरयससहरुज्जला कित्ती, सामलीभवंति खलयणाण वयणाइं, हवसि पढमो सप्पुरिसाणं ति। सिरिगुत्तेण जंपियं—किं बहुणा भणिएण ?

अणुमुंचामि[1] समग्गं दुन्नयमग्गं पवड्ढियवियारं। जं सिक्खाए लग्गइ अणग्गलं पि हु मणो मग्गे ॥ १ ॥

तम्हा न कायव्वो ताय ! मइ अविस्सासो त्ति। ततो जहतह पुव्वाणीयपणियविक्कयं[2] काऊण सनयरीहुत्तं नियत्तो सत्थाहो। महरिहपाहुडपुव्वयं दिट्ठो राया, [कहिया य] सिरिगुत्तवत्ता। पवेसितो य सो राइणा महाविभूईए।

अह सिरिगुत्तो जिणधम्मकम्मकरणेक्कबद्धपडिवंधो। पुरिसत्थेसु पयट्टो तह जह किंत्तिं परं पत्तो ॥ १ ॥

अप्पुव्वापुव्वं[3] समयसत्थमणवरयमेव य सुणंतो। वेरग्गावडियमई[4] परिभाविंतो तयत्थं च ॥ २ ॥

सत्तीए अणुरूवं बारस वि वयाइं फासमाणो य। सुगमेव संभरंतो कालं वोलेई[5] स महप्पा ॥ ३ ॥

अवरवासरे य रयणीए पढमपओसे कयचिईवंदणस्स सामाइयट्ठियस्स सिरिगुत्तस्स समुज्जोइयदिसिमंडलो नियरूयविणिज्जियाखंडलो समागओ एगो देवो। कयसायरपणामो य पुच्छिउं पवत्तो—भो सिरिगुत्त ! अवि निव्वहइ बाहाविरहियं हियाणुट्ठाणं ?। सिरिगुत्तेण भणियं—बाढं निव्वहइ देव-गुरुपसाएण, सविसेसं च सुगाणुभावाओ। देवेण जंपियं—को पुण सो सुगो ?। ततो सिरिगुत्तेण सिट्ठो तदुवयारवुत्तंतो। 'अविस्सुमरिओवयारो[6] महाणुभावो[7]' त्ति परितुट्ठो तियसो

१ अनुमुञ्चामि समग्रं दुर्नयमार्गं प्रवर्धितविकारम्। यत् शिक्षया लगति अनर्गलं अपि हि मनो मार्गे ॥ २ पूर्वानीतपण्यविक्रयं कृत्वा स्वनगर्यभिमुखं निवृत्तः सार्थवाहः ॥ ३ अपुव्वा° प्रतौ ॥ ४ वैराग्यापतितमतिः ॥ ५ अतिवाहयतीत्यर्थः ॥ ६ अविस्मृतोपकारः ॥ ७ मभाणु° प्रतौ ॥

भणइ—सिरिगुत्त ! परियाणसि तं सुगं ? । सिरिगुत्तेण भणियं—कहासेसभूयस्स कत्तो तस्स परियाणणं ? । तओ सिट्ठं देवेण, जहा—सो अहं सुगो पुंडरियगिरिकयाणसणो सणंकुमारे कप्पे देवत्तणेण उववन्नो; संपयं च तुह समीवे धम्मथिरीकरणत्थं पओयणंतरकहणत्थं च आगओ म्हि । सिरिगुत्तेण भणियं—सम्मं कयं, पसायं काऊण साहेसु पओयणंतरं । देवेण भणियं—इओ दिणाओ सत्तमे दिवसे तुह जीवियंतो होही, ता सम्मं धम्ममाराहेज्जसु—त्ति संसिऊण तेण बाढमभिनंदिज्जमाणो सड्ढाणं गओ तियसो ।

सिरिगुत्तो वि तस्स वयणाणंतरमेव [कय]जिणाययणपूयामहिमो पूजियसंघो खामियसव्वसत्तो दिवणाणिणो विजयसूरिणो समीवे संथारयदिक्खं पवज्जिय कयाणसणो पंचनमोक्कारपरो मरिऊण दिवं ग[उ] त्ति । पत्थावे य नयरीजणेण पुच्छिओ सूरी—भयवं ! अच्चंतनिद्धंधससमायारो वि भविय सिरिगुत्तो कहमेवंविहविसुद्धविवेयजुत्तो संवुत्तो ? । सूरिणा भणियं—सत्थसवणं एवंगुणजणगं ति, तुम्हाण वि एत्थ उज्जमो जुत्तो त्ति । किंच—

सदसदिति विवेका[त्] त्यक्तशङ्काकलङ्कोऽशुभकरमिह वस्तु प्रक्रमेत प्रहर्तुम् ।
स च भवति विवेकः शास्त्रशुश्रूषयैव, श्रमविरहितचित्तस्तेन तस्यां यतेत ॥ १ ॥
स्वयमपगतबोधः प्राणिवर्गः समग्रः, कलिकलिलवशाद् वाऽतीन्द्रियज्ञो न कश्चित् ।
यदि जिनमतमेतत् सूर्यवन्नाभविष्यत्, किमिव हि न तदानीं दौस्थ्यमाप्स्यज्जनोऽयम् ? ॥ २ ॥

शास्त्रश्रवण-फलं सदुपदेशाश्च

१ प्रयोजनान्तरम् ॥ २ सम्मं प्रतौ ॥ ३ °लङ्कः, शुभं प्रतौ ॥

शिवपथरथकल्पं ध्वस्तकद्वादि[1]जल्पं, निरुपहति च नेत्रं धीमहोद्यानचैत्रम्।
स्मररिपुजयशस्त्रं श्रीजिनो[2]द्दिष्टशास्त्रं, भवभयमपहन्तुं[3] नाप्नुयात् कोऽधिगन्तुम्? ॥ ३ ॥
इतीहमानैर्मनुजैः समृद्धिं, गुणावलीनां च सदाऽभिवृद्धिम्।
जिनेन्द्रशास्त्रश्रवणाभियोगः, कार्यो निरस्ताखिलदुःखयोगः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे शास्त्रश्रवणाधिकारे श्रीगुप्तकथानकं समाप्तम् ॥ १५ ॥

सिद्धंतसत्थसवणुब्भवंतनिम्मलविवेयपंडिहत्था[4]। अब्भुच्छहंति दाणे ता तव्विहिमिण्हि वोच्छामि ॥ १ ॥
पढममिह नाणदाणं बीयं अभयप्पयाणमक्खायं। धम्मोवग्गहहेउं तइयमुवट्ठंभदाणं ति ॥ २ ॥
नाणं चिय स-परसरूवपयडणे नूण पायड[5]पभावं। ता तद्दाणे चिय पढममुज्जमो जुज्जए काउं ॥ ३ ॥
दिन्नेणऽमुणा जीवो विन्नाया[6] होइ बंध-मोक्खाणं। पुन्नाणं पावाण य तदुं[7]चियकिच्चाणुरागी य ॥ ४ ॥
पावपरिहारपरमो पुन्नोवज्जणसमुज्जओ य भवे। इह-परलोए य सुही नाणपयाणप्पसाएण ॥ ५ ॥
दाणाणं सेसाणं कत्तो वि कहिंचि दीसइ विणासो। दिज्जंतस्स वि निच्चं वुड्ढि चिय नाणदाणस्स ॥ ६ ॥

---

१ कुत्सिता वादिनः कद्वादिनः—दुर्वादिन इत्यर्थः ॥ २ श्रीजनो° प्रतौ ॥ ३ °न्तुं प्राप्नुयात् कोधेग° प्रतौ ॥ ४ सिद्धान्तशास्त्रश्रवणोद्भवन्निर्मल-विवेकपूर्णाः। अभ्युत्सहन्ते ॥ ५ °पडह° प्रतौ ॥ ६ विज्ञाता ॥ ७ °दुच्चिय° प्रतौ ॥

॥ ७ ॥

दितेण नाणदाणं नूणमदिन्नं न किं पि जियलोए । एत्तो य नोवयारो पवरो विज्जइ जए अन्नो ॥ ८ ॥ किंच—

तं पुण पढणत्थमुवट्ठियाण अणुकूलकरणओ नेयं । पेढियमहत्थ[य]पोत्थयवायण-वक्खाणमाईहिं ॥ ९ ॥

नाणंमदिंतो वि सयं मेसह-वत्थ-ऽन्नपमुहमुवणिंतो । पढमाणाण परेसिं परमत्थेणेस तद्दाया ॥ १० ॥

किं जंपिएण बहुणा ? नाणपयाणेण केवलालोयं । लहिऊण पावइ सिवं धणदत्तो एत्थुदाहरणं ॥ ११ ॥

तहाहि—अत्थि मगहाजणवयावयंसनिव्विसेसं, सेसाहिफारफणारयणजालं व परेसिमलंघणिज्जं, सुरपुरपरिसरं पिव दीसंतगुरुबुहजणं, जणियसयललोयाणुरायं रायगिहं नाम नयरं । तत्थ य हइहयकुलनहयलमयंको निहयवयरि[वहू]विहियायंको भुवण[जण]जणियाणंदो जयचंदो नाम राया । निरुवचरियसिणेहभूमी कमल व कण्हस्स कमलावई नाम से भारिया । ताणं कलाकलावपत्तट्ठा सोडीरयाइगुणविसिट्ठा दुवे पुत्ता—विजयचंदो चंदसेणो य । ते य एगोदरसंभूया वि केणइ कम्मदोसेण अवरोप्परं सामरिसा असहणा य आहोपुरिसत्तणेण वट्टन्ता दिणाइं वोलेंति ।

अवरवासरे य राइणो अत्थाणीनिसन्नस्स रायपुत्त-मंति-सामंताइपहाणलोयस्स य समुचियट्ठाणेनिविट्ठस्स विन्नत्तं पडिहारेण—देव ! अणवच्छिन्नदीहद्धलंघणपरिस्संता लेहहत्था दुवे पुरिसा तुरियं देवदंसणमभिलसंति त्ति । राइणा भणियं—

१ विद्यते जगति ॥ २ पठितमहार्घकपुस्तकवाचनव्याख्यानादिभिः ॥ ३ °णमिदंतो प्रतौ ॥ ४ °माताण प्रतौ ॥ ५ 'परेषां' अन्येषां शत्रूणां च ॥ ६ °रयभुज° प्रतौ ॥ ७ हैहयकुलनभस्तलमृगाङ्कः निहतवैरि[वधू]विहितातङ्कः ॥ ८ 'आहोपुरुषत्वेन' अभिमानितयेत्यर्थः ॥ ९ °ट्टन्ता दिणाइ प्रतौ ॥ १० °इणा अ° प्रतौ ॥ ११ °सम्मस्स प्रतौ ॥ १२ °णनिवट्ठ° प्रतौ ॥

सिग्घं पवेसेह । पवेसिया ते अणेणं, ओपडिया रन्नो चलणेसु, खित्तो लेहो । सयमेव वाइओ नरिंदेण, जहा—

स्वस्ति । मागधवसुधासुधाधामानं श्रीजयचन्द्रं महानरेन्द्रं सुरतरङ्गिणीपरिसरवसुन्धराधिपत्यनियुक्तः सदाऽऽदेशकारी कुरुदेवः पञ्चाङ्गप्रणिपातपुरःसरं प्रणम्य विज्ञपयति । यथा—कुशलं देवपादानुस्मरणात् । केवलं 'शैवलनामा सीमालमेदिनीपालः प्रतिहतसमीपग्रामो देवदेशमुपद्रवति' इति श्रुत्वा देव एव प्रमाणमिति ॥

एवं च वाइऊणं राया पसरंतकोवपब्भारो । अरुणनयणप्पहाहिं अकालसंज्झं व दावितो ॥ १ ॥

रे रे ! पेच्छह पेच्छह पसुत्तकेसरिसिरग्गकंडुयणं । सेवालो वालो इव कह काउमुवट्ठिओ दुट्ठो ? ॥ २ ॥

पउरकरि-तुरय-रहवर-वीरुब्भडमिलियसयलमहिवालं[2] । बहिया[3] ट्ठावह सेन्नं इइ भासंतो ससंरंभं ॥ ३ ॥

विन्नत्तो कुमरेहिं देव ! किमेवं समुव्वहह कोवं ? । जलसंगमदुल्ललिए[4] को सेवाले वि संरंभो ? ॥ ४ ॥

देहाऽऽएसं अम्हं जह तद्दप्पं अणप्पमवि दलिमो । को सेवगे वि संते पहुस्स सयमेव वावारो ? ॥ ५ ॥

एवं कुमरगिरं निसामिऊण राइणा पक्खित्ता मंतीसु दिट्ठी । इंगियागारकुसलेहिं तेहिं वुत्तं—देव ! साहु विन्नत्तं रायपुत्तेहिं, को अन्नो एवं पत्थावाणुरूवं वोत्तुं जाणइ ? त्ति । तओ राइणा दिन्नो आएसो जेट्ठस्स विजयचंदरायपुत्तस्स त्ति । तओ कुविओ चंदसेणो दंसियनिडालभिउडिभंगो रायसभाहिंतो नीहरिउमारद्धो । जाओ सभाखोहो । नियत्ताविओ य

१ अप° प्रतौ ॥ २ प्रचुरकरि-तुरग-रथवर-वीरोद्भटमीलितसकलमहीपालम् ॥ ३ पट्ठिया ट्ठावण सेन्नं प्रतौ ॥ ४ सेवालपक्षे जलस्य–पानीयस्य सङ्गमेन दुर्ललिते, राजपक्षे तु जडानां–जडबुद्धीनां सङ्गमेनेति ॥

रन्ना कइ कइ वि, भणिओ य—वच्छ ! किमेवं कुप्पसि ? किं न याणासि तुमं लोगट्ठिइं ?—

जेट्ठम्मि गुणविसिट्ठे न कणिट्ठुट्ठावणं हवइ जुत्तं । एगोयरे वि भाइम्मि वच्छ ! मच्छरियमच्छरियं ॥ १ ॥

केत्तियमेत्तं एयं ? रज्जं पि न दिज्जमाणमिच्छंति । पिउनिव्विसेसबुद्धीए जेट्ठभायम्मि विज्जंते ॥ २ ॥ किंच—

वोक्कंतक्कमसम्माणणं पि अन्नमाणमेव मन्नंति । सप्पुरिसा इयरे पुण जहतह तं चेव वंछंति ॥ ३ ॥

नयमग्गतुलारूढा वि नायमुज्झंति कह वि जइ पुरिसा । ता दूरमवक्कंता पुत्तय ! खेत्तस्स वत्ता वि ॥ ४ ॥

एवं पन्नविओ वि नोवसंतो रायपुत्तो । तओ रायवयणेण भणिओ मंतीहिं—रायपुत्त ! कीस देववयणं पडिकूलेसि ? कीस वा सव्वत्थ वित्थरंतं 'अविणीउ' त्ति अवजसपंसुं न पसमेसि? 'निम्मलजसप्पहाणं हि जीवियं सलहंति' त्ति किं न याणइ रायपुत्तो ? त्ति । इच्चाइभूरिवयणपहाणिवहाणुसासिज्जमाणो नायमग्गं पवन्नो चंदसेणो । इयरो वि चउरंगबलसणाहो सेवलनरिंदं पडुच्च गंतुं पयट्टो, कमेण य पत्तो सदेससीमासंधिं । समाहूया य तद्देसवत्तिणो सामंताइणो । भणाविओ दूयवयणेण सेवलराया, जहा—

अजहाबलमारंभो हि दूसणं भूसणं अओ पणई । ता अप्पाणं परिभाविऊण भो ! कुणसु जं जुत्तं ॥ १ ॥

१ पितृनिर्विशेषबुद्ध्या ज्येष्ठभ्रातरि विद्यमाने ॥ २ °तक्कमस° प्रतौ । व्युत्क्रान्तक्रमसम्माननम् ॥ ३ न्यायम् ॥ ४ क्षात्रस्य वार्त्ताऽपि ॥ ५ °त्थरंतम-वणीउ प्रतौ ॥ ६ °हामिव° प्रतौ । –प्रथानिवहानुशिष्यमाणः न्यायमार्गम् ॥ ७ प्रणतिः ॥

तेणं पयंपियं जुज्झभीरु[1]णो उग्गिरंति नयमग्गं । दोघट्ट[2]घडब्भिडणे हरिणो को [3]नीइपहदंसी ? ॥ २ ॥
ता होसु समरसज्जो दंसेसु नियं च विक्कमुक्करिसं । अजहाबलिचमियरं व साहिही समरमेव धुवं ॥ ३ ॥

एवं भणिए निग्गओ दूओ । निवेइओ य एस वुत्तंतो तेण रायपुत्तस्स । ततो दवावियं पयाणयं । परोप्परथेवन्तरसणुपत्ताइं दो वि बलाइं । तो अंगीकय[4]खत्तसमायाराणि पहुकज्जबहुमन्नियपहरणपहाराणि समुच्छलियतुमुलतूररवपणस्संतकायराणि कुंत[5]ग्गघायघुम्मंतकुंजराणि निट्ठुरमोग्गरपहारजज्जरिज्जंतरहवराणि निवडंतछत्त-धय-चिंधरउद्दाणि उभयपक्खपहीयमाणसूराणि सुचिरं ताइं जुज्झिउं पवत्ताइं ति । अह भवियव्वयावसेण पराजियं विजयचंदसेन्नं, पलाणं च जं जहा तं तह त्ति । विजयचंदो वि मंतीहिं कह कह वि अणि[6]च्छंतो नियत्तिओ समरंगणाओ ।

सुओ य एस वइयरो राइणा, आणाविओ विजयचंदो, पारद्धं सयमेव गमणं । एत्थंतरे उट्ठिओ चंदसेणो—रायं ! पुव्वं पि अहं तुब्भेहिं वारिओ ता इण्हिं न किं पि वत्तव्वं, देह ममाएसं ति । मंतीहिं जंपियं—देव ! रा[य]पुत्तो पुव्विं महाकट्ठेण पडिसिद्धो ता संपयं अजुत्तो रायपुत्तपणयभंगो, सविसेसकरि-तुरय-रह-जोहसमप्पणेण पगुणीकाऊण विसज्जह इमं ति । पडिवन्नं रन्ना, दिन्नो चंदसेणस्स आएसो । भाउणो अब्भहियं करि-तुरगाईअं गिण्हिऊण नीहरिओ एसो । अक्खलियप-

१ °रुणा उ° प्रतौ ॥ २ हस्तिघटासम्मुखगमने ॥ ३ नेइप° प्रतौ । नीतिमार्गदर्शी ॥ ४ अङ्गीकृतक्षात्रसमाचारे प्रभुकार्यबहुमानितप्रहरणप्रहारे समुच्छलिततुमुलतूररवप्रणश्यत्कातरे कुन्ताग्रघातघूर्ण्यमानकुञ्जरे निष्ठुरमुद्गरप्रहारजर्जर्यमाणरथवरे निपतच्छत्रध्वजचिह्नरौद्रे उभयपक्षप्रहीयमाणशूरे ॥ ५ °तयरघा° प्रतौ ॥ ६ °इ अगि° प्रतौ ॥

याणगेहिं पत्तो सेवलराइणो सीमभूमिं। भणियव्वविसेसं सिक्खविऊण पेसिओ दूओ सेवलराइणो। भणिओ से तेण, जहा—
जइ कह वि दिव्वदुविलसिएण सारंगसंगरे वि हरी। भग्गक्कमो निलुंको किमित्तिएण चि स तज्जेओ ? ॥ १ ॥
जइ कह वि जेरदपन्नगफणाकडप्पुं[3]फिडंतचंचुपुडो। पडिभग्गो गरुडो एत्तिए वि किं विजंइणो नागा ? ॥ २ ॥
जइ जेट्ठभाउगो मह पैमायवं कह वि निज्जिओ तुमए। ता विजइणमप्पाणं मुणिउं मा होसु वीसत्थो ॥ ३ ॥
जैलहंतवस्स वि हुयवहस्स गोतुब्भवेण कुलवइरं। दड्ढोयहिसलिलेणं चुब्भइ वडवग्गिणा पेच्छ ॥ ४ ॥
ता उज्झिउं पमायं संपइ तं होसु सैमरपरिहच्छो। छलणाए निज्जिओ हं ति मा वैएज्जासि जणपुरओ ॥ ५ ॥
अह सेवलेण भणियं भो दूय! निरग्गला तुहं पहुणो। जहतह जंपंति किमित्थ जुज्जए भासिउं मज्झ ? ॥६॥
एए निद्दोस चिय सदोसवं केवलं महीनाहो। एयाण पिया जो एरिसे वि समरम्मि पेसेइ ॥ ७ ॥
दुस्सिक्खिय [त्ति] बहुजंपिर त्ति अच्चंतदुव्विणीय त्ति। पेसणमिसेण मन्ने इय सिक्खविउं स पेसेइ ॥ ८ ॥
ता जाहि दूय! पडिभणसु नियपहुं सिसुजओ हि मह हीला। तुह पुण पिउणा सद्धिं जुज्झं पि हु जुज्जए काउं ॥९॥
एवं निसामिऊण निग्गओ दूओ, पत्तो राय[सुय]समीवं। निवेइओ सव्वो वदुल्लाववुत्तंतो। तं चाऽऽयण्णिऊण चंदसेणो विभाविउं पयत्तो—अहो! अजुत्तो एसो अपरिभावियसमुल्लावो, पेच्छ, सत्तुणा वि होऊण सुपसन्नं समुचियं जंपियमणेण,

१ निलीनः ॥ २ जरठपन्नगफणासमूहोत्स्फिटच्चञ्चुपुटः ॥ ३ °प्फुफिडं° प्रतौ ॥ ४ विजयिनः ॥ ५ प्रमादवान् ॥ ६ जलहन्तव्यस्यापि हुतवहस्य गोत्रोद्भवेन कुलवैरम्। दग्धोदधिसलिलेन उह्यते वडवाग्निना पश्य ॥ ७ समरनिपुणः ॥ ८ वदिष्यसि ॥

सत्यमुच्यते "शत्रोरपि गुणा ग्राह्याः" इति वचः, ता बाढं दूयवयणेण अजुत्तमत्तणो उक्करिसपयडणं कयं मए, अप्पपसंसा हि परमं लज्जणं सुकुलुग्गयाण, जओ—

जंपंति थोयथोयं कज्जं च कुणंति भूरिवित्थारं । विवुहजणविम्हयकरो गरुयाणं को वि वावारो ॥ १ ॥
अम्हारिसा उ मुद्धा अतहाविहकज्जकरणदच्छा वि । अप्पाणमप्पण च्चिय विहलमणा कह विकत्थिंति ? ॥ २ ॥

ता सत्तू वि सेवलराया मे गुणवं पडिहाइ, अओ न जहतह जोहणिज्जो त्ति, अविभाविय कयं हि विसं पि विसेसेइ कज्जं ति । ठिओ एगंते रायपुत्तो, वाहराविया मंतिणो, सिट्ठो सव्वो वि तेसिं नियमाभिप्पाओ। वीमंसिओ मंतीहिं, भणियं च तेहिं—रायपुत्त ! जहा तुमं भणसि तहा सच्चमेयं, ता पेसिज्जंतु अच्चंतपच्चइया पच्छन्नचरपुरिसा, मुणंतु ते तस्स राइणो करि-तुरगाइसामग्गिं, लक्खंतु तयणुरत्त-विरत्तसामंतवग्गं, जाणंतु जाणा-ऽऽसणाणमवसरं, तक्कहणाणुसारेण य वावारिज्जंतु साम-भेयाइणो जहाणुरूवं नयमग्गा, मग्गिज्जंतु य नीसार-पवेसपाउग्गा जल-दुग्गाईमंतो पहविसेस त्ति । पडिवन्नं रायपुत्तेण । पेसिया य गूढचारपुरिसा कयविविहपासंडिनेवच्छा तव्वइयरोवलंभणत्थं ति । ताण य एगो सामवेयपाढित्तणेण पवन्नो रायपुरोहियं, अवरो मंतवाइरूवेण अणुपविट्ठो संधिविग्गहियं, इयरो वि नेमित्तिगत्तणेण लीणो महामंतिणो, अन्नो वि जोतिसियभावेण अब्भुवगओ राइणो मूलं। एवं ते चउरो वि गूढचरा नियनियविज्जासु पत्तट्ठा कयकरणा समयाणुरूवभासिणो आगारिंगियाइवेइणो निउणेणावि अमुणिज्जमाणमज्झा तह कह वि निय[निय]वावारेसु पयट्टा जह कमागय व्व थोवदिणेहिं

१ स्तोकस्तोकम् ॥ २ तदनुरक्तविरक्त-॥ ३ ° इजंतो प्रतौ ॥ ४ तद्व्यतिकरोपलम्भार्थम् ॥

पि अब्भंतरीभूया रायाईणं ति । संचारिंति य गूढचरेहिं पइदिणवित्तं जहावित्तं रायसुयचंदसेणस्स । एवं वच्चंति वासरा ।

भणितो य मंतीहिं रायसुओ—अप्पणो परस्स य बलतुलयं काऊण विसेसवाव[रा]रंभो जुज्जइ, ता जावऽज्ज वि सविसेसुज्जमसमओ न जायइ ताव सेवलराइणो बहियादेसुवद्दवो कीरइ, एवं हि उँवद्दविज्जंतदेसभोइणो सामंताइणो तुम्ह सेवं पवज्जंति, एवं पि सत्तुणो अवयरियं हवइ । ततो रायसुएण सिग्घवेगतुरंगवग्गपेसणेण तग्गाम-नगराइणो लूंडिउं पारद्धा । नियदेसोवद्दवं सोचा कुद्धो सेवलराया, पउणीकयं चाउरंगं बलं, वाहराविया जोइसिया, गणावियं विजयजत्ताजोगं लग्गं, खित्ता आगंतुगजोइसियम्मि दिट्ठी । तेण भणियं—देव ! पंत्तियजणदिन्ने लग्गे कहं 'सदोसं' ति भन्नइ ? । राइणा भणियं—कहसु जहट्ठियं । तेण जंपियं—जइ देव ! मं पुच्छह ता न जुत्ता विजयजत्ता, लग्गबलेण इहट्ठियाणं चेव तुब्भं विजयं पेच्छामि । सेसजोइसिएहिं भणियं—देसे लूंडिज्जंते कहं विजओ ? । इयरेण भणियं—पडिवालह पंच दिणाइं जइ न पच्चओ । 'एवं' ति पडिवन्नं रन्ना ।

चारजोइसिएण वि तक्खणं चिय गुत्तपुरिसमुहेण कहावियं चंदसेणस्स, जहा—कवडकलहं काऊण मुंणानियकज्जपरमत्था कइयवि वइरसीहपमुहसामंता सेवलरायं पइ पडावेयव्वा, सेंनिकारं च खंधावाराओ निव्वासणिज्जा य त्ति । तहेव अणुट्ठियं रायसुएण । तेहिं वि वइरसीहपमुहसामंतेहिं सामिभत्ति परमसुवहंतेहिं 'तह' त्ति कज्जमवबुज्झिय पहाणपुरिसपे-

१ मूढ° प्रतौ । गूढचरैः प्रतिदिनवृत्तं यथावृत्तम् ॥ २ सविशेषोद्यमसमयः ॥ ३ उपद्रूयमाणदेशभोगिनः ॥ ४ अपकृतम् ॥ ५ लुण्टितुम् ॥ ६ पत्तिय° प्रतौ । प्रत्ययितजनदत्ते ॥ ७ लुण्ठ्यमाने ८ ॥ ज्ञापितकार्यपरमार्थाः कतिचिदपि ॥ ९ °इरिसी° प्रतौ ॥ १० सापमानं च ॥ ११ °भत्तपर° प्रतौ ॥

सणेण भणावितो सेवलनरिंदो—अम्हे तुह पायसेवं काउमिच्छामो अणेण डिंभराइणा संताविय त्ति। ततो राइणा वाहरावितो संधिविग्गहिओ, भणिओ य—अरे! केरिसा इमे पडिवक्खसामंता? कहिओ य तुह चारपुरिसेहिं कोइ तब्वावारो?। तेण भणियं—देव! आगमिस्सा अज्ज अम्ह चाराहिगारनिउत्तपुरिसा, तत्तो तेहिं विणिच्छिऊण साहिस्सं। विसज्जिओ सो गओ सं ट्ठाणं। सो य किर संधिविग्गहिओ तेण वेरिचरेण ठगिओ मंतसामत्थेण दिट्ठं सुयं च सव्वं तस्स साहइ त्ति। आगयमित्तेण कहिओ से रायवुत्तंतो। तेण वि जाणियकज्जमज्झेण भणियं—संधिविग्गहिय! जइ ते वइरसीहा[1]यणो सामंता रन्नो सेवगत्तं पवज्जिस्संति ताव चंदसेणो वि सेवं पवन्नो त्ति वत्तव्वं, तव्विरहेण तहाविहसेवगाभावाओ।

एत्थंतरे आगया चारपुरिसा, निवेइओ य तेहिं परबलवुत्तंतो। दंसिया ते रन्नो। तेहिं सिट्ठं—देव! वइरसीहाइणो[2] सामंता अच्चंतं निट्ठुरवयणेण तज्जिया चंदसेणेणं 'न मह सेन्ने अच्छियव्वं' ति, 'निद्धाडिया य' इति पडहेहिं उग्घोसिज्जइ। राइणा भणियं—ता संधिविग्गहिय! किमिह जुत्तं?। तेण वुत्तं—देव! दढं सम्माणजोग्गा ते तुम्हाणं, तद्दारोवल[3]द्धपरपक्खसरूवणायसुलहो परविजओ त्ति। ततो आणाविया ते सामंता, सम्माणिया य पसायदाणेणं। तेण य चरनेमित्तिएण अच्चंतं चिंता-मुट्ठि-नट्ठाइकहणेणं रंजिओ अमच्चो। तेणावि एगंते दंसितो सो राइणो। तेणावि पुच्छिओ—कहसु नेमित्तिय! केरिसं अम्ह बलाबल–न्ति। तेण भणियं—देव! थिरं लग्गं इहट्ठियाण चेव कज्जसिद्धिं साहेइ। ततो 'जोइसियवयणसंवाइ' त्ति पूइओ सो रन्ना। सिट्ठा[4] य मंतिणो—सपच्चओ जोइसिओ एसो त्ति। तेण वि पुरोहिएण जंयाहियसे[5]-

१ वञ्चितः ॥ २ °हासणो प्रतौ। वैरसिंहादयः ॥ ३ तद्वारोपलब्धपरपक्षस्वरूपज्ञातसुलभः ॥ ४ सिट्ठो य प्रतौ ॥ ५ जयाहृतसैन्यव्याधिविशेषेण ॥

न्नवाहिविसेसेण सो सामवेयपाढी पउत्तो संतिहोमट्ठाणे। तेणं य आहिचारिगमंतेहिं पारद्धो होमविही। तव्वसेण य जाया करि-तुरग-लोगाईणं अणेगे रोगविसेसा। एवं च निप्पच्चूहेण चंदसेणेण उवसाहिओ तद्देसो, वसीकया य केई सामंता। अवरम्मि य वासरे तेहिं गूढचरेहिं कहावियं चंदसेणस्स, जहा—अवसरो समरस्स त्ति। ततो चाउरंगिणीए सेणाए तेणाऽऽगंतूण पडिरुद्धो सेवलराया। पयट्टाइं परोप्परं दोन्नि वि बलाइं पहरिउं ति। उच्छा[हि]ओ य सेवलराया वइर-सीहाइसामंतेहिं—देवं! पच्छा होह तुब्भे, केत्तियमेत्तो एस डिंभो?–त्ति जंपिऊण पारद्धं परेहिं सह पहरिउं ताव जाव चंदसेणो समीवमुवागओ। एत्थंतरे वइरसीहाइबलेण चंदसेणबलेण य दोहिं वि अब्भिंतरे घेत्तूण सेवलनरिंदो अण-वरयमुक्कसेल-भल्लि-नाराय-खुरुप्पपमुहपहरणेहिं सव्वत्तो पच्छाइओ त्ति। तं च छिन्नच्छत्त-दंडं निकिंत्तविचित्तधयवडं निवाडि-यंगरक्खं समिक्खिऊण तग्गुणगणरंजिएण भणियं चंदसेणेण—भो भो सेणाहिवा! सो महारायसासणं अइक्कमइ मह सरीरं च दुहइ जो सेवलरन्नो घायं करेइ त्ति। घोसियं च महया सद्देण। तं च सोचा फरगाईहिं चंपिऊण गहिओ सेवल-राया, समप्पितो य समं सत्तंगाए लच्छीए रायसुयस्स।

सो य तमादाय अक्खंडपयाणगेहिं गतो नियनयरिं। वद्धाविओ जयचंदराया। परमविभूईए पविट्ठो रायभवणं। कय-तक्कालोचियपडिवेत्तिणा य समप्पिओ सेवलभूवई, विन्नत्तो य—देव! एसो सत्तू वि भविय अच्चंतगुणगुरुत्तणेण गुरु व्व अम्हाणं, ता देवेण महापसाएण दट्ठव्वो हवइ त्ति। ततो रन्ना जायतग्गुणनिवेहबहुमाणेण सम्मं सम्माणिऊण दिन्ना स च्चिय

१ तेणे य प्रतौ॥ २ °य पेच्छ हो° प्रतौ॥ ३ निकृत्तविचित्रध्वजपटं निपातिताङ्गरक्षं समीक्ष्य॥ ४ °घत्तणा प्रतौ॥ ५ °धयव° प्रतौ॥

पुवड्ढिई, विसज्जिओ [य] सं ठ्ठाणं ति ।

चंदसेणो वि 'बुद्धि-परक्कमेहिं गुणजेट्ठो' त्ति ठविओ जुवरायपए, दिन्ना महई भुत्ती । 'अच्चंतं परिभूओ' त्ति एगागी रयणीए णीहरिओ विजयचंदो, [पयट्टो] य देसंतरे गंतुं । कइवयपयाणगेहिं य समइक्कंता पिउणो भूमी । तुरियो य एगत्थ क्खुद्दसन्निवेसे । तत्थ य जिन्नुज्जाणे तरुच्छायालीणो उज्जाणविभागं पलोइऊण चिंतिउं पवत्तो—

एत्तो जिन्नतरू विसन्नविडवो वावी इओ निज्जला, एत्तो भट्ठधयं विकिन्नसिहरं कच्चाइणीमंदिरं ।
नट्ठुच्छन्नकुलो य भग्गभवणो गामो य एसो इओ, उप्पाएइ सुहं महंतयमिमो जोगो समाणे हिं मे ॥ १ ॥

एवं च पयट्टो तत्तो पएसाओ गओ उड्डियायणजणवयं । दिट्ठो य तहिं कित्तिधरो नाम तवस्सी । निसामिओ य तम्मूले साहुधम्मो । जहा—

संसारोयहिनिवडंतजंतुनित्थारणेक्कबोहित्थं । सिवपंथसत्थवाहं अवाबाहेक्कसुहहेउं ॥ १ ॥
मुणिधम्माओ वि न धम्ममन्नमब्भुदयसाहगं मन्ने । ता धन्नाणमिह च्चिय जुत्तो जत्तोऽन्नचागेण ॥ २ ॥
पाविज्जइ रज्जं लच्छिवित्थरो वंछियं च सोक्खं पि । निद्दलियअसुहकम्मो कयसिवसम्मो ण मुणिधम्मो ॥ ३ ॥
रज्जाइणो पयत्था जइ वि हु मुहमहुरयाए रमणिज्जा । तह वि न सलाहणिज्जा परिणइकयविविहदुहनिवहा ॥ ४ ॥

१ °पहाण° प्रतौ ॥ २ उपितः ॥ ३ °ट्ठवयं प्रतौ ॥ ४ सुखं महद् अयं योगः स-मानेहि मयि ॥ ५ °हिं म्मे प्रतौ ॥ ६ संसारोदधिनिपतज्जन्तुनिस्तारणैकबोहित्थम् । शिवपथसार्थवाहं अव्याबाधैकसुखहेतुम् ॥ ७ धर्मम् अन्यम् अभ्युदयसाधकम् ॥ ८ °जत्तन्न° प्रतौ । यत्नोऽन्यत्यागेन ॥ ९ °म्मो य मु° प्रतौ ॥

निंबोसहं व जइ वि हु जईण धम्मो मुहम्मि कडुयरसो । परिणइपत्तो तह वि हु अच्चंतसुहावहो होइ ॥ ५ ॥
को नाम किर सेकन्नो मुहमहुरं परिणईए विरसं पि । जाणंतो वि न हिंचा इयरं सयायरं लेज्जा ? ॥ ६ ॥
एवं सोच्चा संजायगेहवासंगचागपरिणामो । पडिवज्जइ [मुणिपासे] पव्वज्जं विजयचंदो सो ॥ ७ ॥
विहरइ गुरुणा सद्धिं सद्धम्मऽज्झयणबद्धपडिबंधो । कालक्कमेण गुरुणा जोगो त्ति पइट्ठिओ सपए ॥ ८ ॥
भणिओ य वच्छ ! निव्वाणलच्छिविच्छड्डदाणदुल्ललियं । गोयमपमुहमहापहुनिसेवियं वित्ति पयमेयं ॥ ९ ॥
ता उज्झियप्पमाओ सिस्साणं सारणाइ कुणमाणो । सिद्धंतवायणाईसु सव्वहा उज्जओ होज्जा ॥ १० ॥
सुहसीलयाए थेवं पि मा वहेज्जसि परिस्समं कह वि । एयं चिय रिणमोक्खो सासणवुड्ढी य एवं च ॥ ११ ॥
इय सिक्खविऊण बहुं सम्मेयमहागिरिस्स सिहरम्मि । मासं पाओवगओ निव्वुइसुहसंपयं पत्तो ॥ १२ ॥

विजयचंदसूरी वि गामा-ऽऽगराइसु विहरिउं पवत्तो । पयट्टिओ य कइयवि दिणाइं सिस्साण पढणाइवावारो । पराभग्गो य पच्छा निच्छइ भासिउं पि, थेरेहिं चोइज्जंतो य भणइ—किमणेण कंठसोसेण ? तवे आयरं कुणह, "यः क्रियावान् स पण्डितः" इति वचनात् । 'किं वा पढियं मासतुसाईहिं' [ति] दिट्ठंतोवन्नासं च कुणंतो उवेहिओ थेरेहिं । कालक्कमेणं अपडिक्कंतो ततो ठाणाउ मरिऊण सोहम्मे देवत्तणेण उववन्नो । अहाउयं तहिं पालिऊण चुओ पउमसंडपुरे धणंजयस्स

१ 'सकर्णः' विद्वान् ॥ २ हित्वा इतरत् सर्वादर लाति ॥ ३ सञ्जातगेहव्यासङ्गत्यागपरिणामः ॥ ४ निर्वाणलक्ष्मीविच्छर्ददानदुर्ललितम् ॥ ५ °यं पिति प्रतौ ॥ ६ ऋणमोक्षः ॥ ७ °तोविन्ना° प्रतौ । दृष्टान्तोपन्यासम् ॥

सेट्ठिणो सिवाए भज्जाए धणसम्मो नाम पुत्तो जाओ त्ति । वोक्कंतअट्ठवरिसो य आढत्तो पाढिउं । पुव्वभवनिविडज्जियनाणंतरायदोसेण य नावडइ गाढधुम्मं[तं] पि एक्कं पि अक्खरं । परिस्संतो उवज्झाओ, 'पत्थरो' त्ति परिचत्तो य । जहा एक्केण इमिणा, एवं पंचहिं वि उवज्झायसएहिं ति । विसन्नो से पिया, पारद्धा ओसहाइणो उवयारा, न जाओ को वि विसेसो । पुच्छइ मंताइजाणगे । कहिओ य से एगेण पुरिसेण, जहा—अमुगत्थ पएसे विसिट्ठो जाणगो तवस्सी वसइ त्ति । ततो सेट्ठी सपुत्तो गओ तस्स साहुणो समीवं, वंदिऊण निसन्नो, भत्तिसारं भणिउं पवत्तो य—भयवं ! किमणेण मम सुएण कयं जेणेवंविहो जडो ? त्ति । ततो भगवया निवेदिओ से णाणहीलणापमुहो पुव्वभवइयरो । तं च सोच्चा जायं धणसम्मस्स जाईसरणं, निवडिओ साहुचलणेसु, भणिउं पवत्तो य—भयवं ! एवमेयं, संपयं च भीओ हं 'कहमिमाउ नाणंतरायपारावाराओ पारं परं वच्चिस्सामि ?' त्ति, सव्वहा साहेसु उवायं । भयवया भणियं—सोम ! सुण जमेत्थ कायव्वं—

दोसेण जेण केणइ भावस्स सुहस्स होइ विद्धंसो । तप्पडिवक्खपवित्तिं परमं किंत्तिति पच्छित्तं ॥ १ ॥

ता नाणदाणविच्छेय-हीलणोवज्जियस्स कम्मस्स । नाणप्पयाणभावेण होइ तन्निज्जराभावो ॥ २ ॥

तं च तुह नाणदाणं सक्खा नो घडइ निबिडजडिमत्ता । नाणस्स य नाणीण य ता बाढं कुणसु बहुमाणं ॥ ३ ॥

१ पूर्वभवनिविडार्जितज्ञानान्तरायदोषेण च नापतति 'गाढघूर्णन्तमपि' उभैः घोषन्तमपि ॥ २ °हुणा स° प्रतौ ॥ ३ तत्प्रतिपक्षप्रवृत्तिम् ॥ ४ ज्ञानदानविच्छेदहीलनोपार्जितस्य कर्मणः । ज्ञानप्रदानभावेन ॥

आयरसु पढंताणं महत्थपोत्थयसुपोत्थियाईहिं । मेसज्जप्पमुहेहि य उवग्गहं नाणवुड्डिकरं ॥ ४ ॥
इय सोचा स महप्पा पच्छायावं परं परिवहंतो । णाणोवग्गहविसए सव्वपयत्तेण वट्टंतो ॥ ५ ॥
मणुयाउयमवसेसिय सोहम्मे देवसोक्खमणुभोत्तुं । तत्तो चुओ य जातो सुकुले धणदत्तनामो त्ति ॥ ६ ॥
तत्थ वि य सावसेसत्तणेण सन्नाणवरणकम्मस्स । सम्ममहिज्जंतस्स वि अक्खरमेत्ते वि अचडंते ॥ ७ ॥
वेरग्गावडियस्स य ईहा-ऽपोहप्पहं पवन्नस्स । जायं जाईसरणं वियाणियं पुव्ववुत्तं च ॥ ८ ॥
तो पुव्वं पिव पढणाइएसु सैइ उज्जमंतसत्तेसु । पोत्थयमाईहिं चिरं उवग्गहं काउमारद्धो ॥ ९ ॥
संवेगोवगमेणं दुक्कडगरिहाए सुहपवित्तीए । तेणावि गरहणीयं नाणावरणीयमवणीयं ॥ १० ॥
पडिवन्ना पव्वज्जा संगोवंगं च सुत्तमवि पढियं । तो सैरियपुव्वभावो सव्वायरमवरभवाणं ॥ ११ ॥
नाणप्पयाणनिरओ चिरओ थेवं पि हु प्पमायातो । निहयघणघाइकम्मो संपत्तो केवलालोयं ॥ १२ ॥
विहिया केवलमहिमा तद्देसैनिवासिदेवनिवहेण । पकयं पंकयमेकं च कंचणुद्दामदलकेलियं ॥ १३ ॥
तत्थ निसन्नो तत्तो धणदत्तो केवली महासत्तो । सत्ताण निव्वुइकए उवएसं दाउमाढत्तो ॥ १४ ॥ जहा—
सुहमणईमिहं जइणो तैत्तविवरीयवत्थुचागाओ । तच्चागो णाणाओ नाणं पुण नाणदाणाओ ॥ १५ ॥

१ सावशेषत्वेन सज्ज्ञानावरणकर्मणः । सम्यगधीयानस्यापि ॥ २ °व्वपुत्तं प्रतौ ॥ ३ सदा उद्यच्छत्सत्त्वेषु ॥ ४ स्मृतपूर्वभावः ॥ ५ °द्देयनि° प्रतौ ॥ ६ °हमीह ज° प्रतौ ॥ ७ तत्तद्विपरीतवस्तुत्यागात् ॥

तद्दाणं पुण वक्खाण-वायणाईसु उज्जमंतस्स । नाणोवग्गहहेउं उवणिंतस्सोवगरणं पि ॥ १६ ॥
तप्पाढपडीभग्गं थिरीकुणंतस्स सवलोयं पि । नाणगुणुज्जयमच्चंतमणुखणं संथुणंतस्स ॥ १७ ॥
किं भन्नइ इह भवा ! नाणपयाणा-ऽपयाणफलमेयं ? । मह पच्चक्खमुवगयं तं नाउं कुणह जं जुत्तं ॥ १८ ॥
लोगेण जंपियं भणसु ताव भयवं ! तमप्पणो चरियं । तो मुणिवरेण सिट्ठं जह दिट्ठं जह व अणुभूयं ॥ १९ ॥
ता पच्चक्खपसिद्धं सिद्धंतपइट्ठियं कुसलदिट्ठं । कुणह सइ नाणदाणं नियाणमिह सवसिद्धीणं ॥ २० ॥ किञ्च—

आत्मानमन्यदपि वस्तु समस्तमस्तजाड्यप्रपञ्चमुपदर्शयितुं समर्थम् ।
ज्ञानं श्रुताश्रयमजस्रकृतश्रियं च, तद्दानमेव हि ततः परमं प्रशस्यम् ॥ १ ॥
कैवल्यवल्लिपिहितोऽपि हितोऽपि दूरं, प्राप्तोऽपि नार्हति जनं जिनकल्पवृक्षः ।
कर्तुं वितृष्णमुपदेशकतां विहाय, तज्ज्ञानदानमिह केन समं समस्तु ? ॥ २ ॥
वैरूप्यवानपि विरागपि निष्प्रभोऽपि, तुच्छाशयोऽपि सरुजोऽप्यपलक्षणोऽपि ।
यन्नम्यते गुरुधिया प्रणतेन मूर्ध्ना, तज्ज्ञानदानलवजृम्भितमाहुरीशाः ॥ ३ ॥

१ उद्यच्छतः ॥ २ उपनयत उपकरणम् ॥ ३ °रणिं पि प्रतौ ॥ ४ तत्पाठप्रतिभग्नम् ॥ ५ °णुब्वयमुच्चंत° प्रतौ । ज्ञानगुणोद्यतम् अत्यन्तम् अनुक्षणम् ॥ ६ सिद्धान्तप्रतिष्ठितं कुशलैः–तीर्थकरगणधरैः दिष्टम्–उपदिष्टम् ॥ ७ सदा ॥ ८ °ति जिनं प्रतौ ॥ ९ °तृप्णमु° प्रतौ ॥

इति किमपि निगद्य स्वं पुराजन्मवृत्तं, प्रकटमपि च दत्त्वा ज्ञानदानोपदेशम् ।
पुरमपरमुपेत्याऽऽरब्धनिर्याणयात्रो, व्यरमदमर-मर्त्यैरर्चितोऽसौ मुनीन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे ज्ञानदानावसरे धनदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ १६ ॥

पुव्वं चिय उक्खित्तं दाणावसरम्मि अभयदाणं पि । ता तं सरूव-फलदंसणेण लेसेण वन्नेमि ॥ १ ॥
पुढयाइणो उ पंच उ बेइंदियमाइणो उ चत्तारि । इय नवविहजीवाणं जं रक्खणमभयदाणं तं ॥ २ ॥
सव्वे सुहेसिणो च्चिय सव्वे वि जियत्थिणो सयाकालं । सव्वेसि चेयण च्चिय सव्वे वि य मरणभयविहुरा ॥ ३ ॥
नवरं नियनियकम्माणुरूवबल-देह-वन्न-संठाणा । नाणाजोणीजम्मणपविभत्तविवित्तचेयन्ना ॥ ४ ॥
ताण [अ]भयप्पयाणं काउमणेणं मणागमेत्तं पि । संघट्टणाइरूवो उवद्दवो वज्जणिज्जो त्ति ॥ ५ ॥
एगच्छत्तं पि महिं मरणे समुवट्ठियम्मि दिंतस्स । न तहा से परितोसो जह अभए दिज्जमाणम्मि ॥ ६ ॥
अवगणियकुलायारा किं किं न कुणंति मरणभयविहुरा ? । दासत्तं पि पवज्जंति ठंति मायंगगेहे वि ॥ ७ ॥
दीणं चवंति दीणं धुणंति निवडंति जंति वेगेण । मरणभयाउरहियया जीवा किं किं व न कुणंति ? ॥ ८ ॥

१ °रमपे° प्रतौ ॥ २ उत्क्षिप्तम् ॥ ३ सुखैषिणः ॥ ४ °यच्छिणो प्रतौ । जीवितार्थिनः ॥ ५ निजनिजकर्मानुरूपबलदेहवर्णसंस्थानाः । नानायोनिजन्मप्रविभक्तविविक्तचैतन्याः ॥ ६ °त्तविचित्त° प्रतौ ॥ ७ कर्तुमनसा ॥ ८ °मागं पि प्रतौ ॥ ९ जल्पन्ति ॥

एत्तो चिय ताणं रक्खणेण अक्खंति भिक्खुणो धम्मं । बहुचागचागसुपसत्थतित्थदाणाइतो वि बहुं ॥ ९ ॥
जो देइ अभयदाणं जीवाणं विविहदुक्खतवियाणं । अंज्जिणइ जयसिरिं सो जउ व निव्वाणमवि नियमा ॥१०॥ तहाहि—

अत्थि जंबुद्दीवतिलयतुल्लभारहखेत्तचूडामणिविब्भमं, भमंतपुरिसोत्तमविराइयं, विजयधयवडं व जीवलोयपासायस्स, उप्पत्तिट्ठाणं व धम्ममग्गस्स विजयवद्धणं नाम नयरं। तत्थ य कुमुयकोमलुम्मिलंतदेहप्पहापहसियसीयकिरणो रणरंगपहयपडुपडह-मुइंग-झल्लरीपमुहतूररवायन्नणभीयवइरिचत्तवावारो वारविलासिणीसलीलचालिय[चाम]रुप्पीलपयडियगरुयरिद्धिवित्थरो जयसुंदरो नाम राया। सयलजुवइलक्खणाणुगयसरीरा विजयवई से भज्जा। जुवरायसिरितिलयभूओ भुवणचंदो नाम पुत्तो। मित्ता य तस्स सेट्ठिसुओ संखो नाम, पुरोहियपुत्तो अज्जुणो नाम, सेणावइसुओ सोमो नाम। एवं च तिहिं बालमेत्ते[हिं] परिगओ गंओ व निरंकुसो सो रायपुत्तो इओ तओ सच्छंदं विलसमाणो कालं वोलेइ।

अन्नया य नयरबाहिरुज्जाणकीलागएण मित्ताणुगएण तेण नाणादेसभमणमुणिय[विविह]भासा-नेवच्छो विचित्तमंत-तंतविन्नाणनिउणो नाणकरंडो नाम कावालियमुणी दिट्ठो, पणिवइओ सबायरेण, 'पायालकन्नगानाहो होसु' त्ति दिन्नासीसो निविट्ठो से समीवे। भणियं च सविम्हएण—भयवं! कह पायालकन्नगाणं संभवो? कहं वा तासिं लाभो? त्ति। कावा-

१ अर्जयति ॥ २ किल द्वारिका पुरी एकेन पुरुषोत्तमेन–कृष्णेन विराजिताऽऽसीत्, इदं पुनः पुरं भ्रमद्भिः प्रभूतैः पुरुषोत्तमैः विराजितम्, अत्र पक्षे पुरुषोत्तमैः–उत्तमपुरुषैरित्यर्थः ॥ ३ °लुमिलंत° प्रतौ । कुमुदकोमलोन्मीलद्देहप्रभाप्रहसितशीतकिरणः रणरङ्गप्रहतपटुपटहमृदङ्गझल्लरीप्रमुखतूररवाकर्णनभीतवैरित्यक्तव्यापारः वारविलासिनीसलीलचालितचामरसमूहप्रकटितगुरुकर्द्धिविस्तरः ॥ ४ गज इव ॥

लिएण जंपियं—रायसुय ! निसामेहि,

अत्थि विंजझगिरिपायमूले विजयकुंडं नाम उज्जाणं। तम्मज्झभागे भगवतो सुवेलाभिहाणस्स जक्खस्स दक्खिण-भवणभित्तिभागे पउमागारसिलमवणेऊण पविसिज्जइ केऊरनामम्मि विवरे। तत्थ य कोसमेत्तं अइक्कंते अचंतकंतसव्वावयव-सुंदरंगीओ नयणलायन्नावगन्नियकुरंगीओ नियरूव-सोहग्गभग्गरइ-रंभापव्वायाओ जक्खकन्नगाओ सव्वा दीसंति। ततो य तुम्हारिसाणमसमसाहसावज्जियविजयलच्छीणं निरुवक्कमविक्कमकंतभूचक्काणं चक्कवट्टिलक्खणंकियदेहाणं पुहइपालाणं अंगनपुन्नपगरिसायड्ढियहियया गिहिणीभावमावज्जंति त्ति।

इमं च सोच्चा अच्चंतं विम्हिओ रायपुत्तो समं मित्तवग्गेण। जातो य बाढं तल्लाभसमूसुयमणो। मणागं निरुंभिऊण वियार-भावं च कहंतरक्खेवेण खणंतरं विगमिऊण गतो सगिहं। तहिं गतो वि रायसुओ तमेव पायालकन्नगावुत्तंतं तदेगचित्तो चिंतयंतो सुत्तो व्व परव्वसो व्व नट्ठन्नो भणिओ मित्तवग्गेण—रायपुत्त! किमेवमन्नचित्तो व्व लक्खिज्जसि ? खिज्जसि य देहेणं ? किं नु सरसि कावालियसिद्धरसायलसीमंतिणीवुत्तंतं ? बालजणविमोहणिज्जा खलु एवंविहसमुल्लावा तुम्हाण वि चित्तं विक्खिवंति त्ति चोज्जमेयं। रायसुएण भणियं—किं तस्स महाणुभावस्स वितहसमुल्लावेणं संजाय ? ।

लिंच्छाइएहिं मिच्छाविभासणं संभवेज्ज संगिस्स। एवंविहभणणे भूय-हङ्कुतुट्ठस्स किं कज्जं ? ॥ १ ॥

१ 'चंतंकनस' प्रतौ ॥ २ अनन्यपुण्यप्रकर्षाकृष्टहृदयाः ॥ ३ विकारभावम् ॥ ४ लक्ष्यसे ? खिद्यसे ॥ ५ आश्चर्यमेतत् ॥ ६ साध्यम् ॥
७ लिप्सादिकैः मिथ्याविभाषणं सम्भवेद् सङ्गिनः ॥ ८ भूतस्थितुष्टस्य ॥

पेच्छह सयं पि दिट्ठं संदेहपए कुवंति दुवियड्ढा[1] । नियबुद्धिसिप्पिकप्पियदुवियप्पुप्पाइयगिराहिं ॥ २ ॥

एवं च पयंपंतं पलोइऊण मुणियपरमत्थो मोणमल्लीणो मित्तवग्गो । एगया य रायसुतो गतो कावालियसमीवं[2] । जाया य परोप्परं गोट्ठी । पत्थावे य पुट्ठो सो कुमारेण—भयवं ! 'कहं पुण विवरप्पवेसो ? कहं वा पायालबालियाणं लाभो ?' त्ति कोऊहलाउलियं मह मणो न एत्थावत्थाणेण रइं संपयं[3] पाउणइ, ता किमियाणिं जुत्तं ? ति । कावालिएण भणियं—रायसुय ! किं बहुवायावित्थरेण ? जइ थोवदिणमज्झे वंछियत्थपूरणेणं विगयकोऊहलं भवंतं न करेमि ता अत्तणो नामं पि न वहामि, केवलं 'बहुविग्घाइं सेयाइं' ति [सिग्घं] पउणो गमणाय होसु त्ति । 'एवं करेमु' त्ति भणियं[4] गओ रायसुतो सगिहं । वाहराविया मित्ता सम्माणपुव्वगमेगंते, सायरं वागरिया य—भो भो वयस्सा ! कीस तुब्भे अविस्सासं[5] कुणह ? वियप्पजालं वा विरयह[6] ? होह सव्वहा मह सहाइणो, पयट्टामि पायालजत्तानिमित्तं ति । उवरोहसीलयाए पडिवन्नं मित्तेहिं । रायाईणमनिवेइऊण वत्तं[7] कयवेसपरियत्ता कावालिएण समं रयणीए नीहरिया । पुरओ वच्चंताण य जाया अ[व]सउणा । तहाहि—

दुरालोयं जायं दिवसयरबिंबं रयवसा, पयट्टं दोघट्टाणुगिई[8] गयणे मेहपडलं ।
कउवेया[9] वाया दिसिसु पडिकूला य सउणा, मणुच्छाहच्छेओ[10] खलियविलया चेव य गई ॥ १ ॥

१ दुर्विदग्धाः । निजबुद्धिशिल्पिकल्पितदुर्विकल्पोत्पादितगिराभिः ॥ २ कामालि° प्रतौ ॥ ३ साम्प्रतं प्रगुणयति ॥ ४ भणित्वा ॥ ५ अविश्वासं कुरुथ ?- विकल्पजालं वा विरचयथ ॥ ६ वार्ता कृतवेषपरिवर्त्ताः ॥ ७ °घटाणु° प्रतौ । 'हस्त्यनुकृति' हस्त्याकारम् ॥ ८ कृतोद्वेगाः ॥ ९ मनउत्साहच्छेदः ॥

ततो भणितो रायसुतो वयस्सेहिं—न जुत्तं गमणमियाणिं, पडिनियत्तह ताव, भुज्जो पत्थावंतरे [पत्थाणं] कायव्वं ति। कावालिएण भणियं—भो भो! किमेवं वाउलीभूया? न जाणह तुब्भे परमत्थं, पायालजत्ताए एरिस च्चिय सउणा फलसाहग त्ति कप्पपरमत्थो, अह संका तुब्भं ता मम निवडंतु एए अवसउणा, एह तुब्भे निस्संक त्ति। रायसुयाणुवित्तीए य पट्ठिया वयंसा। पत्ता य कालक्कमेण विंज्झगिरिपरिसरं—

सरंतरुरु-सेरिभं भमिरभूरिकंठीरवं, विसप्पिरमहोरगं घुरुहुरंतकोलाउलं।
रसंतकरि-दीवियप्पमुहदुट्ठसत्तुब्भडं, गिरिं गुरुदुरं[तयं] तयणु विंज्झमज्झासिया ॥ १ ॥

कमेण य दिट्ठं पुव्वोवइट्ठं जक्खभवणं। कयचलणसोहणा य पविट्ठा भवणब्भंतरे, पूइओ जक्खो पंकयाईहिं, सायरं पणमिओ य। जाए य वियालसमए कावालिएण पच्चासन्नगोउलाओ आणीया चत्तारि छगलगा, पउणीकतो य अन्नो वि साहणविही, काराविया य रा[यसु]याइणो चत्तारि वि समं छगलगेहिं ण्हाणं, चच्चिक्कया जहोचियं चंदणच्छडाहिं, भणिया य—भो! तुब्भे जहक्कमं एक्केक्कं छगलगं मम पणामह जेण तव्विणासणेण देवपूयं काऊण विवरदुवारमुब्भिदिज्जइ त्ति। ततो अवियाणिऊण तच्चित्तवित्तिं, अविभाविऊण तद्दारेण अत्तणो विणासं, अविमंसिऊण सच्छंददेवविलसियं जहुद्दिट्ठमणुट्ठियं रायसुयाईहिं। नवरं

---

१ °त्थायपंतरे प्रतौ। भूयः प्रस्तावान्तरे प्रस्थानम् ॥ २ वयस्याः ॥ ३ °परिसं प्रतौ ॥ ४ सरद्रुरुसैरिभं भ्रमणशीलभूरिकण्ठीरवं विसर्पणशीलमहोरगं घुर्घुरायमाणकोलाकुलम्। रसत्करिद्वीपिकप्रमुखदुष्टसत्त्वोद्भटं गिरिं गुरुदुरन्तकं तदनु विन्ध्यमध्यासिताः ॥ सैरिभाः—महिषाः। कोलाः—शूकराः ॥ ५ °रुऽरं प्रतौ ॥ ६ जहभ° प्रतौ ॥ ७ कृतपादप्रक्षालना इत्यर्थः ॥ ८ 'उब्भिद्यते' उद्घाट्यते ॥ ९ अविमृश्य स्वच्छन्ददैवविलसितम् ॥

सेट्ठिसुएण तक्कालजायजीवदयाभावेण न पडिवन्नमेयं। पन्नविओ[1] य सव्वप्पयारेहिं एसो कावालिएण। 'अच्चायेरो[2] संकाकारि' त्ति सुट्ठयरं न पडिवन्नो एसो। [तओ कावालिएण] नियमंतसिद्धिनिमित्तं थोभिऊण छगलगा वावाइया[3] कुमाराइणो एगं छगलगं सेट्ठिसुयं च विमोत्तूण। एवं च तदुत्तमंगकमलेहिं निवत्तिए पूयाविहाणे कावालिएण हढेण वि हंतुमारद्धो सेट्ठिसुतो। एत्थंतरे भणियं जक्खेण—अरे कावालियचिलाय! अपडिवन्नछगलगविणासछलं जइ इमं वरागं हणिस्ससि ता निच्छयं न भविस्ससि। चत्तो कावालिएणं 'हा हा पावपासंडिडिंडिय! एवंविहपुरिसरयणं हणिऊण केच्चिरं जीविस्ससि? हा रायसुयपरमबंधव! हा सयलगुणरयणनिहाण! कहं मुहा निहणमुवगओ सि?' इच्चाइ पलावं कुणंतो पलाणो ततो ट्ठाणातो पुणजायमिव अप्पाणं मन्नंतो सेट्ठिसुओ, अइक्कंतो विंज्झविसयं, ठिओ एगत्थ गामे, रायसुयाइ सुमरंतो य गहिओ महासोगेण। कयं तप्पारलोइयकायव्वं। वीसंतो कइयवि दिणाइं। 'कहं पडिनियत्तिऊण रायाईणं मुहं दंसिस्सं? किं वा कहिस्सं?' ति पयट्टो पुव्वदिसाभिमुहं।

मिलिओ य मग्गे पव्वज्जं पव्वज्जिउकामो सुमेहो नाम सावगो गुरुसमीवं वच्चंतो एयस्स। जाया परोप्परं संकहा, पइदिणालावेण य पणयभावो य। एगया य पुच्छिओ सो सुमेहेण—भद्द! कीस तुमं विमणो व लक्खिज्जसि? जइ न बाढमकहणिज्जं ता कहेहि। तओ अंसुजलाविललोयणेण सिट्ठो से रायसुयाइविणासवुत्तंतो। सावगेण भणियं—इहलोगि च्चिय फलिओ छगलग[र]क्खण च्चिय सुकयकप्पपायवो, इहरहा रायसुयाइणो व तव्वेलं[4] च्चिय निहणं उविंतो त्ति, पच्चक्खदिट्ठफले

१ प्रज्ञापितः ॥ २ °यरं सं° प्रतौ ॥ ३ 'व्यापादिताः' मारिताः ॥ ४ तद्वेलमेव ॥

वि किमवरं सीसइ ? किंच—जीवियवे संते सव्वं सुहं पडिहाइ न इहरहा । तहाहि—

दिव्वविलेवण-भूसण-मयणा-ऽऽसण-वसण-भोयणपयारा । तंबोल-पुप्फ-सुहफाससेज्ज-वरभवण-गेयरवा ॥ १ ॥

अच्चंतकंतरेहंतरूयरामाकडक्खविक्खेवा । पज्जंतपत्तजीयस्स तोसमीसिं पि नो दिंति ॥ २ ॥

एत्तो च्चिय चोराहरणमेत्थ वन्नंति मुणियसम[य]त्था । सेट्ठिसुएणं भणियं किं पुण साहेसु तं मज्झ ॥ ३ ॥

सुमेहेण जंपियं—निसामेसु,

वसंतपुरे जियसत्तू राया अग्गमहिसीए समं ओलोयणगतो चिट्ठइ । तम्मि य समए खेत्तदुवारे च्चिय उवलद्धो नवजुवाणो एगो तक्करो तलवरेण, दंसिओ रन्नो, वज्झो समाणत्तो । ततो अच्चंतं विद्दाणनयणं वज्झभूमिं निज्जमाणं तमवलोइऊण संजायदयाभावाए 'अदिट्ठजियलोयसुहो मा विवेज्जउ' त्ति एगदिणं जाव मोयाविऊण देवीए नीओ नियभवणे, कारावितो परमविभूईए ण्हाण-विलेवणा-ऽलंकाराइपरिग्गहं, जातो सव्वग्गेण पंचसयदम्मवओ । बीयदिणे बीयरायमहिलाए वि, नवरं साहस्सिओ वओ । एवं उत्तरोत्तरपवड्ढमाणदविणवएण लालिओ सो एक्केकदिणं सेसाहिं वि रायमहिलाहिं । नवरं पज्जंतदिणे थेराए रायगिहिणीए रायाणं गाढोवरोहेण विन्नविऊण दवावियं अभयं तस्स तक्करस्स, वासियभत्ताइणा जेमाविऊण जहाभिमयं विसज्जितो य एसो ।

जीवितव्य-प्रियत्व-विषये चौराहरणम्

१ अत्यन्तकान्तराजमानरूपरामाकटाक्षविक्षेपाः । पर्यन्तप्राप्तजीवितस्य तोषमीषदपि न ददति ॥ २ ज्ञातसमयार्थाः । समय.–सिद्धान्त ॥ ३ अवलोकनं–गवाक्ष ॥ ४ 'विद्राणवदन' म्लानमुखम् ॥ ५ 'विपद्यताम्' म्रियताम् ॥ ६–द्रम्मव्यय ॥ ७–प्रवर्धमानद्रविणव्ययेन ॥ ८ वितप्य दापितम् ॥

एत्थंतरे अंवरोप्परमंतेउरीणं जाया समुल्लावा—एवमेवमम्हाहिं उत्तरोत्तरं पवड्ढंतो वित्तवओ कओ, एयाए पुण न किं पि कयं ति। थेरीए रायगिहिणीए भणियं—किमेतेण संगिहमंगलुग्गाणेण ? एयमेव तक्करं पुच्छह जं जीए अब्भहियं कयं ति। ततो पुट्ठो तक्करो ताहिं—अरे ! 'काए तुहऽब्भहियं कयं ?' ति सच्चं साहेसु। तक्करेण भणियं—देवीए भउब्भंतहियएण पुच्छिएणं[3] वि पुव्विं न किं पि नायं, संपयं पुण मह इमीए जणणीए दावियम्मि अभए जं पि तं पि भोयणाइयं अमयं व परिणयं, वसिओ[4] मि जीवलोगो, पुन्न व सव्वमणोरहा, ता 'इमीए जं कयं तं न कोइ कुणइ' त्ति ममाभिप्पाओ। पडिवन्नं सव्वाहिं ति च्छिन्नो विसंवाओ ॥ छ ॥

ता भो महाणुभाव ! 'नाभयप्पयाणाओ अन्नं किं पि सेट्ठयरं' ति तद्दाणे सव्वहा उज्जमं करेज्जासि। सेट्ठिसुएण भणियं—एवं काहामि। अन्नयासरे य 'भद्दगो' त्ति सिक्खविओ सो सावगेण पंचपरमेट्ठिमंतं, सिट्ठं से तम्माहप्पं, जहा—एस परमभत्तीए तिसंज्झं जविज्जंतो थंभेइ भूय-साइणि-सद्दूल-वेयाल-जलणाइप्पभवं उवद्दवजायं[6] ति। 'तह' त्ति पडिवन्नमणेण। सावगो वि गतो जहाभिमयं।

इयरो वि जहुत्तविहिपुव्वं पंचनमोक्कारमेकचित्तो परियत्तंतो पट्ठिओ जालंधरविसयं। मिलिया य मग्गे कइवय वि सत्थिया। तेहिं समं वच्चंतस्स एगत्थ अयंडे च्चिय कुंडलियचंडकोडंडुड्डीणकंडखंडिज्जंतपहियमुंडमंडियमहिमंडला मंडलवाव-

१ परस्परमन्तःपुरीणाम् ॥ २ स्वगृहमङ्गलोद्गानेन ॥ ३ °ण व पु° प्रतौ ॥ ४ °ओ सि जी° प्रतौ ॥ ५ श्रेष्ठतरम् ॥ ६ उपद्रवसमूहमित्यर्थः ॥ ७ सार्थिकाः ॥ ८ कुण्डलितचण्डकोदण्डोड्डीनकाण्डखण्डयमानपथिकमुण्डमण्डितमहीमण्डला मण्डलव्याप्टताग्रहस्तात्रस्तसमुत्सरत्सुभटसार्थाः ॥

उग्गहत्थाणुप्पित्थसमुत्थरंतसुहडसत्था निवडिया चिलायधाडी। तओ तं ससत्थियं बंदिग्गाहेणं घेत्तूण गया पल्लीए। समप्पियं बंदं पल्लिवइणो मेहनायनामस्स। तेण भणियं—अरे! केत्तिया एए चिट्ठंति?। भिल्लेहिं भणियं—दस जण त्ति। मेहनाएण भणियं—सुरक्खिया करेह जाव एक्कारसमो लब्भइ, जेण भूयाभिभूयस्स जेट्ठपुत्तस्स जायपगुणसरीरस्स चंडिगाए बलिविहाणसंपायणेण उवँजाइयं दिज्जइ त्ति। 'जं सामी आणवेइ' त्ति तेहिं दढं निरुद्धा सेट्ठिसुयाइणो।

अवरवासरे य आणिओ कत्तो वि भिल्लेहिं एक्कारसमपुरिसो। ततो ते सवे काराविया ण्हाणं, पँरिहाविया सेयवत्थजुयलं, नीया चंडियापुरओ, पूइयं मंडलग्गं, गहियं पल्लीवइणा, भणाविया य एए—अरे! सुदिट्ठं कुणह जियलोयं, सुमरह इट्ठदेवयं। एत्थंतरे धाहावियं पुरिसेण—हा! धाव धाव, एस तुब्भं पुत्तो भूएण बाढमभिभविज्जइ त्ति। तओ ते विमोत्तूण पल्लीवई धाविओ पुत्ताभिमुहं, आउलीहूओ गेहजणो। पुट्ठो य सेट्ठिसुएण एगो पुरिसो—किमेयं? ति। सिट्ठो तेण भूयवुत्तंतो। तओ पंचनमोक्कारमाहप्पमणुचिंततेण भणिओ सो सेट्ठिसुएण—दंसेसु भो! तं पल्लीवइसुयं, जेण तद्दोसोवक्कमाय किं पि अप्पणो विन्नाणमुवदंसेमि त्ति। कहिओ एस वुत्तंतो पुरिसेण पल्लिनाहस्स। तेणावि आणाविऊण भणिओ सो—भो भो महायस! जइ किं पि विन्नाणमत्थि ता तं पउंजिऊण पगुणेसु मे सुयं, साहेसु य तदुवक्कमोवायं जेण तं संपाडेमु त्ति। सेट्ठिसुएण भणियं—पल्लिनाह! अलमलं पसंभमेण, न बज्झोवगरणमवेक्खइ एस दोसु त्ति। पारद्धो पंचनमोक्कारं जविउं। कहं चिय?—

१ °डियचि° प्रतौ ॥ २ °ण मोत्तू° प्रतौ ॥ ३ क्रियन्तः ॥ ४ उपयाचितम् ॥ ५ परिधापिताः ॥ ६ °क्कारपरं ज° प्रतौ ॥

नि[1]प्फंदतारलोयणनासग्गोलग्गथिमियपम्हउडं । उदरविचरंतनिब्भरकुंभयपवमाणवावारं ॥ १ ॥
नि[2]यनियविसयऽच्चासंगविरयसमरसियइंदियग्गामं । पंचपरमेट्ठिसुमरणसमकालुच्छलियगुरुनायं ॥ २ ॥
ए[3]क्केक्कऽक्खरससहर[4]झरंतपीऊसपवहपब्भारं । निव्ववि[7]उमुट्ठियं पिव तिहुयणदुहनिवहहव्ववहं ॥ ३ ॥
प[5]सरंतसूरलक्खाइरेगपप्फुरियफारपहचक्कं । दूरो[6]सारियजणपच्चणीयभूयाइदुट्ठगणं ॥ ४ ॥
इय जाव जवइ जोगि व्व निच्चलो निब्भओ निरासंको । पंचपरमेट्ठिमंतं स महप्पाऽणप्पमाहप्पं ॥ ५ ॥
ताव [9]अंयंडविहंडियबंभंडऽ[10]प्फुडणरवसमइरेगं । रसि[11]यं काउं भूओ दूरीहूओ सुयाहिंतो ॥ ६ ॥

जातो पगुणो पल्लिवइसुओ । सम्माणिओ पल्लिवइणा संखो । जोडिय पाणिसंपुडं च भणियं—अहो महासत्त ! तुमए मम सुयपरमोवयारकरणेण बाढमा[12]गरिसियं मह हियय, ता साहेसु किं पि जं प[13]णामिज्जउ त्ति । संखेण भणियं—पल्लिनाह ! जइ एवं ता अभयं दाऊण विस[14]ज्जेसु मऽहागयं एए वरागा दस वि व[15]इदेसिय त्ति । 'जं तुमं आणवेसि' त्ति जंपिरेण पल्लि-

१ निष्पन्दतारलोचननासाग्रावलग्नस्तिमितपक्ष्मपुटम् । उदरविचरन्निर्भरकुम्भकपवमानव्यापारम् ॥ पवमानः–वायुः ॥ २ निजनिजविषयात्यासङ्ग-विरतशमरसिकेन्द्रियग्रामम् । पञ्चपरमेष्ठिस्मरणसमकालोच्छलितगुरुनादम् ॥ ३ एकैकाक्षरशशधरक्षरत्पीयूषप्रवाहप्राग्भारम् । निर्वापयितुमुत्थितमिव त्रिभुवन-दुःखनिवहहव्यवाहम् ॥ ४ °रज्झरं° प्रतौ ॥ ५ प्रसरत्सूरलक्षातिरेकप्रस्फुरितस्फारप्रभाचक्रम् । दूरापसारितजनप्रत्यनीकभूतादिदुष्टगणम् ॥ ६ °सारीय° प्रतौ ॥ ७ °यदूया° प्रतौ ॥ ८ यावद् जपति ॥ ९ अकाण्डविखण्डितब्रह्माण्डास्फुटनरवसमतिरेकम् । रसितं कृत्वा भूतः दूरीभूतः सुतात् ॥ १० °डफुड° प्रतौ ॥ ११ °सिउं का° प्रतौ ॥ १२ आकृष्टम् ॥ १३ अर्प्यताम् ॥ १४ विसर्जय यथागतम् ॥ १५ वैदेशिकाः ॥

वइणा संबलगदाणपुव्वगं विसज्जिया सवे वि। बंधु व सहोयरो व महईए पडिवत्तीए धरिऊण कइवयदिणाइं हिरन्नदाणाइणा य पूइऊण य भणितो संखो—आइससु किमियाणिं कीरइ ? त्ति। संखेण जंपियं—पल्लिनाह ! किं तुमम्हं भणामि ?—

बहुकङ्ककप्पणाहिं पाणी पाउणइ देहपारोहं। हम्मइ य थेवकज्जे वि सो य ही ही ! महापावं ॥ १ ॥

कंटगवेहे वि दुहं उप्पज्जइ अप्पणो सुदुविसहं। निसियासिहणिज्जंतस्स जं च तं को मुणइ वोत्तुं ? ॥ २ ॥

जं दिज्जइ तं लब्भइ जेवा पइन्ना न सालिणो हुंति। जीववहेणं मूढा कह दीहरमाउमीहंति ? ॥ ३ ॥

जइ सुहसणाहं दीहं च आउयं अइथिरं च पियजोगं। वंछह तुब्भे ता मुयह निच्छियं जीवघायमई ॥ ४ ॥

एवं भणिए 'तह' त्ति पडिवन्नमभयप्पयाणं पल्लिनाहेण। कइवयदिणाणंतरं च संखो नियजणगसमुक्कंठिओ पट्ठिओ नियनयराभिमुहं। तत्तो पल्लिवई वरथाइणा सक्कारिऊण एयं दूरं अणुगच्छिऊण य नियत्तो सगिहाभिमुहं। इयरो वि गंतुमारद्धो।

अह कइवयपंथियसहातो एगम्मि पच्चंतसन्निवेसे भोयणकरणत्थमुवट्ठिओ पडिरुद्धो विविहुग्गीरियपहरणेहिं 'हण हण' त्ति भणिरेहिं [तक्करेहिं]। असंभंतेण य भणियं संखेण—अरे ! घायमकुणंता जमत्थि तं घेत्तूण मुंचह त्ति। एवं वुत्ते पारद्धो सो इयरे य चोरेहिं लुंटिउं। एत्थंतरे जायपच्चभिन्नाणेहिं तक्करमज्झाओ कइवयनरेहिं वारिया अवरे—सो एस महप्पा अम्ह जीवियदाया बंदग्गाहमोयगो त्ति, ता अम्हे पेच्छिऊण [ण] एयस्स अणुचियमायरियवं ति। ओसक्का तक्करा। तेहिं नीओ संखो नियघरे, काराविओ ण्हाण-भोयणाइकिच्चं, पूइतो जहोचियपडिवत्तीए, सुहं सुहेण पराणिओ विजयवद्धणपुरं। खामिऊण पडिनियत्ता।

---

१ कण्टकवेधे ॥ २ यवाः प्रकीर्णाः ॥ ३ विविधोद्गीर्णप्रहरणैः ॥ ४ जातप्रत्यभिज्ञाने ॥ ५ प्रेक्ष्य ॥ एतस्य ॥ ६ 'अवष्वष्किताः' पश्चाद्वलिताः ॥

इयरो वि पविट्ठो नियघरं। आणंदिया जणणि-जणगाइणो। पुच्छितो पुव्ववुत्तंतं। कहितो तेण मूलातो आरब्भ। निसामिओ एस वइयरो रायाईहिं पि। जातो य तेसिमच्चंतसंतावो। एवं ते सोयणिज्जदसं पत्ता। इयरो पुण गेहसामी जाओ, तिवग्गसारं जीवियफलं सुचिरमुवभुंजिऊणं मओ समाणो भवणवईणं मज्झे पलियाऊ देवो उववन्नो। तत्थ जाई सरिया। 'अभयप्पयाणकप्पपायवफलमेयं' ति अवगयं चित्तेण। पज्जंतसमए पुच्छिओ केवली—भयवं! कहिं अहं एत्तो उववज्जिस्सामि?। भगवया भणियं—विजयपुरे नयरे विजयसिंहस्स रन्नो विजयवईए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्तणेणं ति।

एवं सोच्चा सो महप्पा अप्पणो पुणो पडिबोहनिमित्तं विजयसिंहस्स रन्नो सुमिणे साहइ, जहा—सभाभवणभित्तीसु इमं वुत्तंतं निउणचित्तगरेहिं आलिहावेसु, जहा—रायसुयाइणो तिन्नि वि जणा विंज्झगिरिकडयकुडंगदुग्गजक्खाययणट्ठियविवरदुवारपूयाकवडेण कावालिएणं छगलोवहारच्छलेण विणिहया, एगो य तव्विणासविहाणमणिच्छंतो न विणट्ठो इच्चाइ ताव जाव सगिहं सुहेण सो पत्तो त्ति। इमं च सुमिणंब्भुयं सो दट्ठूण विउद्धो विभाविउं पवत्तो—किमेयं अदिट्ठ-सुयं अणणुभूयमपयइवियारं मए सुमिणं दिट्ठं ति मन्ने? अच्चंतदीहरत्तणेण आलप्पालमिमं? ति। बीयरयणीए पुणो वि इममेव से दरिसियं। 'कारणेण होयव्वं' ति रन्ना लिहावियं तं सव्वं सहोवइट्ठभवणभित्तीसु।

अवरवासरे सो देवो चविऊण तस्सेव राइणो महिलाए गब्भे पुत्तत्तणेण उववन्नो, पसूओ य समुचियसमए, कयं

१ शोचनीयदशाम् ॥ २ 'अवगतं' ज्ञातम् ॥ ३ विन्ध्यगिरिकटककुडङ्गदुर्गयक्षायतनस्थितविवरद्वारपूजाकपटेन ॥ ४ °मिणुब्भु° प्रतौ ॥ ५ 'विबुद्धः' जागृतः ॥ ६ सभोपदिष्ट– ॥

वड्ढावणयं, पइट्ठियं च जओ त्ति नामधेयं, मंदरगिरिकंदरगओ व पायवो वड्ढिउमारद्धो, अहिगयकलाकलावो य पत्तो तरुणत्तणं। अन्नया य पिउणा कुसुमिणाणुमाणेण मुणियपच्चासन्नमरणसमएण सो ठविओ नियपए, सयं च गतो वणवासं। इयरो य रायसिरिमुवभुंजिउं पवत्तो।

एगम्मि य समए अत्थाणनिसन्नस्स तस्स जाओ सहसा कोलाहलो। तओ वाउलीभूयं इओ तओ धावमाणं जणमवलोइऊण पुच्छियं रन्ना—किमेयं? ति। जणेण भणियं—देव! एते तुम्हपायपउमोवजीविणो सहपंसुकीलिया तिन्नि वि धणवाल-वेलंधर-धरणिधरनामाणो चित्तभित्तिमवलोयमाणा केणइ कारणेण मुच्छानिमीलियच्छा 'धस' त्ति धरणीयले निवडिया। ततो जायविम्हओ गतो राया तयंतियं। कोऊहलेण पारद्धा सा चित्तभित्ती मूलाओ पलोइउं। दिट्ठं च रायसुयाइपडिवन्नं विंज्झगिरिपल्लिपज्जवसाणं निययचित्तगालिहणं। तं च दट्ठूण ईहा-ऽपोहाइ कुणमाणस्स जायं जाईसरणं। मुच्छासमुच्छाइयचेयन्नो निवडिओ महीवट्ठे। अच्चंताउलिएण य सेवगजणेण कतो सिसिरोवयारो। खणद्धेण य राया इयरे वि उम्मिलियलोयणा सुत्तपबुद्ध [व्व] उट्ठिया। 'देव! किमेयं?' ति पुच्छिओ राया पहाणलोगेण। सिट्ठो य सव्वो वि अभयप्पयाणपयडणपहाणो पुव्वभववइयरो। इयरे [वि] यं पुट्ठा मुच्छागमकारणं। तेहिं वि इणमेव सिट्ठं। ततो राइणा पुव्वभवसिणेहसमुब्भवंताणंदंसुप्पवाहपक्खालियाणणेण सायरमवगूहिया तिन्नि वि जणा। जोडियपाणि-

१ ज्ञातप्रत्यासन्नमरणसमयेन ॥ २ व्याकुलीभूतम् ॥ ३ निजकवृत्तकालेखनम् ॥ ४ °च्छासमु° प्रतौ। मूर्च्छासमुच्छादितचैतन्यः ॥ ५ अभयप्रदानप्रकटनप्रधान. ॥ ६ य पुट्ठा मु° प्रतौ ॥ ७ पूर्वभवस्नेहसमुद्भवदानन्दाश्रुप्रवाहप्रक्षालिताननेन सादरमवगूढा ॥

संपुडेहिं विन्नत्तं तेहिं—देव ! तुल्ले वि पुव्वभवभमणाइवइयरे कहं एरिसी रायसिरी तुब्भेहिं आवज्जिया ? । नरवइणा वि 'अभयदाणकामधेणुविलसियमिममसेसं' ति निवेइयं तेसिमियरेसिं च । वित्थरियं च इमं सव्वत्थ जणवए । जाओ य जहासत्तीए अभयप्पयाणपडिबद्धचित्तो जणो ।

अणुसुमरियपंचनमोक्कारेण य रन्ना पडिवन्नो सुगुरुपायमूले जिणधम्मो, काराविया इं जिणभवणाइं, पयट्टाविया सुचिरं दीणाईण दाणसाला, पभावियं जिणसासणं । घोसावियं नियभुत्तीए, जहा—जो उवेच्चाए[1] जीववायं काही तस्स सव्वस्सदंडो कायव्वो त्ति । एवं बुहसलहणिज्जं[2] सरयससहरधवलकित्तिपावणिज्जं रज्जं उवभुंजिऊण एगम्मि पत्थावे अत्थाणगओ वेरग्गवग्गु[3]-वग्गुरानिरुद्धचित्तचित्तंतो राया सभावत्तिलोयं भणिउं पवत्तो—अहो ! पेच्छह तुच्छमाउयं, विरसावसाणो विसयवासंगो[4], विविहवाहिविहुरं[5] सरीरं, खणदिट्ठ-नट्ठं[6] विभववियंभियं, अच्चंतपच्चासन्नो मच्चू, पच्चूहवूहो अभिलसियकज्जसमारोहो, सकज्जाणुवित्तिसारो सयणवग्गो, अवस्समणुभवियव्वं सकम्मदुविलसियं, तहावि पमायमयपत्तो जणो थोयसुहलवनिमित्तमणवेक्खियासंखदुक्खसंपाओ[7] दिट्ठदिट्ठविरुद्धं पि जीवघायमायरइ, एयं पि न परिभावइ—जमप्पणो वि अणभिप्पेयं तं कह परस्स कीरइ ?

अणंतभवकारणं रणमिवंगिदुक्खावणं[8], वणं व कयविप्पियं पियविओगसंपायणं ।
न जीववहणं करे सुहसमुच्चए सी[9] वुहो, विसं असइ[10] को वि किं सुचिरजीवियत्थी जणो ? ॥ १ ॥

१ 'उपेत्य' हठात् ॥ २ बुधश्लाघनीयं शरच्छशधरधवलकीर्तिप्रापणीयम् ॥ ३ वैराग्यवल्गुवागुरानिरुद्धचित्तचिन्तयमानः ॥ ४ विषयव्यासङ्गः ॥ ५ –व्याधि–॥ ६ क्षणदृष्टनष्टं विभवविजृम्भितम् ॥ ७ स्तोकसुखलवनिमित्तम् अनपेक्षितासंख्यदुःखसम्पातः दृष्टादृष्टविरुद्धम् ॥ ८ अङ्गिदुःखापणम् व्रणमिव ॥ ९ असि ॥ १० अश्नाति॥

किञ्चापरेण ?—

वयमपघृणचित्ताः सत्त्वसङ्घातघाताशुभमपि गृहवासं वुध्यमानाः सुबुद्ध्या ।
विपदमनुपदं च प्रेक्षमाणा अपीतः, तदपि न विसृजामो ही ! महामोहराजः ॥ १ ॥
परमिह मुनयस्ते वन्द्यपादारविन्दाः, वचन-तनु-मनोभिर्येऽभयं प्राणवद्भ्यः ।
ददति न च मनागप्यर्दिताः क्रूरसत्त्वैर्विदधति रुपमन्तर्जीवितव्यव्ययेऽपि ॥ २ ॥
अयि हतक ! किमेतज्जीव ! जीवोपघातोपहितसुखलवं स्वं शाश्वतं मन्यसे त्वम् ? ।
स्मरसि किमु न पूर्वं निन्दनीयेन्द्रियार्थाचरणजनितदुःखं ? यत् त्वयाऽनन्तमाप्तम् ॥ ३ ॥
इति समुदितशुक्लध्यानवह्निप्रबन्धज्वलितनिखिलसंम्यग्घातिकर्मेन्धनौघः ।
स धृतसुयतिवेषश्चारुचारित्रिमुख्यो, भरत इव विजहे केवलश्रीसनाथः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे अभयप्रदानप्रस्तावे जयराजर्षिकथानकं समाप्तम् ॥ १७ ॥

पुव्विं पि पिसुंणियमिमं दाणमुवग्गहकरं ति कित्तेमि । धम्मिट्ठाणं तं पुण इट्ठमुवट्ठंभकरणेण ॥ १ ॥ उपष्टम्भ-
धम्मिट्ठा पुण एत्थं सैमत्थसावज्जजोगपडिविरया । परमत्थेण मुणि च्चिय मोक्खत्थं विहियवावारा ॥ २ ॥ दानस्य स्वरूपम्

१ °सम्पद्धाति° प्रतौ ॥ २ 'पिशुनितं' सूचितम् ॥ ३ समस्तसावद्ययोगप्रतिविरताः ॥

उपग्रहदा-नस्य चातु-र्विध्यम्

ताणमुवट्ठंभो पुण उवग्गहो सो य वत्थ-पत्ताणं । ओसह-सेज्जा-सयण-ऽन्न-पाणमाईण दाणेण ॥ ३ ॥
जं तेहि उवग्गहिया सयं हि पागाइपावविरयमणा । साहिंति सुहेणं चिय सज्झाय-ज्झाण-तव-विणए ॥ ४ ॥
देहो साहणरहिओ न खमइ मोक्खाणुकूलमायरिउं । तस्साहणाइं भन्नंति तेण वत्थाइदाणाइं ॥ ५ ॥
धम्मरयाण मुणीणं उग्गहकिच्चेसु संपयट्टंतो । तद्धम्मदीवणेणं गिही वि तन्निज्जराभागी ॥ ६ ॥
चोरोवग्गहकारी जह चोरो गिण्हई अचोरो वि । साहूवग्गहकारी गिही वि तह होइ साहु व ॥ ७ ॥
ता सव्वहा गिहीणं सया वि सावज्जजोगनिरयाणं । दाणं चिय भवभयजलहितरणवोहित्थमच्चत्थं ॥ ८ ॥
तव-सील-भावणाओ वल विरई चित्तरोह सज्झाओ । दाणं च सुदेयमओ तम्मि पयत्तो सया जुत्तो ॥ ९ ॥
तं पुण दायगसुद्धं गाहगसुद्धं च कालसुद्धं च । भावविसुद्धं च तहा दिज्जंतं वहुफलं होइ ॥ १० ॥
रोमंचंचियदेहो मयरहिओ कम्मनिज्जराहेउं । जो देइ कप्पणिज्जं दायगसुद्धं तु तं नेयं ॥ ११ ॥
जो साहू नियकिरियापवण्णचित्तो य उज्झियममत्तो । अकसाओ अतिही जत्थ तं भवे गाहगविसुद्धं ॥ १२ ॥
जं जम्मि उ उवउज्जइ काले वत्थऽन्नमाइ साहूण । तं तत्थ दाणमाहंसु निच्छियं कालसुद्धं तु ॥ १३ ॥
देयं पत्तं च वरं संपत्तं जेण तस्स मे सफलो । गिहवासो त्ति मई जत्थ भावसुद्धं तयं विंति ॥ १४ ॥

१ पाकादिपापविरतमनसः ॥ २ उपग्रहकृत्येषु सम्प्रवर्त्तमानः ॥ ३ अत्यर्थम् ॥ ४ प्रयत्नः ॥ ५ रोमाञ्चाञ्चितदेहो मदरहितः कर्मनिर्जराहेतोः । यः ददाति 'कल्पनीयं' योग्यम् ॥ ६ °ववज्ज° प्रतौ । उपयुज्यते ॥ ७ आहुः ॥

उग्गम-उप्पायणदोसवज्जियं संजमेक्कवुड्ढिकरं । दोण्हं पि य पियजणयं देयं देयं च कुसलेहिं ॥ १५ ॥ किं बहुणा ?—

कय-निट्ठियमत्तट्ठं सम्ममणुट्ठाणिणो मुणिजणस्स । सुजउ व पावइ सुहं दिंतो असणाइ भत्तीए ॥ १६ ॥

तथाहि—अत्थि कोसलदेसावयंसतुल्ला महल्लपासायसहस्सोवसोहिया इक्खागुवंससंभूयभूवइविजयरायभुयपरिहपयत्तपडिहयपडिवक्खभया धण-धन्न-सुवन्नपडिपुन्नपयइलोयाणुगया अउज्झा नाम नयरी ।

किं वन्निज्जइ तीए जीए जइबंधवो जुगाइजिणो । रज्जं पवज्जं तह वेज्जियवज्जं पवज्जित्था ? ॥ १ ॥

तत्थेव निवासी सभावउ च्चिय विवेयसंगओ संगमओ नाम नावावणिओ सकुलक्कमाविरुद्धाए वित्तीए कालं गमेइ । अन्नया य हीयमाणे चिरोवज्जियदव्वसंचए परिभावियमणेण—दव्वं हि जीवियं जणस्स, एयविउत्तो हि जणो जीवंतो वि मओ व्व अवगणिज्जइ सव्वत्थ, न मन्निज्जइ पिउणा वि, नावेक्खेज्जइ कलत्तेण वि, न संभासिज्जइ सुहिणा वि, न बहुमन्निज्जइ पुत्तेण वि, ता पुव्वपुरिसकमागयं पारंभेमि जाणवत्तवत्तसायं, अज्जिणामि दव्वसंचयं ति । ततो पगुणावियं बोहित्थं, भरियं च विविहभंडाणं, सज्जीहूओ निज्जामगजणो । सुमुहुत्ते य कयमज्जणो विहियदेव-गुरुपायपूओ संपाडियतक्कालोचियकायव्ववित्थरो संगमओ समारूढो बोहित्थं ।

---

१ 'देयं' दातव्यं वस्तु ॥ २ कृतनिष्ठितमात्मार्थं सम्यगनुष्ठानिनः ॥ ३ तस्या यस्यां जगद्बान्धवः यतिबान्धवो वा ॥ ४ वर्जितवर्यं वर्जितवर्ज्यं वा राज्यं वर्जितवर्ज्यां प्रव्रज्यां च प्रापयत ॥ ५ 'वृत्त्या' व्यापारेण ॥ ६ एतद्वियुक्तः ॥ ७ "यमूले संपा" प्रतौ ॥

[1]उब्भवियकूवखंभारोवियवित्थरियसियवडाडोवं । पवहियवाउवेगं पहसंतं विययपक्खिं व ॥ १ ॥

[2]सुमहल्लाऽवल्लयवहणवेगवोलंतगरुयकल्लोलं । परतीरगमुकरिसा[3] कयकमकमणुप्पयन्तं व ॥ २ ॥

[4]वज्जंताउज्जसमुच्छलंतपडिसद्दभूरिघोररवं । निम्महणासंकियसलिलदेवयावड्ढियायंकं ॥ ३ ॥

[5]इय अणुकूलखरानिलधुप्पंतमहंतसियवडुग्घायं । पवणाइरेगवेगं संपत्तं तीरभागम्मि ॥ ४ ॥

ततो मुक्का नंगरा, पाडिओ सियवडो, समुत्तिन्नो नावाजणो । विवणि[6]मग्गमोयारियाणि भंडाणि, समागया तयत्थिणो[7], जाओ ववहारो, विणिवड्ढियाइं भंडाइं, गहियाइं पडिभंडाइं, समासाइओ पभूयदव्वलाभो । ततो 'कयसयलकिच्चो' त्ति जाणवत्तं पगुणीकाऊण पट्ठिओ संगमओ सदेसाभिमुहं । समुद्दमज्झमणुप्पत्तस्स य तस्स विवरम्मुहीहूया[8] कम्मपरिणई । गयण-[9]यलमोगाहिउं पवत्तं च पवहणपुरओ गरुयगिरिसिहराणुगारं सलिलपडलं । एत्थंतरे [10]कूवखंभोवरिभागगएण विसिट्ठंजणनिम्मललोयणावलोइयजलगयमयराइदुट्ठसत्तवग्गेणं[11] सभय-चमकारं वाहरियं निज्जामएण—अरे रे ! वाएह[12] पलयपक्खुहिय-

१ ऊर्ध्वीकृतकूपस्तम्भारोपितविस्तृतसितपटाटोपम् । प्रव्यथितवायुवेगं प्रहसमानं विततपक्षिणमिव ॥ २ सुमहाऽवल्लकवहनवेगव्युत्क्रामद्गुरुकल्लोलम् । परतीरगमनोत्कर्षात् कृतक्रमक्रमणोत्पतदिव ॥ ३ °साकयकयकमकमणुप्पयत्तयत्तं व प्रतौ ॥ ४ वाद्यमानातोद्यसमुच्छलत्प्रतिशब्दभूरिघोररवम् । निर्मथनाशङ्कितसलिलदेवतावर्धितातङ्कम् ॥ ५ इति अनुकूलखरानिलधुनन्महासितपटोद्धातम् । पवनातिरेकवेगं सम्प्राप्तं तीरभागे ॥ ६ °णिवग्ग° प्रतौ ॥ ७ तदर्थिनः ॥ ८ विपराङ्मुखीभूता ॥ ९ गगनतलमवगाहितुम् ॥ १० कूपस्तम्भोपरिभागगतेन विशिष्टाञ्जननिर्मललोचनावलोकितजलगतमकरादिदुष्टसत्त्ववर्गेण सभयचमत्कारं व्याहृतं निर्यामकेण ॥ ११ °ण भभयचम° प्रतौ ॥ १२ वादयत प्रलयप्रक्षुब्धपुष्करावर्त्तगर्जिगम्भीराणि ॥

यत्युपष्टम्भदानाधिकारे सुजयराजर्षिकथानकम् १८। प्रवहणम्

पोक्खलावत्तगज्जिरगंभीराइं [तूराइं,] पक्खिवह हुयवहजालाकलावाउलाइं अग्गितेल्लाइं, 'एस दूरमुच्छासियनीरनिउरंबो सयूर-तारमंबरं भरिउं पिव उड्ढं उच्छलइ तिमिंगिलो नाम दुट्ठजलयरो मन्ने न खेमंकरो' त्ति कुणह कायवाइं, सरह सरियव्वाइं–त्ति जाव भणिउं न विरमइ ताव पवहणपिट्ठओ एवं चिय उट्ठिओ वीयदुट्ठसत्तो। तओ भूरिभयपब्भारभरिज्जंतहियओ परिचत्तजीवियासो भणिउं भुओ पयत्तो—हंहो नावाजणा! मुयह जीवियसंकप्पं, सुमरह इट्ठदेवयं, दोण्हं कयंताणमंतरे निवडिया[णं] नत्थि मे मोक्खो–त्ति वाहरंतस्सेव तस्स एगेण तिमिंगिलेण जुगविगमतिजयकवलणमणकीणासमुहकुहररउद्दाणणेण तं जाणवत्तं गहियं पुव्वओ, इयरेण पिट्ठदेसउ त्ति। एवं च आयड्ढ-वियड्ढि कुणमाणाण ताण निमेससद्देण वि विलवंतवाणिउत्तं विसंठुलविचेट्ठंतवंठलोयं भयभरवेवंतकायरं सयखंडयं पत्तं जाणवत्तं। सत्तुयमुट्ठि व पणट्ठो सव्वतो नावाजणो। संगमतो वि कहं चिय भवियव्वयावसेण पत्तफलगखंडो महल्लकल्लोलपरंपराबुब्भमाणो कइवयदिणेहिं पत्तो पारावारपारभागम्मि सुवेलाचलपरिसरं। अच्चंतपरिस्समकिलामियकाओ वि धरियधीरिमावट्ठंभो छुहापिवासोवसम[ण]त्थमिओ ततो गिरिनिगुंजेसु परिभमंतो

१ 'पोग्गला' प्रतौ ॥ २ दूरम् उच्छासितनिरनीकुरम्बः ससूरतारम् अम्बरं भरितुमिव ॥ ३ स्मरत स्मर्तव्यानि ॥ ४ °ओ सूरि° प्रतौ । भूरिभयप्राग्भारभ्रियमाणहृदयः परित्यक्तजीविताशः ॥ ५–सङ्कल्पम्, स्मरत ॥ ६ कृतान्तयोः अन्तरे ॥ ७ °रत्तस्स चि त° प्रतौ ॥ ८ युगविगमत्रिजगत्कवलनमन.कीनाशमुखकुहररौद्राननेन ॥ ९ पयं च प्रतौ । एवं च आकृष्टविकृष्टिम् ॥ १० विलपद्वणिक्पुत्रं विसंस्थुलविचेष्टमानवण्ठलोकं भयभरवेपमानकातरं शतखण्डतां प्राप्तं यानपात्रम् ॥ ११ महाकल्लोलपरम्परोह्यमानः ॥ १२ °भकाउकिलामियकाउ वि चरिय° प्रतौ । अत्यन्तपरिश्रमक्लान्तकायोऽपि धृतधीरिमावष्टम्भः क्षुधापिपासोपशमनार्थम् इतस्ततः ॥

पेच्छइ एला-लवंग-नालियर-कयली-पणसपमुहफलभरोणमंतसाहं साहिनिवहं। ततो जायजीवियवपच्चासो पच्चासन्नसरोयरे कर-चरण-मुहविसुद्धिं काऊण तरुवरफलाइं आहरिउं पवत्तो। उवाहरियसमीहियफलो य कयदेव-गुरुपायसुमरणो य भोयणद्धमुवट्ठिओ चिंतेइ—

जइ वि हरि-हरिण-सद्दूल-पीलु-भल्लुंक-भिल्लदुविगमं। रन्नमिमं माणुसचारविरहियं तह वि मा कोइ ॥ १ ॥
अहमिव विकूलहयविहिविहियाणिट्ठो कहं पि इह एज्जा। ता तद्दाणं काउं मह संपइ कप्पई भोत्तुं ॥ २ ॥
तं भुत्तं जं अतिहीण दिन्नसेसं स एव विभवो य। जो सामन्नो मन्ने सव्वस्स वि निययलोयस्स ॥ ३ ॥
संसारम्मि अणंते किं नो पत्तं ? न किं व परिभुत्तं ?। मोत्तुं परोवयारं किं वा न कयं च ? संके हं ॥ ४ ॥
ता हियय ! छुहकिलंतं पि दीणयं मा खणं पवज्जिहसि। एवंविहपत्थावे अतिहिपयाणं सुहनिहाणं ॥ ५ ॥
इय जाव सो महप्पा तक्कालुच्छलियवीरिउल्लासो। दिसिवलयं पेहंतो अच्छइ अच्छिन्नदाणिच्छो ॥ ६ ॥
ताव कुरंगो एक्को तं पगुणियभोयणं पलोइत्ता। मण-पवणविजइवेगेण पडिगतो पुव्वदिसिहुत्तं ॥ ७ ॥
अबिभीसणो वि य अहं [....]अणाउस्सविय किं पलाणोऽयं ?। अहवा भयाउर चिय सभावओ च्चिय तिरियजाई ॥ ८ ॥
इय चिंततस्स य तस्स तक्खणं धरियविमलसियछत्तो। एगो महातवस्सी खंदकुमारो व्व पचक्खो ॥ ९ ॥

१ -भरावनमच्छाखम् ॥ २ आहारिं प्रतौ ॥ ३ पीलु-हस्ती ॥ ४ °भल्लंग-भि° प्रतौ ॥ ५ विकूलहतविधिविहितानिष्टः। विकूलः-प्रतिकूलः ॥ ६ कहिं च प्रतौ ॥ ७ ° किलंतंमि दी° प्रतौ। क्षुधाक्रान्तमपि दीनतां मा क्षणं प्रपत्स्यसे ॥

अंग्गट्ठियविज्जाहरवंदिसमुग्घुट्ठविजयवरचरिओ । हरिणुवदंसियमग्गो वलदेवसिरि व संपत्तो ॥ १० ॥

तो मुणियसुमुणिमाहप्पबुद्धसारंगगमणपरमत्थो । अप्पत्तपुव्वपहरिसविणिंतरोमंचविंचइओ ॥ ११ ॥

सागयमिइ जंपंतो सत्त-ऽट्ठपयाइं सम्मुहं गंतुं । कयपायपउमनमणो कयलीफलमाइणा तेण ॥ १२ ॥

पडिलाहइ अत्तट्ठं कडेण तह निट्ठिएण अत्तट्ठं । तो वंदियमणुगच्छिय सत्त-ऽट्ठपयाइं परितुट्ठो ॥ १३ ॥

नीरनिहिनिहणपावियपवहणदुच्छं पि परममब्भुदयं । मन्नंतो मुणिवरवियरणेण अह जिमिउमारद्धो ॥ १४ ॥

कयभोयणो य पुन्नायतरुतले वीसमंतो परिभावेइ—अहो ! कहं एस महामुणी अच्चंतनीरागो ? कहं वा पुंरिसधरिज्जंतसियायवत्तो ?, कहं परिभाविज्जंतनिज्जियमयाइवियारो ? कहं वा पुरतो मागहगीयमाणमाणवाइरित्तकित्तिवुत्तंतो ?, कहं अच्चंतकिसियकाओ ? कहं वा सुराभिभवकारिकंतिपब्भारो ? त्ति, अहो ! महापुरिसाणं निस्सीमाओ विभूईओ अम्हारिसाण तुच्छमईणं न वियारगोयरे वि वियरंति ।

एत्थंतरे सो मागहो पत्तो तमुद्देसं, भणिउं पवत्तो य—भो भो महायस ! सुकयकम्माणं पढमकित्तणिज्जनामो समुवल-

१ अप्रस्थितविद्याधरवन्दितमुद्घुष्टविजयवरचरितः । हरिणोपदर्शितमार्गः वलदेवश्रीरिव सम्प्राप्तः ॥ २ ततः ज्ञातसुमुनिमाहात्म्यबुद्धसारङ्गगमनपरमार्थः । अप्राप्तपूर्वप्रहर्षविनिर्यद्रोमाञ्चमण्डितः ॥ ३ °मिई जं° प्रतौ ॥ ४ वन्दित्वा अनुगत्य ॥ ५ नीरनिधिनिधनप्राप्तप्रवहणदौःस्थ्यमपि ॥ ६-वितरणेन-दानेन ॥ ७ पुरुषध्रियमाणसितातपत्रः ? कथं परिभाव्यमाननिर्जितमदादिविकारः ? कथं वा पुरतो मागधगीयमानमानवातिरिक्तकीर्तिवृत्तान्तः ? ॥ ८ °ईए अ° प्रतौ ॥

द्धजम्म-जीवियफलो असेसमणुयमत्थयचूडामणी तुमं निच्छियं होसि, कहमन्नहा विज्ञाहरनरिंदसंदोहमणिमउडटिविडिक्कियक्कमस्स[1] तणं व परिचत्तविज्ञाहररायलच्छिणो तिहुयणसरसीसमुग्गयकित्तिकुमुयवणस्स[2][3] एयस्स खयररायरिसिणो संपइ संपत्तचउमासतवपारणयपत्थावस्स नीसेसदोसविरहियऽन्न-पाणर्पणामणेण[4] करयलकमलोवणीयतिलोयलच्छिविच्छड्डो[5] होसि ? नहि अभाविभद्दा दूरोहामियकामधेणु-चिंतामणि-कप्पपायवं[6] एवंविहं मुणिं दट्ठुं पि लभंते किमंग पाराविउं ? किं वा न सुओ तुमए एस सव्वजयपयडो वि महाणुभावो ? । संगमएण भणियं—जइ उलुएण अंसुमाली न पलोइओ किमित्तिएण वि न सो सयलतिहुयणपच्चक्खो ? ता सव्वहा सँवणपीऊसवरिसकप्पं[7] साहेसु एयसरूवं । मागहेण भणियं—एवं करेमि ।

एसो हि पभूयरयणड्ढवेयड्ढपव्वयपइट्ठियदाहिणसेढिपरिविढो[8] निप्पुन्नयनरदुल्लहगयणवल्लहपुरपहू अणंतविरिओ नाम विज्ञाहरचक्कवट्टी विसट्टकंदोट्टदलदीहरच्छीहिं रूयाइसयविजियामररामाहिं[9] अंतेउरीहिं परिगओ सक्को व्व देवलोए विलसंतो कालं वोलेइ । तस्स दुवे पुत्ता सयलकलाकलावकुसला सिद्धसव्वविज्ञा महाबला—एगो मेहनाओ अवरो सिंहनाओ त्ति । पढमो ठविओ जुवरायपए, इयरो य कुमारभुत्तीए । सरंतेसु य वासरेसु कणिट्ठपुत्तस्स पुव्वकयकम्मदोसेण कुट्ठवाहिणा विणट्ठं सरीरं, पउत्ता विविहदव्वोसहप्पओगा, न जातो थेवमित्तो वि उवयारो । विसन्नो एसो, परिचत्ता जीवियासा । दुंहट्टिएण[10]

अनन्तवीर्यमुनेः सिंहनादस्य च सम्बन्धः

· १ विद्याधरनरेन्द्रसन्दोहमणिमुकुटमण्डितक्रमस्य ॥ २ °कम्मस्स प्रतौ ॥ ३ °णसिर° प्रतौ ॥ ४—अर्पणेन ॥ ५ विच्छर्दः–विस्तारः ६ ओहामिय–अभिभूत ॥ ७ श्रवणपीयूषवर्षाकल्पं कथय ॥ ८ प्रभूतरत्नाढ्यवैताढ्यपर्वतप्रतिष्ठितदक्षिणश्रेणिपरिगृढः निष्पुण्यकनर– । परिगृढः–स्वामी ॥ ९ विकसितनीलकमलदलदीर्घाक्षिभिः रूपातिशयविजितामररामाभिः ॥ १० दुःखार्त्तेन ॥

य विज्ञाहरचक्कवट्टिणा पयट्टिया मंत-तंता, तेहिं वि समहिगतरं वड्डिओ वाही। सोगसंभारपूरिज्जंतगलरंधो य रोयंतो सो वारिओ पन्नत्तिमहाविज्ञादेवयाए, जहा—

भो खयराहिव ! किमेवं गरुयविज्ञाहरवंसजम्मसद्दसंभूयं पि धीरिमभवहाय पागयनरो व [1]निव्वेयमुव्वहसि। पुव्वकयदुक्कयाणं पि किं देवो दाणवो वा सयमेव तित्थयरो भयवो वा गोयरमगतो दिट्ठो निसामिओ वा ? जमेवं संतप्पसि। एएण हि महाणुभावेण पुव्वजम्मे कंचीपुरेसरसिरिचम्मनरिंदपुरोहियभवे वट्टमाणेण अच्चंतराय[3]सम्माणजायजणपूयाइरेगपरिवड्डियऽट्ठविहमयट्ठाणेण सगिहभोयणकरणपयट्टेण तक्खणमासखमणपारणयागयगयउररायरिसिणो सणंकुमारस्स हीलाए उच्चिट्ठा भुत्तावसेसा दवाविया भिक्खा। मुणिणा वि [4]मुणियतक्का[लो]चियदव्वाइसुद्धिणा गहिया आगमसुत्तविहिणा, परिभोत्तुमारद्धा य। नवरं देवयानिवारिएण परिहरिया अणेण, तहा वि देवयाए जायगरुयामरिसाए पुरोहियसरीरे निवत्तिया समकालं सोलसमहारोगायंका। तेहिं अच्चंतबाहिज्जमाणो मीणो व थोवजलखित्तो [5]तल्लुवेल्लिं कुणंतो मतो, उववन्नो य निंदियजाईसु, तत्थ वि रोगनिवहविहुरिओ विवन्नो। एवं कइवयभवगहणाइं अणुभविय तिक्खदुक्खाइं दुक्कम्मसावसेसयाए कयतहाविहसुकयविसेसो संपयमेसो तुह पुत्तत्तणं पत्तो, पुव्वुत्तदोसलेसओ य इमं दुत्थावत्थमुवगओ त्ति। ता विभावियभवभावसरूवो महाराय ! [6]मुंच

1 शोकसम्भारपूर्यमाणगलरन्ध्रः ॥ 2 निव्वचेय° प्रतौ ॥ 3 °समाणजाणजण° प्रतौ । अत्यन्तराजसम्मानजातजनपूजातिरेकपरिवर्धिताष्टविधमदस्थानेन स्वगृहभोजनकरणप्रवृत्तेन तत्क्षणमासक्षपणपारणकागतगजपुरराजर्षेः सनत्कुमारस्य हीलया उच्छिष्टा ॥ 4 ज्ञाततत्कालोचितद्रव्यादिशुद्धिना ॥ 5 तीमव्याकुलीभावम् ॥ 6 °च सभावं° प्रतौ ॥

देवभद्दसूरि-
विरइओ
कहारयण-
कोसो ॥
सामन्नगु-
णाहिगारो।
॥१३७॥

यत्युपष्ट-
म्भदाना-
धिकारे सु-
जयराजर्षि-
कथान-
कम् १८।

संतावं, पडिवज्जसु धीरत्तणं, अणुचिंतेसु दुट्ठचेट्ठियाणं कडुयविवागं ति । इमं च सोच्चा चिंतियं विज्जाहरनरिंदेण—

अवि पलयलु[1]लंतो लोलकल्लोलमालाउलजलहि[2]जलोहो रुब्भए वित्थरंतो ।
कह वि सु[3]हुमखोमक्खंडमुत्तोलिमज्झे, पडुपवणपवाहो कीरए निच्चलो य ॥ १ ॥
अवि य सुचिरकालं लि[4]स्सई य प्पयंडं-जलिरजलणजालाजालमं[5]तोऽनलस्स ।
सु[6]रगिरिपणगेणं पाणिपंचंगुलीसुं, घडि[7]यनिहठिएणं नूण कीलिज्जई य ॥ २ ॥
न उण वि[8]गुणजीवुज्जोगसंजोगजम्माऽसुहठिइ-रसकम्मुप्पीडपीडं असोढुं ।
अवि[9] असुर-सुरेहिं सेरसं[10]चारसारं, समयमवि य ठाउं निच्छि[11]यं लब्भईह ॥ ३ ॥

ता सव्वहा संकडमिममावडियं, न संकेमि कुसलमिमस्स–त्ति गओ पुत्तसमीवं । साहिओ देवयानिवेइयपुव्वजम्मवुत्तंतो । जायजाईसरणेण सम्मं पडिवन्नो य कुमारेण । ततो जायगरुयवेरग्गेण अच्चंतविलीणकिमिकुलाउलकलेवरावलोयणविणिच्छियहुयासणपवेसेण भालयलघडियपाणिसंपुडं विन्नत्तमणेण—ताय ! विसमो दसाविवागो, पडिकूला कम्मपरिणई, न य पे-

१ °लुलंत लो° प्रतौ ॥ २–जलौघो रुध्यते ॥ ३ सूक्ष्मक्षौमखण्डमुक्तावलीमध्ये ॥ ४ श्लिष्यते च प्रचण्डज्वलनशीलज्वलनज्वालाजालमताऽनलेन ॥ ५ °तो जल° प्रतौ ॥ ६ सुरगिरिपन्नकेन पाणिपञ्चाङ्गुलीषु घटिकानिभस्थितेन नूनं क्रीड्यते च ॥ ७ °यविह° प्रतौ ॥ ८ विगुणजीवोद्योगसंयोगजन्माशुभस्थितिरसकर्मोत्पीडपीडामसोढुम् । अपि असुरसुरैः स्वैरसञ्चारसारं समयमपि च स्थातुं निश्चितं लभ्यते इह ॥ ९ °वि य सु° प्रतौ ॥ १० °रसञ्चार° प्रतौ ॥ ११ °च्छिउं ल° प्रतौ ॥

च्छामि किं पि आरोगत्तणे उवायं, ता मग्गेमि किं पि जइ तुब्भे देह त्ति। विज्जाहरचक्कवट्टिणा भणियं—वच्छ सिंहनाय ! किमेवं जंपसि ? तुज्झ वि किं पि अदेयं ? निस्संको भणसु जेण तं पयच्छामि त्ति। सिंहनाएण भणियं—ता[य !] जइ एवं ता तुब्भेहिं न कायव्वो थेवो वि हुयासणप्पवेसेण अप्पविघायं कुणंतस्स मह विग्घो त्ति। ततो अविभावियवयणच्छलसमुच्छलंतातुच्छपच्छायावो खयरचक्कवट्टीसरो महंतं चित्तसंतावमुवगतो। इयरो वि वारिज्जंतो वि नियगलोगेण पयंगो व्व पडिओ हुयासणे। जाओ य नयरे महंतो हाहारवो। तम्मग्गमणुसरंतो कट्ठेण पडिसिद्धो तदंतेउरीजणो।

'हा ! कीस मए देवयासिट्ठपुव्वजम्मवइयरो एयस्स कहिओ ? कीस वा एयंऽब्भत्थणा [अ]ब्भुवगय ?' त्ति वाढं संतप्पंतो, कत्थइ रइं अलभंतो य, अच्चंतं निवारिज्जमाणो य रायलोएण, मेहनायं रज्जे ठविऊण महाबाहुपहुसमीवे इममेव वेरग्गकारणमुव्वहंतो विज्जाहरीसरो समणो जातो, पढमपव्वज्जादिणाओ वि पक्खक्खमणाइतवं करेइ। अणवरयं अवरावरविज्जाहराहिवकीरमाणीं वंदण-पूयापडिवत्तिं पि 'धम्मज्झाणविग्घं' ति मन्नमाणो 'मुणियधम्मसारो' त्ति गुरुजणाणुन्नातो इमं सुवेलाचलविजणवणविहारमल्लीणो। अणिच्छंतस्स वि य एयस्स महामुणिणो एस छत्तधारगो अहं च मागहो मेहनायनरिंदेण पिउणो परमभत्तीए सबहुमाणं धारिया समीवे। जद्दिवसं एयमरीरवत्तं नो लहइ तद्दिवसं भोयणं पि परिहरइ नरिंदो। एत्तो य उवरोवरिं एयपउत्तिजाणणत्थं इंति जंति य विज्जाहरा। संपयं च इमिणा मुणीसरेण कयं चाउम्मासखमणं। पज्जंतमुवगए तम्मि 'अज्जदिणे कहमेसो पारिहि ?' त्ति वाउलीहूया अम्हे। एसो य महप्पा पहरद्धगसमए पगुणीकयपडिग्गहो

१ °सणं उ° प्रतौ ॥ २ आत्मविघातम् ॥ ३ अविभावितवचनच्छलसमुच्छलदतुच्छपश्चात्तापः ॥ ४ °यतुब्भ° प्रतौ ॥

जाव चिट्ठइ ताव एयंसंसग्गसमुग्गयविवेयवससमासाइयजाईसरणेण[1] हरिणेण सव्वत्तोपलोयणमुणियतुहसरूवेण आगंतूण दरिसिया चलणेसु निवडिऊणं तहाविहा चेट्ठा। मुणियतदिंगियागारो य एस अणगारो हरिणोवदंसिज्जमाणमग्गो [समा]गतो तुहंतियं ति। ता भो महाणुभाव ! न तुमं सामन्नपुन्नो सि ॥छ॥

इमं च सोच्चा ववगयसव्वपुव्वुत्तकुवियप्पो[2] परमं पमोयपब्भारमुव्वहंतो पसुत्तो रयणीए संगमत्तो । बहुलंघणाणुचियकंदमूल-फलाइवसतो समुप्पन्नं उदरसूलं, जाया बाढं अरई, तहाविहपडियाराभावओ य मरिऊण तीए चेव अवज्झाए नयरीए नरिंदविजयरायग्ग[3]महिसीए सीयानामाए देवीए गब्भम्मि संभूओ पुत्तत्तणेणं ति। जम्मणसम[ए य] एयस्स महादुग्गट्ठियपच्चंतपुहइपालविजएण वद्धाविओ जणगो। कयं[4] च से समहिगहरिसुल्लासपुव्वयं जम्मणवद्धावणयं, बारसाहे य पयट्ठियं[5] सुजओ त्ति नामं। समइक्कंतबालभावो य पढमं पडिवन्नो बाहत्तरीए कलाहिं, पच्छा बत्तीसरायकन्नगाहिं। अवि य—

चउरगुणो भुयदंडुन्नामियकोदंडकोडिभागम्मि[6]। चोज्जमिणं चउदिसि नमइ भीयअरिरायसिरिविसरो ॥ १ ॥
घोरघणथणियविब्भमपयंडकोदंडगुणझणक्कारो[7]। कुणइ अकाले च्चिय रायहंसवग्गं[8] भउव्विग्गं ॥ २ ॥
एगो व्वि से पयावो सक्खा दीसइ दुहा परिणमंतो। हिमसिसिरो पणयाणं इयराण य पलयजलणसमो ॥ ३ ॥

---

१ एतत्संसर्गसमुद्गतविवेकवशसमासादितजातिस्मरणेन हरिणेन सर्वतःप्रलोकनज्ञातत्वत्स्वरूपेण ॥ २ व्यपगतसर्वपूर्वोक्तकुविकल्पः ॥ ३ °यमग्ग° प्रतौ ॥ ४ कयञ्च से प्रतौ ॥ ५ प्रतिष्ठितम् ॥ ६ °दंडनमिय° प्रतौ ॥ ७ घोरघनस्तनितविभ्रमप्रचण्डकोदण्डगुणझणत्कारः ॥ ८ राजहंसाः राजानश्च ॥

ताव कहा इयराणं चागे जाणे नए य विणए य । दक्खत्ते दक्खिन्ने य जाव नो थुव्वई एस ॥ ४ ॥

एवंगुणो य सो पिउणा पइट्ठिओ नियपए । सयं च पडिवन्ना समणदिक्खा । गुरुणा समं गामा-ऽऽगर[नगर]सुंदरं वसुंधरं विहरिउमारद्धो। सुजयमहानरिंदो वि मिउकरकयकुवलयाणंदो चंदो व पइदिणपवड्ढमाणंगो रायसिरिमुवभुंजंतो [वि]-लसइ। अन्नया य अचंतचागेण तुच्छकरग्गहणेण [य] निट्ठिया कोस-कोट्ठागारा । निवेइयमिणं रन्नो तन्निउत्ताहिगारेहिं। विसन्नो य एसो—अहो ! किमेयं जूयपमुहवसणविरहियस्स वि, गरुयदाणजोग्गे वि तुच्छं चिय पयच्छंतस्स वि, लोएहिंतो सव्वं चिय करं गिण्हंतस्स वि एगपए च्चिय कोस-कोट्ठागाराणं रित्तत्तणं ? ति, मन्ने ममाणुचियदाणाइणा एवं भविस्सइ-त्ति वाहराविओ भाणुदत्ताभिहाणो सिरिहरपारिग्गहिओ। पुच्छिओ य एसो—अरे ! अच्छउ ताव सेसं, एत्थ संवच्छरे किं मए कस्स दवावियं ? ति । तेण भणियं—देव ! निसामेसु—

कोटीर्दश सुवर्णस्य चेदीशदयिने ददौ । लक्षवीराय वीराय देवः सौडीर्यरञ्जितः ॥ १ ॥
दुर्लक्षलक्ष्यवेधेन राधावेधविधायिने । नेपालसूनवे तुष्टो निष्ककोट्याचदापयत् ॥ २ ॥
म्लेच्छराजजयावासौ बन्दिवृन्दारकैः स्तुतः । देवस्तेभ्यः प्रहृष्टोऽथ स्वर्णकोटीरकल्पयत् ॥ ३ ॥

१ 'त्यागे' दाने शाने नये ॥ २ चन्द्रपक्षे—मृदुभिः करैः-किरणैः कृतः कुवलयानां-रात्रिविकासिकमलानामानन्दो येन, राजपक्षे—मृदुभिः-अल्पैः करैः-राजग्राह्यभागैः कृतः कुवलयस्य-महीवलयस्य आनन्दो येन सः । पुनश्चन्द्रः प्रतिदिनं वर्धमानानि अङ्गानि-कलारूपाणि यस्य, राजपक्षे तु अङ्गानि-देहावयवानि । 'राजश्रियं' चन्द्रलक्ष्मीं राजलक्ष्मीं च ॥ ३ 'गार नि' प्रतौ ॥ ४ 'श्रीगृहपरिग्रहिकः' भाण्डागारिकः ॥

दक्षेभ्यो दक्षिणात्यीयगाथकेभ्यश्चतुर्दश । हाटकस्य स्फुटं कोटीरदिशद् गीततोषितः ॥ ४ ॥
संवराय कृतोद्दामचित्रमायेन्द्रजालिने । अत्यन्तविस्मयस्मेरो हेमकोटीरदा नव ॥ ५ ॥
तथा कोटीर्हिरण्यस्य पञ्च पञ्चमगानतः । तुष्टः प्रदत्तवान् देवः पथिकाय प्रवासिने ॥ ६ ॥
विचित्रनाट्यविज्ञानतुष्टः कोटयेककाञ्चितम् । सर्वाङ्गीणमलङ्कारं केरलीसादचीकरत् ॥ ७ ॥
उदीर्णाजीर्णसम्भूतज्वरातङ्कविघातिनम् । देवोऽष्टहेमकोटीभिः सद्यो वैद्यमपूपुजत् ॥ ८ ॥
प्रकीर्णदानतो जग्मुः स्वर्णकोटयोऽष्टविंशतिः । पञ्चाशीतिश्च कोटीनां तदेवं सर्वसङ्ख्यया ॥ ९ ॥
इत्थं निवेद्य निःशेषं व्ययस्थूलसमुच्चयम् । भूपतेर्वर्षसम्बद्धं विरराम स बुद्धिमान् ॥ १० ॥

इमं च सोच्चा जायचित्तसंतावो राया भणिउं पवत्तो—के वयं दायारो ? केत्तियं वा दिन्नं ? जमेत्तिएण वि निट्ठिया कोस-कोट्ठागारा, अज्ज वि सुव्वइ—केहिं वि सप्पुरिसेहिं नीसेसा वि सागरावसाणा मेइणी [1]निरिणीकय त्ति, अहं पु[ण] केइवयजणतुच्छयरवियरणे[2] वि कहं सुस्समणो व्व निग्गंथो[3] जाओ म्हि ? अहो ! निप्पुन्नया, अहो ! अदिन्नदाणया, अहो ! विहलालीयसंभावण त्ति । इच्चाइ अप्पाणं झूरंतो विसज्जियसेवागयजणो उवसंहरियपेक्खणयाइवावारो कयपाओसियदेवयापूयाकायव्वो ठिओ सुहसेज्जाए । कट्ठेण समागया निद्दा । विउद्धो य पहायसमए य मंगलतूररवेणं। ततो संपाडियपभायकिच्चो निसन्नो अत्थाणमंडवे । एत्थंतरे विन्नत्तं कोसागाराइनिउत्तेहिं, जहा—देव ! वद्धाविज्जह तुब्भे, केणइ हेउणा न याणामो

१ निरणी॰ प्रतौ । अनृणीकृतेत्यर्थः ॥ २ कतिपयजनतुच्छतरवितरणेऽपि । वितरणं–दानम् ॥ ३ 'निर्ग्रन्थः' निष्परिग्रहः ॥

कणगाइणा भंडारा सबे पडिपुन्ना गयणग्गसिहा जाय त्ति। ततो राया 'ईसिविहडियओट्ठउडाणुमेयपमोयाइसओ पुणो चि जहिच्छाए अच्छिन्नपसरो दाउमारद्धो।

नवरं पणट्ठकोसाइनिसामणेण निउंविया पचंतपत्थिवा, पारद्धा य देसोवद्दवं काउं। सुयं च एयं सुजयराइणा, पयट्टो महया संरंभेण तदुवरि विक्खेवेणं, कइवयपयाणएहिं पत्तो सदेससीमं। जातो य पचंतराईणं महासंखोभाइरे[गे]ण अभया-भक्खणेण व अचंतमइसारो। आलोचियं विज्जेहिं व मंतीहिं रोगुट्टाणं, निच्छियं च तदणुप्पवेसलक्खणं से ओसहं। ततो ते पचंतराइणो लंबंतमुक्ककेसकलावा कंठारोवियकुठारा सेवं पवन्ना सुजयरन्नो, दिन्नाभयप्पयाणा य गया जहागयं।

राया वि कोउगेण इओ तओ काणणंतरेसु वियरंतो पविट्ठो वहलतलतमालसामलमेगं वणनिगुंजं। पेच्छइ य तत्थ—

आयावणभूमिगयं उवरिधरिज्जंतसेय[ध]य-छत्तं। पुरतो पढंतमागहमइसयसुंदरागारमेगमणगारं ॥ १ ॥

ततो दूराउ चिय पम्मुक्करायरिहंचिंधो पडिओ साहुणो चलणेसु। 'कहिं मए एवंविहं रूवं दिट्ठं?' ति ईहा-ऽपोहा-इपयट्टेण य सरिओ पुवभवो, जाणितो परमत्थो। विन्नत्तो य मुणी—भयवं! परियाणह तुब्भे ममं? त्ति। साहुणा भणियं—भो देवाणुप्पिया! न सम्मं परियाणामो। राइणा भणियं—सुवेलसेलपरिसंठिएहिं कुरंगदंसिज्जमाणमग्गेहिं तुब्भेहिं चाउम्मासियपारणगे तहाविहकंदफलाइग्गहणेण जोऽणुग्गहिओ सो हं तद्दिणरयणीए अणुचियाहारसमुप्पन्नपोट्टसूलो

१ ईषद्विघटितौष्ठपुटानुमेयप्रमोदातिशयः ॥ २ गर्विता इत्यर्थः ॥ ३ 'विक्षेपेण' सैन्येन ॥ ४ 'अभयाभक्षणेन' हरीतकीभक्षणेन इव अत्यन्तम् 'अतिसारः' विरेचनम्। आलोचितं च वैद्यैरिव ॥ ५ "रिसिचिं" प्रतौ। प्रमुक्तराजार्हचिह्नः ॥ ६—वसोत्पन्नोदरशूलः ॥

तइया मरिऊण तुम्ह पसाएण कोसलदेसाहिवत्तणं पत्तो, धन्नो य अहं जेण विजियकप्पपायवं संसारारण्णवत्तीणं जंतूणं परमदुल्लहं तुह दंसणं लद्धं ति।

एत्थंतरे 'भोयणपत्थावो' त्ति विन्नत्तो सूवगारेणं राया। ततो हरिसुल्लसंतरोमंचकंचु[इ]यकाएण[1] वंदिऊण रन्ना 'कुणसु भयवं! पसायं जहासिद्धअसणाइगहणेणं' ति निमंतितो साहू। 'पक्खदिणपारणगं' ति जुगमेत्तखेत्तदिद्विपसरो रायाणुमग्गेण गतो रायावासं। लूहिया केसपा[सेण] से चलणा रन्ना, निज्जीवपएसे दिन्नमासणं, निसन्नो साहू। 'तम्मिमुत्तमं पत्तं, सा य एसा विसिट्ठदेयसामग्गी, सो य एसो एगंतविसिट्ठो दाणपरिणामो, सव्वहा सहलीहूओ[2] अज्ज घरवासो' त्ति हरिसपगरिसमुव्वहंतेण[3] नरिंदेण असण-पाण-खाइम-साइम-वत्थ-कंबल[4]-भेसहाईणि पणामियाणि तस्स। साहुणा वि उग्गमुप्पायणेसणाविसुद्धिं परिभाविऊण जहोवयारं अरत्त-दुट्ठेण गोणीवच्छ[5]गचत्त[6]गहणनाएण गहियं किं पि। वंदितो य सपरियरेणं रन्ना। गतो सो जहागयं।

परिचत्तसयलवावारंतरेण य पुहईवइणा पज्जुवासिओ कइवयदिवसाणि। जाणिओ मुणिमुहातो जिणिंदधम्मपरमत्थो।

---

१ हर्षोल्लसद्रोमाञ्चकञ्चुकितकायेन ॥ २ सलहीहू° प्रतौ। सफलीभूतः ॥ ३ हर्षप्रकर्षमुद्वहमानेन ॥ ४ °कंवणभे° प्रतौ ॥ ५ 'गोवत्सकत्यक्तग्रहणन्यायेन' यथा गोः वत्सः मनुष्यैः त्यक्तं–शेषतया रक्षितं स्वमातुः दुग्धं गृह्णाति–पिवति तद्वद् मुनिरपि लोकैः शेषतया रक्षितं यत्किमपि आहारादि भिक्षायां गृह्णाति इत्यसौ **गोवत्सकत्यक्तग्रहणन्याय** उच्यते; यद्वा यथा गोवत्सः–वत्सतरः चारीं चरन् शेषरक्षणेन चारीं गृह्णाति–चरति, न तु समूलोत्खातं चरति, एवं मुनिरपि शेषरक्षणेन भिक्षाचर्यां चरति इत्ययमपि **गोवत्सकत्यक्तग्रहणन्याय** उच्यत इति; एवमुभावप्यर्थावत्र मुनिगोचरचर्यागां सङ्गताविति ॥ ६ °गवत्त° प्रतौ ॥

पत्थावे य समुप्पन्नवेरग्गेण विन्नत्तो मुणी—भयवं ! सबहा कुणसु कोसलपुरीए विहारं, जेणाहं पुत्तारोवियरज्जभरो तुम्ह समीवे पवज्जं अणुचरामि। मुणिणा भणियं—महाराय ! जुत्तमेयं तुम्हारिसाणं, वयमवि वट्टमाणजोगेण एवं काहामो त्ति।

ततो वंदिऊण विज्जाहररायरिसिं गओ राया सनयरिं। निवेइतो निययाभिप्पाओ मंति-सामंताईणं। अणुमन्नियं तेहिं। निरूवाविय अभिसेयजोग्गं लग्गं पइट्ठिओ पुत्तो रज्जे, काराविओ बंदिमोक्खो, उग्घोसाविया अमारी, पारंभिया जिणभवणेसु महूसवा, दवाविय तिय-चउक्क-चच्चरेसु दीणा-ऽणाहाईणं दाणं।

संपत्तो य समुचियसमए भयवं विज्जाहररायरिसी। महया रिद्धिवित्थरेणं रायसुयसयसमेएण य पवन्ना रन्ना तदंतिए दिक्खा, संवेगसारं च पवत्तो संजममणुट्ठिउं। विहरंतो य गुरुणा समं गतो य पोयणपुरं नयरं। तहिं च सो पालियजहुत्तसामन्नो मरिउं अच्चुए कप्पे देवत्तणेण उववन्नो त्ति। 'सम्ममाराहियं' ति अहासन्निहियदेवेहिं [कया] से निसीहियामहिमा।

गाढकोऊहलाउलिज्जमाणेण य पुच्छिओ गुरू लोगेणं—भयवं ! को एस महप्पा महप्पभावो समणसीहो जस्स सुरेहिं पि एवं वड्डिज्जइ ?। ततो विज्जाहररायरिसिणा सिट्ठो सवो मूलातो आरब्भ तव्वुत्तन्तो। तं च जहट्ठियमवगम्म विम्हियमणेण भणियं जणेण—भयवं ! थोवंतहाविहदाणाओ वि कहमेवंविहपरमफलवित्थरुत्थंभियसुकयकप्पपायवुप्पाओ संभवइ ?। गुरुणा भणियं—सुणसु,

१ °भियन्तेहिं प्रतौ ॥ २ स्तोकतथाविधदानादपि कथमेवंविधपरमफलविस्तरोत्तम्भितसुकृतकल्पपादपोत्पादः ॥

जह सुकुमारमहीए तणुं पि वीयं जलेण संसित्तं । जं[1]णइ महंतं विड[2]विं गुरुविडवाडोवरमणिज्जं ॥ १ ॥
तह थेवं पि सुपत्ते स[3]द्धाजलसित्तमोप्पियं दाणं । जणइ जणाणमवस्सं म[4]हल्लकल्लाणवल्लिघणं ॥ २ ॥
वत्थ-ऽण्ण-पाण-भेसह-कंबल-सेज्जा-ऽऽसणाणमेक्केक्कं । उवउत्तं साहूसुं किं व सुहं तं न जं कुणइ ? ॥ ३ ॥
इयरम्मि वि उवयरियं पच्चक्खं दिट्ठमिट्ठफलजणगं । किं पुण महग्घगुणरयणरोहणेसुं सुसमणेसु ॥ ४ ॥
मुणिवसहो नित्थामो दुवहसंजमभरं न वोढुमलं । ता तदुवट्ठुवगरणं इट्ठं अन्नाइदाणमिणं ॥ ५ ॥
आ[5]ह कहं संजमवज्जियस्स लिंगावसेसमेत्तस्स । एवं सइ दाणविही विसिट्ठफलया हवइ गिहिणो ? ॥ ६ ॥
तद्दाणोवग्गहिओ अणिट्ठचेट्ठासु वट्टइ वि[6]संकं । तक्कारवणेण गिही अच्चंतं दोस[7]वं नेओ ॥ ७ ॥
सच्चमिणं जइ दाया करेज्ज एवंविह नणु विकप्पं । दंसि अहं जेण इमो वट्टइ अविसिट्ठचेट्ठासु ॥ ८ ॥
अह दं[8]रिसणाणुरागेण धम्मखिंसानिवारणट्ठाए । लिंगि त्ति उचियदाणे कह गिहिणो वुच्चई दोसो ? ॥ ९ ॥
ई[9]हरा [से]णियराया सुरमुणिमीणग्गहं निवारिंतो । सामुल्लावपुरस्सरमसारसम्मत्तवं हवउ ॥ १० ॥

१ जइन स° प्रतौ ॥ २ 'विटपिनं' वृक्षं गुरुविटपाटोपरमणीयम् । विटपः—शाखा पल्लवविस्तारश्च ॥ ३ श्रद्धाजलसिक्तमर्पितम् ॥ ४ महाकल्याणवल्लिघनम् ॥ ५ °ह अहं प्रतौ ॥ ६ निःशङ्कम् ॥ ७ दोषवान् ज्ञेयः ॥ ८ दर्शनानुरागेण धर्मनिन्दानिवारणार्थाय ॥ ९ इतरथा श्रेणिकराजा सुरमुनिमीनग्रहं निवारयन् । सामोल्लापपुरस्सरम् असारसम्यक्त्ववान् भवतु ॥ अत्रार्थे इदं शास्त्रोपनिबद्धिदां पारम्पर्यम्—एकदा किल मगधराजश्रीश्रेणिकस्य सर्वदार्ढ्यपरीक्षार्थं कश्चित् सुरः तद्गमनमार्गान्तः साधुरूपेण जलमध्याद् मत्स्यान् गृह्णाति । व्रजता च तेन वर्त्मना मगधराजेन मीनग्रहणप्रवृत्तः स कृतकमुनिः साम्ना निषिद्धः सन् प्रोचान्,

न य धम्मखिसयजणमुवइट्ठं एयमवि न वत्तव्वं । परमं अबोहिबीयं एयं तिवाइभणणाओ ॥ ११ ॥
इमिणा अवन्नवाओ वि वज्जणीयत्तणेणमवसेओ । जइ होज्ज गुणलवो वि हु ता तग्गहणं चिय विहेयं ॥ १२ ॥
प्ररपरिवाए परदोमदंसणे परविहंडणे य रया । हारिंति ही ! सकज्जं मूढ त्ति कयं पसंगेण ॥ १३ ॥
नियभूमिगाणुरूवं जहोचियं दाणधम्ममकुणंतो । उद्धरिही अप्पाणं भवकूवाओ कहं च गिही ? ॥ १४ ॥ किञ्च—

शास्त्रार्थचिन्तन-परप्रतिबोधना-ऽर्थव्याख्या-तपो-विनय-संयम-सत्त्वरक्षाः ।
क्षुत्पीडितो यतिरलं न विधातुमस्माद्, धीरैरगधर्त उपग्रहदानधर्मः ॥ १ ॥
द्यूता-ऽनल-क्षितिप-तस्कर-वारि-वेश्या-दायाद-तर्कुक-सुहृत्सुतभोगभङ्गि ।
वित्तं विमूढहृदयो हि विदन्नपीदं, साधूपयोगि न करोति तदाऽन्तरायः ॥ २ ॥
तत्पाणिपङ्कजपुटीमटतीव लक्ष्मीः, स्वप्नेऽपि वाञ्छति न तं विपदुद्धताऽपि ।
यस्यानिशं सुमुनिदानविधौ रमन्ते, वाक्काय-चित्तकरणानि शरीरभाजः ॥ ३ ॥

यत्—राजन् ! त्वं न जानासि परमार्थम्, किन्न सर्वेऽपि साधवो मादृशा एव । तथाऽप्यनुपशममप्राप्नुवता मगधेशेन पुनरप्यसौ मीनग्रहणप्रवृत्तः सुरमुनिः साम्नैव प्रतिबोधितः सन् स्वं रूपं प्रकटीचकार । स्तुत्वा च मगधापुरेशधर्माचलत्वं स नाकी नाकलोकमलञ्चक्रे ॥

१ अत्र सन्धिर्न विहित इत्यसन्धित्वदोषः ॥

इति नियतमनिष्टाद्रीन्द्रवज्रोपमानं, शुभनिवहनिधानं यत्युपष्टम्भदानम् ।
खचरनृपमहर्षिः कीर्तयित्वा सभायाः, कृतविहरणबुद्धिः शिश्रिये स्थानमन्यत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे यत्युपष्टम्भदानाधिकारे सुजयराजर्षिकथानकं समाप्तम् ॥ १८ ॥

कुग्रहत्यागे विमलोपाख्यानकम् १९ ।

कुग्रहस्य स्वरूपम्

सम्मत्ताइगुणेसुं पुव्वुत्तेसुं पयट्टमाणो वि । कुग्गाहवं विसीयइ ता तच्चागे जएज्ज दढं ॥ १ ॥
तुच्छा[1] बुद्धी थोवं पयत्थविसयं च नूण विन्नाणं । भावा अइंदिया केवलीण विसया परं हुंति ॥ २ ॥
जो तेसु वि समईगारवेण सुंदर-असुंदरविवेओ । विहि-पडिसेहपहाणं परूवणं वा तयं मोहो ॥ ३ ॥
कुग्गहिणो[3] वि सरूवं जत्थ मई तत्थ नेइ जुत्तीओ । इयरो य अन्नहा तेण निंदियं कुग्गहग्गहणं ॥ ४ ॥
नियमइपमाणयाए[4] पयट्टमाणे समत्थकिच्चेसु । अइसइनाणीण गिरं गरुयं पि असारयं निंति ॥ ५ ॥
तह भावम्मि अतीए अइदुक्करकारिणो वि सीयंति । विज्जयविवज्जियाए[5] किरियाए रोगविहुर व्व ॥ ६ ॥
जह[6] मंत-[तंत-]जोइस-चिगिच्छसत्थाइ अइसइपणीयं । कज्जकरं तह समईविगप्पियं न उण थेवं पि ॥ ७ ॥

---

१ यतेत ॥ २ °च्छा वुद्धी थो° प्रतौ ॥ ३ कुग्राहिणोऽपि स्वरूपं यत्र मतिः तत्र नयति युक्तीः । 'इतरश्च' सद्ग्राही च 'अन्यथा' यत्र युक्तिः तत्र मतिं नयति, तेन निन्दितं कुग्रहग्रहणम् ॥ ४ निजमतिप्रमाणतया प्रवर्तमानाः समस्तकृत्येषु । 'अतिशयिज्ञानिनां' तीर्थकृतां गिरं गुर्वीमपि असारतां नयन्ति ॥ ५ वैद्यकविवर्जितायां क्रियायाम् ॥ ६ जइ मं° प्रतौ ॥

इहलोइयं पि कज्जं कुणंति जे कुग्गहं अणिग्गहिउं । ते पाउणंति निंदं न य कज्जं किं पि सोहिंति ॥ ८ ॥
[किं पुण सव्वन्नुपयासियम्मि अत्थम्मि कुग्गहो जोउ । हो]ज्ज न सोऽनत्थकरो ? विमलस्स व मंतिपुत्तस्स ॥९॥

तहा हि—अत्थि वच्छावच्छत्थलीभूयं, भुयणत्तयपडिबिंबं व असुर-सुर-नरसुंदरमंदिरपरिगयत्तणेण, तिणीकयतिणयणावासमहिमं हेमपुरं नयरं । तहिं च उवज्झाओ नयसत्थत्थपत्थावणेण, [कुलगुरू सप्पुरिसमग्गगामित्तणेण,][1] ....[कप्प]रुक्खो चिंतियफलपयाणेण, गणणा[इ]कंतगुणरयणमयरहरो हरितेओ नाम राया ।

नंयरक्खियगोमंडललद्धं दुद्धं व जस्स जसमसमं । बंभंडभंडयाओ पयावकढियं व लुठइ बहिं ॥ १ ॥

तस्स य रन्नो रत्ता विव रविणो रोहिणि व्व ससिणो विजया नाम देवी । [विसुद्धबुद्धिपगरिसागरो सागरो से अमच्चो ।][2] ....[एवं च] रज्जसुहाणि अणुभुंजमाणा सवे दिणाइं गमिंति । अवरवासरे रन्नो अमच्चस्स य समकालं जाया पुत्ता, कयं वद्धावणयं, पइट्ठियं रायसुयस्स सूरतेउ त्ति नामं मंतिसुयस्स य विमलो त्ति । दो वि

---

१ अनिगृह्य ते प्रगुणयन्ति ॥ २ साधयन्ति ॥ ३ अत्र हस्तलिखिततालपत्रीयप्रतिसत्कं पत्रम् एकपार्श्वतः प्रान्तभागे घृष्टकुसिताक्षरं वर्तते, अतोऽत्र यान्यक्षराणि सर्वथा न दृश्यन्ते तत्स्थाने सूक्ष्मबिन्दवः स्थापिताः, यानि च अक्षराणि कथञ्चन वाच्यन्ते शङ्कितानि च तानि चतुरस्रकोष्ठकान्तः स्थापितानि सन्तीति ॥ ४ तृणीकृतत्रिनयनावासमहिमम् । त्रिनयनावासः—कैलासः—हिमालयः ॥ ५ अत्र अष्टादशाक्षराणि न वाच्यन्ते ॥ ६ नयेन—विधिना न्यायेन च रक्षितात्—पालिताद् गोमण्डलात्—गवां समूहाद् महीमण्डलात् च लब्धं यस्य असमं यशः दुग्धमिव ब्रह्माण्डभाण्डात् 'प्रतापक्वथितमिव' प्रतापेन—अग्न्युष्मणा राजतेजसा च क्वथितमिव लुठति बहिः ॥ ७ दुद्धं च जस्स जसमजसं प्रतौ ॥ ८ अत्र द्वादशाक्षराणि न दृश्यन्ते ॥

समकालजम्मणाणुभावेण य वड्ढमाणपीइणो समगं कीलंति, समगं भमंति, समगं भुंजंति, न परोप्परविरहिया मणागं पि चिट्ठंति । अट्ठवारिसिया य खेत्ता लेहसालाए । पढियसमुचियकलाकलावा य कीलंता ते अमच्चभवणं गया, दिट्ठा भत्त-पाण-निमित्तमागएण मुणिसंघाडएणं । तम्मज्झाओ जेट्ठेण अइसइनाणिणा 'विजणं' ति सिट्ठमियरस्स, जहा—एयाणं कुमाराणं एगो कुडिलबुद्धी कुगइगामी य, इयरो य पयइपसन्नमइविभवो पयइभद्दो सुगइगामी य । इमं च कडगंतरिएणं निसामियममच्चेण । जायविम्हयभरेण य चिंतियमणेण—अहो ! किंनिमित्तं [एवं] जंपियमणेण साहुणा ? न ताव राग-दोसाइवियारो संभाविज्जइ एयस्स पैंतोयण[3]विरहातो, न य वितहभासणे निमित्तं किं पि संभाविज्जइ धम्मकिच्चेसु सज्जमाणातो, ता निच्छियं अवितहमेयं वयणं, केवलं 'को पुण एयाण कुमाराण मज्झातो एवंविहसरूवो ?' त्ति न मुणिज्जइ निच्छ[य]ओ, ता तज्जाणणत्थं करेमि किं पि उवायं-त्ति विभाविऊण भूमीए आलिहिया देवयापडिमा । भणिया य कुमारा—पुत्ता ! एयं उल्लंघिऊण आगच्छह जेण तुम्ह आरोग्गया कल्लाणपरंपरा य संभवइ त्ति । ततो रायसुतो चिंतिउं पवत्तो—'न जुत्तमेयं, समग्गकुसलपंचूहो[6] क्खु एसो पूयणिज्जपूयाविइक्कमो' त्ति विभाविय तेण भणियं—नाहमिमं लंघयिस्सामि । बीओ भणितो । तेण पुण वयणाणंतरमेव अइक्कंता एसा । ततो ज्झत्ति चमकिओ अमच्चो अंतोपसरंतगरुयसंतावो वि आकारसंवरं काऊण रायसुयं पुच्छइ—वच्छ ! कीस तुमए पडिमा न लंघिय ? त्ति । रायसुएण भणियं—

१ कथितम् ॥ २ कटकः-यवनिका ॥ ३ प्रयोजनविरहात् ॥ ४ °सु सुज्ज° प्रतौ ॥ ५ 'सजमानात्' तत्वरात् ॥ ६ °पच्चूहो प्रतौ ॥ ७ विचार्येत्यर्थः ॥ ८ परित्ता न लंघयति । राय° प्रतौ ॥

मूर्ति-
विषयकं
चार्चिकम्

जो भूमीयलविलुलंतसीसकेसुच्चएहिँ निचं पि । पणमिज्जइ पूइज्जइ वंदिज्जइ संथुणिज्जइ य ॥ १ ॥

सो कह भूमीयलविलिहिओ वि कँयठावणो वि अक्खादो । अइलंघिउं हि जुत्तो अभत्तिभावा अजुत्तमिणं ॥ २ ॥

जंप्पयपसायणाओ वंछिज्जइ कामियत्थसंपत्ती । सो मणसा वि न जुत्तो अइलंघेउं किमुय वेयसा ? ॥ ३ ॥

जो पूइओ पसीयइ रूसइ आसाइओ स नियमेण । ता पूयणिज्जपूयावइक्कमो सव्वहाऽणुचिओ ॥ ४ ॥

तओ पुच्छिओ मंतिणा नियपुत्तो—वच्छ ! जइ एवं ता कीस तुमए देवयारूवमइलंघियं ? ति । तेण भणियं—ताय ! जहतहरेहाविलिहणमेत्तसंपत्तदेवयारूवे वि को अइलंघणदोसो ?–त्ति लंघिया मए एसा, परमत्थो य एसो, अन्नहा रेहामेत्तसंभविभुयंगसंगमाओ वि दंससंभवो, चित्तविलिहियकरवालाइनिसियसत्थफरिसणाओ वि सरीरच्छेयाइदोसप्पसंगो, ता न जहतहदेवयागाराइलंघणाइणा अकल्लाणसंका काउमुचिय त्ति । ततो मंतिणा पलोइँयं रायसुयवयणं । ततो भणिओ सो रायसुएण—भद्द ! अणुचियमुल्लवसि,

सौयाराऽणायारा नामस्स वि ठावणा वि पुज्जाणं । तब्बुद्धिभावजणगत्तणेण पूयारिहा चेव ॥ १ ॥

तप्पूयणा-ऽवमाणणजणिया दीसंति अत्थ-ऽणत्था य । ता कह निब्विसया होज्ज आगिई देवयाईण ? ॥ २ ॥

जं च तए भणियमिणं न हु रेहासंभवो डसइ भुयगो । न हु चित्तविलिहियं पि हु पहरणमंगम्मि पक्कमइ ॥ ३ ॥

---

१ कृतस्थापनोऽपि अक्षादौ । 'अक्षादौ' इति सिद्धसंस्कृतरूपात् 'अक्खादो' इति प्रयोगसिद्धिः ॥ २ यत्पदप्रसादनात् ॥ ३ वपसा प्रतौ । वचसा, उपलक्षणात् कायेनाऽपीति भावः ॥ ४ °इउं रा° प्रतौ ॥ ५ साकाराऽनाकारा ॥

अणुचियमिमं पि हु जओ तव्विहझाणुब्भवंतमाहप्पा । एवंविहभावो सिं[1] दीसई सीसइ य कुसलेहिं ॥ ४ ॥
विमलेण ततो भणियं कंटगवेहे वि भुयगसंकाए । जइ होइ विसविगारो अन्नत्थ वि सो तहा नेओ ॥ ५ ॥
ता संक च्चिय दोसाण नूणमेवंविहाण जणिगेयं । तच्चागे चत्तो च्चिय दूरे एवंविहो दोसो ॥ ६ ॥
रायसुएणं भणियं जइ एवं ता सि णेह न उ देहं (?) । खाउ विसं निस्संको होऊणं कीस सो भाइ ? ॥ ७ ॥
ता[2] ते निव्विसए च्चिय संका दोसाण साहिगा जुत्ता[3] । नत्थियवाओ[4] इय मो[5] सलाहणिज्जो न कुसलाण ॥ ८ ॥
एवंविहो य भावो न भाविभद्दस्स संभवइ पायं । न य तज्जम्मे वि न दुक्खकारओ नूण हरिणो व ॥ ९ ॥
अमच्चेण भणियं—रायसुय ! को एस हरी ? । कुमारेण जंपियं—निसामेसु,

हरेः कथानकम्

कुल्लागपुरे[6] नयरे एगो उच्छन्नवंसकुलपुत्तओ [हरी नाम] दोगच्चदंतो तण-कट्ठोवाहरणेण[7] जीवइ । अन्नया य जायमवरिसणं[8], निट्ठियमासन्नतण-कट्ठाइयं । ततो पच्छयणसमेओ[9] सो दूरयरदेसाउ उवाहरियतण-कट्ठाइणा जीविउं पवत्तो । एगम्मि य दिणे तण-कट्ठुच्चयं कुणंतेण रय-कयवरपच्छाइयसरीरा पायडसीसमेत्ता दिट्ठा अणेण जक्खपडिमा । पहिट्ठो एसो, 'जइ पुण एत्तो वि दारिद्दावगमो हवइ' त्ति आढत्तो पुप्फाईहिं पूइउं । गयाणि केच्चिराणि वि दिणाणि, न मणागं पि पसंतो जक्खो । 'मुक्खो लो[ओ] देवयापूयणाइणा अप्पणो कल्लाणं मग्गइ' त्ति विपडिवन्नो एसो पारद्धो सिला-गल-लिंड-डहणाइणा

१ सिं, न दी° प्रतौ ॥ २ ता तो नि° प्रतौ ॥ ३ जुत्ता प्रतौ ॥ ४ नास्तिकवादः ॥ ५ 'मो' इति पादपूरणार्थकमव्ययम् ॥ ६ कल्ला° प्रतौ ॥ ७ तृणकाष्ठोपाहरणेन ॥ ८ 'अवर्षणम्' अनावृष्टिः ॥ ९ पथ्यदनं-शम्बलम् ॥

उवसग्गिउं। पइदिणतहाविहगंधविधुरियसरीरो जक्खो विचिंतेइ—अहो ! कीणासचयणं पविसिउकामस्स मोक्खेलोयस्स दुविलसिएसु पयत्तो जं एवं अम्हारिसेसु वि च्छड्डिज्जइ, ता दंसेमि सव्वंकसविणासकरणेण दुव्विणयफल-न्ति विभाविय पच्चक्खीहूओ एसो जंपिउं पवत्तो—भो कुलपुत्तय ! तुह असरिसभत्तिपगरिसेण दूरमागरिसियं मह हियय, ता इमं गंधगुडियं घेत्तूण वच्चसु सगिहं, दुवारनिरोहं काउं सपरिवारो गेहब्भंतरे दहिऊण गंधं गेण्हेज्जासि जेण कयकिच्चो होसि त्ति। 'अउ च्चिय कज्जकारि' त्ति पहिट्ठो सायरगहियगंधगुलिगो गतो सगिहं। 'तह' त्ति निवत्तियं सव्वं, गतो य तग्गंधदोसेण निहणं ति॥ ७ ॥

ता मुंच कुग्गहं मंतिपुत्त !, वच्चसु पसिद्धमग्गेण, कुविगप्पणाए इहरा पाणेण वि काहिसि विणासं। एमाइभूरिभणितो वि कुग्गहाओ न थेवं पि विरओ चिम्मलो, केवलं मोणमवलंबिऊण ठिओ। ततो मंतिणा परिभाविय—अहो ! जो साहुणा सिट्ठो कुडिलबुद्धी दुग्गइगामी य सो एस निच्छियं मह पुत्तो, इयरो य रा[य]सुओ त्ति, ता किमियाणिं काउमुचियं ? दुपुत्तपज्जवसाणाणि कुलाणि, सव्वहा वाढमणिट्ठमुवट्ठियमिमं-ति चिंतापब्भारसमुट्ठितवियप्पकल्लोलाउलस्स तस्स समागतो रायपुरिसो। भणियं च तेण—देवो वाहरइ त्ति। ततो कयायारसंवरो गतो रायसमीवं अमच्चो। कुमारा वि पारद्धकिच्चेसु वट्टिउं पवत्ता। सुहासणासीणो य संभासिओ अमच्चो राइणा—भो ! किमेवं कालविलंबो तुह ? कसिणवयणया य ? त्ति। मंतिणा भणियं—देव ! न किं पि ताव निमित्तं, एवमेव जइ परं। राइणा जंपियं—होयव्वं निच्छियं केत्तिएण वि कार-

१ °म्स सोम्ख° प्रतौ॥ २ मूर्खलोकस्य॥ ३ असदृशभक्तिप्रकर्षेण दूरमाकृष्टम्॥ ४ गन्धवटिकाम्॥ ५ °धलुलि° प्रतौ॥ ६ चिन्ताप्राग्भारसमुत्थितविकल्पकल्लोलाकुलस्य॥ ७ कृताकारसंवर॥ ८ कृष्णवदनता॥

णेण, ता अवस्सं जहट्ठियं साहेसु। 'अहो! देवस्स आगारिंगियाइकुसलत्तणं' ति विभाविंतेण मंतिणा सिट्ठो एगंतट्ठियस्स राइणो सव्वो पुव्ववुत्तंतो। वियाणियदोमणस्सनिमित्तेण य भणियं रन्ना—भो अमच्चवर! मुंच संतावं, कुणसु सुयवि[ण]यणे पयत्तं। अमच्चेण भणियं—देव! जा जस्स पयई सा तस्स विणयणसएण वि न अन्नहा काउं पारियइ। रन्ना जंपियं—अत्थि एवं, केवलं साइसयपुरिसपरिग्गहेण असुहसहावो वि सुहसहावत्तणं पवज्जइ, तहा हि—अप्पडिममंतमाहप्पपुरिसपरिजवियं विसं पि रसायणभावं पवज्जइ, अइदुस्सहो वि हुयवहो हिमसिसिरसिरिमवलंबेइ, वियडफडाडोवदुप्पेच्छो वि भुयंगो रज्जुकरणिमणुसरइ, ता केत्तियाइं तुह कहिज्जंति एवंविहसंनिहाणगाइं? सव्वहा मुक्ककुवियप्पो जेण मुणिणा तुह सुयसरूवं वियाणियं तं चेव कहिं पि उवलंभिऊण एयस्स विणयणत्थं निजुंजाहि, जेण नाइमग्गे इमो लग्गइ त्ति। 'जं देवो आणवेइ' [त्ति] नीहरिओ रायभवणाओ मंती। गुरिसपेयालपेसणेण सव्वत्थ पलोयाविओ सो तवस्सी, दिट्ठो य कुसुमसेहराभिहाणे उज्जाणे। ततो महया रिद्धिवित्थरेणं दोहिं वि कुमारेहिं समं समणसमीवे गतो, परमायरपुरस्सरं च तच्चरणसरोरुहं पणमिऊण निविट्ठो अमच्चो, सिरोवरि रइयपाणिसंपुडो य विन्नविउं पवत्तो—

भयवं! कुणसु पसायं दुन्नयमयरायरे निवडिराणं। अम्हारिसाणपुवएसजाणवत्तप्पयाणेण ॥ १ ॥

सविसेसं पुण एयाण अम्ह कुमराण बालपयईण। ईसरियाइमहामयपच्छाइयसुद्धबुद्धीण ॥ २ ॥

---

१ विज्ञातदौर्मनस्यनिमित्तेन ॥ २ 'रज्जुकरणिं' रज्जुसादृश्यम् ॥ ३ संनिधानकानि-कथानकानि ॥ ४ नातिमार्गे ॥ ५ प्रधानपुरुषप्रेषणेन ॥ ६ दुर्नयमकराकरे निपतनशीलानाम् अस्मादृशाम् उपदेशयानपात्रप्रदानेन ॥ ७ ऐश्वर्यादिमहामदप्रच्छादितशुद्धबुद्धीनाम् ॥

तो मुणिणा करुणाभरमंथरपम्हउडनयणनलिणेण । साहारणधम्मुवएससारमिय भणिउमाढत्तं ॥ ३ ॥
अच्चंतं गुरुपणई देवेसु य पूयणापराऽभिरुई । सत्थत्थसवणचिंता जहसत्तीए य तक्करणं ॥ ४ ॥
मन्नाण माणणं चिय उचियपवित्तीए वैत्तणं सम्मं । परपरिवायच्चाओ अमदग्गहचजणं जत्तो ॥ ५ ॥
सपणयपुव्वुल्लावो अजुत्तकरणम्मि दढयरं लज्जा । नैयभंगभीरुभावो भवविगुणविभावणा बुद्धी ॥ ६ ॥
लोगविरुद्धविवज्जणमणुदिणदीणप्पयाणपरिणामो । वय-नाणवुड्ढ-सुविय्ड्डसेवणं गुणिसु उवयरणं ॥ ७ ॥
दुत्थियजणाणुकंपा अँपक्खवाएण नायवागरणं । परपीडापरिहारो सुदीहदरिसित्तनिउणत्तं ॥ ८ ॥
एमाइ तह कहं पि हु जइणा कायव्ववित्थरो सिट्ठो । जह तेसिं भद्दगाण वि जाया जिणसासणेऽभिरुई ॥ ९ ॥
नवरं वेलुयकवलो व नीरसं तं न रोयइ कहं पि । विमलस्स सुंदरं पि हु खीरं पिव पित्तविहुरस्स ॥ १० ॥

एवं च खीरासवलद्धित्तणेण मुणिणो पइदिणजिणसासणपणीयपयत्थपरूवणं निसामित्ता मंतिपमुहा जीवा-ऽजीवाइ-वियारकुसला जहट्ठियावधारियपुन्न-पावा-ऽऽसव-संवर-बंध-निज्जरा-मोक्खसरूवा जाय त्ति । नवरं मुग्गसेलो व कुग्गहपरिच्चायं पडुच्च अणवरयमुणिवरोवएसवारिधारासिच्चमाणो वि न मणागं पि भिन्नो मंतिपुत्तो । अहह ! मंदपुन्नया, जं तहाविहस्स वि गुरुणो अणुसासिंतस्स ते चिय धम्मोवएसा एगोसिं कुग्गहनिग्गहे ण परिणय त्ति । कइवयदिणावसाणे य अन्नत्थ विहरिओ मुणिवरो । रायसुय-मंतिपमुहा य परमसम्मद्दिट्ठिणो, अखोभणिज्जा देव-दाणवाणं पि, 'जिणसास-

१-पक्ष्मपुट-॥ २ मान्यानाम् ॥ ३ वर्त्तनम् ॥ ४ नयभङ्गभीरुभावः । नय—नीतिः ॥ ५ अभपक्ख° प्रतौ । अपक्षपातेन न्यायप्रकटीकरणम् ॥

णमेव अट्ठो, सेसो अणट्ठो' त्ति मन्नमाणा कालं वोलेंति ।

अन्नया य सुमिणरमणीयत्तणेण संसारियभावाण दिवंगतो हरितेयभूवई । पइट्ठिओ य तप्पयम्मि सूरतेयरायसुओ, पणिवइओ मंति-सामंताईहिं, धम्म-लोगाविरुद्धवित्तीए य रायसिरिमुवभुंजिउं पवत्तो । सागरो वि अमच्चो मच्चुमवलोइऊण रायणो 'अप्पणो वि एस च्चिय गइ' त्ति चिंततो राइणो निवेइऊण पवन्नो पवज्जं । सूरतेयराइणा वि पइट्ठिओ पिउणो पए विमलो । चिंतेइ सो रज्जकज्जाइं । [एवं] वच्चंति वासरा । अह समहियभुत्तस्स व अजिन्नुग्गारा कयसविसभोयणस्स व विसवियारा [स विमलामच्चो] वियंभिउं पवत्तो—

जं सुत्ते निद्दिट्ठं तं चिय कुसलाण जुज्जए काउं । लोयपवाहेणं पुण कुणमाणाणं च मिच्छत्तं ॥ १ ॥
ता चिइवंदणविसए तिहिं चेव थुईहिं वंदणा जुत्ता । वेयावच्चगरा[2] चिय अविरयभावा न थुइजोग्गा ॥ २ ॥
सिद्धत्थए[3] वि तिसिलोगमेत्तयं सेसयं न पढणिज्जं । पच्छा सबुद्धिपरिकप्पणाए रइयं ति हेयव्वं[4] ॥ ३ ॥
सुत्तेणं अत्थेण य जइ सुद्धं जुज्जए तया काउं । चिइवंदणं पि इहरा अविहिकयाओ [य] वरमकयं ॥ ४ ॥
जिणपडिमा वि हु विहिणा कया परं होइ वंदणाइपयं[5] । अविहिअणुमोयणाओ इयरा[6] पुण पावहेउ त्ति ॥ ५ ॥
जिणपूयणाइ वि परं कम्मक्खयगोयरं चिय विसिट्ठं । धण-पुत्ताइनिमित्तं तं पि हु मिच्छत्तमवसेयं ॥ ६ ॥

१ राज्ञः ॥ २ 'वैयावृत्यकराः' जैनप्रवचनसेवाप्रभावनादिकारका देवाः ॥ ३ सिद्धस्तवः—"सिद्धाणं बुद्धाणं" इति सूत्रम् ॥ ४ 'हातव्यं' वर्जनीयम् ॥ ५ वन्दनपूजनादियोग्यमित्यर्थः ॥ ६ 'इतरा' अविधिकृता ॥

सूत्रोक्तचैत्य-
वन्दना-
द्रव्यपूजादि-
विषयक
आक्षेपः
तत्परि-
हारश्च

न हु दिंति जिणा कस्सइ न हरंति य नेव किंपि कुव्वंति। कह तव्विहा न चिंता निव्विसया जणइ मिच्छत्तं? ॥ ७ ॥
इच्छा-परिग्गहाई लोइयदेवाण चेव सिंगारो। कम्मक्खयसिद्धाणं घडेज्ज कह तं जिणिंदाण ? ॥ ८ ॥
समणा वि वंदणिज्जा विहियाणुट्ठाणिणो परं चेव। लोगाणुवित्तिओ वि हु इयरे पुण सव्वहा नेव ॥ ९ ॥
तेसिं पि वंदणाओ पमायदुव्विलसियं बहुविपप्पं। अणुमन्नियमन्नाण वि कुमग्गघडणा बहू दोसा ॥ १० ॥
इय एगपक्खनिक्खेवसारमविमंसिऊण सोयारं। धालाइरूवमणुदिणमारद्धो जंपिउं पयओ ॥ ११ ॥
तो सव्वसत्तसुहओ वि समयसारो असारपत्तम्मि। पत्तो पयं व भुयगे विसविरसो ही! लहुं जाओ ॥ १२ ॥

कयं पसंगेण। सो विमलामच्चो गाढपरिग्गहिय[मु]साभिप्पाओ एवंविहपरूवणाहिं मग्गाणुलग्गं पि भव्वजणं अंसुयत-हाविहसुयनिहसं अपज्जुवासियहेउ-नयकुसलमुणिजणं अदिट्ठगीयत्थसामायारिविसेसं अविमंसियाणेगंतवायवियारं वामोहिंतो भणिओ तक्कालागयगीयत्थविायरमुणिवरेण—

भो अमच्च! मुद्धबुद्धी पाएण लोगो, थोवो पारमत्थियवत्थुवियारवेइणो, न तहाविहा पारिणामिया मई, सुंदरमग्गपडि-पत्तिपडिकूलो कालो, दुप्परिणंमं पाएण जिणवयणं, ता जहा तुमं किंचविसेसपरूवणं कुणसि तहा बाढमजुत्तं। तहाहि—जं

१ अनुमतम् अन्येषाम् ॥ २ 'एकपक्षनिक्षेपसारम्' एकपक्षस्थापनप्रधानम् अविमृश्य श्रोतारम् ॥ ३ पयंग भु° प्रतौ। 'पय इव' दुग्धवद् 'भुजगे' सर्पे ॥ ४ अश्रुततथाविधश्रुतनिकषम् अपर्युपासितहेतुनयकुशलमुनिजनम् अदृष्टगीतार्थसामाचारीविशेषम् अविमृष्टानेकान्तवादविचारं व्यामोहयन् ॥ ५ स्तोकाः ॥ पारमार्थिकवस्तुविचारवेदिन' ॥ ६ 'रिणामं' प्रतौ ॥ ७ कृत्यविशेषप्ररूपणाम् ॥

तुमए सिट्ठं "जं सुत्ते निद्दिट्ठं" इच्चाइ एयं हि सुयकेवलिणो चेव जुज्जए वुत्तुं, न तुम्हारिसस्स सुयलवमेत्तधारिणो। जं च "लोयपवाहेणं" इच्चाइ उच्चरियं तं पि विचारणिज्जं, लोगो वि दुविहो—सामइओ असामइओ य, तत्थ सामइयलोगस्स गीयत्थस्स पवाहो अणुसरणिज्जो चेव, असामइयलोगस्स वि विरुद्धवत्थुचागेण कहं पि पवाहो अभिमओ त्ति। चिइवंदणविसए वि 'थुइतिगेणेवं चिईवंदणं' ति अवधारणमजुत्तं, जइ सुत्ते देवावग्गहमहिगिच्च मलमलिणसरीरस्स मुणिणो "तिन्नि वा कड्ढई जाव, थुईओ तिसिलोइया।" इच्चाइ वुत्तं, किमेत्तिएणं कयसरीरसिंगाराणं नवधोय-धवलवसणाणं सुइभूयाणं जिणजम्मणाईसु वि महई वेलं वट्टंताणं थुइतिगमेत्तमेव चिइवंदणं पि वोत्तुं जुज्जइ? पंचसक्कत्थयचिइवंदणस्स कत्थइ दंसणाओ। किंच—

निच्चं भावत्थयसेवणेण[1] चिइवंदणं तिथुइयं पि। जुज्जइ मुणीण गिहिणो य सव्वसावज्जनिरयस्स ॥ १ ॥

अब्भहियदेववंदणविहिणा[2] भावत्थएण अप्पाणं। निप्पावं खणमेक्कं कुणमाणस्स वि य कह दोसो? ॥ २ ॥

वेयावच्चगरथुई वि भद्द! एगंतसो न पडिसिद्धा। आवस्सयनिज्जुत्तीए जेण जइणो विऽणुन्नाया ॥ ३ ॥

चाउम्मासियवरिसे उस्सग्गो खेत्तदेवयाए उ। पक्खिय सेज्जसुराए[3] करेंति चउमासिए वेगे[4] ॥ ४ ॥

तक्कालियसाहूण वि जइ वुत्तमिमं तदेयराणं पि। संपइपमायमुणिणो[5] तक्करणं ता कहमजुत्तं? ॥ ५ ॥

एत्तो च्चिय चिइवंदणपज्जवसाणे वि तत्थुइदाणं[6]। संजमविग्घविघायणहेउं निद्दोसमाहंसु ॥ ६ ॥

---

१ गेण व प्रतौ ॥ २ अभ्यर्हितदेववन्दनविधिना ॥ ३ 'शय्यासुर्याः' भवनदेवतायाः ॥ ४ अप्येके ॥ ५ वर्तमानकालीनप्रमादिमुनेरित्यर्थः ॥ ६ वैयावृत्यकरदेवतायाः स्तुतिकरणमित्यर्थः ॥

जइ जइणो वि हु एवं ता किं गिहिणो न दिंति ताण थुई ? । न हु होइ कह वि एवं तिक्खो खग्गाउ पेडियारो ॥ ७ ॥

अच्चंतबहुस्सुयपरंपरापसिद्धत्तणेण चेव सिद्धत्थयस्स तिसिलोगब्भहियस्स वि सवणाओ तिसिलोगमेत्तभणणं पि अजुत्तं, जीयकप्पपहाणत्तणेण तदब्भहियभणणेण वि दोसाभावाओ त्ति । जं पि 'सुत्तत्थसुद्धं चिइवंदणं चेव काउं जुत्तं "अविहिकया वरमकयं" ति वयणाओ' तं पि

अविहिकया वरमकयं असूयवयणं भणंति समयन्नू । जम्हा अकए अन्नं कए य अन्नं तु पच्छित्तं ॥ १ ॥

ता मग्गपवित्तिकारणत्तेण सुत्त-ऽत्थाविसुद्धं पि चिइवंदणमपुणबंधगाणं इयरेसिं पि बीयरूवगतुच्छत्तणेणं अदुट्ठमेवं । जो वि अविहिकयचिंते वंदणाइपडिसेहो तदणुमोयणादोसभावाओ सो वि अजुत्तो, "निस्सकडमनिस्सकडे, वा वि चेइए सव्वहिं थुई तिन्नि ।" इति सुसा[हू]ण वि वंदणाकारवणाउ त्ति । जं पि 'इहलोयत्थेण तित्थयरवंदणाइयं असब्भूयभावारोवणाओ मिच्छत्तं' ति तं पि अजुत्तं, को हि न याणइ जहा जिणा निव्वुइं गया न कस्स वि किं पि दिंति अवणिंति वा ? केवलं तब्बहुमाण-भत्तिवसओ साभिस्संगत्तणेण य "आरोग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।" इइवयणं व तहाविहवत्थुपत्थणं पि न दुट्ठं, विसिट्ठगुणट्ठाणपगरिसहेउत्तणेण वागुरसेट्ठिपमुहाणं व एयस्स विसयब्भासाओ । चंडिगाईणं पुण पत्थणे दूर-

१ तीक्ष्णः खड्गात् प्रत्याकारः॥ २ परिया° प्रतौ ॥ ३ सूत्राऽर्थाविशुद्धमपि ॥ ४ ये जीवा ज्ञानावरणादीनां सप्तानां कर्मणां अन्तःसागरोपमकोटाकोट्यभ्यधिकां स्थितिं न कदाचनाऽपि बध्नन्ति भन्त्स्यन्ति च ते अपुनर्बन्धकाः प्रोच्यन्ते ॥ ५ इतरे–मार्गाभिमुख–मार्गपतितादयः ॥ ६ गाथेयं बृहत्कल्पभाष्ये १८०४ तमी, तत्र च निस्सकडमनिस्से वा इति पाठो वर्तते ॥ ७ गाथोत्तरार्धमिदं चतुर्विंशतिस्तवे गाथा ६ एतत्कम् ॥

हओ चेव उत्तरो गुणलाभो त्ति, ता कह इच्छा-परिग्गहारोवणदूसणं जिणेसरे संभवइ ?। जं च 'सुस्समणा चेव वंदणिज्ज' त्ति भणियं तं च अम्हाणमणुमयमेव, केवलं पासत्थाईण वि धम्मखिंसाइकज्जकारणभावेण वायानमोक्काराइवंदणं सुसाहूण वि अणुमयं, सत्थयारवयणपमाणभावातो चेव तप्पमायाणुमोयणदूसणं पि दूरपरिचत्तमेव। एवं च जइ सुजईण वि लोयववहारावेक्खा ता का वत्ता मायंगेसु वि सिरोनमणाइपयट्टाणं गिहत्थाणं ? ति। किं च—

न समणगुणठाणाओ अब्भहियं बिंति गिहिगुणट्ठाणं। जणचित्तग्गहणत्थं ता कह ते तन्न कुव्वंति ? ॥ १ ॥

तम्हा अमच्चवर ! वरं मोणं, न पुण [1]अवियाणियागमरहस्सस्स धम्मविसेसकहणं, ता पडिवज्जसु पच्छित्तं, मुयसु भुज्जो कुग्गहपरिग्गहं ति।

इमं च सोच्चा अमच्चो [2]अंतोवियंभंतकोवो 'अहो ! सिद्धंतसवस्सचोरो पासत्थाईसुं संपत्तो एसो साहू, ता अवंदणिज्जो' त्ति कोलाहलं काऊण गतो जहागयं। वाहराविओ सपक्खमग्गलग्गो कुग्गहियलोगो, पन्नविओ य जहा—एस साहू पूया-गारवाइपडिबद्धो पासत्थसंगइपरो य, अओ मिच्छदिट्ठिनिव्विसेसस्स एयस्स भिक्खादाणं वंदणं च तित्थंतरीयस्स व मा करेज्जह, इहरा तदणुमोयणोवट्ठंभभावेण तुब्भे वि मिच्छदिट्ठिणो भविस्सह त्ति। 'रायपुज्जो' त्ति 'तह' त्ति पडिवन्नो जणो। जाणिओ य एस सव्वो वि वइयरो सूरतेयनरवइणा। कुविओ एसो, वोत्तुमारद्धो य—

रेऽमच्च ! मलीमसचेट्ठिओ वि नामेण वहसि विमलत्तं। कालाणुसारिसुंदरकिरियानिरयं पि जं साहुं ॥ १ ॥

१ अविज्ञातागमरहस्यस्य ॥ २ अन्तर्विजृम्भमाणकोपः ॥

अवमन्नसि मन्नसि अप्पयं पि विन्नायसव्वनायव्वं । थोवे वि उच्चुणत्तं न सव्वहा सच्चरियचिंधं ॥ २ ॥
नाणपईवा सिवपंथसत्थवाहा य चत्तपरवाहा । हीलिज्जंती जइणो न भिल्लपल्लीसु वि य एवं ॥ ३ ॥
को वा तुह इह दोसो ? दोसो मम चेव एस नीसेसो । जो एवंविहदुव्विलसियं पि न तुमं निगिण्हामि ॥ ४ ॥
एवंविहतुहदुच्चेट्ठिएण नीहार-हारधवलं पि । मज्झ जसो चिरकालज्जियं पि मालिन्नमुवणीयं ॥ ५ ॥
जेहिंतो जिणवयणं किच्चा-ऽकिच्चं पि जाणियमसेसं । ते वि हु गुरुणो हीलंत ! पाव ! पत्तो न पायालं ॥ ६ ॥
कह तेसु वि तुह वाणी अगुणुग्गिरेणम्मि एत्थमुत्थरिया ? । जाण न गुणलेसं पि हु सक्कइ वोत्तुं सुरगुरू वि ॥ ७ ॥
इय गरुयकोवभरभिउडिभीमभालेण तेण भूवइणा । निव्वासिओ सदेसाओ साहुदुट्ठो लहुं विमलो ॥ ८ ॥
पुरे वि उग्घोसावियं—जो एवंविहकुग्गहवग्गवग्गुरापडिओ सो अन्नो वि लहुं नीहरउ, इहरा सव्वस्सावहारेणं दंडिस्सामि त्ति । पत्थावे य राया गओ दिवायरसाहुवंदणत्थं । संधायरकयपायवडणो य आसीणो समीवे, भणिउं पवत्तो य—भयवं ! एवंविहकुग्गहनिग्गहियमयिणो असमंजसपलाविणो मणुयस्स केरिसो गइविसेसो ? । साहुणा भणियं—किमिह भन्नइ ?
विग्गह-विवायरुइणो कुल-गण-संघेण बाहिरकयस्स । नत्थि किर देवलोए वि देवसमिईसु ओगासो ॥ १ ॥
अपि च—कुप्पहपरूवगाणं समइपविचीए गुरुविभासीण । केत्तियमेत्तं एयं ? दंडो दीहं भवब्भमणं ॥ २ ॥

---

१ सगर्वत्वमित्यर्थः ॥ २ °रणं पि प° प्रतौ । अगुणोद्गीरणे इत्थं निःसृता ? येषाम् ॥ ३ °पासेसं प्रतौ ॥ ४ साधुद्विष्टः ॥ ५ एवंविधकुग्रहवर्गवागुरापतितः ॥ ६ सर्वादरकृतपादपतनः । पतनम्—नमनम् ॥ ७ विग्रहविवादरुचेः ॥ ८ 'अवकाशः' स्थानम् ॥

ततो राया जोडियकरसंपुडो साहुं भणइ—भयवं ! तुब्भेहिं तस्स दुरायारस्स कूडमइणो थेवं [पि] न वयणं मणसि धरणीयं, अकल्लाणभागी खलु सो वरागो, नीरागेसु वि तुम्हारिसेसु जो एवं पओसमु[व]हइ त्ति । मुणिणा भणियं—महाराय ! केत्तियमिमं ?

अक्कोस-हणण-तज्जण-धम्मब्भंसाण बालसुलभाण । लाभं मन्नइ धीरो जहुत्तराणं अभावम्मि ॥ १ ॥

धम्माणं खु कसाया सुरंगधूलि व्व उक्खया वि खरं । अंतो च्चिय जंति लयं जलबुब्बुयग[1] व्व वा सलिले ॥ २ ॥

एवं सोच्चा राया भत्तिसारं साहुं वंदित्ता गओ सठाणं। विमलो वि रायपुरिसावहरियसव्वस्सो शेरो व्व एगागी देसंतराइं परिभमिउमारद्धो, जाओ य पहपरिस्सम-छुह-पिवासापमुहदुहनिवहस्स[2] भायणं। परिभमंतो य गओ गयपुरं। तहिं च पयंडतवविसेसवससमुप्पन्नासीविसाइलद्धिदुद्धरिसो[3] धम्मरुई नाम तवस्सी संविग्गसावगवग्गस्स धम्ममाइक्खमाणो दिट्ठो अणेणं। ततो जायमच्छरो पुव्वट्ठिईए दुव्विणयपुरस्सरं विभाविंतो मुणिणा कुविएण कयवायावहारो मूओ व्व अच्चंतं बुडुबुडिंतो निच्छूढो लोगेणं। विविहदुब्भावणाहिं अप्पाणं परं च वुग्गाहिंतो दुहट्टो[4] मरिऊण कुजोणीजणियदुक्खाण भागी अणंतकालं जाओ त्ति।

इय कुग्गहनिग्गहविरहिएण[5] गुरुणा वि धम्मकिच्चेण । कीरइ न परित्ताणं[6] भवकूवगयस्स थेवं पि ॥ १ ॥

ता तच्चागो च्चिय चिंतियत्थसंपाडणेक्ककप्पतरू[7] । मग्गाणुसारिसुहभाववारिणा सिंचिउं जुत्तो ॥ २ ॥

१ बुद्बुदा इव ॥ २ पथपरिश्रमक्षुधापिपासाप्रमुखदुःखनिवहस्य ॥ ३ प्रचण्डतपोविशेषवशसमुत्पन्नाशीविषादिलब्धिदुर्धर्षः ॥ ४ दुःखार्त्तः ॥ ५ कुग्रहनिग्रहविरहितेन ॥ ६ परित्राणम् ॥ ७ चिन्तितार्थसम्पादनैककल्पतरुः । मार्गानुसारिशुभभाववारिणा ॥

अपि च—गुरुमपि तृणराशिं जातवेदःकणोऽपि, प्रचुरसुकृतमेकं हन्ति दुष्कर्म यद्वत् ।
उपचितमपि पुण्यं कुग्रहस्तद्वदेकोऽप्युपनयति नितान्तं स्फीतमप्यन्तमाशु ॥ १ ॥
यदि जिनवचःप्रामाण्येनाऽऽश्रिता श्रमणक्रिया, गृहिसमुचितो यद्वाऽऽरब्धः स्फुटो विरतिग्रहः ।
तदयमधमः कस्मादन्तर्भवन् ननु कुग्रहः, स्व-परमनसां क्लेशाधायी न जातु निवार्यते ? ॥ २ ॥
यद्यप्यङ्गमनङ्गभञ्जनकृज्यायस्तपःकल्पनास्वल्पीभूतपला-ऽसृगुल्बणनसान्यासास्थिबन्धक्रमम् ।
व्याधूतेन्द्रियवर्त्मनोऽपि हि मुनेः कस्यापि पापोदयाद्वा ! धिक् कष्टमयं तथाप्युदयते दुर्निग्रहः कुग्रहः ॥ ३ ॥
गोष्ठा-ऽश्वमित्रीयक-तिष्यगुप्त-यमालिमालिन्यमितो निशम्य ।
सम्यक् प्रवर्तेत चिरन्तनर्षिदृष्टेन मार्गेण सुधीर्विशङ्कः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे कुग्रहत्यागे विमलोपाख्यानकं समाप्तम् ॥ १९ ॥

निग्गहियकुग्गहो वि हु मज्झत्थो चेव उचियमियरं च । नाउं काउं न खमो त्ति तं निदंसेमि लेसेण ॥ १ ॥
तत्थ य मज्झत्थो राग-दोस-मोहेहिं कुगइहेऊहिं । बुद्धिविवज्जयजणगेहिं जो न पुट्ठो स विन्नेयो ॥ २ ॥
विगुणं पि कुणइ रागी सुगुणं दुट्ठो गुणड्ढमवि विगुणं । मूढो न कज्जमज्जं बुज्झई चंडुहा वि पन्नविओ ॥ ३ ॥

१ जातवेदा.-अग्निः ॥ २ कोष्ठा-ऽश्वमि° खं० ॥ ३ गुणरहितमित्यर्थः ॥

कुग्रहत्यागोपदेशः

माध्यस्थ्यम्

मध्यस्थः

मूढः

इय ते सुद्धं सद्धम्मकम्ममाराहिउं न पारेंति । गुण-दोसवियारखमो मज्झत्थो चेव तज्जोगो ॥ ४ ॥
लोगे वि नायवाई मज्झत्थो चेव कीरइ पमाणं । अत्थं जसं च धम्मं च सो परं लहइ अवियप्पं ॥ ५ ॥
रागो दोसो मोहो एए कालुस्सकारिणो गरुया । ¹तेसिमणुदिन्नयाए य निम्मला जायए बुद्धी ॥ ६ ॥
²तीए ³समिक्ख थेवं पि धम्मकिच्चं परं पकुव्वाणो । नारायणो व्व निव्वाणभायणं जायइ कमेण ॥ ७ ॥

तहाहि—अत्थि ⁴नियचंगिमावगन्नियावरपुरसोहासमुदयपत्तपहाणनरनियरनिवारियकलिजहिच्छाविहारं, हारभूयं व मेइणीरमणीए, मणीहियत्थसंपाडणपसिद्धं सिद्धत्थपुरं नाम नयरं । तहिं च बुद्धो व्व करुणापरो लोगो, अच्छरायणो व्व अक्खंडियरूव-लायन्नो सुंदरीजणो, ⁷पिणायपाणि व्व निग्गहियवम्महो लिंगिवग्गो । तहिं च पयंडभुयदंडारोवियपुहइभारस्स सिरिविस्ससेणरन्नो छकम्मनिरयचित्तो चउद्दसविज्जाठाणपारगो जन्नदत्तो नाम पुरोहिओ, हिओ नरवइस्स, वइस्स-सुद्द-खत्तिय⁸पूयापयरिसपत्तो नियकम्मनिरओ कालमइक्कमइ । पुत्तो य तस्स सव्वविज्जावियक्खणो नारायणो नाम पयईइ च्चिय लोभाइदोसविरहिओ परलोयभीरू य अहेसि ।

सो य पुरोहिओ ⁹पारद्धिपमुहपउरपावपब्भारसुद्धिनिमित्तं राइणा वाहराविऊण निउत्तो जन्नकज्जे । उवाहरिया जागनि-

१ 'तेषां' रागादीनाम् अनुदीर्णतायाम् ॥ २ 'तया' निर्मलबुद्ध्या ॥ ३ समीक्ष्य ॥ ४ निजचङ्गिमावगणितापरपुरशोभासमुदयप्राप्तप्रधाननरनिकरनिवारितकलियथेच्छाविहारं हारभूतमिव मेदिनीरमण्याः मनईहितार्थसम्पादनप्रसिद्धम् ॥ ५ °पुरिसो° खं० ॥ ६ °राइणो खं० । अप्सरोजन इव अप्सरोगण इव वा ॥ ७ 'पिनाकपाणिः' महादेव इव 'निगृहीतमन्मथः' वशीकृतकामः ॥ ८—पूजाप्रकर्षप्राप्तः ॥ ९ पापर्द्धिः—मृगया ॥

मित्तं पसुपमुहा उवगरणविसेसा, उब्भवितो जूयत्थंभो, निवत्तितो जागमंडवो, पारंभिओ महया पबंधेण पसुमेहो। तं च भीमं जीरपायं दट्ठूण नारायणो सुहुममइवियारियकिच्चा-ऽकिच्चो पियरं भणइ—ताय ! तुब्भे जन्नकज्जे पसुविणासणं कुणह, अत्र च "आत्मवत् सर्वभूतानि, यः पश्यति स पश्यति।" इति वदत, किमत्र तात्पर्यम् ?। पुरोहिएण भणियं—वच्छ ! "उक्तानि प्रतिषिद्धानि, पुनः सम्भावितानि च।" इत्यनेकधा वेदवाक्यानि, को बोद्धुमीशस्तात्पर्यम् ?। नारायणेण भणियं—ताय ! जइ एवं ता अंबुज्झंता तप्परमत्थं कहं कुणह एयं ? जोइसं चिकिच्छियं पायच्छित्तं धम्मकिच्चं च अवियाणियं कीरंतं विवज्जासफलमेव। पुरोहिएण भणियं—वच्छ ! पुरिसपरंपरागयजन्नाइविहाणपमाणीकरणेण पवित्ती अविसेसेण जाया, सा य न अन्नहा काउं तीरइ। नारायणेण भणियं—ताय ! अणुभवेण ताव जीवघायणं अघंतं पलोइअंतमवि लोमुद्धोसकरं, एवं पि जइ तं सग्गाइकारणं ता 'तालउडभक्खणं पि जीवियहेउं' ति किं न भन्नइ ?। पुरोहिएण भणियं—वच्छ ! अम्ह गुरू नरसिंहो नाम अज्झावगो वेयंतरहस्सवेदी इहेव चिट्ठइ, ता एहिं, तं गंतूण दुवे मिलिय चिय एयमत्थं पुच्छामो त्ति। पडिवन्नं नारायणेण। गया दो वि नरसिंहअज्झावगसमीवं। कयसायरपायवडणा य लद्धासीसा सीसजणोचिए निविट्ठा भूमिवट्ठे। तक्खणं च वेयरहस्सवक्खाणपयविप्पडिवन्ना बहुविहहेउ-दिट्ठंत-जुत्तिकहणे वि कज्जमज्झमबुज्झमाणा सिस्सा भणिया अज्झावगेण—

१ ऊर्ध्वीकृतः यूपस्तम्भः, निर्वर्तितो यागमण्डपः ॥ २ अब्भुजंता सं० ॥ ३ रोमोद्धर्षकरम् ॥ ४ किन्न प्र० ॥ ५ वेदान्तरहस्यवेदी ॥ ६ पढि प्र० ॥ ७ वेदरहस्यव्याख्यानपदविप्रतिपन्नो ॥

देवभद्दसूरि-विरइओ कहारयणकोसो ॥ सामन्नगुणाहिगारो। ॥१५१॥

माध्यस्थ्यगुणे नारायणकथानकम् २०।

रत्ता[1] दुट्ठा मूढा सिव-ससि-संख व्व जइ अरे ! तुब्भे । बुज्झाविउं[2] न सक्का ता सक्खा सक्कगुरुणा वि ॥ १ ॥
एवंविहभावठियाण तुम्ह वइवित्थरो[3] सुगरुओ वि । कज्जंतरं पसाहइ न कंठसोसाउ अब्भहियं ॥ २ ॥
नियउज्जुबुद्धिविहवाउ[4] किं पि गुरुवयणतो य[5] किंचेव । विसयविभागे ठवियं हवइ सुसुत्तं[6] लहुं सुत्तं ॥ ३ ॥
ता कीस[7] अंगुलीभंगभावणेणुब्भवंतकुवियप्पा । पुव्वरिसिदिट्ठमविणट्ठमित्थमत्थं विणासेह ? ॥ ४ ॥

सीसेहिं भणियं—उवज्झाय ! अच्छउ ताव सुत्तपज्जणुजोगपच्चवत्थाणं[8], महंतं कोऊहलं, के इमे सिवाइणो रत्ताइसु अत्थेसु दिट्ठंता सिद्ध ? त्ति साहेह । उवज्झाएण जंपियं—आयन्नह—

अवंतीजणवए जयखेडं नाम गामो । तहिं वत्थव्वो सिवो नाम कुलपुत्तगो । तस्स दुवे भायरो—जेट्ठो कणिट्ठो य । तत्थ जो कणिट्ठो सो अच्चंतं सिवस्स इट्ठो, तदुत्तमजुत्तं पि जुत्तं पडिवज्जइ । इयरो य अणिट्ठो, सुंदरं पि जंपंतो 'असंबद्धपलावि'[9] त्ति खिंसिज्जइ । एवं जंति दिवसा ।

रत्तत्वे शिवोदाहरणम्

अन्नदियहे य ते तिन्नि वि भायरो गया पओयणवसेण [10]पोलिगापच्छयणं घेत्तूण अडवीए । तहिं च समारद्धा ते तिन्नि वि तरुवरे छिंदिउं । गाढपरिस्समकिलामिया य जाया तण्हाउरा, पेहिउमारद्धा य सलिलं । दिट्ठा य थोयसलिला एगा तडा-

१ रक्ता द्विष्टाः ॥ २ बोधयितुं न शक्यौ ततः साक्षात् ॥ ३ वचोविस्तरः ॥ ४ निजऋजुबुद्धिविभवात् ॥ ५ किञ्चिदेव ॥ ६ सुसूत्रं लघु सूक्तम् ॥ ७ कस्माद् अङ्गुलीभङ्गभावनेन उद्भवत्कुविकल्पाः पूर्वर्षिदृष्टम् अविनष्टम् इत्थम् अर्थं विनाशयथ ? ॥ ८ 'सूत्रपर्यनुयोगप्रत्यवस्थानम्' सूत्राक्षेपस्य उत्तरम् ॥ ९ °पियमाय° खं० प्र० ॥ १० पोलिकाशम्बलमित्यर्थः ॥

॥१५१॥

गिगा, मायण्हियासरोवरं च गरुयं । तं च दट्ठूण भणियं सिवेण—किमिमाए थोय-पूइसलिलाए तडागिगाए ? एहि भूरि-गिगा, मायण्हियासरोवरं मंगुररंगंततरंगपरंपराविराइयं इमं सरोयरं वच्चामो त्ति । जेट्ठेण भणियं—मायण्हियासरमपारमत्थियं, इमीए वि सरसीए कुणइ कायव्वं ति । कणिट्ठेण वुत्तं—न एसो न किं पि जाणइ; कॅरयच्चयं घेत्तूण सिव ! वच्चाहि तुममिह त्ति । ततो तव्वय-णगाढाणुरागेण सविसेससमुल्लासियमई जेट्ठेण निरुब्भमाणो वि वेगेण पट्ठिओ सिवो तदभिमुहं । तओ—

जइ जइ वच्चइ एसो तह तह तं अंगए व्व पयमइ । निप्पुन्नगुरुमणोरहपारद्धा धाउसिद्धि व- ॥ १ ॥

निमिसद्ध-निमेस-मुहुत्तमेत्तमित्तो वि लग्गइ न नूण । तुरियं पि धाविरो तं महोमहिं पिव नियइ दूरे ॥ २ ॥

ततो सुचिरं किलिस्सिऊण अकयकज्जो चेव नियत्तो एसो । पुव्वुत्ततडागिगाए चेव कयं जलपाणाइ, वुत्था तत्थेव । बीयदिवसे वि तरुच्छेयणं काऊण मज्झंदिणसमए भोयणं काउमारद्धा । दिट्ठं च अदूरे सयच्छं चरंतं गवयमंडलं । ततो सिवेण भणियं—सुक्काउ पोलिगाओ न तीरंति गोरसं विणा भक्खिउं, अओ जइ एत्तो गोमंडलाओ दुद्धं आणिज्जइ ता लट्ठं हवइ त्ति । जेट्ठेण भणियं—गवलमंडलमेयं माणुसोत्तवायगं; न गोमंडलं ति । कणिट्ठेण जंपियं—भो सिव ! वच्चसु तुमं, एत्तो दुद्धं घेत्तुं लहुमागच्छसु त्ति । तव्वयणपेरिओ भायणहत्थो पट्ठिओ एसो, जेट्ठेण वारिओ वि न ठिओ । ततो दूरनिल्ला-

१ मृगतृष्णिकासरोवरम् ॥ २ °पूयस° सं० । स्तोकपूतिसलिलया । पूति-दुर्गन्धि ॥ ३ °त्थियमिमी° सं० प्र० ॥ ४ वुत्तं—एसो प्र० ॥ ५ करयानकं करपलंकमिति वा; कलशमित्यर्थः ॥ ६ मम ॥ ७ अमव एव प्रकाम्यति ॥ ८ °समेत्तो° प्र० ॥ ९ गवयमं° प्र० ॥ १० तद्वचनप्रेरितः ॥ ११ दूरनिर्लोलितश्यामकपरलदीर्घजिह्वाकवचेन ॥

लिय-ज्झामय-फरुस-दीहजीहाकरगएण पारद्धो सो गवएहिं परामरिसिउं। कंठगयपाणो य महया कट्ठेण मोयाविओ इयरेहिं।

जत्थ दढं अणुरागो तव्वयणेणेव संपयट्टइ जो। न सयं न परेणुत्तो बुज्झइ रत्तो स एसो त्ति ॥ १ ॥ ॥ छ ॥

दुट्ठदिट्ठंतं निसामेह—सोरट्ठाविसए परुक्खो नाम सन्निवेसो। तत्थ य ससी नाम आभीरो परघरेसु कम्मकरणेण जीवइ। सो य अन्नया एगेण वणिएण अप्पणो बीओ चालिओ। गामंतरे गच्छंताण य ताण जाया गोट्ठी। कहंतरे य पसंसिया आभीरेण नियगा जाई। वणिएण भणियं—तुम्हाण पसूण य विवेयवियलत्तणेण तुल्ला चेव जाई। रुट्ठो आभीरो, ठिओ तुण्हिक्को। सरुक्खचक्खुक्खेवेण लक्खिओ वणिएण, दाण-सम्माणाइणा अणुवत्तिओ वि न पसन्नो। साहियकज्जा य पडिनियत्तंता गहिया तक्करेहिं। लूडियं सव्वस्सं। 'मम किं तक्करेहिं वि कयं' ति तुट्ठो आभीरो। निस्सट्ठं बद्धा दो वि, कुट्टिउमारद्धा य। वणिएण भणियं—कीसं एयं हणह एयं वरायं? कम्मयरो खु एसो। समुट्ठंतगुरुकोवेणं भणियं आभीरेणं—वरागो एयस्स पिया, कम्मयरो वि एसो चेव ममं, ता मुयह इमं ति। ततो तक्करेहिं पलोइयं वणियवयणं। वणिएण भणियं—जमेस जंपइ तं अवितहं ति। मुक्को वणिओ पलाणो वेगेणं। इयरो वि धणनिमित्तमारद्धो ताडणाइपगारेण बाहिउं ति। एवंविहो दुट्ठो त्ति ॥ छ ॥

द्विष्टत्वे शशिन आहरणम्

इयाणिं मूढो भन्नइ—कुणालाविसए कोसंबो नाम गामो। तहिं संखो नाम कुलपुत्तगो। दत्तो नाम से बाल-

१ परामर्षितुम् ॥ २ सम्प्रवर्त्तते ॥ ३ विवेकविकलत्वेन ॥ ४ सरूक्षचक्षुःक्षेपेण ॥ ५ त्रुण्टितम् ॥ ६ 'निःसृष्टं' अतिशयेन ॥ ७ कस्माद् एवम् ॥ ८ वणिग्वदनम् ॥ ९ पलायितः ॥

मिणो चथंतं गाहो राकरेउ आपुच्छणिओ [य], परं मायावी। इयरो उज्जुपयई। दोण्ह वि सहायरूवेण जंति दियाइं। अन्निओ य केणइ गुरुगवसेण संग्गेण केत्तिओ वि अत्थसारो। पुच्छिओ अणेण दत्तो—कहमेसो अत्थसारो रक्खियव्वो? पच्चायबहुलो गामो त्ति। दत्तेण भणियं—नरसिंह! एवमेयं पगुणीकरेहि दव्वसंचयं, जेण गंतूण अडवीए जक्खायपणे भूमिनिहित्तं करेमो। पडिवन्नं संग्गेण। दुट्ठाभिसंधिणा य दत्तेण किंपि दाऊण संकेइया अद्धपहे दुवे पुरिसा—एवमेयं अम्हे पहे एंता तुम्भेहिं भेसियव्व त्ति। अह जाए मज्झरत्ते कोदंड-कंडवावडकरेण दत्तेण वाहरिओ संग्गो—एहि, समीहियकज्जकरणाए वच्चामो त्ति। तओ पेच्छगणहरणो अत्थसारगंठिं घेत्तूण केणइ अमुणिज्जंतो दत्तेण समं पट्ठिओ एसो। गामपाहिं(?)पीडिओ य भणिओ दत्तेण—दुक्करो देवपरिणामो, अविमागणिआगमाओ आवईओ, अतो तुममिमं अत्थगंठिं मेमं समप्पेसु, पच्छयणं च नयं गिण्हाहि, कह वि तक्कराइभयं उवट्ठाइ ता मा काहिसि दव्वपडिबंधं, लहुं एगदिसं अंगीकाऊण पलाएज्जासि, सओ जीविए जियंते न दुल्लहा विवसंपत्ती। उज्जुपयइत्तणेण 'वह' त्ति पडिवन्नं संग्गेण। तुरियंतुरियं पयट्टा गंतुं। अद्धपहमेत्तं च जाव पत्ता ताव पुव्वदिन्नसंगारा आयड्ढियनिसियासिणो 'हण हण' त्ति वाहरंता उट्ठिया दुवे पुरिसा। तिमिरनियराऊरियगयणेण रयणीए ताणं वि 'तक्कर' त्ति भणंतो पलाणो संग्गो गामहुत्तं। दत्तो वि दिसंतरमादाय गंठिहरणो नट्ठो वेगेण। संग्गेण वि उज्जुसीलयाए गंतूण साहियं तलवरस्स—अत्थो तुज्झ, मित्तं मज्झ अक्खयसरीरमुवणेहि त्ति। पेच्छिउमारद्धो

१ एवमेयम् ॥ २ कोदंड° प्र० ॥ ३ पच्छदनं-प्रच्छदम् ॥ ४ °हिनीह° प्र० ॥ ५ मज्झ स° प्र० ॥ ६ 'रियं तु' गं० ॥ ७ आकृष्टनिशितासी ॥ ८ ग्रामाभिमुखम् ॥

गूढत्वे शब्दरणा-हरणम्

८

तलवरेहिं, नोवलद्धा कत्थ वि सुद्धी। आउलीहूओ संखो कह कह वि रुयंतो निसिद्धो सयणेहिं। दिन्नं च तेणोवजाइयं गामदेवयाए—जइ भयवइ! दत्तो एही ता तुज्झ जागरं दाहामि त्ति। अत्थगंठिं संठविऊण अवरवासरे आगओ दत्तो। तुट्ठो संखो, कयं वद्धावणयं, पारद्धो जागरूसवो गामदेवयाए। सन्निहियपाडिहेरत्तणेण एगाए जुवईए आगयं पत्तं, तेण भणियं—संख! तुह कुमित्तदुचेट्ठियमेयं अत्थहरणं, ता अमुगट्ठाणे तं खित्तं तुमं गंतुं गिण्हसु त्ति। तं सोच्चा रुट्ठो संखो—आ पावे! कुग्गामवासिणि! कडपूयणि! असच्चसंभावणादूसियं कुणसि मह मित्तं?—ति आहयं पत्तं तेण करचवेडाए। कयरंगभंगो य कन्ने पच्छाइऊण गओ सगिहं।

एवंविहो हि मूढो कज्जा-ऽकज्जं कहिज्जमाणं पि। अच्छउ दूरे सेसं सोउं पि हु नेव पारियइ ॥ १ ॥ ॥ छ ॥

इय रत्त-दुट्ठ-मूढाण संतिए संसिऊण दिट्ठंते। अज्झावगो महप्पा पुणरवि सिस्से इमं भणइ ॥ १ ॥

पुंव्वुत्तदोसवज्जण-सुगुणज्जणजणियपक्खवाएहिं। पुव्वावरअविरुद्धत्थपेहणुप्पेहडमईहिं ॥ २ ॥

इह-परलोयविरुद्धत्थकारिपरिहारठवियचित्तेहिं। निच्चं अलुद्ध-सुविसुद्धबुद्धिजणसेवणपरेहिं ॥ ३ ॥

परमपयपउणपयवीअणुगुणकिरियाकलावकुसलेहिं। नियनियविसयविसंठुलकरणरणावेलिसुगुत्तेहिं (?) ॥ ४ ॥

पुरिसेहिं परं परमं समयरहस्सं हि तीरए नाउं। संसारपारवारस्स पारमवि पाविउं नियमा ॥ ५ ॥

अरक्तद्विष्टमूढानां तत्त्वज्ञानाप्तिः

१ 'पात्रं' रूपम् ॥ २ °हो उ मू° प्र० ॥ ३ पूर्वोक्तदोषवर्जनसुगुणार्जनजनितपक्षपातैः। पूर्वापराविरुद्धार्थप्रेक्षणोद्भटमतिभिः ॥ ४ इयं गाथा प्र० नास्ति। परमपदत्रगुणपदव्यनुगुणक्रियाकलापकुशलैः। निजनिजविषयविसंस्थुलकरणरणावलिसुगुप्तैः ॥ ५ °वणिसु° प्रतौ ॥

इय गैरुयभावगब्भं सिक्खविउं जा न विरमए एसो । ता गरुयसूलवियणाए झत्ति पंचत्तमणुपत्तो ॥ ६ ॥

पायडियासेसपयत्थं च सुरगुरुं व अत्थमियं तमवलोइऊण 'हा ! किमेयं ?' ति भणंता धाविया सीमा । उक्खित्तो सो महियलाओ । दिट्ठो य विप्फारियाणिमेसनयणो ईसिवियासियवयणो निप्फंदसरीरो । ततो कया से सिसिरोवयारा, संवाहियमंगं, वाहरिया जाणगा, सिट्ठो वुत्तंतो, पलोइऊण 'गयजीओ' त्ति परिच्चत्तो तेहिं । जाओ य अच्चंतसोगभरनिब्भरो अक्कंदियरवो, कयं पारलोइयकिच्चं । अणुवलद्धजागविसयसंसयपरिच्छेया 'मवहा अकछाणभाइणो वयं' ति जंपंता गैरुयसोगभरुब्भवंतबाहप्पवाहाउललोयणा पुरोहिय-नारायणा गया सगिहं ।

अन्नसमए य नारायणेण भणिओ पुरोहिओ—ताय ! परमत्थओ उवइट्ठं चेव महाणुभावेण अज्झावगेण सव्वं सामन्नेण कज्जतत्तं, केवलं तं चिय सुनिरुत्तं जाणियव्वं, तं च महप्पभावपुरिसविसेसविरहेण न संभवइ, अओ जइ तुममणुजाणासि ता अहं कइवयदिणाइं तदन्नेसणं काऊण आगच्छामि, न जुत्तमालस्सोवहएहिं एवं चिय ठाउं, जओ तडितरलमाउयं, समीववत्ती समवत्ती, अच्चंतदुन्निवारातो आवयाउ त्ति । पुरोहिएण भणियं—वच्छ ! एवं कुणसु त्ति ।

तओ सोहणतिहि-मुहुत्त-जोगे किं पि संबलमादाय निग्गतो नारायणो । पवड्ढंतसउणचित्तुच्छाहो य सुनिउणं पुरिसविसेसं निरूवितो गओ एगं गिरिनिगुंजं । दिट्ठो य तहिं अणेगकट्ठकप्पणाहिं अप्पाणं तुलंतो अट्ठमपारणगे चिरविणिवाइय-

१ गुरुकभावगर्भं शिक्षयित्वा ॥ २ 'पयत्त' मरणम् ॥ ३ गुरुकशोकभरोद्भवद्बाष्पप्रवाहाकुललोचना ॥ ४ निश्शेषेणेत्यर्थः ॥ ५ तदन्वेषणम् ॥ ६ 'समवर्त्ती' यमराजः ॥ ७ चिरविनिपातितवनवारणपिशितकल्पितप्राणवृत्तिः । विनिपातितः—मारितः ॥

हस्तितापसमतनिरसनम्

वणवारणपिसियकप्पियपाणवित्ती एगो हत्थितावसो। तं च तहाविहधम्मपरं पेहिऊण नारायणो कयनमोक्कारो भणिउं पवत्तो—भयवं! को एस धम्मपरमत्थो जं हत्थिपिसिएण भिक्खुजणजोग्गेण पारणयं कीरइ?, किल—

"अवधूतां च पूतां च प्रशस्तामृषिसेविताम्। चरेन्माधुकरीं वृत्तिमपि म्लेच्छकुलादपि ॥ १ ॥"

इत्यविगानेन मुनिजनक्षुण्णः पन्था इति। तावसेण भणियं—भद्द! अम्ह धम्मे जीवदया सारो, सा पुण पइघरभिक्खाभमणाणेगजीवसंघायणेण न संभवइ, पइकणमेक्केक्कजीवसंभवाओ तब्बहुमीलणेणाऽऽहारपागे वि बहुजीववाओ, अओ अणेगसत्तसंताणरक्खणत्थं एगमहासत्तवावायणमणुमयं पाणवित्तिहेउं ति। नारायणेण भणियं—भयवं! संदिद्धचेयणालक्खणजीवगुणं कणनियरं रक्खंताण परिफुडजीवणं पि वणकरिणं वायंताण का जीवदया? कहं वा न तज्जाइयजीवुप्पत्ती तप्पिसियपेसीसु विस्सभावोवगयासु संभवइ? रक्खसभक्खं च इमं, तथा—

"स्वमांसं परमांसेन यो वर्द्धयितुमिच्छति। उद्विग्नं लभते वासं यत्र यत्रोपजायते ॥ १ ॥

मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्। एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ २ ॥"

इत्यादिवाक्यैः स्मृत्यादावपि निषिद्धमेतत्। तावसेण भणियं—भद्द! अलं अलं विसंवादेण, एम ताव अम्हं धम्ममग्गो न वियारगोयरसहो त्ति। नीहरिओ नारायणो, पट्ठिओ देसंतरं।

दिट्ठो य एगत्थ सन्निवेसे मुद्धजणसेविज्जमाणो एगो भागवयमुणी तिकालसिणाणेण वट्टंतो त्ति। गओ य तस्स-

१ °क्षुण्णः खं० प्र० ॥ २ °फुट्टजी° खं० ॥ ३ विस्रभावोपगतासु। विस्र–दुर्गन्धि ॥

मीवं । कयपायवडणो उवट्ठिओ समीवे, पत्थावे भणिउं पवत्तो य—भयवं ! सव्वगयत्तेण विण्हुणो तदहिट्ठियजलपूरेण

शौचवाद-प्रतिक्षेपः

ण्हाणं, एवं कुणंताणं कहं न हरिणो विराहणा हवइ ? अप्पहाणं च इमं सामन्नजणेण वि सेवणाओ, परमत्थियं तु एयं गिज्जइ—

आत्मा नदी संयमतोयपूर्णा, सत्याम्बुजा शील-दयातटोर्मिः । ॥ १ ॥

तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र !, न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा

काविलेण भणियं—झाणहुयासणेण तेद्दुक्कयकयवरनिद्दहणाओ नत्थि एत्थ दोसो । नारायणेण जंपियं—झाणेण पावपंकस्स सुद्धी, पउरपयपूरसरीरपक्खालणेण पुणरवि तस्संभवो त्ति एयं तं गयवरण्हाणं ति । काविलेण भणियं—होउ किं किं पि । 'एसो वि पढमेल्लुयतुल्लो' त्ति पुरओ पयट्टो नारायणो ।

मिलिओ मग्गे वच्चमाणस्स जिणदत्तो नाम सावगो । 'सत्थिओ' त्ति जाया अणेण समं गोट्ठी । 'वियड्ढो' त्ति समु-प्पन्नो तं पइ पक्खवाओ । लद्धा य कत्तो वि गज्जराइणो कंदविसेसा नारायणेण । 'सत्थिउ' त्ति दिन्ना कइवय वि जिणदत्तस्स । न गहिया जिणदत्तेणं । 'कीस न गिण्हह ?' त्ति [पुच्छिएण] जिणदत्तेण भणियं—

पडिपुन्नकेवलालोयकलियतइलोक्कगयपयत्थेहिं । पडिसिद्धो भोगो गज्जराइकंदाण नाणीहिं ॥ १ ॥

एए हि णंतजीवंगवग्गनिवत्तिय त्ति नो भुज्जा । महु-मज्ज-मंस-मक्खण-पचुंबरिफलविसेसा वि ॥ २ ॥

अनन्त-कायादीनां सदोषत्वम्

१ सर्वगतत्वेन विष्णोः ॥ २ तद्दुष्कृतकचवरनिर्दहनात् ॥ ३ प्रचुरपयःपुरसरीरप्रक्षालनेन ॥ ४ प्राथमिकतुल्यः ॥ ५ प्रतिपूर्णकेवलज्ञानालोककलितत्रैलोक्य-गतपदार्थैः ॥ ६ °एहिं तत्र जी° खं० । एते हि अनन्तजीवाङ्गवर्गनिर्वर्तिता इति नो भोज्याः ॥

वणवारणविसियकप्पियपाणवित्ती एगो हत्थितावसो। तं च तहाविहधम्मपरं पेहिऊण नारायणो कयनमोक्कारो भणिउं पवत्तो—भयवं ! को एस धम्मपरमत्थो जं हत्थिपिसिएण भिल्लजणजोग्गेण पारणयं कीरइ ?, किल—

"अवधूतां च पूतां च प्रशस्तामृपिसेविताम् । चरेन्माधुकरीं वृत्तिमपि म्लेच्छकुलादपि ॥ १ ॥"

इत्यविगानेन मुनिजनक्षुण्णः पन्था इति । तावसेण भणियं—भद्द ! अम्ह धम्मे जीवदया सारो, सा पुण पइघरभिक्खाभमणाणेगजीवसंघायणेण न संभवइ, पइकणमेक्केक्कजीवसंभवाओ तव्बहुमीलणेणाऽऽहारपागे वि बहुजीवघाओ, अओ अणेगसत्तसंताणरक्खणत्थं एगमहासत्तवावायणमणुमयं पाणवित्तिहेउं ति । नारायणेण भणियं—भयवं ! संदिद्धचेयणालक्खणजीवगुणं कणनियरं रक्खंताण परिफुडजीवणं पि वणकरिणं घायंताण का जीवदया ? कहं वा न तज्जाइयजीवुप्पत्ती तप्पिसियपेसीसु विस्सभावोवगयासु संभवइ ? रक्खसभक्खं च इमं, तथा—

"स्वमांसं परमांसेन यो वर्द्धयितुमिच्छति । उद्विग्नं लभते वासं यत्र यत्रोपजायते ॥ १ ॥

मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम् । एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ २ ॥"

इत्यादिवाक्यैः स्मृत्यादावपि निषिद्धमेतत् । तावसेण भणियं—भद्द ! अलं अलं विसंवादेण, एस ताव अम्हं धम्ममग्गो न वियारगोयरसहो त्ति । नीहरिओ नारायणो, पट्ठिओ देसंतरं ।

दिट्ठो य एगत्थ सन्निवेसे मुद्धजणसेविज्जमाणो एगो भागवयमुणी तिकालसिणाणेण वट्टंतो त्ति । गओ य तस्स-

१ °क्षुण्णः खं० प्र० ॥ २ °फुट्टजी° खं० ॥ ३ विस्रभावोपगतासु । विस्रं–दुर्गन्धि ॥

मीवं। कयपायवडणो उवट्ठिओ समीवे, पत्थावे भणिउं पवत्तो य—भयवं! सव्वगयत्तेण विण्हुणो तदहिट्ठियजलपूरेण ण्हाणं, एवं कुणंताणं कहं न हरिणो विराहणा हवइ? अप्पहाणं च इमं सामन्नजणेण वि सेवणाओ, परमत्थियं तु एयं गिज्जइ—

शौचवाद-प्रतिक्षेपः

आत्मा नदी संयमतोयपूर्णा, सत्याम्बुजा शील-दयाततटोर्मिः।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र!, न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा ॥ १ ॥

काविलेण भणियं—झाणहुयासणेण तंदुक्कयकयवरनिद्दहणाओ नत्थि एत्थ दोसो। नारायणेण जंपियं—झाणेण पावपंकस्स सुद्धी, पउरपयपूरसरीरपक्खालणेण पुणरवि तस्संभवो त्ति एयं तं गयवरण्हाणं ति। काविलेण भणियं—होउ किं किं पि। 'एसो वि पढमेल्लुयतुल्लो' त्ति पुरओ पयट्टो नारायणो।

मिलिओ मग्गे वच्चमाणस्स जिणदत्तो नाम सावगो। 'सत्थिओ' त्ति जाया अणेण समं गोट्ठी। 'वियड्डो' त्ति समुप्पन्नो तं पइ पक्खवाओ। लद्धा य कत्तो वि गज्जराइणो कंदविसेसा नारायणेण। 'सत्थिउ' त्ति दिन्ना कइवय वि जिणदत्तस्स। न गहिया जिणदत्तेणं। 'कीस न गिण्हह?' त्ति [पुच्छिएण] जिणदत्तेण भणियं—

पडिपुन्नकेवलालोयकलियतइलोक्कगयपयत्थेहिं। पडिसिद्धो भोगो गज्जराइकंदाण नाणीहिं ॥ १ ॥
एए हि णंतजीवंगवग्गनिवत्तिय त्ति नो भुज्जा। महु-मज्ज-मंस-मक्खण-पचुंबरिफलविसेसा वि ॥ २ ॥

अनन्त-कायादीनां सदोषत्वम्

१ सर्वगतत्वेन विष्णोः ॥ २ तदुष्कृतकचवरनिर्दहनात् ॥ ३ प्रचुरपयःपुरशरीरप्रक्षालनेन ॥ ४ प्राथमिकतुल्यः ॥ ५ प्रतिपूर्णकेवलज्ञानालोककलितत्रैलोक्यगतपदार्थैः ॥ ६ °एहिं तन्न जी° सं०। एते हि अनन्तजीवाङ्गवर्गनिर्वर्तिता इति नो भोज्याः ॥

महुमाइणो हि चउरो अणेगतवन्न-गंध-रसजीवा। पच्चक्खभूरिजीवाइं जाण पंचुंबरिफलाइं ॥ ३ ॥

एक्कस्स तुच्छनियजीवियस्स कज्जेण णेगजीवाणं। कह कीरउ विणिवाओ मुणिउं सव्वन्नुवयणं पि? ॥ ४ ॥

नारायणेण भणियं गज्जरमाईसु णंतजीवत्तं। कहं तीरइ विन्नाउं सक्खा अदिस्समाणत्ता? ॥ ५ ॥

जिणदत्तेणं भणियं जिणवयणपमाणओ हि विन्नेयं। न हु नाण-दाण-तवसंभवं पि दीसइ फलं सक्खा ॥ ६ ॥

रागाईणमभावा वयणं तेसिं न संभवइ मिच्छा। न य समइकप्पणाए अइंदियत्थाण संसिद्धी ॥ ७ ॥

'अहो! गिहत्थो वि सुहुमपयत्थवियारकुसलो एस, एयगुरुणो पुण सुट्ठु विसिट्ठतमा होहिंति' [त्ति] विभावितेण भणियं नारायणेण—भद्द! कस्स समीवाओ तुज्झ एवंविहविवेयसारो धम्मवावारो? त्ति। जिणदत्तेण भणियं—संति एत्थेव पएसे भयवंतो सुगहियनामधेया भवकूवनिवडंतजंतुदिन्नहत्थावलंबा करुणामयमयरहरा हर व निदड्ढमणोभवा भवंतकारिणो जयसिंहसूरिणो।

जेसिं खमाए न खमा वि भायणं तुंगिमाए नहु सेलो। गंभीरिमाए पडिहाइ गोपयं पिव समुद्दो त्ति ॥ १ ॥

सूरो वि दिवसपरिणइपरिमियतेयत्तणेण तणुसोहो। संझो खज्जोयजुइं धरइ व अइगुरुपयावस्स ॥ २ ॥

---

१ °ह कीर° खं० प्र०। कथं शक्यते विज्ञातुं साक्षाद् अदृश्यमानत्वात्? ॥ २ संखा अ° खं० ॥ ३ °णसंतसंभ° खं० ॥ ४ स्वमतिकल्पनया अतीन्द्रियार्थानाम् संसिद्धिः ॥ ५ °भावंते° प्र०। 'विभावयता' विचारयता ॥ ६ भवकूपनिपतज्जन्तुदत्तहस्तावलम्बाः करुणामृतमकरगृहाः। मकरगृहः—समुद्रः ॥ ७ 'क्षमायाः' क्षान्त्याः 'क्षमा' पृथ्वी ॥ ८ पिय खं० ॥ ९ 'तनुशोभः' अल्पशोभावान् ॥ १० ध्रुवः खद्योतद्युतिम् ॥

चंदो वि सोमयाए ता गिज्जइ दिज्जइ य उवमाणं । हरिणारी वि हु सोंडीरिमाए ता मा इमो हियए ॥ ३ ॥
जावऽज्ज वि सुजंवियवारसंगसुयमुणियतिजयवावारा । ते[3] सुकयपावणिज्जा ने चक्खुपहं पवज्जंति ॥ ४ ॥
तेंहिंतो वहुनय-भंग-हेउगंभीरसमयसिंधुभवो । अइथोपसुकयकम्मत्तणेण पत्तो विवेयलवो ॥ ५ ॥

इमं सोच्चा तुट्ठो नारायणो भणिउं पवत्तो—न रोहणाओ अन्नत्थ निरुवमरयणसंभवो, न वा अणेरिसगुरूहिंतो एवंविहसुहुमधम्मपरिन्नाणं, ता भो जिणदत्त ! सव्वहा कयं तए सव्वमम्ह कायव्वं, दंसेहि ताण नियगुरूण चरणंबुरुहं, जइ पुण कहं पि तहिं मम मणमहुयरोऽभिरइं पावइ त्ति । जिणदत्तेण भणियं—एवं करेमि त्ति ।

ततो पंचजोयणंतरिए सेयपुरे नयरे दो वि गया । दिट्ठा सूरिणो तक्कालागयनरवइपमुहपहाणजणकीरमाणपूयामहिमा धम्मकहं कहिंति-त्ति । ततो समुट्ठिंतरोमंचसइअंतबहुमाणा जिणदत्त-नारायणा निवडिया गुरुणो चलणेसु । चक्खुक्खेवपुरस्सरं च दिन्नासीसा सीसारोवियकरकमला निलीणा समुचियधरामंडले । एत्थंतरे गुणावज्जियहियएण राइणा कूडीकयाओ पंच सुवण्णकोडीओ चीणंसुयपमुहवत्थरासीओ य गुरुपुरओ, भणियं च—भयवं ! अणुग्गहं काऊण गिण्हसु इमं ति । सूरिणा भणियं—महाराय !

---

१ °इ गिज्ज° प्र० ॥ २ सुअर्पितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञातत्रिजगद्व्यापाराः ॥ ३ तो सु° सं० प्र० । ते सुकृतप्रापणीयाः ॥ ४ °ज्जा, नो च° खं० प्र० । 'नें' अस्माकम् ॥ ५ अनीदृशगुरोः ॥ ६ कहिं पि खं० प्र० ॥ ७ समुत्तिष्ठद्रोमाञ्चसूच्यमानबहुमानौ ॥ ८ 'कूटीकृताः' राशीकृताः ॥

अत्थो अणत्थहेऊ अत्थो संसारकारणं गरुयं। अत्थो संजमवणसंडचंडगुरुदावहव्ववहो[1] ॥ १ ॥
अत्थो उम्मायकरो सयंवरो दुम्मईमहिलियाए। तेणेस वज्जिओ मुणिवरेहिं दूराउ दूरेण ॥ २ ॥
जं पुण अमहद्धण[2]सेयवत्थ-कंबलपमोक्खमुवगरणं। संजमहेउं तं किं पि किं पि गिण्हंति परिसुद्धं ॥ ३ ॥
ता संपइ पज्जत्तं सव्वेणं भूमिनाह ! एएणं। पत्तं चिय दाणफलं तुमए इय कयपयत्तेण ॥ ४ ॥
इच्छेज्ज न इच्छेज्ज व तह वि हु पयओ निमंतए साहू। परिणामविसुद्धीए य निज्जरा होअगहिए[3] वि ॥ ५ ॥
इय पन्नविओ वि निवो अणणुग्गहिओ गुरूहिं अप्पाणं। निप्पुन्नं मन्नंतो जहागयं पडिगओ नमिउं ॥ ६ ॥
नारायणो य चिंतइ अहो ! महप्पा दढं विजियलोहो। एत्तियमेत्तं पि धणं तणं व जो चयइ दिज्जंतं ॥ ७ ॥

जायं विजणं। तओ जिणदत्तेण दंसिओ परमपरितोसोवगतो नारायणो, गुरूण सिट्ठो य, जहा—एस महप्पा तुम्हपायपउमाणुरागेण एत्तियभुवमागओ, ता नियसेवाणुरूवफलभायणं कुणह एयं ति। ततो गुरुणा उवइट्ठो साहुधम्मो गिहिधम्मो य सवित्थरो एयस्स। तं च सोच्चा लहुकम्मयाए अच्चंतमज्झत्थयाए य सुहुममइविभावियभावत्थो पडिबुद्धो एसो, चिरकालं पज्जुवासिऊण समुवलद्धसद्धम्मसारो कयगुरुखामणो गओ नियनयरं।

दिट्ठो पिया। कहिओ धम्मसारोवलंभवुत्तंतो। पसंसिओ पिउणा। परिचत्तो य जन्नकज्जाइसावज्जवावारो। एवं च ते दोन्नि वि सम्ममणुव्वय-गुणव्वय-सिक्खावयपरिवालणेण सुमुणिपज्जुवासणेण सिद्धंतरहस्ससवणेण य पइदिणं सविसेसधम्मु-

१ हव्यवाहः—अग्निः ॥ २ अमहाधनश्वेतवस्त्रकम्बलप्रमुखमुपकरणम् ॥ ३ भवत्यगृहीतेऽपि ॥

जया जाया । कमेण य कालियदेवसिरिक्को मणसिद्धत्रोग्गपमुगाण समसमाराहियसंजमा निव्वाणसुहभागिणी ति । एवंविह-
मज्झत्थारत्तीकारणं मज्झत्थं ति । किंच—

विमलम्मि दप्पणे जह पडिबिंबइ पासवत्तिवत्थुगणो । मज्झत्थे तह मणुए संकमइ समग्गधम्मगुणो ॥ १ ॥
मज्झत्था दोसे उज्झिऊण गिण्हंति वत्थु पेयवं । नियनिउणयाए हंस व नीरचाएण खीरं व ॥ २ ॥

अपि च—अज्ञानजं संस्करणं हि पुद्गलोचनं वस्तुविलोकनं च ।

आचार्यशिक्षाव्यतिरिक्तमेव, माध्यस्थमाहुः परमं पटुत्वम् ॥ १ ॥
माध्यस्थ्यतः स्याद्गुणोऽपि पुंसामाराध्यपादः सुहृदां गणश्च ।
माध्यस्थ्यमेकं प्रतिपद्य जीवाः, प्राप्ता जाता संसृतिसिन्धुपारम् ॥ २ ॥
उदीर्णदुष्कर्मसमूहयोगे, माध्यस्थ्यमासादयते न जीवः ।
न सन्निपातोपहतः कदाचिच्छुभाऽशुभं वस्तु विवेक्तुमीशः ॥ ३ ॥

इति सर्वाग्रहत्यागान्माध्यस्थ्यशरणः सुधीः । क्षीराब्धिरिव सिन्धूनां संपत्तीनां पदं भवेत् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे माध्यस्थ्यगुणचिन्तायां पुरोहितसुतनारायणकथानकं समाप्तम् ॥ २० ॥

---

१ सक्कम° सं० प्र० ॥ २ °दवले सं० प्र० ॥ ३ °ध्यस्थे शा° प्र० ॥ ४ सपत्नीनां प्र० ॥ ५ °न्ताया उ पु° सं० प्र० ॥

रदेवयाविइन्नो' त्ति 'अमरदत्तो' त्ति पुत्तस्स नामं। पंचधावीपरिग्गहिओ य समइक्कंतो बालभावं, पाढिओ सयलकलाकलावं, जोव्वणमणुपत्तो य परिणाविओ इब्भकन्नयं। धम्मंतरपरिहारनिमित्तं च पिउणा रत्तिसेसं पइदिणं निज्जइ सो सुगयपायपूयणत्थं, पाडिज्जइ य भिक्खूण पाएसु, सुणाविज्जइ य सुगयसत्थाइं, उज्झाविज्जइ सेसलिंगिजणेण सह संगं ति। एवं वच्चंति वासरा। 'बुद्धधम्मपरमत्थवियक्खणो सुपडिलग्गो य एसो' त्ति बाढं रंजिओ य सेट्ठी। ठविओ य सव्वेसु अब्भंतरियनियकिच्चेसु अमरदत्तो। एवं च से तिवग्गसंपाडणपरस्स आगओ वसंतसमओ। सम्मओ जो पक्खीण वि, दंसियवियारो तरुवराणं पि, उकंपियपियविउत्तकामिणीजणो, जणियपुहइपमो[ओ] य। अवि य—

वियसंतकुमुयनयणेहिं कमलवयणेहिं वल्लिउकरिसा। वणलच्छीओ सोरब्भनिब्भरं जं नियंति व ॥ १ ॥

जम्मि य पहिया सहयारमंजरीरेणुपुंजपिंजरिया। अंतो नियंतदइयाणुरायरत्त व रेहंति ॥ २ ॥

गाढुक्कंठाकंठग्गलग्गजीया वि जावयंति जहिं। कंकेल्लिपल्लवोत्थयहियायाओ पउत्थवइयाओ ॥ ३ ॥

जयडिंडिमो व पडिहाइ मणहरो परहुयारवो जत्थ। सो महुममओ भण कस्स सम्मओ होज्ज न जियस्स ? ॥ ४ ॥

एवंविहगुणाभिरामे य तम्मि अमरदत्तो भणिओ य वयस्सेहिं—भो पियसित्त ! दट्ठव्वदंसणफलाणि भण्णंति लोयणाणि,

१ नीयते ॥ २ 'यं' वसन्तं पश्यन्तीव ॥ ३ अन्तः नितान्तदयितानुरागरक्ता इव राजन्ते ॥ ४ गाढोत्कण्ठाकण्ठाग्रलग्नजीविता अपि यापयन्ति यत्र। कङ्केल्लिपल्लवास्तृतहृदयाः प्रोषितपतिकाः ॥ ५ 'परभृतारवः' कोकिलाशब्दः ॥

ता कुणसु सिंगारं, पिच्छसु वसंतूसवं ति । ततो जायवसंतावलोयणकोऊहलो अमरदत्तो पियरं विन्नविउं पवत्तो—ताय ! जइ तुब्भे आइसह ता वसंतसिरिं अदिट्ठपुव्वं अवलोएमि त्ति । सेट्ठिणा भणियं—वच्छ ! किमजुत्तं ? केवलं तव्विलोयणगयाण अणेगवित्तिभिन्नधम्माणो कुबुद्धिदायारो य संभवंति, ता जह न तेहिं तरलिज्जइ मणो [न] हवइ धम्मविणासो दव्वक्खओ य तहा अभिरमसु, कहं तुह कीलाभिलासपडिकूलं वट्टामि ? त्ति । एवं च पिउणाऽणुन्नाओ कइवयवयस्सपरिवुडो सुंदरनेवच्छो गओ पुप्फावतंसयम्मि उज्जाणे, पविट्ठो तयब्भंतरे, जहिच्छमारद्धो य कीलिउं । कहं चिय ?—

कत्थई नियइ रणझणिरमणि-कंचणं, हिट्ठवयणं पणचंतमयलाजणं ।
फुल्लनलिणं रणंतालिमालागणं, खरसमीराहयं नाइ नलिणीवणं ॥ १ ॥
कत्थई पंचमुग्गाररवनिब्भरं, गेयमायन्नई वेणु-वीणारवं ।
पहियपमयाण कयगाढमुन्नागमं, थोभणं मंतपढणं व भूरिब्भमं ॥ २ ॥
पेच्छई कहिं वि फुल्लंतवेइल्लयं, कोरइंतकंकेल्लिसाहोल्लयं ।
पेहई भत्तुणा चाडुसयचड्डियं, अणुणइज्जंतियं पणइणिं खंडियं ॥ ३ ॥

१ कुत्रचित् पश्यति रणझणनशीलमणिकाञ्चनं हृष्टवदनं प्रनृत्यदबलाजनम् । पुष्पितनलिनं रणदलिमालागणं खरसमीराहतमिव नलिनीवनम् ॥ २ °थरइ रणज्झणि° प्रती ॥ ३ कुत्रचित् पञ्चमोद्गाररवनिर्भरं गेयमाकर्णयति वेणुवीणारवम् । पथिकप्रमदानां कृतगाढवियोगागमं स्तम्भनं मन्त्रपठनमिव भूरिभ्रमम् ॥ ४ प्रेक्षते कुत्रापि पुष्प्यद्विचकिलं कोरकत्कङ्केल्लिशाखम् । प्रेक्षते भर्त्रा चाटुशतमृदितां अनुनीयमानां प्रणयिनीं खण्डिताम् ॥ ५ भणुणा प्रती ॥

कुणइ कुसुमुच्चयं सरइ सरसीतडं, विसइ सलिलम्मि तडदिन्नझंपुब्भडं ।
दोलकीलाए वट्टइ खणं रंजिओ, रमइ अक्खेहिं जोगि व्व अविगंजिओ ॥ ४ ॥

इय एवंविहबहुविहविलासलीलाहिं वणनिगुंजेसु । वणवारणो व्व सो भमइ निब्भरं मित्तवग्गजुओ ॥ ५ ॥

एवं च भमंतो स महप्पा असोगतरुपट्टए निसन्नं समणं एकं अच्चंतकरुणपलावस्स एगस्स वइदेसियनरस्स भूरिमंडल[मज्झ]गयस्स वाहिवेयणाविहुरस्स किं पि उवइसंतं पेच्छइ । ततो भणिया अणेण नियवयस्सा—अरे ! आगच्छह, एस साहू आइक्खइ किं पि तं निसामेमो त्ति । वयस्सेहिं जंपियं—पियमित्त ! तुमं पिउणा सुचिरं वारिओ, जहा—विधम्माणो मिलंति तथा तस्संगमो य धम्मविणासगो त्ति सो मोत्तव्वो, ता न जुत्तमेत्थावत्थाणं । अमरदत्तेण भणियं—एतेण वि को दोसो ? न हि जलण-तालउड-खग्गाईणं दंसणं सवणं वा अणिट्ठं जणिउमलं, ता अलं संभमेण, एह खणमेत्तं निसामेह—किमेस वइदेसिओ जंपइ ? किं वा एस मुणी समुल्लवइ ? । तुण्हिक्का ठिया वयस्सा । गओ अमरदत्तो मुणिणो समीवं । एत्थंतरे रुयंतो सो वइदेसिओ पुच्छिओ जणेण—भद्द ! किं रुयसि ? त्ति । तेण भणियं—कडुई कॅन्नाण मे संकहा तहा वि निसामेह—

अहं हि कंपिल्लपुरे संकरस्स घरवइस्स घरिणीए दुट्ठलक्खणो सुओ जम्मणदिवसे च्चिय निहणोवणीयधणो जाओ म्हि । जाँव य छम्मासिओ संवुत्तो ताव माया-पियरो परलोगमुवगया । तप्पभिइं पालिओ हं जेहिं सयणेहिं ते वि महाणुभावा

१ सरति ॥ २ तटदत्तझम्पोद्भटं यथा स्यात् तथा ॥ ३ एत्तेण प्रतौ ॥ ४ °णिच्छं ज° प्रतौ ॥ ५ कर्णयोः ॥ ६ जाय व छ° प्रतौ ॥ ७ तेहिं म° प्रतौ ॥

महदुक्कम्मजम्मोवहया दिवं गया । वरिसमेत्तो य इओ तओ कंट्ठकप्पणाकप्पियपाणवित्ती विसरुक्खो व सैव्वसंतावकारी वड्ढिओ सरीरेण दुक्खेण [य] एत्तियं कालं । संपयं च गंडोवरि पिडिंमुब्भेयविब्भमेण दुस्सहमहानाहिनिव्वहेण वेरिविसरेणेव पइक्खणुप्पाइयतिक्खतरदुक्खलक्खेण पडिवन्नो म्हि । एत्तिएण य न ट्ठियं, अंतरंतरा अदिट्ठो कोइ भूओ पिसाओ वा तं वेयणमुव[ज]णइ जा जीहासएण वि वोत्तुं न पारियइ । एवंविहमहादुहोवहओ य इण्हिं जीवियविरत्तो नग्गोहसाहाए उल्लंबिऊण अप्पाणं मरणमुवट्ठिओ । तत्थ वि पडिकूलदेव्ववसओ असंपुन्नमणोरहो तुट्टपासो निवडिओ धरणिवट्ठे । गरुयवेरग्गोवगओ य 'किं मए पुरा कयं ?' ति साहुमिमंपापुच्छिउमेत्थ आगओ म्हि ॥

ततो विम्हिओ जणो 'किं कहिस्सइ साहु ?' त्ति जाओ एगचित्तो । एत्थंतरे भणियं साहुणा—भो महाणुभाव ! निसामेहि—

तुमं हि एत्तो तइयभवे पच्चंतगामे देवलओ नाम कुलपुत्तओ अहेसि । पओयणवसेण य मेत्तसमेओ गामं वच्चंतो मिलिओ एगस्स पहियस्स । जाओ संकहावसेण तेण सह पणओ । उवलद्धो य तुमए सो पहिओ, जहा—निच्छियं धणड्ढो एसो त्ति । ततो नियमित्तेण सह मंतिऊण रयणीए निब्भरपसुत्तो सो पोत्तेण वयणं गाढं पच्छाइऊण गलदेसोमोडणेण मारिओ तुब्भेहिं, गहियं तैद्दव्वं । पट्ठिया दो वि । दव्वलोभेण य जाओ अवरोप्परं वहपरिणामो ।

अह भोयणस्स समए तुमए इयरस्स मारणकएण । खिविऊण महुम्मि विसं दिन्नं तेणावि तुज्झं पि ॥ १ ॥

१ महदुष्कर्मजन्मोपहताः ॥ २ कष्टकल्पनाकल्पितप्राणवृत्तिः ॥ ३ सत्तसं° प्रतौ ॥ ४ पिडिमोद्भेदविभ्रमेण ॥ ५ तद्दवं प्रतौ ॥

पुंवसुसंभियविसमिस्सपक्खिमंसं पणामियं तइया। दो वि विणासं पत्ता ही ही ! अत्थो महाणत्थो ॥ २ ॥

ता भो देवल ! संकिलिट्ठगरुयकम्मपब्भारनिहयसुकयकम्मो तुमं मरिऊण उववन्नो नरए। चिरकालं च कलणाइक्कंतं दुक्खं सहिऊण संपयं एवंविहदुहाभागी जाओ सि। सो हि पहिओ तहा वहिओ उववन्नो भवणवासिदेवेसु, संरियचिरभववइयरो य एवंविहजायणाहिं तुमं बाहइ। जो वि उल्लंघणपासो तुट्टो सो वि 'चिरकालं किलिस्सउ एसो' त्ति तक्कओ चेव। ता भद्द ! एयं तुह पुव्वदुकयं ति।

अन्नाण-मोहवामोहिया मुहा अज्जिऊण पावरयं। किच्चमकिच्चमनाउं अंध व पडंति भवकूवे ॥ १ ॥

इट्ठविओगा-ऽणिट्ठप्पओगसंतावतत्तसव्वंगा। चिट्ठंति चिरं च तहिं तण्हा-छुहवेयणाइहया ॥ २ ॥

उम्माहिज्जंति चिरोवभोत्तसोक्खाण गुत्तिखित्त व्व। बहुसो वि य विलवंता लहंति थेवं पि न विमुत्तिं ॥ ३ ॥

ता भो देवाणुपिया ! पच्चक्खं पेक्खिउं दुहविवागं। नियदुकयाणमभिरमह सव्वहा कुसलकम्मेसु ॥ ४ ॥

अवि हालाहलगिलणं पि गलतले जुंजणं पि खग्गस्स। सुहसुत्तसिंहकंडूयणं पि पत्तं कह वि होज्जा ॥ ५ ॥

न उण निरंकुसमयसत्तमत्तकरिदुट्ठचेट्ठियं कह वि। खेमाय होज्ज कस्स वि अवि सुरवइतुल्लसिरिणो वि ॥ ६ ॥

सामर्थ्यगुणे अमरदत्तकथानकम् २१।

शुश्रूषाया माहात्म्यम्

१ पुव्वं सु° प्रतौ। पूर्वसुसम्भृतविषमिश्रपक्षिमांसं अर्पितं तदा ॥ २ 'कलनातिक्रान्तं' कल्पनातिक्रान्तम् ॥ ३ स्मृतचिरभवव्यतिकरश्च एवंविधयातनाभिः ॥ ४ तत्कृतः ॥ ५ अर्जयित्वा पापरजः। कृत्यमकृत्यम् अज्ञात्वा ॥ ६ उन्माथ्यन्ते चिरोपभुक्तसुखेभ्यः ॥ ७ निजदुष्कृतानाम् ॥ ८ निरङ्कुशमदसक्तमत्तकरिदुष्टचेष्टितम् ॥

सुगुरुवएसंकुसविरहओ य न सुमग्गलग्गणं पायं । ता सुस्सूसाए मणो पढमं पि निजुंजणीयमिमं ॥ ७ ॥
तग्गाढारूढमणो पईवपडिमं सुहं सुयं लहइ । तत्तो य विरइभावं तओ लहुं आसवनिरोहं ॥ ८ ॥
तप्फलमसमतवोबलमह तत्तो निज्जराफलं विउलं । किरियाविगमं तत्तो ततो य परमं अजोगित्तं ॥ ९ ॥
तत्तो भवसंतइखंडणं च मोक्खं च तप्फलमुयारं । इय सबकुसलमूलं वयंति सत्थत्थसुस्सूसं ॥ १० ॥

एवं मुणिणा सिट्ठे सबकज्जपरमत्थे परमं पमोयमुवगओ पेच्छगो लोगो । सो वि वइदेसिओ सरियपुबभवसबवुत्तंतो अंतोवियंभंतगरुयसोगावेगो 'भयवं ! अवितहमेयं, अणुभूयं निरवसेसं ससरीरेणं' ति वागरंतो अणसणं पवन्नो ॥ छ ॥

अमरदत्तो वि तदायन्नणपवड्ढंतसुहभावो, मचियवयावसेण लद्धदंसणावरणविवरो, 'वरं मरणमेवंविहधम्मविरहियाणं' ति चित्तनिहितविवेगमुद्दो, मुद्धारयणं तत्थेव गोविऊण, मुणिणो नाणाइसयं पुणो पुणो सरंतो वयस्साणुवित्तीए गतो सगिहं । संभासिओ पिउणा—वच्छ ! किमच्छेरयभूयं किं पि तहिं दिट्ठं ? ति । संखुद्धमणो य अमरदत्तो जाव न किं पि जंपइ ताव सिट्ठो वयस्सेहिं साहु-वइदेसियवुत्तंतो । तं च सोच्चा चिंतियं सेट्ठिणा—एस पढमुग्गमो संवच्छरिओ-वहट्ठधम्मविघायपायवस्स त्ति । जायगरुयरोसेण य भणिओ एसो—वच्छ ! पंजत्तमित्तो वसंतलच्छीपेच्छणच्छलेण, अच्छसु गिहे चिय पेच्छणयाइपलोयणपरो त्ति । एवं च पिउवयणरज्जुसंदाणियस्स महाकट्ठेणं वोलीणं दिणमेगममरदत्तस्स साहु-

१ शुश्रूषायाम् ॥ २ श्रुतम् ॥ ३ तत्फलम् असमतपोबलम् अथ ॥ ४ शास्त्रार्थशुश्रूषाम् ॥ ५ 'शिष्टे' कथिते ॥ ६ अन्तर्विजृम्भमाणगुरुकशोकावेगः ॥ ७ व्यागृणन् ॥ ८ तदाकर्णनप्रवर्धमानशुभभावः ॥ ९ वयस्यानुवृत्त्या ॥ १० पर्याप्तम् इतः ॥ ११ सन्दानितः—बद्धः ॥

विरहियस्स । तइयदिणे य वयस्समुहेण भणाविओ सेट्ठी, जहा—मुद्दारयणं अंगुलीकिसलयाओ गलियमुज्जाणदेसे, ता जइ तुब्भे अणुजाणह ता तमहं गंतूण पलोएमि त्ति । पिउणा भणियं—एवं करेहि, परं कालक्खेवं विवज्जेज्जासि[1] । तओ गओ अमरदत्तो उज्जाणं, भावसारं वंदिओ साहू, आसीणो समीवे, सुओ सव्वन्नुधम्मपरमत्थो अच्चंतमभिरुइओ य । तओ सवायरं भणितो तवस्सी—भयवं ! गिहिधम्मप्पयाणेण अणुगिण्हह ममं ति । साहुणा भणियं—भो महायस !

नाउं जिणिंदधम्मं सम्मं भेय-प्पभेयओ पच्छा । वड्ढंतसुद्धभावो विहिपुव्वं तं पवज्जेज्ज ॥ १ ॥

जीवा-ऽजीवाइपयत्थगोयरं न हु अबुज्झिउं तरइ । हिंसाईण निवित्तिं काउं धम्मेकचित्तो वि ॥ २ ॥

न य जह तह पारद्धा विसुद्धधम्मत्थसाहणी किरिया । होउमलं ता भद्दय ! वीसत्थो सुणसु सत्थत्थं ॥ ३ ॥

अमरदत्तेण भणियं—भयवं ! एयमेवं, केवलं अम्ह पिया देसवलमग्गाणुगामी[2] धम्मंतरं सोउं पि नेच्छइ, न य अम्हारिसं पि सुणंतमणुजाणइ, तब्भएण अहमेत्थ संखेवओ धम्मं घेत्तुमिच्छामि त्ति । मुणिणा भणियं—भद्द ! उत्तमवत्थुगहण[3]पयट्टेहिं न भाइयव्वं जणगाइज्जणाओ[4], न लज्जियव्वं सामन्नलोगाओ, न खुभियव्वं पच्चूहवूहातो, अयं हि जिणधम्मो महानिहिं व गरुयपुन्नपब्भारलब्भो परमब्भुदयहेऊ य, अओ संभवइ एत्थ विग्घकारी, ता होसु एगचित्तो, चयसु पियराइपडिभयं, अणंते हि इह संसारे सरंतजंतुणो अणंता माया-पियराइणो जाया, परं न तेहिंतो थेवो वि उवलद्धो दुक्खपडियारो, न य एत्तो सैरियावारिपूरहीरमाणेण[5] व तडविडविपालंबो अहवा जलहिगएण व पोओ पत्तो जिणधम्मो तुमए

१ विवर्जयिष्यसि ॥ २ बौद्धमार्गानुयायी इत्यर्थः ॥ ३ °वत्थग° प्रतौ ॥ ४ °जणओ प्रतौ ॥ ५ सरिद्वारिपूरह्रियमाणेन इव ॥

उवेहिउं जुत्तो त्ति । एवमाइजुत्तिसारवयणपरंपराजियकुवियप्पो अमरदत्तो नीसेससंखोभवग्गमवहाय जहुत्तविहीए जिणसासणं पवन्नो, नियसामत्थाणुरूवा य पाणवहविरइपमुहा पडिग्गहिया अभिग्गहविसेसा ।

धर्मोपास्तेः प्राधान्यम्

भणिओ य तओ मुणिणा देवाणुप्पिय ! पवन्नजिणधम्मो । संकाइदोसजालं एत्तो दूरं चएज्जाहि ॥ १ ॥
संकाइदोसदुट्ठो लद्धं पि जिणिंदधम्ममाणिक्कं । उज्झइ तत्तो य दारिद्दरुंददुहभायणं होइ ॥ २ ॥
जिणधम्मसंगओ दुग्गओ वि परमत्थओ महाइब्भो । एयविउत्तो पुण ईसरो वि दारिद्दियब्भहिओ ॥ ३ ॥
अत्थो जणणी जणगो बंधू सयणा य भिच्चसंघाओ । काउं तं न समत्था जं जिणधम्मो दढं चिन्नो ॥ ४ ॥
चिरमुवइरिया वि इमे इहलोइयमेव किं पि कुव्वंति । जिणधम्मो पुण तं नत्थि जं न मणवंछियं कुणइ ॥ ५ ॥
किं बहुणा भणिएणं ? एत्तो भद्दं न अन्नमिह किं पि । ता उज्झियसव्वभओ भएज्ज धम्मं इमं सम्मं ॥ ६ ॥

'एवं काहं'-न्ति भालयलपरामुट्ठमुणिपायवट्ठो 'नित्थारगपारगो होज्जाहि' त्ति गुरुणा दिन्नासीसो जिणधम्मरयणं सुहारयणं च घेत्तूण गओ नियघरं । तिकालचेइय-साहुपूयारओ य जहापारद्धपओयणेसु वट्टिउमारद्धो । उवलद्धसव्वतव्वुत्तंतो य पिया परं कोवमुव्वहंतो भणिउं पवत्तो—अरे दुट्ठसुय ! पुव्वपुरिसपरंपरागयं सुगयधम्ममुज्झिय धम्मंतरं कुणंतो दट्ठुं पि न जुज्जसि किं पुण संभासिउं ? केवलं दुपुत्तपडिबंधो एवं विडंबेइ त्ति । अमरदत्तेण भणियं—ताय ! कणगमिव धम्मो सुपरि-

१ एवमादियुक्तिसारवचनपरम्पराजितकुविकल्पः अमरदत्तः निश्शेषसंक्षोभवर्गम् अपहाय ॥ २ त्यक्ष्यसि ॥ ३ 'महेभ्यः' महर्द्धिकः ॥ ४ चिरमुपचरिताः ॥ ५ भजेः ॥ ६ 'करिष्यामि' इति भालतलपरामृष्टमुनिपादपृष्ठः ॥ ७ °तव्वुत्तंतो यं पि° प्रतौ । उपलब्धसर्वतद्वृत्तान्तश्च ॥

खिऊण घेत्तव्वो, न उण पुव्वपुरिसकमपाहन्नेणं । किंच—

पाणिवहा-ऽलिय-चोरिक्कविरइ-परजुवइवज्जणपहाणो । पच्चक्खदिट्ठसारो धम्मो एसो कहमजुत्तो ? ॥ १ ॥

पच्चक्खेण वि दीसइ एवंविहधम्मविहिविहीणाणं । जीवाण जायणाओ विविहाओ दुक्खजणिगाओ ॥ २ ॥

किं वा इमिणा ? तुब्भं वेसाईवसणवज्जणे जंतो । काउं जुत्तो धम्मुज्जमे य मे किं व वयणिज्जं ? ॥ ३ ॥

उत्तमपणियं लिंतो जहा न निंदापयं हवइ वणिओ । उत्तमधम्मपवन्नो न हीलणिज्जो तहा हं पि ॥ ४ ॥

पिउणा भणियं—अरे दुरायार ! अतिमुहरो सि, कुणसु जं ते रोयइ, न एत्तो वत्तव्वो सि त्ति । वित्थरियमेयं च नयरमज्झे—जहेस चत्तनियमग्गो धम्मंतरं पवन्नो त्ति । सुयमिमं ससुरेण । भणाविओ तेण एसो—जइ मह धूयाए कज्जं ता संज्जो वज्जेसु मग्गमिमं ति । तह वि न संखुद्धो एसो । विसज्जिया पियहरं भज्जा । अवरवासरे य संलत्तो एसो जणणीए—वच्छ ! किं पि कुणसु धम्मं, केवलं अमराभिहाणं कुलदेवयं पूएसु सव्वायरेणं, एयप्पसायपभवो हि तुज्झ जम्मो त्ति । अमरदत्तेण भणियं—अम्मो ! सव्वन्नुमेकं चिय अच्चयंतस्स जं होइ तं होउ, अलाहि देवंतरपूयणेणं । तओ कुविया कुलदेवया । भेसिओ सुहपसुत्तो रयणीए भीमभुयंग-मायंग-वेयालपमुहोवसग्गेण । भणिओ य—अरे दुस्सिक्खिय ! दुक्खियं काहामि त्ति । तह वि न भीओ एसो, परं परुट्ठदेवयाजणियगरुयरोगवग्गविहुरो वि थिरयरीभूओ जिणिंदधम्मम्मि, चिंतिउं पवत्तो य—

१ यातनाः ॥ २ °जणगा° प्र० ॥ ३ जुत्तो खं० प्र० ॥ ४ धम्मुज्जुत्तो प्र० ॥ ५ उत्तमपण्यं 'लान्' आददानः ॥ ६ °वत्तो न प्र० ॥ ७ सद्यः ॥ ८ पितृगृहम् ॥

पडिकूला हवउ सुरा माया-पियरो परम्मुहा होंतु । पीडंतु सरीरं वाहिणो वि खिसंतु सयणा वि ॥ १ ॥
निवडंतु आवयाओ गच्छउ लच्छी वि केवलं एक्का । मा जाउ जिणे भत्ती तदुत्ततत्तेसु तत्ती य ॥ २ ॥
इय निच्छयप्पहाणो दुत्थावत्थं पि परममब्भुदयं । मन्नंतो स महप्पा एगग्गो कुणइ जिणधम्मं ॥ ३ ॥

एवं च दव्व-भावसामत्थाणुगयस्स तस्स महाणुभावस्स वच्चंतेसु वासरेसु, परिहीयमाणेसु धम्मविग्घकारिसु असुह-कम्मपोग्गलेसु, धम्मनिच्छयं पेच्छिऊण पराभग्गा कुलदेवया, उवसंहरिया रोगा, सपायपणामं कयखामणा गया उवसमं । अम्मा-पियरो वि तव्ववहारसुद्धिरंजियजणगिज्जंतगुणगणसवणुब्भवंतपरमपमोया पुव्वमिव सिणेहसारं परिचत्तधम्मविग्घा वट्टिउं पवत्ता । अणुकूलीहूओ सयणवग्गो, विलक्खीहूओ ससुरो, खामणापुव्वगं च अणेण पेसिया पइहरं धूया । अणुदिणमि-उपन्नवणाए य जिणधम्माभिमुहीकओ माया-पियाइलोगो अमरदत्तेणं ।

इत्थं सामत्थगुणं स-परुवयारप्पहाणमवगम्म । पडिभयचक्कविमुक्को तत्थेव ठवेज्ज अप्पाणं ॥ १ ॥
पाएण विग्घवग्गग्गलाइं गिज्झंति धम्मकिच्चाइं । कीरंति न खलिउं ताइं उभयसामत्थविरहेण ॥ २ ॥ किंच—

चोराकुलं मकर-मीन-तिमिङ्गिलादिरौद्रं समुद्रमरिदुर्विषहं रणं च ।
सामर्थ्यतः समतिलङ्घ्य शमाप्नुवन्ति, सीदन्ति तद्विरहिताश्च यथा मनुष्याः ॥ १ ॥

सामर्थ्यस्य माहात्म्यम्

१ यातु ॥ २ °णे सत्थी त° गं० ॥ ३ 'तप्तिः' चिन्ता ॥ ४ °यं काऊण प्र० ॥ ५ तद्व्यवहारशुद्धिरञ्जितजनगीयमानगुणगणश्रवणोद्भवत्पर-मप्रमोदौ ॥ ६ परित्यक्तधर्मविघ्नौ ॥ ७ अनुदिनमृदुप्रज्ञापनया ॥ ८ स्वपरोपकारप्रधानमवगत्य ॥ ९ 'शं' सुखम् ॥

तद्वज्जिनेन्द्रगदितामलधर्मकर्मनिर्मापणावसरविघ्नगणं विहत्य।
आसादयन्ति शिवमद्भुतचित्तदार्ढ्यात्, सीदन्ति केवलमनीदृशचेतसश्च ॥ २ ॥ अपि च—

तावद् दुर्विषहा हिमाचलमरुद्-वैश्वानरा-ऽर्क्युतः, तावद् भीमभुजङ्गसङ्गविषमाः पाताल-भूकुक्षयः ।
तावद् दुःखगमाश्च सिंह-शरभैः शैलस्थलीभूमयः, यावच्चित्तदृढत्वरूपविलसत्सामर्थ्यभाजो नहि ॥ ३ ॥
इति सामर्थ्यं सर्वार्थसाधनं धनमिवानिर्धनमाप्य । दौर्गत्य-दुःखविषयं न यान्ति सन्तः किमाश्चर्यम् ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे सामर्थ्यगुणचिन्तायां अमरदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ २१ ॥

अर्थित्व-स्वरूपम्

सामत्थे संते वि हु न जं विणा संभवेज्ज धम्ममई । तं अत्थित्तं संपइ लेसुद्देसेण दंसेमि ॥ १ ॥
जह भोयणम्मि इच्छा भज्जा-वइयाण जह व अणुरागो । तह अत्थित्तं सारं परलोयपहाणचेट्ठासु ॥ २ ॥
अत्थी एत्थं सो पुण जो संसारियभयं परिवहंतो । एसो च्चिय परमत्थो सेसोऽणत्थो त्ति मन्नंतो ॥ ३ ॥
पुच्छइ गुरुणो तब्भेय-विसय-ववहार-निच्छयाइगयं । तस्स सरूवं अणुदिणमब्भहियं कयसमुट्ठाणो ॥ ४ ॥
धम्मियजणेऽणुसज्जइ सज्जइ य ससत्तिओ अणुट्ठाणे । वज्जइ य तव्विरुद्धप्पवित्तिपवणं जणं दूरे ॥ ५ ॥
तक्कहनिसामणेण वि हरिसिज्जइ खिज्जई असुहकिच्चे । धम्मामत्थीणमिमे दूरविरुद्धा समायारा ॥ ६ ॥

१ अखण्डमित्यर्थः ॥ २ भज्जोव° खं० प्र० । भार्यापत्योः ॥ ३ धार्मिकजनान् ॥ ४ तद्विरुद्धप्रवृत्तिप्रवणम् ॥ ५ हृष्यति खिद्यते ॥ ६ धर्मार्थिनाम् इमे ॥

इयलक्खणो 'विणेओ अत्थी जोग्गो विसेसधम्मस्स । एयविलक्खणरूवो य जाणियव्वो अजोगो त्ति ॥ ७ ॥

ऐवंविहस्स वि धुवं धम्मारोवणमरन्नरुन्नसमं । केवलकिलेसमेत्तं विन्नेयं सुंदरस्सेव ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि सुरसरिलोलकल्लोलभुयपरिहालिंगियतुंगपायारविराइया अणवरयपयट्टारहट्टजलुप्पीलसद्दलजंबु-जंबीर-कयंबंबपमुहतरुसंडमंडियपरिसरा मेहरहमहानरिंदपुन्नपयावपडिहयपडिवक्खभया जयंती नाम नयरी । तहिं च पुव्वभवाव-ज्जियगरुयसुकयसंभारोवलद्धविभववित्थरो दया-दक्खिन्न-गंभीरिमाइनिम्मलगुणगणागरो संवरो सेट्ठी, सयंपभा से भज्जा । उभयलोगाविरुद्धेणं आयारेणं गमंति दियहाइं। कालक्कमेण य जातो ताण पुत्तो, सुंदरो त्ति पइट्ठियं से नामं। पढियकइव-यकलाविसेसो य कारावियदारसंगहो सो पयट्टो गिहकिच्चेसु । 'एसो च्चिय घरकज्जचिंतं काहि' त्ति चिंतियं संवरसेट्ठिणा—जइ वि पिउ-पियामहा[इ]पुरिसपरंपरासमज्जिओ विज्जइ पउरो दव्वसंभारो तहावि परिभावेमि अप्पणो लाभविसेसं, परिक्खेमि कम्माणुकूलयं, अवलोएमि ससरीरसामत्थं, सेसासत्थाणुरूवं च अणुकंपेमि दीण-दुत्थियजणं देसंतरजत्ताकरणेणं—ति सविसेसं पुत्तं घरे निरूविऊण पडिगाहियभूरिभंडो पट्ठिओ पुव्वदेसाभिमुहं । धणसत्थवाहनाएण घोसावियं नयरीए—जो को वि

---

१ विणेय ॥ २ पयंविहस्स अ धुवं प्र० । 'एवंविधस्यापि' अयोग्यस्य अनर्थिनो चेत्यर्थः ध्रुवं धर्मारोपणम् अरण्यरुदितसमम् । केवलक्लेशमात्रम् ॥ ३ सुरसरिल्लोलकल्लोलभुजपरिपालिङ्गिततुङ्गप्राकारविराजिता अनवरतप्रवृत्तारघट्टजलसमूहशाद्वलजम्बूजम्बीरकदम्बाऽऽम्रप्रमुखतरुषण्डमण्डितपरिसरा मेघरथमहानरेन्द्रपुण्यप्रतापप्रतिहतप्रतिपक्षभया ॥ ४ °णो भालवि° खं० । 'भालविशेषं' भाग्यमित्यर्थः ॥ ५ °सासम° सं० प्र० ॥ ६ °व्वदिसा° प्र० ॥

पुव्वदेसमागच्छिही तस्स संवरो सेट्ठी * उंदंतं वहिहि त्ति। पगुणीहूओ तडिय-कप्पडियपमुहो अणेगो जणो। सुमुहुत्ते दिन्नं पयाणयं।

[2]दिज्जंतऽनिवारियपउरभत्तपरितुट्ठपहियगिज्जंतो। अप्पुव्वापुव्वपुरा-ऽऽगराइठाणे पलोयंतो ॥ १ ॥

धम्म-ऽत्थ-कामकिच्चाणुकूलचेट्ठाए वच्चमाणो य। सुरभिपुरं संपत्तो स महप्पा सं[3]वरो सेट्ठी ॥ २ ॥*

एत्थंतरम्मि फु[4]ल्लंतनीवपसरंतपरिमलुग्गारो। तंडवियसिहंडिकुलो वियंभिओ पाउसारंभो ॥ ३ ॥

[5]दिसिविलयाविगलियहारविमलमुत्ताहलाण पंति व्व। घणसिप्पिउडविमुक्का जलधाराधोरणी सहइ ॥ ४ ॥

दो[6]सुट्ठाणं घणसंपया वि संपाडइ त्ति कलिउं व। चंदुज्जोएण समं हंसउलं लहु अवक्कंतं ॥ ५ ॥

[7]अच्चंतकसिणघणमंडलीसु विज्जुच्छडं पहियलोगो। कीणासकडक्खं पि[8]यं पेक्खंतो सगिहमणुसरिओ ॥ ६ ॥

एवंविहे य विलसंते वासारत्ते संवरेण तहाविहजणभाडयमंदिराणि घेत्तूण ट्ठाणे कराविय भंडं, जहिच्छाचारेण चरिउं विसज्जिया वसह-वेसराइणो, निउत्ता य तक्कालोचियकिच्चेसु कम्मयरा। सयं च अट्ठावयाइकीलाहिं कीलिउं पवत्तो।

---

१ * * एतच्चिह्नमध्यवर्त्ती पाठः खं० प्रतौ पतितः ॥ २ दीयमानानिवारितप्रचुरभक्तपरितुष्टपथिकगीयमानः ॥ ३ सुंदरो प्र० ॥ ४ पुष्प्यन्नीपप्रसरत्परिमलोद्गारः। ताण्डवितशिखण्डिकुलः विजृम्भितः प्रावृडारम्भः ॥ ५ दिग्वनिताविगलितहारविमलमुक्ताफलानां पङ्क्तिरिव। घनशुक्तिपुटविमुक्ता जलधाराधोरणिः राजते ॥ ६ 'घनसम्पत्' प्रभूतसम्पत्तिः मेघसम्पच्च 'दोषोत्थानं' दोषाणां–दूषणानां दोषायाः–रात्रेः उत्थानं सम्पादयति इति 'कलयित्वा इव' ज्ञात्वा इव ॥ ७ अत्यन्तकृष्णघनमण्डलीषु विद्युच्छटां पथिकलोकः। कीनाशकटाक्षमिव प्रेक्षमाणः स्वगृहमनुसृतः ॥ ८ पिव पे° प्र०॥

अयरयासरे य एगेण पुरनिवासिणा सिट्ठमेयस्स, जहा—इह नयरे सुमेहो नाम बंभणो तीया-ऽणागयजाणगो परिवसइ त्ति। जायपरमकोऊहलेण य वाहराविओ संवरेण एसो, दिन्नासणो सविणयपणामपुव्वयं संभासिओ य—भद्द! कुसलं? ति। नेमित्तिएण जंपियं—आमं। सेट्ठिणा भणियं—निरवग्गहो निसामिज्जइ तुम्ह नाणपयरिसो, सो य किं नट्ठ-मुट्ठि-चिंताइसु चेव? अहव भवंतरपरिन्नाणे वि?। नेमित्तिएण भणियं—महाभाग! भगवंत-गुरुजणपायप्पसायातो सव्वत्थ वि अत्थि थेवथेवो अब्भासलेसो त्ति। सेट्ठिणा भणियं—नट्ठ-मुट्ठि-चिंताइणो जम्मि तम्मि वि पुरिसविसेसे उवलब्भंति, भवंतरपरिन्नाणं पुण न कहिं पि दिट्ठं सुयं वा, ता सव्वहा साहेसु—किमहं भवंतरे हुंतो? त्ति। तओ पण्हबलपरिभावियभूयभवंतरवित्तं निरवसेसं निच्छिऊण भणियं नेमित्तिएण—भो वणियवर! एगग्गमणो निसामेसु—

तुमं हि पंचालदेसे कणयउराभिहाणे सन्निवेसे वइसदत्तो नाम कोडुंबिओ अहेसि। चंदलेहा य भज्जा। परोप्परं अनंवसिणेहो, विसेसओ तुमं पडुच्च चंदलेहाए। [एवं] वच्चंति वासरा। एगया य गामं गओ पओयणवसेण तुमं। एगेण अणत्थसीलेण मित्तेण पडिनियत्तिऊण सिणेहपरिक्खानिमित्तं कवडविरइयसोगावत्थेण सगग्गिरगिरं भणिया चंदलेहा—तुह पई विसहरेण डक्को मओ य। तओ वज्जवडणं व दारुणं तव्वयणं निसामिऊण भणियं तीए—पियमित्त! किं सच्चमेयं?। तेण वुत्तं—कहमेवंविहमसब्भूयं भन्नइ?। तिक्खुत्तमिममेव य उच्चरंती ज्झड त्ति विदिन्नहियया पंचत्तमुवगया एसा। 'अहो! महाणत्थो' त्ति चमक्किओ मित्तो, 'निच्छियं सो वि विवज्जइ एयमरणं निसामिऊण, ता तहा करेमि जहा सो न

१ ज्ञानप्रकर्षः ॥ २ गद्गदगिरम् ॥ ३ दष्टः ॥ ४ वज्रपतनमिव ॥ ५ विभिन्न° प्र० । विशीर्णहृदया ॥

विणस्सइ' त्ति विभाविऊण गओ तुह समीवं, एगंते य निवेइयं—

भो मित्तवर ! अहं पओयणवसेण सगामं गओ। तुह घरे य केवलं चंदलेहा तक्कालं केणइ विडेण सद्धिं अणुचियकम्ममायरंती मए दिट्ठा। ततो दुवारातो पडिनियत्तंतो दिट्ठो हं तीए। गरुयसज्झसावेसवसविसेसविसंठुलविगलंतंसुयं[1] एगेण पाणिणा संठवन्ती[2] अवरेण उत्तरीयं सिहिणत्थलीए वित्थरंती[3] ज्झड त्ति उट्ठिया, भणिउं पवत्ता य—भो पियमित्त ! कहिं गच्छसि ? त्ति। अहं पि लज्जायमाणो 'कहं मुहमिमीए दंसिस्सामि ?' त्ति वेगेण पलाणो। सा वि हिययब्भंतरसमुब्भवंतकुकम्मायरणसंखोभाइरेगविभिन्नहियया[4] पंचत्तमणुपत्ता। ता भद्द ! एवंविहो चेव जुवइजणो होइ त्ति न सोइयव्वं तुमए।

तुममवि सोऊण इमं सविलियसोगुब्भवंतगुरुदुक्खो[5]। चिंतिउमिमं पवत्तो दुव्विन्नेयं अहो ! दइव्वं[6] ॥ १ ॥

कहमन्नहा तहाविहसारयरयणियरविमलसीला वि। उभयकुलकलंककरं करिज्ज सा एरिसमकज्जं ? ॥ २ ॥

जे वि हु मिणंति गयणं तुलन्ति बुद्धीए तियससेलं पि। अइदूरभूमिनिहियं निहिं पि लीलाए जाणंति ॥ ३ ॥

ते वि य दूरोहामियमइविहवा[7] जुवइहिययपरिकलणे। वामुज्झंति[8] विसीयंति आउलिज्जंति खिज्जंति ॥ ४ ॥

जइ सा वि कुणइ एवंविहाइं कम्माइं धम्मविमुहाइं। ता जुवईणं दिन्नो सीलस्स जलंजली लोए ॥ ५ ॥

एवंविहाए तीए अलमेत्तो मज्झ चिंतियाए वि। दुग्गइनिबंधणेणं गिहवासेणावि पज्जत्तं ॥ ६ ॥

---

१ गुरुकसाध्वसावेशवशविशेषविसंस्थुलविगलद् अंशुकम् ॥ २ संस्थापयन्ती ॥ ३ स्तनस्थल्यां विस्तारयन्ती ॥ ४ हृदयाभ्यन्तरसमुद्भवत्कुकर्माचरणसंक्षोभातिरेकविभिन्नहृदया ॥ ५ सव्रीडशोकोद्भवद्गुरुदुःखः ॥ ६ °वओ दु° सं० ॥ ७ दूराभिभूतमतिविभवाः ॥ ८ व्यामुह्यन्ति ॥

ततो रयणिमज्झम्मि कस्सइ वत्तमणाइक्खिऊण एगागी नीहरितो तित्थाइं पेच्छिउं, वचंतो य पडिओ महाडवीए, तुट्टं संवलं, छुहापरिगओ इओ तओ कंदमूलाइं अन्नेसिंतो दिट्ठो तुमं एगेण वणयरेणं। गाढकरुणारसाउरेण य तेण नीओ सि नियगिरिगुहाए। भणिया य घरिणी—पिए ! अत्थि किं पि जमिमस्स महाणुभावस्स दीहपहपरिभमणुच्छलियछुहाइरेगस्स पणामिज्जइ त्ति। तीए भणियं—अत्थि नीवारन्नतंदुलंजलिमेत्तं, तं च सयं वा भुंज अतिहिस्स वा देहि त्ति। वणयरेण भणियं—

अतिथि-सत्कारः

चिरकालं भुत्तेण वि जा तित्ती नेव देड्डजरढस्स। जाया मा किमियाणिं होही ? ता मुकपरिसंका ॥ १ ॥
तं देहि लहुं सव्वं इमस्स गेहंगणं उवगयस्स। निम्माणुसाडवीए पुरोऽवयरणं पुणो कत्तो ? ॥ २ ॥
किं नाम जीवियमिमं सलहिज्जइ निज्जई य परिवुड्ढिं। भुज्जइ न जत्थ दाउं निंयगासाओ वि गासद्धं ? ॥ ३ ॥
इय तेण तह कहं पि हु पन्नविया सा जहा लहुं तीए। सब्बायरेण भुंजाविओ तुमं सोविओ य सुहं ॥ ४ ॥

वियालसमए य पुणो वि दिन्नं किं पि वेयालियं, विगलिया तुज्झ छुहा। एवं च समागओ रयणिसमओ। घणघुसिणरसाइरेगेणाणुरागेण समुम्मिलंतनवपल्लवुल्लेहं व तरुगणं कुणंती पसरिया संज्झा, मित्तमंडलमत्थमंतमवलोइऊण सज्जणेहिं व

रात्रि-वर्णनम्

१ यस्यापि वार्त्तामनाख्याय ॥ २ °ए, नट्टं सं° खं० ॥ ३ गाढकरुणारसातुरेण ॥ ४ दीर्घपथपरिभ्रमणोच्छलितक्षुधातिरेकाय अर्प्यते ॥ ५ दग्धजरठस्य ॥ ६ त्वरा ॥ ७ निजग्रासादपि ग्रासार्द्धम् ॥ ८ 'वैकालिकं' सायङ्कालीनभोजनम् ॥ ९ घनघुसृणरसातिरेकेणानुरागेण समुन्मीलन्नवपल्लवोद्भेदमिव ॥ १० °घुगारेण समुम्मिल्लंत° खं० प्र० ॥ ११ 'मित्रमण्डलं' सूर्यमण्डलं सुहृद्वर्गं च ॥

सदुक्खेहिं दूरमक्कंदियं चक्कवायचक्केहिं, दिट्ठदोसागमेणं खलयणेण व किलिकिलियं हरिसभरनिब्भरेण कोसियकुलेण, साहुजणो व्व नियनियकुलायनिलयं निलीणो पक्खिगणो ।

एत्थंतरम्मि मउलंतकमलउड्डीणभमरपालि व्व । सव्वेसु दिसिमुहेसुं वियंभिया तिमिररिंछोली ॥ १ ॥

वित्थरिओ गयणतमालसाहिणो दिसिविसालसालस्स । कुसुमुकरो व्व दहिपिंडपंडुरो तारयानियरो ॥ २ ॥

उच्छलिओ धवलियगयणमंडलो इंदुणो पहापसरो । खयसमयसमीरुक्खयखीरोयहिवारिपूरो व्व ॥ ३ ॥

एवंविहे य पयट्टे रयणीसमए वणयरेण भणिओ तुमं, जहा—गुहामज्झट्ठिओ रयणिं तुममइवाहेसु, अहं पुण गुहादुवारट्ठिओ अंग्गिट्ठियापासपसुत्तो केसरिणं पडिक्खलिस्सामि त्ति । तुमए जंपियं—अजुत्तमिमं, तुमं गुहामज्झे भव, अहं बाहिं वसिस्सामि । वणयरेण भणियं—न जाणासि तुमं, बहुपच्चवाओ खु एस पएसो त्ति । अणिच्छंतो वि तुमं पक्खित्तो गुहब्भंतरे, वणयरो ठिओ बाहिं । अह निमित्तमेत्तप्पेहणुप्पेहडकीणासागरिसिओ व्व मज्झरत्तसमए दिप्पंते वि हुयासणे सणियसणियमागंतूण निद्दायमाणो विणासिओ सो केसरिणा । पत्ते य पभायसमए, समुग्गए मायंडमंडले, उड्डीणसउणिउलकोलाहलाउलिए दिसिचक्कवाले, गुहब्भंतरं पविट्ठासु मंजिट्ठारुणासु रविपहासु, पणट्ठनिद्दावियारो समुट्ठिओ तुमं वणयरगिहिणी य । 'कीस दुवारे न किं पि को वि जंपइ ?' त्ति नीहरिऊण तुब्भेहिं सो पलोइओ ताव दिट्ठो करंकावसेसो । तओ 'हा

१ दोषा–रात्रिः दूषणानि च ॥ २ मुकुलयत्कमलोड्डीनभ्रमरपङ्क्तिरिव ॥ ३ तिमिरश्रेणिः ॥ ४ अग्निष्ठिका–अग्निशकटिका ॥ ५ निमित्तमात्रोत्प्रेक्षणतत्परकीनाशाकृष्ट इव ॥

पाणनाह ! कहमेवंविहमवत्थमुवगतो सि ?' त्ति निविडकरतलतालिज्जमाणवच्छत्थलगलियगुंजाहलच्छलेण सोगभरभिन्नहिययनीहरंतरुहिरबिंदुपरंपरं व विक्खिवंती मुच्छानिमीलियच्छी निवडिया धरणिवट्ठे वणयरवहू । 'हा निग्घिणकयंत ! को एस सवंकसविणासकीलापबंधो ?' त्ति [3]गरुयमुक्कपोक्कं तुमं पि रोविउं पवत्तो । वणयरवहू वि सिसिरसमीरोवलद्धमुच्छावच्छेया संभासिया तुमए—अम्मो ! मुयसु भूरिसोगसंरंभं, एरिसो च्चिय एस हयविही न सहइ सुहियं जणं दट्ठुं, सव्वसाहारणो य एस मग्गो सुरा-ऽसुराणं पि, ता धरसु धीरिमं, परिभावेसु संसारसमुत्थसमत्थपयत्थाणमेवंविहभावसुलभसीलयं ति । वणयरीए भणियं—अलमियाणिमवरुण्णावेण, विरएसु संपइ चियं, पक्खिवसु नियभायरं ममं च, अणुजाणेसु तमेवाणुसंरंती, पियविरहियाए मह किममाणुसाडवीपरिब्भमणेणं ? ति । ततो तव्वयणायन्नणविभावियपरमत्थेण 'तह' त्ति संपाडियं तुमए सव्वं । एत्थंतरे [6]पज्जलिरजलणजालावलीकवचियाए [चियाए] पक्खित्ते वणयरकलेवरे वणयरी वि पयंगि व्व निवडिया वेगेणं, मुहुत्तमेत्तकालेण य कवोतकंधराधूसरं भूइभावं दो वि पत्ताइं ति ।

वो पढमं तुमए भूरिसोगनीयंतनयणसलिलेण । दिन्नो जलंजली ताण तयणु सरियाए नीरेण ॥ १ ॥
परिभावियं च तुमए किमियाणिं जीविएण कायव्वं ? । एवंविहोत्तरोत्तरदुहाणि दीसंति जत्थ दढं ॥ २ ॥

---

१ निबिडकरतलताड्यमानवक्षस्थलगलितगुञ्जाफलच्छलेन शोकभरभिन्नहृदयनिःसरद्रुधिरबिन्दुपरम्परामिव ॥ २ °बिंदुचरंपरं घ सं० प्र० ॥ ३ गुरुकमुक्तफूत्कारम् ॥ ४ अलमिदानीमपरोलापेन ॥ ५ °सरंति, पि° सं० प्र० । अनुमरन्तीम् ॥ ६ प्रज्वलनशीलज्वलनज्वालावलीकवचितायाम् ॥ ७ °वलियाए प° सं० प्र० ॥ ८ °चोलकं° सं० प्र० ॥

ते धन्ना कयपुन्ना पुन्नं चिय चिंतियं जए ताण । कुल-इट्ठ-देसनासो जेहिं जियंतेहिं नो दिट्ठो ॥ ३ ॥
हाऽणज्ज ! वज्जघडियं, व हियय ! सज्जो विलज्जसि न कीस । पलयसमदुक्खहुयवहतविज्जमाणं पि अणवरयं ? ॥ ४ ॥
इय बहुविहप्पयारं परिदेविय तित्थनिच्छइयमरणो । तुममेक्खलियगईए पयागपडणं लहुं पत्तो ॥ ५ ॥

तहिं च कयसरीरसुद्धी परिहियविसुद्धवत्थजुयलो तक्कालाणुरूवपुप्फाइसामग्गिपुरस्सरं पूइऊण देवयाजणं, गमिऊण धम्मकिच्चकरणेण कंचि कालं, निबिडनिबद्धनियंसणो संजमियकेसपासो जाव पडणे निवडिउमुवट्ठिओ तुमं ताव धरिओ एगेण साइसएण कारुणियनरेण, पुच्छिओ य—भद्द ! केण वेरग्गकारणेण एवं जीवियवं परिच्चयसि ? त्ति। तुमए भणियं—जइ एवं होइ ता साहेमि, अओ अकहिज्जंतमेव रमणीयमिमं, मुंचसु महाणुभाव ! ममं पारद्धवत्थुकर[णे]णं ति । तेण जंपियं—होउ किं पि, सवहा निवेदेसु इमं ति । तदणुरोहेण य सिट्ठो तुमए जहट्ठितो सवो पुववुत्तंतो । तं च सोच्चा भणियं तेण—भद्द ! जइ वणयरसोगेण मरिउमिच्छसि ता सवहा अणुचियमिमं, तुमं हि जइ तम्मि सिणेहमुवहसि ता कारवेसु तन्नामपडिबद्धं सुरागाराइ कित्तणविसेसं किं पि, दवावेसु दीणाणाहाण दाणं च । तुमए जंपियं—अहो महाभाग ! दवेण विणा कहमेवंविहकित्तणाइं काउं पारीयंति ? । तेण भणियं—भद्द ! जइ एवं ता गिण्ह इमं फरुसपाहाणखंडमेगं, एयफरुसजायतेयसंसग्गजायजायरूवभावं लोहं पि काही मणिच्छियं संपत्तिं ति । ततो तुमं तदणुरोहेण तं घेत्तूण पयत्तेण

१ पुण्यं खलु चिन्तितं जगति तेषाम् । कुल-इष्ट-देशनाशः यैः जीवद्भिः न दृष्टः ॥ २ °मखलि° खं० प्र० ॥ ३ निबिडनिबद्धनिवसनः ॥ ४ प्रयागपतने इत्यर्थः ॥ ५ °पाहण° प्र० । स्पर्शपाषाणः-पारसमणिः ॥ ६ °रूवं लो° खं० ॥

पडिनियत्तो मरगामं । तदुत्तविहिणा ये वाडियं भूरि कणयं, काराविय वणयरनामेण तुमए एगं सुरभवणं, पयट्टाविय च दीणा-ऽणाहाईणमणिवारियं सत्तं, अब्भुद्धरिओ सुहि-सयणवग्गो, कया अन्ने वि लोगमग्गाणुलग्गा धम्मविसेसा । मरणसमए य तस्स देवभवणस्स अब्भितरेक्ककोणे निक्खित्तो सो फरिसपाहाणो । आराहियपरलोयकिच्चो मरिऊण एस संवर ! तुमं जातो सि त्ति । एसो ताव पुव्वभवो ॥ छ ॥

इमं च अवक्खित्तचित्तो निसामितो संवरसेट्ठी ईहा-ऽपोहाइपयारपच्चक्खीभूयसव्वपुव्वाणुभूयभावो वत्थ-तंबोलप्पयाणाइणा सक्कारिऊण विसज्जियनेमित्तिओ चिंतिउं पवत्तो—किमणेण कयवरप्पायपणियविक्कएण होही ? ता जहतह इमं विणिवट्टिऊण वच्चामि कणयउरसन्निवेसं, आयड्ढेमि पुव्वनिहित्तं फरिसपाहाणं, पुव्वड्ढिईए अट्ठावयकरणेण अप्पाणं च परं च उवट्ठंभिऊण सफलीकरेमि जयजम्म-जीवियं ति । एवं च कयसंकप्पो अकालक्खेवेण कयसव्वसंवाहो वरिसायाले वि अविलंबियपयाणगेहिं गतो पंचालतिलयभूयं कणयउरसन्निवेसं, पुव्वुत्तदेवउलसमीवे बद्धो आवासो, पइदिणं च देवच्चणं सव्वपयत्तेण काउमारद्धो य । एवं च समइक्कंतप्पाए पाउसे देवउलकोणनिहित्तं घेत्तूण फरिसपाहणं गतो सनयरं । आणंदिओ नयरलोगो ।

फंरिसवसुट्ठावियाणिट्ठियकणयकोसप्पयाणेण य चिरकालं पीणिऊण पणइणो तक्कुंयजणं च, पडिपुन्नमंछ नियसुयं च

१ य पडि° सं० प्र० ॥ २ 'सत्तं' दानशाला, अभ्युद्धृतः सुहृत्स्वजनवर्गः ॥ ३ °पाहणो प्र० ॥ ४ आकर्षामि ॥ ५ पाहणं प्र० ॥ ६ अष्टापदं-सुवर्णम् ॥ ७ °मि निय° प्र० ॥ ८ जगज्जन्मजीवितम् ॥ ९ संवाहः-सज्जीभावः ॥ १० स्पर्शमणिरत्नोत्थापितानिष्ठितकनककोशप्रदानेन ॥ ११ प्रीणयित्वा प्रणयिनः स्वजनजनं च ॥

काऊण मरणमणुपत्तो संवरो। कयमच्चंतसोगापूरपूरियहियएण सुंदरेण पुरलोगेण य से पारलोइयकिच्चं। तव्विप्पओगदुक्खसंतत्तो य सुंदरो न घरे न दुवारे न दिणे न रयणीए न जणे न वणे न सयणे न आसणे कत्थइ रइं लहंतो भणिओ सयणवग्गेण—भो सेट्ठिसुय! किमेवमप्पा सोगावेगेण पीडिज्जइ? न चिंतिज्जंति गिहकिच्चाइं? न पउणिज्जंति पणियाइं? न पेसिज्जंति वणियसुया देसंतरेसु? त्ति। तत्तो सो तदणुरोहेण निरुच्छाहो वि लग्गो गिहवावारं निरूविउं।

अवरवासरे य भणिओ सो जणणीए—वच्छ! तुज्झ पिया धम्मसत्थं वायावितो धम्मे य अच्चंतमुज्जओ हुंतो, तुमं पुण उभयत्थ वि उदासीणो, न जुत्तमेयं, तिवग्गसंपाडणपरं हि सलहंति जीवियं, न य धम्मसत्थसवणं विणा मुणिउं तीरइ इमं, ता वाहराविज्जइ सत्थपाढगो, काराविज्जउ पोत्थावाइयं ति। अकामेण य भणियं सुंदरेण—अम्मो! एवं करावेसु त्ति। ततो वाहराविंतो तीए सत्थपाढगो। पारद्धा अणेण पोत्थावाइया, उच्चारिओ नमोक्कारो। एत्थंतरे गेहदुवारदिन्नदिट्ठिणा भिक्खट्ठा पविट्ठं कप्पडियं पलोइऊण आबद्धभिउडिणा भणियं सुंदरेण—अरे अरे! को दुवारे चिट्ठइ?। सिग्घमुवसप्पिऊण जंपियं दुवारपालेण—आइसस सेट्ठि! किं कीरउ? त्ति। सुंदरेण भणियं—रे दुरायार! न पेच्छसि विलुप्पंतमेवं घरं भिक्खायरेहिं? ति। तओ कंठग्गहपुरस्सरं दुवारपालेण निच्छूढो भिक्खाचरो, दिन्नं भुयग्गलासहियं कवाडसंपुडं। अह चिंतियगिहकिच्चं च सावहाणं तं विभाविऊण पुरओ वाइउमारद्धो सत्थपाढगो। एत्थंतरे परोप्परकयजुद्धाइं रोविउं पवत्ताइं डिंभाइं। ततो संभंतो धाविओ सुंदरो, निवारियाइं डिंभाइं, खणं इओ तओ रमाविऊण ठिओ सट्ठाणे। पुणो पारद्धं धम्मक्खाणं सत्थपाढगेण। एत्थंतरे—

अनर्थित्त स्वरूपा

निद्दयकरताडियपेडह मुरव-ढक्कापमोक्खतूररवो । उच्छलिओ पलयरसंतमेहसंदोहदुविसहो ॥ १ ॥
सव्वदिसिपेसियच्छो किं किं एयं ? ति गरुयसंरंभो । सो गंतुं रायाणं निग्गच्छंतं पलोएइ ॥ २ ॥
चक्खुपहाउ अइगए पुहईपाले गए सठाणम्मि । तो सत्थपाढगेणं सविलक्खेणं इमं वुत्तो ॥ ३ ॥
सत्थत्थसवणकाले घरचिंताईणि नेव जुत्ताणि । वोसंगसंगिच्चित्ताण होइ नो तत्तविन्नाणं ॥ ४ ॥
तेणं पयंपियं तत्तनाणभावे वि किं पि नत्थि फलं । जं तत्तन्नाणी वि हु परगेहे भमसि तं[3] भिक्खं ॥ ५ ॥
इयरेणं पडिभणियं मा एवं उल्लवेसु नाणातो । सक्खं चिय दिट्ठातो रिद्धीओ तह य सिद्धीओ ॥ ६ ॥
तो सुंदरेण वुत्तं जेहिं[4] वि लद्धाओ रिद्धि-सिद्धीओ । ते वि हु कीणासाणणमणुपत्ता को उण विसेसो ? ॥ ७ ॥
इय जंपिरम्मि तम्मि नीहरिओ सत्थपाढगो तुरियं । काही तुह वक्खाणं तुज्झेव पिय त्ति जंपंतो ॥ ८ ॥
एवंविहो अणत्थी निदंसितो समयसत्थकुसलेहिं । अणुसासणं पि एवंविहस्स दूरं चिय निसिद्धं ॥ ९ ॥
न य विंज्जो वि हु विज्जंतगरुयरोगं पि रोगिणं दट्ठुं । अणाभिमयचिकिच्छं पि हु चिकिच्छिउं वंछई कह वि ॥ १० ॥

किञ्च—सन्धुक्ष्यमाण इव भस्मनि वह्निशून्ये, सम्भाष्यमाण इव वा बधिरे मनुष्ये ।
आर्थित्ववर्जितहृदि प्रविधीयमानः, सम्पद्यते हि विफलः सकलः प्रयासः ॥ १ ॥

१ °पयडमु° खं० ॥ २ व्यासङ्गसक्तचित्तानाम् ॥ ३ त्वम् ॥ ४ जेहिं ल° प्र० ॥ ५ वैद्य ॥

कारुण्यवानपि परोपकृतौ रतोऽपि, रात्रिन्दिवं च निगदन्नपि धर्मतत्त्वम् ।
साक्षाद् बृहस्पतिसमोऽपि गुरुर्न नूनं, धर्मस्पृहाविरहितं प्रतिनेतुमीशः ॥ २ ॥
अपि च—योऽशेषदोषमुषि सौख्यपुषि प्रसिद्धसिद्धान्ततत्त्वकथनेऽपि भवेदनर्थी ।
अर्थी स भूरिविपदां स्वगृहोद्गतां च, श्रीकल्पवृक्षलतिकामधमश्छिनत्ति ॥ ३ ॥
मा भूद् भवो निखिलधार्मिकमोक्षयानाच्छून्योऽयमित्यभिलषन्निव पद्मयोनिः ।
धर्मार्थिताविमुखमप्यसृजज्जनौघमित्थं सुनिश्चितमहं परिभावयामि ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे धर्मार्थिव्यतिरेकचिन्तायां सुन्दरकथानकं समाप्तम् ॥ २२ ॥

आलोचक-
स्वरूपम

अत्थित्तमुव्वहंतो वि धम्मविसयं हि साहिउं तरइ । आलोचगो चिय नरो लेसेणेमं निरूवेमि ॥ १ ॥
काउं किमिमं उचियं ?इयरं वा ? किं च मे सरीरबलं ? । को वेस देस-कालो ? का वा वि सहायसंपत्ती ? ॥ २ ॥
किं वा एत्तो य फलं ? कीरंते वा भवे किमिह खलियं ? । जो एवं परिभावइ तमाहु आलोयगं पुरिसं ॥ ३ ॥
एसो चिय धम्मविहिं विहियाणुट्ठाणगोयरं नियमा । पारं पावेउं[3] होइ समत्थो न उण इयरो ॥ ४ ॥
उत्तमजिणप्पणीओ उत्तमजणसेविओ महाफलदो । निवाहिउं न तीरइ तुच्छमईहिं इमो धम्मो ॥ ५ ॥

१ ब्रह्मा ॥ २ पत्तो चि॰ खं॰ ॥ ३ प्रापयितुम् ॥

संपयपलोयणामेत्तजायअच्चंतचित्तउच्छाहा । धम्मम्मि के न लग्गा ? भग्गा य न के सुणिज्जंति ? ॥ ६ ॥
जह इहलोइयकिच्चं सम्ममणालोचिऊण कीरंतं । सिज्झइ न किं पि तह जाण निच्छियं धम्मकम्मं पि ॥ ७ ॥
सम्ममणालोचियं धम्मकारिणो विग्घविहणिउच्छाहा । सीयंति धम्मदेवो व सव्वहा उभयलोगे वि ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि सुपसत्थवणहत्थिकुंभत्थलि व अंतोदिप्पंतकंतमुत्ताहलनिउरंबसोहिया, खीरमहासमुद्दमज्झभागभूमि व विद्दुमप्पमुहमहग्घमहारयणसंचयसमुच्छरंतपंचवन्नमऊहनहनिम्मवियसुरिंदाउहा, सव्वदरिसणसभामंडलि व नायविसेसदव्वपज्जायनिउणकारुणियजणालंकिया वइदेसा नामं नयरी । राया य तहिं तिहुयणातिहीकयमयंकनिम्मलुम्मिलंतगुणपब्भारो भूरिकित्तिकुमुइणीमुणालजालजडिलीकयदिसाचक्को चक्कवट्टि व निम्मलुप्पन्नपयाव-कित्तिधरो कित्तिधरो नाम ।

निच्चामरत्तपत्ता पवालसेज्जा सुरिद्धिविद्धिजुया । विलयाउला सुरिउणो परमसुहं जस्स माणिंति ॥ १ ॥

तस्स य रन्नो चंदलेह व संयललोयलोयणाणंददाइणी चंदलेहा अग्गमहिसी । गुंचिलविविहचारोवलद्धरायंतरव्वावारो वइरिसेणो नाम सेणावई, अच्चंतपिया पियसेणा नाम [से] भज्जा, ताण पुत्तो धम्मदेवो नाम । सव्वाणि वि ताणि पुव्व-

१ सम्पत्प्रलोकनामात्रजातात्यन्तचित्तोत्साहाः ॥ २ °लोचिऊ° प्र० ॥ ३ °य कम्म° प्रसं० ॥ ४ विद्रुमप्रमुखमहार्घमहारत्नसञ्चयसमुत्सरत्पञ्चवर्णमयूखनभोनिर्मापितसुरेन्द्रायुधा ॥ ५ °मुच्छरं° खं० प्र० ॥ ६ नाम प्र० ॥ ७ °लुम्मिलंत° सं० प्र० ॥ ८ नित्यामरत्वप्राप्ता निश्चामरत्वप्राप्ताश्च, प्रवालशय्याः नवपत्रशय्याश्च, सुरद्धिवृद्धियुताः सुरर्द्धिवृद्धियुताश्च, वनिताकुलाः विलयाकुलाः—विनाशाकुलाश्च, सुरिपवः, परमसुखं परम् असुखं च, यस्य मानयन्ति ॥ ९ सयलो° प्र० ॥ १० गुपिलविविधचारोपलब्धराजान्तरव्यापारः ॥

भवकयसुकयसमणुरूवमुवभुंजमाणाणि संसारियसुहं कालं गमिंति।

अह एगम्मि अवसरे अत्थाणमंडवोवगयस्स नरवइस्स, सन्निहियनिसन्नसेणावइस्स, नियनियट्ठाणट्ठिएसु य मंति-सामंताइएसु, पणच्चिउं पयट्टे पुरओ पवरवारविलासिणीजणे, परमपमोयभरनिब्भरे य पेच्छगलोगे समीवमागम्म पडिहारो विन्नविउं पवत्तो—देव ! दूरदेसंतरा[ग]ओ असेसजोइससत्थपरमत्थपारदरिसी सिवभूई नाम जोइसिओ कइवयसिस्सपरिवुडो दुवारनिरुद्धो देवदरिसणं अभिलसइ त्ति। राइणा भणियं—असमओ एस जोइसियस्स। सेणावइणा जंपियं—देव ! दूरदेसागयत्तेण साइसओ संभाविज्जइ ता न[3] जुत्तो विसज्जिउं। राइणा भणियं—जइ एवं ता लहुं पवेसेहि। 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिऊण पवेसिओ अणेण जोइसिओ, आसीवायं च दाउं पवत्तो। यथा—

आदित्यः श्रियमादधातु शशभृत् सौम्यं शिवं मङ्गलः, सद्बोधं च बुधो धियं सुरगुरुः सौभाग्यवृद्धिं कविः।
सौरिः केतु-तमोन्वितश्च विपदं विद्वेषिणां स्थेयसीमित्थं पार्थिवचन्द्र ! सन्तु सततं सानुग्रहास्ते ग्रहाः ॥ १ ॥

एवं दिन्नासीसो विणयंणिउत्तनरदिन्नसुहासणासीणो य एसो सायरथेवविणमियमउलिमंडलेण य नरवइणा संभासिओ—भद्द ! कुसलं ? ति। जोइसिएण जंपियं—देव ! तुम्हपायप्पसाएण जइ परं कुसलं, सेसं न किं पि कुसलकारणमवलोएमि। सभय-चमक्कारं च संलत्तं राइणा—भो संवच्छरिय ! किंसमुट्ठाणं पुण अकुसलं संभावेसि ?। जोइसिएण भणियं—

१ °ग्गस्स से° सं० प्र० ॥ २ °यट्टेसु पु° सं० प्र० ॥ ३ न जुत्तो सं० प्र० ॥ ४ °द्वेषणां प्र० ॥ ५ °यनिउ° प्र० ॥

देव ! सट्ठाणचलियंगारयाइगहप्पभवमहामेहमुक्कनीरपूरसमुट्ठाणं ति । रन्ना वुत्तं—केत्तियकालेण पुण इमं ? केत्तियं वा तं जलं ? ति । संवच्छरिएण सिट्ठं—देव ! स[धरा]धरधरावोलणपबलं मुहुत्तमेत्तकालाओ उत्तरिं ति । ततो भूरिभयतरलतारयं नरवइपुरस्सरसभालोगो गयणंगणे अब्भपडलं पलोइउं पवत्तो । निरुत्तचक्खुक्खेववसतो य महाकट्ठकप्पणाए दिट्ठं हलहरसिचयसामं हत्थप्पमाणमेगमब्भखंडं । 'किमियमप्पवित्थारं काहि ?' त्ति परोप्परदिन्नहत्थतालं हसिऊण जावऽज्ज वि सट्ठाणे न निसीयइ ताव तं दसहत्थप्पमाणं मसीपुंजसच्छायं च जायं ति । अह सविम्हयविप्फारियलोयणाणमेव लोयाणमवलोयंताण तमब्भखंडं अयंडतंडवियसिहंडिमंडलं फुरियसोयामिणीमालं गहिरगज्जिरवावूरियगयणचक्कं उक्कंपियपंथियसत्थं वित्थरियं सयलदिसिवलयम्मि, पयट्टं च मुसलमेत्तधाराहिं वरिसिउं । अवि य—

फालिहदंड व परूढविसैंपरोह व कयलिथंभ व । उभयंतरुद्धनह-धरणितलविभागा सलिलधारा ॥ १ ॥
नीरंध्ररुद्धचक्खुप्पहा लहुं भरियभुवणसम-विसमा । औसुत्तियपलयन्नववेल व वियंभिया दूरं ॥ २ ॥
अह खणमेत्तं जा नेव जाइ ता पबलसलिलपूरेण । पूरिज्जंते नयरे समुट्ठिओ लोयतुमुलरवो ॥ ३ ॥
हा नयरदेवयाओ ! किमुवेहह निग्घिणं घणं एवं ? । हा हा जुगक्खय ! कहं तुमं अयंडे वि पत्तो सि ? ॥ ४ ॥
हा पुहइपाल ! पलयंगय व सा तुम्ह पुन्नलच्छी वि ? । कहमन्नहमेवंविह वुट्ठी समुवट्ठिया दुट्ठा ? ॥ ५ ॥

१ स्वस्थानचलिताङ्गारकादिग्रहप्रभवमहामेघमुक्तनीरपूरसमुत्थानमिति ॥ २ °चक्कमुक्क° सं० प्र० ॥ ३ °सहरो° सं० ॥ ४ °यमन्न° सं० प्र० ॥ ५ आसूत्रितप्रलयार्णववेला इव ॥

इय जंपिरे जणोहे जाव निवो सोगसामलियवयणो । नयरीहुत्तं पेच्छइ [1]विरेल्लिया ताव जलरेल्ली ॥ ६ ॥
पच्छाइयपायार-ऽट्टालय-टलटलियगेह-देवउला । उल्लासिरगुरुतरंगा संपत्ता रायपयपीढं ॥ ७ ॥

'तमेव जोइसियसूइयं अकुसलं' ति चिंततो ज्झड त्ति उट्ठिओ राया सिंहासणाओ । 'कहमियाणिं होयव्वं ?' ति खित्ता दिट्ठी सेणावइम्मि । एत्थंतरम्मि [2]कइवयमहल्लावल्लयपेल्लियजलकल्लोलंतरमग्गसंचरणा विसिट्ठकट्ठफारफलगनिम्मविया थेवंतरेण नरवइणो समुवणीया निज्जामएण नावा । कयप्पणामेण य विन्नत्तमणेण—देव ! पसीयह, आरुहह नावमिमं ति । ततो ईसि समूससियहियओ व्व पुहइवई सेणावईखंधरारोवियहत्थो उद्धमुप्पाडियदाहिणचलणो न जाव आरुहइ नावं ताव न नावा, न नावावाहगो, न जलं, न जलहरो, सव्वं सुत्थावत्थं पिव पलोइऊण लज्जिरो सिंहासणे निसन्नो 'अहो ! महच्छरियं' ति जंपिरो संवच्छरियं भणिउं पवत्तो—भो ! किमेयं ? ति । जोइसिएण भणियं—देव ! माइंदयालमेयं मए तुम्हचित्तक्खेवनिमित्तमेत्थमुवदंसियं, अहं हि माइंदजालिओ वि भविय तुम्ह भवणे पवेसमलभमाणो संवच्छरियच्छलेण पविट्ठो । विम्हिओ रायलोगो । सव्वंगीणाभरणदाणेण तदवरभूरिदविणवियरणेण य सम्माणिऊण विसज्जिओ माइंदजालिओ रन्ना ।

सेणावई वि तहाविहमाइंदजालावलोयणवससमु[3]म्मिल्लंतगरुयवेरग्गावेगो 'सव्वो संसारसमुत्थवत्थुवित्थरो एवंविहसरूवो' त्ति परि[4]भावितो 'अलमित्तो संसारवासेणं' ति कयनिच्छओ भालयलारोवियपाणिसंपुडो रायाणं विन्नविउं पवत्तो—देव !

1 विस्तृतस्तावद् जलप्रवाहः ॥ 2 कतिपयमहाऽवल्लकप्रेरितजलकल्लोलान्तरमार्गसञ्चरणा ॥ 3 °मुमिल्लंतगरुयगरुयवेर° सं० प्र० ॥ 4 °भावेंतो 'अलमेत्तो प्र० ॥

सुम्हाणमप्पणाएण तं नत्थि सुहं जं नोवभुत्तं, सुदुक्करं पि तं नत्थि जं न कयं, केवलं विरत्तं संपयं भववासाओ मह मणं, पणइयणदिट्ठिमाइंदजालतुल्लं व गयलं पडिबंधट्ठाणं, न पारमत्थियं, ता अणुजाणउ देवो ममं तावसदिक्खापडिवत्तिनिमित्तम- रण्णगमणाय। नरिन्देणा जंपियं—सेणाहिव ! किमेवमाउलो होसि ? अज्ज वि न को वि पत्थावो एवंविहकिच्चविसेसस्स, पच्छिमकाले सिय पणमायरेज्जासि, न य तुह विप्पओगे खणं पि रइमहमुवलभामि, [न वा] को वि तुमाहिंतो वि मह पडि- बंधट्ठाणं ति। सेणावइणा जंपियं—देव !

पत्थावाऽपत्थावो किं को वि अवट्ठिओ जए अत्थि ?। जेणुग्गडंडचंडो गमइ कयंतो समीवगओ ॥ १ ॥
कस्स वि पडिहाइ इमं सुदुक्करं देव ! घोरतव-चरणं। माइंदजालसरिसा किंतु भवत्था ठिई सयला ॥ २ ॥
किं वा न मुणामि तुमं नरिंद ! अच्चंतपणयपडिबद्धं ?। केवलमणिच्चभावा होयव्वमवस्ससविरहेण ॥ ३ ॥
ता जाऽज्ज वि तुह चलणकमलममिलाणलच्छिलायन्नं। नो अन्नहा पलोएमि देव ! जा देहबलममलं ॥ ४ ॥
जाव न अन्नं पि हु दुक्खकारणं किं पि संघडइ विसमं। ताव तएऽणुन्नाओ वणवासमहं पवज्जामि ॥ ५ ॥
नरनाह ! संपयमिमं सुमिणम्मि वि मा करेज्ज जह कोइ। निच्चावट्ठियरूवो अहवा अजरो व अमरो वा ॥ ६ ॥
निउणा पुरिसा भयगेरा हि मुणिऊण विणस्सरं भवसरूवं। परिचत्तसयलसंगा मुणिमग्गमदुग्गमं लग्गा ॥ ७ ॥
अम्हे पुण गुरुयणकीरमाणअणुगामणा वि पइदियहं। कह कह वि कीवेहियया धम्मट्ठमुवट्ठिया इण्हिं ॥ ८ ॥

१ पत्थावा' सं० ॥ २ वय उमदसवन्दा ॥ ३ 'मि परं न' सं० ॥ ४ 'णा इ प' प्र० ॥ ५ क्लीबहृदयाः ॥

इमं च सोच्चा भाविविप्पओगदुक्खगग्गिरगिरो नरवई विभावियतन्निच्छओ भणिउं पवत्तो—भो सेणाहिव ! साहेसु किमेवंविहकज्जसज्जीकयचित्तस्स तुह संपइ पियं पणामिज्जउ ? । सेणाहिवेण भणियं—देव ! तुम्हाणुभावाओ अणुभूयपभूयपियपबंधस्स मह किमवरमणणुभूयपुव्वं पियं ठियं जमियाणि मग्गिज्जइ ? केवलं देव ! इममेव पियप्पयाणं—एस मह सुओ जहा नियपायकप्पपायवच्छायाणुवित्ती हवइ निच्चं तहा किच्चं ति । 'एवं कीहं' ति पडिस्सुयं भूवइणा । सुमुहुत्ते निवेसिओ धम्मदेवो सेणावइपए । सेणावई वि गतो वणवासं । धम्मदेवो वि पुवट्ठिईए रज्जकज्जाइं चिंतिउं पवत्तो ।

एवं वच्चंतम्मि काले विप्पडिवन्नो सिंहलदेसाहिवो पारद्धो गाम-नगर-पुरपउरं वसुंधरमुवद्दविउं । निवेइयं च इमं चाराहिगारनिउत्तनरेहिं सेणाहिवस्स । तेणावि सिट्ठं पुहइवइणो । तं च सोच्चा अच्चंतनिप्फंदलोयणपिसुणियचिंतापब्भारं नरिंदमवलोइऊण भणियं धम्मदेवेण—देव ! अलं चिंताकरणेण, देह एयकालोचियं ममाऽऽएसं ति । 'अहो ! पत्थावोचियकारि' त्ति परितोसमुव्वहंतेण नरवइणा पउरकरि-तुरगाइसामग्गीसणाहो सिंहलेसरं पडुच्च पेसिओ एसो । तओ चैउरंगबलभरसम्मद्दनिद्दयनिद्दलियमेइणीवट्ठो अकालविलंबं पत्तो सिंहलेसरदेससीमं । संधिं च काउकामेण मुणियतदागमणेण सिंहलरन्ना पेसिया पहाणपुरिसा । कयपायपडणा य विन्नविउं पवत्ता—सेणाहिव ! वयं परमेसरसिंहलाहिवेण तुम्ह समीवे नियदोसनिग्घायणनिमित्तं जाजीवविरोहपरिहारत्थं च कइवयकरि-तुरय-पहाणवत्थुदाणेण संधिं घडिउं पेसिया ता परिच्चयसु कोवकंडं,

१ निजपादकल्पपादपच्छायानुवर्ती ॥ २ काहिं ति खं० प्र० ॥ ३ चतुरङ्गबलभरसम्मर्दनिर्दयनिर्दलितमेदिनीपृष्ठः ॥ ४ °लेसदेससीमसंधिं खं० । °लेसरं देससीससंधिं प्र० ॥

अंगीकरेसु दक्खिन्नं, पडिवज्जसु पणयवच्छल्लेण सप्पुरिसमग्गं, हवउ आचंदकालियं परोप्परपाहुडपेसणेण सिणेहव्ववहारो त्ति। अह अणालोचियसमुचियकिच्चविसेसेण कोवभररइयभालवट्ठभिउडिणा भणियं सेणाहिवेण—अरे रे दुरायारा! अम्ह पहुणो देसमसेसं लूडिऊणमियाणिं संधिकवडेण ममं विप्पलंभिउमुवट्ठिया, किमहं डिंभो जमेवं मुहमहुरवयणमित्तेण वि विप्पयारिज्जामि? ता रे! साहह तस्स रन्नो नीसेसकरि-तुरय-कोस-कोट्ठागारसमप्पणेण आजीवं निब्भिंचभिच्चभावदंसणेण य सेवावित्तिं पडिवज्जसु, विसिट्ठं ट्ठाणंतरं वा अप्पणो पलोएसु त्ति, एस सेणावइणो संधिबंधमुद्दाविन्नासो त्ति। तेहिं भणियं—सेणाहिव! कइवयनिस्सारखेडयलूडणेण वि एवंविहपयंडडंडडामरमजुत्तं?-ति परिभाविऊण आएसमुचियं वियरसु त्ति। सेणाहिवेण भणियं—अत्थि कोइ एत्थ जो कंठे धरिऊण निच्छुभइ इमे अलियजंपिरे दूयाहमे? त्ति। ततो निद्धाडिया ते सेवगेहिं। गएसु य तेसु अवक्खंददाणाय दवाविया सन्नाहभेरी, पउणीकरावियं चाउरंगं बलं। 'अहह! सहसाकारि' त्ति जायचित्तसंतावेण भणियं से मंतिजणेण—भो सेणाहिव!

सम्ममणालोच्चियकीरमाणकज्जाण पमुहमहुराण। परिणइदुहाण जाणसु किंपागफलेहिं तुल्लत्तं ॥ १ ॥
जइ कह वि कज्ज-कारणवसेण केणावि सिंहलनिवेण। संधिं पडुच्च पणई पयासिया दंसिओ सामो ॥ २ ॥
ता किं तेमेत्तिएण वि उत्तुणओ भविय कयफडाडोवो। संभावियरिउविजओ रणत्थमित्थं पयट्टो सि? ॥ ३ ॥
किं मुणसि तुमं न इमं दूरं ओसरइ पहरिउं मेसो। संकुइय केसरी कोवओ य पुण उप्पइउकामो? ॥ ४ ॥

१ लुण्ठयित्वा ॥ २ निर्भृत्यभावदर्शनेन ॥ ३ वि न ए° सं० प्र० ॥ ४ °त्तिणा ज° सं० प्र० ॥ ५ त्वमेतावताऽपि गर्वितो भूत्वा ॥

विसहंति य धीमंतो अंतोपसरंतवइरपब्भारा । गूढायारा किं पि हु निमित्तम[1]वलंबिउं गरुया ॥ ५ ॥
ता अपरिभाविऊणं सामुल्लावे वि दूयमग्गम्मि । तविहवयणं फरुसं दूरमजुत्तऽम्ह पडिहाइ ॥६॥ किंच—
जइ विमलयाए सलिलस्स तलगए दंसए मणी उदही । तह वि स जाणुपमाणो त्ति मा मणे संठवेज्जासि ॥ ७ ॥
भूरिकरि-तुरय-रह-जोह-कोससंभारसारसामत्थो । सामुल्लावे वि य सिंहलेसरो तुज्झ नो सज्झो ॥ ८ ॥
आयबलं च परबलं भूमिबलं नि[2]तुलं सहाइबलं । बलवइणा परिभाविय भवियव्वं जुज्झसज्जेण ॥ ९ ॥

एवमाइमंतिवग्गगिरं निसामिऊण दि[3]ट्ठिसोणिमाजाणावियगरुयकोवावेगो सेणावई भणिउं पवत्तो—मंतिणो वि भविय पागय व्व असमिक्खियभासिणो सयममुणंता वि कज्जपरमत्थं समयसमुचियवत्तारं पि अम्हारिसं निरसंता कुणह जं मे रोयइ—त्ति आसणाओ उट्ठिऊण वच्चंतो बला धरिओ मंतीहिं । 'छंदाणुवित्तिगिज्झो सुक्खो' त्ति लक्खंतेहिं य सायरं संलत्तो एसो—सव्वहा खमसु पढममवराहं, न भुज्जो अकज्जमेवंविहमायरिस्सामो त्ति । ततो सेणावइणा प[4]रितोसवसपवसंतवयणसामिगाइकोववियारेण ज्झड त्ति दवावियं पयाणयं । तव्वयणाणंतरमेव चलियं चाउरंगं बलं ।

वियाणियतम्मज्झेण सिंहलेसरेणावि सचिवेहिं सह सु[5]विवेचियकिच्चविसेसेण पगुणीकयसेससामंतसेवगलोगेण विसज्जिओ गरुयारंभो नाम सेणाहिवो परबलाभिमुहं, सिक्खविओ य जहा—रिउसेन्नस्स दंसणं दाऊण प[6]च्छाहुत्तं नि[7]यत्तेज्जासि जाव

१ °मविलं° खं० प्र० ॥ २ निरुपमम् ॥ ३ दृष्टिशोणिमाज्ञापितगुरुककोपावेगः ॥ ४ परितोषवशप्रवसद्वदनरागामिकादिकोपविकारेण ॥ ५ सुविवेचितकृत्यविशेषेण ॥ ६ पश्चान्मुखम् ॥ ७ °यत्तिज्जा° प्र० ॥

॥१७३॥

गोदावरीगुहागंभीरपएसं ति । 'जं देवो आणवेइ' त्ति भणिऊण जच्चतुरंगवाहिणीपरिवुडो गरुयारंभो सेणाहिवो नाणाविहविजयचिंधचिंचइयगयणवट्ठो सुहडभुयदंडकुंडलियपयंडकोडंडुड्डीणकंडसंडुड्डमरियपरबलपुरोवत्तिकइवयसुहडो जहुत्तं गोदावरीकंदरोदरं पडुच्च झड त्ति पडिनियत्तो । धम्मदेवसेणावई वि गाढकोवभरदट्ठोट्ठक्खलियक्खराए गिराए संरंभनिब्भरं—

सन्नहह गुडह पक्खरह जाह पहरह पडिक्खलह तुरियं । इय सेणिएं तुरंतो सेणाए समं लहुं चलिओ ॥ १ ॥
पडिबलमणुवच्चंतो संपत्तो गहिरकंदरीविसमं । गोदावरीपरिसरं बहुविहतरुनिवहदुग्गिमं ॥ २ ॥
एत्थंतरम्मि विसमावणोगयं तं वियाणिउं राया । सिंहलनाहो वि ठिओ सवत्तो घडियरिउवेढो ॥ ३ ॥
अणवरयमुक्कसरविसर-सेल्ल-चावल्लि-भल्लि-नाराया । सिंहलसुहडा लग्गा य पहरिउं पडिरिऊर्हि समं ॥ ४ ॥
भूमिबलं देहबलं सामिबलं अविकलं धरंतेहिं । तेहिं फलीहिं व लहु धम्मदेवसेणा कया दीणा ॥ ५ ॥
दक्खा वियक्खणा सुकुलसंभवा विस्सुया वि विसमगया । किं नाम कुणंतु भडा खीणधणा परमपुरिस व ? ॥ ६ ॥

एवं च निमेसमित्तेण वि हयसुहडे निवडियमहंतसामंते [6]दोहंडियवेगंडे खंडियतुरगतुंडे [7]भुंसुमूरियचारुरहवरे दिसोदिसिं पक्खित्ते सिंहलेसरेण रिउबले धम्मएवसेणावई से सावसेसबलसमेओ कह कह वि पलाणो [8]समराजिराओ । 'किमणेण वराग्वइदेसियमारणेणं ?' ति पडिनियत्तो सिंहलेसरो । धम्मदेवो वि [9]अच्चंतविलक्खोवगओ तुरियतुरियं दूरं पच्चोसक्किऊण

१ नानाविधविजयचिह्नव्याप्तगगनपृष्ठः सुभटभुजदण्डकुण्डलितप्रचण्डकोदण्डोड्डीनकाण्डषण्डभापितपरबलपुरोवर्त्तिकतिपयसुभटः ॥ २ सकवचा भवत ॥ ३ हस्तिनः कवचयत ॥ ४ अश्वान् कवचयत ॥ ५ सैनिकान् ॥ ६ द्विखण्डितहस्तिनि ॥ ७ भग्नचारुरथवरे ॥ ८ समराङ्गणात् ॥ ९ अत्यन्तवैलक्ष्योपगतः ॥

कयखंधावारनिवेसो ठिओ पच्छिमभूमीए। कमेण य इओ ततो मिलिएसु कइवयसामंताइसु पट्ठिओ सदेसाभिमुहं।

जाणियपराजयवत्तेण य अंतरा केरलदेसाहिवइणा नियडीसीलयाए सायरमुवनिमंतिऊण सम्माणिओ भोयण-पवरवत्था-ऽलंकाराइदाणेण। भणिओ य एगंते, जहा—सेणावरिट्ठ! एत्तो सन्निकिट्ठदेसवत्ती महाबलो सामंतो पउर[कोस-]कोट्ठागारो संपयं अप्पबलो वट्टइ, ता जइ तुमं सहाई हवसि ता तं मिलिया चेव गिण्हामो, अद्धद्धेण य तदुवलद्धरिद्धिवित्थरं संविभजामो य। इमं सोच्चा अविभावियकज्जमज्झेण अणालोच्चिय नियमंतिजणेण पडिवन्नं सेणाहिवेण। ततो दोहि वि दिन्नं पयाणयं। अद्धपहे संकेइयनियसुहडेण केरलवइणा सव्वतो निरुंभिऊण लूडिओ धम्मदेवसेणाहिवई। उद्दालियकरि-तुरगाइपरिग्गहो य सुसाहु व्व सरीरमित्तो पलाणो एगाए दिसाए। पत्तो य कह कह वि गुरुकिलेसा-ऽऽयासविसोसियसरीरो एगं तावसासमं। कंद-फलाइदाणेण पीणिओ तावसेहिं। वुत्थो य तत्थेव कइवयदिणाणि, चिंतिउं पवत्तो य—अहो! मे मंदभग्गया, अहो! असमिक्खियकारिया, जमेवं भुज्जो पराजिओ परेहिं, अवहरियं सव्वस्सं, संचारिओ सव्वदिसासु अजसो, जाजीवं पराभवपयमुवणीओ अप्पा, दूरवत्ती जाओ रायपायसेवाए, ता अलं एत्तो सगिहगमणेण, एत्थेव आसमपए पवज्जामि पुव्वपुरिससेवियं धम्ममग्ग—न्ति पडिवन्नो कुलवइसमीवे तावसदिक्खं। पारद्धा य असमिक्खियनियबलेण निवारिज्जमाणेण वि सेसतावसेहिं विविहा दुक्करतवोविसेसा।

इओ य सुओ एस वइयरो कित्तिधरनराहिवेण मंतिपमुहलोयातो, जहा—इत्थमित्थं च अणालोच्चियवत्थुसमत्थणेण निन्नासियं सेन्नं धम्मदेवेणं, एगागी य संवुत्तो कत्थइ तावसासमे तावसदिक्खं पवन्नो त्ति। 'हा हा! कहं तारिसमहापुरिस-

पुत्तो वि होऊण एवं मुद्धबुद्धी एस जाओ ?' त्ति सपरिसो राया सोइउं पवत्तो ।

धम्मदेवो वि विगिट्ठतवोविसेसकिसीकयसरीरो उट्ठिउं पि सयमपारिंतो कुलवइणा निवारिज्जमाणो वि पाओवगम-णविहिं पवन्नो । सव्वाहारपरिहारवसेण य अच्चंतकिलंतो छुहाए कहं पि रइमलहंतो य भणिओ वुड्ढतावसेण—भो मुणिवर ! णादमजुत्तो इत्थं हढेण जीयच्चागो, पुराणेसु वि एवंविहमरणे कुगइकित्तणाओ, तहाहि—

असुर्या नाम ये लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः । तां गतिं ते गमिष्यन्ति ये के चाऽऽत्महनो जनाः ॥ १ ॥ इति ।

उज्झसु अणसणविहिं, करेसु ताव तावसजणसमुचियं पि कंद-कयलाइभोयणं, पच्छा ज्झाणपयरिमारोहणेण अप्पाणं ज्झोसिज्जासि त्ति । समिक्खारहियत्तणेण य 'तह' त्ति पडिस्सुयं धम्मदेवेण, भुत्तं च जहिच्छं चिरछुहावाएण कंद-कंइला-इयं । केसियकायत्तणेण य संमुप्पन्नोदिन्नविसूइयाविगारो विरसमारसंतो रासभो व पंचत्तमुवगओ एसो त्ति ।

---

१ जीवित्याग: ॥ २ असूर्या सं० प्र० ॥ ३ "असुर्याः परमात्मभावमद्वयमपेक्ष्य देवादयोऽप्यसुराः, तेषां च स्वभूता लोका असुर्या नाम ।" इति ईशावास्योपनिषद्भाष्ये ॥ ४ °म ते लो° ईशावास्योपनिषदि ॥ ५ "अन्धेन अदर्शनात्मकेन अज्ञानात्मकेन तमसा" इति ई० पा० भाष्ये ॥ ६ ता°स्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ईशावास्ये ॥ ७ ये नात्महनो...ज° सं० । ये आत्महनोर...ज° प्र० ॥ ८ "आत्मानं घ्नन्तीत्यात्महन', विद्यमानस्यात्मनो यत् कार्यं फलं अजरामरत्वादिसंवेदनलक्षणं तद् हतस्येव तिरोभूतं भवतीति प्राकृता अविद्वांसो जना आत्महन उच्यन्ते । तेन ह्यात्महननदोषेण संसरन्ति ते ।" इति ई० पा० भाष्ये ॥ ९ मन्त्रोऽयम् ईशावास्योपनिषदि तृतीयः ॥ १० जुपिप्यसे ॥ ११ °कयलाइयं । किसि° प्र० ॥ १२ समुत्पन्नोदीर्णविसूचिका-विकारः ॥ १३ °सभु व्व प्र० ॥

इहलोय-पारलोइयसुहाणऽणालोचियं करिंतेण । सव्वं च किच्चमबुहेण उयह सलिलंजली दिन्नो ॥ १ ॥
सव्वा वि कज्जसिद्धी असमिक्खापवलपवणपडिहणिया । दीवयसिहि व्व विज्झाइ विहियबहुविहपयत्ता वि ॥ २ ॥
असमिक्खिउं पयट्टा सुहे वि कज्जम्मि नंदिसेणाई । सुवंति पडिनियत्ता करिणो गिरिभग्गदसण व्व ॥ ३ ॥

किञ्च—यद् वारियन्धविधुराः करिणो यदग्निदीप्यत्प्रदीपकलिकाकुलिताः पतङ्गाः ।
गानाद्वधानविपदो हरिणाश्च यच्चानालोचनाविलसितं तदशेषमाहुः ॥ १ ॥
कार्यप्रसाधनविधावधिकान्तरङ्गरङ्गद्धला गतमला मतिरेव मुख्या ।
पूर्वा-ऽपरव्यतिकरव्यवलोकनेन, सा कामधेनुरिव किं न शुभं विधत्ते ? ॥ २ ॥
धर्मक्रियासु विशदास्वपि सम्प्रवृत्तः, नानापदां पदमभूदयशस्ततेर्वा ।
को नाम नेह रभसादविचिन्त्य कृत्या-ऽकृत्यस्वरूपमनिरूपितभाविभावः ? ॥ ३ ॥
तदेवमालोच्य विशुद्धबुद्ध्या, स्वयं परेणापि बहुश्रुतेन ।
प्रवर्तमानः सकलक्रियासु, स्याद् भाजनं निर्मलधर्मसिद्धेः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे आलोचकपुरुषव्यतिरेके धर्मदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २३ ॥

आलोचक-
व्यतिरेके
धर्मदेव-
कथानकम्
२३ ।

अनालोचि-
तकारित्वे
दोषः

१ पश्यत ॥ २ प्रदीपाग्निः ॥ ३ हस्तिग्रहणार्थं बन्धनार्थं वा कृता कचवरादिपूर्णा महती गर्त्ता 'वारि' इत्युच्यते ॥ ४ 'व्यतिकरे धर्म° प्र० ॥

उपाय-चिन्तायाः स्वरूपम्

आलोयगो य पुरिसो उवायदरिसी हैविज्ज जइ सम्मं । आरांहिज्जा ता धम्ममग्गमिति संपयं वोच्छं ॥ १ ॥
पारद्धम्मि उँवेए वत्थुम्मि विग्घसंभवे कह वि । तव्विग्घघायणखमो वावारो भन्नइ उवाओ ॥ २ ॥
सो पुण कस्सइ सुविसुद्धबुद्धिणो तक्खणं पडिप्फलइ । कुसला वि विसमकज्जे बहवो मुज्झंति पाएण ॥ ३ ॥
सिज्झंति अत्थ-कामा धम्मो य उवायओ परं धम्मे । सम्मं उवायचिंता काम-ऽत्थाणं हवउ किं पि ॥ ४ ॥
धम्माउ च्चिय जम्हा अत्थो कामो य दीसए हुंतो । तेहिंतो पुण धम्मो सक्खा लक्खिज्जए नेव ॥ ५ ॥
इय धम्मविहाणम्मि उवायपरिमग्गणं गुणोहकरं । सेसपयत्थेहिंतो सवपयत्तेण कायवं ॥ ६ ॥
संभवइ सो वि देसो कालो वा जत्थ विक्कमुक्करिसो । होइ विहँलो हि केवलमुवायओ कज्जनिप्फत्ती ॥ ७ ॥
सँमुचियविसयनिजुंजियउवायवावारनिरसियावाया । साहिंति वंछियत्थं नीसेसं विजयदेवो व ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि दाहिणदिसाविलासिणीभालतिलयभूया, आइवराहमुत्ति व सुरवरविसरविराइया, कणयसेलमेहल व पुन्नागसंताणयसमलंकियाँ, पोक्खरणि व बहुविहनीरयविराइया वि अवणीरयविरहिया, जायवकुलनहयलमयंकमहासामं-

१ हवेज्ज प्र० ॥ २ °राहेज्जा प्र० ॥ ३ 'उपेये' साध्ये ॥ ४ °हलेहिं के° सं० प्र० ॥ ५ समुचितविषयनियुक्तोपायव्यापारनिरस्तापायाः । साधयन्ति ॥ ६ 'कनकशैलमेखला' मेरुमेखला पुन्नागवृक्षैः सन्तानककल्पपादपैश्च समलङ्कृता, नगरी पुनः पुंनागसन्तानकेन-उत्तमपुरुषसमूहेन समलङ्कृता ॥ ७ पुष्करणीपक्षे—बहुविधैः नीरजैः-कमलैः विराजिता अपि 'अपनीरजविरहिता' कमलसहिता इत्यत्र किमाश्चर्यम् ? आश्चर्यसूचनं त्विदमेव—अपनीरजैः-दुष्टकमलैः विरहिता, यद्वा अवनीरजसा कर्दमेन विरहिता । नगरीपक्षे तु—बहुविधैः नीरजोभिः-निष्पापैः श्रमणादिभिः जनैः विराजिता, 'अपि' पुनः अपनीरजोभिः-दुष्टश्रमणादिभिः वीथ्यादीनां स्वच्छत्वेन वा अवनीरजसा विरहिता । नगरीपक्षे विरोधाऽऽश्चर्यादिकं स्वयमभ्यूह्यम् ॥ ८ यादवकुलनभस्तलमृ-

ताणंतदेवभुयदंडचंडिमापडिरुद्धडिंब-डमरा महुरा नाम नयरी । तहिं च वत्थव्वो, तिवग्गसंपाडणपयडपुरिसयारो, सायरो व[1] समग्गगुणरयणावासो सिरिदेवो नाम सेट्ठी । रूवाइगुणमाणिक्कमंडिया भवणदेवय व विरायमाणा वसुमई से भज्जा । ताण य वेय[2] व सव्वलोगाहिमया, महुमहणभुयपरिह व दूरमुल्लासियलच्छिणो चउरो पुत्ता—पढमो जओ नाम, बीओ विजओ, तइओ देवो, चउत्थो विजयदेवो त्ति । सव्वे वि कलाकुसला जहासामत्थमत्थोवज्जणाइसु वावारेसु अणवरयं पयट्टंता दियहाइं विइक्कमावेंति, नियनियदविणोवज्जणा[णु]रूवं च दाण-भोगाइसु अभिरमंति ।

अवरवासरे विजयदेवेण पुव्वदेसागयगायणुग्गाइयगीयाइपरितोसिएण[3] दवावियं दम्मसोलसयं पारितोसियं, वित्थरियं च सव्वनयरीए एयं । निसामियं च जेट्ठभाउणा जएण, कुविओ एसो, साहियमिमं सेसभाउयाणं पिउणो य । ते य कोवभरायंबिरच्छिविच्छोहा विच्छायमुहा एगत्थ मिलिया विजयदेवं भणिउं पवत्ता—

रे दुट्ठ ! धिट्ठ ! निट्ठविउमेवमम्[4]भुञ्जतो सि कीस धणं ?। किं इमिणा णे[5] भुञ्जो कज्जं थेवं पि न हु होही ? ॥ १ ॥

किं वा पिया-पियामहपमुहमहापुरिसमज्जियारातो । केणावि सुयं तुमए दिन्नं एवंविहं दाणं ? ॥ २ ॥

किं वा न मुणसि पइदिणघय-तंदुल-वत्थ-गोरसाइगयं । दव्ववयमइगरुयं हुंतं मणसा वि दुव्विसहं ? ॥ ३ ॥

गाङ्कमहासामन्तानन्तदेवभुजदण्डचण्डिमप्रतिरुद्धभयविघ्ना । अनन्तदेवः–शेषशायी कृष्णः ॥

१ सागरपक्षे समग्रगुणानि यानि रत्नानि तदावासः, श्रेष्ठी पुनः समग्रगुणा एव रत्नानि तदावासः ॥ २ वेदाः इव सर्वलोकाभिमताः, मधुमथनभुजपरिघ इव दूरम् उल्लासितलक्ष्मीकाः ॥ ३ पूर्वदेशागतगायनोद्गीतगीतादिपरितोषितेन ॥ ४ अस्माकम् ॥ ५ °सयं खं० ॥

सोहसि दिंतो वि तुमं अचत्थं रिंथरासिमज्जिणिउं । पुवपुरिसज्जिए पुण किं गिज्जइ चागसामत्थं ? ॥ ४ ॥

इमं च निसामिऊण मन्नुभरसग्गिरसरेण भणियं विजयदेवेणं—सवहा खमह मह एक्कमवराहं, न पुणो एरिसं काहामि, तहा अणुगिण्हह देसंतरेसु दविणोवज्जणनिमित्तमणुन्नादाणेणं ति । एत्थंतरे कणिट्ठावच्चमहापेमाणुबंधकायरीकयहियओ ईसिनयणनलिणनीमरंतंसुजलो जणगो भणिउमारद्धो—रे पुत्ता ! सवहा एगवयणेण वि निसिद्धा तुब्भे अच्छह, मा मइ जीवंते[3] देसंतरगमणं कहं पि करेज्जह, पच्छा जहावंछियमणुट्ठेज्जह त्ति । एवमायन्निऊण सभय-सलज्जेहिं जंपियं जयप्पमुहेहिं—ताय ! एवं काहामो त्ति । ततो निम्मविया चत्तारि हट्टा, उवविट्ठा य तेसु पिहो पिहो चउरो वि भायरो, पारद्धा ववहरिउं । मासावमाणे य ऑय-वयविसुद्धिं विभाविंति दवोवज्जणं ति ।

अन्नया य विजयदेवो[5] य तहाविहविहवोवज्जणारहियं हट्टवावारमसारमवधारिऊण सरियपुव्वाणुसतो संवलगमेत्तमादाय पट्ठिओ उत्तरावहं । सत्थेण सह वच्चंतो य पडिओ महाडवीए । तम्मज्झमणुपत्तस्स य अयंडे च्चिय पयंडकंडवरिसदुद्धरिसा कीणासदाससनिव्विसेसा चिलायधाडी आवडिया, निग्गाडियसत्थसुहडा बंदिग्गाहपग्गहियजणा गया जहागयं ति । विजयदेवो वि तंविसमदेवदसावागवागुराकूडनिरुद्धो मुद्धहरिणो व दिवसावसाणोवलद्धपज्जुसियविरसावसेसासणमुट्ठि[क]य-

१ 'रिंथरासि' धनराशिम् ॥ २ कनिष्ठापत्यमहाप्रेमानुबन्धकातरीकृतहृदय. ईषन्नयननलिननि.सरदश्रुजलः ॥ ३ °तेहिं दे° सं० ॥ ४ आगव्ययविशुद्धिम् ॥ ५ °वो वा तहा° सं० ॥ ६ स्मृतपूर्वानुशयः ॥ ७ प्रचण्डकाण्डवर्षादुर्धर्षा कीनाशदाससनिर्विशेषा ॥ ८ निर्घातितसार्थसुभटा बन्दिग्राहप्रगृहीतजना ॥ ९ तद्विषमदैवदशापाकवागुराकूटनिरुद्धः मुग्धहरिण इव दिवसावसानोपलब्धपर्युषितविरसावशेषाशनमुष्टिकृतशरीरावष्टम्भ. 'तदिदं गुरुवचनाप-

सरीरावट्ठंभो 'तमिमं गुरुवयणावयन्नणदुक्कयकिंपागकुसुमुट्ठाणं' ति भुज्जो भुज्जो परिभाविंतो अच्छिउं पवत्तो। सत्थलोगो वि नियगसयणजणेण तहाविहदाणपुव्वयं मोयाविओ गओ नियनियट्ठाणं।

ततो चिंतियं विजयदेवेण—कहमहमियाणिं नरयभीसणे एगागी निवसिस्सामि? करेमि किं पि उवायं जेणोवलद्धमोक्खो मुणि व्व निव्वुत्तो हवामि त्ति। 'को पुण मोक्खोवातो?' त्ति सम्मं पलोइंतेण गुत्तिवालसुओ उप्फेरमहावाहिविहुरो दिट्ठो। अह तक्कालसमुवलद्धोवाएण भणिओ अणेण गोत्तिपालो—अहो भद्द! कीस एवमायासिज्जंतं विसीदंतं च उवेहसि बालयं? न करेसि किं पि उवायं? ति। गुत्तिवालेण भणियं—महाभाग! कयाणि काणि वि ओसहाणि परं न जातो को वि उवयारो। विजयदेवेण भणियं—अत्थि बहुसो उवलद्धपच्चयं पच्चंतवासिणा सबरमुणिणा सिट्ठं एगं महोसहं। तेण जंपियं—जइ एवं ता साहेसु कयरं तं? ति। विजयदेवेण भणियं—निसामेहि—

छायातरु-सिरिफल-फलिणिकंद-कंदोट्टकाढओ पीओ। उप्फेरं फारं पि हु फेडइ असणं व अहिफोडो ॥ १ ॥

गुत्तिवालेण भणियं—अत्थि एसो जोगो, केवलं ओसहाणभिन्नेण[1] न मए मीलिउं तीरइ। विजयदेवेणं भणियं—किमिह अन्नं भणइ? जइ एत्थ पत्थावे न इमं जोगं कुणइ एस बालो ता निच्छियं कालाइक्कंतकरणे वि न गुणंतरं किं पि समासाइस्सइ[2] त्ति। 'अवितहमेयं' ति भीओ गुत्तिवालो, आउलसरीरो य पुच्छिओ गेहिणीए, सिट्ठो अणेण सव्वो वइयरो।

कर्णनदुष्कृतकिम्पाककुसुमोत्थानम्' इति भूयो भूयः ॥

१ औषधानभिज्ञेन ॥ २ पि न समासाईयइ त्ति खं० प्र०। किमपि न समासादयिष्यति ॥

तीए जंपियं—किमणेण कालविलंबेण? गुत्तिगिहातो कड्ढिऊण दिणमेगं मुच्चइ एस पुरिसो, ओसहमीलणे कए पुणरवि घेत्तव्वो, न को वि किं पि मुणिहि त्ति। तहेव विहियं गुत्तिवालेण। संबलहत्थसहाइणा य समं विसज्जिओ एसो ओसहमीलणत्थं, गतो य विविहोसहीसहस्ससंकुलं गिरिनिगुंजवणं, इओ तओ ताव तदब्भंतरे भमिओ जाव आगया रयणी, पसुत्तो तत्थेव। ततो निब्भरनिद्दामंदीकयचेयण्णे पसुत्ते सहायम्मि पलाणो विजयदेवो। पभायसमए पडिवुद्धो विलक्खो गओ सगिहमियरो।

विजयदेवो वि वच्चमाणो पत्तो दसपुरं, उवविट्ठो एगस्स वणियस्स आवणे। पुड्डिगाइबंधणेण कयमणेण वणियस्स साहेज्जं। भोयणसमए य नीतो वणिएण सगिहं, समपडिवत्तीए काराविओ भोयणं, 'सुइसील-समायारो' त्ति धरिओ अप्पणो समीवे। मासावसाणे य कया पंचदीणारप्पयाणमेत्ता एयस्स वित्ती। ठिओ विजयदेवो सायरं, ववहरिउं पवत्तो य। कइवयमासेहिं लद्धा पन्नासं दीणारा। 'जायं पच्छयणं' ति वणियमापुच्छिऊण गतो गयपुरं। तहिं च इतो ततो परिभममाणस्स मिलिओ एगो रयणवणिओ। तेण य दंसियमेगंते महामोल्लं माणिक्कं। सव्वरयणगुणोववेयं महाइसयं च तमवलोइऊण विजयदेवेण चिंतियं—

अच्चंतसिणिद्धं विप्फुरंतकिरणावलीदलियतिमिरं। पुन्नेहिं लब्भइ परं एवंविहमुत्तमं रयणं ॥ १ ॥

भूय-पिसाया साइणि-रक्खा जक्खा य ताव पीडंति। जाव न अज्ज वि नूणं पाविज्जइ एरिसं रयणं ॥ २ ॥

---

१ गोत्ति° प्र० ॥ २ विज्झयिओ सं० ॥ ३ आसणे सं० ॥ ४ °पयमे° सं० ॥

दोगच्चचक्कमक्कमइ निक्किवं विक्कमंति रिउणो वि । ताव नरं नो छिप्पइ जावऽज्ज वि एरिसं रयणं ॥ ३ ॥
इय एवंविहविलसंतभूरिसंकप्पवाउलियहियओ । तल्लाभोवायमपेच्छिरो य विच्छायमुहसोहो ॥ ४ ॥
सुन्नो व मुच्छिओ इव चित्तालिहिओ व कयसमाहि व । वट्टंतो सो भणिओ सविम्हयं रयणवणिएण ॥ ५ ॥

भो भो वणियसुय ! किमेवं सामलमुहो ज्झायसि ? त्ति । विजयदेवेण जंपियं—न किं पि । रयणवणिएण भणियं—तह वि कहेसु किं पि रयणगयं गुण-दोसं जमवलोइऊण तुममेवं विमणदुम्मणो संवुत्तो सि । विजयदेवेण जंपियं—पत्थावे साहइस्सामि । तओ लग्गो इयरो गाढग्गहेण पुच्छिउं । एत्थंतरे रायपट्टहत्थी उम्मूलियालाणखंभो निवाडियभवणभित्तिभागो संखोभियपुरजणो तं पएसमणुपत्तो । पलाणो तद्देसवत्ती लोगो । विजयदेवो वि इमिण च्चिय कइयवेण अवक्कंतो ततो पएसाओ ।

अवरदिणे पइरिके कहिं पि दाणाभिनंदियं काऊण पुच्छिया रयणवणियदासी—भद्दे ! तुह सामिणा माणिक्कमिमं कहमुवलद्धं ? ति । तीए जंपियं—भिल्लपल्लिमुवगएण मह सामिणा पहविणासियसत्थवाहोवलद्धरिद्धिवित्थराओ भिल्लसयासातो कइवयदीणारोवलद्धं ति । एवं च वियाणियमाणिक्कुट्ठाणपारियावणियाविसेसो विजयदेवो चित्तब्भंतरुब्भिन्नोवायविभागो गतो एगया रयणवणियसमीवे । दिन्नासणो य भणितो तेण—भो विजयदेव ! सव्वहा साहेसु संपयं पुव्वपुट्ठं ति । विजयदेवेण भणियं—

अच्चंतपयत्तुवलद्धवत्थुविसयम्मि दोस-गुणकहणं । जुत्तं न होइ कुसलाण हियय(य)कालुस्सजणयं ति ॥ १ ॥

१ एवंविधविलसद्भूरिसङ्कल्पव्याकुलितहृदयः ॥ २ गाढाग्रहेण ॥ ३ एकान्ते इत्यर्थः ॥ ४ विज्ञातमाणिक्योत्थानपरियापनिकाविशेषः ॥ ५ अत्यन्तप्रयत्नोपलब्धवस्तुविषये ॥ ६ °यस्सलु(सल्ल)स्स ज° प्र० ॥

भवियव्वं जं जह जम्मि देस-कालम्मि जत्थ वा देसे । तं तम्मि तहा तत्थेव होइ किं भूरिभणणेण ? ॥ २ ॥
इय कइयवेण गंभीरवयणनिवहं निसामिउं तस्स । अविमुणियरयणगुण-दोसवित्थरो संकिओ वणिओ ॥ ३ ॥
सायरविलइयभालयलपाणिकमलो पयंपए एवं । भो विजयदेव ! सब्भावरेण मह पुच्छिरस्सावि ॥ ४ ॥
कीस न फुडक्खरं कहसि ? किं पि नो सुंदरेण वि इमेण । गिहधरिएणं कज्जं जइ दुट्ठं तुज्झ पडिहाइ ॥ ५ ॥
अच्चंतमणहरेण वि दुट्ठेण गिहट्ठिएण को व गुणो ? । ता निस्संको माणिक्कदोस-गुणविसयमुवइससु ॥ ६ ॥

एवं निसामिऊण बुज्झियतम्मज्झेण अलक्खावियतदत्थित्तेण भणियं विजयदेवेण—भो महायस ! को हं ? को वा मे सत्थपरमत्थपरिन्नाणपरिस्समो ? किं वा मए दिट्ठं जेण भुज्जो भुज्जो पुच्छसि ममं ? न हि विन्नाणलवमित्तेण जह तह जंपिउं जुत्तं। रयणवणिएण भणियं—अलं बहुवायावित्थरेण, परिकहसु सब्भावं, कीस तुममिमं पलोयंतो सामसुहच्छवी संवुत्तो सि ? । विजयदेवेण जंपियं—जं जस्स अणिट्ठं तं तस्स जइ वि संसिउमजुत्तं तहावि तुह गरुयवयणोवरोहओ सीसइ, केवलं न रूसियव्वं तुमए, इमस्स हि माणिक्कस्स पसाएण अहमिममवत्थं पत्तो । रयणवणिएण भणियं—कहं चिय ? । इयरेण वुत्तं—निसामेसु, जस्स सत्थवाहस्स हत्थे इमं माणिक्कमासि तस्स सत्थे मिलिओ अहं पि संबलगसणाहो इंतो, जायमेत्तीभावेण सत्थवाहेण पलोयाविओ इमं रयणं, एयकिरणुज्जलयाइगुणेण अहं सत्थवई य परं पहरिसमुवगया,

अह अडविमज्झनिवडिया गहिया भिल्लेहिं वंदिगाहेण । नीया [अम्हे] पल्लिं सहाविया विविहदुक्खाइं ॥ १ ॥

१ °विरइ° प्र० ॥ २ °ज्झेणं अ° प्र० ॥ ३ °ल्लेण वं° प्र० ॥

केणइ पुव्वकयसुकयाणुभावेण मुक्को सत्थवाहो अहं पि, ता भद्द ! अणुंसरियपुव्वएयसंसग्गसमुवलद्धाणत्थो साममुहच्छायत्तमुवगओ त्ति । इमं च सोच्चा रयणवणिएण भणियं—अत्थि एवं जहा तुमं भणसि, पल्लीए वाणिज्जोवगएण भिल्लसयासातो मए इममुवलद्धं, अहो ! ते पन्नातिसओ जं ईसिदंसणे वि इमं एवं नाम पच्चभिजाणसि ? एवं च किमणेण घरे धरिएण ? ता सव्वहा भो विजयदेव ! तुममेव केणइ अमुणिज्जंतो जह तह विक्किणसु इमं, बहुजणदंसिज्जमाणं हि मा कोइ पच्चभिजाणिहि त्ति । विजयदेवेण भणियं—करेमि अहं एयं, केवलं विकीयमाणं किमिमं लहिहि ? त्ति, थोवलाभे चित्तसंतावो तुज्झ होही, ता सयं चेव विक्किणसु । रयणवणिएण भणियं—लहउ किं पि, कुणसु मह कज्जमिमं ति । अणिच्छंतस्स वि तस्स समप्पियं तं माणिक्कं । अंतोपसरंतपमोयपब्भारो तमादाय इओ तओ वीहिमज्झे भमिऊण पुव्वविढत्ते पन्नासं दीणारे घेत्तूण समागओ रयणवणियमंदिरं । समप्पिया से दीणारपोत्तिया 'एयं तव्विक्कतोवलद्धं धणं' ति । तुट्ठो रयणवणिओ, पडिगाहिया दीणारपोत्तिया, 'साहु ! पडिवन्नवच्छल ! साहु !' त्ति अभिणंदिओ विजयदेवो । तंबोलाइदाणकयसम्माणो य गतो [3]सं ठाणं ।

जाए य रयणिसमए रयणुवलंभुब्भवंतपरितोसो । चिंतेइ सो न जुत्तं [4]एत्तो [5]अत्थं अवत्थाणं ॥ १ ॥
मा इह कहं पि कत्तो वि को वि मुणिऊण वइयरमिमस्स । ववसेज्जऽणज्जकज्जं सज्जो काउं तयत्थी मे ॥ २ ॥
अहवा एयद्दाया वि दइव्वदुज्जोगतो मुणियसारो । संजायपच्छयावो पुण घेत्तुमिमं समीहिज्जा ॥ ३ ॥
न य एत्थावत्थाणे पेहेमि पओयणं पि किं पि परं । सिद्धे य एयलाभे सिद्धं मज्झं पि नीसेसं ॥ ४ ॥

१ अनुस्मृतपूर्वैतत्संसर्गसमुपलब्धानर्थः ॥ २ °ओ लि । इ° खं० प्र० ॥ ३ सट्ठाणं प्र० ॥ ४ एसो अ° प्र० ॥ ५ अत्र ॥

एवं परिभाविऊण पडिवन्नतिदंडिवेसो कन्नत्तिनिबिडसीवियरयणं[1] कोपीणयपट्टं संनद्धियं दंडग्गे गाढं[2] बंधिऊण मज्झ-रत्तसमयम्मि नीहरितो गयउराओ। पच्चायसंकिओ य पंगुणपहपरिहारेण[3] गओ पाडलिपुरं। दूरातो च्चिय पासायगय-क्खगयाए कयमणहरसिंगारसारनेवच्छाए मयणमंजूसाभिहाणाए सलीलं रायमग्गमवलोयंतीए दिट्ठो एसो विलासिणीए।

अह फॅलिहकुंभअंतो[4] जलंतदीवयपह व्व सव्वंगं। बहिया उज्जोयन्ती छाया रयणाणुभावभवा ॥ १ ॥

दिट्ठा से कुसलाए तीए तो चिंतियं हिययमज्झे। दिवमणि-मंतजुत्तेण नूण होयव्वमिमिण[5] त्ति ॥ २ ॥

रसंसंभियजोयणसंभवे[6] वि दीसइ न एरिसी जोण्हा। सव्वंगसंगिणी रिद्धिवित्थरुत्थंभियस्सावि ॥ ३ ॥

कासायवत्थधारी जइ वि हु सक्कारवज्जियसरीरो। तह वि हु कोइ महप्पा दीसंतमहप्पभावोऽयं ॥ ४ ॥

एवं परिभाविऊण जाव सा गवक्खाओ ओइन्ना गया भवणंगणं ताव पत्तो तप्पुद्देसं विजयदेवो। ततो सविलासपेसि-यकुवलयदलदीहरच्छीए अंजलीबंधपुरस्सरं भणितो तीए—भो देवाणुप्पिय! पसीयसु इह वीसामकरणेणं ति। ततो सुसंगो-विर्यत्तणेण दूरपमुक्कामाणिक्कयणासासंको 'सायरं तीए उवनिमंतितो' त्ति पविट्ठो भवणं। दवावियं तीए आसणं, पक्खा-लाविया चलणा। खणंतरे परमायरेण काराविओ मज्जणं, गोसीसचंदणविलित्तगत्तो य सुसंभियभूरिरसोवेयं भुंजावितो भोयणं, अक्खजूयाइणा कीलाविसेसेण दिणावसाणं जाव रमाविओ य।

---

१ °यरयणं के। पणय° सं० ॥ २ वंधेऊ° प्र० ॥ ३ 'प्रगुणपथपरिहारेण' ऋुत्वमार्गत्यागेन ॥ ४ स्फटिककुम्भान्तः ॥ ५ °ह्नमिमिण खं० प्र० ॥ ६ रसगम्भृतलोचनसम्भवेऽपि। 'जोयण'शब्दो लोचनार्थको देशीनाममालायाम् ॥ ७ °रच्चिय° सं० ॥ ८ °यभत्त° सं० प्र०। सुसङ्गोपितत्वेन ॥

जाए य रयणीसमए सुकुमालहंसतूलीनिंविसेसमिउफासाए उभयंतठविओवहाणमणहराए सोयाविओ सेज्जाए। निरूविया य नियधूया सरीरसंवाहणाइसुस्सूसाकरणत्थमेयस्स। भणिया य सा रहसि—वच्छे मयणसुंदरि! मंतसिद्धिवसतो रयणाईस-आणुभावतो वा सस्सिरीतो एस कोइ महप्पा तुहपुन्नपगरिसागरिसितो व इहई वट्टइ ता सम्ममणुचरेज्जासि त्ति। 'तह' त्ति पडि-सुणिय पारद्धा सा तहेव वट्टिउं। अह सुहभोयण-सयण-सरीरसंवाहणाइपीणियसरीरो निप्पचूहगेहोवगतो निब्भरं पसुत्तो एसो।

पम्मुक्कघोरघुरुडुकनिब्भरं सोविरं च तं नाउं। अच्चंतविमलबुद्धी परिचिंतइ मयणमंजूसा ॥ १ ॥

ससिरीयसरीरो कोइ एस वइदेसिओऽम्ह पडिहाइ। न य दीसइ पच्चक्खेण किं पि तक्कारणं ताव ॥ २ ॥

जइ मंत-तंतसिद्धीए एस एवं विरायमाणंगो। ता विणयवित्ति-सम्माणदाण-सेवाइणा गिज्झो ॥ ३ ॥

अह वज्झं पि हु संभवइ किं पि पेहेमि डंडवद्धं ता। कोत्तीणमिमं मा होज्ज एत्थ रयणाइ संजमियं ॥ ४ ॥

इय सुहुमबुद्धिनिच्छइयकज्जमज्झाए डंडगयवत्थं। तं पेहिरीए निउणं सहसा माणिक्कमुवलद्धं ॥ ५ ॥

पुणरवि डंडग्गे वंधिऊण पुव्वट्ठिईए तं वत्थं। उवलद्धवंछियत्था वीसत्था निब्भरं सुत्ता ॥ ६ ॥

जाए य पभायसमए, समुग्गयम्मि मायंडमंडले, विगलंतीसु दिसिवहूगंडत्थलीमियमयपत्तवल्लीसु व तिमिरमंजरीसु, आणंदनिब्भरं रसिएसु चक्कवायकुलेसु, पडिदेवभवणं ताडिएसु संझाबलिपडुपडह-मुयंगपमुहजयतूरेसु पबुद्धो विजयदेवो।

१ °निविसविसेसमि° प्र० ॥ २ °इसुआणुभावओ वा सं०। °इसुअणुभावत्तो वा प्र०। रत्नातिशयानुभावतः ॥ ३ ससरीरसरी° सं० ॥ ४ °मिया प्र० ॥ ५ °यट्ठा वी° प्र० ॥ ६ दिग्वधूगण्डस्थलीमृगमदपत्रवल्लीषु ॥ ७ सन्ध्याबलिः–प्रभातसन्ध्यापूजा ॥

पेराभुद्धा कोवीणवद्धा रयणगंठी, 'अंतो सुन्न' त्ति ज्झमकितो ज्झड त्ति हिययम्मि । 'हुं, निच्छियं छलिओ इमीए कैयंतदाढाकडप्पकुडिलाए विलासिणीए, किमियाणि लोगोवहासकारगेण परहत्थीभूए रयणे कोलाहलेणं ? उवायातो चेव विहडियकज्जसंघडण' त्ति आयारसंवरं काऊण पुव्वं पित्र कइयवेण पुणो निब्भरं पसुत्तो एसो ।

मयणमंजूसा वि चेडीकरयलसंवाहणावैवगयनिद्दा समुट्ठिया सयणिज्जातो । परमपमोयँपब्भारवियसियवयणसयवत्ताए य पुच्छिया मयणसुंदरी—वच्छे ! सो वइदेसिओ सुवइ गतो व ? त्ति । तीए भणियं—अम्मो ! अज्ज वि केणइ कारणेण निब्भरं निद्दायइ त्ति । मयणमंजूसाए जंपियं—वच्छे ! एत्तो वरागातो कोवीणेणूमियं जं माणिक्कमेक्कं मए उवलद्धं तं पुरंदर-कुबेरपमुहाणं पि असंभावणिज्जं, ता देहि आसत्तवेणियं जलंजली दोगच्चस्स, अँवहत्थेहिं भूय-पिसाय-साइणीपडिभयं ति । ततो विम्हिया मयणसुंदरी, भणिउं पवत्ता य—अम्मो ! महंतं मम कोउयं, दंसेसु तयं ति । ततो मायंडखंडं पिव भूरिसमुच्छलंतकिरणजालविणिम्मियहरिचावचक्कं माणिक्कं दंसियमिमीए । 'अहो ! महालाभो' त्ति सह चेडीहिं हरिसिया मयणसुंदरी । अह ताण हरिसुक्करिसनिरुंभणत्थं पढियं मयणमंजूसाए—

अइहासो अइतोसो अईवरोसो असम्मए वासो । अच्चुब्भडो य वेसो पंच वि गरुयं पि लहुयंति ॥ १ ॥

अइगरुयहरिसदंसियइंगियसवियारदिट्ठ-संलावा । करजलरुहट्ठियं पि हु लच्छि हारिंति ही ! मूढा ॥ २ ॥

---

१ परमुद्धा को° खं० प्र० । पराग्रृष्टा ॥ २ कृतान्तदंष्ट्रासमूहकुटिलया ॥ ३-व्यपगतनिद्रा ॥ ४ °यचिय° प्र० ॥ ५ कौपीनगोपितमित्यर्थः ॥ ६ अपहस्तय ॥ ७ मह प्र० ॥ ८ मार्त्तण्डखण्डमिव भूरिसमुच्छलत्किरणजालविनिर्मितहरिचापचक्रम् ॥ ९ अतिगुरुकहर्षदर्शितेङ्गितसविकारदृष्टसंलापाः ॥

धीमंतो पुण अन्तो पहरिसमतिउद्धुरं पि धारिंता । रयणायर व्व कलिउं कुसलेण वि नो तरिज्जंति ॥ ३ ॥
ता वेट्टिज्जसु तह कह वि पुत्ति ! सुनिउत्तचित्तवावारा । जह हरिस-विसायाणं चेरीण व देसि नोगासं ॥ ४ ॥

'अम्मो ! जं तुमं आणवेसि तं काहामो' त्ति भणंतीओ नियनियकिच्चाइं चिंतिउं गयातो चेडीओ मयणसुंदरी य । अह जाममेत्तम्मि संपत्ते दिवसे, समीवमुवगए देवपूयावसरे मयणमंजूसाए भणिया मयणसुंदरी—वच्छे ! जावऽज्ज वि भोयणवेला न संपज्जइ ताव इमं नियनायगं सुरसरितीरसंपाडियण्हाण-पिंडप्पयाण-देवपूयणाइवावारं दवावियजहिच्छियातिहिदाणं धम्मसहाइणी होऊण समीवोवगया लहुं करेसु त्ति । 'अम्मो ! जं तुमं आइससि' त्ति भणिऊण गया सा नियवासभवणं। पबोहिओ कवडपसुत्तो विजयदेवो, भणिओ य—भो देवाणुप्पिय ! अइकालो वट्टइ ता पयट्टसु सुरसरियाण्हाण-पिंडपयाणाऽतिहिदाणादिकिच्चकरणत्थं ति । ततो दरिसियंगभंगो जिंभायमाणो उट्ठिओ विजयदेवो, अदंसियमुहसामाइवियारो पट्ठिओ सुरसरियतीरं । मयणसुंदरी वि कइवयदासचेडीपरिवुडा पुप्फ-बलि-अक्खयाइपडलगसमेया पयट्टा तयणुमग्गओ । गयाइं मंदाइणीतीरं, कयं विजयदेवेण ण्हाणं, परिहियं वत्थजुयलं, पूइया देवया, कयं मंतसुमरणं, दिन्नो अग्घंजली अंसुमालिणो ।

एत्थंतरे भणितो सो मयणसुंदरीए—पिययम ! मा दव्वसंकिअयं करेज्जाहि, पिंडप्पयाणाति अणुचिट्ठसु । विजयदेवेण भणियं—एवं करेमि, वाहरावेसु वेयवियक्खणे बंभणे जेण कयपिंडपाओ ताणं दाणं देमि । 'तह' त्ति वाहराविया

१ शक्यन्ते ॥ २ वट्टेज्ज° प्र० ॥ ३ न अवकाशम् ॥

तीए कुसला चउरो बंभणा। कयं तेहिं पिंडविहाणाइ किच्चं। तदवसाणे य जोडियपाणिसंपुडं भणियं विजयदेवेण—भो बंभणा! निसुणह मह वयणं—मज्झं दइवदुज्जोगवसेण रयणमेगं संपडियं, तेण य दुट्ठलक्खणेण लक्खसंखं धणं नीसेसं कुलं च खयमुवणीयं तह वि कूडपडिबंधाओ न मए तमुज्झियं, संपयं च केणइ पुन्नवसेण तं अवक्कंतं, एत्तो य जस्स घरे तं वीसंतं तस्स चेव अणत्थो होउ मा अम्हं ति, एत्थ अत्थे मंतुच्चारं तालं च पाडेह जेणाहं वेवगयणत्थो सुहं ववहरामि त्ति। इमं च अपंडवज्जासणिडंडनिवडणदारुणं रयणवुत्तंतं निसामिऊण मयणसुंदरी भणिउं पवत्ता—भो बंभणा! पडिवालेह ताव खणमेक्कं जाव चेडीओ मायरं दट्ठूण पडिनियत्तंति। बंभणेहिं भणियं—एवं होउ। तओ तीए तव्वुत्तंतकहणत्थं रयणा[णय]णत्थं च पेसियाओ तुरियं चेडीओ। गंतूण सिट्ठं जहट्ठियं मयणमंजूसाए ताहिं नीसेसं। तं च सोच्चा विच्छाईहूया ज्झड त्ति एसा, 'जइ पाणच्चायं करेमि तह वि माणिक्कमिमं न उज्झामि' त्ति निच्छयं ववसिया य। उवलद्धतन्निच्छयाओ य पडिनियत्ताओ चेडीओ। सिट्ठो मयणसुंदरीए वुत्तंतो। कोव-संतावभरकिलामियवयणकमला य सयं पट्ठिया मयणसुंदरी। संलत्ता य विजयदेवेण—पिए! कीस पत्थुयत्थविग्घं करेसि? जीविओ म्हि चिरकालाओ जमेरिसं कल्लाणमुवट्ठियमिचाइ। जह जह सो भणइ तह तह इत्थीसहावसुलभनिविवेययाए अहियपरमुत्तम्ममाणमाणसा [सा] सिग्घं गया मयणमंजूसासमीवम्मि, वोत्तुमारद्धा य—अम्मो! चेडीमुहेण निसामियमाणिक्कवइयरा वि तदप्पणपरम्मुही तुमं कीस ठिया?।

किमिमं जुत्तं पडिहाइ तुज्झ सज्झसकरे वि जं कज्जे। पक्खिप्पइ अप्पा एवमावयावडणदुव्विसहे? ॥ १ ॥

१ व्यपगतानर्थः ॥ २ 'पवित्तं' प्र० ॥ ३ मदनमञ्जूषायै ॥ ४ मदनसुन्दर्यै ॥ ५ उत्ताम्यन्मानसा ॥

लच्छी भवणं भिच्चाइपरियरो वत्थमंडणपयारो । कीरंति सरीरकए तं पि विवज्जइ जइ इमाओ ॥ २ ॥
ता किं इमिणा माणिक्ककइयवुव्वाहिणा कयंतेण । गेहधरिएण अम्मो ! [1] ता मुंचसु एयकुग्गाहं ॥ ३ ॥
सव्वगुणसुंदरेण वि अलाहि जीवियविणासिणा तेण । [2]कणगमइया किवाणी किं जुज्जइ वाहिउं देहे ? ॥ ४ ॥
एयस्स ववगमे सो न नि[3]यसि वियसंतवयणसयवत्तो । उवलद्धजीवियं पिव अभिनंदइ दूरमप्पाणं ? ॥ ५ ॥
एगवराडयनासे वि किन्न [4]तम्मंतमिक्खसि जणोहं ? । वाहिविगमो व एसो य परमपरितोसमावन्नो ॥ ६ ॥
किं भूरिजंपिएणं ? पिएण जइ जीविएण मह कज्जं । ता उज्झसु झत्ति इमं तुह प्पसाएण किमपुन्नं ? ॥ ७ ॥
इय तीए तह कहं पि हु पन्नविया सा जहा लहुं ति[5]स्सा । माणिक्कमप्पियं तीए गरुयदुक्खं वहंतीए ॥ ८ ॥

ततो मयणसुंदरी तं गहाय गया तुरियतुरियं अमरतरंगिणीतीरं, समप्पियं अणिच्छंतस्स वि विजयदेवस्स, गहियं च तेण परमतदुवरोहेण । अणुवलद्धदक्खिणा य विलक्खीहूया गया बंभणा । 'अहो ! पडिकूलया देवस्स, जमिमं मे रयणं पणट्ठं पि भुज्जो कत्तो वि आगयं, ता मंदाइणीमहद्दहे कत्थइ अणत्थपत्थारीपडितुल्लं खिवामि एयं' ति कइयवेण ततो ट्ठाणाओ अवक्कंतो विजयदेवो । सुसंगोवियरयणो य अणवरयपयाणगेहिं पत्तो नियनयरिं, परितुट्ठो पिया, आणंदिया बंधुणो । पत्थावे सिट्ठो रयणलाभवइयरो, संसितो य सव्वकुडुंबेण । माणिक्कपभावेण य पाउब्भूया पभूया सिरी । तीए य सुहट्ठाणविणिओगेण उभयभवियसुहसंदोहभायणं जाओ त्ति ।

१ 'विपद्यते' विनश्यति यदि 'अस्माद्' माणिक्यात् ॥ २ कनकमयी कृपाणी ॥ ३ पश्यसि ॥ ४ ताम्यन्तम् ॥ ५ तस्यै ॥

एवं उवायदरिसी जह इहलोइयमसेसमवि कज्जं । तह पारलोइयं पि हु साहइ सिग्घं सुहेणेव ॥ १ ॥
धम्महिगारी सविसेसमेस तेणोवदंसिओ समए । न हु दुम्मईहिं धम्मो घेत्तुं तीरइ वरनिहि व ॥ २ ॥ अपि च—

धनलवमपि कश्चिन्निश्चितोपायवन्ध्यो, यदि भवति न लब्धुं सर्वथाऽलं तदानीम् ।
कथमिव निरुपायः प्राज्यकल्याणकर्त्री, निखिलसुखविधात्रीं प्राप्नुयाद् धर्मसिद्धिम् ? ॥ १ ॥
उपर्युपरि पापीयान् व्युपायान् पापकर्मणि । प्रेक्षते धर्मकृत्ये च जन्मान्ध इव न क्वचित् ॥ २ ॥
तुच्छं भूरितरव्यपायकलिकाकोशाकुलं सर्वतः, सर्वं संसृतिकार्यमित्यपफलस्तत्राप्युपायक्रमः ।
पापक्षेप्तरि शर्मधातरि यशःसन्दोहरत्नोदधौ, सम्यग्धर्मविधौ पुनः स फलदस्तत् तत्र यत्नः सताम् ॥ ३ ॥
इति विमर्शितकृत्यपथः सुधीरधिकधर्मनिवेशितमानसः । भवति कामिकसर्वसमीहितोत्तमसमृद्धिसमृद्धपदं जनः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे उपायचिन्तायां विजयदेवकथानकं समाप्तम् ॥ २४ ॥

उवसंतो चिय पुव्वुत्तगुणगणालंकिओ परं धम्मं । निव्वाहिउं समत्थो त्ति संपयं तं पवक्खामि ॥ १ ॥
कोहो माणो माया लोहो चत्तारि हुंति हु कसाया । दिन्नविविहावयाया कलुसियसद्धम्मववसाया ॥ २ ॥
ते उदयनिरोहाओ उदए वा विफलभावजणणेण । जस्सोवसमंति फुडं सो भन्नइ एत्थ उवसंतो ॥ ३ ॥

उपायदर्शित्वस्य फलम्

उपशान्तस्य स्वरूपम्

कषायाणां दोषाश्च

१ °स्तत्तत्र यत्नः प्र० ॥ २ °कृत्याप° सं० प्र० ॥ ३ °यं संप° सं० प्र० ॥ ४ यस्योपशाम्यन्ति स्फुटम् ॥

एएसु उदिन्नेसुं विफलो च्चिय धम्मकम्मसंरंभो । न य एत्तो वि हु अन्नं वन्नंति भवत्थदुत्थकरं ॥ ४ ॥
कोहो सयणविरोहो हयसोहो दिन्नदारुणदुहोहो । माणो य हयसुनाणो कयावमाणो गुरुजणे वि ॥ ५ ॥
माया कुडिलियवाया पए पए दिन्नपच्चवाया य । लोभो य सयणदोहो कयसम्मोहो सुगइरोहो ॥ ६ ॥
एक्केक्कसो वि कक्कस-किलेस-कालुस्सकारिणो एए । मिलिया य अणुवसंता य कह णु कुसलावहा होंति ? ॥ ७ ॥
ता एयाणं उवसममसेसकल्लाणमूलमक्खंति । कंखंति भिक्खुणो तेण तक्खयं मोक्खसोक्खकए ॥ ८ ॥
जं भावि पुरा भूयं हवइ य दुक्खं सुतिक्खमिह लोए । तं जाण कसायाणं कलुसं दुव्विलसियमसेसं ॥ ९ ॥
जं मुंज्झइ बाहुबली गिज्झइ भरहो तहित्थिया तित्थं । कुगइं जाइ सुभूमो तं जाण कसायविप्फुरियं ॥ १० ॥
ते धन्ना सप्पुरिसा तेहिं परं पाविया जयपडाया । जेहिं सोढो पोढो कसायफणिणो फडाडोवो ॥ ११ ॥
उवसमसेढिं बाढं आरूढं पि हु लहुं निवाडिंति । तूलं व कसाया पलयकालवाय व्व दुव्विसहा ॥ १२ ॥
इय ताण दारुणत्तं परवागरणातो नियमईए वा । णाउं जो उवसंतो सो होइ सुही सुदत्तो व्व ॥ १३ ॥

तहाहि—अत्थि समत्थावरविदेहदेहसोहाकारिणी, कारुणियमुत्ति व्व परोवयारसारोयारलोयाभिरामा, रामएव्वसरीरजट्ठि व्व सीयासयपसाहिया, साहियासेसविपक्खमहानरिंदजियसत्तुपयंडभुयदंडमंडवजणियच्छाया सावत्थी नाम नयरी । जहिं

१ भवुत्थ° खं० प्र० । भवस्थदौस्थ्यकरम् । भवस्थाः—संसारिणः ॥ २ हतशोभः ॥ ३ मुह्यति ॥ ४ गृध्यति ॥ ५ याति ॥ ६ °यपलिणो खं० ॥ ७ °वाडेंति प्र० ॥ ८ प्रलयकालवाता इव ॥ ९ नाउं प्र० ॥ १० लोकाभिरामा—प्रकाशेन लोकैश्चाभिरामा ॥ ११ सीताऽऽशय(ऽऽश्रय)प्रसाधिका सीताशतप्रसाधिता च ॥

च वरुडगेहेसु वंसविदलणं, वेजहट्टेसु नागरचुन्नणं, जूयसालासु दंडक्खेवो, तरूसु साहापरिग्गहो न कयाइ लोएसु। तहिं च निचनिबद्धनिवासो वासवदत्तो नाम सेट्ठी, ललिया नाम भज्जा। पयई[इ] च्चिय सच्छसहावो सुदत्तो नाम ताण पुत्तो। नियकुलक्कमाविरुद्धवित्तीए सवाइं कालं वोलेंति।

एगया य सुदत्तो सहपंसुकीलियस्स मेत्तस्स खेमाभिहाणस्स कज्जवसेण मंदिरं गओ, दिन्नमासणं खेमेण, आसीणो एसो। पारद्धा य दो वि सारखेड्डेण कीलिउं। परमपयरिसमणुपत्ते य सारिकीलाविसेसे सहस त्ति समुट्ठितो भवणंतो कोलाहलो। 'किमेयं?' ति आउलो धाविओ गिहहुत्तं खेमो। महाकट्ठकप्पणाए परोप्परं कयकलहं मुसलघायजज्जरियसिरनिस्संतरुहिरोरालियसरीरं निवारियं कुडुंबं। मिलितो कोऊहलेण लोगो। विम्हय-सज्झसपरवसेण य पुच्छिओ सुदत्तेण खेमो—भो मित्त! को एस अयंडे च्चिय विडंबणाडंबरप्पवंचो?। खेमेण भणियं—वीडावसेण कहिउं पि न तीरइ। सुदत्तेण भणियं—[तहावि] तहाविहासमंजसजणणे होयव्वं गरुयनिमित्तेण, ता साहेसु लेसमेत्तं। खेमेण भणियं—निसामेसु—

मह घरिणीए कुंभो भग्गो सलिलं उवाहरंतीए। सा जणणीए कुवियाए ताडिया करचवेडाए ॥ १ ॥

मह धूयाए नियजणणिताडणुप्पन्नगरुयकोवाए। मह जणणीए कंठातो तोडिओ नवसरो हारो ॥ २ ॥

अह मह भइणीए नियंगमायपरिहवभवंतदुक्खाए। मुसलेण सिरे पहया सा धूया निद्दयमणाए ॥ ३ ॥

१ वरुडेति अन्त्यजजातिविशेषः ॥ २ वंशाः-वैणवः कुलानि च ॥ ३ नागरस्य-शुण्ठ्याः नगरवासिनां च चूर्णनम् ॥ ४ दण्डः-दण्डनम् ॥ ५ शाखा पक्षश्च ॥ ६ पाशकक्रीडया ॥ ७ गृहाभिमुखम् ॥ ८ ओरालियं-खरण्टितम् ॥ ९ निजकमातृपरिभवभवद्दुःखया ॥

नियधूयं भिन्नसिरुच्छलंतसोणियभरं नियंतीए । मइ भज्जाए वि हया मुसलेण सिरे नियनणंदा ॥ ४ ॥
इय अवरोप्परकयघोरघायघुम्मंतमित्थमचत्थं । दुत्थावत्थं पत्तं, पावकुडुंबं नियसु मज्झ ॥ ५ ॥
निक्कारणं रणं पइदिणं पि अन्नोन्नमवि अणुहवणं । कह साहिज्जइ लज्जाए तुज्झ वत्ता कुडुंबस्स ? ॥ ६ ॥

सुदत्तेण भणियं—अहो ! विसमो दसावागो, अहो ! पडिकूलकारिणी कम्मपरिणई, जं परमपेम्मट्ठाणे वि एवंविहगरुयवइरभावो, भवियव्वं ता एत्थ भवणभूभागसल्लदोसेण पूयाविवज्जयवसकुवियदेवयाकयवियारेण वा विसमट्ठाणगयकुग्गहदुव्विलसिएण व त्ति । खेमेण भणियं—निच्छियं संभवइ एवं, कहमन्नहा अतहाविहकज्जे वि सज्जो लज्जाविवज्जयं वेयणिज्जकरणमित्थं घरयणो ववसेज्जा ? किं कीरइ ? नत्थि कोइ दिव्वनाणालोयपचक्खीकयजीवलोयवावारो महप्पा जो सक्खा गंतूण पुच्छिज्जइ 'किं कारणमेयं ?' ति । सुदत्तेण भणियं—एवमेयं, परं सावहाणो एत्थ अत्थे होज्जासि, मा कोइ कयाइ एवंविहो वि होज्ज त्ति । एवं च खणमेक्कं विगमिऊण गओ सुदत्तो नियगिहं ।

अवरम्मि य अवसरे सो सुदत्तो खेमेण समं रायमग्गमोगाढो अन्नमन्नं जणं जंपंतं निसामेइ, जहा—कोइ अप्पडिमरूय-

१ पश्यन्त्या ॥ २ घूर्णमानम् ॥ ३ पश्य ॥ ४ कथ्यते ॥ ५ अहो ! अप' प्रतौ ॥ ६ ननान्दृकरणमित्थं गृहजनो व्यवस्येत् ॥ ७ दिव्यज्ञानालोकप्रत्यक्षीकृतजीवलोकव्यापारः ॥ ८ °सि, कामोइ क° प्रतौ ॥ ९ अप्रतिमरूपलावण्यावगतकन्दर्पः अनल्पमाहात्म्यप्रतिहताशिवादिक्षोभः निजगद्गुर्जेयमन्मथमथनाभिभूतहरिहरहिरण्यगर्भगौरुपारम्भः रम्भाप्रमुखाप्सरःप्रारब्धप्रेक्षणकप्रपञ्चप्रपञ्चितपूजातिरेकः रक्ततारतरतरङ्गिराजमानमहाप्रमाणनिजगन्नैजयन्तीशताकुलविमलमणिकलधौतरजतविशालशालवलयाभिरामसिंहासनासीनः ॥

लायन्नावमन्नियकंदप्पो अणप्पमाहप्पपडिहयासिवाइसंखोभो तिजयदुज्जेयवम्महमहणोहामियहरि-हर-हिरन्नगब्भपोरिसारंभो रंभापमुहच्छरापारद्धपेच्छणयपवंचपवंचियपूयाइरेगो रंगंततारतरतरंगविरायमाणमहप्पमाणविजयवेजयंतीसयाउलविमलमणि-कलहोय-रययविसालसालवलयाभिरामसिंहासणासीणो 'सव्वन्नु' त्ति गिज्जंतो महापुरिसो पुरिपरिसरे धम्मं साहइ, ता तद्दंसणेण पूयपावमप्पाणं काउं उज्झियसेसकायव्वा पगुणीहवउ जेण वच्चामो त्ति। इमं च असुयपुव्वं सोच्चा जाव विम्हयविफारियच्छो 'किमेयं ?' ति अंतोविप्फुरंतवियक्को सो अच्छइ ताव गयणमंडलं मंडयंती वियसंतपुंडरीयसंडाणुगारिणी सुरयणविमाणमालापरंपरा चउद्दिसावगासमणुरुंधंती सव्वत्तो पसरिया। 'अरे ! सुनिच्छियमेस महाणुभावो नियप्पभावविहणियविग्घो सुरसंघो तस्स भगवओ पायदंसणत्थमित्थं पत्थित्तो संभाविज्जइ, ता अहं पि नियनयणनिम्माणं तद्दंसणेण सहलीकरेमि' त्ति विभाविय मित्तेण समं पट्ठिओ भगवओऽभिमुहं।

अह जाव नयरिगोउरसमीवदेसं कहं पि संपत्तो। ताव सियधरियछत्तो जयकरिवरकंधरारूढो ॥ १ ॥
रह-तुरय-जाण-जंपाण-सिबियगयरायलोयपरियरितो। राया वि रुद्धमग्गो चलिओ तच्चलणनमणत्थं ॥ २ ॥
अन्ने य सेट्ठि-सत्थाह-इब्भ-कोडुंबियाइणो लोया। नियनियविहवणुरूवं जिणनाहं वंदिउं चलिया ॥ ३ ॥
प[3]उरयरपउरजणगमणसंकडीहूयगरुयरायपहं। अहमहमिगाए लोगो कह कह वि जिणंतियं पत्तो ॥ ४ ॥
अह दूराओ च्चिय मुक्कजाण-जंपाणपमुहविच्छड्डो। सो सव्वो वि निसीयइ जहविहिकयजिणपयपणामो ॥ ५ ॥

१-पूतपापम् ॥ २ अन्तर्विस्फुरद्वितर्कः ॥ ३ प्रचुरतरपौरजनगमनसङ्कटीभूतगुरुकराजपथम् ॥

राया वि भॅत्तिपयरिसपसरंताणंदसंदिरच्छिजलो । तित्थयरं पणमिय भत्तिसारमिय थुणिउमाढत्तो ॥ ६ ॥

संसारपङ्कजतुपार ! निरस्तमार !, सज्ज्ञानसार ! निहतान्तरवैरिवार ! ।
विश्वप्रभो ! प्रभव ! धर्म[विधे]र्विधेहि, मामीश ! मोहमकराकरतो वहिष्टात् ॥ १ ॥
कोऽयं भ्रमो जडधियोऽस्य जनस्य नाथ !, [यन्नाथ]तेऽभवभयच्छिदमन्यदेवम् ? ।
ईष्टे किमिष्टतमरत्ननिधिं प्रदातुमाजन्मदुर्गतनरो बहुयाचितोऽपि ? ॥ २ ॥
एकस्त्वमीश ! बहुशोऽर्तिजुषो मनुष्यान्, तुल्यक्षणं प्रतिविभिन्नफलार्थिनोऽपि ।
दूरस्थितोऽपि कुरुषे परिपूर्णवाञ्छान्, चिन्तामणेरिति विजेतृ विजृम्भितं ते ॥ ३ ॥
स्वस्वक्रमागतनमस्करणीयवर्गं, तीर्थ्या विहाय यदधीश ! भवन्तमीयुः ।
त्वामेकमेव भुवि देवतया वदन्तो, लोकोत्तरः स भवतो भुवि सिंहनादः ॥ ४ ॥
प्रत्यक्षमेव वितरन् निखिलार्थसार्थं, विश्वप्रभो ! तनुभृतां मनसाऽप्यसाध्यम् ।
किं नानुमापयसि दृग्विपयव्यतीतस्वर्गा-ऽपवर्गसुखसंहतिदानशक्तिम् ॥ ५ ॥
यैरत्र देव ! भवदीयपदप्रसादादासादितानि न मनोऽभिमतानि पुम्भिः ।
तेषां सुरा हरि-विरश्चि-विरोचनाद्या, दातुं मनागपि मनोऽभिमतं किमीशाः ? ॥ ६ ॥

१ भक्तिप्रकर्षप्रसरदानन्दस्यन्दनशीलाक्षिजलः ॥ २ यानते इत्यर्थः ॥

उपशान्तप्रक्रमे सुदत्तकथानकम् २५।

तीव्रस्मरानलिनि रोगभुजङ्गभीमे, कीनाश-राक्षसवतीह भवस्मशाने १।
यावद् वसामि तव तावदधीश ! नाममन्त्राक्षराणि मम चेतसि विस्फुरन्तु ॥ ७ ॥

इति नरपतिरर्हत्फुल्लवक्त्रारविन्दप्रहितगतनिमेपस्फारनेत्रद्विरेफः ।
स्तवनमनुविधाय क्षोणिपीठे निषण्णोऽलिकफलकनिविष्टस्पष्टहस्ताब्जकोशः ॥ १ ॥

अह ससुरा-ऽसुर-नर-तिरियसत्तसाहारणाए वाणीए । पारद्धा धम्मकहा धम्माइगरेण जयगुरुणा ॥ २ ॥
इह निशममिरभवजंतजंतुगोनाणमोयणसमत्थो (?) । धम्मो चिय किचो तदुचियरत्थसंपाडणेण सया ॥ ३ ॥
उचियं च किचमिह देववंदणं पूयणं च पइदियहं । भवकूवनिवडिराणं हत्थालंबोऽयमेव जओ ॥ ४ ॥
सेवेयव्वा सिद्धंतवेइणो पइखणं च वरमुणिणो । तव्वियलो विहलो चिय सयलोचियधम्मवावारो ॥ ५ ॥
चेइयव्वो य पमाओ न [हु] कायव्वा कुसीलसंसग्गी । सयमवि अलसो निद्धम्मजोगओ होइ अहिययरो ॥ ६ ॥
अणिदाणं दाणं पि हु सद्धा-सक्कार-क्कमजुयं देयं । तव-सील-भावणाओ अक्खमाण एयं चिय पहाणं ॥ ७ ॥
विरई य विहेयव्वा अणुमरियव्वा य पइखणं सम्मं । जं नत्थि न वि य होही तं पि मणो मणइ अनिरुद्धं ॥ ८ ॥
समयत्थचिंतणं पि हु कायव्वं एगचित्तयाए परं । न हि राग-दोस-कलुसस्स सोहणं विज्जए अवरं ॥ ९ ॥

१–अनलिनि–अनलवति ॥ २ 'श ! मानम' प्रतौ ॥ ३–तिर्यक्सत्त्वसाधारण्या ॥ ४ 'इरेगेण प्रतौ ॥ ५ त्यक्तव्यः ॥ ६ अक्षमाणाम्–असमर्थानाम् ॥ ७ विधातव्या अनुमन्तव्या च ॥ ८ 'मनुते' विचारयति ॥ ९ सिद्धान्तार्थचिन्तनम् ॥ १० 'शोधनं' शुद्धिकरम् ॥

इय मोहमहानलडज्झमाणदेहाण भवसत्ताणं । निस्संद्धाऽमयवुट्ठि व देसणा मणहरा पहुणा ॥ १० ॥

एत्थंतरे निदरिसणं दुक्खियाणं, सीमा विविहवाहिविहुराणं, आदरिसो कुदरिसणाणं, निवासो दालिद्दोवद्दवस्स, अच्चंतविरूवो, चउहिं अवच्चेहिं पिसाएहिं व परियरिओ पविट्ठो एगो थेरपुरिसो। सायरकयपायपडणो य विन्नविउं पवत्तो—भयवं! विजियकामधेणु-चिंतामणि-कप्पपायवं तुम्हदरिसणं निसामिऊण नियतिक्खदुक्खनित्थरणत्थमहं किं पि पुच्छिउमिच्छामि। भगवया वाहरियं—भो देवाणुप्पिय! वीसत्थो सवित्थरं साहेसु। थेरेण भणियं—भयवं! एत्थेव पुरीए अहमाजम्मरोरो नीसेससुकयपुन्नलोयाणं चक्खुपरिहरणत्थं व विहिणा निम्मिओ महाकिलेसकप्पणाए दिणगमणियं करेमि, जायाणि य चंड-पयंड-चुडली-वोमनामाइं चत्तारि पुत्तभंडाइं, तेहि य कलिकालजणद्दणबाहुदंडेहिं व इओ तओ विप्फुरंतेहिं तं नत्थि जं न मे दुक्खमुवणीयं, कम्मि वा आवयावत्ते न पाडिओऽहमिमेहिं ? । तहा—

पढमो कलहेकरुई उव्वियणिज्जो समत्थलोयस्स । परपरिभवी य बीओ अत्तुक्कासी य दुव्विणओ ॥ १ ॥

धूया य दुट्ठसीला अच्चग्गलजंपिरी कुडिलचित्ता । तइया सुतो चउत्थो य एस नीसेसदोसघरं ॥ २ ॥

एवंविहेहिं संपइ सुएहिं संतावियस्स मे कहसु । किं पुव्वकयं पावं दारुणमवरज्झइ जमेवं ? ॥ ३ ॥

भगवया वागरियं—भो देवाणुप्पिय ! निसामेसु,

१ निःसृष्टा अमृतवृष्टिरिव ॥ २ °निब्भर° खं० प्र० । -निस्तरणार्थम् अहम् ॥ ३ अहम् आजन्मरोरः । रोरः—दरिद्रः ॥ ४ उद्वेजनीयः समस्तलोकस्य ॥ ५ आत्मोत्कर्षी ॥

तुमं हि एत्तो भवातो सत्तमभवे कुम्मापुरे नयरे चरणाणं मज्झे दुग्गो नाम बंभणो अहेसि । ए[ए] य तुज्झ संपयं च तअम्मे वि चत्तारि वि पुत्तत्तणेण उववण्णा, कुसलीकया य समुचियकलासु । सरंते य काले तुच्छत्तणतो अत्थोवऊणस्स, अणुप्पायातो रोत्तसस्ससंपयाए, सीयमाणे कुडुंबे तुमए चत्तारि वि पुत्ता वाहरिऊण भणिया—अरे ! कहमियाणिं होयव्वं ? मयओ पणट्ठो जीरणोवातो त्ति । सुएहिं भणियं—ताय ! वीसत्थो होसु, तहा काहामो जहा अकिलेसेण निव्वाहो संपडइ त्ति । तए भणियं—जुत्तमेयं तुम्माणं ति ।

ततो पढमपुत्तो गओ अवरगामवासिणो पिउमाउणो पाहुणगो । दिन्नं तेण भोयणं, पुच्छिओ य—किमागमणकारणं ?—न्ति । सुएण जंपियं—पिउणा भागावसेसमग्गणत्थं पेसिओ म्हि । ततो परुट्ठो इयरो, फरुसं जंपिउं पवत्तो य । उप्पन्नो य तुह सुयस्स कोवानलो, पयट्टो असमंजसमुल्लविउं, जातो कोलाहलो, उवट्ठिया जुज्झेणं, कह वि फुट्टं सिरं तुह सुयस्स । घायरुहिरप्पवाहकिलिन्नकाओ बंभणहच्चमुच्चरंतो य पट्ठितो सो राउलं । भीओ इयरो, महाकट्ठेण नियत्तिओ तुह सुओ । दिन्नाणि पंच दम्मसयाणि, खामिऊण विसज्जितो गओ रंजियमणो एसो सघरं । सिट्ठो तुह वुत्तंतो । रंजितो चाढं तुमं, 'वच्छ ! साहु साहु विहियं' ति पसंसितो । तहपसंसणे य सुट्ठुयरमारूढो एस कोहपारोहे, असमंजसुल्लाव-उदरविदारणु-ग्गिरणाइणा य भेसियजणेहिंतो अत्थोवज्जणं काउमाढत्तो ।

बीओ य सुओ सहाइसामग्गिं काऊण गतो कुसत्थलपुरं । दिट्ठो य तहिं मूइल्लो नाम जोगायरिओ लोयपुज्जो तहा-

१ °रणं ! ति प्र० ॥ २ घातरुधिरप्रवाहक्लिन्नकायः ब्राह्मणहत्यामुच्चरन् ॥ ३ °वातोहकिं° प्र० । -प्रपातोपक्लिन्- ॥ ४ राजकुलम् ॥

विहत्तविज्ञापउंजणाइणा जीवइ । सो य तुह बीयसुएण कयतिपुंडगाइमंडणेण दंसियफडाडोवेण भणिओ—अरे दुट्ठ ! धिट्ठ ! मइरालुद्ध ! मुद्ध ! को तुमं ? किं वा ज्झाणं ? किं धेयं ? का वा ओली ? कइ वा पुप्फाणि ? । इच्चाइ पुच्छितो भीतो संखुद्धो सो पडिओ से पाएसु, दवावियं भोयणं, एयंते य सुवन्नदाणपुव्वयं भणिओ से जोगायरिएण—अहं एत्थ जीवामि मंताइवित्तीए, ता न तुब्भेहिं किं पि वत्तव्वं ति । एवं च तदुवलद्धधणो सो इममेव अत्तुक्करिसाइरूवं अत्थपयं निस्सीकाऊण सव्वत्थ परिब्भमिओ, उवज्जियं च किंचि दव्वं । [आ]गतो तुह समीवं, सिट्ठं माणप्पहाणं नियवित्तं, पसंसिओ सायरं तुमए, जाओ य एत्थेव से पयरिसो त्ति ।

तइओ वि तुह सुओ तहाविहं अत्थोवज्जणोवायं किं पि अपेच्छमाणो कवडविरइयधाउवाइयरूवो धाउवाइयविज्जं सिक्खिऊण विप्पयारियमुद्धलोगोवलद्धकइवयकणयगदियाणगो इओ ततो भमंतो पत्तो कंपिल्लपुरं, उवविट्ठो एगत्थ हट्टे । दिट्ठो तत्थ वणिओ धणकणयसमिद्धो । पुच्छिओ सो सपणयं—किं तुम्ह नामं ? ति । तेण भणियं—धणदेवो त्ति । इयरेण वि कवडसीलयाए जंपियं—ममं पि एयमेव नामं, ता तुमं सव्वहा मह भाउगो सि, पसीयंति य मह लोयणाणि तुह दंसणेण वि, ता काउमिच्छामि किं पि तुज्झोवयारं, अतो समप्पेसु सुवन्नधरणमेगं गदियाणगं वा जेण धाउव्वायसिद्धीए दुगुणीकाऊण समप्पेमि त्ति । 'तह' त्ति गदियाणगमेगमुवणीयं वणिएणं । दुगुणीकाऊण तमप्पियं तेण । ततो वणिएण काराविओ

१ °तविज्जा° खं० प्र० ॥ २ परिपाटी ॥ ३ एगन्ते प्र० ॥ ४ आत्मोत्कर्षादिरूपम् ॥ ५ विप्रतारितमुग्धलोकोपलब्धकतिपयकनकगद्याणकः ॥ ६ तव्वणि° खं० प्र० ॥ ७ माषचतुष्कमित एको धरणः ॥ ८ °मेवमु° खं० प्र० ॥

सायरं सो भोयणं, समप्पियाणि पुणो वि दस गदियाणगाइं। ताणि वि पुवाणीयनियकणगपक्खेवेण भुज्जो दुगुणियाणि तुह सुएण। ततो लोभेण अंधीकतो वणिओ, वीससिओ य बाढं। सपुरक्कारं समप्पियाइं तेण पंच सयाइं भुज्जो से सुवन्नस्स। तुह सुएण भणियं—भाउग! अच्छंतु तुह घरे च्चिय जाव ओसहसामग्गिं करेमि। इयरेण भणियं—तुह पासट्ठियाणं को एयाण दोसो?। 'एवं होउ' त्ति पडिवज्जिय तुह सुओ रयणीए घेत्तूण आगओ तुह समीवं। सविसेसं पसंसिओ तुमए, थिरीकतो य एवंविहपरप्पयारणपावट्ठाणे।

चउत्थो वि तुह पुत्तो पउत्तदव्वोवज्जणविविहोवाओ महालोभाभिभूयत्तणेण जलहिलंघण-नरिंदसेवाइणा पगारेण किं पि अज्जिऊण एगस्स लिंगिणो पउररिद्धिणो पवन्नो सिस्सभावं। विणयवित्तीए य आवज्जियं से हिययं, जातो य अहियं वीसासट्ठाणं। कइवयदिणावसाणे य तस्स सवस्सं गिण्हिऊण मज्झरत्तसमए तुरियतुरियं पलाणो समागओ तुह समीवं। निवेदियं च दव्वजायं नियकियं च। सो वि य उववूहिओ तुमए, पयट्टो य जहिच्छाए ववहरिउं।

इय कोह-माण-माया-लोभज्जियरित्थरंजियमणेण। भो थेर! ते सुया तह कहं पि ठविया तएऽणत्थे ॥ १ ॥
जह ताण न सुमिणे वि हु उप्पज्जइ तव्विरज्जणेऽभिरुई। अवि तेसु बहुपयारं अच्चंतं उज्जया जाया ॥ २ ॥
किंपागतरुफलं पिव मुहमहुरं तेण संभविय पुर्व्वि। अइकडुयविवागत्तेण ताण ते परिणया पच्छा ॥ ३ ॥
जइ कह वि कम्मवसओ अकिंचकरणे वि अत्थसंपत्ती। विसदिद्धभोयणं पिव तहा वि सा मरणहेउ त्ति ॥ ४ ॥

कषायाणां विपाकः

१ °याणि अम्हाणि वि तुह सं० प्र० ॥ २ °याणि भु° प्र० ॥

जइ कह वि बिले हत्थप्पवेसणे रयणमालियालाभो । तह वि हु तक्करखेवे कयाइ भुयगातो मरियव्वं ॥ ५ ॥
एवं च ते वरागा कोहाइसु गाढबद्धपडिबंधा । रिद्धिं पत्ता कम्माणुभावओ कइयवि दिणाणि ॥ ६ ॥
पच्छा मुणियसरूवा पुरमंयहर-तलवराइलोगेण । निल्लुणियकन्न-नासा-कर-चरणा भूरिदुक्खत्ता ॥ ७ ॥
अइकलुण-दीणवयणा बहुसो धिक्कार-तज्जणाभिहया । सयणकयनिंदणा अह कहं पि मरणं समणुपत्ता ॥ ८ ॥
तम्मरणदुक्खअइतिक्खभल्लिभिज्जंतहिययसव्वस्सो । भो थेर ! तुमं पि मतो निंदिज्जंतो पुरजणेणं ॥ ९ ॥
निंदियनर-निरय-तिरिक्खदुक्खलक्खाइं अणुभविय बहुसो । भो थेर ! एत्थ जम्मे एस तुमं इह पुरे जातो ॥ १० ॥
ते वि य चत्तारि वि तुज्झगरुयपडिबंधरज्जुबद्ध व्व । उप्पन्ना एवंविहअवच्चभावेण भीमेण ॥ ११ ॥
पडिजम्मऽब्भत्थकसायओ य इण्हिं पि तह पयट्टंति । पाविंति जह विडंवणमणुचियदुकम्मनिम्मायं ॥ १२ ॥
एत्तो च्चिय पढमसुतो कूरो आयंविरच्छिविच्छोहो । विघिणो चंचलचित्तो पाणिवहम्मि पवत्तो य ॥ १३ ॥
बीतो वि सेलथंभो व्व नम्मयावज्जिओ परुसभासी । परविक्खेवासत्तो अप्पपसंसी विणयहीणो ॥ १४ ॥
तइया वि हु मायाजणियदोसओ इत्थिभावमणुपत्ता । देहेण सहावेण य कुडिला दिट्ठा य भुयगि व्व ॥ १५ ॥
एस चउत्थो वि सुओ संतोसविवज्जितो किससरीरो । न कहं पि हु लद्धरई इतो ततो भमणसीलो य ॥ १६ ॥

१ °मइह° प्र० ॥ २ तन्मरणदुःखातितीक्ष्णभल्लिभिद्यमानहृदयसर्वस्वः ॥ ३ °ज्जुबंध व्व सं० प्र० ॥ ४ प्रतिजन्माभ्यस्तकषायतः ॥ ५ आताम्राक्षिविक्षेपः ॥ ६ 'विघृणः' दयावर्जितः ॥ ७ द्वितीयोऽपि ॥ ८ नम्रतावर्जितः ॥ ९ विक्षेपः—निन्दा ॥

इय कोह-माण-माया-लोभा सक्खं व पयडियसरूवा । ते तुज्झमप्पणो वि य दुहावहा सेसगाणं पि ॥ १७ ॥
संसग्गिसंभवे वि हु एएसिं ज्झत्ति विमलसीलो वि । उज्झियनिययववत्थो किं तमकिचं न जं कुणइ ? ॥ १८ ॥
ता थेरपुरिस ! तप्पचयं इमं अणुमईभवं तह य । दुक्कम्मविलसियं सहसु कीस संतप्पसे बाढं ? ॥ १९ ॥

एवं तिहुयणदिवायरेण भगवया जिणेण भणिए सो थेरो जाईसरणपचक्खीभूयपुव्वाणुभूयभावो भाविऊण भवविरूवयं वयपडिवत्तिकाउमसमत्थो सम्मदंसणपडिवत्तिसारमगारधम्मं पडिवन्नो । तप्पुत्ता पुण अईतोदिन्नकसायकालुस्सपणट्ठविवेया पुव्वमग्गमेव ओइन्न त्ति ॥ छ ॥

एत्थंतरे निसामियथेरकुडुंबवित्तंताणुसारविमरिसियमित्तमाणुसदोसविसेसेण जंपियं सुदत्तेण—भो मित्त ! परिभावियं तुमए एत्थ किं पि ? । खेमेण भणियं—सामन्नेण किं पि परिभावियं, न विसेसओ । ततो सुदत्तेण सिट्ठो भावत्थो, जहा—भद्द ! तुमए थेरेण व कसायाणुमइभावेण एवंविहकम्ममज्जियं संभाविज्जइ । खेमेण भणियं—एवमेयं, परं 'कह-मियाणिं इमातो घोरघरजणजणियदोसपासाओ मोक्खो होहि ?' त्ति एसे तेलोक्कचक्खू सक्खा आपुच्छिउं जुत्तो, जेण तदाइट्ठाणुट्ठाणनिट्ठा पवट्टामो त्ति । 'एवं होउ' त्ति दोहिं वि पणमिऊण सामी भणिओ—भयवं ! कहमियाणिं एवंविह-पावकसायदुव्विलसियातो मोक्खो ? त्ति । भगवया जंपियं—तव्विरुद्धाणुट्ठाणाओ, नऽन्नहा, तं च एवं—

१ उज्झितनिजकव्यवस्थः ॥ २ अतीवोदीर्णकषायकालुष्यप्रणष्टविवेकाः ॥ ३ अवतीर्णाः ॥ ४ निशमितस्थविरकुटुम्बवृत्तान्तानुसारविमृष्टमित्रमानुषदोषविशेषेण ॥ ५ °स तिलो° प्र० ॥ ६ तदादिष्टानुष्ठाननिष्ठाः ॥

कोहे पाउब्भूए चिंतेज्ञा ही ! इमो महापावो । सव्वंगजणियदाहो वइरपबंधाण बंधू य ॥ १ ॥
सं-पराणुद्देगकरो सुगइपुरीगोउरग्गलादंडो । ते धन्ना कयपुन्ना जेहिं इमो वज्जिओ दूरं ॥ २ ॥
माणे वि इमं भावेज्ञ पेच्छ एयस्स दारुणं रूवं । जं एतेणोवहया नमंति पूइंति न गुरुं पि ॥ ३ ॥
सुय-सीलविलयहेऊ तिवग्गसंपत्तिनिम्महणकेऊ । दुम्मइ-कलहालाणो ही ही ! माणो दुहामाणो ॥ ४ ॥
उदयगयाए मायाए भावियव्वं इमं हि ही ! पावा । विस्सासविणासयरी लोयम्मि लहुत्तजणणी य ॥ ५ ॥
विबुहजणनिंदणिज्ञा अणुसरणिज्ञा य नीयलोयाणं । ते धन्ना जेहिं इमा समुज्झिया सुगइनिम्महणी ॥ ६ ॥
लोहे वि विभावेज्ञा तव्वसगाणं पए पएऽणत्थं । लाभे वि असंतोसं चोरिक्काईपसंगं च ॥ ७ ॥
दविणज्जण-रक्खण-वड्ढणाहिं बाढं सरीरसंतावं । परिभोगे वि य दुक्खं तव्विरयाणं च परमसुहं ॥ ८ ॥
एवं कसायपडिवक्खभावणाभावणे[ण] पडिसमयं । तह किंचं जह तेसिं न कयाइ वि होज्ञ अवगासो ॥ ९ ॥
एवं निसामिऊणं खेमो खेमं परं समीहंतो । दिक्खं जिणपामूले पडिवन्नो तिव्वसद्धाए ॥ १० ॥

सुदत्तो वि पडिवज्जिऊण जिणधम्मं कसायपडिवक्खभावणं च गतो नियघरं, पयट्टिउमारद्धो य समुचियकरणेसु । अन्नया य पिउणा तज्जितो एसो—अरे सुदत्त ! साहु व्व अदंसियकोववियारो कम्मयराणं पि हीलापयं भविस्ससि, घरजणेण वि अवगणिज्जिहसि, किं वा न सुयं तुमए ?—

१ स्वपरयोरुद्वेगकरः सुगतिपुरीगोपुरार्गलादण्डः ॥ २ जिनपादमूले ॥

जे भद्दजाइणो हुंति हत्थिणो सुप्पसंतवावारा । ते[1] अविणयाणेहिं फुडं वाहिज्जंतीह जयसाई ॥ १ ॥
जे पुण दुट्ठा करिणो हणंति भंजंति जंति य जहिच्छं । ते गिज्झंति पहाणा कीरइ पूया य तेसिं च ॥ २ ॥
ता वच्छ ! एस कालो न पसंताणं न साहुचेट्ठाणं । जलनिहिणो वि हु उवरिं ठंति तरंगा तले मणिणो ॥ ३ ॥
सुदत्तेण जंपियं—ताय ! होउ किं पि, कडुयविवागो खु कसायपरिणामो, कहं मुणियतव्विवागो असमंजसायरणेण तुच्छजीवियकए पउरपारभवियकिलेसायामभायणमप्पाणं करेमि ? त्ति । पिउणा भणियं—जं रोयइ तं कुणसु त्ति ।

एगया य जायं अवरिसणं, पीडिओ लोगो, दुत्थावत्थमणुपत्ता पागयनरा पयट्टा चोरकिच्चेसु, सचमक्कारो अप्परक्खणत्थं सावहाणत्तं पवन्नो इड्ढिपत्तो लोगो । एवं च कत्थइ ओगासमलभमाणा जहिच्छासोविरजामरक्खगं[2], इतो ततो विप्पइन्नगिहवक्खरं, असंघडियनिबिडकवाडसंपुडं पविट्ठा तक्करा सुदत्तमंदिरं । लूडियं सव्वस्सं, सिरोवरिट्ठवियपोट्टला य निग्गया घराओ. कम्मजोगेण नीहरंता पत्ता आरक्खिगेहिं, ससंरंभं संभासिया—अरे ! के तुब्भे ? किं वा पोट्टलएसु ? । इमं सोच्चा संखुद्धा तक्करा, पमुक्कपोट्टलया य पलाइउमारद्धा । उच्छलिओ तो कोलाहलो, उट्ठिओ सुदत्तो । पच्चभिजाणियं च तेण तं सव्वं नीयं नियघरे । चोरा वि के वि तव्वेलमेव विणासिया, के वि बंधिऊण खेत्ता तलवरेहिं गोत्तीए[4] । 'न धणहाणी जाय' त्ति सैलहितो[5] सुदत्तो लोगेणं । 'अहो ! खंतिमूलस्स जिणधम्मस्स माहप्पं' त्ति सविसेसं उज्जुत्तो जातो धम्मकिच्चेसु ।

१ तेऽवि° सं० । ते उ वि° प्र० । ते अविशायकैः ॥ २ यथेच्छास्वपनशीलयामरक्षकम् इतस्ततो विप्रकीर्णगृहोपस्करम् ॥ ३ प्रत्यभिज्ञाय ॥ ४ कारागारे इत्यर्थः ॥ ५ श्लाघितः ॥

अन्नया य कुडुंबकिच्चेसु ठविऊण कणिट्ठभायरं पव्वइतो एसो। अहिगयसुत्तत्थो य विहरंतो गामाणुगामं गओ कलंबुयाभिहाणं सन्निवेसं। तहिं च गामबहिया काउस्सग्गट्ठिओ दिट्ठो य तेहिं पुंव्वुत्ततक्करमयसेसेहिं, पच्चभिजाणितो य। तओ 'एयकओ पुव्वकालिओऽणत्थो' त्ति संकंतेहिं अणेगप्पयारं पारद्धो सो उवसग्गिउं। सम्ममहियासमाणो य चिंतिउं पवत्तो—

जिणवयणरहस्सं पसमसारमुवलक्खिऊण मा जीव!। काहिसि पओसमेएसु बालिसेसुं हणंतेसु ॥ १ ॥
केत्तियमेत्तं एयं अज्ज वि? सिरिअज्जखंदगमुणीहिं। जंततणुपीलणं पि हु दुविसहं सम्ममहिसहियं ॥ २ ॥
सव्वाणुभूइपमुहेहिं समणसीहेहिं जियकसाएहिं। गोसालगऽग्गिजंलिएहिं तिक्खियं तिक्खदुक्खं पि ॥ ३ ॥
जइ पुव्वभवज्जियदुक्कडाण सोढुं विवागमरिहंति। अरहंता वि हु विहुरत्तणं तुमं भयसि ता कीस? ॥ ४ ॥
इय निम्मललेसाजलपक्खालियसयलकलिलकालुस्सो। मरिऊण सो महप्पा सव्वट्ठे सुरवरो जाओ ॥ ५ ॥
इय उवसंताण सुहं इह-परभवसंभवं पि भाविंतो। को निक्कसाययाए सम्मं न ठवेज्ज अप्पाणं? ॥ ६ ॥
ताव गुणा ताव मई ताव जए भमइ निम्मला कित्ती। ताव य गुरु व्व देवो व्व नूण पूइज्जइ जणेण ॥ ७ ॥
जाव न कसायकालुस्सदूसणं कह वि पाउणइ पाणी। अह तं पि कह वि पत्तो होइ लहू ता तणातो वि ॥ ८ ॥
किं बहुणा भणिएणं? उवसमविहलाण निप्फलो धम्मो। ता सव्वपयारेणं कसायविजयाय जइयव्वं॥ ९ ॥ अपि च—

१ पूर्वोक्ततस्करमृतशेषैः ॥ २ गोशालकाग्निज्वलितैः ॥ ३ °जणिए° खं० प्र० ॥ ४ अरिहं° प्र० ॥

उपशान्तानुपशान्तयोः फलम्

यद्वच्छमीदलपुटे रसकूपिकायाः, कोटीप्रवेधकरसं कणशो विगृह्य ।
निर्व्यग्रधीः प्रचुरकालमखिन्नकायः, पात्रं सुदुर्भरमपि प्रपिपर्ति कश्चित् ॥ १ ॥
पश्चात् कथञ्चन भवत्कुविकल्पयोगात्, तं स्वर्गपत्रपुटकैर्झटिति प्रजह्यात् ।
वर्षायुतार्जितमपि क्षणमात्रकेण, तद्वत् कषायकलुषः सुकृतं विहन्ति ॥ २ ॥
यद्वत् कषाययति वाससि रङ्गयोगः, तैलोपलेपिनि वपुष्यपि पांशुपूरः ।
नैर्मल्यभाजि मुकुरे प्रतिबिम्बभावस्तद्वत् कषायिणि शरीरिणि पापलेपः ॥ ३ ॥
सर्वङ्कषोल्वणकषायकृशानुतीव्रसन्तापसम्पदुपशान्तिसुनिर्वृतात्मा ।
संसारवेश्मनि वसन्नपि मुक्तिसौख्यसख्यश्रियं समधिगच्छति नात्र चित्रम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे उपशान्तप्रक्रमे सुदत्तकथानकं समाप्तम् ॥ २५ ॥

दक्षत्वस्य स्वरूपम्

सिक्खाण गुणाण य हुंति भायणं पाउणंति मोक्खं पि । दक्ख च्चिय पुरिसा तो भणामि दक्खस्सरूवमहं ॥ १ ॥
जो कम्म-सिप्प-वणियाइएसु समतोच्चियप्पवित्तिसु य । अक्खेवेण पयट्टइ साहइ किच्चं च सो दक्खो ॥ २ ॥
कयकरणो वा दक्खो आगारिंगियपमुक्खहेऊहिं । जो वा परचित्तविऊ तं पि हु अक्खंति दक्खमिह ॥ ३ ॥

---

१ यः कर्मशिल्पवाणिज्यादिकेषु समयोचितप्रवृत्तिषु च ॥ २ °प्पवित्तिणया° सं० प्र० ॥ ३ परचित्त° सं० प्र० । परचित्तवित् ॥

बहुसत्थपाढगा वि हु नीसेसकलाकलावनिउणा वि । दक्खा न हुंति जइ ता हीलापयविं पवज्जंति ॥ ४ ॥
संतत्थअपरिहत्थो वि तुच्छजाणो वि हीणपयई वि । दक्खत्तगुणग्घविओ पूइज्जइ निवसभासुं पि ॥ ५ ॥
एत्तो च्चिय जाइ-कुलाइगुणजुयाणं पि वारियं समए । पव्वज्जाए दाणं अच्चंतं करणजड्डाणं ॥ ६ ॥
पडिलेहणाइकिच्चं मुणमाणा वि हु ण जेण ते काउं । सम्मं तरंति धम्मत्थिणो वि थूरयरकिरियत्ता ॥ ७ ॥
इय सक्खं चिय दक्खा पुरिसा परमं सिरिं पवज्जंति । इह लोए च्चिय सुरसेहरो व्व परदेसवत्ती वि ॥ ८ ॥

तहाहि—अत्थि एत्थेव भारहे वासे कुसट्टाविसए निच्चपयट्टनट्टविहिविहियपहियपरितोसं[2] असेसदेससविसेससमिद्धि-समुदयपत्तपवित्तपुरिसप्पवरविराइयं[3] रायपुरं नाम नयरं । तं च पुन्न-पयावाइगुणेहिं पालेइ पणमंतसीमालभूवालमउलि-मणिकिरणालीजलपडलपक्खालियपायवीढो असमसाहसावज्जियवज्जहरो[4] हरिसेणो नाम राया । असेसंतेउरीतिलयभूया विजयवई नाम महादेवी । उत्तरोत्तरकलाकोसल्लसमलंकिया य जयदेव-देवधर[5]-धरणिंधर-सुरसेहराइणो पुत्ता । मंतिणो य सुमइ-वामदेवप्पमुहा । तेसु य निहित्तरज्जकज्जचिंताभरो सो राया तिवग्गसंपाडणपरमं सुहमुव्वभुंजइ ।

[अन्नया] जाया य पच्छिमरयणीए सुहपसुत्तस्स तस्स राइणो चिंता—एच्चिरं हि कालमविकलं लीलाए च्चिय करकिसलय-ट्ठियं वलयं व धरियं धरणिवलयं, पइट्ठियं चउद्दिसिनिउंजेसु नीहार-हारधवलं जसपडलं, कुसुममालिय व्व नरवइसिरेसु संकामिया

१ शास्त्रार्थनिपुणोऽपि तुच्छज्ञानोऽपि हीनप्रकृतिरपि । दक्षत्वगुणपूर्णः पूज्यते नृपसभास्वपि ॥ २ नित्यप्रवृत्तनाट्यविधिविहितपथिकपरितोषम् अशेष-देशसविशेषसमृद्धिसमुदयप्राप्तपवित्रपुरुषप्रवरविरागराजितम् ॥ ३ °वरविरायराइयं राय° खं० ॥ ४ वज्रधरः—इन्द्रः ॥ ५ °वजयधरणिं° खं० ॥

निव्विसंकं आणा, पणामियं च नियविभवाणुरूवमणिवारियप्पसरं [सरं]तदीणाईणं धणं, रेहामित्तं पि नाइकंता चिरपुरिसमज्जाया, नेय समइरेगदंड-करभराइणा थेवं पि उवद्दवितो जणो। एत्तो उत्तरं च जराजज्जरिए मह सरीरे मंदीभूए य आणा-इस्सरिया-इसारे रज्जवावारे किमिमे करिस्संति कुमारा? कहं वा पुव्वपुरिसट्ठिईमणुयत्तिस्संति? को वा एएहिंतो परमपयरिसपत्तकलाकोसल्लाइभावो? त्ति। जइ सम्मं मूले चिय सुविवेचियं इमं होइ ता सविसेसोवलद्धपुरिसारोवियरज्जभरस्स मह उभयलोगसफलजीवियसंपाडणेण समीहियं किं न सिज्झइ? त्ति। ता पच्चूसे मंतिजणेण सह विमरिसिऊण, सयलकुमारपरिक्खं च काऊण तदुचियमायरामि–त्ति विभाविरस्स ताडियं पडुपडह-ज्झल्लरीज्झंकारुम्मिस्सपउरभेरीभंकारभासुरं पाभाइयं मंगलतूरं।

कमेण य पभाया रयणी, समुग्गतो दिवायरो। कयपाभाइयकिच्चो य निसन्नो अत्थाणमंडवे मेइणीवई। निविट्ठं समुचियट्ठाणे मंति-सामंतमंडलं। खणमेक्कं चिंतियरज्जकज्जो य विसज्जियसेवगवग्गो कइवयपहाणमंतिपरिवुडो एगंते रयणिपरिभावियं निययाभिप्पायं मंतीण कहिउं पवत्तो। तेहिं वि विमलमइकोसल्लावगयकायव्वविभागेहिं समुल्लवियं—देव! जुत्तमेयं, एवं कीरउ त्ति। ततो वाहराविया कुमारा, वागरिया य—अरे वच्छा! दंसेह एचिरकालपरिकलियकलापरिहत्थयं ति। 'जं ताओ आणवेइ' त्ति भणिऊण जयदेवपमोक्खकुमारेहिं पारद्धा दंसिउं चित्त-पत्तच्छेय-निजुद्धाइणो कलाविसेसा।

समकालं पढियाण वि एगज्झावगविइन्नविज्जाण। जाणियसत्थत्थाण वि पुणरुत्तकयस्समाणं पि ॥ १ ॥

-१ अनिरं वारितप्रसरं तदीनादीनाम् ॥ २ पूर्वपुरुषस्थितिं अनुवर्त्तयिष्यन्ति? को वा 'एतेभ्यः' एतेषु परमप्रकर्षप्राप्तकलाकौशलादिभावः ॥ ३ परिहस्तयं—निपुणताम् ॥ ४ एकाध्यापकवितीर्णविद्यानाम्। ज्ञातशास्त्रार्थानामपि (ज्ञातशस्त्रास्त्राणामपि) पुनरुक्तकृतश्रमाणामपि ॥

रायसुयाण ससत्तीए दंसिराणं पि पत्तछेज्जाइं । सुरसेहरस्स दक्खत्तपयरिसो असरिसो कोइ ॥ २ ॥
जेत्तियमेत्तं सव्वे चित्तालिहणाइयं किर कुमारा । कुव्वंति तेत्तियं एक्कगो वि सुरसेहरो कुणइ ॥ ३ ॥

अह उवलक्खियदक्खत्तणऽक्खित्तसविसेससिणिद्धचक्खुणा पलोइतो मंतीहिं सुरसेहरो । राइणा वि चित्तब्भंतरुच्छलियपरमपमोएण वि कयागारसंवरेण ईसि अन्नववएसेण एसो । सव्वायरं पसंसिया य जयदेवाइणो कुमारा, न किंचि संलत्तो सुरसेहरो । [ततो] विलक्खीहूओ सो मणम्मि, मणागममरिसितो य । दावियतंबोला य कुमारा गया जहागयं । मंतीहिं भणियं—देव ! अति हि नाम दक्खत्तणगुणेण सेसकुमारेहिंतो अइसइज्जइ[2] सुरसेहरो । राइणा जंपियं—एवमेयं, केवलं अज्ज वि धणुवेयविसए परिक्खियव्वो एसो । पडिस्सुयमिमं मंतीहिं । अवरवासरे य पुणो वाहराविया सव्वे कुमारा भणिया—अरे ! पयडेह नियनियकोदंडदंडवेयवियड्ढिमं ति । 'तह' त्ति पडिवन्ननरिंदाएसा रायसुया पयट्टा धणुदंडारोवणाईसु । नवरं—

तडडंतअडणिकोडिं निबिडकरुकरिसितो गुणो चडइ । सैज्जियसरासणाणं[3] जा नऽज्ज वि सेसकुमराण ॥ १ ॥
ता वलइय-संधिय-कड्ढिउग्गकोदंडजंतनिप्फिडितो । लक्खं पडुच्च पत्तो कुमारसुरसेहरस्स सरो ॥ २ ॥
एक्केक्कं जाव सरं खिवंति कुमरा सरासणेहिंतो । ताव सुरसेहरो हरिसितो व सरधोरणिं मुयइ ॥ ३ ॥
एक्केक्कं सरलक्खं जा न वि विंधंति सेसरायसुया । ता सुरसेहरकुमरो विंधइ सत्तऽट्ठ लक्खाइं ॥ ४ ॥
दक्खत्तणं धणुम्मि व सेसेसु वि पहरणेसु पेच्छंतो । सुरसेहरस्स राया परं मणे वहइ परितोसं ॥ ५ ॥

१ उपलक्षितदक्षत्वाक्षिप्तसविशेषस्निग्धचक्षुषा ॥ २ अतिशीयते ॥ ३ सज्झिय° सं० ॥

तह वि हु अवायभीतो ताण पुरो नेव तं पसंसेइ । हरिसेणमहीनाहो अहो ! अलक्खा महापुरिसा ॥ ६ ॥

हरिसट्ठाणे रुट्ठा कोवट्ठाणे य दरिसियप्पणया । नज्जंति कहं गरुया रुट्ठा तुट्ठा व इयरेहिं ? ॥ ७ ॥

अह अदिन्नसाहुक्कारो सुरसेहरो सेसरायसुया य कयसक्कारा गया जहागयं। पत्थावे य दिन्ना नरिंदेण पत्तेयं कुमाराणुभुत्ती। सुरसेहरो वि अणुवलद्धतहाविहगामाइपसायत्तणेण अप्पाणं परिभूयं मन्नंतो रयणीए नीहरिओ नयराओ भीमाभिहाणेण एगेण सहाइणा समं । कमेण य वच्चंतो संपत्तो लच्छीविलासविच्छड्डरिल्ले कमलसंडे व कमलसंडपुरे नयरम्मि पविट्ठो नयरमज्झम्मि । एत्थंतरम्मि तन्नयरसामिणो कत्तविरियराइणो गंधहत्थी करप्पहारजज्जरियालाणखंभो जहिच्छाविहारसुसुमूरियपेक्खगजणो अकालकुवियकयंतविब्भमो निरंकुसं सव्वत्थ वियरिउं पवत्तो । 'तं च जो किर अंकुसपहारसकुणंतो आलाणथंभदेसमाऽऽणेही तस्स राया दुहियरं दाहि' त्ति पणविसेसनिसामणुप्पन्नामरिसा बहवो खत्तियकुमारा गंधवाइकलाविसेसविन्नाणगव्वुद्धुरा करिवरखलणत्थमुवट्ठिया । अह तं रायधूयापयाणपणपहाणं तहाविहवुत्तंतं जणमुहाओ सुरसेहररायसुओ निसामिऊण गओ कुंजराभिमुहं। दिट्ठा य पुरतो पिट्ठतो पासओ य रविं व तिमिरुक्केरा, केसरिं व कुरंगवग्गा, दूरगया गयवरमुवसप्पमाणा णेगरायसुया । ततो ईसिपहसिरेण भणिया ते सुरसेहरकुमारेण—

किं दूरगया अच्छह ? आरुहह न जं गयस्स खंधम्मि । जीवियनिरविक्खाणं कज्जाणं होइ निप्फत्ती ॥ १ ॥

१ अलक्ष्याः ॥ २ ज्ञायन्ते ॥ ३ कमलषण्डपक्षे लक्ष्मीदेव्या विलासैर्व्याप्ते, नगरपक्षे पुनः ऋद्धिजनितैर्विलासैरित्यर्थः ॥ ४ करः-शुण्डादण्डः ॥ ५ मुसुमूरिय-भञ्जित ॥ ६ प्रतिज्ञाविशेषश्रवणजाताभिलाषा इत्यर्थः ॥ ७ 'तिमिरोत्करा.'-अन्धकारसमूहाः ॥ ८ ईषत्प्रहसनशीलेन ॥

संसयतुलाए नियजीवियव्व[1]मारोविंयं पयट्टंता । हच्छं लच्छि करकमलकोडरं निंति सप्पुरिसा ॥ २ ॥
करिणो केसरिणो वि य भयावहा ताव नूण भासंति । जाव न विफुरइ [2]अन्नन्नविक्किमं वीरियं हियए ॥ ३ ॥
इय गुरुहिययावट्टंभनिब्भरं तं [3]पयंपिरं दट्ठुं । लज्जामिलंतनयणा झमकिया ज्झत्ति रायसुया ॥ ४ ॥

'किं वा [4]निबिडवीडाविच्छायत्तणमुवणीएहिं इमेहिं वरागेहिं ?' ति विभाविय गाढनिबद्ध[4]कडिछदुकूलंचलो, सुसंजमियकेसपासो, [5]कुंडलीकयावरिल्लं करपल्लवेण धरिंतो सुरसेहरो पधावितो करिं पडुच्च वेगेणं । दिट्ठो य सो कयहक्कापोकारो सरोस[6]उच्छिविच्छोहेण ताविच्छपुप्फगुच्छाणुरूवमयगंधिणा हत्थिणा । ततो [7]उल्लालियपयंड-चडुलसुंडादंडो सो वेगेण जमो व धावितो कुमराभिमुहं । अवि य—

कालोयहिणा खरपलयपवणउच्छालि[8]उ व कल्लोलो । [9]उब्भवियअग्गहत्थो तमोत्थरंतो सहइ हत्थी ॥ १ ॥
अइगरुयकोवसंरंभनिब्भरं धाविरो वि मत्तकरी । अमुणियकमसंचारो वियरइ दुक्कम्मनिचउ व्व ॥ २ ॥
[10]बहुवेगभमणसंते य तम्मि कुमरेण अप्पणो वत्थं । [11]कुंडलियं तयभिमुहं पक्खित्तमखुद्दचित्तेण ॥ ३ ॥
हत्थी वि य तक्कोवं निज्जविउं जाव तत्थ वत्थम्मि । [12]उन्नामियग्गकातो बाढं परिणमिउमारद्धो ॥ ४ ॥

१ आरोप्य प्रवर्त्तमानाः शीघ्रं लक्ष्मीम् ॥ २ अन्यान्यविक्रमम् ॥ ३ प्रजल्पनशीलम् ॥ ४–कटिबद्धदुकूलाञ्चलः ॥ ५ कुण्डलीकृतोपरितनवस्त्रम् ॥ ६ °सच्छवि° खं० । सरोषाक्षिविक्षेपेण तापिच्छपुष्पगुच्छानुरूपमदगन्धिना । तापिच्छः–तमालवृक्षः ॥ ७ उल्लुलि° खं० प्र० ॥ ८ °लिय व क° प्र० ॥ ९ ऊर्ध्वीकृताग्रहस्तः तम् आक्रममाणो राजते हस्ती ॥ १० बहुवेगभ्रमणश्रान्ते ॥ ११ कुण्डलयित्वा ॥ १२ उन्नामिताग्रकायः ॥

ताव अइदक्खयाए कुमरो खंधम्मि से समारूढो । गाइउमारद्धो वेणुविजइणा सुंदरसरेण ॥ ५ ॥
गारुडमंतुच्चारो व्व कन्नविवरं अहिस्स व गयस्स । गेयसरो पविसंतो दप्पविसं से पणासेइ ॥ ६ ॥

अह समुवलद्धसामावियसरूवे सयमेवाऽऽलाणसालासमीवमणुपत्ते जयकरिम्मि निविडखंघनिबद्धासणं रायसुयमवलोइऊण पुच्छियं राइणा—को एस कुमारो ? त्ति । सेवगजणेण भणियं—देव ! तुम्हपायपउमोवजीवीण चीण-हूण-कलिंग-वंगराय-सुयाईण मज्झातो न ताव एसो, अतो देसंतरिओ व्व संभाविज्जइ, दक्खत्तणाइगुणेण य विसिट्ठकुलुब्भवो व्व लक्खिज्जइ त्ति । तओ वाहराविओ सुरसेहरो राइणा, दवावियं किं पि आसणं । 'गउरवविरहियं' ति न उवविट्ठो रायसुतो । 'गरुयरायकुल-संभवो' त्ति निच्छिऊण य रन्ना सायरं उववेसितो समीवसिंहासणे, आपुच्छिओ य—वच्छ ! कत्तो आगओ सि ? के वा अम्मा-पियरो ? किं वा कुलं ? कत्तो वा कलासु दक्खत्तणं ? ति । सुरसेहरेण जंपियं—महाराय ! वइदेसियसरूवे पच्च-क्खमुवलक्खिज्जमाणे सेसससविकत्थणावित्थरो विडंबणामित्तो चेव पडिहाइ । राइणा जंपियं—वच्छ ! मा एवं उल्लवसु, दिस्समाणमणहरमाहप्पेसु वि रयणाइसु आगराइपुच्छा छेयजणस्स वि सुप्पसिद्धा चेव, ता किं तुममित्थमत्थाणे च्चिय किलिस्ससि ? । सुरसेहरेण जंपियं—

सुयस्स सीलस्स कुलस्स अप्पणो, सयं सरूवं पकहेइ जो नरो ।
न सोहए तस्स तमिंदुसुंदरं, सचामरं छत्तमिवऽप्पणो द्धियं (?) ॥ १ ॥

१ शेपस्वविकत्थनविस्तरः ॥ २ द्दिप्पमा° सं॰ ॥

वरं हि मूयत्तणमेव सव्वहा, अमाणुसाए अडवीए वा ठिई ।
न जत्थ थेवं पि हु अप्पणो कहापवंचचिंताए मणो पयट्टदि ॥ २ ॥

अह निच्छियतयभिप्पाएण पुहईवइणा भणिया नियसेवगा—अरे! सम्मं पेहेह, इमिणा सह कोइ सहाई आगंतो न व ? त्ति। समीवोवगएण जंपियं भीमेण—देव ! एसो हं एयस्स रायसुयस्स नाममित्तेण सहाई, परमत्थतो पुण पुव्वजम्मसमुवज्जियसुकयसंभारो चेव एयस्स महाणुभावस्स सहाइ त्ति । राइणा भणियं—एवमेयं, तहावि ममोवरोहेण कहेसु—अलंकियकयरगोत्तो किमभिहाणभूवइसुओ एसो ? त्ति। ततो भीमेण सिट्ठो सव्वो से वुत्तंतो। परितुट्ठो राया। सव्वायरमालिंगिऊण सुरसेहरो आरोविओ उच्छंगे, भणितो य—वच्छ ! किमेवं सरूवमेत्तकहणे वि अप्पपसंसादोसमुप्पाएसि ? त्ति। परोप्परपणयप्पहाणुल्लावेण खणमेकं विगमिऊण उट्ठिया भोयणकरणत्थं। भोयणावसाणे य वाहराविऊण संवच्छरियं कतो पाणिग्गहणलग्गविणिच्छओ। पउणीकयं विवाहोवगरणं राइणा, समुचियसमए य सप्पणयं अमच्चमुहेण भणाविओ सुरसेहरो, जहा—ललियसुंदरी नाम रन्नो धूया नेमित्तिएण आइट्ठा—'जो पट्टहत्थिं अवहत्थियालाणखंभं अवगन्नियारोहगवग्गं निरग्गलं वियरंतं दक्खत्तणेण आरुहिऊण आलाणट्ठाणे आणेही सो इमीए पाणिग्गाहो भविस्सइ' त्ति, एयप्पओयणप्पसाहणत्थं च पढमयरमेवाणेगे उवाहरिया रायसुया, न य तेहिंतो केणइ किं पि पत्थुयत्थे सिद्धं, तुमए य भो रायसुय ! करिवरं विणयंतेण सयमेव उवज्जिया एसा रायसुया, ता संपयं पउमे पउम व्व तुमम्मि निसीयउ, अणुरूवपइसंपत्तीए सहलीकरेउ य नियं-[3]

१ °तो निव खं० ॥ २ °उमो व्व खं० प्र० । पद्मे 'पद्मा इव' लक्ष्मीरिव ॥ ३ निजनिर्माणम् इयमिति ॥

निम्माणमिम त्ति। सुरसेहरेण जंपियं—किमिह अम्हारिसा [जाणंति ?] गुरवो चिय उचिया-ऽणुचियं मुणंति त्ति। अह जाणियतयभिप्पाएण पुहईवइणाऽणुकूलगहबलोवेए विवाहजोग्गे लग्गे सुरसेहरस्स सायरं दिन्ना ललियसुंदरी, कयं पाणिग्गहणं, वित्तो महया रिद्धिसमुदएण विवाहो। पिईभवणाओ वि सविसेसं रायसुओ सुहेण तत्थ दिणाइं गमेइ त्ति।

अन्नया य राया तेण समं कइवयपहाणपुरिसपरिवुडो पमयवणे वणलच्छि पेच्छिउं पविट्ठो, सुरसेहरसंधारोवियकरवलो य इओ तओ तरुवरमवलोइंतो विवित्तविभागावट्ठिए पविट्ठो कयलीहरे। एत्थंतरे 'हण हण' त्ति जंपंता दुवे भीसणायारा महामल्ला निक्किरक्किवाणीपाणिणो राइणो घायकरणत्थमुवट्ठिया वेगेणं। अह ज्झड त्ति दक्खयाए अखुद्धेणं सुरसेहरेणं खोणीवट्ठे पिट्ठओ पक्खिविय दोहिं वि हत्थेहिं गहाय सपहरणा चेव मल्ला निजुद्धकुसलयाए पण्हिपहारेहिं चूरिऊण निवाडिया धरणिवट्ठे। पत्ता य तक्खणं राइणो अंगरक्खा, पडिरुद्धा सव्वओ तेहिं, पुच्छिआ य—अरे! केण तुब्भे एवंविहकज्जकरणाय निउत्त ? त्ति। सव्वपयत्तसमुल्लाविया वि जाव न किं पि जंपंति ताव निवेइयं राइणो। ततो वाहराविऊण पुट्ठो उज्जाणपालगो—अरे! को इह पुव्वं पविट्ठो ? त्ति। तेण जंपियं—देव! तुम्हाण पुत्तो अपराजिओ विमोत्तूण न अन्नो को वि इहाऽऽगयपुव्वो। ततो राइणा कसप्पहारेहिं ते ताडाविया सुनिट्ठुरं। अह घोरघायवाउलीहूयजीवियव्वाणं पायडीहूओ सब्भावो, विस्सुमरिओ वयणबंधो। ततो भणियं तेहिं—देव! तुम्ह सुएण अवराजिएण रज्जाभिलासिणा दीणारलक्खप्पयाणेण उवलोभिऊण तुह वैवायणत्थमित्थं वावारिया अम्हे। इमं च सोच्चा गरुयकोवावेगरत्तनयणेण राइणा निव्विसओ

१ 'वयणा' सं॰ ॥ २ निष्कृपकृपाणीपाणी ॥ ३ व्यापादनार्थमित्थं व्यापारितौ आवाम् ॥

आणत्तो अवराजिओ, माराविया य घायगा, 'जीवियदायगो' त्ति सबायरं पूइतो सुरसेहरो, पणामियं च नियरज्जं।

तं च अणिच्छंतो पाएसु पडिऊण रायसुओ विन्नविउं पवत्तो—देव! ममोवरि पसायं कुणमाणा खमह अवराजियस्स अवराहमिममेक्कं, अजाणो क्खु एसो, कहमन्नहा देवाण वि दुल्लहाणं देवपायाणमणिट्ठं काउं ववसेज्जा? एयाणं पि घायगाणं देउ देवो अभयदाणं नियदुक्कयहयाण कीडप्पायाणं, किमिमिणा मयमारणेण?। 'तह' त्ति पडिवन्नं रन्ना, नियत्तिओ अवराइयरायपुत्तो। 'अहो! महापुरिसया, अहो! निरीहत्तणं, अहो! परोवयारि' त्ति वित्थरिओ सवत्थ सुरसेहरस्स साहुवाओ। अवरवासरे य राया वेरग्गोवगतो चिंतिउं पवत्तो—

हा धी! निरत्थयं मुद्धबुद्धिणो पुत्तसंतइनिमित्तं। सुहि-सयण-मेत्तहेउं च कह कयत्थियति अप्पाणं? ॥ १ ॥
न मुणंति सकज्जणुरागिणं इमं सबमेव थेवे वि। कज्जविसंवायम्मि विसंवयंतं सेपन्नं व ॥ २ ॥
एक्कपए च्चिय एत्थं पेल्हत्थियसवपुवउवयरियं। वट्टंते वि कुडुंबे डुंबि व विडंबणा मोहो ॥ ३ ॥
धण-सयण-जाय-जोवण-विसयबासंगदूसियमणस्स। हा हा! निरत्थओ कह मह कालो वोलिओ दूरं? ॥ ४ ॥
अज्ज वि एत्थेव चिरं अणुरज्जंतोऽहमुज्झियविवेगो। धम्मसहाई हुंतो जइ एस सुओ न एवं मे ॥ ५ ॥
ता दोसो वि गुणत्तेण परिणओ पुत्तसंतिओ इण्हिं। उज्झियरज्जो सेज्जो वणवासं चिय पवज्जामि ॥ ६ ॥

१ मृतमारणेन ॥ २ 'सपत्नमिव' शत्रुमिव ॥ ३ पर्यस्तितसर्वपूर्वोपकृतम् ॥ ४ °जीय° प्र० । धनस्वजनजायायौवनविषयव्यासङ्गदूषितमनसः ॥ ५ सद्यः ॥

एवं विभाविऊणं ठविउं सुरसेहरं अणिच्छंतं । कह कह वि नियपयम्मि पडिवन्नो तावमाण वयं ॥ ७ ॥

एवं च सुरसेहरो ससुरसमप्पियरज्जो रज्जुनद्धो व पुव्वपुरिसप्पवाहेण जाव वसुंधरं पालेइ ताव पिउणो पहाणपुरिसा समागया, पत्थावे सिट्ठं च तेहिं, जहा—देवस्स हरिसेणस्स वणवासोवगयकत्तविरियमहारायरिसिणो विचित्तं निसामिऊण तुट्टा भववासवासणा, वुच्छिन्ना विसयवंच्छा, विहडियं पेमनिगडं, उल्लसियं जीवविरियं; तुह समप्पियरज्जभरो य संपयमेव समीहइ सव्वविरई, ता कुणह संवाहं, दवावेह पत्थाणढक्कं, सज्जावेह वाहणगणं ति । ततो 'तह' त्ति पडिसुणिऊण तव्वयणं, नियरायपए पइट्ठिऊण अवराजियं अक्खंडियपयाणएहिं गतो नियनयरं, पवेसिओ महया विभूईए । कयपायपंचंगपणिवाओ य निवेसितो राइणा उच्छंगे, पुच्छिओ सव्वं पुव्ववुत्तंतं, सुमुहुत्ते निवेसिओ रायपए । सयं च राइणा गुणसेणसूरिणो समीवे पडिवन्ना सव्वविरई, विहरिओ अप्पडिबद्धविहारेण, आराहिऊण य संजमं पत्तो देवलोयसिरिं ति । सुरसेहरो वि राया नियदक्खत्तणेण सुचिरमाणासारं रायसिरिमुवभुंजिऊण एगया परिभाविउं पवत्तो—

भवणे भवणे बहुसुकयसालिणो संति नरवईण सुया । नीसेसकलाकुसला य सव्वसत्थत्थविउणो य ॥ १ ॥
तेसिं मज्झे य मए विजयपडाया अणेगहा पत्ता । दक्खत्तगुणेण परं उवज्जिया रायलच्छी वि ॥ २ ॥
केवलमेयं दक्खत्तणं परं कारणं भवदुहाणं । ता तं दक्खत्तं अणुसरामि न पडेमि जेण भवे ॥ ३ ॥
इय भाविउं स धीमं रज्जे आरोविउं नियगपुत्तं । पव्वज्जं पडिवन्नो दिव्वं पत्तो य देवसिरिं ॥ ४ ॥
एवं संसारियकज्जसाहगं जह वयंति दक्खत्तं । तह धम्मकज्जविसयं पि तं धुवं परमपयजणगं ॥ ५ ॥ अपि च—

दक्षत्वस्य फलम्

शस्त्रेऽपि शास्त्रेऽपि कृतश्रमोऽस्तु, भवत्वशेषासु कलासु विज्ञः ।
विज्ञानभेदांश्च विदाङ्करोतु, काव्यप्रबन्धं च परं तनोतु ॥ १ ॥
चेत् कार्यकाले समुपस्थितानां, प्रावादुकानां कृतमत्सराणाम् ।
गर्वं न खर्वं क्षमते विधातुं, तदा स विज्ञोऽपि जडत्वमेति ॥ २ ॥
स्वल्पेऽपि विज्ञानबले बलीयान्, दक्षः पुनर्न्यत्कृतदुष्टपक्षः ।
पूजाप्रकर्षं च परां च कीर्तिं, श्रियं च मोक्षं च लभेत सद्यः ॥ ३ ॥
इति निखिलगुणानां चण्डजाड्यान्धकारावरणपिहितभासां दीपवद् व्यञ्जकोऽयम् ।
कथमिव न विशिष्टो दक्षभावः ? कथं वा परमसुखसमृद्धेर्नैव हेतुर्भवेच्च ? ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीकथारत्नकोशे दक्षत्वगुणचिन्तायां सुरशेखरराजपुत्रकथानकं समाप्तम् ॥ २६ ॥

दक्खो वि नरो दक्खिन्नवज्जिओ भुवि लभेज्ज वयणिज्जं । ता दक्खिण्णसरूवं किं पि निरूविज्जए एत्तो ॥ १ ॥
जो हि सुहासयगब्भो जोगो मच्छरियदोसनिम्महणो । परकिच्चेसु पयट्टइ तं वन्नंतीह दक्खिन्नं ॥ २ ॥
तग्गुणपहाणयाए पुरिसो वि हु दक्खिणो त्ति निद्दिट्ठो । जह दंडजोगउ च्चिय नरो वि दंडो त्ति किंत्तिंति ॥ ३ ॥

१ डंड° प्र० ॥ २ डंडो प्र० ॥

गेण्हए त्ति हु दक्खिन्नं लिंगं पुणं गुणग्गमिद्धीए । पयविउत्तो लोए वि तूलल्हुयत्तणमुवेइ ॥ ४ ॥
दक्खिन्नगुणविहीणो पुणो त्ति हु वेरिउ व्व पडिहाइ । दक्खिन्नगुणओ पुण दीसइ बंधु व्व अवरो वि ॥ ५ ॥
दक्खिन्नचप्पलंकारो दक्खिन्नमेराम्म रायथणलाभो । दक्खिन्नमुनइपंपं दक्खिन्नं परमवसियरणं ॥ ६ ॥
दक्खिन्नगुणरोनरगुनपाणारोहणेक्कनिस्सेणी । दक्खिन्नममरिसा जे धरंति ते हुंति जयपुज्जा ॥ ७ ॥
दक्खिन्नभारउ त्रिय सुपुरिसमग्गम्मि जायपुमाणो । पत्तो परमपयं पि हु भवदेवो नाम वणियसुओ ॥ ८ ॥

तथाहि—अत्थि मुहडावलि व्व वेणलच्छिविराइया, पंडियमंडलि व्व मुहासियामयपसोहिया, वणिभूमि व्व गयमयराय-गारया पंगअणगयानयंगपडिपुण्णा विस्सपुरी नाम नयरी । जेहिं च विरोयणकुलकुवलयचंदो रायलच्छिनलिणीकंदो निजारिचेरिसायरपयावपसरो अणुनियसमपदिनमवायसरो गुणरयणसायरो दिवायरो नाम राया । जीए य खणभंगुरत्तणं

---

१ 'वगवेद्धरं' मिद्धमेहंडि ॥ २-दृयः ॥ ३ 'सक्खि' मां० प्र० । अगन्यवारधनलाभः ॥ ४ अगलूउमाः ॥ ५ सुभटावली पर्णलक्ष्म्या-अभितानदकृता विराजिता, नगरी पुनः धनलक्ष्म्या विराजिता ॥ ६ पण्डितमण्डली सुभाषितशतप्रशोभिता, नगरी पुनः सुधाशिखरशतप्रशोभिता ॥ ७ 'यणाय' मां० ॥ ८ वणिग्भूमिः गजपुरराजभवदा, नगरी पुनः गगनदन्तानाया ॥ ९ यस्यां च नगर्याम् ॥ १० यस्यां च नगर्याम् कोपीकारेण 'क्षणभंगुरत्वं' धुतकर्णिकासु, न धर्मान्तरकेषु । गजतसवर्णनप्रसङ्गे एव अस्तिशब्दोच्चारणम्, अस्तिशब्दस्य भाससमानार्थकत्वात्, न पुनः राजनीतिनिर्लोभप्रसङ्गे 'अतिक्रमणम्' श्रवणगतम् । 'शत्रुमर्दिमादः' मत्स्यविनाशनं 'पांवरेषु' मात्सिकेष्वेव, न पुनः अधिकारिमन्दिरेषु साधूनाम्-उत्तमांशानां शत्रुणां वा विनाशः ॥

कोवावियारेसु न धम्मववहारेसु, अलियजंपणं भालयलकित्तणेसु न नीइनिव्वत्तणेसु, सउलविणासो धीवरेसु नाहिगारिमंदिरेसु। तीए य पुरीए वत्थव्वो भूरिदव्वोवज्जणजाणावियववसायवित्थरो मंथरो नाम सेट्ठी, कमलदलविसालच्छी लच्छी नाम से भज्जा। सव्वगुणजुत्ता सावदेव-भवदेवनामाणो दुवे पुत्ता, अणुरूवकुलुब्भवबालियाकयपाणिग्गहणा य उचियठिईए कालं वोलेंति।

एगम्मि य अवसरे गेहपुरतो मंडवकरणत्थं वेलिं निहणंतस्स सेट्ठिणो जेट्ठसुयस्स सव्वदेवस्स[1] खडक्कितो निहाणकंठओ। 'किमेयं ?' ति सवित्थरं खणिंतस्स पयडीहूओ तंबकलसो। विहाडिऊण मुहमुद्दं तम्मज्झमवलोयंतस्स पुव्वभवनिहित्ताभरणदंसणे जायं जाईसरणं, मुच्छानिमीलियच्छो य पडिओ धरणिवट्ठे। 'हा हा ! किमेयं ?' ति वीजिओ सो वत्थंचलेण। खणंतरेण य उवलद्धचेयणो पुच्छिओ—वच्छ ! किमेयं ? ति। सावदेवेण भणियं—ताय ! पुव्वभवसंरणनिमित्तमेयं[2] ति। पिउणा भणियं—कहमेवं संभवइ ?। तेण वागरियं—सम्मं निसामेसु—

एत्तो पंचमे भवे अहं वसू नाम वणियसुओ उज्जेणीपुरीओ पहाणपणियनिवहमादाय एत्थ पुरीए आगतो। विणिवट्टियं भंडं, समासाइओ भूरिदव्वलाभो। जाया य पइदिणदंसणेण सपणयालावेण य एयभवणसामिणा संभुणा सद्धिं मेत्ती। एगम्मि य पत्थावे संवुत्तो[3] परचक्कसंखोभो। ततो मए एगंते सिट्ठं संभुणो, जहा—किमियाणिं कायव्वं ? एसो अत्था-ऽऽभरणसंभारो न तीरइ जह तह गोविउं। तेण जंपियं—वीसत्थो[4] होसु, एत्थ तंबमयकलसे खिविऊण सव्वसारं एत्थ भवणंगणे निहणसु त्ति। 'तह' त्ति जायपरमविस्सासेण सव्वं निवत्तियं मए। सुद्धबुद्धित्तणेण य इओ तओ पेसियनियपरियणो तीए चेव

१ °स्स घड° खं० ॥ २ पूर्वभवस्मरणनिमित्तमेतत् ॥ ३ 'संवृत्तः' सञ्जातः ॥ ४ विश्वस्तो भव, अत्र ताम्रमयकलशे ॥

सर्वदेवस्य
पूर्वभव-
वृत्तम्